



ओ३म् कृष्णन्तो विश्वमार्यम्

# सत्योद्धारकार्य

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—श्री शिशु सम्भारम्णी सम्पादक—नेरवन् शास्त्री सम्पादक—प्रकाशना विभागाध्यक्ष एम० ए०  
 अंक ३ नवम्बर, १९६१ वार्षिक धामक ३० (आजीवन धामक ७२) प्रकाशक—श्री ७२ गि

प्रस्तुत सभा के महत्वपूर्ण निर्णय

## वेदप्रचार के प्रसार हेतु जिलावार कार्यक्रम

### मुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य सुदर्शनदेव वेदप्रचाराधिष्ठाता मनोनीत जनगणना मे जाति आर्य तथा धर्म वैदिक लिखाने का निर्देश आर्यनेता प्रो० शेरसिंह को योजना आयोग का सदस्य बनाये जाने पर मार्चजनिक अभिनन्दन करने का निश्चय

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तर्ग संगी को बैठक दिनांक ३० दिसम्बर, १९६० को सभा कार्यालय सिद्धापी अवन दयानन्दमठ रोहताक में सम्पन्न हुई। बैठक में हरयाणा के कोने-कोने से अन्तर्ग सदस्य तथा सयोजक जिला वेदप्रचार मण्डल आर्य विशेष धार्मिक सवस्य उपस्थित हुए। इस अवसर पर निम्नलिखित महत्वपूर्ण निश्चय किये गये।

#### १. वेद प्रचार के प्रसार हेतु सभा उपवेशकों तथा मण्डलियों के जिलेवार कार्यक्रम :

हरयाणा प्रदेश जहाँ वृष दशो खाने के लिए प्रसिद्ध था, परन्तु अब हरयाणा में शराब की बिक्री बह रही है। नाबालक बालक, रेहडियों पर सब्जी की भाँति ध्रुपों की बिक्री तथा दूरदर्शन एवं आकाशवाणी पर अवैध विज्ञापन और नाच-गाने भारतीय सभ्यता को कलंकित किया जा रहा है। छात्र-छात्राओं पर इसका कुप्रभाव पड़ रहा है। ग्रामों में रामास्वामी, निरकारी आदि अत-भलातर फैल रहे हैं। विवाह आदि के अवसरों पर विदेशी माया बच्चों में निम्नगण-पत्र छपवाकर राष्ट्रीय भाषा हिन्दी की उपेक्षा की जा रही है। स्कूलों में पढ़ानेवाले प्रायः छात्रों को भी लिखाने की शिक्षा दे रहे हैं। बी०ए०बी० शिक्षालयों में भारी फीस छात्रों से लेकर उन्हें खर्चीला माध्यम में शिक्षा देकर तथा छात्रों पढ़ानेवाकर विदेशी संस्कृति का प्रचार कर रहे हैं। गत मास दिल्ली में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का उद्-घाटन करते हुए भारत के प्रधानमन्त्री श्री चन्द्रशेखर ने कहा है कि "कष्ट की बड़ी में महर्षि दयानन्द की शिक्षा ही देश में प्रकाश फेला कती है और आर्यसमाज इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।" भागी दशानन्द के शिक्षाये रास्ते पर चक्कर हो अज्ञान तक पहुँचा जा कता है। इस प्रकार सारा राष्ट्र आर्यसमाज की ओर आशाएँ लगाये ा है।

अतः इन कार्यों को कार्यान्वित करने के लिये जिलेवार वेदप्रचार मण्डलों का गठन सभा ने किया है जिससे प्रत्येक जिले में एक-एक उप-शक तथा प्रजनमण्डलों का प्रचार केन्द्र बनाकर आर्यसमाज के शानिय सक्रिय कार्यकर्ताओं के सहयोग से प्रत्येक नगर तथा ग्राम में दिक्कत का प्रचार करके आर्यसमाज की स्थापना की जावेगी और मर लिखित सामाजिक दुरादियों के विच्छेद जनमत तैयार करके आर्य-समाज के प्रचार का विस्तार किया जावेगा। इन सभी कार्यों के मार्ग-शन के लिए सभा ने आर्यजन्तु के सुप्रसिद्ध विद्वान् आचार्य सुदर्शनदेव

जी को वेदप्रचाराधिष्ठाता तथा श्री सत्यवीर शास्त्री को प्रचारमण्डली का कार्यभार सौंपा गया है।

#### २. जनसभा में जाति धार्मिक तथा वैदिकधर्म लिखाने का निश्चय .

६ फरवरी से २ मार्च तक हरयाणा में सरकार की ओर से जन-गणना हो रही है। पता चला है कि जनगणना के खाने में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, बौद्ध, सिख तथा जैन आदि के मतों को गाना गया है। वैदिकधर्म को इसमें सम्मिलित नहीं किया गया है। अतः यह सभा भारत सरकार के गृहमन्त्री से अनुरोध करती है कि वैदिकधर्म को जाति आदिकाल से भारत में प्रचलित है और हिन्दू, जैन, बौद्ध तथा सिखमत इसकी शाखाएँ हैं वैदिकधर्म तथा जाति धार्मिक लिखाने को व्यवस्था करे।

सभा ने आर्यजनता को निर्देश दिया है कि वे धर्म के खाने में वैदिकधर्म तथा जाति धार्मिक लिखाने का अनुरोध करे।

#### ३. योजना आयोग का सदस्य नियुक्त होने पर धार्मिक प्रो० शेरसिंह का सार्वजनिक अभिनन्दन करने का निश्चय :

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह को भारत सरकार द्वारा योजना आयोग का सदस्य नियुक्त किये जाने पर सभा के सदस्यों ने प्रसन्नता व्यक्त की है क्योंकि आठवीं पंचवर्षीय योजना को तैयार करने में प्रो० शेरसिंह जी सार्वजनिक लापु करनेवाले प्राज्ञता को बाधा पुष्टि करने के लिए प्राथिक अनुदान विलाने, बुद्धों की पेशना देने की स्वीमि को केन्द्रीय योजना में सम्मिलित कराने तथा हरयाणा के विकास कार्यों के लिए अधिक धन विलयाने का यत्न कर रहे हैं। प्रो० शेरसिंह जी का सारा जीवन आर्यसमाज तथा राष्ट्र की सेवा में व्यतीत हुआ है। उन्होंने आर्यसमाज के सभी आन्दोलनों में सक्रिय भाग लिया है। हिन्दी तथा संस्कृत अध्यापकों को धर्मेकी अध्यापकों के समान वेतन विलयाने प्रोत्साहित किया है। हेतुसवावत आर्यसंस्थावहियों को स्वतन्त्रता सेनानी घोषित करवाकर उन्हें केन्द्र तथा राज्य सरकारों से पेशना विलयाने में प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं। इस प्रकार आर्यनेता जी योजना आयोग का सदस्य बनाये जाने पर आर्यसमाज का गौरव बढ़ा है। अतः प्रो० शेरसिंह जी का आर्यजन्तु की ओर से स्वागत करने के लिए आर्यसमाज के प्रमुख नेता स्वामी ज्योतिरामजी सरस्वती की अध्यक्षता में एक स्वागत समिति का गठन किया गया है। स्वागत समारोह की तिथि तथा स्थान के निश्चय की सूचना सर्वहलिकारों में प्रकाशित की जावेगी।

(शिव पृष्ठ ६ पर)



# सर्वेन्द्रकार्य

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणु का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—सुबोधिन महामातृजी

सम्पादक—वेदवत शारङ्गी

सहायक सम्पादक—ब्रजशङ्कर विद्यापारकर गमः ९०

वर्ष १८

अंक ८

११ जनवरी, १९११

वार्षिक मूल्य ३००

(प्राचीन मूल्य २००)

विदेश में ८०००

प्रति प्रति ५५ पैसे

## मकर सौर संक्रान्ति

जिनके काम में पूर्ण शक्ति का धारण करके, पूर्ण शक्ति है, उसको एक 'योग' कहते हैं और कुछ लम्बे वर्णनाकार जिस परिधि पर पृथिवी परिभ्रमण करती है, उसको 'कामिन्दु' कहते हैं। ज्योतिषियों द्वारा इस कामिन्दु के १० भाग कल्पित किए गए हैं और उन १० भागों के नाम उच्च-पंचम्यां पर आकाशस्थ नक्षत्रों से मिलकर बनी हुई कुछ मिलती-जुलती आकृतियों के पदांशों के नाम पर रख लिए गए हैं। यथा—१. पेष, २. युष, ३. विषय, ४. कक, ५. सिंह, ६. कम्पा, ७. पुष्या, ८. वृषिक, ९. धनु, १०. मकर, ११. कुम्भ, १२. मीन। प्रत्येक भाग वा आकृति 'राशि' कहलाती है। जब पृथिवी एक राशि से दूसरी राशि में सक्रमण करती है तो उसको 'संक्रान्ति' कहते हैं। लोक में उपचार से पृथिवी के सक्रमण को सूर्य का सक्रमण कहने लगे हैं। छ. मास तक सूर्य कामिन्दु से उत्तर की ओर उदय होता रहता है और छ. मास तक दक्षिण की ओर निकलता रहता है। प्रत्येक राशि की अवधि का नाम 'अवधि' है। सूर्य के उत्तर और उदय की अवधि को 'उत्तरायण' और दक्षिण और उदय की अवधि को 'दक्षिणायन' कहते हैं। उत्तरायणकाल में सूर्य उत्तर की ओर से उदय होता हुआ दीखता है और उसमें दिन बढ़ता जाता है और रात्रि घटती जाती है। दक्षिणायन में सूर्योदय दक्षिण की ओर दक्षिणोत्तर होता है और उसमें रात्रि बढ़ती जाती है और दिन घटता जाता है। सूर्य की मकर राशि की संक्रान्ति से उत्तरायण और कर्क-संक्रान्ति से दक्षिणायन प्रारम्भ होता है। सूर्य के प्रकाशाधिक्य के कारण उत्तरायण विश्व महत्त्वशाली माना जाता है और अतएव उत्तरायण के आरम्भ दिवस मकर की संक्रान्ति को भी अधिक महत्त्व दिया जाता है और स्वर्गातीत चिरकाल से उस पर पर्व मनाया जाता है। यद्यपि इस समय उत्तरायण परिवर्तन ठीक-ठीक मकर संक्रान्ति पर नहीं होता और भ्रमणचलन की गति बराबर विद्यमानों को जो होते रहने के कारण इस समय (१९११) मकर संक्रान्ति से २२ दिन पूर्व ही राशि के उदय २४ कला पर 'संक्रान्ति' होता है। इस परिवर्तन का समन १९१० वर्ष में ही 'संक्रान्ति' मकर संक्रान्ति के दिन ही प्रोता चला जाता है। इसमें सर्वसाधारण की श्रेष्ठिष्य शास्त्रानुसन्धिना ६१ कुछ परिशुद्ध मिलना है, किन्तु मासपूर्वक का उदय रहने अतुल्य मानकर मकर संक्रान्ति के दिन ११ वर्ष मानने की गति चली जाना है।

मकर संक्रान्ति के अवसर पर भीन अपने यौवन पर होता है। जनावार, जंगल, वन, पर्वत सबत्र शीत का जलक शरहरा है, बरार जगत् शीतराज का लोभ मान रहा है, हाथ-पैर जाड़े से निकुंठे बाने हैं, 'शत्रु बानुदिशानु' रात्रि में जमा शरीर दिन से सूर्य, किमी कवि की यह उक्ति दीनों पर आजकल ही पुरुष्य में चरिताय होती है। दिन को अब तक यह अवस्था थी कि सुबदे उदय होते ही अस्तानक के गमन वा वसतिशा शास्त्र-मन्त्र देते थे, मानो दिन रात्रि में सीता ही हुआ जाना था। रात्रि सुभा रात्रिने से माना अपना देह बढ़ाती थी मन्त्रे जानी थी। अन्त में सका मा अन्त भाग आज मकर संक्रान्ति के मकर ने उसको निगलना आरम्भ कर दिया।

अब सुबदे ने उत्तरायण में प्रवेश किया। इस काल की मजिमा संस्कृत साहित्य में वेद में लेकर आद्युक्ति श्रद्धा पूर्वक सविधेय वर्णन की गई है। बहिक श्रद्धा से उसको 'देवयान' कहा गया है और प्राचीन लोग स्वर्गरीय राग तक की प्रथिलाय हमारे उत्तरायण में रहते हैं। उनमें विचाराराम्यार इस समय देव स्थानों में उनकी आत्मा यूपोक्त में होकर प्रकाश भास्य में प्रयाण करेगी। प्राचीन वद्वारों शीघ्र-विशामन्त्र ने इसी उत्तरायण के श्रावण-श्रावण पर श्रावण करते हुए प्राणोत्क्रमण की प्रतीक्षा की थी। ऐसा प्रवृत्त समय किंसा पर्वता (पर्व वनसे) से कसे बन्धित रह सकता था। श्राव जाति के प्राचीन नेताओं ने मकर संक्रान्ति (सूर्य की उत्तरायण-सक्रमण तिथि) का पर्व निर्धारित कर दिया।

जंसा कि पूर बतलाया जायुका है कि पूर पर्व बहुत चिरकाल से चला आता है। यह भारत के सब प्रांतों में प्रचलित है, अत इसको एकदेशी मकर संक्रान्ति कहा जाहिए। सब प्रांतों में इसके मनाने की परिपट्ट मे भी समानता पाई जाती है। सब शीतातिसय के निवारण के उपचार प्रचलित है।

बंधक-शास्त्र में शीत के प्रतिकार तिल, तैल, तुल (कुई) बतलाए है। जिनमें तिल सबसे मुख्य है। इसलए पुराणों में इस पर्व के सब कृत्यों में तिल-प्रयोग का विशेष माहात्म्य गाया गया है और उनको पापनाशक कहा गया है। किसी पुराण में निम्नलिखित वचन प्रसिद्ध है—

तिलमन्नायो तिलोद्द्वारो तिलहोष्वा तिलोदको।  
निम्बक चन्द्रता च पट्टिच्छिन्नं पापनाशना ॥

अतः निर्दिष्टित जल से स्नान, तिल का उदयन, तिल का हवन तिल का अन्न तिल का भाजन और तिल का दान ये छ तिल के पर्व-विधान हैं।

मकर संक्रान्ति ३, १२० भाग के ३३ प्राणों में तिल और गुड़ या काल के मन्त्र द्वारा ३३ प्राणों में तिलसे करते हैं, दान किए जाने हैं और इष्टिमियों में बांटे जाते हैं। महाराष्ट्र प्रांत में इस दिन तिलों का 'मन्त्र' नामक तलवा बाटने का प्रथा है और सोमायचर्यो रीत्यथा तना कस्याए अन्ना तनो नृहेतियों में मिलकर दत्तकों कन्यो, रोमी, तिल और गुड़ भेंट करता है। प्राचीन प्राक लग भा बहू बर की सन्मान बुद्धि में तिल तिलों का पक्वान्न वाटते थे। उपने ज्ञान होता है कि तिलों का प्रयोग प्राचीनकाल में विधि शुभकारक माना जाता रहा है। प्राचीन गमन लोगों ने भी मकर संक्रान्ति के दिन अजीर, खजूर और शहद अपने इष्टिमियों को भेंट देने की रीति थी। यह भी मकर संक्रान्ति पर्व को मान्यकृता और प्राचीनता का परिचायक है।

मकर संक्रान्ति पर्व पर दोगे का शान्ति-आरामण कर्मल और घृत दान करने की प्रथा प्राचीनता में प्रचलित है। 'मन्त्रसन्तान न बोधन नामक का इन्द्र-मन्त्र संस्कृत में प्राचीनता है। घृत का भी

(संप १८७ पर)

# हरियाणा सरकार द्वारा जनता को एक विनाशकारी तोहफा

(प्रतारिह आर्य क्रान्तिकारी, समा उपदेशक)

एक समय तो वह था जबकि भारतवर्ष सब देशों का मुग़ल था। यहाँ की सभ्यता संस्कृति महान् थी, इस देश में अनेक ऋषि-मुनि, महात्मा, आदर्श राजनेता, कर्मयोगी, मर्यादा पुरुषोत्तम, नीतिकार, विद्वान्, क्रान्तिकारी, देशभक्त हुए। वास्तव में यह ऋषि मुनि योगियों का देश था। महाभारत से एक हजार वर्ष पहले यहाँ फूटने से बचे बाले। कई वर्षों तक देश युवायन रहा। लेकिन कोई भी विदेशी राज साहस बोधिस करने के बाद भी हमारी सभ्यता एवं संस्कृति को नहीं मिटा पाया।

लेकिन बड़े दुःख के साथ लिखना पड़ रहा है जब से हमें आजादी मिली है, तब से हमारे देश के नेता एक बाण को छोड़कर देश को बर्बाद करने एवं यहाँ की सभ्यता, आदर्श संस्कृति को मिटाने पर तुले हुए हैं। सभी राजनेता अपने तुच्छ स्वार्थों के लिए महात्मा गांधी का नाम लेते हैं। लोगों को भ्रम बनाकर अपनी कुर्सी प्राप्त करने हैं, बोट मांगते हैं। सारे भारतवर्ष में एक युवायन प्रान्त को छोड़कर बुरा हाव है। चाहे किसी भी प्रान्त में, किसी भी बल या पार्टी की सरकार हो, सब शराब को बढ़ावा दे रही हैं। हरियाणा प्रान्त उनमें सब से आगे है। कहा तो यह कहावत प्रसिद्ध थी कि 'देशों में देश हरियाणा जहाँ दूध दही का खाना।' अब इसके विपरीत है 'देशों में देश हरियाणा जहाँ शराब मांस का खाना।' हरियाणा में किसी भी साहस या अर्थ की सरकार चाहे, सब ने अपने समय में शराब को बढ़ावा दिया। (सिफ़ अर्द्धाई वर्ष बनता पार्टी सरकार को छोड़कर)। हरियाणा में शराब की नदियाँ बहा रही हैं। शहर और गाँवों में ठेकों की बरमार है। चाहे शिक्षण संस्था हो या सब बढ़ावा तथा पनपट सब मुख्य जगहों पर शराब के ठेके, इससे भी खतर नहीं किया। ठेकों के साथ अज्ञान तथा एक स्वभाव पंचायत को प्रति बोलत, अर्द्धाई रुपये नगप्रासिका को प्रति बोलत का सालक देकर तो शराब, बुद्धि, व्यभिचार, भ्रष्टाचार को बढ़ावा देकर बाह्र सांव बना दिया। इसके अतिरिक्त ठेकेदार पुंसिख की जिम्मी भगत से प्रत्येक छोटेबड़े गाँव में जहाँ शराब के ठेके नहीं हैं वहाँ अर्द्ध शराब की त्रिको जोगी पर है। परचूत की दुकानों पर या असामाजिक तत्त्व संस्थापन घरों में शराब बेचते हैं। दस-दस वर्ष के बच्चे दो-दो रुपये में शराब लेकर पीते हैं। शाम को जाने वाली प्रत्येक बस में शराबियों की बरमार से बस बहने पर शराबी ही नजर आयेगे। सायंकाल गाँव में शराबियों का बोलबाहा है। महिलाओं एवं सज्जन पुरुषों का बीमा दूधर हो रहा है। सरकार आमदनी के लिए शराब बढ़ावा नीति से विकास नहीं विचार कर रही है।

जब मजदूर किसान की खुन पशोने की कमाई शराब में चली जायेगी तथा नवयुवकों का चरित्र लक्ष्य हो जायेगा, अर्थात् माता बहनों की सरेखाम इज्जत सूटी जाये। उसको हम प्रवृत्ति कहे या बर्हिदा पदकोमुदा राजनेतियों का व्यभिचल स्वार्थ। आज के नेताओं को इन चाहिए चरित्र नहीं। पाप की कमाई समाज को पाप की ओर ले जायेगी।

जमी कुछ दिन पहले हरियाणा सरकार ने जनता को एक और विनाशकारी तोहफा भेंट किया है जिससे रही सही कुछ सभ्यता हरियाणा में शेष की वह पूरी तरह नष्ट हो जायेगी। सरकार ने एक उच्चोपनिषि को हरियाणा में शराब का एक बड़ा कारखाना लगाने का अनुमति-पत्र (लेटर आफ़ इण्टेट) दिया है। मद्य के इस कारखाने को जो बिना फ़रीदाबाद में है अब तक केवल उद्योगों के काम में जाने वाली मद्य (इम्पेस्ट्रियल अल्कोहल) बनाकर का साइसेस मिला हुआ था। अब वह इस मद्य से शराब तैयार करने में लगेगा। इस कारखाने की समता प्रतिवर्ष २५ लाख लिटर मद्य बनने की है। इस बारे में नोकझाँदी की यही दबील है कि इससे 'सरकारी बजाने में ज्यादा धन जमा होगा।' इसके साथ ही हरियाणा सरकार ने

२ दिसम्बर से रेडियो पर सांग का बर्हिदा प्रोग्राम देकर हरियाणा की संस्कृति को मिटाने का बर्हयत्न किया है।

जब समय रहते आर्यसमाज के नेता तथा अर्थ धार्मिक, सामाजिक संगठनों के बुद्धिजीवी लोग इकट्ठे होकर उपरोक्त बुराईयों के खिलाफ़ सरकार पर दबाव नहीं आना यानी संघर्ष नहीं किया तो हमारी संस्कृति सभ्यता मिट जायेगी। जाने बातो पीठो हमें शिक्षकारों के हमारे बुजुर्ग इतने कायर और कमजोर थे कि इन बुराईयों का विरोध नहीं कर सके। अतः शराब हटाओ देश बचाओ।



## जिला हिसार में नशाबन्दी एवं वेदप्रचार की धूम

दिनांक १५-१२-६० को श्राव नलवा में शराबबन्दी एवं वेदप्रचार का प्रायोजन किया गया। इस अवसर पर समा उपदेशक श्री अत-सिंह आर्य क्रान्तिकारी जी ने सखसंग का चमत्कार तथा इतिहास के उदाहरण देकर शराब से होनेवाले नुकसान पर प्रकाश डाला। साथ में नवयुवकों को धाहू बान किया कि बरत बचना एवं धाने बच्चों का कल्याण चाहते हो तो आर्यसमाज के सम्पर्क में आओ। श्री हरध्यान-सिंह आर्य रेडियो सिगर के प्रभावशाली शिक्षाप्रद भजन हुए। प्रातः आर्यसंकाज मन्त्रिण में यज्ञ किया।

दिनांक १६-१२-६० को ही प्रातः १० बजे शाम कंवासी में सुबेदार रामेश्वरदास आर्य के नवयुव निमण के उपलक्ष्य में क्रान्तिकारी जी ने यज्ञ किया। यज्ञ पर आर्यसमाज कंवासी के अधिकारी एवं गांव के गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। यज्ञ पर पंच महायज्ञ, यज्ञोपवीत का महर्च, विचारियों के कर्तव्य बारे विस्तार से विचार रहे। ओमप्रकाश आर्य ने एक भजन रखा। सुबेदार जी ने भी दया एवं कर्म बारे प्रेरणाप्रद विचार रहे तथा धन्यवाद किया। प्रातः को चौपाल में प्रचार हुआ। प्रधान श्री अतरिह आर्य क्रान्तिकारी जी ने आर्यसमाज के आभोलन एवं शराब बन्दी बारे विचार रहे। गाँव में पूर्ण नशाबन्दी बारे नवयुवकों को प्रेरणा दी। महायज्ञ हर-ध्यानसिंह ने फुटकर भजनों के अतिरिक्त इन्द्रजीत एवं चन्द्रकान्ता का प्रेरणाप्रद इतिहास रखा।

दिनांक १७-१२-६० को सेठों को डागी (आर्य निवास नलवा) में प्रचार किया गया। प्रचार में अर्थ्य डाणियों से भी काफी संख्या में परिवार सहित लोगों ने बड़ बड़कर भाग लिया। नलवा गांव से श्री क्रान्तिकारी के आग्रह पर कई नवयुवक पधार। स्वामी जगत्गुरु जी एवं हरध्यानसिंह जी ने भजनों के माध्यम से प्रभावशाली प्रचार किया। प्रचार से तबू एवं कन्या को रक्षा नवयुवकों के चरित्र पर बल दिया गया। प्रातः ६ बजे निकट को डागी मुदावावाला के निवास पर क्रान्तिकारी जी एवं स्वामी जगत मुनि जी द्वारा यज्ञ किया गया। एक सूँवार शराबी श्री सुखबीर जी ने शराब न पीने का व्रत लिया तथा जनेऊ धारण किया। इसी अवसर पर दो नवयुवक श्री चलेराम तथा सुमेरिहसिंह ने श्री जनेऊ धारण किया। स्वामी जी ने शराब की बुराई पर तथा खडकियों को शिक्षाप्रद भजन सुनाए। कार्यक्रम सही स्थानों पर प्रेरणादायक एवं शोचक रहे। सामर्थ्य अनुसार लोगों ने कुछ दान भी दिया। कई पत्रिका के सदस्य भी बनाए गये।

डा० प्रोप्राकाश आर्य  
मन्त्री, आर्यसमाज कंवासी

शराब हटाओ देश बचाओ

## विचार गोष्ठी

वत्सभगद । स्थानीय चावला की स्थित धार्यसमाज में यहाँ एक विचारगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसका विषय था—“वर्तमान परिस्थितियों में धार्यसमाज को बुधवारियों का योगदान”, जिसमें लगभग पैंतीस उच्चशिक्षाविद् जिसका पुरोहित, उपदेशक, व्यवसायी, व्यापारी, सामाजिक कार्यकर्ता और धार्यसमाज के युवाओं ने भाग लिया। इस गोष्ठी का बुधवारम्ह ही इतना गुन हुआ कि ऐसा लगता था कि यदि व्यवस्था सचेत न हुई और वर्तमान परिस्थितियों का मूजन इसी प्रकार से लगातार होता रहता तो निकट भविष्य में ही व्यवस्था को लेने के देने पड़ सकते हैं। अपने विचार व्यक्त करते हुए दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत में स्वर्ण पदक प्राप्त श्री सुधीर शास्त्री ने इस सदन में अपने तीब्रे लोचनरें किन्तु ओजपूर्ण स्वर में कहा कि युवक निर्माण चाहता है। निर्माण उसके अस्तित्व की सीमा है, किन्तु जब वह देखता है कि व्यवस्था निर्माण की जगह विनाश दे रही है तब उसमें उसके प्रति असन्तोष पैदा होजाता है और उसका निर्माण विनाश में परिवर्तित होजाता है। युवा वस्त्व्यवसायी और धार्यवीर दल के श्री वेदप्रकाश जी की शोक यद्यपि विवेकपूर्ण थी परन्तु उनका आक्रोश भी व्यवस्था के उच्च नेतृत्व के प्रति था। उनका कहना था जब तक धार्यसमाज का नेतृत्व हमारे इस समय के उच्च नेताओं के हाथ में है तब तक वास्तविकता तो यह है कि युवक उसके होते हुए सक्रिय नहीं हो सकते और कदाचित् हुए भी तो उच्च नेतृत्व युवकों को जो मौलिक करना चाहते हैं उनको न करने देकर अपने दग से चलायेगा। दो जनमान युवकों का विचार था कि धार्यसमाज के लोग जब अपनी बुराई भी प्रब्रह्मा से कह और सह सकते हैं तो यह बात सभी भारतवासियों की उच्च आकांक्षाओं और आशाओं का प्रतीक है क्योंकि आज का सोच कल का कर्म बन सकता है। हम इस विचार गोष्ठी में चल रही विचार चर्चा से बहुत प्रभावित हैं। वर्तमान में साम्प्रदायिकता मन्दिर भस्तिवद्वाद, भाई मतोआजाद और राजनैतिक हड़कम्प से फली महाभारती को धार्यसमाज की ओजयि रामबाण सिद्ध हो सकती है। धार्यसमाज के प्रति नबुदक कसे आकषित हों इस विषय में श्री श्रोत्रप्रकाश जी के विचार कम उत्तेजायुक्त न थे। उनका कहना था कि विदेशी धर्मावलम्बी अपने धर्म में दीक्षित हुए लोगों के रोजमर्रा के जीवन की आवश्यकताओं को भरकर पूर्ति का सतत प्रयास करते रहते हैं, किन्तु हम धार्यसमाज के लोग इस प्रकार का धार्यसमाज में क्या रखते हैं। इस पर कई सज्जनों के विचार धार्ये कि धार्यसमाज में सभी चीजों के साथ-साथ इस धीरे धीरे स्थान दिया जाना चाहिये। कुछ का विचार यह भी था यदि उच्च वर्ग में धार्यसमाज के विचार के उच्च किया जाये उसके लिए टैक्सीजन, रेडियो तथा आवृत्तिकलम पत्र पत्रिकाओं का सहारा लिया जाए तो आशावती सफलता मिल सकती है। पेजे से पुरोहित श्री हरिहरण आचार्य ने इस सदन में कहा कि टैटो, रुपड़ा और मकान की उपेक्षा युवकों के मानसिक जागरण की ही भारी आवश्यकता है क्योंकि पिछले लगभग ५० सालों से राजनैतिक, सामाजिक तथा व्यावसायिक स्तर पर हमारे देश ने प्रांस मूदकर मन को दूषित किया है।

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टकारा के पूर्व उपाचार्य श्री हरिन्द्रो जी ने अपने शान्त किन्तु मधेयभापूर्ण और गम्भीर स्वर में कहा कि यह समय भाषण देने का नहीं बल्कि काम करने का है, प्राज्ञ का युवक पिछले २०० सालों का युवक नहीं है। वह आधुनिक युग में गतिशील होना चाहता है। यदि कोई उसकी गति में बाधा बनाए तो वह उसके प्रति बग़ावती होगा। इस अवसर पर श्री जीवन् शास्त्र ने कहा कि सबसे पहली आवश्यकता स्वयं के सुधार की है क्योंकि घर से बाहर निकलने के बाद आज सड़क पर आकर किसी को भी पहचान कर पाना कठिन है। सभी का आहार-व्यवहार, पहलना-ओढ़ना आदि मुशोबेर होयगा है। इस गोष्ठी को श्री भूदेव आचार्य ने आमन्त्रित किया।

## प्राकृतिक चिकित्सा शिविर का समापन तथा स्वाामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह

(प्रो० ओमकुमार आर्य, धार्यसमाज जीन्द शहर)

जीन्द दिसम्बर २३। धार्यवीर दल जीन्द ने गत २ दिसम्बर १९६० से प्राकृतिक चिकित्सा शिविर का आयोजन किया हुआ था जिसका समापन समारोह २३ दिसम्बर १९६० रविवार को सुबह ७ बजे से १० बजे तक बना। मुख्य अतिथि माननीय श्री० कुलवीरसिंह जी मलिक, राज्यमन्त्री हरयाणा सरकार, वे जिन्होंने धार्यवीर दल के इस रचनात्मक कार्यक्रम को मुरि-मुरि प्रशंसा की और अपनी तरफ से हर संभव सहयोग का आवासन दिया तथा प्राकृतिक चिकित्सा जैसे उपयोगी कार्य के लिए दस हजार रु० का अनुदान देने की घोषणा की। कार्यक्रम के अध्यक्ष माननीय श्री पी० पी० सिंह जी साहनी, उपायुक्त जीन्द ने भी धार्यसमाज और धार्यवीर दल के ठोस रचनात्मक कार्यों को तारीफ की और सहयोग का आवासन दिया। जीन्द उपमण्डल के उपमण्डल अधिकारी (ता.) माननीय श्री रामभक्त जी लांगायन भी उपस्थित थे और बीच में भी समय-समय पर शिविर में आकर प्रेरणा देते रहे। धार्यसमाज रामनगर के भू० प्रधाण, नगस्थापिका जीवक के भूतपूर्व अध्यक्ष तथा नगर के सुप्रसिद्ध धार्य नेता श्री जयसिंह जी आर्य, श्री० रामकरण जी धार्य नगर परिषद् जीवक, श्री रामकिशन जी गुस्ता, श्री कर्णसिंह जी धार्य मण्डलपति धार्यवीर दल, श्री दलवीर सिंह जी धार्य नगरनायक धार्यवीर दल जीवक तथा श्री देवराज जी धार्य प्राडि महादुआओं ने आमन्त्रित अतिथियों का मात्सा-पण से स्वागत किया। स्वामी श्रद्धानन्द जी को भी श्रद्धानजलि दी गई। प्रो० ओमकुमार आर्य, उपसंचालक धार्यवीर दल हरयाणा ने कार्यक्रम का संचालन किया। धार्यवीर दल ने पेशकश की कि धार्यवीर रक्तदान जैसे पुनीत समाजोपयोगी कार्यक्रम में भी जिला प्रशासन को सहयोग देवे और निम्नलिखित भविष्य में बढती आवश्यकताओं और मन्मत्त-प्रधान फिल्मी पोस्टर्स के विरुद्ध भी जनमत को जागृत करे। शांति पाठ के साथ सभा विरसित हुई।

## हाथी के दांत खाने के और....!

(मा० रामचन्द्र आर्य 'नलवा')।

शोषणकारी सलम हुई ना वीत कई साल लिये।  
गरीब आदमी गरीब बना होया धनी बन लाल लिये ॥ टेक ॥  
बीबी बच्चे सारे कमावे मिलता टेक का धम्म कोष्या।  
पहलन ओढन का टोटो दिवें कपड़ा उनके तन कोष्या।  
फोटी जूती पाटे कपड़े पर टुरातो काम से मन कोष्या।  
चार-चार बच्चे मखडूर पर होतो आफर बन कोष्या।  
बारह षण्टे काम कमाके धनी कइदे रोटी डाल लिये ॥१॥  
मंहाईरें दिन रात बदे पर बढती नहीं मखडूर।  
व्याज मूल से व्यादा होष्या जिब मखूर हो सबूरी।  
टोटे में कोए काम बने ना रहष्या वात अषूरी।  
जुप रहके सोष्या से बं कोए कइदे वात मखरी।  
इषजत हुई निलास गरीब की फिर धनी शान लिये ॥२॥  
पड़ना मिशन बूर रहा मिने काम ते टेक नहीं।  
सारे धर्म अमीर करे कह गरीब के कोए नेम नहीं।  
दूंड पड़े गरीबों के पर कोठी के धात्री सेम नहीं।  
खिदर सूख के जबरं होष्या चड़ता कोए फेम नहीं।  
जिन्दगी भर दुःख ठावे ईश्वर बनने समाल लिये ॥३॥  
रामचन्द्र कह नलवे आला आष्या भौतिकवाद सुपो।  
फलस सल्ले दाम दिके मंशेरी बीज और साप सुपो।  
पासज्डी छुलिया मूँछ मरीजे करता वाद सिबाब सुपो।  
सत्य का प्रचार नहीं बोले मूठ का नाद सुपो।  
हीन ननके रहष्या से गरीब मन में सखूरे स्थाल लिये ॥४॥

## स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह सम्पन्न

आर्य बीर दल रोहतक नगर की ओर से १६-१२-६० रविवार को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह आयोजन के बड़े पाक में सोसाइटी बनाया गया जिसमें पं० श्रद्धेय विष्णुभारती के मधुर भजन तथा स्वामी जगदीश्वरानन्द जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी की जीवनी पर बहुत ही प्रेरणादायक अपने विचार रखे। झूल में मन्त्री हरयाणा आर्य बीर दल श्री वेदप्रकाश ने प्रो० वेदसुभन तथा मण्डलपति श्री जगदीशमित्र के अनुबन्ध के देहावासन पर शोक प्रस्ताव रखा जिसमें इन दिवस आत्माओं की धार्मिक के लिए प्रार्थना की गई।

—मा० मेघराज आर्य

## संग्रहणीय विशेषांक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रमुख साप्ताहिक पत्र संस्कृतकार की "स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान विशेषांक" प्रान्त हुआ। विशेषांक वास्तव में काफ़ी सुन्दर एवं आकर्षक था। इसमें सभी लेख शिक्षाप्रद एवं प्रेरणादायक थे। स्वामी जी के सम्बन्ध में डेर सारी छायापि पढ़ने की मिली। अतः पत्रिका का यह अंक सभी शिष्यों से उच्च तथा संग्रहणीय रहा है। विशेषांक की सफलता के लिए बधाई।

—रामकुमार आर्य

भाट्टर सप्लार्ड जीपी चौहान (सोनीपत)

## प्रो० वेदसुभन को श्रद्धांजलि

आर्यसमाज शान्तिनगर सोनीपत के समस्त सदस्य प्रो० वेदसुभन जी के दुर्घटनावश आकस्मिक निधन पर अपनी श्रद्धांजलि प्रेषित करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवगत आत्मा को धार्मिक और सद्गति प्रदान करे तथा शोकानुर परिवार को यह दुःख कष्ट एवं विधीयों को सहन करने की शक्ति देवे।

प्रो० साहित्य एक उच्च प्रतिभावाने व्यक्ति थे जिनका सारा जीवन वेद प्रचारार्थ समर्पित था। वह एक चतुरी फिरोज़ी आर्यसमाज थे। वह एक कवच, उसाही एवम् निष्ठावान् व्यक्ति थे। युवावर्ग हेतु उनका प्रभावशाली नेतृत्व अत्यन्त प्रशंसनीय है। उनके निधन से आर्यजनता का एक प्रकाश स्वप्न गिर गया है जिसकी क्षतिपूर्ति नहीं हो सकती। हम उनके उच्च आदर्शों पर चलकर उनका नाम अमर रख सकें। शोकानुर परिवार के सदस्य हरिश्चन्द्र स्नेही महामन्त्री एवम् सदस्यगण, आर्यसमाज शान्तिनगर सोनीपत।

## शराब बुरी है

प्रेमक—मा० जगदीशचन्द्र प्रसाद  
शराब की जननी होती है शराब।  
राष्ट्र का पतन भविष्य ही है शराब।  
बला से बचे रहो सुख पाओगे।  
बुरी बत में फँस जाओ गंवाओगे।  
रीत निधाने रामचन्द्र ने बात कही।  
है कवन यह शराबों का बही।

—गुण्यम्बायक

एस० के० एच०केचनल सोसाइटी,  
एस० के० मित्रिज स्कूल,  
शामसुख (हिंवा)

## शोक समाचार

श्रीमती लक्ष्मीदेवी आर्यी बुवा की देहरादून आर्य नारनील निवासी का दिनांक १२ दिसम्बर, १९६० को श्रीमती बीमारी के परभाव हो गया। उनकी आयु ७० वर्ष थी। उनमें आर्यसमाज के प्रति प्रभाव अथा धी बच तक वह रोहतक रहते बच तक प्रतिदिन यज्ञ में सम्मिलित होती तथा आर्यसमाजों के कार्यों में भाग लेती रही। उनके निधन पर ध्यानमन्त्र रोहतक तथा आर्यसमाज नारनील की ओर से श्रद्धांजलि भेजे हुए उनकी आत्मा को सद्गति तथा धार्मिक प्रदान करने की प्रार्थना की गई।

महाशय ताच्छक आर्य  
सभा अन्तर्पंग सदस्य

## "कौन सा आकार"

क्या भगवान् मिला तुम ?  
मदिर मस्जिद जोड़ तोड़कर ।

क्या इनाम मिला तुम ?  
मेरा दिल तोड़कर ।

कितने जेवर मिले तुम ?

कितना सम्मान मिला तुम ?

मेरी पूजा छोड़कर ।

कितने फूल चढ़े तुम ?

मेरी भावनाएँ छोड़कर ।

कितने पराये अपने हुए ?

अपनों से गद्दार बनकर ।

कौन-सा धाकार मिला तुम ?

मेरा दिनकार छोड़कर ।

क्या इनाम मिला तुम ?

मेरा दिल तोड़कर ।

कौन भिय मिला तुम ?

मुझसा सर्वहितकारो छोड़कर ॥

अनिसकुमार मगसा-पिंकी'  
१३ गोयल एगर्ट, फंक्ट्री लेन,  
बोखिनी (परिचय), बंबई-४०००६२

## 'हमारी केन्द्र सरकार कोई तो काम करे'

(युवोपानन्द, प्रधानमन्त्र पद धरता)

देख खड-खंड हो रहा है, सब विचारक, राज्य-सभार्थी लोको-सभार्थी अपनी गद्दी सुरक्षित करने में लगे रहते हैं, भारत को बाकिशाली बनाने वाली कोई बात, संगठन करनेवाली बात, निर्गन्ता बुर करनेवाली बात सुनती नहीं, जिस सरकारवर्ष में २०० अरब की शराब भी जाती हो, जिसमें मुकदमेबाजी पर अरबों बन लचं होता हो, जिसको जनसंख्या ८० करोड़ हो, जिसमें जनशक्ति हो, वह क्यों न उठे, देश में दस अरब-पति हैं जिनके पास देश का १/१० भाग धन है, जो राजनीति पर छाये रहते हैं, जो अपने उद्योगों में निम्न वर्ग को धागोवार बना सकते हैं, ६ लाख सामू हैं उनको काम पर लगाया जा सकता है, उपज बढ़ सकती है, घर-घर उद्योग चल सकता है, हिन्दी राष्ट्रभाषा व प्रदेशों की अपनी-अपनी भाषाएँ हो सकती हैं, सिखा हो सकती है, जन्म जात-पात मिटाकर सभी लोग भारतीय कहलाएँ, मोहल्ला कद हो, शराबबन्दी हो, घर-घर टी० वी० न हों, ग्रामपंचायत हो, सबकी मार्शल ट्रेनिंग हों, मुकदमेबाजी कम हों, मानवता का संगठन हो, सारा जीवन हो, फिज़लबर्षी साधी गयी पर न हों।

## शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज मताना (पानीपत) के प्रधान माननीय बी० रत्नसिंह आर्य के निधन (दिनांक १-१२-६०) पर आर्यसमाज मताना शोक प्रस्ताव पारित करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि उनके परिवारजनों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति दे। जीवरो साहब श्रद्धिभक्त सनसौल आर्य थे वे सनसौल ८ वर्ष समाज के प्रधान रहे। उन्होंने जो लगन से हृष बर्ष बाकि उस्तब बड़ी बुधधाम से हुए। आर्य बीर दल का गजज हुआ, सिचिरि लगे तथा विभिन्न प्रदर्शनों पर वैदिकधर्म के प्रचार का अवसर उन्होंने कभी जाने नहीं दिया। उनके बड़े पुत्र भी श्रद्धिभक्त हैं। धाया है यह परिवार आर्यसमाज की सहयोग देता रहेगा। पुत्र-परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को धार्मिक सद्गति प्रदान करे तथा परिवारजनों को इस अभाव में सहनशक्ति प्रदान करे।

भबदीय

रामस्वरूप उपमन्त्री आर्यसमाज मताना  
पानीपत-१२२१०१

## आचार्य आर्य नरेश द्वारा वेदप्रचार

राष्ट्र संस्कृति व युवावर्गिक के उत्थान हेतु उद्योग साधन स्वतः कोमलम् विद्यालय के संस्थापक आचार्य आर्य द्वारा निम्न स्थानों पर प्रचार किया गया। पिंजौर, पञ्चगढ, दिल्ली, फरीदाबाद आर्य-समाज से० ४, मुरादाबाद, आर्यसमाज मन्त्री बरिस, आर्यसमाज बरेली, साहजपुर, जनपद ग्राम प्रचार, आर्यसमाज वागमरुज व जनपद उन्नाव के शर्मों में आर्यसमाज शिगरनगर तथा आर्यसंगर नलनक आर्यसमाज, कानपुर में रात्रिप्रवचन, आर्यसमाज स्वल्पनगर, पारिवारिक सरसंग, आर्यसमाज विद्यालयआर्यपुर, प्रयाग-चौक आर्यसमाज, आर्यसमाज कुष्मणनगर, काशी आर्यसमाज ग्राम बसीला गाजीपुर, ग्राम प्रचार जनपद गोरखपुर, गौडवा इकोला, गिलौला आदि।

इस यात्रा में जातिगत आरक्षण को हटा सरीवी से लगाने व भारतीय संस्कृति पर बने विदेशी लुटेरों के भवनों को हटाया जाए।

—कायेश्वरनाथ चतुर्वेदी

## ग्राम खेड़ा (भिवानी में वेदप्रचार)

दिनांक १३.१२.६० को ग्राम खेड़ा में वेदप्रचार किया गया। सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी जी ने श्रावणवर्षी एवं श्रावण से होनेवाले नुकसान बारे विचार रखे। सरकार की श्रावण बढ़ावा नीति की ओर निन्दा की। पं० चिरंजीवाल जी ने श्री श्रावणवर्षी बारे भजन एवं रूपवती का प्रेरणाप्रद इतिहास रखा। ब्राह्मण है कि इस गाँव में क्रांतिकारी श्री की प्रेरणा से एक नवयुवक संघटन बहुत ही सराहनीय कार्य कर रहा है। गत दिनों गाँव सिवानी का ठेकेदार जीप द्वारा श्रावण के कट्टे खालने आया तब नवयुवकों ने वस जहूँ पर जीप सोककर वापिस जाने को कहा। लेकिन वह बाध नहीं आया तब युवकों ने हिम्मत करके उसकी बोटमें फोड़ दीं। उसके बाद आज तक गाँव में ठेकेदार की जीप नहीं आई है। महाशय मेरी जी ने विद्वानों का बयवाद किया। प्रचार में सभा को ११५ रूपए प्राप्त हुए।

इन्द्रनाथ आर्य  
खेड़ा निवासी

## आर्यसमाज गन्नीर द्वारा वेदप्रचार

आर्यसमाज गन्नीर शहर ने विभिन्न चौराहों के नाम बखिदानी शीर्षों के नाम पर रखे हैं और इन स्थानों पर वेदप्रचार का व्यापक कार्यक्रम बनाया है जो निम्नकार्यक्रमानुसार पोषित किया गया है—

स्वामी श्रदानन्द चौक दिनांक २३.१२.६०, शहीद नौराज चौक ३०.१२.६०, शहीद अमृतसिंह चौक ६.१.६१, महात्मा प्रभु स्थापित चौक १३.१.६१, वीर सुभाष चौक २०.१.६१, महर्षि दयानन्द चौक २७.१.६१, पण्डित लखराम चौक ३.२.६१। यह कार्यक्रम प्रत्येक रविवार सायं २.०० बजे से ५.०० बजे तक आयोजित होगे।

इसमें मुख्य वक्ता हरिचन्द लोही (संयोजक वेदप्रचार मण्डल एच मण्डलपति आर्य वीरवल), श्री रामस्वरूप वर्मा, महात्मा प्रेमलाल जी, आचार्यजी वचना (संयोजक हिन्दू मंच), श्री बीमप्रकाश चुप, पं० जयदेव जो जतोई वाला एवम् श्री मा० बीमप्रकाश जी वर्मा होंगे।

—हरिचन्द लोही (संयोजक जिन्ना वेदप्रचार मण्डल)

## आर्यसमाज रावौर का चुनाव

प्रधान श्री डा० निर्मल विद्याल, उपप्रधान श्रीमती विद्यावती बार्मा, मन्त्री श्री योगेशकुमार बार्मा, उपमन्त्री श्री राजकुमार बर्मा, प्रचारमन्त्री श्री रामकिशन वातप्रसो, कोषाध्यक्ष श्रीमती विमला नवल शर्मा, पुस्तकाध्यक्ष श्रीमती चमेलादेवी बार्मा।

## आर्यसमाज होली मोहल्ला—करनाल का चुनाव

१ प्रधान श्री रतनसिंह लाठर, २ मन्त्री श्री हरिचन्द गुलाटी, ३. कोषाध्यक्ष श्री हरिसिंह सणु, ४. वरिष्ठ उप-प्रधान मा० सुन्दरसिंह, ५. कनिष्ठ मा० जसवन्तसिंह, ६. उपमन्त्री श्री यज्ञवत, ७. प्रचारमन्त्री श्री एच०एन० बन्सल वकील, ८. पुस्तकालय अध्यक्ष श्री रणजीतसिंह, ९. यज्ञप्रमुख मा० धर्मचन्द आर्य, १०. प्रापटी इन्चार्ज श्री सुरिन्द्रसिंह कान्नीज, ११. लेखानिरीक्षक श्री ईश्वरसिंह मलिक।

## बैठक सूचना

आर्य वेता प्रो० वेरसिंह स्वागत समारोह समिति की बैठक १३ जनवरी को १२ बजे स्वामी जोमानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में मुस्कल मञ्जर में होगी।

—संयोजक

## पारिवारिक यज्ञ सम्पन्न

दिनांक ६.१२.६० को प्रातः ग्राम मापड़ (जिन्ना हिसार) में सभा उपदेशक श्री अतरसिंह श्री आर्य क्रांतिकारी द्वारा श्री रणवीरसिंह आर्य के घर नवयुग प्रवेश के तपस्वय में यज्ञ विधिपूर्वक सम्पन्न हुआ। दम्पति ने यज्ञमान का स्थान ग्रहण किया तथा जनेऊ श्रावण किया। क्रांतिकारी जी ने यज्ञोपवीत एवं यज्ञ के महत्त्व पर प्रकाश डाला। यज्ञ में काफी संख्या में नर-नारियों ने भाग लिया। आर्यों की संहितकारी पत्रिका के सदस्य भी बने तथा अन्य सभी वर्गजनों ने ग्रगले भास वेदप्रचार हेतु भजनमण्डली भेजने का आग्रह किया।

—महाशय रामसिंह आर्य

## संस्कृत में प्रथम

मुस्कल कांगड़ी विद्याविद्यालय (हरिद्वार) द्वारा स्या० श्रदानन्द बलिदान दिवस २४ दिसम्बर, १९६० को आयोजित अखिल भारतीय शिक्षाया भाषण प्रतियोगिता में मुस्कल प्रभात आर्यम मेठ के डॉ० योगेशकुमार ने संस्कृत भाषण प्रतियोगिता में प्रथम स्थान तथा हिन्दी में डॉ० पुनीतकुमार ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। २५ दिसम्बर को इन दोनों विजेता बह्मचारियों का आश्रम में भव्य स्वागत किया गया तथा अपने शारिणियों के विजय पर उन्हें हादिक बचाई दी।

मन्त्री

स्नातक मण्डल

गु०मु० प्रभात आश्रम टीकरी भोला,  
मेरठ (उ० प्र०)

(प्रथम संस्कृत का शेष)

४. संस्कृत विषय में सर्वाधिक श्रेष्ठ प्राप्त करनेवाले परीक्षार्थियों को छात्रवृत्ति की जावेगी :

हरयाणा शिक्षा बोर्ड भिवानी, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक तथा कुश्नक विश्वविद्यालय कुश्नक के परीक्षार्थियों को संस्कृत विषय में सर्वाधिक श्रेष्ठ प्राप्त करनेवालों को सभा की ओर से २५०, २५० व० की चार छात्रवृत्तियाँ देना का निर्णय किया है। यह योजना चाहु बर्ष से आरम्भ की जावेगी। इस प्रकार संस्कृत पढ़नेवाले छात्र तथा छात्राओं को प्रोत्साहित किया जावेगा।

५. अध्यापकों का शिल्लक शिखर लगाने का निश्चय :

हरयाणा प्रवेश के आर्य अध्यापकों का इस वर्ष एक शिल्लक-शिखर लगाना जावेगा और उन्हें वैदिक संस्कारों आदि का शिक्षण देकर उनसे आर्यसमाज के प्रचार कार्य में सहयोग प्राप्त किया जावेगा।

—सुबेसिंह, सयामन्त्री

**अत्युत्कृष्ट**

**अत्युत्कृष्ट प्रचारार्थ**

**₹ 00**

**संकेत**

**अजिन्दा 300**

**संकेत**

**अत्युत्कृष्ट प्रचारार्थ**

**यह एक पुस्तक है**

**सफेद कागज सुन्दर सपाई**

**सुविधापूर्वक रणवितरण करनेवालों के**

**आमंत्र**

**23x36 + 16 पृष्ठ 420 की दर निम्न प्रचारार्थ के**

**सामग्री ६/अजिन्दा ६/**

**आर्यसाहित्य प्रचार ट्रस्ट**

**43/२ खारी बावली, दिल्ली-६ टेल. नं०: 239 360/233112**

सांख्यिक धर्म महासम्मेलन वेहती के प्रवचन पर

## धर्म देशभक्त आर्यजनों का आह्वान

शुद्धि दयानन्द के अनुयायी हे वेद धर्म प्रिय धर्म्य जनों ।  
 क्या देश सेवा पर संकट है इसको जानो व पहचानो ॥  
 क्यों आर्यवंत महान् वेद इच्छिया व हिन्दुस्तान बना ।  
 क्यों भारत मा का अग-भग होकर यह पाकिस्तान बना ॥  
 क्यों धर्म्य जाति के लाल करोधो ईसाई मुसलमान बने ।  
 क्यों वेद ज्ञान ईश्वर के होते बाइबिल और कुरान बने ॥  
 क्यों हिन्दू मन्दिर नष्ट हुए नारो सतीत्व किसने नूटे ।  
 क्यों वेदशास्त्र सत्प्रणय बने, क्यों सोमनाथ मन्दिर नूटे ॥  
 निराकार ईश्वर की अगह क्यों रथवर के भगवान् बने ।  
 क्या कारण है ईसाई यवन फिर हिन्दू को न समतान बने ॥

क्यों आर्य हिन्दू राष्ट्र यह बन सकता नहीं हिन्दुस्तान ॥  
 इस्लामी राज्य बन चुका है जब बगदादिये व पाकिस्तान ॥  
 पंजाब, असम काश्मीर आदि में क्यों हत्याए होती हैं ॥  
 कितनी माता, कितनी बहने, कितनी विधवाए रोती हैं ॥  
 कितने ब्राह्मण के कारण सिद्धार्थी कर येने धर्मत्याग ॥  
 किन्तु कूर निर्दय शासन ने करो न इसकी कुछ परवाह ॥  
 निर्भय, भीषण, हत्याघों का जो काण्ड हुआ धयोध्या में ।  
 उस जैसी कोई मिसाल शायद ही मिलेगी दुनिया में ॥

मस्जिद के फूटे खडहर को रक्षायें प्रणय करवा डाले ।  
 पर धननिर्गतो मन्दिर रक्षक श्रीराम भक्त मरवा डाले ॥  
 इन बलिदानो की वेला मे कई आर्यवीर बलिदान हुए ।  
 प्रिय देश धर्म पर मिटने के उनके पूरे धरमन हुए ॥  
 इस विषय में धर्म्यसमाज का क्या सिद्धान्त है यह जग जानता है ॥  
 निराकार ईश्वर की अगह वह मूर्तिपूजा नहीं मानता है ॥  
 पर राम जन्मभूमि को उसने इसी भाँति स्वोकारा है ।  
 जिस भाँति महर्षि दयानन्द की जन्मभूमि टकारा है ॥

मन्दिर की बात करनेवाले हिन्दू को सम्प्रदायी कहते ॥  
 मस्जिद का पक्ष लेनेवाले क्यों असम्प्रदायी बने रहते ॥  
 क्यों रामजन्म के मन्दिर का हो सकता है निर्माण नहीं ।  
 वावर ने राम मन्दिर तोडा क्या राम का यह अपमान नहीं ॥  
 श्रीराम धयोध्या में जन्मे इतिहास से यही प्रमाणित है ।  
 उनका मन्दिर बाबर से सहस्रों वर्ष पूर्व स्थापित है ॥

यह सत्य राजनैतिक नेताण इस कारण नहीं मान रहे ।  
 ने इसी प्रबन पर बोट मुसलमानों के लेना ठान रहे ॥  
 धर्मनिरोधी सभी दलों का यह बह्ययन भयकर है ।  
 देशभक्त धार्मिक हिन्दू आर्यों से इसको टक्कर है ॥  
 यह नीति राजनेताओं की यह धर्म देशभक्तों का धमन ।  
 ऐतान जायवीरों का है अब आगे बीर न होगा सहन ॥  
 अब जीता है सम्मान से तो संगठन शक्ति अपनाता है ।  
 शांतिपाठ कर चुके बहुत अब क्रान्तिपाठ गुजाना है ॥  
 इस धर्म्य महासम्मेलन को बढ़ाते से सफल बनाना है ।  
 इसके निरवय व सन्देशा अब जन-जन तक पहुँचाना है ॥

संगठित हो कर के शीघ्र बढो प्रिय देश धर्म्य जनों को ।  
 जो इन्हें मिटाना चाहते हैं उनके बह्ययन मिटाने को ॥  
 भिष्या मत पथ से हटा जगत् को वैदिक धर्म्य बसाने को ।  
 शुद्धि दयानन्द का सन्देशा सारे जग में फैलाने को ॥  
 सत्यार्थप्रकाश शुद्धिपर के धर्म्य से कोई प्रणय नहीं ।  
 वेद, ईश्वर, धर्म, देश का इस जैसा कहीं ज्ञान नहीं ॥

इसके प्रचार से बढकर जग का बीर कोई कल्याण नहीं ।  
 उपकार जगत् में हैं जितने इसके कोई समान नहीं ॥  
 इसके हित बलिदान से बढकर और कोई बलिदान नहीं ।  
 आर्यों के लिए सिद्धान्त भास्कर इसके बड़ा सम्मान नहीं ॥

भगवतीप्रसाद सिद्धान्तभास्कर  
 प्रधान नगर धर्म्यसमाज  
 1430, पं शिवदोन मार्ग, कृष्णपोल, जयपुर ।

## होगा कभी सलूक नहीं

ले० स्वरूपानन्द सरस्वती


मोये वं देश के प्रहरो वेसुध हुए जागरूक नहीं ।  
 राष्ट्र मुखा कर न संकेगो वे वाको बन्दूक नहीं ॥  
 समझ न पाए अगह हिन्दू को रूप का मण्डूक नहीं ।  
 काय-काय कागा यम कायल मोटो जैसी हुक नहीं ।  
 अविधायी मे दोने दिन में आते नजर उलूक नहीं ।  
 बीजल पेट्रोलेम पीकर भी मिटती इनकी बूझ नहीं ।  
 धारक्षण के बगैर राष्ट्र पर कोई दवा अचूक नहीं ।  
 आपस के अगह टण्डो का होगा कभो सलूक नहीं ॥

दामला में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न


आर्यमनाज दामला में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस श्री पं० सत्य  
 सनातन जी की अध्यक्षता में बड़ी वृत्तमान से मनाया गया जिसमें  
 श्री पं० विद्याभूषण जी के मधुर भजन स्वाधी जी के जीवन पर हुये ।  
 साथ ही श्री वाचायें वचनपाल जी शास्त्री के प्रवचन और बानप्रस्थी  
 रामकिशन जी के भजन हुए, जन्मसूत्र पर अच्छा प्रभाव रहा । यज्ञ  
 पर नौजवानो ने यज्ञोपवीत धारण किये, बीडो सिप्रेट टोडने की  
 प्रतिशा ली । सना को १०२ रुपया देयप्रचारार्थ दिया गया ।

धर्म्यसमाज दामला, (त्रि० प्रम्वाला)

### दंतों की हर बीमारी का घरेलू इलाज




**दंत संजान**  
लेना युक्त




मस्जु की नूजन

23 जड़ी बूटियों से निर्मित  
आयुर्वेदिक औषधि


**दन्तेषु क्व छन्दर**




अब नये पैकेज  
में उपलब्ध



मुँह की दुर्गन्ध



उदा गर्म तापी  
लज्जा



दात का र्वद

**महाशियां वी हट्टी (प्रा०) लि०**  
 8/14, इन्द्रप्रियदाय परियार, सीताई बाजार - अहं दिल्ली 15 फोन 539609, 537967, 527241

## हरयाणा के अधिकृत विक्रेता

1. मसजें परमानन्द शाईदितामन, भिबानी स्टेट, रोहतक ।
2. मैसज फूलचन्द सीताराम गांधीचोक, हिसार ।
3. मैसजें सन-धप-टुडेंडें सारंग रोड, सोनोसत ।
4. मैसजें हरीश एजेंसीज 499/1 गुणद्वारा रोड, पानीपत ।
5. मैसजें भगवानदास देवकीनन्दन सरफा बाजार, करनाल ।
6. मैसजें धनश्यामदास सीताराम बाजार, भिबानी ।
7. मैसजें कृपाराम गोयल सडी बाजार, सिरसा ।
8. मैसजें कुलचन्द पिकल स्टोसें धाप न० 115, मार्किट न० 1, एन० आई० टी० फरीदाबाद ।
9. मैसजें सिगला एजेंसीज सदर बाजार, गुणगांव ।



**मंगलमय हो नूतन वर्ष**

—राधेश्याम शायं विद्यावाचस्पति, मुनाफिरखाना सुलतानपुर (उ.प्र.)

पुष्प लिले नव आशाओं के,  
जने मुचिरतम अभिलाषा।  
दे सम्बेध धरणि को सारी—  
सौम्य-सुखाँ की परिभाषा।

महिमपवन पर छा जाए फिर—  
जागृति लिए हुए नव हृदय।  
मंगलमय हो नूतन वर्ष ॥

नए वर्ष की सुभ बेला में,  
निखरे जीवन के प्रतिमान—  
जन-जन में जागत हो पावन।  
त्याग-तपस्या व बलिदान।

मानवता के विमल सुतराँ—  
का हो भरती पर उत्कर्ष।  
मंगलमय हो नूतन वर्ष ॥

दनुष नृतियों का बिनास हो,  
हो शोषण का पूर्ण समापन।  
धरती के जन-जन में आए,  
प्रेम भरा अनुचित अपमान।

स्वार्थ तथा आतंकवाद का—  
हो निश्चित सा भव भ्रमकर्म।  
मंगलमय हो नूतन वर्ष ॥

**अहंकार नष्ट कर देता**

—महेश शायं प्राय पम्ईया सुवं (फरीदाबाद)

मानव बोधा चल प्रमोसा, क्यों नहीं बनाये।  
अहंकार के नशे में क्यों तू, अपना नाश कराये ॥

प्रथिमानी नास्ती को राग में शय में मार गिराया।  
सुधीष को पम्पापुर का राजा राग ने स्वयं बनाया ॥  
धोवी सी शिन्दगानी शार्द, क्यों नहीं सत्य सगाये।  
अहंकार के नशे में ————— ॥

रावण ने अभिमान किया था पूरा कुटुम्ब सपाया।  
भारे गये भूप बलशारी, इससे नहीं बच पाया ॥  
शौरव का इतिहास नने नहीं हुए मानव टुकटाये।  
अहंकार के नशे में ————— ॥

प्रह्लाद भक्त को कष्ट दिये थे हिरणाकृष्ण ने भारी।  
नरसिंह रूप सामने धाया परमेस्वर स्वायकारी ॥  
नोहा से न सखा कोई भी नष्ट-भष्ट हो जाये।  
अहंकार के नशे में ————— ॥


उग्रसेन सम्राट् बने कृष्ण ने कस पछारे।  
साथी है इतिहास हमारा अभिमानी ही हारे ॥  
'महेश शायं' राज पाठ, अहंकार बेल्य सा जाये।  
अहंकार के नशे में क्यों तू, अपना नाश कराये ॥  
मानव बोधा चल जनमोसा क्यों नहीं सफल बनाये ————


## गुरुकुल

**कांगड़ी फार्मसी की**  
**आयुर्वेदिक औषधियाँ सेवन कर स्वास्थ्य लाभ करें**

**गुरुकुल**  
**स्वच्छतापान**


दूरे जीवार के लिए शक्तिशालक एवं स्थूलियवक तपान।  
दाही, दूध व शारीरिक एवं मेकरी की दुर्गन्ध से उपचोनी आयुर्वेदिक औषधीय टाबिक






**गुरुकुल**  
**पार्योक्ति**

कीर्त व सन्तों के मकल सेवा में किरोक-पारोयिक के लिए उत्कृष्ट आयुर्वेदिक औषधि



**गुरुकुल**  
**चाय**

उष्ण व इन्फ्लुएंजा, शकन जोरि में बही कुटोनी से बने मानवकारी आयुर्वेदिक औषधि



**गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी हरिद्वार (उ.प्र.)**

**गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी**

**हरिद्वार**

की औषधियाँ सेवन करें।

शाखा कार्यालय  
**६३ गली राजा केदारनाथ,  
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६**

स्थानीय विक्रेताओं एवं सुपर बाजार से खरीदें

फोन नं० २६१८७१

शाखा कार्यालय: ६३, गली राजा केदारनाथ  
चावड़ी बाजार, दिल्ली-११०००६

जुलै - दिसम्बर २०११

शायं प्रतिनिधि समा हत्याणा के लिए मुद्रक कीर प्रकाशक वैद्यत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के लिए सर्वहितकारी मुद्रणालय रोहतक से छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह त्रिदाम्नी भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।



# सर्वेक्षणकार्य

## आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाण का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—सूर्यसिंह सामाजिकी

सम्पादक—वेदव्रत शारदी

सहसम्पादक—प्रकाशचौर विद्यापार एम० ए०

वर्ष १८

अंक ८

१४ जनवरी, १९६६

वार्षिक मूल्य ३०)

(आजीवन मूल्य २००१)

विद्यमान में कीट

प्रक प्रति ५४ पैसे

### मकर सौर संक्रान्ति

कितनेकाल में पूर्ण-सूर्य का चारों धार परिक्रमण पूरी करने में, उसको एक 'योग' प्रकृत है और कुट्ट लम्बी वर्तुलाकार जिस परिधि पर पृथिवी परिक्रमण करती है, उसको 'काल्पितुत' कहते हैं। ज्योतिषियों द्वारा इस काल्पितुत के १० भाग कल्पित किए हुए हैं और उन १२ भागों के नाम उत्तर-उत्तर स्थानों पर आकाशस्य मक्षत्र-ज्यो से मिलकर बनी हुई कुछ मिलती-जुलती आकृतिवाले पदार्थों के नाम पर रख लिए गए हैं। यथा—१ मेष, २ वृष, ३ मिथुन, ४ कर्क, ५ सिंह ६ कन्या, ७ तुला, ८ तुल्यक, ९ धनु, १० मकर, ११ कुम्भ, १२ मीन। प्रत्येक भाग वा आकृति 'राशि' कहलाती है। जब पृथिवी एक राशि से दूसरी राशि में सक्रमण करती है तो उसको 'संक्रान्ति' कहते हैं। लोक में उपचार से पृथिवी के सक्रमण को मूय का सक्रमण कहने लगे हैं। छः मास तक सूर्य काल्पितुत से उत्तर की ओर उदय होता रहता है और छः मास तक दक्षिण की ओर निकलता रहता है। प्रत्येक षण्मास की अवधि का नाम 'अयन' है। सूर्य के उत्तर और उदय की अवधि को 'उत्तरायण' और दक्षिण और उदय की अवधि को 'दक्षिणायन' कहते हैं। उत्तरायणकाल में सूर्य उत्तर की ओर से उदय होता हुआ बीबता है और उसमें दिन बढ़ता जाता है और रात्रि घटती जाती है। दक्षिणायन में सूर्योदय दक्षिण की ओर इष्टिमोचर होता है और उसमें रात्रि बढ़ती जाती है और दिन घटता जाता है। मूय की मकर राशि की संक्रान्ति से उत्तरायण और कर्क-संक्रान्ति से दक्षिणायन प्रारम्भ होता है। सूर्य के प्रकाशाधिक्य के कारण उत्तरायण विषय महत्त्ववाली माना जाता है और अतएव उत्तरायण के आरम्भ दिवस मकर की संक्रान्ति को भी पश्चिम महत्त्व दिया जाता है और स्मरणातीत चिरकाल से उस पर पर्व मनाया जाता है। पछापि इस समय उत्तरायण परिवर्तन ठीक-ठीक मकर संक्रान्ति पर नहीं होता और इस समयलन की गति बराबर पिछली ओर को होते रहने के कारण १५ मिनट (१५४ मि. से.) अक्षर संक्रान्ति से १६ मिनट घट्टु राशि के ७ अक्षर २४ कला पर 'उत्तरायण' होता है। इस परिवर्तन का सवभन १९६० वर्ष लगे है। १९६० वर्ष मकर संक्रान्ति के दिन ही होता जाता है। इसमें सर्वसाधारण की ज्योतिष शास्त्राभि-ना ६। कुछ परिष्कृत भिन्ना है, किन्तु वास्तव पर्व का चयन रहना अनुचित मानकर मकर संक्रान्ति के दिन भी पर्व मनाते की गति चली जाना हो।

अब सूर्यदेव ने उत्तरायण में प्रवेश किया। इस काल की महिमा संस्कृत साहित्य में वेद में लेकर आधुनिक ग्रन्थ पर्यन्त सविशेष वर्णन की गई है। बरिच प्रथमों में उसको 'देवयान' कहा गया है और ज्ञानी लोग स्वर्गरीय स्थाय तक की क्षत्रिसाधा इसी 'उत्तरायण' में करते हैं। उनमें विचारानुसार इस समय देव स्थानों में उनकी आत्मा मूयेलोक में होकर प्रकाश मार्ग में प्रयाण करेगी। प्राज'वन त्रय्यचारी श्रीमन्-पितामह ने इसी उत्तरायण के ध्यामन तक गरशस्त्रा पर शयन करते हुए प्राणोत्क्रमण की प्रतीक्षा की थी। ऐसा प्रशस्त समय किसी पर्वता (पर्व वनने) से कंठे उच्चित रह सकता था। आर्य जाति के प्राचीन नेताओं ने मकर संक्रान्ति (सूर्य की उत्तरायण-संक्रमण तिथि) का पर्व निर्धारित कर दिया।

जंसा कि पूव बतलाया जा चुका है कि यह पर्व बहुत चिरकाल से चला आता है। यह भारत के सब प्रांतों में प्रचलित है, अतः इसको एकदेशी न कहकर "सर्वदेशी" कहा जाए। सब प्रांतों में इसके मनाते की परिपाटा में भी समानता पाई जाती है सबत्र सीतासिषय के निवारण के उपचार प्रचलित हैं।

बंधक-शास्त्र में शीत के अतिकार तिल, तंबू, तुल (हूई) मतलाए हैं। जिनमें तिल सबसे मुख्य है। इसलिये पुराणों में इस पर्व के सब कृत्यों में तिलों का विशेष माहात्म्य माना गया है और उनको पापनाशक कहा गया है। किसी कुलपति, कुल, निम्नलिखित वचन प्रसिद्ध है—

तिलस्वाद्यो तिलोद्भवां तिलहोत्रां तिलोदकी।  
तिलयुक्तं तिलदाता च षट्दक्षिणः पापनाशना ॥

अथ—निर्माम्भित जल से स्नान, तिल का उबटन, तिल का हवन निज का जल, तिल का भाजन और तिल का दान ये छः तिल के प्रयोग उपर्युक्त हैं।

मकर संक्रान्ति के दिन प्रातः काल से प्रातः में तिल और गुड़ या साखर के लड्डू बनाकर 'जन्मो' 'जिनसे' कहते हैं, दान किए जाते हैं और इष्टमिथों में बांटे जाते हैं। महाराष्ट्र प्रांत में इस दिन तिलों का 'मेषुल' नामक हलवा बाटने की प्रथा है और सीमास्थलों स्थानों तथा कन्याए अथवा सबी नहेलियों में भिन्नकर उनको हलवी, रोली, तिल और गुड़ भेंट करता है। प्राचिन शोक लाग भा वषू वर को स्नाना बुद्धि के निमित्त तिलों का पक्वान पादत वे। इससे ज्ञात होता है कि तिला का प्रयोग प्राचीनकाल में विद्येय गुणकारक माना जाता रहा है। प्राचीन रोमन लोगों में भी मकर संक्रान्ति के दिन प्रजौर, खजूर और शहड अपने इष्टमिथों को भेंट देने की रीति थी। यह भी मकर संक्रान्ति पर्व को सांभ्रिकता और प्राचीनता का परिचायक है।

मकर संक्रान्ति पर्व पर दोनों को शांतिविचारमा कबल और घूत दान करने की प्रथा मानागने में प्रचलित है। 'वृषभजनन वाचत शोचय' का शिब-उक्त संस्कृत में प्रामद हा है। घूत को भी

(शेष पृष्ठ ७ पर)

मकर संक्रान्ति के अयमण पर शीत अपने यौवन पर होता है। जनावासा, जगल, वन, पर्वत सबत्र शीत का आतक छारहा है, बराबर जगत् शीतराज का लोभ मान रहा है, हाथ-पैर जाड़े से सिकुड़े जाते हैं, 'राश्री आगुदिया भानु' रात्रि में जघा और दिन में सूर्य, किसी कवि की यह उक्ति दीनों पर आजकल ही प्रकृष्य से चरिदायं होती है। दिन की अब तक यह अवस्था थी कि सूर्यदेव उदय होते ही अस्तावन्त के गमन की तैयारियां आरम्भ कर देते थे, मानो दिन रात्रि में सीन ही हुआ जाना था। रात्रि मूयका गमनो के ममान अपना देह बढाती ही चन्दी जाती थी। अन्त में उसका भी अन्त ज्ञायम आख मकर संक्रान्ति के मकर ने उसकी निगलना आरम्भ कर दिया।

## महर्षि दयानन्द सरस्वती की हिन्दी सेवा

(डा० बर्मपाल, वरिष्ठ प्राध्यापक, जाकिर हुसैन स्नातकोत्तर कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय सेवानिवृत्त)

गतात्म से आगे—

काशी का भ्रमण और भारतवर्ष गवर्नमेण्ट का भ्रमण नहीं तो कोई बालशास्त्री या कोई वास्तुवेद वेदों का भी निकल जाता और जो लोग जर्मनी में हुई, वे काशी में होती और वह ही समय आता जब एक वेदपाठी गुजराती संन्यासी काशी के पंडितों को 'स सूची' बनाकर छोड़ जाता जैसा कि ध्याये लिखा जाएगा।'

यहा पर वेदपाठी गुजराती से तात्पर्य महर्षि दयानन्द सरस्वती से है और इसका कागो शास्त्रार्थ का है। जब हिन्दी काशीवासी पंडितों से प्रश्न पूछते थे, तो वे आकाश की ओर देखने लगते थे (स सूची) अथवा लगने शकने लगते थे। बालशास्त्री व्याकरण के पंडित थे और वास्तुवेद शास्त्री अर्थोत्पत्ति के प्रसिद्ध पंडित थे।

काशा-शास्त्रार्थ का विवरण देते हुए मुनेरी जी आगे लिखते हैं—  
'इन्ही दिनों स्वामी दयानन्द ब्रह्मकुंजी की तरह काशी में आ पहुँचे और अक्षोभ्य समुद्र की सतह उनके अग्ने से परे तक हिंस्र गई। लोग विस्मय से आश चारहे रह गए कि स्वामी जी का जहाँ मग्नपाठ, कटस्थ करनेवाले वेदिकों से मिलता है, वहा उन्हें अपने भाष्य-व्यापी व्याकरण के ऊपर स्थान अर्थान्त से मृगा कर देता है और जहाँ नभ्य व्याकरण मिलते हैं, वहा वह 'घटोप-घट' का तुल्यकथन छोड़कर उन्हें सीधा व्याकरण की चकाचू में गोते खिजाता है।'

यह विवरण मुनेरी जी ने १९११ ई० में लिखा था और इससे यह भी स्पष्ट है कि उस शास्त्रार्थ में महर्षि विजयी रहे थे। यहा पर इसका विस्तृत विवरण अपेक्षित नहीं है तथापि यह निश्चित है कि मुनेरी जी जैसे हिन्दी के विद्वान् भी ऋषि से प्रत्यधिक प्रभावित थे।

१० चन्द्रधर शर्मा मुनेरी, जिन महापुरुषों द्वारा हिन्दी की बड़ा भासा भिन्ना और इसकी शीघ्रि हुई, उनके भुक्तकर्म में किसी भी प्रकार का मकोच नहीं करते। उन्होंने 'समालोचक' (जनवरी-अप्रैल, १९०१) पत्र में लिखा था—'आर्यसमाज के प्रचारक एक बड़े दूरदर्शी पुरुष थे। विन्हीने अपने विषयों की बृद्धि और गौरव के लिए हिन्दी का आशय लिया। इस बात को कट्टर वे कट्टर धार्यसमाजी भी मानेगा कि यदि स्वामी दयानन्द हिन्दी की अपनी धर्मभाषा न मानते, तो उनका यह जलना नहीं होता।'

जब महर्षि दयानन्द सरस्वती का भारतीय सांस्कृतिक रणमच पर पदापेण हुआ, तो भारत में राजनीति एव राष्ट्रीय एकता को धारनेवाला कोई पुरुष न था, तब उन्होंने साहस के साथ निषेध लिया था कि प्रारम्भ में बोलचाल के लिए टूटी-फूटी हिन्दी ही चलेगी किन्तु देवनागरी में हिन्दी भारती (धार्म्य) भाषा में ही अपने प्रथम लिखुंगा। हिन्दी के लिए स्वामी दयानन्द का संकल्प एक नीच का पत्थर सिद्ध हुआ है। विज्ञात विशिष्टत समाज को एक दिशासूच प्रदान करने में ऋषि दयानन्द अग्रगण्य हैं।

उन्होंने हिन्दी के प्रचार-प्रसार पर विशेष बल दिया था। बर्मई में धार्यसमाज की स्थापना के प्रवर्णन पर कहा था कि जहाँ आर्यसमाज की स्थापना हो, वहाँ पर एक पुस्तकालय अवश्य ही खोला जाए। लाहौर में आशर तो उन्होंने हिन्दी शोषण, प्रत्येक धार्यसमाजी के लिए अनिवार्य कर दिया, जबकि दुर्दैव से उस समय पंजाब, फ्रान्चियर प्रान्त और सिन्ध में कोई विरला ही हिन्दी जानता था।

एक सज्जन ने जब हरिद्वार में यह सुभाब रखा कि वे अपने ग्रन्थों का अनुवाद फारसी में कराएँ तो उन्होंने कहा था कि ज्ञानवर्धन के लिए कोई भी भाषा सोखी जा सकती है। उसी प्रकार किसी भाषा में अनुवाद किया जा सकता है, किन्तु अनुवाद विदेशी लोगों के लिए होने चाहिए। अपने देशवासियों के लिए, स्वयं अपनी राष्ट्रीय भाषा के माध्यम से साहित्य मुजन होगा तो एकता एवं सघठन भी इसके सभ्यक से निरचय ही आरुपा।

ऋषि दयानन्द ने अपने व्याख्यानो में यह उल्लेख इच्छा प्रकट की थी कि 'मैं तो वच दिन देखना चाहता हूँ जब हिमालय से लेकर सागर तक सारे ब्रह्मणत, धार्यवर्त में देवनागरी लिपि में ही सभी धार्यभाषा को प्रपत्ता।'

हिन्दी साहित्य के विद्वानों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि ऋषि दयानन्द द्वारा लिखित आत्मकथा हिन्दी गद्य साहित्य की सर्व-प्रथम आत्मकथा है। कुछ दिन पूर्व डा० रामप्रसाद आर्य ने एक गवेषणापूर्ण लेख लिखा था। उन्होंने लिखा है कि इस आत्मकथा में कवि, कथाकार और इतिहासकार के तत्त्व एक साथ उपलब्ध होते हैं। स्वामी जो महाराज धर्मोपदेशक थे, समाजसुधारक थे परन्तु इस आत्मकथा की देखकर तो लगता है कि वे बहुत ही भावप्रचय कवि थे, प्रकृति के कुशल विचारे थे तथा वे साथ ही अपने भी आलोचक। उन्होंने आत्मविश्लेषण किया है तथा अपनी गलतियों को स्वीकार भी किया है। महर्षि को यह आत्मकथा एक उत्कृष्ट साहित्यिक कृति है। यह अलकारविहीन होने हुए भी धार्यकर्म है। यह छंदोमय नहीं है, तथापि इसमें एक विशिष्ट गति और तय है। यह दूसरे की कथा श्रोत पर भी अपनी ही लगती है। इसमें भले ही रस-सिद्धान्त के अवयव न हों, पर यह सरस है। इसमें प्रगीत के तत्त्व नहीं है, पर यह मधुर है।

महर्षि के रमने अनेक रूप देखे हैं। वे शास्त्रार्थ महारथो हैं। वे दार्शनिक हैं। वे आदिम विद्वारो हैं। वे धर्मोपदेशक हैं। वे बहुन हो मरे, और कड़वी वात कहने का साहस रखनेवाले निर्भीक संन्यासी हैं, परन्तु हिन्दी साहित्य को जो उन्होंने योगदान दिया, उसकी ओर हमारी दृष्टि कहां ही गई है। यह विस्मयकारी है कि एक अहिन्दी भाषी धर्षिक ने हिन्दी में अपेक्षाकृत आधुनिक विद्या आत्मकथा लेखन में भी अग्रुल योगदान दिया है।

हिन्दी साहित्य में अनेक जोबनिया लिखी गई थी परन्तु आत्मकथाएँ नहीं। सकृत् साहित्य तथा हिन्दी साहित्य के लेखक, कवि प्रादि अपने विषय में बहुत ही कम लिखते थे और यही कारण है कि उनकी प्रामाणिक जीवनीय नहीं मिलती और जो मिलती है, उनमें साहित्यिकता अधिक होती है, अथदा होती है परन्तु वास्तविकता बहुत कम होती है। आधुनिक युग के निर्माता भारतीय हरिश्चन्द्र भी अपने चरितन्यायकों के चित्रण में तटस्थ नहीं थे।

स्वामी जी की भी अनेक जीवनियाँ स्वभाषा में प्राप्य हैं जिनमें कुछ तो काफी विस्तृत तथा महत्त्वपूर्ण हैं, परन्तु उन सब में बहु सब नहीं जो स्वामी जी के अपने लिखे शब्दों में होने मिलता है। स्वामी जी ने कर्नेल स्काट के अनुरोध पर अप्रैल १८७९ में यह जीवनी लिखी थी। स्वामी जी को यह आत्मकथा स्वरचित आत्मचरित्र बहुत ही सराहनीय है। अपने विशिष्ट साहित्यिक गुणों के कारण यह श्रोती ही रचना साहित्य के अध्येताओं का ध्यान धारकषित करती है।

इस रचना में इतिहासकार जैसा तथ्य निरूपण है और साथ ही आत्मनिष्पत्तिक भी है।

'नृजरात देव ने दूसरों की अपेक्षा मोहविशेष है। यदि मैं इष्ट-मित्र, भाई-बन्धु की पहचान वृ या पथव्यवहार कहीं तो सुझे नहीं उपाधि होती। जिन उपाधियों में मैं छूट गया हूँ, नहीं उपाधियों मेरे पीछे लग जायेंगी।' आप ही देखिए कितने सरस शब्दों में अपनी मनोवधा की अभिव्यक्ति दी गई है। इतने ही सरस-सरस ढंग से उपाधों का निरूपण किया गया है—'मैंने पांचके बर्ष में देवनागरी अक्षर पढ़ना प्रारम्भ किया था।'

(ऋषि दयानन्द स्वरचित जीवन-चरित्र पृष्ठ १ और ३)  
महर्षि ने मृत्पुत्रा से चरित्तिक के माव का तथा धार्यसंभन के भाव का वर्णन मनोरम एवं अकृत्रिम शैली में किया है।

'धरः जुहे की यह लोभा देल मेरी वासवुद्धि की ऐशा प्रतीत हुआ कि जो शिब अपने पाशुपातास्त्र से बने-बड़े प्रचण्ड देर्यों को मारता है, क्या उसमें एक निर्वल जुहे को भगा देने की शक्ति नहीं।'

कदम-कदम पर ऋषि अपनी उल्लुका तथा हृदय की व्यग्रता का वर्णन करता है। 'ऐसा ही श्रोती बहुत धीर तथा की मृदुल के वर्णन में और फिर अपनी मुक्ति के उपाय सोचना' आदि में मिलता है। भाषा सोष्टव को और नेलक का ध्यान जाता ही नहीं, क्योंकि उसका हृदय भावविभर है।

धार्म्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा संचालित

## गुरुकुल कुरुक्षेत्र का संक्षिप्त परिचय

१९१२ ई० में अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जो द्वारा कहे हुये ऐतिहासिक वचन याद आरहे हैं अब उन्हीं के कहा या "जिस धर्म-श्रम कुक्षेत्र की पवित्र भूमि में एक दिन भारत भूमि के विनाश का बीज बोया गया था, उसी भूमि में आज यह भारत की उन्नति का बीज बोया गया है। मंगलमय भवभाव्य करे कि इस ज्ञानतरु के ऐसे सुगन्धित फूल उत्पन्न हों, भारत भूमि को फिर से अपनी पुरानी उन्नत अवस्था में लाने में सहायक हो।" आप इस ज्ञान तरु की उत्पत्तियोग्य जानकर अत्यन्त प्रसन्नता व गौरव का अनुभव कर रहे होंगे। यह देखकर कि सवार के सभी क्षेत्रों में इस ज्ञान तरु के फूल बहुचारीगण चढ़े श्री देश व धर्म की स्वयं उन्नति का डका बजाकर सुगन्ध बिखेर रहे हैं।

सन् १९१२ ई० में सहर के धार्म्य दानवीर सा० ज्योतिप्रसाद जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के सपनों को साकार करने के लिए अपनी १०४२ बीघा भूमि व १०००० रुपये नकद गुरुकुल स्थापना के लिए दिए और जब तक जीवित रहे अपनी दानवीरता से सींचते रहे। अब भी उनके वधुओं का स्नेह पुत्रवत् बना हुआ है और बना रहेगा। स्वामी श्रद्धानन्द जी की पावन प्रेरणा से और इस विद्यादान से अनेक परीं में ज्ञान ज्योति जगमगा रही है। यहा प्रातः की बेला से वेद-मन्त्रों का श्रौत उपनिषदों का गानन सुनाई देता है तो विद्यालय समय में गुरुकुल के बहुचारी सक्रत के साथ धरणी के ज्ञान का स्रोत बहाते हुए कुलभूमि में गुरुकुल के योग्य ज्ञातक अध्यापकों, प्रशिक्षित अध्यापकों व विज्ञानों के हाथों में अपने प्रतिष्ठित जो सुशिक्षित अनुभव करते हैं। आप सब के सहयोग से इस वर्ष की परीक्षा में ४०२ छात्र बहुचारी उपस्थित हुए ७१ शहरी व ४०१ देहाती बालक हैं, जो गत वर्ष से ५४ अधिक हैं। हमें गौरव है कि इस वर्ष हमने १२५ बच्चों को प्रवेश दिया जो १९१२ से अब तक सर्वाधिक हैं और अनेकों माता-पिता को केवल इसलिए नाराज होना पड़ा कि हय उनके बच्चों को स्थानाभाव के कारण प्रवेश न दे सके सो हम क्षमाप्रार्थी हैं। क्योंकि प्रागे प्रवेश हय तभी दे सकते हैं अब निर्माणाधीन गायत्री भवन पूर्ण हो।

### सांस्कृतिक-कार्यक्रम

बच्चों के मानसिक, बौद्धिक और सांस्कृतिक विकास के लिए अनेकों प्रयोग किए गए हैं, क्योंकि यह प्रायः माना जाता है कि गुरुकुल में बियड़े हुए व शरारती बच्चे या जिनका बौद्धिक स्तर निम्न हो, संश्लेष में जिनके माता-पिता उनसे तंग हों, उन्हें ही यहाँ प्रवेश दिया जाता है। ऐसे बच्चों को माता-पिता का प्यार देकर उनके बौद्धिक स्तर को उच्चा उठाकर उन्हें सकल आर्थे नागरिक बनाना हमारा श्रेय्य रहता है। इसलिए प्रति शनिवार बाल बाल्यविनी सभा का प्रायोजन किया जाता है। उन्हें घर जैसे वातावरण में अपनी सम्मता, परम्परा एवं आचार-विचार तथा आहार-व्यवहार की मर्यादाओं का पावन करते हुए अपनी संस्कृति से प्रेम करना सिखाया जाता है। जिसके लिए भाषण प्रतियोगिता आदि का भी प्रायोजन कर उन्हें प्रोत्साहन दिया जाता है।

बहा केवल-कृद के क्षेत्र में गुरुकुल के बहुचारीयों ने कीर्तिमान स्थापित दिये हैं, बहों पर सांस्कृतिक कार्यक्रम में भी पिछड़े नहीं हैं। इस बार दिसम्बर मास की राज्य प्रतियोगिता भारतीय सेवा सभ मन्दिरे में आयोजित की गई थी। जिसमें गुरुकुल के दो छात्रों ने प्रथम स्थान तथा दो ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। जिन्हा शिक्षा अधिकारी द्वारा आयोजित नीता स्कोकोन्वर्षण प्रतियोगिता मे भाग लेकर द्वितीय स्थान प्राप्त किया। १९-१-६० को बंशं पंचमी का त्योहार खेल उत्सव के रूप मे मनाया गया जिसकी अध्यक्षता श्री महेशप्रसिंह जी मलिक D.I.G. पुलिस हरयाणा ने की व ५०००/-६० दान कुसती हेतु दिया तथा मुख्य अतिथि श्री बालकृष्णसिंह जी ने रामप्रसाद विजित्स स्टेटियम की धारावसिता रबी।

### भोजन व्यवस्था

बच्चों को भारत सरकार द्वारा स्वीकृत निश्चित वंजानिक खुराक दी जाती है। जिसमे ३०० ग्राम दूध व फल नियमित रूप से दिए जाते हैं। भोजन बनाने के लिए प्रशिक्षित पाचक कार्य करते हैं। इस व्यवस्था का अनुमान प्राय बच्चों का स्वास्थ्य देखकर सज्ञ हो लगा सकते हैं।

### गोशाला

महर्षि श्रद्धानन्द के आदेशानुसार श्री हरराज जी कपूर (भूतपूर्व पुलिस अधीक्षक) विशेषरूप से गोशाला का समय-समय पर मार्ग-दर्शन करते हैं। गोशाला में इस समय विदेश नस्ल की ४३ गाय, ३६ बछियाँ, २ बच्छे व ६ सांड २ बेल हैं। इस समय हमें गोशाला से २५० कि० ग्राम दूध नियम प्राप्त होता है, जो बच्चों को दिया जाता है। इस समय हमारी गोशाला में ३५ किनीयाम तक दूध देनेवाली गायें हैं हमें आशा ही नहीं पूर्ण विस्वास है कि अगर सबका सहयोग इसी प्रकार बना रहा तो हमारी गोशाला आगामी वर्ष में सहर की उच्चकोटि की गोशाला हो सकती है। गत वर्ष साहिवाल व होस्टन गायों ने क्रमशः १६ लीटर व २९ लीटर दूध देकर ५०००/- का इनाम हरयाणा सरकार से लिया। सम्पूर्ण हरयाणा की गोशालाओं में हमारे गुरुकुल की गीर्वाँ में दूध एवं सुन्दरता में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त कर कीर्तिमान स्थापित किया जाता हये ग्वं है।

### पुस्तकालय

बच्चों के बौद्धिक विकास हेतु गुरुकुल का अपना पुस्तकालय है जिसमे ३० हजार के लगभग मूल्य की पुस्तकें हैं। इसी वर्ष हमने पुस्तकालय हेतु लगभग ६ हजार रुपये की गई पुस्तकें खरीदी हैं जिसमें साहित्य व धर्म के साथ-साथ बालोपयोगी अनेकी पुस्तकें हैं। पुस्तकालय में दैनिक साप्ताहिक पत्र पत्रिकायें आती हैं। जिनकी समस्त व्यवस्था श्री इन्द्रमणि जी शाल्मी करते हैं।

### प्रशिक्षण शिविर

आर्यसमाज के प्रख्यात योगाचार्य डा० देवव्रत आचार्य के निदेशन में १५ मार्च से १ अप्रैल तक एक योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें गुरुकुल के सभी छात्रों ने विविधन् प्रशिक्षण प्राप्त किया। क्षेत्र में कले गम्भीर शहरी से बच्चों को वचाने के लिए डा० देवव्रत आचार्य को देख-रेख में यह योग एष प्राकृतिक चिकित्सा शिविर आपके सामने है। इससे अनेक रोगी लाभ उठा सकते हैं, इस समय धार्यबीर दल का शिविर भी साथ ही चल रहा है और आर्यबीर प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। इस शिविर में ४२० छात्र सामान्यित हो रहे हैं तथा बहा प्रख्यात, छात्र एवं वाहर के व्यक्ति भी लाभ उठाते रहे हैं। इस प्रकार के शिविर वर्ष में दो बार अवश्य लगाये जाते हैं।

श्रद्धह्वर मास में गुरुकुल के छात्रों को व्यायाम, प्राणायाम, योगाभ्यास आदि का प्रशिक्षण सिखाने हेतु श्री डा० देवव्रत जी आचार्य की देख-रेख में एक दिन तक शिविर लगाया गया। इस अवसर पर स० नुरद्वालासिंह सेनी संसद सदस्य ने अध्यक्षता की।

### शिक्षा विभाग

इस वर्ष हमारा वार्षिक परिणाम १०० प्रतिशत रहा है। जबकि किसी भी अंगी के प्रथमचर हमारे अध्यापक स्वयं न बनाते हैं और न ही कापियों की जांच करते हैं। सभी प्रश्नचर व जांच वाहर से कराई जाती है। निःसन्देह इस समय यह सत्य शिक्षाजगत् में अति उन्नति के पथ पर अग्रसर है।

### कोड़ा

हमारे बहुचारीयों ने बेधों में भाग लेकर कुक्षेत्र जिले का नाम अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर नुजाया है।

(सेष पृष्ठ २ पर)

## आर्य पर्वों की सूची-१९६१

क्र०सं०	नाम पर्व	बंधो तिथि	वार
१-	मकर सक्रांति	१४-१-१९६१	सोमवार
२-	बसन्त पंचमी	२१-१-१९६१	सोमवार
३-	सीता अष्टमी	६-२-१९६१	बुधवार
४-	दयानन्द बोधरात्रि	१३-२-१९६१	बुधवार
५-	लेखराम तृतीया	१७-२-१९६१	रविवार
६-	नवसंस्थेष्टि	२०-२-१९६१	गुरुवार
७-	होली (फाग)	२-३-१९६१	
८-	प्रार्यसमाज स्थापना दिवस	१७-३-१९६१	रविवार
९-	राम नवमी	२४-३-१९६१	रविवार
१०-	हरि तृतीया	१४-०-१९६१	रविवार
११-	श्रावणो उपवास	१४-०-१९६१	रविवार
१२-	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	२-९-१९६१	सोमवार
१३-	विजयादशमी/श्री सिद्धान्ती जन्मदिवस	१०-९-१९६१	गुरुवार
१४-	गुरु विरजानन्द दिवस	२१-१०-१९६१	सोमवार
१५-	म० दयानन्द निष्ठा दिवस	५-११-१९६१	मंगलवार
१६-	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान	२३-१२-१९६१	सोमवार

नोट—सभी आर्यसमाजों इन पर्वों को सोत्साह मनावें तथा इन्हें आर्यसमाज का प्रचार साधन बनायें।

—सभा मन्त्री

## स्वर्गीय स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी

### का ११३वां जन्मदिन

स्वर्गीय स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के ११३वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में कालावाली मण्डों में श्री मदनलाल जी आर्य की दुकान पर श्री ओमप्रकाश जी वानप्रस्थो गुरुकुल बठिंवा की अध्यक्षता में मनाया गया। सन्ध्या हुवन मंत्र प्रार्थना के पश्चात् श्री ओमप्रकाश वानप्रस्थी ने श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द महाराज के तप-त्याग आर्यसमाज की अनेक सेवाओं, हैदराबाद सत्याग्रह, लोहार काष्ठ की घटनाओं को वताते हुए अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की। हमें भी उनसे प्रेरणा लेकर उनकी शिक्षाओं का पालन करने हुए अपने को सच्चा आर्य बनाने का यत्न करना चाहिए। मदनमोहन आर्य कालावाली मण्डों

इसी प्रकार ३१ दिसम्बर को दयानन्द मठ रोहतक यज्ञशाला में स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का जन्मदिवस मद्रासधर भरतसिंह वानप्रस्थो की अध्यक्षता में मनाया गया जिसमें वेंच भरतसिंह, धर्मवीर आर्य ने स्वामी जी की जीवनी पर प्रकाश डाला।

—भा० मेघराज आर्य

## श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर भाषण

### प्रतियोगिता सम्पन्न

शामसुख—स्थानीय एस० के० स्कूल में भाषण प्रतियोगिता सम्पन्न हुई। उपरोक्त प्रतियोगिता के विषय निम्न है।

- (१) स्वामी श्रद्धानन्द के कीर्तिस्तम्भ गुरुकुल।
- (२) स्वामी श्रद्धानन्द का स्वतन्त्रता प्राप्ति में योगदान।
- (३) अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द।
- (४) संस्कृति रक्षक—स्वामी श्रद्धानन्द।

इस प्रतियोगिता में दस छात्रों ने भाग लिया। निर्णायक मण्डल के अनुसार महेन्द्रसिंह दशोभिया आत्मज श्री मन्मथसिंह (प्रथम) श्रवणकुमार आत्मज श्री रमवीरसिंह (द्वितीय) तथा रमेशकुमार आत्मज श्री रविशंकर (तृतीय) घोषित किए गए।

—मुम्बाम्ब्यापक

## आर्यसमाजों के अधिकारियों के लिए बिना छेतावनवी

आर्यसमाजों के अधिकारियों को सूचित किया जाता है कि एक बुद्धक सन्ध्याओं जो अपना नाम आनन्दप्रकाश बताता है और अपने धारको स्वामी रामेश्वरानन्द जी महाराज का शिष्य बताकर दिल्ली के आर्यसमाजों में पहुंच जाता है। उसने गुरुकुल हल्दीघाटी (उधरपुर) के नाम से रसीद बुके छपवा रखी है और गुरुकुल में भोजों के घरोब बच्चों के लिए उनकी पढ़ाई आदि के लिए नकद राशि तथा गरम वस्त्र आदि एकत्रित करता है। वह कपड़े आदि से जाकर इधर-उधर बेच देता है। आर्यसमाज जनकपुरी डी-ब्लॉक, नई दिल्ली के अधिकारियों ने इस व्यक्ति को पूरी छानबीन कराई है और सभा को सूचना दी है।

आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि वे ऐसे घोषा देकर धन ऐंठने वाले व्यक्ति से सावधान रहें और ऐसे व्यक्ति को आश्रय और धन आदि न दें। प्रचार मन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

## कन्या गुरुकुल, हाथरस की मुख्याधिष्ठात्री एवं आचार्या श्रीमती अक्षयकुमारी शास्त्री का निधन

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, हाथरस (अनपद-धर्मोत्तम) उ० प्र० की मुख्याधिष्ठात्री एवं आचार्या श्रीमती अक्षयकुमारी शास्त्री का दिनांक १४-१२-६० को गुरुकुल में निधन हो गया। उनके श्राद्धिक निधन से सारे कुलवासी स्तब्ध रह गये। प्रधानक महान् वक्ष्यात हो गया। सारा गुरुकुल शोक में डूब गया।

दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं सद्गति के लिए दिनांक १७-१२-६० को शान्ति यज्ञ किया गया, जिसमें १०१ गायत्री मन्त्रों से आहुतियां दी गईं। दिनांक १८-१२-६० से २४-१२-६० तक यजुर्वेद के जुते हुए अध्यायों एवं चतुर्वेद शतकम् से यज्ञ किया गया। दिनांक २४-१२-६० को बुद्धि-यज्ञ में दूर-दूर से महानुभाव एवं स्नातिकाएं पधारे, तथा कुलमाता को भावभोगी बजावटि दी।

श्रीमती अक्षयकुमारी जो शास्त्री ने निरन्तर तास वर्ष तक कन्या गुरुकुल हाथरस में मुख्याधिष्ठात्री एवं आचार्या पद पर कार्य किया तथा अपनी योग्यता एवं कर्मठता में गुरुकुल की चहुँमुखी आशावादी उत्पत्ति की।

श्री महेंद्रप्रताप जी शास्त्री ने अपनी धर्मपत्नी श्रीमती अक्षय-कुमारी जो शास्त्री की स्मृति में द० ११००/- कन्या गुरुकुल, हाथरस हेतु तथा १२ अन्य सस्यार्थों को १०१-१०१ रुपये प्रदान किये।

## भारती लौटाए

फिल्मो—गत दिनों निकटवर्ती गांव मीरसिंहपुर के निवासी हरमजनसिंह की सड़की की सारों में ५५ सदस्यों की भारत वाई। शिरोमणि अकाली दल (मान), संकल फिल्मोरे के अध्यक्ष जोगासिंह के प्रमुखार उम्होंने भारतियों से सम्पर्क किया व अधिक भारत लाने पर रोष व्यक्त किया। भारतियों, सड़की के अधिभावकों तथा गांव के सरपंच ने मिमन्ते कर २० व्यक्ति भारत में सम्मिलित होने को मनवाया व बाकी वापिस लौटा दिये गये।

श्री जोगासिंह ने सरपंच व अन्य गांव वालों से अनुरोध किया कि किसी भी भारत में ११ से अधिक सदस्य न लाए जाएं।

उन्होंने युवा वर्ग से भी अपील की कि वह उक्त बात का ध्यान रखें व समाज सुधार कार्यों में सहयोग दें। उम्होंने श्रियों से भी अनुरोध किया कि वे अपना भारतीय न लाए व इन निर्देशों का उल्लंघन करनेवालों को सबक सिखाएं।

दैनिक टिप्पण

## वेदप्रचार मण्डल जिला जीन्द की मासिक बैठकें

प्रो० ओमकुमार भाय

वेदप्रचार मण्डल जिला जीन्द की मासिक बैठक श्री सयोजक, स्वामी रत्नदेव जी की अध्यक्षता में ६-१२-६० की आर्यसमाज मन्दिर जीन्द शहर में हुई। इसमें स्थानीय एवं बाहर से आये हुए १५ सदस्य उपस्थित थे। बैठक में अब तक के प्रचार सहायक की समीक्षा की गई और प्रगति पर सतोष व्यक्त किया गया। विसम्बर मास के लिए निम्नलिखित गावों को प्रचार हेतु चुना गया—गंतोली, रामकली, गढवाली बेडा, करेला, झमोला, मालवी, बूढाखावा लाठर, पोबी, हृषकला, फिला जफरगढ, अन्नपण्ड बाह्यबास तथा मोटावाला। आवश्यकतानुसार इस सूची में परिवर्तन और संशोधन भी किया जा सकता है।

संयोजक स्वामी रत्नदेव जी महाराज ने सुझाव रखा कि मण्डल के बढ़ते हुए कार्य को देखते हुए भवनोपदेशक भी चन्द्रमान जी को भवनमण्डली की सहायताएं एक प्रचार सहायक की भी जरूरत है जो कि व्यवस्था में सहयोग दे सके। प्रतः कुछ समय के परीक्षण पर की सतबीरसिंह जी आर्य (श्यामली कर्मा) को प्रचार-सहायक नियुक्त किया जाए। सभी सदस्यों ने सर्वसम्मति से यह सुझाव मान्य किया। आर्यसमाज जीन्द जंक्शन के मन्त्री श्री वेदपार्षदसिंह जी आय ने सूचना दी कि आयसमाज जीन्द जंक्शन ने एक सौ ७० प्रति मास भ्रष्टदान मण्डल वास्ते स्वीकृति किया है और उन्होंने पिछला बकाया ३०० ७० जमा भी करवाया।

सभी उपस्थित सदस्यों ने महसूस किया कि सभा से अनुरोध करके आर्यसमाज सफीदो का विवाद भी सुलझाया जाये क्योंकि आर्य समाज सफीदो भी इस क्षेत्र का मजबूत समाज है और विवाद के चलते वहा से मण्डल को अज्ञान नहीं मिल पा रहा है।

**जनवरी की बैठक**—वेद प्रचार मण्डल जिला जीन्द की मासिक बैठक ६-१२-६१ प्रातः ११-०० बजे माननीय संयोजक स्वामी रत्नदेव जी की अध्यक्षता में आर्यसमाज मन्दिर जीन्द जंक्शन में हुई। इसमें १२ सदस्य उपस्थित थे। गत कार्यवाही की पुष्टि की गई और विसम्बर १९६० में किये गये। वेद प्रचार के कार्य की समीक्षा की गई तथा जनवरी १९६१ के दौरान निम्नलिखित गावों के प्रचार के लिए चुना गया—लुग, रायचढवाला, शाहपुर, कुचराणा कर्मा व खुद, छातर, गीराल बेडा, जीवनपुर, बनसडी, दावतवाला, रूपगढ, जीतगढ, ङेर बेडी, अहरीका, अमरहेडी। मण्डल के भवनोपदेशक श्री चन्द्रमान जी धार्य की भवनमण्डली की मांग बाहर भी रहती है और इसी के परिणामस्वरूप मण्डली को ७-८ जनवरी को प्रचारार्थ गुरुकुल घरीण्डा भी भेजा गया।

सर्वसम्मति से तय हुआ कि आर्यसमाज जीन्द जंक्शन के प्रधान श्री कृष्णलाल जी नूजा तथा धार्य प्राथमिक पाठशाला, आर्यसमाज जीन्द शहर के प्रबन्धक श्री० देवराज जी प्रनिया को मण्डल की अन्तर्गत में शामिल किया जाये। अतः ये दोनों सञ्जन अंतरंग के सदस्य बना लिये गए हैं। दोनों ही सनशौच आर्यसञ्जन हैं। याति पाठ हुआ और बैठक विसर्जित हुई। अगली बैठक इसी महीने २७-१-६१ रविवार प्रातः ११-०० बजे आर्यसमाज मन्दिर नरवाना में होगी।

### काठपुर में स्वामी अश्वानन्द बलिदान विवस

आर्यसमाज गोविन्दनगर (काठपुर) ने अमर महीदे स्वामी अश्वानन्द बलिदान विवस केन्द्रिय आर्य सभा के अध्यक्ष एवं आर्य नेता श्री देवीदास आर्य की अध्यक्षता में मनाया गया।

समारोह में बक्तोनी ने कहा कि गणेशधरकर विद्यार्थी की तरह स्वामी अश्वानन्द भी सन् १९२६ में साम्प्रदायिकता के शिकार हुये थे। पाकिस्तान बन जाने के बाद आज भी यही साम्प्रदायिकता हमारे देश को खोखला कर रही है। स्वतन्त्रता से पहले अग्नेय सरकार मुस्लिम नुस्तीकरण करती थी। स्वतन्त्रता के बाद आनेवालों सभी सरकारें उसी नीति की अयना कर देश को तवाही की तरफ ले जा रही हैं। बर्मेनिपेक्षता की आड़ में वह नुस्तीकरण किया जा रहा है।

## शुद्धि समाचार

दिनांक ३०-१२-६० को ग्राम चैनपुर के आदिवासी ईसाइयों को सोतापुर जिला सरगुजा म० प्र० में यज्ञ हवन कराया गया एवं यज्ञोपवीत धारण कराकर शुद्ध किया गया। और गऊ मास अग्र्य मास शराब न खाने पीने का सक्लप कराया गया। यह कार्यवाही स्वामी सेवानन्द सरस्वती भारतीय हिन्दू शुद्धि संस्थानों सभा हरयाणा वाले के प्रयास से किया गया। यह कार्य स्वामी सतनन्द सरस्वती इयानमनमठ दोनानगर जि० मुरदासपुर (पंजाब) वाले के आदेशानुसार किया गया। इस कार्य में चन्द्रदेव एवं ननारसीदास नडगवाँ वाले का सहयोग रहा और इस कार्य में कल्प के व्यवस्था का सहयोग पवनकुमार स्वात्सिक फेक्ट्री पानोपत हरयाणा का रहा। ३८ नर नारियों की शुद्धि की गई।

दिनांक २७-१२-६० को ग्राम चलता जिला सरगुजा म० प्र० में यज्ञ हवन किया गया। आर्यसमाज चलता के प्रधान श्री गोवर्धन जी की अध्यक्षता में यह कार्य किया गया और यज्ञ में उराल आदिवासी ईसाइयों को शुद्ध किया गया। और जाहूति दिलाई गई। गऊ मास अग्र्य मास शराब न खाने पीने का सक्लप कराया गया। यह कार्यवाही सेवानन्द सरस्वती भारतीय हिन्दू शुद्धि संस्थानों सभा और ब्रह्मचारी सुन्दरदेव नैथिक के द्वारा कपडा वितरण किया गया और यज्ञोपवीत धारण कराया गया। ८ नर-नारियों की शुद्धि की गई।

(पृष्ठ ३ का क्षेत्र)

### अश्वानन्द चिकित्सालय

बच्चों के स्वास्थ्य का ध्यान रखने के लिए गुरुकुल का अपना चिकित्सालय है जहाँ श्री सुबोधसिंह जी, श्री होब्यारसिंह जी उप वेद नित्यप्रति बच्चों का स्वास्थ्य निरोक्षण करते हैं। मम्भोर रोगों की मगर के वडे चिकित्सालय में दिखाना पडता है, क्योंकि धनाभाव के कारण हमारा प्रीयधालय आबुनिल सुविधाओं से युक्त नहीं है।

### प्रयोग

आधुनिक पारचार्य विज्ञानकेन्द्र कुच्छेड विभवविद्यालय की पीठ से पीठ सटाए लडा गुरुकुल विना किलो नरकारो अनुदान के निरन्तर प्रगति कर रहा है। गुरुकुल का मासिक व्यय एक लाख हजार रुपये है तथा विभिन्न खोतो से आय ८०-८५ हजार रुपये है। लगभग २५-३० हजार रुपये का मासिक घाटा हाता है। जो आप सदा दानी महा-नुभवों के सहयोग से पूरा होता है।

ऐसा अवस्था में हम स्वामी जी के अग्रोष्ठ लक्ष्य की पूर्ति में लगे हैं, परन्तु यह तभी सम्भव है, जब आपका सहयोग पहले की अपेक्षा और अधिक मिल सके। जैसा कि कहा गया है "सर्वपापेव दानानां ब्रह्मदानं विशिष्यते" अर्थात् सर्व दानो में विद्या के लिए दान ही अग्रष्ठा होता है।

सजिले  
₹ 00  
सेकेंड

सत्य के प्रचारार्थ

अजिले  
1900  
सेकेंड

मृत्यार्थ प्रकाश

घर घर पहुंचाये

सफेद कागज सुन्दर छपाई

आदर्श संस्करणवितरण करनेवालों के

आफर! सजिले ₹/अजिले ७/

आर्यसाहित्य प्रचार ट्रस्ट

455, वसती बाबा, दिल्ली-6 टेलीफोन: 238380-23314

## आर्य वीरों का प्रशसनीय सेवा कार्य

रोहतक—सांवेदिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन २३ दिसम्बर से २६ दिसम्बर तक नई दिल्ली के रामलीला मैदान में स्वामी आनन्दयोगी जी सरस्वती की अध्यक्षता में उरसाह पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस समारोह को सफल बनाने के लिए जहा धार्य जनता, आर्य सस्थाओं तथा प्रतिनिधि समाजों ने योगदान दिया जहा आर्य वीरदल के सैनिकों का योगदान अत्यधिक रहा। दिन-रात टैन्को में रहते हुए २२ दिसम्बर से ही धार्य वीर सेवा कार्य में जुट गये। आचार्य डा० देववदत जी की अध्यक्षता में धार्य वीरदल का सेवा-शं विधिर लगाया गया जिसमें जहा देहली, बम्बई, महाराष्ट्र, राजस्थान, उत्तरप्रदेश से आर्य वीरों ने भाग लिया जहा हरयाणा प्रान्त की ओर से लगभग ५०० आर्य वीरों ने बड़-बड़ सेवा कार्य किया। एक घोर धार्य वीर रातभर सुरक्षा का कार्य करते वस अड़ते, हवाई अड़ते तथा स्टेशनों पर आनेवाली आर्य जनता का मार्गदर्शन करते वहां सम्मेलन में पचारे हजारों व्यक्तियों की भोजन व्यवस्था भी वड़े सुचारु ढंग से चलाकर समस्त जनता को धार्यवर्ष वसित कर दिया। भोजन व्यवस्था में विशेष तौर से श्री अजीतकुमार धार्य उपसंचालक धार्य वीरदल हरयाणा, श्री सत्यनौर जी उपसंचालक धार्यवीर दल राजस्थान, श्री मुनाष गुगलानी मण्डलपति धार्य वीरदल पानीपत तथा वेदप्रकाश धार्य महामन्त्री आर्य वीरदल हरयाणा ने भोजन वितरण में धार्य वीरों के सहयोग से बहुत ही उत्तम व्यवस्था बनाई। इतने बड़े स्तर के अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के अवसर पर सभी को भोजन प्राप्त हुआ। इस उत्तम व्यवस्था को सौगों द्वारा विशेष रूप से सराहा गया है। यह सभी आर्य जनता के सट्टेपोग से वन पाया है इस समस्त कार्य के लिए जहा आर्य वीरों का विशेष धन्यवाद है जहा आर्य जनता के सहयोग के लिए भी धन्यवाद है।

### विशाल शोभा यात्रा

आर्यजगत के इतिहास में यह पहला अवसर है कि स्वामी भद्रानन्द बलिदान दिवस को केन्द्रिय सभा देहली के द्वारा २५ दिसम्बर को मनाया जाता है जहा अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन के अवसर पर सांस्कृतिक रूप से मनाया गया। एक शोभा यात्रा तथा यात्रार से तथा दूसरी रामलीला मैदान से चलकर दोनों का समाज अजमेरी गेट पर विशाल रूप से हुआ। शोभा यात्रा में आर्य वीरदल के सैनिकों का व्यायाम प्रदर्शन, मखडम विशेष रूप से रस्से पर मलखम, तलवार, शोभा, छाडी देखने के लिए विशाल सगूह सडकों पर उमड़ पड़ा। शोभा यात्रा इतनी खम्बी थी एक सिरा लालकिला पर तो अन्तिम सिरा रामलीला मैदान में अग्री चलने की प्रतीका में था। शोभा यात्रा को उत्तम ढंग चलाने में आर्य वीरों ने बहुत ही सराहनीय योगदान दिया। इस अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में हरयाणा आर्य वीरदल के सैनिकों, धार्य सस्थाओं, समाजों के योगदान के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

वेदप्रकाश धार्य प्रांतीय मन्त्री  
आर्य वीरदल हरयाणा

## निखरना है.....

बातों से बात नहीं बनती, जो कहना है वह करना है। आज के सुन्दर नखते में अब रग अलग का भरना है। वीरों को साक सुधारने, हमने खुद अर्था सुधारना है। विगडों को बनाने की खातिर पहले खुद आस सबरना है। नभभोर पटायें छाईं हों, आंभी की चाहे तुमों का। भवसागर से हर हाव में ही, हमने तो पार उतरना है। उपवन में सहा बहार रहे, पतझड़ का नाम निधान न हो। कसियों की तरह चटकना है, फूलों की तरह निखरना है। भर-भर के बीमा आसों है, मुश्किल है मुश्किल में, जीना। जिसने दुनिया में जीना है, उसने क्या ? मौत से डटना ॥ साक इम पे बनावें टूट पड़े, परवाह नहों कुछ भी उनको। हम दबके रह सकते ही नहीं, हमने हर हाव उभरना है। हम बड़ निश्चयी है 'नाज' सभी मजिल पर जाकर दम लेते। हर ऊबड़ खावड़ रस्ते से हँस-हँस के हमें गुजरना है।

—नाज सोनीपती

## ग्राम कंवारी (हिसार) में वेद प्रचार

दिनांक ३०-१२-६० को ग्राम कंवारी में महाशय जबरसिंह सारी (वेद प्रचार मण्डल हाथी) ने वेदमन्त्रिके भजन तथा स्वर्णकुमार का इतिहास रखा। चोपाल में कडकती सर्दी के बावजूद विशेषकर नवयुवकों ने काफी संख्या में भाग लिया। प्रातःकाल श्री रामेश्वर के चतुर्वेद पर यज्ञ किया। दिनांक ३१-१२-६० को लोगों के बाग्रह पर सर्दी के कारण दिन में मध्याह्न १ बजे से ४ बजे तक प्रचार किया। इस अवसर पर महाशय जी ने महिलाओं के शिक्षाप्रद भजन तथा आर्य वीर ५० लेखराम जी का इतिहास रखा। आर्यसमाज कंवारी के प्रधान श्री अतारसिंह धार्य क्रांतिकारी जी ने शराव से होनेवाले नुकसान से नवयुवकों को अवगत कराया तथा धार्यवासियों से जाग्रह किया कि अब समय जागया है कि हमारे सातवास में विशेष कर शराव बन्दी सहर चल पड़ी है, अब हमें भी पछि नहीं रहना चाहिए। शरावी शराव पीना छोड़े तथा अपने गांव में पूर्ण शराव बन्दी लायू करे। ज्ञातव्य है कि धार्य सुकुमारपुर, उमरा, सुहजापुर में दिसम्बर मास से पूर्ण शराव बन्दी लागू है।

१ जनवरी को प्रातः आर्य निवास (बेतों की दाणी) में ब्र० चेतन देव वैश्वानर (प्रलोहक) द्वारा यज्ञ किया गया। ब्र० जी ने ईश्वर की सत्ता तथा यज्ञ के महत्त्व पर विस्तार से प्रकाश डाला।

डा० ओमप्रकाश धार्य मन्त्री आर्यसमाज कंवारी

## हमारे पूर्वज क्यों बलवान् होते थे

मेरी आयु २५ वर्ष है मैं १९१७ से १९२० तक अम्बोरा पड़ा, छोटा किलो मीटर सोमवार जाते कनिवार आते थे। फिर १९२१-२२ दो साल कांगवा पड़ा साल में दो बार ६० मील जाते व दो बार पैदल आते। तब तब, मोटोसार्दिकल, मोटर की सुधारना न थी। आज हर स्कूल में ५० सडके सार्दिकलो पर आते-जाते हैं बाहे एक मील या दो मील स्कूल हो। हमारे दादा बर्षसाला जिसा सहासो पर पैदल ६० मील आते-जाते थे, लोग तीर्थ यात्रा पर पैदल आते-जाते थे। चक्की का घाटा, धुइ चरखे की धूष, साम-पात की सबची, मोटा सहर पहनते थे, सारा दिन सस्त परिधम करते, खुशी हवा में रहते, कठिन परिधम से खाना-पीया सब हजम, कमी क्वज, बुखार, खासी, जुलाम न होता था। श्रावी २५ वर्ष से पहले न होती थी। शरावशयकताए कम थी। पानी एक-एक मील से लाया पडता था, सोबा कपड़ा साने दीनानगर ३० मील एक दिन जाते दूसरे दिन आते। धाज क्या व्यवस्था है घण्टों मोटर का इन्जिन ३ मील के लिए करते हैं। आज का युवक कोई काम हाथ से करना पसन्द नहीं करता तभी कमजोर शरीर, भूल-प्यास सह नही सकता और बिना परिश्रम कर्तव्य निभाए अच्छा बेटन चाहता है बेटन ही नहीं ऊपरी आमजन भी चाहता है उसे देहा, राधु, समाज की कोई चिन्ता नहीं होती। श्रवणकुमार बेंबे सुकुमार पुत्र अब कहा ? जो अर्थे माता-पिता को बँहूंगे में उठा तीर्थ यात्रा कराते थे।

बे०—सुबोधानन्द

## सर्वजन सूचनार्थ

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मेरी (श्रीरेन्द्रसिंह) विद्याधिकारी की बंक तालिका धुम होमई है। जिस सज्जन को प्राप्त हो उसे निम्न पत्र पर पहुँचाने का कष्ट करे।

मेरा पता—

वीरेन्द्रसिंह S/O भीमसिंह  
V. P. O.—भाबवी  
जि०—रोहतक

पूर्ण विवरण

बंक तालिका-विद्याधिकारी  
अनुक्रमणिका १११  
सर्व १९५८, शिवा केन्द्र-  
गुरुकुल मैसलवा, गुरुकुल  
कांगडी विश्वविद्यालय,  
हरिद्वार।

## क्या आज भी कन्याओं को यज्ञोपवीत का अधिकार नहीं ?

ले— सुखदेव शास्त्री महाप्रवेशक सभा

आधुनिक युग में जबकि नारी किसी भी क्षेत्र में पुरुष से पीछे नहीं है, कानून की दृष्टि से लड़के और लड़की दोनों को समान अधिकार प्राप्त हैं, ऐसे में उपरोक्त प्रश्न कुछ निराशार प्रतीत होता है। परन्तु वर्तमान समय में कन्याओं के यज्ञोपवीत के औचित्य को नकारता हुआ, हरयाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति महोदय का वादेष हमें इस प्रश्न पर पुनर्विचार करने के लिये बाध्य करता है। कुलपति के आदेशानुसार विश्वविद्यालय का कोई अध्यापक श्रमदा कर्मचारी अपनी बन्धिव्य निधि में से अपने पुत्र के यज्ञोपवीत संस्कार के लिये तो श्रद्धा से सकता है परन्तु पुत्री के यज्ञोपवीत संस्कार के लिये नहीं।

कुलपति महोदय का यह आदेश हमें उस युग की याद दिलाता है जबकि निहित स्वार्थ के कारण पाने पंक्तियों ने कहा था 'स्त्री वृद्धी नाद्योपवात्'। अर्थात् नारी शीघ्र शूद्र को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं। महर्षि दयानन्द ने इस वेद विरुद्ध मांग्यता का अबरहस्त लक्षण किया तथा अनेकों प्रमाण सहित यह सिद्ध किया कि नारियों को वेद पढ़ने तथा यज्ञोपवीत धारण करने का उतना ही अधिकार है जितना कि पुरुष जाति को।

किन्तु धर्म की बात है कि आज स्वतन्त्र भारतवर्ष में जहाँ सरकार बाह्यिक बर्ष मानकर मजाल में नारी उन्नयन के लिये जागृति पैदा कर रही है, स्त्री शिक्षा पर विशेष बल दिया जाता है, नारि जाति के लिये परम्परागत भेदभाव को भावना को दूर करने के लिये सरकार कृतसकल्प है, वही, विश्वविद्यालय प्रशासन कन्याओं के यज्ञोपवीत संस्कार को अमाध्य घोषित कर सरकार को अपनी नीतियों का उपहास कर रहा है।

हमारे राष्ट्र की धर्मनिरपेक्ष सरकार प्रत्येक व्यक्ति को अपनी धार्मिक मान्यताओं के अनुसार आचरण करने का अधिकार देती है तथा सभी धर्मों के अनुयायियों को धार्मिक भावनाओं का समुचित आदर करने के लिये बचनबद्ध है। परन्तु कुलपति महोदय की हठधर्मिता तो देखिये कि, कन्याओं का यज्ञोपवीत संस्कार वैदिकधर्म के मान्यताओं के अनुसार है तथा पूर्ण रूप से धर्म संगत है, इस धाराय की जानकारी उन तक पहुंचाने के परवात् भी वह निर्णय देते हैं कि यह युक्ति संगत प्रतीत नहीं होता इसलिये कर्मचारी अपनी पुत्री के यज्ञोपवीत संस्कार के लिए श्रेण नहीं ले सकता।

हरयाणा कृषि विश्वविद्यालय प्रशासन का यह निर्णय वैदिक धर्म के मान्यताओं का भंगमान करता है। धर्मों की धार्मिक भावनाओं पर कुठाराघात है तथा सामाजिक म्याय की मर्यादाओं के विरुद्ध है। आर्यसमाज, प्रशासन के इस निर्णय की निन्दा करता है तथा कुलपति महोदय से इस आदेश को तुरन्त वापिस लेने की मांग करता है।

## हरियाणा खादी बोर्ड हजारों युवकों को रोजगार देगा



नीनोबेटी—हरयाणा में चानू बर्ष के दौरान खादी एवं धामोयोग बोर्ड द्वारा २५ हजार युवकों को रोजगार उपलब्ध करवाया जाएगा व चार हजार नयी इकाइयों को प्रोत्साहित किया जाएगा।

उपरोक्त जानकारी हरयाणा खादी एवं धामोयोग के चेयरमैन सतीश मित्तल नेगत दिनों स्थानीय भारत सरकार के उद्योग मंत्रालय के विकास आणुक्त (सूक्ष्म उद्योग) के धनसंगत एकीकृत प्रशिक्षण केन्द्र के निष्कर्षण

सर्जों के समापन समारोह में दी।

इस अवसर पर श्री मित्तल ने कहा कि भारत जैसे कृषिप्रधान देश में जहाँ ८० प्रतिशत लोग गांव में बसते हैं। इसलिये ग्रामीण एवं सूक्ष्म उद्योग के बिना देश में विशेषतः गांव में आर्थिक तरक्की एवं सामनहीन व्यक्तियों की कायाकल्प के लिए कोई अन्य मार्ग नहीं हो सकता।

उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाणपत्र प्रदान करते हुए उन्हें विश्वास दिलाया कि हरयाणा खादी एवं धामोयोग बोर्ड उन्हें ज्यादा

दिनांक २३-२६ विसम्बर, १९६० को आयोजित श्रार्य महा-

सम्मेलन में शिक्षा सम्मेलन में पारित प्रस्ताव

भारत की मुकुल शिक्षा प्रणाली सत्तार की सबसे प्राचीन शिक्षा पद्धति है। देश की वर्तमान परिस्थितियों में मुकुल शिक्षा पद्धति सर्वथा उपयोगी है। आर्यसमाज के सत्यापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने प्रेमा प्रवृत्त कर १९वीं शती के उत्तरार्द्ध में स्वामी श्रदानन्द ने मुकुल श्रान्दोलन प्रारम्भ किया था और हरिद्वार में गया नट पर डिमानय की उपस्था में कांगड़ी श्राम के पास पहला मुकुल स्थापित किया था। मुकुल कांगड़ी की सफलता से प्रभावित होकर पंजाब, उत्तरप्रदेश, हरयाणा, राजस्थान, बिहार, गुजरात, मध्यप्रदेश, उड़ीसा आदि अनेक राज्यों में मुकुल स्थापित किए गए। वेद है कि देश की स्वाधीनता के पश्चात् शासन के कर्णधारों ने मुकुल शिक्षा पद्धति की ओर उचित ध्यान नहीं दिया।

अनेक शिक्षा श्रार्यों और शिक्षासमितियों की सिफारिशों के बावजूद आज भी देश की कोई सुविचारित शीघ्र स्पष्ट शिक्षानिती नहीं है। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का निश्चित मत है कि मुकुल शिक्षा पद्धति देश के युवकों का चारित्रिक, मानसिक, बौद्धिक, शारीरिक, प्राथमिक और शैक्षिक विकास करने में समर्थ है। आज यह सम्मेलन भारत सरकार से आग्रहपूर्वक अनुरोध करता है कि :

१. सरकार मुकुल शिक्षा पद्धति को मान्यता और संरक्षण प्रदान कर इसे देश की शिक्षा नीति का अभिन्न अंग बनाए।
२. यह सम्मेलन देश के ममस्त आर्य मुकुलों से अनुरोध करता है कि वे यमान पाठ लिखि अपनाकर मुकुल शिक्षा पद्धति और मुकुलों के एकीकरण में सक्रिय सहयोग प्रदान करें।
३. सम्मेलन का निश्चित विचार है कि श्रार्यसमाज की समस्त शिक्षा मस्याओं में बौद्धिक सिद्धान्तों की शिक्षा, नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा और भारतीय संस्कृति के शिक्षण पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

निजी सहायक कुलपति मुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

## आकाशवाणी रोहतक केन्द्र से सुनिये—

सुखदेव शास्त्री का साक्ष्य

दिनांक १७ जनवरी, १९६१

समय : रात-१०-०० बजे

विषय है—लड़का-नरकी में फर्क की भावना समाप्त करना।

(झारा—पर्यवान)

(प्रथम पृष्ठ का खंड)

बंधक में श्रोत्र और तेज को बढानेवाला तथा अग्नि दीपक कहा गया है। धार्य पर्व पर दान, जो धर्म का एक स्क्व है, अवश्यपेव ही कर्तव्य है और—

देशे काले च पात्रे च तद्दानं सार्विकं स्मृतम्।

गीता, अध्याय १७। श्लोक २० ॥

धर्य—देश, काल और पात्र के अनुसार ही दिया हुआ दान 'सार्विक' कहलाता है। तथा—

दरिद्राश्चर कौन्तेय मा प्रपञ्चैवरे धनम्।

अर्य—हे अर्जुन ! दरिद्रों का पालन करो, धनियों को धन मत दो। इन श्रौमद्व्याख्यानपीठा के बचनों के अनुसार इस प्रबल शीलकाव में मकर सक्राण्टि पर दीनों को कन्यत्व आदि का दान परम धर्म है।

पंजाब में मकर संक्रान्ति के पहिले दिन शीवी का तेवहार मताने की रीति है। इस अवसर पर स्थान-स्थान पर होलों के समान अनियाँ प्रज्वलित की जाती हैं और उनमें तपे हुए गन्ने मूषि पर पटकाकर आनन्द मनाया जाता है। उससे अगले दिन वहा मकर सक्राण्टि का तो उत्सव होता है, जिसको वहा 'माषो' बोलते हैं। ज्ञात होता है कि यह दोनों दिन के लगातार दो उत्सव न होकर दिनद्वय-व्यापी मकर सक्राण्टि महोत्सव के एक ही उप का जगज्जप्ट रूप है। पंजाब के आर्यसमाजिक पुरुषों को चाहिए कि वे दो दिन नैत्रान न मनाकर मकर सक्राण्टि की तिथि को ही परिभाजित रूप में इस पर्व को मनाए और धार्यधार्मिक जगत् में पर्वों की एकाकारता स्थापित



पीनूप-पान

### सुख शान्ति कैसे मिले ?

( प्रवाहक—वेनेज कुमार कपूर, बम्बई )

ब नो मित्र चं वरुणः चं नो भवत्वयमा ।  
च न इन्द्रो बहुस्पतिः शंनो विष्णुश्चक्रम ।

शु० १९६०ई

भावार्थ—सुख तथा शान्ति को प्राप्ति के लिए इस पवित्र मन्त्र द्वारा भगवान् से प्रार्थना की गई है, जो मित्र-वरुण-अयमा-इन्द्र-बहुस्पति-विष्णु तथा चक्रम है ।

सुख-शान्ति का विपासु जीव इन्ही उत्कृष्ट गुणों को जीवन में धारण करते ही उस शाश्वत शान्ति का रसास्वादन करने लगता है ।

'मित्रव्याहृन्सुखा सर्वाणि भूतानि समोषे' अर्थात् मैं सब प्राणि-मान को मित्र की दृष्टि से देख—इस बौद्धिक लोरी में जब मानव भूलेगा, उसका कोई बंदी ही ससागर में न रहेगा, तो शान्ति तो स्वयमेव स्थित रहेगी, तथा उसका जीवन मैत्री-भाव के पलने में सुसमोर से भ्रमता रहेगा ।

इसी प्रकार उन्नति के मार्ग पर अग्रसर, करनेयोग्य सुभ गुणों को धारण करनेवाला जब बहु बरदा बन प्रविष्ट, ती यमा की कीर्ति मुगध में जीवन सुक्षम हो जावेगा ।

प्रयास को भावना से प्रेरित, जब किमी में मनमा वाचा कर्मणा अग्रयाव न रहेगा, तो ध्यात्मशक्ति अग्रहू दय को त्रपना सदन बना

लेगी । ऐश्वर्यप्राप्ति के साधनों में जुटा हुआ सुकृतु तथा शतकृतु बना हुआ, जब सब प्रकार के सुख साधनों को सम्पादित कर सोमी बन जावेगा, किसी प्रकार का अभाव ही उसके जीवन में न रहेगा, तो सुख-शान्ति तो दासी बनकर उस इन्द्र की सदा परिचर्या करेगी ही ।

वेदज्ञान का पालन करनेवाला बहुस्पति बनेगा, तो उसी वेदज्ञान से प्राप्त विज्ञान-वन से वह सदा सुख का उपभोग करेगा । सब गुणों में व्याप्य विष्णु की शान्ति जब जीव का प्रवेश भी सब दिव्य गुणों में निरन्तर होता रहेगा, तब वह सब गुणों का स्वामी बनकर दिव्य सुखों का अनुभव करेगा ।

इस प्रकार इन वि षभ गुणों को जीवन का अंगसमी बनकर बहु उरुक्रम बन जावेगा । सब प्रकार का पराक्रम उसकी सुख-शान्ति ही सदा रक्षा करेगा ।

प्रसुदेव । कृपा करो ! हम शपके इन विविध गुणों को जीवन में धारण कर सदा सुखी तथा शान्त रहे ।

जबदोश हमारा सदा मित्र, सदा शान्ति की वृष्टि करे ।  
करने योग्य बही वरुण देव, शान्ति से हम सब को भरे ।  
न्यायकारी वह महान् देव, सदा न्याय से शान्त करे ।  
सब ऐश्वर्यों का दाता देव, सुख-सम्पदा का दान करे ।  
वेदज्ञान का महान् दाना, धर-धर व्यापक शान्त करे ।  
महान् शक्ति विपुल उल्लासता, सोम्य शान्ति दान करे ।


✽


# गुरुकुल

कांगड़ी फार्मसी की  
आयुर्वेदिक औषधियां सेवन कर स्वास्थ्य लाभ करें

**गुरुकुल च्यवनप्राथ**

पुरे परिहार के लिए शक्तिवर्धक एवं स्फुटितक रसायन।  
बन्नी, उच्च व शारीरिक एवं केन्द्रीय की रचना में उपयोगी आयुर्वेदिक औषधीय द्रव्य।






**गुरुकुल पायकिल**

कौनो व कष्टों से मसलत गयीं से विराम पायीयिका व रोग उपयोगी आयुर्वेदिक औषधि



**गुरुकुल चाप**

मुजब व इन्फ्लूएंजा घबराह आदि से जमनी बियेके में बनी आयुर्वेदिक औषधि



**गुरुकुलकांगड़ीफार्मसी हरिद्वार (उ० प्र०)**

### गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी

हरिद्वार

की औषधियां सेवन करें ।

शाखा कार्यालय

६३ गली राजा केदारनाथ,  
चावड़ी बजार, दिल्ली-६

स्थानीय विक्रेताओं एवं सुपर बाजार से खरीवे

फोन नं० २६१८७१

शाखा कार्यालय: ६३, गली राजा केदारनाथ  
चावड़ी बाजार, दिल्ली-११०००६

'प्रवर'—दिसम्बर २०४३

आर्य समाज के अंगरेजों के अत्याचारों के विरुद्ध शास्त्रों द्वारा प्रमाणित रूप में लिए सब्रितकारी मुद्रणालय रोहतक में छपाकर सब्रितकारी कार्यालय एवं उपदेवविह मिद्वानी भाग, आर्य समाज के अत्याचारों में प्रकाशित ।



# आर्य समाज

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—सुबेसिंह सभामन्त्री

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

सहसम्पादक—प्रकाशचौर बिद्यानंकार एम० ए०

वर्ष १८ अंक २१ जनवरी, १९६१ भाषिक मुक्त ३० (आजीवन मुक्त ३०१) विदेश में ८ पौड एक प्रति ७५ पैसे

## वेद में ज्योतिष विद्या

(पं० चमंडेव 'मनोमो' वेदतोष, मुम्बई कालम्हा।)

लोक दो प्रकार के होते हैं, एक तो प्रकाश करनेवाले और दूसरे वे जो प्रकाश किये जाते हैं। इस विषय में वेद के प्रमाण :-

सखेनोत्तमिता भूमि सखेनोत्तमिता धीः ।

ऋतेनादित्यास्तिष्ठन्ति दिवि सामो अग्निधिनः ॥

सोमेनादित्या बलिनः सोमेन पृथिवी मही ।

अधो नसनासायामेधामुपस्थे सोम आहितः ॥

(अथर्व० का० १४। ऋगु० १। म० १। २)

अर्थात् सत्यस्वरूप परमेश्वर ने ही अपने सामर्थ्य से सूर्य आदि लोकों का चारण किया है। उसी के सामर्थ्य से सूर्यलोक ने भी अन्य लोकों का चारण और प्रकाश किया है तथा ऋत अर्थात् काल ने बारह महीने सूर्य ने किरण और वायु ने भी सूक्ष्म स्थूल त्वरण आदि पदार्थों का यथावत् चारण किया है। (दिवि सोमो) इसी प्रकार दिवि अर्थात् सूर्य के प्रकाश में चन्द्रमा प्रकाशित होता है। उसमें जितना प्रकाश है सो सूर्य आदि लोक का ही है और ईश्वर का प्रकाश तो सब में है परन्तु चन्द्र आदि लोकों में अपना प्रकाश नहीं है, किन्तु सूर्य आदि लोकों से ही चन्द्र और पृथिव्यादिव लोक प्रकाशित हो रहे हैं।

(सोमेनादित्याः) जब आदित्य की किरण चन्द्रमा के साथ युक्त होके उससे उत्पन्न भूमि को प्राप्त होके जलवासी होती है, तभी वे शीतल भी होती हैं, क्योंकि आकाश के जिस-जिस देश में सूर्य के प्रकाश को पृथिवी को छाया डेकती है, उस-उस देश में शीत भी अधिक होता है। जिस-जिस देश में सूर्य को किरण तिरछी पकती है उस-उस देश में गर्मी भी कमती होती है। फिर गर्मी के कम होने और शीतलता के अधिक होने से सब प्रसिद्ध पदार्थों के परमाणु जम जाते हैं। उनसे जमने में पुष्टि होती है और जब उनके बीच में सूर्य की तेज रूप किरण पकती है, तब उनमें से माप उठती है। उनको योग से किरण मां बलवाली होती है। जैसे जल में सूर्य का प्रतिबिम्ब उत्पन्न चमकता है और चन्द्रमा के प्रकाश और वायु से शीतलता आदि जोषधियां भी पुष्ट होती हैं और उनसे पृथिवी पुष्ट होती है। इसीलिये ईश्वर ने नवरात्र लोकों के समीप चन्द्रमा को स्थापित किया है।

कः त्वदेकाकी चरति क उ स्थिञ्जाम्यते पुनः ।

कि ऽ स्थिद्धिमस्य भेषज कि शत्रवन् महत् ॥

सूर्य एकाकी चरति चन्द्रमा जायते पुनः ।

अग्निहोमस्य भेषज भूमिधारपन् महत् ॥ (यजु० २३/८, १०)

अर्थ—(कः त्वः) इस मन्त्र में चार प्रश्न हैं। उनके बीच में से पहिला (प्रश्न)—कीन एकाकी अर्थात् अकेला विचरता और अपने प्रकाश से प्रकाशनामा है? दूसरा—कीन दूसरे के प्रकाश से प्रकाशित होता है? तीसरा—शीत का जोषध क्या है? और चौथा—कीन बड़ा जोष अर्थात् स्थूल पदार्थ रखने का स्थान है।

इन चारों प्रश्नों का क्रम से उत्तर देते हैं—(सूर्य एकाकी) १-इस सप्तर में सूर्य ही एकाकी अर्थात् अकेला विचरता और अपनी ही कील पर घूमता है, तथा प्रकाशस्वरूप होकर सब लोकों का प्रकाश करनेवाला है। २-उसी सूर्य के प्रकाश से चन्द्रमा प्रकाशित होता है। ३-शीत का जोषध अग्नि है। ४-और चौथा यह है पृथिवी साकार चीजों के रखने का स्थान तथा सब चीज बाने का बड़ा खेत है।

अब पृथिवी आदि लोक घूमते हैं वा नहीं इस विषय में लिखा जाता है। इन्हीं सिद्धांत यह है कि वेदशास्त्रों के प्रमाण और युक्ति से भी पृथिवी और सूर्य आदि सब लोक घूमते हैं। इस विषय में ये प्रमाण हैं—

आय गौ. पृथिवरकमोसदमत्तरं पुरः । पितर च प्रथमस्वः ॥

(यजु० ३/१)

अर्थ—गौ नाथ है पृथिवी, सूर्य, चन्द्रमादि लोकों का। वे सब अपनी-अपनी परिधि में अन्तरिक्ष के मध्य में, सदा घूमते रहते हैं, परन्तु जो जल है, सो पृथिवी की माता के समान है क्योंकि पृथिवी जल के परमाणुओं के साथ अपने परमाणुओं के संयोग से ही उत्पन्न हुई है और मेघ मण्डल के जल के बीच में गर्म के समान सदा रहती है और उसके पिता के समान है, इससे सूर्य के चारों ओर घूमती है। इसी प्रकार सूर्य का पिता वायु और आकाश माता तथा चन्द्रमा का अग्नि पिता और जल माता। उनके प्रति वे घूमते हैं। इसी प्रकार से सब लोक अपनी-अपनी कक्षा में सदा घूमते हैं।

या गौर्यन्ति पश्यंति निष्कृत पयो दुहाना वतनीरवारतः ।

सा प्रबुधाया बरुवाय दाशुषे देवेभ्यो दाशुषद्विवा विवस्वते ॥

(अथ० अ० २/७०१०/म० १)

अर्थ—जिस-जिस का नाम 'गौ' कह आये हैं, सो-सी लोक अपने अपने माय में घूमता और पृथिवी अपनी कक्षा में सूर्य के चारों ओर घूमती है। अर्थात् परमेश्वर ने जिस-जिसके घूमने के लिए जो-जो मां निष्कृत अर्थात् निष्चय किया है, उस-उस मां में सब लोक घूमते हैं। वह गौ अनेक प्रकार के रस, फल, फूल, तुष और अन्नादि पदार्थों से सब प्राणियों को निरन्तर पूर्ण करता है तथा अपने अपने घूमने के मार्ग में सब लोक सदा घूमते-घूमते नियम ही से प्राप्त ही रहे हैं। जो विद्यादि उत्तम गुणों का देनेवाला परमेश्वर है, उसी के जानने के लिए सब अर्थात् श्रेष्ठान्ते है और जो विद्वान् लोग हैं उनको उत्तम पदार्थों के दान से अनेक सुखों को भूमि देती ओष पृथिवी, सूर्य, वायु और चन्द्रमा ही ही सब प्राणियों को बारीकी का निमित्त भी है।

इस प्रकार के वेदमन्त्रों से पृथिव्यादिलोक भ्रमण और प्रकाश प्रकाशक विषय का ज्ञान होता है।

## महर्षि दयानन्द सरस्वती की हिन्दी सेवा

(डा० चम्पल, वरिष्ठ प्राध्यापक, जाकिर हुसैन स्नातकोत्तर कालेज, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली)

गतांक से आये—

संसार यात्रा के इस पथिक के हृदय में सोलापन और निश्चलता है—जो भेरे पास थोड़े से रुपये, झोंटी खादि बामुषण था, वह सब पोंनों ने टग लिया कि तुम पक्के वंराय्यवान् तब होगे, जब अपने पास की चीज सब पुण्य कर दोगे। उनके कहने से मैंने सब दे दिया।

वह वंराय्य बहुत ही स्वाभाविक और सामान्य है। यह कल्पना का बलान नहीं है, मन में किये गये विस्तार का वर्णन है। इसमें ठगे जाने का भाव स्पष्ट है। कभी-कभी व्यक्ति जानता है कि वह ठगा जा रहा है, वह जानता है कि उसका शोषण हो रहा है, फिर भी वह उसी राह पर चलता है।

“कुछ दूर चलकर मेरा गमन एक ऐसे घने वन में हुआ, जहाँ के शेष लक्ष्य वन और नाले भी कुछ और बहुत से आगे की मायं भी न चलता था, पर चोटों की उच्चता और कठिनाई के विचार से मैंने सोचा कि पर्वत की चोटों पर चढ़ना असम्भव है। प्रगम्य पहाड़ियों, टीलों और जंगल के प्रतिरिक्त जिसमें मनुष्य का गमन असम्भव था, अब कुछ दिखाई न पड़ा ... जड़े-जड़े कटौत से उनसकर जड़ों की घञ्जियाँ उड़ गयी और शरीर भी क्षत होगया और पांव भी लंगड़े होगये।

यह सारा वर्णन अभिधा में है पर इसका लक्ष्यार्थ भी हो सकता है—पूरा मंशार घना वन है। बाधाओं के विनाश शैल खड है। पथ प्रदर्शक नहीं है। मजिल बहुत दूर है। विषाद निराशा और दोनता साधक को क्रमबद्ध बनाती है।

ऐसे अनेक उदाहरण महर्षि की रचना में मिलेये। इस वर्णन को देखकर विचारात ही नहीं होता कि ऋषियों के मातृभाषा हिन्दी के प्रतिरिक्त कुछ और रहो होगी। शैली को नैसर्गिकता एवं मनोरमता पाठकों को अभिभूत करती है।

आत्मकथा के लेखन के लिए आवश्यक है कि वह केवल श्राव्यप्रकाशन ही न करे, अपितु अपने दोषों, दुर्बलताओं के बारे में भी ऋषि ने सफ़ाच नही किया—

मैंने उनसे कह दिया कि यहाँ से हिलने का प्रयत्न करने की अपेक्षा मैं मर जाना उत्तम समझता हूँ तथा दुर्भाग्यवश, वहाँ मुझे एक वडा दोष जग गया धर्षाव्य भाग पीने का स्वाभाव होगया। लो कई बार उसके प्रभाव से मैं बेसुप होजाया करता ...।

यह ठीक है कि स्वामी जो की यह श्राव्यकथा अधूरी है, पर जितना उन्होंने लिखा, उतना अच्छा ही लिखा। इसमें जीवन के घात प्रतिघातों का समावेश, मानवीय दुर्बलताओं और शक्तियों का सशक्त चित्रण जैसी में मनोरमता, नैसर्गिकता तथा प्रभावोत्पादकता का सम्यक सम्मिश्रण है। डा० चन्द्रभानु सीताराम शोषवरणों ने “हिन्दी गद्य साहित्य” (२६६) पुस्तक में इसे हिन्दी गद्य की सर्वप्रथम आत्मकथा स्वीकार किया है।

यह यान पहले भी कहे जा चुकी है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति थे। महर्षि भारतीय पुनर्जागरण काल में हुए थे और उन्होंने धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में हुए आन्दोलनों को नेतृत्व भी प्रदान किया था। अब: यह स्वाभाविक हो जा कि उनका विद्यालय जनसमुदाय से परिचय होता है। वे अनेक लोगों के सम्यक में आए और उनसे पत्र-व्यवहार १८५० के उत्तरार्द्ध से तो निगमन रूप से और बहुत अधिक लोगों के साथ हुआ। सम्पूर्ण पत्र व्यवहार उपनयन नहीं है। यह आश्चर्य की बात है कि ऋषि कितना लिखते थे। कई-कई कार्य वे एक साथ किया करते थे। उनका पत्र साहित्य उनकी मूर्तु के उपरान्त प्रकाशित हुआ, जिसमें से मुख्य प्रकाशन निम्न प्रकार है:—

१९१० —ऋषि दयानन्द का पत्र-व्यवहार भाग १

सं० महात्मा मुन्शीराम (स्वामी अद्वालय)

१९१०-१९२७—महर्षि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन भाग १ से ४ : पं० भगवद्दत्त

१९३५ —ऋषि दयानन्द का पत्र-व्यवहार भाग-२ : पं० चम्पल

१९६६ —महर्षि पत्र-व्यवहार विशेषांक (सांवेदिक) राम-गोपाल शासनाले।

पं० युषिष्ठिर मोमांसक की टिप्पणियों के साथ “ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन” रामलाल कपूर ट्रस्ट की ओर से प्रकाशित किये गये हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के पत्र साहित्य का उल्लेख हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखकों ने सामान्यतः नहीं किया। यह भी सम्भव है कि उन्हें इनकी जानकारी न थी। कहीं-कहीं उनका विवरण मिलता भी है।

तो उसमें अनेक विषयगत्या हैं जिनकी ओर ध्यान दिया जाना चाहिये।

डा० हरचमाला शर्मा द्वारा सम्पादित “हिन्दी साहित्य का वृहद इतिहास चतुर्दश भाग” के खण्ड ६ में पत्र साहित्य के इतिहास को स्पष्ट करते हुए कहा गया है।

“जब हम पत्र साहित्य के इतिहास पर धिष्ट पात करते हैं, तो हमे ज्ञात होता है कि किमो पत्र सग्रह को सर्वप्रथम प्रकाशित रूप में लाने का श्रेय स्वर्गीय मुन्शीराम (स्वामी अद्वालय) को है। स्वामी जी ने सम्भवतः १९०४ में (आज से २५ वर्ष पूर्व (१९६६) स्वामी दयानन्द सरस्वती के पत्रों का सग्रह प्रकाशित कराया था ५० (५०६)

इन्ही पत्रों में “नोबड द्वारा सम्पादित “हिन्दी साहित्य का इतिहास” में द्वितीय युग के गद्य साहित्य की गौण विधाओं के विवेचन में ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्रों के सग्रह के विषय में लिखा गया है।

“आलोच्य युग में पत्र साहित्य विषयक दो महत्त्वपूर्ण ग्रंथ प्रकाशित हुए। महात्मा मुन्शीराम ने सन् १९०४ में स्वामी दयानन्द सरस्वती संबंधी पत्रों का संकलन किया।” ऐसा लगता है कि दोनों महानुभवों के पत्र सग्रह को देखे बिना ही अपना मन्तव्य व्यक्त कर दिया।

डॉ० हरचमाला शर्मा के ही इतिहास में अन्य लिखा गया है—  
कुछ समय बाद सम्भवतः १९०६ ई० में पं० भगवद्दत्त जी ने अनयक परिश्रम और खोजबीन करके स्वामी दयानन्द सरस्वती के पत्रों का एक विशाल संकलन “ऋषि दयानन्द का पत्र व्यवहार” शोधक से सद्धर्म प्रचार यन्त्रालय मुद्रकाल कोणड़ी से प्रकाशित कराया। यह टिप्पणी भी बिना मूल ग्रंथों को देखे ही कर दी गयी। पं० भगवद्दत्त द्वारा सम्पादित पत्र संग्रह का शोधक “ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन” है। पत्र संग्रह का प्रकाशन वर्ष १९१० ई० में। यह पत्र संकलन विशाल नहीं है। इसमें कुल मिलाकर २२ पत्र हैं।

यह भी आश्चर्य है कि “ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन” के भाग २, ३, ४ का कही उल्लेख ही नहीं मिलता, जबकि ये १९१६, १९२७ और १९२७ में प्रकाशित हुए थे। पं० चम्पल द्वारा सम्पादित “ऋषि दयानन्द का पत्र व्यवहार” का भी कही इतिहास ग्रंथों में उल्लेख नहीं है।

जिस सहाय विस्तृत ने हिन्दी को “आर्यभाषा” घोषित करके, उसके प्रचार प्रसार के लिए अनवरत प्रयत्न किए, उसे “राजवाघा” पत्र प्रतिष्ठित कराने के लिए “हृष्टर कमोत्तन” के पास स्थान-स्थान से ज्ञान पत्र भिजवाये, जिस महापुरुष के पत्र संग्रह प्रकाशित होने के बाद हिन्दी में “पत्र साहित्य” विधा का सूत्रपात हुआ उसको इतिहासकारों ने सही स्थान नहीं दिया।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

## आर्यनेता प्रो० शेरसिंह के अभिनन्दन हेतु अपील

निवेदन है कि आर्यनेता प्रो० शेरसिंह अभिनन्दन समिति की एक प्राथम्यक बैठक दिनांक १३ जनवरी ६१ को गुरुकुल छात्ररत्न में सम्पन्न हुई। इस बैठक में सर्वसम्मति से निम्नलिखित निश्चय किये गए हैं—

१. आर्यनेता प्रो० शेरसिंह के छठी बार आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सर्वसम्मति से प्रधान चुने जाने पर इनका आर्यजनता की ओर से अभिनन्दन करने का निश्चय किया गया है। माननीय प्रो० शेरसिंह जो अपना सारा समय राष्ट्र तथा आर्यसमाज की सेवाओं में लगा रहे हैं। इन्होंने आर्यसमाज द्वारा चलाये गए सभी छात्रोद्योगों में वड़-चक्रक प्राण लिया है। राजनीति में भी रहते हुए धार्मिक तथा सामाजिक कार्यों में अग्रणी रहे हैं। गुप्त-कुलों तथा आर्य विद्यालयों को अनुदान विलबाधा तथा आर्य पाठ विधि को केन्द्र सरकार से माग्यता दिलवाई। संस्कृत तथा हिन्दी अध्यापकों को अर्थों के अध्यापकों के समान वेतनमान स्वीकार कवाये। कुक्षेत्र में संस्कृत विद्याविद्यालय तथा रोहतक में महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय की स्थापना करने में प्रमुख भूमिका निभाई। पृथक् हत्याणा राज्य बनाने में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए सबसे पूर्व धाराज उठाई और सफल किया। आर्यसमाज के ऐतिहासिक हैदराबाद आर्य सत्याग्रहियों को भारत पृथक द्वारा स्वतंत्रता सेनानी घोषित करवाया और उन्हें सम्मानित पेंशन दिलवाने के लिए अथक परिश्रम किया। पंजाब तथा केन्द्र सरकार में जिस विभाग के मन्त्री बने, वहाँ बहुत ही ईमानदारी से सराहनीय कार्य किये। इनकी इन ध्यानदार सेवाओं से प्रभावित होकर भारत सरकार ने योजना आयोग का सदस्य नियुक्त किया है। इससे आर्यसमाज का गौरव बढ़ा है। अतः आर्यजनता में भी इनका अभिनन्दन करने सम्मानित करने का निश्चय किया है।

२. प्रो० साहू को एक अभिनन्दन धर्म्य तथा कार भेंट की जावेगी।

३. इस योजना को सफल करने के लिए धन सहज करने का कार्यक्रम बनाया गया है। अतः प्रत्येक आर्यसमाज तथा आर्यसंस्था के अधिकारियों से नम्र निवेदन है कि वे अधिक से अधिक धनराशि अभिनन्दन समिति के कार्यालय में ३१ जनवरी १९६१ तक भेजने की इच्छा करें। इस कार्य हेतु ५१०० रु० देनेवाले दानियों के चित्र अभिनन्दन धर्म्य में प्रकाशित किये जावेंगे।

४. अभिनन्दन समारोह दयानन्द मठ रोहतक में किया जावेगा। इसकी तिथि की सूचना आपकी सेवा में शीघ्र भेज दी जावेगी। अतः इस समारोह को सफल रूप से के लिए तन मन तथा धन से सहयोग देने की इच्छा करें।

आयके सहयोग के इच्छुक		
प्रोफेसनल सरस्वती	वेदवत शास्त्री	महाशय भरतसिंह
अध्यक्ष	श्रीधरबाबू	सयोगक
आर्यनेता प्रो० शेरसिंह अभिनन्दन समिति, दयानन्द मठ रोहतक		

### फरवरी मास में आर्यसमाजों के उत्सव

१. गुरुकुल श्रीरक्षास वि० हिसार	१ से ३ फरवरी
२. आर्यसमाज श्रीराधाबास मिश्रा वि० फरीदाबाद	१ " ३ "
३. " " वैद्यकी डा० बेरावास	१ " ३ "
४. " " मानपुर वि० फरीदाबाद	६ " १० "
५. " " मोक्षा वि० फरीदाबाद	१२ " १३ "
६. " " कंठारी वि० हिसार	१५ " १७ "
७. " " गुरुकुल भुवनेश्वर वि० रोहतक	१५ " १७ "

## गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के सम्बन्ध में सार्वजनिक सूचना तथा अपील

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की हितेषी समस्त आर्यजनता से निवेदन है कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा इस गुरुकुल को सुचारु रूप से चराने के लिए आवश्यक सहयोग करें। सबको ज्ञात होना चाहिए कि गुरुकुल की बल ध्वस्त सम्पत्ति एवं प्रशासन का पूर्ण स्वामित्व और अधिकार आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का है। हरयाणा की दोबानो अदालत द्वारा इसकी समुचित भी जाचुकी है और तदनुसार समस्त सम्पत्ति का हरयाणा सभा के नाम इन्तकाब भी होचुका है।

यह सूचना प्रकाशित करना इसलिए आवश्यक समझा गया क्योंकि आज हुआ कि अनेक स्वामी तत्त्व स्वागित के सम्बन्ध में अफवाह फैलाकर किरायेदारी एष पट्टेदारी की राशि वसूल करने की साजिश रच रहे हैं जो कि बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है। जो भी सज्जन आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रतिरिक्त किसी अन्य से सेन-वेन का व्यवहार रखते हैं, उनके लिए हाति-नाम के वे स्वयं उत्तरदायी होंगे।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ से सम्बन्धित सभी किरायेदार एष पट्टेदार आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यालय दयानन्द मठ रोहतक (फोन ७७५२१) अथवा सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी से १५ एम साकेत नई दिल्ली (फोन ६६-३३३/६५२६४४) से सम्पर्क करें। यह प्रसन्नता की बात है कि गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ प्रथम समिति के प्रधान आर्यजनता के त्यागी तपस्वी प्रयोगी स्वामी प्रोमानन्द जी सरस्वती हैं और हरयाणा सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी केन्द्रीय योजना आयोग सदस्य एवं पूर्व रक्षासचिव भी हैं। दोनों नेता पञ्जबी तथा समाज सुधारक एष गुरुकुल शिक्षा प्रयासों के प्रबल सरसक एष समर्थक हैं। आप सभी के सहयोग से यह गुरुकुल सफलतापूर्वक चलता रहेगा। अन्त में यह कहना भी आवश्यक है कि जिन पञ्चदशक व्यक्तियों अथवा संस्थाओं को किराये और पट्टेदारी के यदि धगाऊ चंके दे रहे हैं उन्हें अपने बंधों द्वारा तुरन्त रुकवा देवे और चंके प्रथवा नकद राशि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्द मठ रोहतक के नाम भेजकर तसीद प्राप्त कर लें। सभा इस राशि का उपयोग गुरुकुल के संचालन के लिए ही करेगी।

सुबेसिंह

पूर्व उपमण्डल अधिकारी (सागरिक)

मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

दयानन्द मठ रोहतक

## महाप्रायण ! (शोक-सन्देश)

दिनांक २५/१२/६० तिथि एकादश बुधका वार गुरुवार राति के लगभग दस बजे महानु योगी श्री भी १०८ ब्रह्मविद् स्वामी क्षेत्रनाथ (शैतानाथ) श्री महाराज के प्राण सुपुण्या नाडी द्वारा प्राणभौतिक शरीर को त्याग इस संसार से विशा हो गए। पृथ्व स्वामी की त्यागी तपस्वी अलक्ष्य ब्रह्मचारी, पुस्तकार्मी, परोपकारी, धार्मिक परमाणी और कर्मठ योगिराज थे। समाज सेवा और समाज सुधार के लिए स्वामी जी ने हरयाणा प्रौर रास्यतान में स्थान-स्थान पर धनेक धार्मिक संस्थाएं और शिक्षण संस्था, छात्रावास; आश्रम इत्यादि खुलवाएं। आर्य गुरुकुल भुवनेश्वर, दारिध्या, नगीनार और सागपुर इत्यादि में भी उन्होंने सराहनीय सहयोग और दान दिया। श्री मंगल जयकोर आध्यात्मिक ज्ञान आश्रम डेहली और इस क्षेत्र के धडालु सज्जन सर्वोच्चसिमान् सच्चिदानन्द सचंकर से प्रायंता करते हैं कि उनकी पवित्र आत्मा मोक्ष में स्वच्छन्द विचरण करे।

सम्प्रेषक—वासुधर "विद्यावाचस्पति" श्री मंगल जयकोर ज्ञान ध्याश्रम डेहली डा०—बेरावास वि० महेश्वरद (हरयाणा)

## वर्ण जन्म से नहीं, गुण-कर्म से

स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, प्राच्यस-वैदिक संस्थान, नबीबाबाव (उ०प्र०)

### वर्ण-व्यवस्था और गीता

प्रिय पाठकगण !

विचारणीय प्रश्न यह है कि यह वर्ण-व्यवस्था है अथवा जन्म व्यवस्था ? जन्म से तो जन्म-व्यवस्था ही सकती है, वर्णव्यवस्था नहीं। वर्ण शब्द का अर्थ है—वरण किया हुआ, चुना हुआ, यह जन्म से कैसे लाया होगा ? जन्म के समय नवजात शिशु में वरण करने, चुनने की योग्यता ही कहाँ होती है ? विद्याध्ययन काश में जिस प्रकार की योग्यता प्राप्त करली जाती है, उसी प्रकार का वर्ण होजाता है। इस नियम में गीता का मत है—

‘चातुर्वर्ण्यं भया मृष्टं गुणकर्मविभागलः’ (गीता ध० ४/१३)

अर्थात् भेदे द्वारा चारों वर्णों का निर्माण गुण-कर्म के विभाग के रूप में हुआ है। मनुष्य में जो योग्यताये होती हैं, जिस प्रकार के गुण होते हैं, वह वैसे ही कर्म करता है। गीता ने गुण के अनुसार कर्म का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण देकर वर्ण व्यवस्था को गुण अर्थात् योग्यता-नुसार कर्म करने के लिए विभाजन कर प्रस्तुत कर दिया है। गीता के १८ वें अध्याय में तो इस ‘गुणकर्मविभागलः’ का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया गया है। पाठकों की जानकारी के लिए उसे यहाँ दिया जा रहा है—

ब्राह्मणसन्निधिसा शूद्राया च परतप ।

कर्मणि प्रविभक्तानि स्वभावप्रबन्धैर्गुणैः ॥ १८/४ ॥

अर्थात् हे परतम अर्जुन ! ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों के स्वभाव और गुणों से उत्पन्न हुए ‘कर्मणि प्रविभक्तानि’ कर्म विभाग किये गये हैं। कैसे किये गए हैं ? यह भी गीता के शब्दों में पाठकगण पढ़ें।

शमो दमस्तपः शौच क्षान्तिरार्जवमेव च ।

ज्ञान विज्ञानमस्तिवच ब्रह्मकर्मस्वभावजम् ॥ १८/४२ ॥

मनोविचारों का शमन, इन्द्रियों का दमन, वेदादि शास्त्रों के अध्ययन में पुरुषार्थ, पवित्रता, निन्दस्तुति, सुस-कुशल, हानि-लाभ, मानापमान आदि की चिन्ता से रहित, सरल स्वभाव रहना, वेदादि शास्त्रों और पृथिवी से नेकर परमेश्वर परमंत पदार्थों का ज्ञान प्राप्त करके उससे तदनुसार लाभ लेना, परमेश्वर के अस्तित्व पर जसा वह है, उसे वंसा ही समझकर विश्वास करना यह ब्राह्मण के स्वभाव से उत्पन्न हुए कर्म हैं। ‘स्वभावजम्’ के साथ ‘गुण-कर्मविभागल’ ही लागू होरहा है।

शौर्ष तेजो बुद्धिर्दक्षिण्य शब्द चाप्यपलायनम् ।

दानमोक्षवरमावश्च शान् कर्म स्वभावजम् ॥ १८/४२ ॥

शूरीयता, तेज, धैर्य, चतुरता, युद्ध में चतलता, मैदान छोड़कर न भागना, दान करना तथा ईश्वर के अस्तित्व पर विश्वास रखना, यह सब क्षत्रिय के स्वभाव से उत्पन्न हुए कर्म हैं। यहाँ भी ‘स्वभाव-जम्’ शब्द दर्शनीय है, जिसका अर्थ स्वभाव से उत्पन्न हुए हैं, जन्म से कदापि नहीं।

हृषिपोरक्षयर्वाणिज्य वैश्यकर्म स्वभावजम् ।

परिचर्यात्मकं कर्म शूद्रस्यापि स्वभावजम् ॥ ११/४५ ॥

हृषि, शोकाश्री ७ व्यापार वैश्य के स्वभाव से उत्पन्न हुए कर्म हैं तथा सेवा करना कर्म शूद्र का भी स्वभाव से ही उत्पन्न है ‘स्वभाव-जम्’ शब्द सभी श्लोकों में और सभी वर्णों के लिए प्रयुक्त होकर जमानुसार नहीं अपितु शिव अनुसार कर्मों का विवेचन कर रहा है। यह संक्षेप में गीता का मत है। शूद्र के विषय में इतना कह देना अनुचित न होगा कि जिसमें वह गुण न आ सके, जो ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों के लिए यथाये गए हैं अर्थात् जो किसी कार्यविशेष की योग्यता नहीं प्राप्त कर पाता, वह अल्प वर्णों के यहाँ सेवा-कार्य व श्रम आदि करके जीविका प्राप्त कर जीवन-यापन करता है। अभिप्राय

यह है कि विद्या-शिक्षा आदि के कार्यों से रहित, रत्ता कार्यों में असमर्थ, उत्पादन द्वारा सम्पत्ति की वृद्धि करने में अयोग्य व्यक्ति शूद्र कहलाता है।

शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चेति शूद्रताम् ।

क्षत्रियाज्जातमेवन्तु विद्याद्वैश्यात्तवेव च ॥ १०/१९ ॥

शूद्र ब्राह्मणत्व को प्राप्त कर लेता है और ब्राह्मण शूद्रता को। वैसे ही विद्या आदि की प्राप्ति के द्वारा क्षत्रिय व वैश्य भी ब्राह्मणत्व को और सद्गुणों तथा उच्च वर्णों के कर्तव्य-कर्मों को छोड़कर शूद्रत्व को प्राप्त होते हैं।

### वर्ण-व्यवस्था और मनुस्मृति

सृष्टि के आरम्भ में ही महर्षि मनु द्वारा मानव-धम का विधान और उपदेश किया गया। यही उपदेश मानव-धर्म-शास्त्र और बाद की मनुस्मृति कहलाया। ग्रन्थ के रूप में यह धारा भी उपलब्ध है। यद्यपि इसमें समय-समय पर स्थायी और अष्ट व्यवस्था द्वारा धन-गंस तथा अष्ट वाते भी भरी गई हैं, जो व्यानुपूर्वक पढ़ने से समझी जा सकती हैं, किन्तु फिर भी मनु का इच्छितो अत्यन्त स्पष्ट है। राष्ट्र की आर्थिक प्रगति व समृद्धि का धक्का लगता है। राष्ट्र धन के अभाव से प्रसित हो जाता और बनाभाव से प्रत्येक क्षेत्र में पिछड़ जाता है।

इस दृश्य में मानव-जीवन के प्रत्येक पहलू पर चाहे वह वैयक्तिक हो अथवा पारिवारिक और या चाहे सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, शैक्षणिक या प्रशासनिक कोई भी पहलू हो पर्याप्त विवेचना की गई है। यह विवेचना ही उनके द्वारा निरिप्त विधान है। इस विधान को उन्होंने जहाँ सामाजिक ढाँचे में डालने की व्यवस्था दी है, उही स्वस को लक्ष्य करके यह पक्षियां लिली गई हैं।

सामाजिक ढांचा वर्ण व्यवस्था के नाम से जाना जाता है। वास्तव में तो यह आर्थिक ढांचा है, क्योंकि अर्थ सम्पादन के प्रकारों के आधार पर ही इसका विवेचन किया गया है। जिसका जो जीविको-पाजन का साधन उसी के अनुसार उसका वर्ण। कहना यह चाहिए कि वर्ण-व्यवस्था एक प्रकार से श्रम-व्यवस्था का ही दूसरा नाम है। वर्ण-व्यवस्था क्योंकि जोपी गई अथवा अन्वसिद्ध नहीं अपितु रुचि व इच्छानुसार वर्णों अर्थात् वरण की हुई, चुनी हुई होती है अतः नाम वर्ण-व्यवस्था रखा गया है।

मनु ने अपनी ऋषि सृष्टि से इसे भली-भाँति समझ लिया था और उपयोगितानुसार उसकी व्यवस्था बना दी थी। कालान्तर में एक ऐसा समय आया कि यह व्यवस्था गड़बड़ा गई और वर्तमान काल में तो इसका नाम ही खेप रह गया है। वर्ण-व्यवस्था तो कहीं भी लिखाई नहीं देती। हाँ, जन्म-व्यवस्था प्रथम्य दनना रही है। महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुसार तो महाभारत से एक सहस्र वर्ष पूर्व ही स्थिति बिगड़ चुली थी, किन्तु महाभारत युद्ध के उपरान्त से ध्रुव तक इन सहस्र वर्षों में तो अष्टवर्ण ढांचा ही अष्टवर्ण ही बना है नितान्त अष्ट ।

अर्थ सम्पादन के प्रकार मनुष्य वही अपनाता है, जिनकी रुचि और जिन्हें कर सकने की योग्यताये उसमें होती हैं। रुचि और योग्यता के विपरीत यदि व्यक्ति को काय मिलता है तो उसमें वास्तविक रूप में सफल नहीं होता। इस प्रकार व्यक्ति की यह असफलता समाज की असफलता बन जाती है। समाज की असफलता से राष्ट्र की आर्थिक प्रगति व समृद्धि को धक्का लगता है। राष्ट्र धन के अभाव से प्रसित हो जाता और बनाभाव से प्रत्येक क्षेत्र में पिछड़ जाता है।

गुण-कर्मों का स्थान जन्म ने ले लिया है। जन्म-जात्यभिमान परकाष्ठा परत है। कहना यह चाहिए कि वर्ण-व्यवस्था अब जन्म व्यवस्था बनकर रह गई है। कुछ वर्णों ने इस सिद्धत अवस्था का अनुचित लाभ उठाते नही कष्टर उठा नहीं रखी और कुछ वर्णों की प्रगति के द्वार सहस्राब्दियों से इस प्रकार बन्द रहे हैं, जैसे वह मानव

ही नहीं है। परिचाम इसका यह है कि जन्म-जात्यभिमानियों द्वारा सताने हुए बच्चों को धन कुछ बोलने का अवसर मिला है, तो वह उसी प्रकार फुफ्फुार उठे हैं, जैसे इन कुटने पर साँप फुफ्फुार उठता है। कुछ वर्ष पहले उत्तरप्रदेश विधानसभामें मनुस्मृति के पृष्ठ फाड़े गये। उसके कुछ दिन पश्चात् मनुस्मृति और तुलसीदास रामचरितमानस को जलाया गया, किन्तु मनुस्मृति को ध्वांसपूर्वक पढ़ना अलग बात है और किसी सुनो सुनाई बात पर श्रयवा अथवी जानकारी से सहक उठना अलग बात। आगे हम मनु के विचारों को प्रस्तुत करते हैं। अपनी धार से आवश्यक टिप्पणी ही करने और यह चाहिये कि जन्म-जात्यभिमानो 'उच्च वर्णों के लोग और पिछड़े वर्णों के शूद्र कहाने जानेवाले सभी ठण्डे मन और मस्तिष्क से विचारकर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें। मनु का विधान इस प्रकार है—

लोकानां नु विबुद्धयन्मुसुवाहस्यवसतः ।

ब्राह्मणं क्षत्रियं वैश्यं शूद्रं च निरस्तं च ॥ अध्याय १/३१ ॥

लोकों श्रधात् मनुष्यों को उन्मत्ति के लिए ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य और शूद्र इस प्रकार उत्पन्न किये गए हैं, जैसे मानव के शरीर में मूल, बाहू, उर और पाद बनाये हैं। इसका स्पष्टार्थ यह हुआ कि जैसे शरीर गतिविधियों के अती प्रकार संचालन के लिए मूह, हाथ, जबजा, पाँव होने आवश्यक हैं। इसी प्रकार मानव समाज का कार्य सुचारु रूप से चलाने के लिए भी चार प्रकार के मानव परमात्मा ने उत्पन्न किए हैं। ब्राह्मण अर्थात् विद्या-विज्ञान-सुव्यञ्जान काय करने तथा स्वायम्भ्यवस्था देनेवाले, क्षत्रिय अर्थात् प्रबन्ध व्यवस्था तथा रक्षा करनेवाले, वैश्य अर्थात् उत्पादन व्यापार आदि के द्वारा सम्पत्ति अर्जित कर समाज की श्रय-व्यवस्था को सुदृढ करनेवाले तथा उपयुक्त सब कार्यों की योग्यताओं से रहित शूद्र श्रधात् भी सेवा तथा शारीरिक श्रमों के द्वारा समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति कर और इस प्रकार अपने लिए जीविका भी प्राप्त करलें। महर्षि मनु इसका वर्णन इस प्रकार करते हैं—

अध्वयन अध्यापन यजन याजनं तथा ।

दान प्रतिभ्रह्मचर्यं ब्राह्मणानामवश्यकम् ॥ अध्याय १/८८

अध्वयन करे और अध्यापन करे। यज्ञ करे और यज्ञ करायें। दान करे और दान ले—यह छः कर्म ब्राह्मणों के। प्रजातानं रक्षण दानमिज्याध्वयनमेव च । विधेयप्रसक्तितश्च क्षत्रियस्य समासतः ॥ अध्याय १/८९ प्रजा की रक्षा, दान करना, यज्ञ करना, अध्वयन और विषय वासनाओं में न फसना यह पाँच क्षत्रियों के कर्म हैं।

पशूनां रक्षण दानमिज्याध्वयनमेव च ।

वर्षिकपच कुसीद च वैश्यस्य क्रियमेव च ॥ अध्याय १/९०

पशुओं का पोषण, दान करना, अध्वयन, व्यापार, लेने-देने और क्रिय यह सात वैश्यों के कर्म हैं।

एकमेव तु शूद्रस्य प्रयुः कर्म सभाधिपत् ॥

एतेषामेव वर्गानां शुभ्रुषामनसूयया ॥ अध्याय १/९१

प्रयु ने शूद्र का एक ही कर्म सताया है—इस वर्णों की निन्दारहित सेवा करना अर्थात् जिस व्यक्ति में उपयुक्त तीनों वर्णों में से किसी की भी योग्यता न हो, वह इन वर्णों को सेवा द्वारा अपनी जीविका सम्पादन करते, परन्तु किसी के लिए निन्दित कर्म करके जीविका सम्पादन न करे। केवल किसी वर्ग विशेष में जन्म लेने के कारण ही कोई सम्मान अथवा वृथा का पात्र नहीं होता, यह अपने स्विको भी पकिये—

विप्राणां ज्ञानेन ज्येष्ठयु क्षत्रियाणां नु वीर्यतः ।

वैश्यानां धान्यमन्तः शूद्राणामेव जन्मत ॥

ब्राह्मणों का बहुव्यन ज्ञान से होता है और क्षत्रियों का पराक्रम से। वैश्यों का धन-धान्य की प्रशस्ति से और शूद्रों का जन्म से। इसका सीधा श्रय यह हुआ कि आवश्यक कुशलों को प्राप्त हुए बिना कोई ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य वर्ण के बहुव्यन को प्राप्त नहीं होता। केवल जन्म के कारण यदि कोई बहुव्यन मानता है तो उसे शूद्रत्व का ही प्राप्त हो सकता है द्विज वर्णों का नहीं। ठीक उसी प्रकार—

यथा काष्ठमयो हस्ती यथा चर्ममयो मृगः ।

यश्च विप्रोन्नीयानरवस्त्रसे नाम विभ्रतः ॥ अध्याय २/१५७

जैसे लकड़ी का वना हुआ हाथो नाम का ही हाथी है। हाथी से लिया जानेवाला कोई काम उसने ही लिया जा सकता जैसे चमड़े का मृग अर्थात् भेरे हुए मृग के चम को लेकर और भूसा भूसा आदि भरकर बनाया हुआ मृग नाम मात्र का ही मृग होता है, किन्तु उसमें मृग की श्रधाति, रय और चम को छोड़कर मृग की अन्य कोई बात नो क्या ? जीवन तक भी नहीं होता। ठीक उसी प्रकार बिना पढा ब्राह्मण का पुत्र भी नाम मात्र का ही ब्राह्मण है, किन्तु वास्तव में तो उसका ब्राह्मणत्व से दूर का भी सम्बन्ध नहीं। इससे सिद्ध होता है कि ब्राह्मणत्व विद्या और ज्ञान में निहित है जन्म में नहीं।

योजनीयं द्विवो वेदमम्यत्र कुर्वते श्रमम् ।

स जोशनेव शूद्रत्वमायु गच्छति सान्ययः ॥ अध्याय २/१६८

जो व्यक्ति द्विज श्रधात् ब्राह्मण होकर भी वेद को छोड़कर अन्य श्रम करता है अर्थात् वेद विद्या के पढ़ने और पढ़ाने में श्रम न करके अपना समय अन्य कार्यों में लगाता है, वह जोचित रहते ही शीघ्र बंधा सहित शूद्रत्व को प्राप्त होता है। जब अपने विद्या और ज्ञान के कार्यों को छोड़ देगा, तब स्वयं तो अविद्या में फंसकर शूद्रत्व को प्राप्त हो ही जायेगा श्रागे चलनेवाली बसपरम्परा के लोग भी विद्या श्रय से दूर हो जाने के कारण शूद्रत्व को प्राप्त होते रहिये। इससे आगे तो महर्षि मनु ने वर्ण परिवर्तन के विषय में यहाँ तक कहा है कि—

शुनिरःकृष्टशुभ्रुषु पुद्बुगानरहृष्टकृत् ।

ब्राह्मणाद्याथयो नित्यमुकृष्टा जातिमन्वृते ॥

अध्याय १/३५१

श्वच्छ रहनेवाला, उत्तम परिश्रम, मधुरभावी, बहुकाररहित तथा नित्य ब्राह्मणादि के आश्रय में रहनेवाला (शूद्र) उच्च जाति को प्राप्त हो जाता है।

इस श्लोक से यह स्पष्ट हो जाता है कि ब्राह्मणत्व सचय जन्म के सम्पर्क रहने से उन वर्णों के गुण-कर्मों को धारण कर लेने पर शूद्र भी ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य वर्णों में से किसी एक वर्ण का अपने प्राप्त गुण-कर्मों के अनुसार बन जाता है। आगे मनुजी कहते हैं—

शूद्रो ब्राह्मणतामिति ब्राह्मश्चेति शूद्रताम् ॥

क्षत्रियाज्जातमेवन्तु विद्याद्वैश्यासथैव च ॥ १०/६५ ॥

शूद्र ब्राह्मणत्व को प्राप्त कर लेता है और ब्राह्मण शूद्रता को। जैसे ही विद्या आदि प्राप्ति के द्वारा क्षत्रिय वैश्य भी ब्राह्मणत्व को और सद्गुणों तथा उच्च वर्णों के कर्तव्य-कर्मों को छोड़कर शूद्रत्व को प्राप्त होते हैं।

मनुस्मृति के इतने उदाहरणों को देने के पश्चात् श्रव किसी अन्य टिप्पणी की आवश्यकता नहीं। यह उद्धरण इस बात की प्रवल साक्षी है कि मनु पर किसी को भी किसी वय विशेष में जन्म धारण कर लेने से सम्मान का पात्र बनाने का लाक्षणिक मिया है। वर्तमान समय की जन्म-जातिप्रथा मनु की मान्यता के विरुद्ध है। तथा वास्तव में यह वर्ण-व्यवस्था नहीं है। वर्ण व्यवस्था तो रण करके जन्मे की ही व्यवस्था है। जन्म से पले पड़नेवाली तो जन्म-व्यवस्था ही नहीं है। (क्रमशः)

सम्पादक के नाम पत्र

### संग्रहणीय पुस्तक

हृदरावाद सत्याग्रह पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'हृदरावाद सत्याग्रह से हरयाणा का योगदान' पढ़ने का सीधाय प्राप्त हुआ। निःसन्देह यह पुस्तक काफी श्रय एवं आकर्षक है। इसमें हृदरावाद आर्य सत्याग्रह के सम्बन्ध में डेर सारी सामग्री पढ़ने को मिली। हृदरावाद सत्याग्रह आर्यसमाज का एक ऐतिहासिक सत्याग्रह था, और इसमें हरयाणा राज्य का योगदान काफी महत्व रखता है। पुस्तक में हरयाणा के सत्याग्रहियों का सचित्र जोरन परिचय पढ़कर एक बार फिर इस सत्याग्रह को तरोताजा घटना याद हो गई। अतः यह पुस्तक सभी सचियों से उत्तम तथा सप्रणयोग्य है। इस पुस्तक के कुशल सम्पादन के लिए डा० रणजीतसिंह जी विशेष रूप से बधाई के पात्र हैं।

रामकुमार आर्य, मन्गो आर्य युवक परिषद् गौहाना (रोहतक)

## गऊ माता को करुण पुकार

सत्य सनातन वेद ग्रन्थ ने जो महिमा गी की गई  
अल्प सामर्थ्य-सूक्त मनुष्य से वह कैसे जाये बतलाई।  
श्रद्धियों की पावन भारत भू पर देवगण बास किया करते  
श्री दुर्गागाय का सेवन करने, योग्याभ्यास किया करते।

सबसे खेष्ट प्राणी जग में गौ माता को बतलाते थे  
पहले पुजते गौ माता को पीछे भोजन खाते थे।  
दरनाक अवस्था में अब वही गौ माता करे पुकार  
अबला गऊ का रोदन सुनकर पै गौ भक्तों करो विचार।

हा, भगवत् यज्ञ जन क्यो आज बचिर हो गये  
पुकार भी सुनते नहीं जाने कहां पब सो गये।  
दो तिनके धास के धा करके मैं मोठा दूष पिलाती हूं  
गौ माता कहसाने बाली मैं बन्दर बचके खाती हू।

किससे कहे निज श्यामा-कृपा न कोई सुनने वाला है  
न गौ भक्त दिलीप रहा न कृष्णचन्द्र गोपाला है।  
रो-रो कर हाल-बेहाल हुई, हा कौन पुकार सुने मेरी  
है कोई माई का लाल कहे जो 'मैं रक्षा करूंगा मां तेरी'।

सुन आतंताद गौ माता का बहोनों गांव जाये धाय  
गोशाला हेतु भूमि दी गौ रक्षा का बीड़ा ठाय।  
सत्साहस देव शहीलों का चाखीस गांव छग जान भिले  
गोशाला की बात चली धड़ और खुशी के फूल खिले।

१९६० की सञ्जनों जब शुभ दीपावली की आई  
राष्ट्रीय गोशाला की स्थापना बहोली में करवाई।  
सभी गऊ भक्त सञ्जनों ने यह नम्र अपील हमारी है  
१०१/- रुपये देकर मंत्र बनने की नारी है।

१९००/- रुपये के दानो का दीवार पर नाम लिखा जावे  
५१००/- रुपये देकर पत्थर पर निज नाम खुदवाये।  
२५०००/- रुपये देकर वह कमरा निमता कहलावे  
५१०००/- के दानो को विशाल भवन निमता लिखा जावे।

जो देखे रुपये एक लाख वह महादानी कहा जावे  
इससे अधिक देने वाला गौ उद्धारक पबवी पावे।  
यह कृपा निरिहो गौ माता ने 'बसदेव' के हाथों लिखवाई  
सत्य प्रकाश धार्य ने निज सारिक दान से छपाई।  
आशो हम सब अनुकरण करे, गौ रक्षा का प्रण करे  
गोशाला हित धन प्राण करे, सब पुण्य पथ का बरण करे।

## श्रीमती लाजवन्ती मुखीजा के निधन पर श्रद्धाञ्जलि

आर्यसमाज शांति नगर सोनीपत के उपमन्त्री श्री जीतकुमार  
ब्रह्मेजा की वही बहिन श्रीमती लाजवन्ती मुखीजा धर्मपत्नी श्री चन्द्र  
भान जी मुखीजा का विनोद ६-१२-१९६० को हृदयगत रूक जाने के  
कारण निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार वैदिक रीति से  
सम्पन्न हुआ। वह एक नेत्र, उदार, दयालु, सुधील दानवीर, प्रभु  
भक्त एतस्य आदर्श देवी थी। उनके निधन से आर्यसमाज का एक  
प्रकाश स्तम्भ खिर गया है। परम पिता परमात्मा से दिवङ्गत आत्मा  
की शान्ति एतस्य सद्बन्धु तथा परिवार के लिए इस आघात को सहन  
करने के लिए असीम शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की गई।

हरिचन्द्र स्नेही

महामन्त्री,

आर्यसमाज शांति नगर, सोनीपत  
(हरयाणा) १३१-०१

## आर्यावर्त की तीन महान् विभूतियां

लेखक—मा० रामचन्द्र भार्य नलवा, बी० ए०  
(भायवर्त) एच०एम०एच०एच० (होम्सो)

देस धर्म के रक्षाले थे वेदों के अनुयायी।  
मिटगी थी हिन्दू जाति तीनों ने ध्यान बचाई। टेक ॥  
जा मयूरा की सर्वज्ञा में या बात बताई थी।  
गुलामो बोजब जाबादी को राह दिखाई थी।  
व्याकरण का सूरज बनके वेद जोत जवाई थी।  
प्रशासक था पर मन बुद्धि में चतुराई थी।  
विरजानन्द ब्रह्मर्षि ने वेदपताका सहलाई ॥१॥

स्वराज का मन्त्र का झुंका की शीरों को सलकारी।  
सत्याग्रहकास सिख श्रद्धि ने पोल खोली सारी ॥  
पालण्डी मस्टकों को अडे होगी थी जान स्वारी ॥  
दयावान ना उस जिसा चाहे जगति हूँतो सारी ॥  
दयानन्द महर्षि जिसने भार्य कोज बनाई ॥२॥

कोठी किले ऐस भीग खोब श्रद्धि वचन प्यार किया।  
जा हरिद्वार संस्कृत का मुकुन्द एक तैयार किया।  
उसी जगह पर बाबादी की तोपों को तैयार किया।  
महर्षि का बचुरा सपना एकदम तै सकार किया।  
महात्मा धन्धानन्द थे वे श्रद्धि के अनुयायी ॥३॥

इनका कर्ज कडे भारत उतार नहीं सकता।  
पर देशदही कडे देश कर प्यार नहीं सकता।  
रामचन्द्र कह नाम से कोई मार नहीं सकता।  
भार्य वीर धरने घर में कोए कर तैयार नहीं सकता।  
बचक कमल पै चल इनके हो ज्वा कला सवाई ॥४॥  
प्रेमक का पता—  
धार्य-निवास नलवा (हिसार) १२५-३३

## अमर शहीद पं० रामप्रसाद बिस्मिल बलिदान दिवस सम्पन्न

भार्य युवक सभा लुधियाना की ओर से प्रेम मॉडल हार्ड स्कूल  
गली न० १०, जनकपुरी लुधियाना में अमर शहीद पं० राम प्रसाद  
बिस्मिल बलिदान दिवस मनाया गया।

श्रद्धाञ्जलि समारोह श्री रोशनलाल भार्य, प्रधान भार्य युवक  
सभा पंजाब की अध्यक्षता में आयम्न हुआ। समारोह की श्री  
मुख्यदर्शन महहोश, नेयरमेन पंजाब पब्लिक कल्याण समिति  
लुधियाना, श्री वेदप्रकाश सिवारी, पं० राजेबदर शास्त्री पुरोहित  
भार्यसमाज, महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना ने पं० रामप्रसाद  
बिस्मिल के जीवन पर प्रकाश डालते हुए अपनी श्रद्धाञ्जलि पेंट की।  
प्रेम मॉडल हार्ड स्कूल के बच्चों ने देशभक्ति के गीत प्रस्तुत किये।

(सुरेशकुमार चहड़ा) जिन्हा संयोग्यक  
लुधियाना

## आर्यसमाज बाबरा मौ० रोहतक का वार्षिक चुनाव

१. प्रधान—श्री दीपचन्द भार्य
२. उपप्रधान—श्री बलवीर भाचार्य
३. मन्त्री—श्री रूपचन्द चाबला
४. उपमन्त्री—श्री ज्ञानमन्दिह
५. कोषाम्यस—श्री महेश्वरभासिह
६. पुस्तकाम्यस—श्री प्रेमचन्द शास्त्री

**बिक्री हेतु वैदिक साहित्य**

१- बी वेदाङ्ग (श्रंश्रेणी भाषा में)—स्वामी भूमानन्द जी	१-००
२- बी त्रिसिपत्य आफ धार्यसमाज—पं० चमूपति एष०ए०	१-५०
३- जीवन ज्योति (वेदमन्त्रों की व्याख्या)— ”	३-००
४- निहारिकावाद और उपनिषद् ”	०-५०
५- आर्यसमाज की विचारधारा—पं० सितीबकुमार वेदालकार	१-००
६- निवाम की जेल में ”	२०-००
७- स्मारिका (हरयाणा प्रांतीय आर्यसमाज शताब्दी समारोह)	१-००
८- आय प्रतिनिधि सभा शताब्दी समारोह स्मारिका	२०-००
९- आर्यसमाज और प्रत्युत्थाता निवारण—पं० ओम्प्रकाश त्यागी	०-५०
१०- बलिवान जयन्ती स्मृति ग्रंथ (धार्य शहीदों का परिचय)	४-५०
११- ईश्वर की सत्ता—डा० रणजीतसिंह	१-००
१२- हरयाणा के धार्यसमाज का इतिहास—डा० रणजीतसिंह	५-००
१३- धर्म-प्रवेशिका—डा० रणजीतसिंह	३-००
१४- धर्म-सूत्र ”	५-००
१५- पंजाब का आर्यसमाज—डि० रामचन्द्र जावेद	२-००
१६- धार्वर्षी धातु रूपावली—महावीर धापाद शास्त्री	२-००
१७- वैदिक उपासना पद्धति—डा० सुदर्शनदेव आचार्य	३-००
१८- मूर्तिपूजा—सम्पादक पं० जगदेवसिंह सिद्धाती	००-५०
१९- वेदस्वरूप निर्णय ”	००-७५
२०- वेदाभिर्भाव ”	१-००
२१- वेदभाष्य पद्धति ”	१-००
२२- वैदिक विवाह पद्धति ”	६-००
२३- गोकर्णानिधि—स्वामी दयानन्द सरस्वती	०-२०
२४- सत्यायप्रकाश ”	१०-००
२५- महर्षि दयानन्द आत्यकथा ”	०-५०
२६- हमारा फाजिल्का—योगेन्द्रपाल	१-००
२७- बड़ ” स्वामी ओमानन्द सरस्वती	१-५०
२८- वीर देहू ” ”	०-७५
२९- पीपल ” ”	१-५०
३०- मित्र ” स्वामी ओमानन्द सरस्वती	१-५०
३१- श्लोपद वा हाथीपांव की चिकित्सा ” ”	०-२०
३२- बिच्छु विष चिकित्सा ” ”	०-५०
३३- लवण ” ”	१-२५
३४- विदेशों में मीने क्या देखा ” ”	२-५०
३५- नैरोबी घामा ” ”	१-५०
३६- ब्रह्मचर्य साधन ६-११ ” ”	१०-००
३७- ” ” १-२ ” ”	१-००
३८- ” ” ३ ” ”	१-००
३९- ” ” ४ ” ”	२-५०
४०- ” ” ५ ” ”	२-००
४१- ” ” ६ ” ”	३-००
४२- ” ” ७-८ ” ”	२-००
४३- ” ” ९ ” ”	०-३०
४४- ” ” १० ” ”	१-५०
४५- ” ” ११ ” ”	२-००
४६- हल्दी ” ”	१-५०
४७- नीप ” ”	१-२५
४८- कर्तव्य दर्पण—मं० नारायण स्वामी	४-००
४९- विचारणी जीवन रहस्य ” ”	२-५०
५०- योग रहस्य ” ”	४-००
५१- धार्यसमाज क्या है ? ” ”	२-००
५२- कथा माला ” ”	१-२०
५३- संस्कारविधि ” ”	८-००
५४- वैदिकधर्म परिचय—पं० जगदेवसिंह सिद्धाती	३-५०
५५- वैदिक यज्ञ पद्धति—सांवेदिक सभा प्रकाशन	००-६०
५६- मृत्यु के पश्चात् जीव की गति—श्री जगदेवसिंह सिद्धाती	१-५०
५७- नैतिक शिक्षा दसवां भाग—सत्यप्रभुएव वेदालंकार एम.ए.	५-००
५८- पं० जगदेवसिंह सिद्धाती जीवन चरित—डा. सुदर्शनदेव	१०-००
५९- हैदराबाद सत्याग्रह में हरयाणा का योगदान-रणजीतसिंह	३०-००

प्राप्ति-स्थान : धार्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा  
 दयानन्दमठ, सिद्धान्ती बवन, रोहतक

**बाल गायन**

हम बच्चे हैं बाल बादशं विद्यालय गनौर के,  
 हम दनेगे जेले स्वामी दयानन्द के ।  
 लेगे शिक्षा वेदों की, करेगे प्रचार वेदों का,  
 हम बनन की धरती पर, बोगेगे वीज अनुशासन का,  
 शिक्षिकाओं की प्रेरणाभरी शिक्षा से,  
 हम करेगे एक-एक सपने सच्चे शहीदों के,  
 हमें मिश्री है एक ऐसी अध्यापिका,  
 जो हमें देती है प्रेरणा वन जाओ जेले स्वामी के ।


(प्रेम आहूणा)

(पृष्ठ २ का चेष)


महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस विद्या के पल्लवन में 'श्रीव की हट' का काम किया है। महर्षि विद्या अधिक व्यय से हिन्दी को राजभाषा की मान्यता दिलाने के लिए, वह उनके पत्रों में स्पष्ट परिलक्षित है। ये पत्र श्रुति के जीवन दर्शन के परिचायक हैं और जाय-जनों के लिए प्रेरणा के प्रबल स्रोत हैं।

(ए/एच-१६, शालीमार बाग, दिल्ली-५२)

**दाँतों की हर बीमारी का धरुलू इलाज**




**दंत मंजिन**  
लौह त्रुत्त




मसूजों की सुख

23 जड़ी बुटियाँ से निर्मित  
आयुर्वेदिक औषधि


दाँतों का डक्टर




अब नये पैकेज में उपलब्ध



मुह की दुर्गंध



लडा गर्म पाणी लगाना



दाँतों पर दर्द

महाशियाँ दी हट्टी (प्र०) जि०

B/M-4, इण्डियन स्टेशन रोड, नई दिल्ली 110 027. १५७७३ ७५८, 532241

**हरयाणा के अधिकृत विक्रेता**

१. मसज परमानन्द सार्विधामल, भिवानी स्टेट, रोहतक ।
२. मसज फूलचन्द सीताराम गांधीचौक, हिसार ।
३. मसज सन-धप-टुंडेज साररा रोड, सीनीपत ।
४. मसज हरीश एनबीज 499/17 मुहद्वारा रोड, पानीपत ।
५. मसज भगवानदास देवकीनन्दन सर्रीका बाजार, करनाल ।
६. मसज चन्दासदास सीताराम बाजार, भिवानी ।
७. मसज कुमाराम गोपाल हठी बाजार, सिरसा ।
८. मसज कुलवन्त पिकल स्टोर्स धाप नं० 115, मार्किट नं० 1, एन० आई० टी० फरीदाबाद ।
९. मसज सिंगला एनबीज सदर बाजार, मुद्गवा ।



### निराकार प्रेम

किस मंदिर में फूल चढाऊ ।  
मेरे फूल न घुसखायें ।  
किस दीप में ज्योत जलाऊ ।  
ज्योत न बुझ जाय ।  
लाख मंदिरों में फूल चढाया ।  
मेरे फूल मर जाते ।  
दीप खूब जलाये ।  
मेरा हाथ जलाकर बूझ जाते ।  
मेरे निराकार प्रेम, तुम्हें देवी मानकर ।  
तेरे कदमों को जूमता हूँ ।  
प्रेम भावनाओं के फूल,  
तुम्हें श्रंपण करता हूँ ।  
हवाओं साथ देना मेरा हाथ न जने ।  
अपने शंखकार हृदय में ।  
प्रेम यज्ञ की ज्योत जलाकर ।  
नफरत को दूर कर,  
हर दिल रोशन करता हूँ ॥

अनिल कुमार संगला 'मिर्ची'  
१३ मोयल ऐपार्ट. फंक्ड्रो लेन  
बोम्बेसी (पश्चिम) बंबई ४०००२२

### मोटापा कम करने के उपाय

हे० स्वामो स्वस्वामान्द सस्त्वती

- (१) प्रतिदिन प्रातःकाल को जब मैं शहद पिलाय ।  
करते रहो प्रयोग यह मोटापा घट जाय ॥
- (२) मात्रा १ गिलास जल ५० ग्राम मधु  
शोचपत्र दस ग्राम को, जल में लेजो उबास ।  
मोटापा कम होगा, पीओ प्रातः काल ॥
- (३) चाय की तरह उबाल कर पीयें ।  
मोड चावलों की पिजो, नमक मिला प्रभात ।  
कुछ दिन करने यह होगा हल्का मात ॥
- (४) १ गिलास मोड नमक मिलाकर  
हुई बहेडा, जायन्दा, लीजे साथ गिलोय ।  
मधु मिलाकर चाटिये, मोटापा कम होय
- (५) ३ ग्राम खूखें मधु मिलाकर लें ।  
नींबू रस प्रतिदिवस प्रातःकाल पिलाय ।  
दो महीने तक पीजिये, तब हल्का हो जाय ।  
१ नींबू १ गिलास पानी में प्रातःकाल  
खाली पेट दो महीने तक पीना चाहिये ।

## गुरुकुल

**कांगड़ी फार्मसी की**  
**आयुर्वेदिक औषधियां सेवन कर स्वास्थ्य लाभ करें**

**गुरुकुल**

**स्वयंप्राश**

दूरे पोरवार के लिए शक्तिवर्धक  
एक स्फूर्तिदायक (स्वायत्त)  
खासी, ठंड व शारीरिक एवं  
कैल्शियम की पूर्वाभा में  
उपयोगी आयुर्वेदिक  
औषधीय द्रविक





**गुरुकुल**

**पार्योक्चल**

कैंसर व मधुमेह के मारणन रोधो  
सेरिगेनल पार्योक्चल  
के लिए उपयोगी  
आयुर्वेदिक औषधि



**गुरुकुल**

**चाय**

दुग्धयुक्त व इन्कमूएन, बसन्त  
आदि में जड़ी बुरीओ  
से बनी मासकरी  
आयुर्वेदिक औषधि



**गुरुकुलकांगड़ीफार्मसी हरिद्वार (ऊ प्रठ)**

शाखा कार्यालय: ६३, गली राजा केदारनाथ  
चावड़ी बाजार, दिल्ली-११०००६

### गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी

हरिद्वार

की औषधियां सेवन करें ।

शाखा कार्यालय  
६३ गली राजा केदारनाथ,  
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

स्थानीय विक्रेताओं एवं सुपर बाजार  
से खरीदें  
फोन नं० २६१८७१

— 'प्रकाश'—दिल्ली—२०४५

प्राय प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदवत शास्त्री द्वारा आचार्य ब्रिजिंद प्रेस के लिए संस्कृतकारि मुद्रकालय रोहतक से छपवाकर संस्कृतकारि कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धाप्ती भवन, हयानान्द मठ, रोहतक से प्रकाशित ।



# अर्थोद्धार

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—मूर्धेसिंह सभामन्त्री

सम्पादक—वेदव्रत गारंगे

मर्मसम्पादक—प्रकाशचौर विद्यानकार एम० ए०

वर्ष १८

अंक १०

२८ जनवरी, १९६१

बायिक गुल्क ३०)

(आशोचन गुल्क ३०१)

विदेन में ८ पीठ

१४ प्रति ५ पैसे

## आर्यसमाज की प्रगति के लिए कुछ सुझाव

स्वामी सुशोचानन्द, दयानन्द मठ धरमरा (कांगड़ा)

सच्चे व सुच्चे कार्यकर्ताओं का होना—१९०५ के बाद कुछ समय बर्कोशी, वानप्रस्थियों, संघासियों, अवैतनिक प्रचारकों की भरमार रही और हर व्यक्ति एक चरता फिरता प्रचारक व शास्त्रार्थ महारथी था। १९२३ से १९२० तक यह हाहात रहे।

शिक्षा संस्थाओं का जाल—१९२३ से डी० ए० की संस्थाओं का शिक्षा जाल खूब फैला और सरकार की शिक्षा नीति से भी जागे गया। वह शिक्षा अर्धवैज्ञानिक संस्कृति के प्रचार के निष्ठ थी। अतः खूब काम हुआ परन्तु अब अर्धवैज्ञानिक प्रचार पाश्चात्य सभ्यता व अर्धवैज्ञानिक भाषा के दीवाने बन गए और वैदिक संस्कृति को भूल गये। जिस राष्ट्र की अपनी कोई भाषा न हो वह राष्ट्र भी क्या राष्ट्र हो सकता है। १९०० में स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल प्रणाली शिक्षा आरम्भ की उससे अर्धवैज्ञानिक संस्कृति पैदा हुई। हमने उस शिक्षा पद्धति को नकारा। आज ६५ वर्षों के जनसंख्या में से भी करोड़ ही अर्धवैज्ञानिक १९०० साल में खाल सके और २% ही भारत राष्ट्र पर शासन कर रहे हैं यह नहीं सहिते कि कर्मचारी हों। जनता शर्मों में बसती है उनकी मातृभाषा काम आती है। अतः हमें अपनी मातृभाषा को ही प्रोत्साहन देना

चाहिए और केन्द्र में सबको जोड़नेवाली राष्ट्रभाषा हिन्दी हो, तभी राष्ट्र सशक्त हो सकता है।

बिषय में १००० आर्यसमाज हैं। दो करोड़ आर्यसमाज हैं। २२ से ऊपर प्रतिनिधि समाज होंगे। इनमें कुछ लगनशील आर्य, कुछ अच्छे धर्मसमाज और प्रतिनिधि समाज होंगे। यह गार्डियन (Guardian) बनकर व्यक्तित्व पुरवों, समारोह व प्रतिनिधि समाजों को सशक्त करें।

प्रचार के तीन साधन हैं प्रेष, ब्लेटफार्म व साहित्य वितरण। हमारे यह तीनों साधन कमजोर हैं। स्वामी दयानन्द ने १९०१ में १३ पैसे प्रति पम्पलेट १०० प्रकार के छापकर लाखों बाँटे। आर्यसमाज ने ६ आने में संस्कार विधि, १० आने में सत्यार्थप्रकाश बाँटा। आज ६५० संस्कार विधि व १००० सत्यार्थप्रकाश है। साहित्य तो १०० से १००००० प्रति है। कौन पढ़ेगा, लखेगा, बाँटेगा।

आर्यसमाज जन्म, जाति, भेद को ११५ साल में न मिटा सका, न आश्रय मर्यादा ला सका। कार्यकर्ताओं की कथनों व करतूतों में अन्तर है। समानता हो तब प्रभाव पड़ेगा।

यह शिक्षा बन्द हो—राजा व रक को समान शिक्षा मिले।

### नरवाना में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान

#### दिवस धूमधाम से मनाया

आर्यवीर वल नरवाना ने आर्यसमाज के लिये प्राणम में श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया। जिसका आरम्भ श्री वलवीरसिंह जी एम० डी० एम०, नरवाना ने ३:२५ का भुजा लहराकर किया। उन्होंने शहीद स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन पर बोले हुए उनके बताये हुए मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी।

आर्यसमाज क्या है? स्वामी दयानन्द कौन थे? इन विषयों पर धर्मवीरों, आर्य बरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, धर्म्यकन्या पाठशाला, महर्षि दयानन्द पब्लिक स्कूल व डी० ए० स्कूल के छात्रों व छात्राओं ने अग्रजों व भाषणों के द्वारा प्रकाश डाला। बच्चों को प्रोत्साहन के लिए एम० डी० एम० नरवाना ने आर्यधर्म, कापी, पैर ब्रादि इनाम के रूप में बाँटे।

शाहा नायक श्री विजयकुमार जी ने अनुशासित रहकर कार्य करने के लिए कहा। अन्त में श्री राधाकृष्ण जी आर्य प्रधान आर्यवीर वल नरवाना ने सभी आए हुए ओताओं को कहा इस समय देश के विगड़े हुए हाहात में आर्यसमाज ही सही विधा दे सकता है। अतः आर्यवीरों का हमें तन, मन, धन देकर उनका हींसला बढ़ाना चाहिए। अन्त में आर्यवीर वल जी और से रात्रि भोज का प्रबन्ध किया गया। जिसमें धर्मवीरों ने धयने निजी परिश्रम से दान के रूप में पैसे इकट्ठे करके तीन हजार के लगभग खर्च किये तथा सभी ने यज्ञ को सार्थी मानकर आर्यसमाज के सिद्धांतों को रखा की प्रतिज्ञा की।

अवधनीकुमार आर्य, मन्त्री

### आर्यनेता प्रो० शेरसिंह अभिनन्दन हेतु दान सूची

प्रिंसिपल गृणनसिंह जो धाम मोहरा, जि० रोहतक	२००० रु०
श्री जगवीरसिंह जी सुपुत्र प्रि० गृणनसिंह धाम मोहरा, जि० रोहतक	२००० रु०
श्री परवीरसिंह जी " " " " " "	२००० रु०
श्री धर्मवीरसिंह जी " " " " " "	२००० रु०
श्री सत्यवीरसिंह जी दामाद " " " " " "	२००० रु०
पं० भीमसेन जी विद्यालंकार भोमसेन कालोनी बल्लभगढ़, जि० फरीदाबाद	११०१ रु०
श्री धर्मवीरसिंह मलिक धाम बोधल, जि० सोनीपत	१०१ रु०

जिन दानदाताओं ने इस निधि में धरनाश्रि भेजने का वचन अंकित कराया रखा है, उनसे निवेदन है कि यथा शीघ्र अपना योगदान भेजने की कृपा करें जिससे अभिनन्दन समारोह को तैयारी आरम्भ की जावे।

—म० भरतसिंह

संयोजक आर्यनेता प्रो० शेरसिंह, अभिनन्दन समिति

### हजारों अर्धवैज्ञानिकों ने मांसाहार का त्याग किया

आज विश्व में शाकाहार का आवेगलन जोर पकड़ रहा है। लंदन में २२ जुलाई को आयोजित एक विद्यालय रंथी में हजारों अर्धवैज्ञानिकों ने मांस न खाने की प्रतिज्ञा की है। इस कार्यक्रम को आयोजन के पीछे एक जैन सस्था (दि बंध इंडियन वेजिटेरियन्स) ने स्तुत्य कार्य किया है। आज विश्व में शाकाहार के व्यापक प्रचार-प्रसार की अत्यन्त आवश्यकता है।

(गंगाधर चापेसा 'मुवई समाचार' से)

## साम-युवा शतक

(१)

## मेरी अग्नि प्रज्वलित हो !

ओं अग्ने आ याहि शोषये ग्णानो ह्यभ्यदातये ।  
नि होता ससि बर्हिषे ॥१॥ (आग्नेय-पञ्च साम.)

विश्व यज्ञ की अग्नि प्रभुवर,  
चखा रहे निरा दिन यह याग ।  
करके भोग ह्यम-गर्भों का,  
देते सबको उनका भाग ।  
मेरी जीवन-ज्योति जला दो,  
भयक उठे अन्दर को आग ।  
यह भी यज्ञरूप बन जाये,  
माँच देवों का वस राग ।

(२)

## जीवन यज्ञमय हो !

ओं त्वमग्ने यज्ञानां होना विश्वेषां हितः ।  
देवेभिर्मनुष्यं वने ॥१॥

जीवन-याग की धाग अरि को,  
तू क्यों पडो हुई है मुझ ।  
जगती भर के दिव्य गुणों ने,  
तेरा बरग किया है मुझ ।  
अरि घषक उठ तू अन्दर में,  
ओ ! मेरे जीवन की आग ।  
सत्कर्मों में ही सम्पद हो,  
जीवन स्वयं वने यह याग ।

(३)

## मेरे जीवन यज्ञ के होता बनो !

ओं अग्नि दूत षणीमहे होतारं विश्ववेदसम् ।  
अस्य यज्ञस्य सुरुद्रुम् ॥३॥  
अग्नि रूप हे प्रभुवर मेरे,  
तुम हो जग के जाननहार ।  
विश्व-याग के होता हो तुम,  
चला रहे इसके ध्यापार ।  
मम जीवन भी एक यज्ञ है,  
तुम्हीं वनो इसके कतार ।  
वर्ण तुम्हारा ही हम करते,  
दीन अनो की सुनो डुकार ।

(४)

## ज्योति से ज्योति जले !

ओं अग्निर्वाणि अंचनदु द्रविणस्तुविषयस्यम् ।  
समिद्धं सुरु द्राहृतः ॥१॥

अरी घषक उठ जीवन-ज्वाला,  
जगती मे कर ज्ञान-ज्वाला ।  
हो तेजस् मव पाप मिटा दे,  
जैसे दिाकर धन-धम-मासा ।  
विश्व यज्ञ की ज्योति मे ही,  
तू करदे निज को आहूत ।  
सारे वाधा-विघ्न भेदकर,  
पाये वल-वैभव अकूत ।

—श्री० धर्मचन्द्र विद्यालंकार,  
पसवल

## शाकाहार की महत्ता

इस्लाम ने मांस खाने को ही नहीं, हिंसा करने को भी अन्धा नहीं माना है। इसके सबूत में हज़ करने के बारे में विधान है, वह खासतौर से ध्यान देने योग्य है। जब कोई इच्छित हज़ करने जाता है तो वह अहराम (सिर पर बांधने का संकेत कपड़ा) बांधकर आता है और जब तक हज़ नहीं हो जाती, वह उसे बांधे रूहता है। अहराम की स्थिति में हज़ करनेवालों को पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करना पड़ता है। इस स्थिति में वह न तो किसी पशु पक्षी को मार सकता है, न किसी जीवधारो पर देना चला सकता है और न ही घास नोच सकता है। यहाँ तक कि वह किसी हरे भरे वृक्ष की टहनी/पत्तों तक नाने तोड़ सकता है। इस प्रकार हज़ करते समय अहिंसा के पूर्ण पालन का स्पष्ट विधान है।

इतना ही नहीं, इस्लाम के पवित्र तीर्थ मक्का स्थित कस्बे के चारों ओर कई मीलों के घेरे में किसी भी पशु-पक्षी की हत्या करने का निषेध है और हज़-काल में हज़ करनेवालो को मज-मांस का भी संबंध त्याग अरुही है। इस्लाम में आध्यात्मिक साधना में मासाहार पूरी तरह बहिषत है, जिसे तर्क हैवानात (जानवर से प्राप्त वस्तु का त्याग) कहते हैं।

'यदि तुमने मांस खाया है, तो मेहरबानी कर अन्दर मत आओ' यह चेतावनी किसी हिंदू अथवा बौद्ध मन्दिर में नहीं बल्कि एक मुस्लिम दरवेश की समाधि के दर्शन करनेवालों को दी जाती है। यह समाधि कर्नाटक राज्य में गुलबर्गा में आसन्न जान के मार्ग में द किलो-मीटर की दूरी पर चौदहवीं शताब्दी के मसहूर दरवेश हज़रत श्वाबा बन्दानवाज नेसूदराज के समकालीन दरवेश हज़रत शा वसनुदीन की है, जहाँ सिफं शाकाहारी ही दर्शन करने जा सकते हैं।

(सामार 'शाकाहार क्रांति')

## पंचम अंतर्राष्ट्रीय वैदिक पुरोहित प्रशिक्षण

## शिविर इस वर्ष सिलिगुड़ी में

अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रशिक्षण, हैदराबाद की ओर से प्रसिध्द की भांति इस वर्ष भी धीम्भावकाश में पंचम अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक पुरोहित प्रशिक्षण शिविर का आयोजन आयसमाज, सिलिगुड़ी के तत्वाधान में सिलिगुड़ी में किया जा रहा है।

यह शिविर इस वर्ष १५ मई से १५ जून ६१ तक ध्यांसमाज भवन, सिलिगुड़ी में लगाया जा रहा है। इस शिविर में १६ वर्ष से अधिक आयु वाले स्त्री-पुरुष जिनको योग्यता कम से कम मैट्रिक के समकक्ष ही समानरूप से भाग ले सकते हैं। महिलाओं के निवास की पृथक् व्यवस्था की जाती है।

विगत वर्षों में इस प्रकार का प्रशिक्षण मोरोवास (विदेश में) हैदराबाद एवं तपोवन ध्यास्य हैदराबाद में सफलतापूर्वक किया जा चुका है जिसमें सैकड़ों पुरोहितों को सफल प्रशिक्षण दिया जा चुका है। एक मास के इस शिविर में भाग लेने के इच्छुक जन तीन रुपये के पोस्ट के टिकट भेजकर पूर्ण विवरण एवं आवेदन पत्र निम्नांकित पते पर प्राप्त कर सकते हैं।

शिविर की समाप्ति के बाद दार्जिलिंग एवं नेपाल यात्रा की भी विशेष व्यवस्था रहेगी। पता इस प्रकार है:—

आचार्य, अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रशिक्षण,  
हैदराबाद-५०००२७ (पिनकोड तिसलाना न मूले)

विशेष रूप से सभी आर्यसमाजों और ध्यांसमाजों से निवेदन है कि वे प्रतिभासालो एवं सेवानिवृत्त सज्जनों को समुचित प्रशिक्षण दिलाकर मानव निर्माण की पवित्र योजना में महत्त्वपूर्ण योगदान करें। अपने क्षेत्र के अध्यापकों एवं प्रोफेसरों को विशेष रूप से प्रेरणा प्रदान कर भिजवाने का यत्न करें। प्रशिक्षण देश-विदेश में स्वातिप्राप्त कर्मकाण्ड के महारथी आचार्य वेदभूषण स्वयं दे।

—०—

# योगाभ्यास का महत्त्व

ले०—ड० शान्तिवरायण

इस संसार में मनुष्यादि असंख्य प्राणी अपने-अपने कर्मफलानुसार जन्म लेते हैं और अनेक प्रकार के सुख-दुःख भोगते हैं । यद्यपि यह बात प्राचीन प्रकार से सिद्ध है कि पशु-पक्षी प्रादि जन्मों में दुःख अधिक और सुख कम प्राप्त होता है, (क्योंकि कोई भी मनुष्य पशु-पक्षी नहीं बनना चाहता), तथा मनुष्य जन्मों में सुख अधिक और दुःख कम मिलता है; परन्तु सर्वश्रेष्ठ मनुष्य जन्म पाकर भी व्यक्ति सांसारिक दुःखों से पूर्णतया छूट नहीं पाता । प्रत्येक मनुष्य के जीवन में काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, छल, कपट, विश्वासघात, राग, द्वेष, मृत्यु-भय और अविद्या प्रादि से सम्बन्धित अनेक घटनाएँ घटती हैं । इन घटनाओं के उपस्थित होने पर व्यक्ति अज्ञान, भ्रम, दुःखी और अपने-आप से विचलित होने लगता है । ऐसी सकट को बर्झा में उपर्युक्त समस्याओं को सुलझाने के लिये उसके पास एकमात्र उपाय रह जाता है, कि वह सम्पूर्ण जगत् को उत्पन्न और धारण करने वाला कस्तेवाले सच्चे हितेषी, आत्मस्वरूप, परमपिता परमात्मा को शरण लेवे । इसके प्रतिरिक्त उसे कोई मार्ग नहीं सुझता । सतार में ऐसा कौन मन्थनापी मनुष्य होगा, जो इन समस्याओं से छूट निकलना नहीं चाहेगा । बस, इन समस्याओं से छूटने का जो एकमात्र उपाय है, वह है—ईश्वर को शरण में जाना 'योगाभ्यास करना' । इसके बिना कोई भी मनुष्य दुःखों से पूर्णतया नहीं छूट सकता, चाहे वह किसी भी देश, जाति, सम्प्रदाय वा वर्ण से सम्बन्ध रखता हो ।

इसके प्रतिरिक्त जन्म-जन्मान्तरों के और इस वर्तमान जन्म के भी मलिन संस्कार आत्मा और अन्तःकरण पर बने रहते हैं । इन संस्कारों से व्यक्ति प्रेरित होकर अनेक प्रकार के अनिष्ट कर्म करता रहता है और फिर उन कर्मों का फल भोगने के लिये भिन्न-भिन्न यौगियों में भटकता एव दुःख भोगता रहता है । जैसे साधुन प्रादि उपायों से वस्त्रों को धोकर शुद्ध-पवित्र बना दिया जाता है, ऐसे ही 'योगाभ्यास' रूपी साधुन से शारात्मा और अन्तःकरण को धोकर शुद्ध-पवित्र बना दिया जाता है । आत्मा और अन्तःकरण के शुद्ध हो जाने पर व्यक्ति पाप-कर्मों का आचरण नहीं करता और इस जन्म-मरण के चक्र से छूटकर दुःखों से सर्वथा मुक्त हो जाता है । यही मानव-जीवन का प्रतिम एव सर्वोच्च लक्ष्य है । इसी के लिये ही मनुष्य जन्म मिलता है । इस लक्ष्य को प्राप्ति केवल मनुष्य जन्म में ही को जा सकता है, अन्य किसी जन्म में नहीं । इसलिये 'दुःखों से पूर्णतया छूटने' रूपी चरम लक्ष्य को प्राप्ति के लिये प्रत्येक मनुष्य को 'योगाभ्यास' अवश्य ही करना चाहिये ।

जो व्यक्ति इस 'योगाभ्यास-ईश्वरप्राप्तना' को करेगा, वे सम्पूर्ण दुःखों से छूटकर ईश्वर के परम-आनन्द को प्राप्त होते हैं तथा जो इसे नहीं करते, वे मन्थनापी दुःखसागर में ही डूबे रहते हैं । इस सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द सरस्वती के विचार देखिये :—

“...जो आकाश के समान व्यापक, सब देवों का देव परमेश्वर है, उसको जो मनुष्य न जानते न मानते, जो उसका ध्यान नहीं करते, वे मास्तिर मन्थयति सदा दुःखसागर में डूबे ही रहते हैं । इसलिये सर्वथा उसी को जानकर सब मनुष्य सुखी होते हैं ।”

—(सत्यार्थप्रकाश सप्तम समुल्लास)

महर्षि दयानन्द सरस्वती उपासना का फल लिखते हैं :—  
 “...परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना अवश्य करनी चाहिये । इससे—आत्मा का बन्ध इतना बढेगा (कि) वह पशुओं के समान दुःख प्राप्त होने पर भी न बचरावेगा, और सबको सहन कर सकेगा । क्या यह छोटी बात है ? और जो परमेश्वर को स्तुति प्रार्थना और उपासना नहीं करता, वह क्रूररथ और महाभ्रमं भी होता है । क्योंकि जिस परमात्मा ने इस जगत् के सब पदार्थ जीवों को सुख के लिये दे रखे हैं, उसका भूज भूल जाना, ईश्वर ही को न मानना, कृतघ्नता और मुसंता है ।”

—(सत्यार्थप्रकाश सप्तम समुल्लास)

इतना ही नहीं ईश्वर की उपासना करने से निम्न लाभ भी होते हैं :—येथा बुद्धि को प्राप्ति, तीव्र स्मृति की प्राप्ति, एकाग्रता की प्राप्ति, मन और इन्द्रियों पर नियन्त्रण, शान्ति, प्रसन्नता, सन्तोष, निःस्पृहा, परोपकार की भावना, अपने धात्म-स्वरूप का ज्ञान, ईश्वर का साक्षात्कार एवं ईश्वर के नित्य आनन्द व ज्ञान की प्राप्ति, शारीरिक व वात्तिक बल की प्राप्ति, धर्ममानादि दोषों का नाश एत्यादि ।

इसलिये प्रत्येक बुद्धिमान् मनुष्यको दुःखों से पूर्णतया छूटने एवं ईश्वरीय आनन्द को प्राप्त करने के लिये प्रतिदिन योगाभ्यास—ईश्वर की उपासना अवश्य ही करनी चाहिये ।

## अन्धश्रद्धा से मुक्त ईश्वरभक्ति का प्रकार

ईश्वर का आँकार नाम है, सो पिता-पुत्र के सम्बन्ध के समान है, और यह नाम ईश्वर को छोड़ के दूसरे अर्थ का वाचनी नहीं हो सकता । ईश्वर के जितने नाम हैं, उनमें से आँकार सबसे उत्तम नाम है । इसलिये इसी नाम का जप अर्थात् स्मरण और इसी का अर्थ विचार सदा करना चाहिये कि जिससे उपासक का मन एकाग्रता, प्रसन्नता और ज्ञानको यथावत् प्राप्त होकर स्थिर हो । जिससे उसके हृदय में परमात्मा का प्रकाश और परमेश्वर की प्रेम-भक्ति सदा बढती जावे । फिर उससे उपासको को यह भी फल होता है कि उस अन्तर्गामी परमात्मा की प्राप्ति और अन्तराय अविद्यादि बन्धों तथा रागरूप विघ्नो का नाश हो जाता है ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत  
 श्ल० भा० भूमिका से

## प्रा. धर्मद्वेष धीमा

“आँकार कुञ्ज” शारोबाव, बडोदा—३१००१

## महर्षि दयानन्द जन्मस्थली टंकारा में ऋषि मेला

महर्षि दयानन्द जन्मस्थली टंकारा (शोरापूर) गुजरात में अथ ऋषि बोधोत्सव का आयोजन किया गया है । यह बोधोत्सव ११, १३, १४ फरवरी १९९१ को होगा । उससे वे आर्यजनों के प्रसिद्ध विद्वान् एव अज्ञोपदेशक अपने-अपने प्रबन्धों एव अज्ञानों को सामाग्निक करेयें । प्रबन्धों की भाँति व्याख्यात तथा रोचक कार्यक्रम होंगे ।

दिल्ली से यात्रियों को टंकारा से जाने के लिये तीन बसों का प्रबन्ध किया गया है । एक बस श्री धामदास सचदेव मन्त्री, आर्यसमाज जूना मण्डी पहाड़गंज नई दिल्ली—११००१ फोन न० ७३२५०४ चला रहे हैं । दूसरी बस श्री रामचन्द्र आर्य ५९६ भोमनगर गुडगाँव हरयाणा चला रहे हैं । और तीसरी बस, श्री रामचन्द्रदास आर्य, महामन्त्री, दक्षिण दिल्ली, वेधप्रचार मण्डल, ओ—१७ बी, जयपुरा एक्स०, नई दिल्ली—११००१४ फोन न० ६६४५०० चला रहे हैं । जो आर्यजनों बसों से टंकारा जाना चाहें वे उपरोक्त किसी भी पते पर अपनी सीटें सुरक्षित करवा सकते हैं ।

दिल्ली से एक गाड़ी प्रतिदिन रात्रि १० बजे ब्रह्मदावाव मेल जाती है जोकि राजकोट तक जाती है । राजकोट से टंकारा केवल ५५ कि० मी० है । वहाँ से हर समय बसें उपलब्ध हैं । जो यात्री रेल से टंकारा जाना चाहें वे अपनी सीटें रेलवे स्टेशन से सुरक्षित करवा लें । टंकारा में पंचाशतीवाले आर्यजनों के आवास एव भोजन का प्रबन्ध टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगा । रेल की बापसी टिकट के लिये आप आचार्य बोधप्रकाश शास्त्री, महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा, राजकोट ३६३५० से सम्पर्क करें । टंकारा ट्रस्ट द्वारा चल रहे कार्यों के लिये आप अधिक से अधिक दान राशि “महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा” के नाम केवल खाते में आर्यसमाज “प्रनारकली” मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली—११०००१ पते पर भेजने की कृपा करें । इस ट्रस्ट को ही गई राशि आयकर से मुक्त होती है ।

(रामायण सहज मन्त्री)

गतांक से श्रागे—

## वर्ण जन्म से नहीं, गुण-कर्म से

स्वामी वेदमुनि परिभाषक, ग्रन्थाल-वैदिक संस्थान, नकोबाबाद (उ०प्र०)

### वर्ण-व्यवस्था और वेद

यजुर्वेद के ३१वें अध्याय में वर्ण-व्यवस्था की रूपरेखा का वर्णन है। यजुर्वेद "कर्म-काण्ड" का वेद है। प्राणिक "कर्म-काण्ड" का अर्थ केवल यज्ञतात् आदि हा प्रथिक प्रवर्तित है किन्तु इसका वास्तविक अर्थ है "कर्म-विभाग" यजु का एक अर्थ कर्म भी है इस प्रकार यजुर्वेद कर्म का वेद है। यह भी कहा जा सकता है कि वेद के कर्म-व्यवस्था विभाग का नाम हो यजुर्वेद है। वर्ण-व्यवस्था क्योंकि श्रम-व्यवस्था का ही दूसरा नाम है और श्रम-व्यवस्था की दृष्टि से कर्मानुसार समाज का वर्गीकरण हो कर्म-व्यवस्था है। अतः कर्मकाण्ड (कर्म-विभाजन) होने के कारण इसे यजुर्वेद में आना चाहिये था। एतदर्थमेव ऐसा कि हमने लिखा है, यजुर्वेद के ३१वें अध्याय में इसकी रूपरेखा दी गई है और समस्त वेदों की श्रान्ति न रज, जाय, इस कारण ने उसे उपमा देकर प्रस्तुत किया गया है।

इस अध्याय का श्रुति नारायण है श्रान्ति नरों का अवन, सम्वहन धारण करनेवाला। अध्याय का दृष्टिकोण भी नरों को प्रयत्न, सम्वहन, धारण करनेवाले परमार्या तथा सामाजिक विषय का है। वर्ण-व्यवस्था की रूपरेखा जिन मन्त्रों में दी गई है, उनका देवता है "पुरुष"। पुरुष का अर्थ है पूरा तथा पुरुषार्थमेव। परमार्या पूर्ण है और समस्त पुरुषार्थों में युक्त है। समाज भी अपने वर्गीकरण से पूर्ण और अपने लिए आवश्यक समस्त पुरुषार्थों से युक्त होता है। इस प्रकार उक्त दो मन्त्रों को समाज के सभी श्रागों, समस्त नरों और (नर-समूह) परिवारों को अवन, सम्वहन, धारण करने की दृष्टि और समाज के वहन करने के विषयों (देवताओं) की दृष्टिपर रखकर ही समझा जाना चाहिये। जो लोग मन्त्र के श्रुति और देवता का विचार किये बिना वेद-मन्त्रों के अर्थ करते हैं, वे उनसे भले हा कुछ अच्छे विचारों को ले लें, किन्तु मन्त्र का वास्तविक उद्देश्य—जो उसके श्रुति और देवता का नमस्कृत प्रकट हो सकता है—अर्थ प्रकार समझ नहीं।

मन्त्र इन प्रकार है—

यत्पुरुष द्यदध कतिधा व्यकल्पयत्।  
मुञ्च किमस्यामांस्क बाहू किमूर पादा उच्येते ॥

यजु० ३१/१०/

ध्व—(यत्) जो (यत्पुरुष) पुरुष को अर्थात् पण को शरीर पुरुषार्थ-युक्त को (वि—अदधु) विविध प्रकार (कतिधा) कितने (ही) प्रकार (वि—अकल्पयत्) विशेष कर कहते हैं। (मुञ्च) मुहू (किम्—अस्य) प्रार्थित) क्या इसका था। (किम् बाहू) क्या युवा (किम्—उरु) क्या नाभि से जघ्नाओं तक का भाग और क्या (पादा उच्येते) पैर कहे जाते हैं ?

अभिप्राय यह है कि यदि मानव समाज का उसकी अपनी धाव-शक्यताओं की पूर्ति के लिए, उसके अपने भीतर के सामर्थ्य के अनुसार, जो उसको अपने ही आवश्यकताओं के लिए, उसमें पूर्ण है—वर्गीकरण किया जाए तो जिस प्रकार शरीर में मुख, हाथ, पृष्ठार्थों और पैर अपने-अपने कर्तव्यों की पूर्ति करते हैं उसे पुरुष अर्थात् पुरुषार्थयुक्त कहलाने का अधिकारी बनाने रखते हैं। इसी प्रकार इस समाज में वह कौन तत्त्व अर्थात् कौन-कौन वर्ग होंगे, जो इसे पुरुष कहलाने का अधिकारी सिद्ध कर सकें। इसका उत्तर इससे श्रागे के मन्त्र में इस प्रकार दिया गया है—

ब्राह्मणोस्य मुचमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।  
उर उतस्य यदंशयः पदमूर्थो बुद्धो अजायत ॥

यजु० ३१/११/

अर्थ—(ब्राह्मणः) ब्राह्मण (अस्य) इसका (मुञ्च) अर्थात् मुहू (बनाया) था (बाहू) बुद्धा (राजन्यः) राजपुत्र, क्षत्रिय (कृतः) की गई, बनाई गई। (उर) नाभि से जघा पर्यन्त भाग (यत्) वह (अस्य) इसका (यत्) जो (अंशयः) अंश (है)। (पदमूर्थः) पैरों (के स्थान) के लिए (बुद्धः) बुद्ध (अजायत) जन्मा है।

अर्थात् जिस प्रकार शरीर की शक्तिया शरीर के ही विविध अंगों मुख आदि के रूप में अपने-अपने कर्तव्यों को पूरा करने मानव जीवन का पूर्ण अवन, सम्वहन, धारण कर लेती हैं। ठीक इसी प्रकार समाज में भी पूरे शक्तियाँ विद्यमान हैं, जो सम्पूर्ण समाज का वहन ठीक प्रकार कर सकती हैं, यदि उनका वर्गीकरण ठीक प्रकार से हो। जैसे शरीर में मुख-शान्ति कार्य करनेवाला है, इसी प्रकार समाज में भी विद्या-विज्ञान के कार्यों का सम्पादन करनेवाले लोग अर्थात् ब्राह्मण पैदा कर दिये गये हैं। जिस प्रकार शरीर की रक्षा के लिए शरीर में बुनाये उल्फन को गई हैं, उसी प्रकार समाज की रक्षा-व्यवस्था के लिए समाज में पराक्रमी लोग क्षत्रिय उल्फन कर दिये गए हैं। जैसे सारे हुए भोजन को समाज, पचा और रस बनाकर वेद सम्पूर्ण शरीर को बाट देता है और जघायें शरीर का गति में योग देती हैं, इसी प्रकार अथ सम्पादन कर समस्त समाज में दान व कर्तों के द्वारा बाँट देनेवाला और देश-विदेश जाकर व्यापार द्वारा राष्ट्र को समृद्धि में लगा रहनेवाला बर्ग अर्थात् वैश्य-वर्ग उल्फन किया गया है। इन तीनों वर्गों के कार्यों में सेवा व परिश्रम द्वारा योगदान करनेवाला शूद्र भी उल्फन हुआ है, जैसे वे दो सम्पूर्ण शरीर का भार वहन कर उसे सब स्थानों पर लिए फिरते हैं।

सत्यासत्य के नियन्त्र के लिए यदि निष्पक्षता से पूर्वाग्रह रहित होकर विचार किया जाए तो मुख, हस्त, उर, पाद प्रादि उदाहरण ही यह सिद्ध करने को उपात्त हैं कि प्रधानता गुरु कर्मों की है, जन्म को नहीं। यदि वास्तविक रूप में यह व्यवस्था वर्तमान काल में भी लागू हो जाए तो कोई राष्ट्रीय और सामाजिक समस्या ऐसी नहीं है, जो बिना किसी उल्लंघन के स्वाभाविक रूप से हल होती न चली जाए।

### वर्ण-व्यवस्था और महाभारत पुराण व धर्म-सूत्र

अन्वये भारत में जन्म-जातीयता ने अपनी जड़े इतनी गहरी जमा ली हैं कि इससे उल्फन भेदभाव तथा छुआछूत के कारण एक सहस्र वर्ष पराधीनता में विदेशियों द्वारा पादाकांत रहकर भी भारत-वासी नेत्र खोने को तैयार नहीं। निष्कृष्ट से निष्कृष्ट कर्म करने को कुछ लोग तो अपनी उच्चता का ठोस पीढे में गौरव की न केवल अनुभूति ही श्रपितु अविश्वस्त भी करते हैं। इन लोगों को इतना तक भी पता नहीं कि इनके अपने धर्मशास्त्र इस विषय में क्या कहते हैं ?

इस लेख में हम कतिपय धर्मशास्त्रों की सम्मति उद्धृत कर रहे हैं। पाठकगण देखेंगे कि शास्त्रों के पीढे दिये बचनों से यह स्पष्ट प्रमाणित होता है कि वहाँ का सम्बन्ध जन्म से नहीं अपितु गुण-कर्म से है। साक्ष ही यह भी कि गुण-कर्मों के परिबर्तित हो जाने से वर्ण भी परिवर्तित हो जाते हैं। इस विषय में पहले भारत के महात् इतिहास ग्रंथ महा-भारत से उद्धरण प्रस्तुत है। पाठकगण ध्यानपूर्वक पढ़ें।

महात् ब्राह्मणः पुत्रः क्षत्रियः कर्मस्य कारणम्।

महाभारत शांति पर्व ॥

४३/११/

अर्थ—इन्द्र ब्राह्मण का पुत्र था, कर्म द्वारा क्षत्रिय हो गया। अब पुराणों के प्रमाण देखिए—

इषकी नर्मसम्भूतः पिता व्यासस्य धारिवः।

तपसा ब्राह्मणो जातः संस्कारास्तेन कारणम् ॥

मविष्य पुराण ब्राह्मण-वर्ष-४३/२०/

धर्म—चाण्डाली के गर्भ से उत्पन्न व्यास जो के पिता क्षत्रिय थे । तप के द्वारा ब्राह्मण हो गये इसका कारण संस्कार है । इस ब्लोक से स्पष्ट है कि चाण्डाली माता और क्षत्रिय पिता के संयोग से जन्म लेकर भी पुरुषार्थ पूर्वक विद्याध्ययन करके अपने संस्कारों को परिवर्तित कर व्यास जी ब्राह्मण बने तथा महर्षि वेद व्यास कहलाए ।

गणिकागर्भसम्भूतो वशिष्ठश्च महाभूमिः ।  
तपसा ब्राह्मणो जातः संस्कारस्तेन कारणम् ॥

महर्षि पुराण ब्रह्मवर्ष ४३/२८/

अर्थ—गणिका अर्थात् बेश्या के गर्भ से उत्पन्न महाभूमि वशिष्ठ तपसा अर्थात् पुरुषार्थ पूर्वक विद्याध्ययन करके ब्राह्मण बने, इसका कारण यह है कि उन्होंने विद्या तथा आचरण द्वारा उत्तम संस्कार निर्माण किये और इस प्रकार के उत्तम आचार-विचार अर्थात् गुण-कर्म-स्वभाव ब्राह्मणत्व का उपलब्ध हुआ, जिसके कारण समाज में ब्राह्मण पद प्राप्त हुआ ।

इससे यह तो स्पष्ट है ही कि जिसके संस्कार, आचार-विचार, गुण, कर्म, स्वभाव उत्तम हों, वही ब्राह्मण होता है फिर चाहे वह किसी शूद्र घर में जन्मा हो अथवा अतिशूद्र घर में । बिना उत्तम संस्कारों की प्राप्ति के कोई ब्राह्मण कहलाने का अधिकारी नहीं हो सकता, चाहे वह ब्राह्मण परिवार में ही जन्मा हो । उत्तम संस्कारों की प्राप्ति के लिए विद्याप्राप्ति अत्यन्त आवश्यक है । ब्रह्म पुराण ४३/२०२ में कहा भी है—

स्योपि आगमसम्पन्नो द्विजो भवति संस्कृतः ।

धर्म—शूद्र जो शास्त्रसम्पन्न अर्थात् शास्त्रों का ज्ञान और संस्कारित होकर द्विज हो जाता है ।

आपस्तम्ब धर्म सूत्र का विधान भी पठनीय श्रीर मननीय है, जो नीचे उद्धृत है ।

धर्मचर्याया जघम्यो वर्णः पूर्वं पूर्वं वर्णमापद्यते जातिपरिवृत्तौ ।।  
अधर्मचर्याया, पूर्वो वर्णो जघम्यं जगम्यं वर्णमापद्यते जातिपरिवृत्तौ ।।२।  
(आपस्तम्ब सूत्र)

धर्म के आचरण से निकृष्ट वर्ण के लोग भी स्व-स्व कामनुसार पूर्व अर्थात् अपने से उच्च वर्ण को प्राप्त होते हैं और इस प्रकार उनका जाति परिवर्तन हो जाता है । इस का अर्थिगम्य यह है कि शूद्र जिस वर्ण के गुण-धर्म-स्वभाव को पुरुषार्थ पूर्वक विद्या-विज्ञान प्राप्त करके प्राप्त कर लेगा, उसी वर्ण का अर्थात् वैश्य, क्षत्रिय अथवा ब्राह्मण हो जाएगा । इसी प्रकार वैश्य भी परिश्रम करके क्षत्रिय अथवा ब्राह्मण और क्षत्रिय पुरुषार्थ द्वारा ब्राह्मण बन सकता है, जिस प्रकार विश्वामित्र और वेदव्यास क्षत्रिय से ब्राह्मण बने थे ।

इसी प्रकार अधर्म का आचरण करने के कारण अर्थात् स्व-वर्ण के आचरण से निम्न स्तर के प्राचरण करने के उच्च वर्ण का व्यक्ति भी अपने से जघम्य अर्थात् निम्न वर्ण को प्राप्त होता है । इसका स्पष्टार्थ यह हुआ कि जब ब्राह्मण के गुण-कर्म-स्वभाव के विपरीत कर्म करने लगता है तो उन कर्मों के द्वारा जिस वर्ण के अनुसार वह कर्म होते हैं उसी वर्ण को प्राप्त हो जाता है । अर्थात् यह है कि ब्राह्मण से क्षत्रिय वैश्य तथा और अधिक गति होकर शूद्र बन जाता है । इसी प्रकार क्षत्रिय भी वैश्य और शूद्रपन को तथा वैश्य शूद्रपन को प्राप्त हो जाता है । गौतमीय तुलसीदास जी का यह कथन भी उक्त शास्त्रीय प्रमाणों की पुष्टि करता है ।

कर्म प्रधानं विद्वन् रचिं राक्षा ।

जो अस कीन्हा तो तस फल चाक्षा ॥

अर्थ—विद्वन् में कर्म की प्रधानता स्वीकार की जाती है । जो जैसा करता है, उसे वैसा ही फल मिलता है । जैसे आचरण अर्थात् कर्म होंगे, वैसा ही पद (स्थान) समाज में मिलेगा । इस प्रमाणों के होते हुए भी जो लोग जन्म जातिवाद के समर्थक हैं, शास्त्र का निम्न कथन भी उन्हें ध्यान में रखना चाहिए ।

जगन्मा जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्यते ।

धर्म—जन्म से सब शूद्र अर्थात् अशूद्र, गन्दगी से लिपटे हुए तथा मूर्ख ही उत्पन्न होते हैं । शूद्र किये जाने पर विद्या की प्राप्ति और शुभ-संस्कारों के द्वारा ही स्व-स्व गुण-स्वभाव के अनुसार द्विज ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य, वृद्ध हो जाते हैं ।

द्विज का अर्थ है द्विजन्मा—जिसके दो जन्म हुए हों । एक माता पिता के संयोग से तथा दूसरा विद्या प्राप्ति द्वारा मुक्तकों से । किसी भी प्रकार को विद्या प्राप्त कर पानेवाला अर्थात् माता-माता से जन्म प्राप्त करने मात्र से तो मनुष्य शूद्र ही रह जाता है । सृष्टि-उत्पत्ति काल में मानव समाज की स्थिति और उसके वर्णों में परिवर्तन हो जाने अर्थात् वर्ण-विभाजन का वर्णन करते हुए ब्रह्मर्षि भगवान् भृगु के शब्दों को जो उन्होंने ब्रह्मस्पति के पुत्र भारद्वाज से कहे हैं—हम यथा उद्धृत करते हैं । ब्लोक इस प्रकार है—

न विशेषोऽस्ति वर्णानां सर्वं ब्राह्मद्व जगत् ।

ब्रह्मणः पूर्वं सृष्टि कर्मपापि वर्णता गता ॥

पिशाचाः राक्षसाः प्रेताः विविधा म्बेच्छजातयः ।

नट्यज्ञान-विज्ञानाः स्वच्छन्दाचारोऽपिः ॥

महाभारत शान्तिपर्व १९६/१/१८

अर्थ—वर्णों को कोई विशेषता नहीं सम्पूर्ण जगत् ब्रह्मण्य है । पहले सब ब्राह्मण थे, कर्मों द्वारा वर्णों को प्राप्त पिशाच, राक्षस, प्रेत आदि विविध जातियां होगयी ।

प्रिय पाठकबृद ! आपने ध्यानपूर्वक इस सम्पूर्ण लेख को पढ़ा ही है । यह आपको स्पष्ट होगया होगा कि जो लोग जन्म जातीयता के आधार पर स्वयं को उच्च और श्रेष्ठों को नीच मानते उनसे बूझा और छुड़ाकृत करते हैं, वह इन सभी ग्रंथों को अपने धर्मग्रन्थ और शास्त्र मानते हैं, जिनके प्रमाण हमने इस लेख में दिये । ऐसी स्थिति में उन भाइयों को ऊच-नीच की भावना और मान्यता तथा अपने ही धर्मग्रन्थों से घृणा अनुचित है । हमारा ध्येय सब से विनम्र निवेदन है कि इस प्रकार के विचारों और व्यवहार को त्यागकर अपने धर्म वन्धुओं के साथ समानता और प्रेम का व्यवहार करें ।

जो कोई जन्म से वर्ण-व्यवस्था माने और गुण-कर्म के योग से न माने तो उससे पूछना चाहिए कि जो कोई अपने वर्ण को छोड़ नीच अथवा कृषियुक्त, मुसलमान होगया हो, उसको भी ब्राह्मण क्यों नहीं मानते ? तब यही कहिये कि उसने ब्राह्मण के कर्म को छोड़ दिया इसीलिये वह ब्राह्मण नहीं है । इससे यह सिद्ध होता है कि जो ब्राह्मण आदि उत्तम कर्म करते हों, वे ही ब्राह्मणदि और जो नीच भी उत्तम वर्ण के गुण कर्म, स्वभाव वाला होंवे तो उसको भी उत्तम वर्ण में और उत्तम वर्णत्व हो, के नीच काम करे तो उसको नीच वर्ण में गिनना अवश्य चाहिए ।

## पुरोहित प्रशिक्षण-शिविर

श्रीमद् दयानन्द मुकुल विद्यापीठ गदपुरी तं० पलवल, जिवा फरोदाबाद के २४वें वार्षिकोत्सव पर पुरोहित प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है । इसमें कम से कम बसनी तक की योग्यता रखनेवाले व्यक्ति भाग ले सकते हैं । १८ फरवरी प्रातः से २४ फरवरी तक सोसह संस्कार वैदिक रीति से कराने का प्रशिक्षण दिया जाएगा । भोजन एवं आवास की व्यवस्था मुकुल की भोख से की जाएगी । ऋतु अनुकूल विस्तर तय लाये । प्रशिक्षण के अन्त में प्रमाण-पत्र भी दिया जाएगा जिसके लिए ५०/- रुपये का प्रावधान है ।

अतः स्थान सुरक्षित कराने ।

प्रधान

श्रीमद् दयानन्द मुकुल विद्यापीठ  
गदपुरी (वल्लभगढ़) फरोदाबाद-१२१००४

## ‘जाग्रत ज्योति जगाई जिसने...’

बुढ़ हुए भारत में जिसने,  
वेदानता का फूला मत्र ।  
जिसके सतत प्रयासों से हो—  
गया हमारा देश स्वतन्त्र ।

जिसने पुनः धरणी पर निभंय,  
वेदधर्म संदेश दिया ।  
जिसने निभंय सिंह गर्जना—  
करके, मनु उपदेश दिया ।

जिसको लखकारो ने जन-जन,  
को नव शक्ति प्रदत्त किया ।  
जिसने युवकों को स्वदेशहित—  
लक्ष्मणे को उन्मत्त किया ।

ज्ञान सूर्य को प्रखर रश्मि सा,  
जिसने लिखा सत्यार्थप्रकाश ।  
यासोकित जिस दिव्य द्वय से,  
प्राज्ञ मनुजता का विकास ।

जाग्रत ज्योति जगाई जिसने,  
कुटिघों से ले राजमहल तक ।  
जिसकी गतिविधियों से कफित,  
हुआ शत्रु था लंदन तक ।

जिसने शोती अवसाओं को,  
धाने बड़कर प्राण दिया ।  
जिसके शब्द लिनादों ने हो,  
कण-कण को नव प्राण दिया ।

वर्षाधर्म को पुण्य ध्वजधरा—  
जिसने किया पुनःस्थापित ।  
वैदिक धर्म पुनः जाग्रतकर,  
जिसने किया धरा का हित ।

‘कृष्णन्तो विश्वमार्यम्’ का—  
जिसने नव उद्घोष किया ।  
बदकर आगे नित्य निरलस,  
जिसने था यह घोष किया ।

पालशकों के गहन दुर्ग भी—  
जिसके सम्मुख नष्ट हुए ।  
धर्मोद्वन्धर तथा मनुजता—  
के सन तत्त्व विनष्ट हुए ।

जिसने दिया पुनः जगती को,  
वेदों का मर्मलभय ज्ञान ।  
व्यय-व्यय भारत का सुत वह,  
दयानन्द ऋषि महान् ॥

राधेश्याम ‘आर्य’ विद्यावाचस्पति  
सुसाफिरलाना, सुखतानपुर (उ०प्र०)

## शोक समाचार

दिनांक ७-१-६१ को बभानक बुदयगति रुकने से श्री जगदीश्वरराय धार्य (कंबारी वाले) की माता श्रीमती रुक्मणी देवी का दिल्ली में निधन होगया । वे ७३ वर्ष की थी । माता जी बड़ी धर्मात्मा थी । अतिथि सेवा का विशेष गुण था । दान में भी विशेष रुचि थी । अपने सम्पन्न तीनों पुत्रों को धार्मिक जगहों में दान देने हेतु प्रेरित करती रहती थी । बालावास आर्यसमाज मन्दिर में विशेष योगदान था । गाल क्वारो में बस अड्डे पर बंटने की कुर्सी तथा प्याऊ एव गाल में लोगों के धारु से एक विशाल गीता यजन, बच्चों को प्रेरित कर बनवाया । माता जी की अत्येति मस्कार दिल्ली में डा० महेश आर्य ने करवाया । इस अवसर पर दिल्ली धार्य प्रतिनिधिसभा के प्रधान डा० धर्मपाल जी तथा अन्य गणमान्य व्यक्तित्व उपस्थित हुए । हमारी भगवन्त से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे ।

अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी प्रधान, आर्यसमाज, क्वारो

## नरवाना में महायज्ञ

धार्यबीर दल नरवाना ने मकर सौर सक्रांति के उपलक्ष्य में धार्यसमाज नरवाना के खुले प्राणग में एक महायज्ञ किया जिसका आरम्भ बुढ़ आर्य नेता श्री तारावन्द जी आर्य ने ओ३३ का मन्त्रा लहराकर किया । यज्ञ की अध्यक्षता श्री बीरेन्द्र कुमार जा आर्य प्रधान धार्यसमाज नरवाना ने की तथा उन्होंने आचरोरों को अनुशासन ने रहकर कार्य करने की प्रेरणा दी ।

आर्यबीर हरीश आर्य, प्रमोद आर्य व नरेन्द्रकुमार धार्य ने ईश्वर भक्ति तथा देशभक्ति के मधुर भजनो से सभी का मनोरजन किया । श्री विजयकुमार जी आर्य शांतालयक ने देवभक्ति के भजन के साथ सभी धार्यबीरों को उत्साह से कार्य करने को प्रेरणा दी । श्री सत्यपाल शास्त्री उपवाला नायक ने ध्वनना भाषण देते हुए आर्यबीरों को अपनी शक्ति का प्रयोग राजनीति से ऊपर उठकर देना को एकता तथा देश की रक्षा के लिए करने को प्रेरणा दी । श्री बीर नन्त जो शास्त्री पुरोहित आर्यसमाज ने अपने भाषण में मकर सक्रांति का महत्व बताते हुए कहा कि उत्सव मनाने से ही आर्यसमाज व वैदिक धर्म जीवित रहता है ।

अन्त में श्री राधाकृष्ण जो आर्य प्रधान बीर दल नरवाना ने अपने भाषण में क्रांतिकारियों के उदाहरण देकर सभी आर्यो हुए बालकों, जवानों तथा बुढ़ों से प्रार्थना की कि हम इस महायज्ञ पर अपने जीवन की एक बुराई छोड़ने की प्रतीज्ञा कर तथा आर्यसमाज के सिद्धांतों की रक्षा के लिए तन, मन, धन व्योछावर करने का सकल्प करके जाएं, सभी ने प्रधान जी को प्रार्थना का स्वागत तीन तालियों से किया । गांति पाठ के साथ महायज्ञ का कार्य समाप्त हुआ ।

अचरनीकुमार धार्य मन्त्री, आर्यबीर दल, नरवाना

## जिला गुडगांव में वेदप्रचार

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से स्वामी देवानन्द जी की भजनमण्डली ने गत मास निम्नलिखित आर्यसमाजों में वेदप्रचार किया ।

आर्यसमाज रामनगर गुडगांव, नई काबानो गुडगांव, सोहना, नूह, महिला आर्यसमाज जंकरमपुरा गडगांव, पुरुष आर्यसमाज जंकरमपुरा गुडगांव, फिरोजपुर खिरका, बसई मेरा, जीवा, कावनी, नगीना, पिनगवा, पुनाहना ।

ध्यामलाल आर्य सयोजक जिला गुडगांव वेदप्रचार मण्डल

## सुताना (पानीपत) में आर्यसमाज मन्दिर

६ जनवरी को ग्राम सुताना जिंला पानीपत में ५० धर्मपाल शास्त्री द्वारा यज्ञ करवाया गया । श्री जयसिंह आर्य ने अपने ग्राम में धार्यसमाज मन्दिर बनवाने के लिए एक कनाल भूमि तथा ५००० रु० दान देने की घोषणा को और मन्दिर को आश्रायशिला रखवाने श्रादि निश्चित करने का अधिचार सभा के बोधायस्य श्री रामानन्द सिंहस्य को दिया गया । इस अवसर पर श्रीमती नुगली देवी जी को स्वामी धर्मानन्द जी तथा ५० धर्मपाल शास्त्री ने श्रद्धाजलि अर्पित की ।

**सत्य के प्रचारार्थ**

सजिल्द **₹००** सेकड़ा

अजिल्द **₹००** सेकड़ा

**मृत्युार्थ प्रकाशा**

घर घर पहुंचाएँ

सफेद कागज सुन्दर छपाई

शुद्ध संस्करण वितरण करनेवालों के

आकार 23×36-16 पृष्ठ ४20 की दर, नित्य प्रचारार्थ

आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट

455, रानी बावली, दिल्ली-6 दूरभाष: 238360/233112

### ‘वेद-वेदांग एवं वेदोपदेशक पुरस्कार’

आर्यसमाज सान्त्वाह्य द्वारा प्रवर्तित वेद-वेदांग एवं वेदोपदेशक पुरस्कार १९६१ के लिए स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती एवं महात्मा प्रेमभिक्षु जी महाराज मयूरा का चयन किया गया है। वेद-वेदांग पुरस्कार विजेता पूजनीय स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती को २१००० एवं वेदोपदेशक पुरस्कार के विजेता महात्मा प्रेमभिक्षु जी को ११००० रुपये की पेंसी एवं अनिवन्दन-पत्र, रजत ट्राफी, शाल एवं धोखल से सम्मानित किया गया।

समारोह १६-१-६१ को आर्य विद्या मन्दिर सभागृह में सम्पन्न हुआ। मुख्य प्रतिपि डा० कर्णसिंह, अग्र्यस डा० शिवाजीराव नित्येकर एवं विशेष अतिथि डा० राममनोहर त्रिपाठी थे। समारोह का संयोजन केप्टिन देवरल धार्य ने किया।

इससे पूर्व वेद-वेदांग पुरस्कार से ५० उदयबीर जी शास्त्री, श्री विद्यनारायण जी विद्यामार्तण्ड, डा० रामभाय जी वेतालकार, प्राचार्य प्रियव्रत जी ज्वालापुर एवं प० हरिहरण जी सिद्धान्तानंदकार को एवं वेदोपदेशक पुरस्कार से ५० शान्तिप्रकाश जी शास्त्रार्थ महाराष्टी, श्री पन्नालाल जी पीयूष एवं श्री बीमप्रकाश जी वर्मा ब्रजनी-पदेशक को सम्मानित किया जा चुका है।

इसके अतिरिक्त आर्यसमाज सान्त्वाह्य ने महामहोपाध्याय ५० सुविष्टार जी सोभासक को ७५००० एवं ५० सत्यकाम जी विद्यालकार को ५१००० रुपये की पेंसी से विशेषरूप से सम्मानित करने का सोभाय प्राप्त किया है।

केप्टिन देवरल धार्य

सम्पादक के नाम पत्र

### फरवरी मास में आर्यसमाजों के उत्सव

१. गुरुकुल धीरगवास जि० हिसार	१ से ३ फरवरी
२. आर्यसमाज औरंगाबाद विभोनी जि० फरीदाबाद	१, ३, ,,
३. ,, ,, खेड़की डा० बेरावास	६, ,, १० ,,
४. ,, ,, मानपुर जिला फरीदाबाद	६, ,, १० ,,
५. ,, ,, मोसा जिला फरीदाबाद	१२, ,, १३ ,,
६. ,, ,, कवारी जिला हिसार	१५, ,, १० ,,
७. ,, ,, गुरुकुल मऊजर जिला रोहतक	१५, ,, १७ ,,
८. ,, ,, फरिदाबास जिला महेंद्रगढ़	२३, ,, २४ ,,
९. ,, ,, गदपुरी जि० फरीदाबाद	२२, ,, २४ ,,
१०. ,, ,, बासतमन्द जि० हिसार	२२, ,, २४ ,,
११. ,, ,, गुरुकुल मटिगूह जि० सोनीपत	२२, ,, २४ ,,

आर्यसमाजों के अधिकांशों से निवेदन है कि उपरिनिमित्त तिथियों को छोड़कर अपने उत्सवों की तिथियां निश्चित करके सभा को सूचित करें जिससे उपदेशक तथा ब्रजनीपदेशकों के कार्यक्रम बनाये जायें।

सुदधन्देव धार्याय  
वेदप्रचारार्थिष्ठाता

### संग्रहणीय पुस्तक

आय प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा प्रकाशित पण्डित जगदेवसिंह सिद्धान्ती जी की जीवनी पढ़ने का सोभाय प्राप्त हुआ। सिद्धान्ती जी का यह जीवन-चरित्र काफी रोचक एवं संग्रहणीय है। इसके माध्यम से उनके विषय में डेर सारी सामग्री पढ़ने को मिली। निःसन्देह सिद्धान्ती जी आर्यसमाज के एक प्रमुख वैदिक विद्वान् थे। जिन्होंने जीवन-पर्यन्त आर्यसमाज को भरपूर सेवा की। अतः उनकी स्मृति में सभा ने यह पुस्तक प्रकाशित कर एक धनुरकरणीय कार्य किया है। इसके लिए सभा के समस्त पदाधिकारी एवं इस पुस्तक के लेखक आचार्य सुदधन्देव जी विशेषरूप से बधाई के पात्र हैं।

—रामकुमार धार्य मन्त्री धार्य युवक परिषद्,  
गोहाना (रोहतक)

### महर्षि दयानन्द विद्यालय नीमड़ीवाली में संक्रान्ति-पर्व समारोह

नीमड़ी वाली, जिला भिवानी में महर्षि दयानन्द विद्यालय में मकर संक्रान्ति के पुनीत पर्व पर जनवरी १५, १९६१ को सुबह १० बजे से दोपहर २ बजे तक प्रचार कार्य का सफल आयोजन किया गया। नीमड़ीवाली के उत्साही एवं लक्ष्मील युवक श्री शेरसिंह जी धार्य एवं उनकी धर्मपत्नी गाँव में महर्षि दयानन्द विद्यालय चला रहे हैं जिसके माध्यम से गाँव के बच्चों पर बहुत उत्तम संस्कार डाल रहे हैं। संक्रान्ति पर्व पर आयंबीर दल की ओर से उन्होंने विद्यालय में प्रचार का कार्यक्रम रखा जिसका शुभारम्भ सुबह १० बजे यज्ञ से हुआ। फिर द्वात्रिंश-छात्राओं ने बहुत ही सुन्दर और शिक्षाप्रद भजन प्रस्तुत किये। रा. मा. वि. नारनील के भौतिक शास्त्र के सुयोग्य प्राध्यापक डा० भूपसिंह जी धार्य ने यज्ञ पर बहुत ही तर्कसम्मत एवं कोजपूर्ण विचार रखे। आयंबीर दल भिवानी के उत्साही प्रचारकर्त्तव्यो एवं आर्य ब्रजनीपदेशक श्री रामस्वरूप जी धार्य ने शिक्षाप्रद भजन प्रस्तुत किये और रपट लेखक ने भी मकर-संक्रान्ति पर्व का महत्त्व स्पष्ट किया तथा महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज के योगदान पर प्रकाश डाला। गाँववालों के सहयोग और मददगार से संकल्प लिया गया कि गराज जैसे धानक दुर्घम्यन से गाँव की सर्वथा मुक्त रखने का प्रयास किया जायेगा। बड़ी स्थिति में गाँव के स्त्री पुरुष कार्यक्रम में शामिल हुये तथा आर्थिक सहयोग भी प्रदान किया। धार्यबीर दल हरयाणा श्री शेरसिंह जी धार्य को आवासन देता है कि उनके पुनीत कार्य में हम हर समय सहयोग सदा उन्हें देते रहेंगे। शासिपाठ के पश्चात् सभा विघ्नित हुई। प्रसाद रूप में केले वितरित किये गये।

श्री० ओमकुमार धार्य  
उपसचालक, आयंबीर दल, हरयाणा

### मकर संक्रान्ति पर्व के उपलक्ष में

१५-१-१९६१ को मकर संक्रान्ति पर्व के उपलक्ष में आर्यसमाज मन्दिर नलवा (हिसार) में सभा उपदेशक श्री अवतरसिंह धार्य आग्निकारी जी द्वारा यज्ञ किया गया। यज्ञमान का स्थान स्थानीय डाकघर में सह पीटमेंट की बाटूलास जी ने ग्रहण किया। इस अवसर पर आग्निकारी जी ने पंच महायज्ञ एवं मकर संक्रान्ति पर्व के महत्त्व पर विस्तार से विचार रखे।

भलेराम धार्य, नलवा

### शोक समाचार

श्री दलीपकुमार (वडवा) का स्क्रूटर दुर्घना में स्वर्गवास होया है। श्री कुमार मधुरभायो, मिलनसार, हंस-मुच एक अच्छे फोटोग्राफर थे। यद्यपि वे पौराणिक प्रवृत्ति के थे तथापि ४ वर्ष पूर्व वडवा में वेद प्रचारार्थ काफी सहयोग दिया था।

शा० रामचन्द्र धार्य, नलवा

### शोक समाचार

गुडगाँवा के समाजसेवी धार्यनेता सेठ फतेहचन्द अग्रवाल का दिनांक १५-१२-६० को धाकस्थित निधन होया। वह आर्यसमाज छात्रनी गुडगाँवा, डी. ए. बी. एञ्केशन सोसाईटी गुडगाँवा, आर्य नेत्र चिकित्सालय गुडगाँवा के विशेष कर्त्तव्यताओं में थे। स्वयं भी दान खर्च देते थे जोरी से भी दिलचस्पी थे। पूर्यरूप में ऋषि-भक्त थे। उनके निधन से गुडगाँवा आर्यसमाज को बहुत हानि हुई है। परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा की शान्ति प्रदान करे।

दयानजान धार्य  
जिला गुडगाँवा वेदप्रचारमण्डल



## राष्ट्रभाषा के लिए १५ पैसे तथा ५ मिनट का समय दान करें

राष्ट्रभक्त तथा राष्ट्रभाषा प्रेमियों से राष्ट्रभाषा के सम्मान के लिए निवेदन है कि माननीय राष्ट्रपति महोदय को एक १५ पैसे का पोस्टकार्ड लिखें जिसमें २६ जनवरी १९६१ तथा १५ अगस्त १९६१ (गणतन्त्र दिवस तथा स्वाधीनता दिवस) की पूर्ण सहायता पर राष्ट्रपति महोदय द्वारा प्रसारित किये जानेवाले "राष्ट्र के नाम सदैव" अंग्रेजी के स्थान पर किसी भी भारतीय भाषा में प्रसारित करने का निवेदन किया गया है क्योंकि राष्ट्रपति महोदय कोई न कोई भारतीय भाषा या अपनी मातृभाषा अथवा प्राचीन भाषा अवश्य जानते हैं। अतः राष्ट्र के मान सम्मान के प्रतीक विशेष दिवसों पर राष्ट्रभाषा, मातृभाषा/प्राचीन भाषा का प्रयोग ही उचित है। अंग्रेजी तो गुलामी की प्रतीक ही कही जाएगी। क्या हमारा राष्ट्र युवा है? क्या इसकी कोई भाषा नहीं है? या वह भाषा तुच्छ या निम्न कोटि है? जिससे राष्ट्रपति जी गुलामी की प्रतीक अंग्रेजी का प्रयोग करते हैं। कृपया अपनी-अपनी भावना के अनुसार लिखें शब्दों में सानुबोध प्राप्तना पूर्वक एक पत्र भवश्य आज ही अभी लिखें। मूल नहीं। यदि आपको भारत की मिट्टी से प्रेम है और अपने को भारतपुत्र समझते हैं तो अवश्य शीघ्र लिखें।  
—एक भारतपुत्र

## मण्डी डबवाली में मकर संक्रांति पर्व

यात्रा १४-१-१९६१ दिन सोमवार को श्री लाला दीवानचन्द जी सिंगला मण्डी डबवाली जिला सिरसा ने अपने घर श्री ओमप्रकाश वानप्रस्थो-गुरुकुल बटिष्ठा द्वारा बृहद् हवन यज्ञ कराया। श्री वानप्रस्थी जी ने श्रायं पर्वों के सम्बन्ध में एवं दान की महिमा पर अपने विचार रखे। इस शुभ अवसर पर श्री दीवानचन्द जी सिंगला ने २२५/- ६० दो हजार एक सौ पन्चीस ६० शहीद परिवार सहायता फण्ड में और २२५/- ६० सवा दो सौ ६० गोशाला मण्डी डबवाली को दान दिया।

## कालावाली मण्डी में पारिवारिक सत्संग

दिनांक ६-१-६१ दिन रविवार को प्रातः साढ़े आठ बजे श्री अमरनाथ जी गोयल काशावाली मण्डी जिला सिरसा ने अपने पिता श्री चाननराम जी गोयल की वरसों पर अपने परिवार में श्री ओमप्रकाश वानप्रस्थी गुरुकुल बटिष्ठा द्वारा हवन यज्ञ कराया। श्री वानप्रस्थी जी ने जीवन-मृत्यु सम्बन्ध में अपने विचार रखे। इस अवसर पर श्री अमरनाथ जी गोयल ने १०० रुपए श्रायंसमाज कालावाली को दान दिया। उपस्थित भाई-बहिनो का मिठाई एवं चाय से सत्कार किया गया।  
—मन्त्री


# गुरुकुल

## कांगड़ी फार्मसी की

### आयुर्वेदिक औषधियां सेवन कर स्वास्थ्य लाभ करें

**गुरुकुल च्यवनप्राश**

पूरे परिवार के लिए शक्तिवर्धक एवं मूर्धन्यक राशयन। छाती, उदर व शारीरिक एवं केशपुंजी की दुर्बलता में उपरोधी आयुर्वेदिक औषधीय टॉनिक




**गुरुकुल च्यवनप्राश**

आयुर्वेदिक औषधीय टॉनिक


**गुरुकुल पार्योक्तिल**

दोनों वंशजों के स्वास्थ्य में सहायक औषधीय टॉनिक



**गुरुकुल चाय**

बुढ़ापा व दुर्बलता के लक्षणों में उत्तम औषधीय टॉनिक



**गुरुकुलकांगड़ीफार्मसी हरिद्वार (उ० प्र०)**

## गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी

हरिद्वार

की औषधियां सेवन करें।

शाखा कार्यालय

६३ गली राजा केदारनाथ,  
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

स्थानीय विक्रेताओं एवं सुपर बाजार से खरीदें

फोन नं० २६१८७१

शाखा कार्यालय : ६३, गली राजा केदारनाथ  
चावड़ी बाजार, दिल्ली-११०००६

अप्रैल - वैशाख २०४३

भाषा प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदवत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के लिए संबंधितकारी मुद्रकालय रोहतक में छपवाकर संबंधितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्वान्ती मदन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।



# प्रतिनिधि समाहरण का साप्ताहिक

जाय प्रतिनिधि समाहरण का साप्ताहिक

प्रधान सम्पादक सुबेसिंह सभामन्त्री

सम्पादक—वेदवत शास्त्री

सहसम्पादक—प्राकाशचोर विद्यालकाय एम० ए०

वर्ष १८

अंक ११

७ फरवरी, १९६१

वार्षिक मूल्य ३०)

(शासकीय मूल्य ३०१)

विदेश में ८ पौड

एक प्रति ०५ पैसे

## वेद में गणित विद्या

(पं० चर्मदेव 'कनोधी' वेदतीर्थ, गुरुकुल शासनालय)

वेद में संक, बीज और रेखा भेद से तीन प्रकार की गणितविद्या सिद्ध होती है। इसमें वेदों के प्रमाण :-

एका च मे तिस्रश्च मे तिस्रश्च मे पञ्च च मे पञ्च च मे सप्त च मे सप्त च मे नव च मे नव च मे एकादश च मे एकादश च मे त्रयोदश च मे त्रयोदश च मे पञ्चदश च मे पञ्चदश च मे सप्तदश च मे सप्तदश च मे नवदश च मे नवदश च मे एकविंशतिश्च मे एकविंशतिश्च मे त्रयोविंशतिश्च मे त्रयोविंशतिश्च मे पञ्चविंशतिश्च मे पञ्चविंशतिश्च मे सप्तविंशतिश्च मे सप्तविंशतिश्च मे नवविंशतिश्च मे नवविंशतिश्च मे एकविंशत्तश्च मे एकविंशत्तश्च मे त्रयोविंशत्तश्च मे त्रयोविंशत्तश्च मे पञ्चविंशत्तश्च मे पञ्चविंशत्तश्च मे सप्तविंशत्तश्च मे सप्तविंशत्तश्च मे नवविंशत्तश्च मे नवविंशत्तश्च मे

चतस्रश्च मे चतस्रश्च मेऽष्टौ च मेऽष्टौ च मे द्वादश च मे द्वादश च मे षोडश च मे षोडश च मे विंशतिश्च मे विंशतिश्च मे चतुर्विंशतिश्च मे चतुर्विंशतिश्च मेऽष्टाविंशतिश्च मेऽष्टाविंशतिश्च मे द्वाविंशत्तश्च मे द्वाविंशत्तश्च मे षट्त्रिंशत्तश्च मे षट्त्रिंशत्तश्च मे चत्वारिंशत्तश्च मे चत्वारिंशत्तश्च मे चतुष्षत्तश्च मे चतुष्षत्तश्च मेऽष्टाचत्वारिंशत्तश्च मेऽष्टाचत्वारिंशत्तश्च मे त्रयोविंशत्तश्च मे त्रयोविंशत्तश्च मे

(यजु० अ० १८। मं० २५। २५)

गणित विद्या में से प्रथम संक (१) जो सख्या है, सो दो बार गणने से दो की वाचक होती है। जैसे १+१=२ ऐसे ही एक के आगे एक तथा एक के आगे दो, वा दो के आगे एक आदि जोड़ने से जो सख्य लेना। इसी प्रकार एक के साथ तीन जोड़ने से चार (४) तथा तीन (३) की तीन (३) के साथ जोड़ने से ६ अथवा तीन को तीन से गुणने से ३×३=९ हुये ॥

इसी प्रकार चार के साथ चार, पांच के साथ पांच, छः के साथ छः, आठ के साथ आठ इत्यादि जोड़ने व गुणने तथा सब मन्त्रों के आसपास को फैलाने से गणित विद्या निकलती है। जैसे पांच के साथ पांच (५) वैसे ही पांच पांच छः छः (५) (६) इत्यादि जान लेना चाहिये। ऐसे ही इन मन्त्रों के अर्थों को जाने योजना करने से अर्द्धों से अनेक प्रकार की गणितविद्या सिद्ध होती है। क्योंकि इन मन्त्रों के अर्थ और अनेक प्रकार के प्रयोगों से अनुर्थों को अनेक प्रकार की गणितविद्या अवरुण जाननी चाहिए।

और जो कि वेदों का अर्द्ध ज्योतिषशास्त्र कहता है, उसमें भी इसी प्रकार के मन्त्रों के प्रथिमार्थ से गणित विद्या सिद्ध की है और अर्थों से जो गणितविद्या निकलती है, वह निश्चित और सख्यात पदार्थों में युक्त होती है और अज्ञात पदार्थों को सख्या जानने के लिए बीजगणित होता है, सो भी (एका च मे०) इत्यादि मन्त्रों ही से सिद्ध होता है। जैसे (अ+क) (अ-क) (अ-क) इत्यादि संकेत से निकलता है। यह भी वेदों ही से ऋषि-मुनियों ने निकाला है।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

अन आ याहि वीतये गृणानो हृष्यदातये। निहोता सत्सि

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

(साम० छ० प्र० १। ४०। १)

इस मन्त्र के संकेतों से भी बीजगणित निकलता है और इसी प्रकार से तीसरा भाग जो रेखागणित है सो भी वेदों ही से सिद्ध होता है—

इयं वेदिः परो अक्षः पृथिव्या अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः।

अयं ऽसौभो वृष्णो अक्षस्य रेतेः ब्रह्माय नाभः परमं व्योम॥

(यजु० २३। मं० ६२)

कासीत् प्रमा प्रतिमा कि निदानमाय्य किमासीत् परिधिः क वासीत्। छन्दः किमासीत् प्रउमं किमुप्य गद्वेव देवमयजन्त विद्वेषेः। (ऋ० अ० ८। अ० ७। व० १८। मं० ३)

इन मन्त्रों में रेखागणित का प्रकाश किया है, क्योंकि वेदों की रचना में रेखागणित का जो उपदेश है। जैसे तिकोण, चतुर्भुज, षष्ठी पक्षी के आकार और गोल आदि जो वेदों का आकार किया गया है, सो वेदों में रेखागणित ही का उद्घाटन माना था। क्योंकि पृथिवी का जो चारों ओर घेरा है, उसको परिधि और ऊपर से अन्त तक जो पृथिवी की रेखा है उसको व्यास कहते हैं। इसी प्रकार से इन मन्त्रों में आदि मध्य और अन्त आदि रेखाओं को भी जानना चाहिये और इसी रीति से तिर्यक् विषुवत् रेखा आदि भी निकलती।

(कासीत्यमा) अर्थात् यथायं ज्ञान क्या है? (प्रतिमा) पदार्थों का तोल किया जाय तो क्या चीज है? (निदानमाय्य) अर्थात् कदापि किससे कार्य उत्पन्न होता है, वह क्या चीज है। (माय्यम्) जगत् में जानने के योग्य सारभूत क्या है? (परिधिः) परिधि किसको कहते हैं? (छन्दः) स्वतन्त्र वस्तु क्या है? (प्रउमं) प्रयोग और शब्दों से स्तुति करने के योग्य क्या है? इन सात प्रश्नों का उत्तर यथावत् दिया जाता है (यद्वेवा देव०) जिसको सब विद्वान् लोग पूजते हैं वही प्रमा आदि नामवाचा है।

इन मन्त्रों में प्रमा और परिधि आदि शब्दों से रेखागणित साधने का उपदेश परमात्मा ने किया है। सो तीन प्रकार की गणित विद्या यहाँ से वेदों से ही सिद्ध की है और इसी आभिवृत्त देश से सर्वत्र प्रगुलत में गई है। यह सब महर्षि दयानन्द ने लुप्त बताया।

'शाकाहार क्रान्ति से'

## अण्डा शाकाहार है ऐसे विज्ञापनों पर प्रतिबन्ध

भारतीय शाकाहारी कांग्रेस ने एन० ई० सी० सी०, जो कि पूरे देश में अण्डों को विज्ञापन एजेंसी है, उसके विज्ञापन पर आर्षित उदाय है, जिसमें अण्डों को 'शाकाहारी भोजन' बताया गया था। इस आर्षित को सही करार देते हुए एडवर्टजमेंट स्टैंडर्ड्स कॉमिशन आफ इण्डिया ने एन० ई० सी० सी० से कहा है कि वह अण्डों की लोकप्रियता बढ़ाने के सिलसिले में अण्डे विज्ञापनों में संशोधन करे।

(अण्डे स्थित यह परिषद् देश में विज्ञापन-संबंधी विवादों को निपटाती है।)

## साम-मुखा शतक

( ५ )

## उसकी महिमा अपरम्पार है

ओं अमूर्तोंति यन्मन् विपत्ति विषयं यत् तुरयत् ।  
 प्रेमन्धः स्वयत्, निःश्रीभो भूत् ॥ (श्लो० ५/७६ २/११)  
 उस कस्यामय की कस्या का  
 लोगो देखो भेद अपार ।  
 नगे को वह कपडा देता  
 दु खों दीन का कर उपचार ।  
 अन्धे को भी साज बना दे  
 पगु करता पद-संचार ।  
 नहीं असम्भव उसको कुछ भी  
 महिमा उसकी अपरम्पार ॥

( ६ )

## हमको भी अपना लीजिये

ओं यस्मे र्व सुदृविषो वदाशो भ्रनागस्त्यमविते सर्वदाता ।  
 य भ्रंशे शवसा नोद्यथासि प्रजावता राक्षसा दे स्वाम् ॥  
 हे अखण्ड नियामक प्रभुरव ।  
 तेरे नियत नियम अविच्छिन्न ।  
 जिस जन को निर्दोष बनाते ।  
 हो रहता तुमसे वह अभिन्न ॥  
 कर्मशुद्धि जिसको देते हो  
 देते सर्वक बल धन-धान ।  
 वह बल वैभव हमें दीजिये  
 अपना हमको उसी समान ॥

( ७ )

## सरस्वती का सागर उमड़ रहा है

ओं महो अर्णः सरस्वती प्रवेतयाति केतुना ।  
 विषो विस्वा विराजति ॥ श्लो० म० १/१०० ३/म० १२  
 महासागर यह सरस्वती का,  
 होता रहता है उदुङ्गुड ।  
 आलोकित कर ज्ञान-विधा से  
 करता मन मेधा को गुड ॥

( ८ )

## समाज संगठन के अमोल मन्त्र

ओं ज्यायस्वत रश्चित्तो मा विषोयः संराषवत् सधुराचरन्तः ।  
 अय्यो ध्ययस्मं वल्यु वदन्त एत सध्रीचीनायः संननसक्तोत्सुक्यम् ।  
 जितने भी हैं जन जगती के  
 वनो परस्पर वद पुण्यशुद्ध ।  
 वनो विवेकी 'औ' अविरोधी  
 एक सुपथ में हो गतिमान ।  
 अलग बिलग तुम कहीं न होवो  
 मिलकर पाओ लक्ष्य महात्न ।  
 नियमभ्रष्ट तुम कभी न होवो  
 बोलो मिलकर भीटे बोल ।  
 हुए संगठित सहचारी हो  
 मनसे भी करता समतोल ।  
 होवें श्रेष्ठ समाज तुम्हारा  
 यही है जिसके मंत्र अमोल ॥

—श्री० धर्मचन्द विद्यालंकार,  
 पलवल

## दिशाहीन समाज व राष्ट्र

'साम्प्रदायिकता' का विष मानवसमाज को इस रहा है। बर्मे व बाति के नाम पर साम्प्रदायिक दंगे, निर्दोष ब्यक्तियों की हत्याएं आदि मानव सम्म समाज पर कालक तथा पशुता के प्रतीक हैं। शक्ति, प्रेम, बहिष्सा तथा सद्भावना का वातावरण ही मानवसमाज को सुखी, सुखहास, प्रगतिशील बना सकते हैं। राम और रद्दोष तो मानवसमाज को जोड़ते हैं तोड़ते नहीं। विडम्बना है कि तथाकथित राजनैतिक नेता तथा राजनैतिक पार्टियां उत्तरप्रदेश के अंबीगड, मेरठ, कानपुर, बाराणसी, बुरबा, धारवा आदि तथा हैदराबाद व प्रहमदाबाद जैसे बड़े नगरों में भोटों की राजनीति की धाड़ में मोत का ब्यापार कर रहे हैं। धार्मिक व सामाजिक कार्यकर्तियों को अवि-सम्भ मंत्री, भाईचारा, शान्ति, मानवता का वातावरण बनाए रखना चाहिए। ईस्वर व खुदा इन अनेक नेताओं और लोगों को सुमति व सद्बुद्धि दें।

पंजाब में चण्डीगढ़ तथा जालन्धर रेडियो स्टेशन से हिन्दी बुलिटिन को प्रकस्मात् व अकारण वन्द कर देना तथा कार्यालय में दैनिक हिन्दी समाचार-पत्रों पर रोक लगाना अनेकिक असंबैधानिक है। ५५ प्रतिशत हिन्दी भाषियों के साथ धम्याग्य है। केवल और केवल मात्र हिन्दी ही सारे भारत को कश्मीर से कन्याकुमारी तक पिरो सकती है। हमें हिन्दी अपनाओ व भ्रंशेहीं हटाओ पर पूरी शक्ति लगा देनी चाहिए। भारत सरकार को इस अव्यायसगत निरुस्य के ध्रागे नहीं झुकना चाहिए, अस्तु कठोर कदम उठाने चाहिए। असम व अन्य दंगाप्रस्त नगरों में सेना भेजी जा सकती है तो पंजाब में क्यों नहीं पाकिस्तान पंजाब सीमा सुरक्षा पट्टी बनाना नितान्त अनिवार्य है।

अद्वैतन चित्र व अस्वील मुद्राएं चित्रासन, चित्राहार चित्र-मासा की विभिन्न मुद्राएं व हावभाव समाज को दूषित बना रहे हैं सिने पत्रिकाएं, अस्वील नाचल, बल्पु किमें युवक व युवतियों को चरित्रहीन तथा दिशाहीन बना रहे हैं। अतः युवक युवतियों को निर्माण कार्यों तथा समाजसेवा कार्यों में धपना समय व शक्ति लगानी चाहिए। वनता को अस्वीलता तथा स्मैक प्रादि ड्रगज के विरुद्ध जन आंदोलन करना चाहिए।

आज भारत के प्रत्येक नगर व शहर में अस्वीलता अर्थात् जिसमफिरोशी तथा स्मैक आदि ड्रगज आदि का बोलबाला है श्रदानन्द नगर व श्रदानन्द गराज देहली में तथा बड़े-बड़े होटलों में नग्न नृत्य, अस्वील मुद्राएं, पोषकाशोनी में ऐश्वर्यमय रंगीन जीवन बितानेवाले युवक युवतियां जिसम फिरोस्त का चरित्रहीन, अनेकिक धम्या करते हैं। आएं दिन समाचार पत्रों में शीषेक पढ़नेको मिलते हैं। दो नम्बर की कमाई करनेवाले ब्यापारी, धर्मिकारी, कर्मचारी इस अनेकिक ब्यापार व ब्यभिचार को बढ़ावा देते हैं।

इसुरा स्मैक, हथोथा, श्राउन सुगर, हथोथ, गांशा, चरस आदि नसे देस के बड़े-बड़े नगरों शहरों में बस पकड़ते जा रहे हैं। हाई अलचों का शब्द स्मैक हाई चर्चों में जान से देता है। जीवनशैली समाप्य करनेवाले ममानक नसे ड्रगज प्रादि तथा बढती हुई अस्वीलता के विरुद्ध ध्रायों की शिरोमणि सभा, सार्वबैधिक प्रतिनिधि सभा, प्रान्तीय सभाओं, धार्यसभाओं एव धार्यबौर दल को जन जागरण, जन आन्दोलन, बरने प्रादि धार्यक्रम चालू करने चाहिए।

भारत की राजधानी अदानन्द वाजार देहली में नृत्य की आइ में अनेकिक धार्य व धम्ये सदा के लिए बन्द होने चाहिए।

आयप्रकाश कानडा मण्डलपति,  
 आर्यवीर दल जिला मुर्गावा

शाराब पीने से मानव दानव बन जाता है ।

## पंजाब में नई पहल

(लेखक : सुदीपकुमार शर्मा, चालन्धर)

बाहिर पंजाब के प्रमुख अकाली दलों में फिर प्रतीक्षित एकता स्थापित होगी। जिसके लिए औरबार प्रयास किए जा रहे थे। अकाली दल (मान) के अध्यक्ष श्री सिमरनजोतसिंह मान एक निर्विवाद नेता के रूप में उभरकर अकाली राजनीति के क्षीण पर पहुंच गये हैं। उनकी यह सफलता निश्चितरूप से स्वागत योग्य है, लेकिन इन बातों से इन्कार नहीं किया जा सकता कि उन्हें शीघ्र पर पहुंचने में उन खाइकू संगठनों का बड़ा हाथ है जिनके प्रति श्री मान का उर्ध्वपाय है। वे सदानुभूतिपूर्ण रहा है। आज स्थिति यह है कि खाइकू अर्धव्यवस्था अकाली राजनीति पर इस कदर हावी है कि कोई भी अकाली गुट या अकाली नेता उनकी उपेक्षा का साहस नहीं कर सकता। अब तो श्री प्रकाशसिंह वादल जैसे उदारवादी नेता भी खाइकूओं की प्रशंसा करते नहीं बघाते। दूसरी ओर चन्द्रशेखर सरकार अकाली एकता से उरसाहित हुकर पंजाब में विधानसभाई चुनाव बनाने की फिराक में है। सरकारी की ओर से इस आशय के कई संकेत दिए जा चुके हैं, जिससे लगता है कि जल्दी ही इस गडबड प्रस्त सीमावर्ती राज्य में राजनैतिक प्रक्रिया शुरू होनेवाली है। केन्द्र सरकार पंजाब समस्या पर कोई समझौता करने जैसी सम्भावना पर भी गहराई से विचार कर रही है। कुछ पर्यवेक्षकों का विचार है कि सरकार की चुनावों के लिए उपयुक्त वातावरण बनाये जाने पर अधिक जोर न देते हुए अविलम्ब राजनैतिक प्रक्रिया बहाल कर देनी चाहिए जिससे राज्य में लोकप्रिय सरकार के गठन का मार्ग प्रशस्त हो सके। इसके पीछे यह तर्क दिया जा रहा है कि जैते-जैसे समय निकलता आयेगा पंजाब समस्या अधिक उमझटी जायेगी।

पिछले सस वर्षों से पंजाब की पवित्र भूमि पर हिंसा तथा अल-माबवाह का बयासह लूनी दौर जारी है जिसने सन्तुके राष्ट्र को दहना कर रख दिया है। इस सन्धी रक्षित अर्धव्यवस्था के दौरान हजारों निर-पराध लोग सिला का शिकार हो चुके हैं तथा असंख्य परिवार अपने जानोमास की हिफाजत के लिए देश के अन्य भागों की ओर पलायन कर गये हैं। सीमावर्ती क्षेत्रों में स्थिति अत्यन्त गम्भीर है। वहा प्रशासन नाम की कोई चीज दिखाई नहीं देती। लोगों में अतुरता की भावना तथा विस्थापन का भय दुरी तरह समाया हुआ है। इस दीर्घकालिक समस्या की सुलझाव के लिए हमारे राजनेतों की ओर से अनेक प्रयोग तथा प्रयास किए गये लेकिन राजनैतिक मकसद के अभाव में सभी विफल रहे। वास्तव में हमारे राजनेता (चाहे कही से भी और किसी स्तर के हो) राजनैतिक समीकरणों की ध्यान में रहे बिना किसी समस्या पर विचार कर ही नहीं सकते। सत्ता सुलझ का नाम दिखाई देते ही समीकरण वने विगड़ते रह नहीं लगती। हमारे राजनेतों की इसी मजबूरी का परिणाम है कि आज पंजाब समस्या पहले से कहीं अधिक विकराल रूप लिए देश को धमका रही है। सन् १९६० में केन्द्र सरकार ने वादल सरकार को उसकी अवधि पूरी होने से पहले ही वसाल कर दिया। सन् १९६१ में सत हरचन्द्र सिंह लॉगोवाल के नेतृत्व में अकाली दल ने अपनी मार्गों को लेकर धर्ममुद्र आरम्भ किया। इस धर्ममुद्र के चलते पंजाब को धनेक दुर्दिन देखने परे जिनका सिलसिला आज भी बयासतु जारी है। पिछले दस वर्षों में दो राज्य सरकारें बनी लेकिन अपना कार्यकाल पूरा करने से पहले ही श्रांतकवाद की भेंट चढ़ गईं। अक्टूबर ६३ में दरबार सरकार बहाल हुई और राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू हुआ। जुलाई १९६५ में राजीव-लॉगोवाल समझौता हुआ और सितम्बर ६५ में श्री बरनाला के नेतृत्व में अकाली सरकार सत्ता में आई। अनेक कारणों से राजीव-लॉगोवाल समझौता लागू न हो सका लेकिन केन्द्र सरकार से समझौता करने की कोशत संत हरचन्द्र सिंह लॉगोवाल सरीखे नेक दिव्य वार्षिक नेता को अपनी जान देकर चुकानी पड़ी। सन् ६७ में स्वर्ण मन्धिर परिसर में पुलिस कार्रवाई के मामले को लेकर बरनाला सरकार का पतन हुआ और जून १९६७ में नामू हुवा राष्ट्रपति शासन कायम की जारी है। पिछले दस वर्षों से पंजाब में लगभग आधे समय

तक राष्ट्रपति शासन लागू रहा और इस दौरान यहा कई गवर्नर बढे गये लेकिन प्रशासन विघटनकारियों को कोई विशेष चुनौती न दे सका, हिंसा का लूनी दौर वारबार चलता रहा।

यहा प्रश्न यह उठता है कि अगर वर्तमान परिस्थितियों में पंजाब में चुनाव होते है तो क्या सत्ता में आनेवाली सरकार पंजाब को आतंकवाद की गहरी अवैदी गलियों में से निकाल पाने में सक्षम होगी। क्या नया अकाली नेतृत्व जिसके सत्ता में आने की अच्छी सम्भावनाएँ हैं, सभी खाइकू संगठनों को राष्ट्र की मुख्य धारा के साथ जोडने में सफल होगा। क्या निर्दोष लोगों को हत्यायें रोके जा सकेंगे। अभी राष्ट्र प्रधानमन्त्री श्री चन्द्रशेखर तथा श्री मान के बीच हुई वार्ता पर सतोंप ही व्यक्त कर रहा था कि खाइकूओं ने लुधियाना जिले के एक गाव में हिन्दू मनुदाय के जारह निर्दोष व्यक्तियों की निमम हत्या करके अपने चिनावने मनुवे स्पष्ट कर दिए। इससे एक बात साफ होजाती है कि श्री मान सभी खाइकू संगठनों पर अपना प्रभाव होने का दावा नहीं कर सके। आज खाइकू संगठन जिस तरह भापा, गिखा, ब्यवमाय, खानपान तथा पहनावे में सन्ध्र में अपने आशेन जारी करके उन्हे लागू करवाने पर आमादा हैं, और सारे प्रशासन को उनके सामने चिंगो बंधे हुई है इससे तो कम से कम ऐसा नहीं लगता कि हम किसी लोकतांत्रिक, धर्मनिरपेक्ष देश के नागरिक हैं। जहा प्रशासन नकारा नोकर दिव काट रहा हो, चुन चुन कर न्यायाधीशों की हत्या करके न्याय व्यवस्था पंगु बनादी गई हो, सरकारी भौडिया तथा स्वतन्त्र प्रेस के नाम समाधि गीत लिख दिये गये हों वहां राजनैतिक प्रक्रिया के जरिए किम तरह निष्पक्ष चुनाव करवाये जा सके हें ? जहां सर्विधाओं की प्रासंगिकता पहले ही समाप्त हो चुकी हो वहां उसमे संशोधन करके समस्या किस तरह हल की जा सकनी है, यह हमारे राजनीतिज्ञ ही बेहतर जानते हैं। पंजाब की पन्क कसटी ने भी पंजाब समस्या पर किन्हीं शर्तों के अन्गत बातचीत करने की इच्छा व्यक्त की है, लेकिन इन शर्तों को कोई भी लोकतांत्रिक सरकार स्वीकार नहीं कर सकती। यह भी हो सकता है कि सीमावर्ती कुछ क्षेत्रों में सेना तैनात किए जाने के बाद खाइकू संगठन भारी दबाव में हों और वे सरकार को बातचीत का दावा देकर थोडा समय लेना चाहते हों। सरकार के नर्म हल का फायदा उठाकर वे दुबारा अपनी दिसक करवाइयां शुरू कर सकते हैं। केन्द्र सरकार को एक बात धरणी तरह समझ लेनी चाहिए कि पंजाब की जुनूनी समस्या का कोई आनन-फानन समाधान विवादा-कारी सिद्ध हो सकता है। यह लगभग निश्चित है कि खाइकूओं के न चाहने पर कोई भी सरकार यहा अधिक देर नहीं चल पायेगी। इसलिए बड़ी सतकता के साथ इस दिशा में नीति निर्धारित की जानो चाहिए। वैसे भी सत्ता प्राप्ति के पश्चात अकाली दल में विचारकों की परम्परा काफी पुरानी है, जो औरंग जे सरकार में एक बड़ी समस्या है। यह ठीक है कि राष्ट्रपति शासन पंजाब समस्या का समाधान नहीं है, लेकिन इसके अतिरिक्त अन्य कोई विकल्प भी तो नहीं।

पंजाब में चुनाव होने से पहले चुनावों के लिए उपयुक्त वाता-वरण तो बनाया ही चाहिए। श्री मान पर सर्वोच्च अकाली नेता होने के नाते भारी जिम्मेदारी आवत होती है। अभी उन्हे पंजाब के हिन्दू मनुदाय का विरवाह बीतना है लेकिन श्री मान स्व-निर्णय के अधि-कार की बात करके लोगों के मनो से नई आशाएं पैदाकर रहे हैं। श्री मान को चाहिए कि वे अपने प्रयास प्रयोग से पंजाब में सुबह वातावरण बनाए जाने की हिंसा में पहल करे। खाइकू संगठनों को भी पंजाब समस्या पर केन्द्र से बातचीत करने के लिए राजी करना चाहिए। केन्द्र सरकार को भी चाहिए कि वह पंजाब की सर्वोच्च तथा न्यायोचित मार्गों पर जल्द कार्रवाई करे परन्तु देश को तोडने वाली विघटनकारी शक्तियों तथा निर्दोष लोगों की हत्या करनेवालों से कोई समझौता नहीं हो सकता। ऐसी शक्तियों को अलग-थलग करके

(लेखक पृष्ठ ६ पर)



## कब होगी मुक्ति अंग्रेजी—शिकंजे से ?

वल्लभ राम गुप्त, सी-८/१०, माडल टाउन दिल्ली-११००६

इसे देख का महादुर्भाग्य ही कहना चाहिए कि कुछ अंग्रेजी भक्त लोग, विशेषकर तमिलनाडु वाले, अंग्रेजी-प्रयोग जारी रहना देख के लिए बरदान और उसके स्थान पर राष्ट्रभाषा हिंदी का प्राधान्य एक अभिवाचन समझे हैं। ऐसा कहते समय 13 अगस्त, 1990 को इन्दौर सम्मेलन में चार हिन्दीभाषी-राज्यों (मध्यप्रदेश, हिमाचलप्रदेश और राजस्थान) के मुख्य मंत्रियों के हस्ताक्षरों के अनुसार शासन के कार्यों में अंग्रेजी के स्थान पर हिंदी का प्रयोग होगा और उन पर अंग्रेजी अक्तों की प्रतिक्रिया मेरे दिमाग में गूँज रही है।

उदाहरण के लिए 20 अगस्त 1990 को कुछ तमिल और काप्रस (भाई) संसद सदस्यों ने विरोध में लोक सभा से यह कहकर वरिष्ठमन किया कि उन पर हिंदी 'शोपी' जा रही है। तमिलनाडु के द्रमुक संसद सदस्यों और अन्य अहिंदी भाषी राज्यों के लगभग सात सांसदों ने 23 अगस्त, 1990 को मृतपूर्व प्रधान मन्त्री श्री पी. वी. गिरी को एक पत्र भेजकर उस प्रस्ताव पर विन्ता प्रकट की और उनसे यह धारावाचन प्राप्त कर लिया कि 'केंद्रीय सरकार किसी राज्य पर कोई भाषा शोपी जाने का विचार नहीं कर रही'। अखिल भारतीय अन्ना द्रमुक की महामंत्री शोमती अयलसिता ने जो मुख्यमंत्रियों के प्रस्ताव की निम्ना-नीत के सुर में सुर मिलाकर अपना कर्तव्य पूरा किया। उन्होंने यह भी ताक कह डाला कि मुख्य मंत्रियों के विचार पंजाब और कश्मीर के अलगाववादियों की भावना से किसी कदर कम नहीं हैं।

हिन्दी के विरोध में इस पूर्णतया अवाचित होहल्ला के बारे में जो कुछ कहा जाए सो बोझ है। एक विदेशी भाषा हटाकर अपनी ही राष्ट्रभाषा को स्थान देना अथवा 'शोपना' कहा जाएगा तो इससे अधिक अस्वगत और धुनचित क्या होगा ? ऐसी भाषी शोच न्यूनियों के प्रति विकृत भावना रखने वाले की ही हो सकती है।

वर्तमान स्थिति का अत्यन्त दुर्बलतयपक्ष यह है कि लगभग सभी अहिंदी भाषी राज्यों में अंग्रेजे प्रशासन की भाषा के रूप में अपनी अपनी खोखली भाषाओं का प्रयोग आरम्भ कर दिया, और देश के राजनीतिक वातावरण में तनिक भी हलचल नहीं हुई। किंतु जब किसी हिंदी भाषी राज्य में अंग्रेजी भाषा का प्रयोग होता है तब अंग्रेजी नकल काल जाते हैं और देश भर में छतरे की चट्टी बजाने लगते हैं। इस प्रकार अहिंदी राज्यों के प्रति प्रभावशाली अग्रणी और हिंदी भाषी राज्यों के प्रति टकरावजो खेती स्थिति सभी लोकप्रिय प्रतिमालों के विरुद्ध है। स्पष्ट है कि एक ही देश में लोगों के लिए दो अलग-अलग मानक नहीं हो सकते।

अब बहुत ही चुन्का। आखिर हिंदी भाषी राज्यों ने कौन सा ऐसा पाप किया है कि वे अपना काम अपनी भाषा में करने की उची मुविधा से वंचित रहें, जिसका उन्मूलन अहिंदी-भाषी राज्य कर रहे हैं ? इन राज्यों के निवासियों ने ऐसा कौन सा अत्याय अपराध किया है कि वे हिंदीय शोपी के नालयिक बनाए जाकर अंग्रेजे ही अशासन में पाग लेने से वंचित रहे जाएं क्योंकि प्रशासनिक कार्य वाच भी एक विशिष्टी भाषा के अन्वेषे और नालयिक माध्यम से किया जा रहा है ? इन राज्यों के सारे के सारे निवासियों ने ऐसी कौनसी भूल की है जो माफ नहीं हो सकती और वे ऐसी अवलंब मुचीवर्तने से कौनसे को बाध्य हैं जो सिसा संरक्षण में अंग्रेजी का एक अतिव्यापक विषय पक्षधर और उसे ही सिसा के माध्यम के रूप में प्रपनाकर उन पर डाई जाती हैं, और जिनके कारण ही वे कलेशों में बहुतायत से असफल रहते हैं ? राष्ट्रभाषा के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने का मूलभूत मानव अधिकार सर्वमाय्य है और म्याय की बात तो यह है कि छात्रों को उनके इस जन्मसिद्ध अधिकार से वंचित नहीं किया जा सकता।

शिक्षानिवेधकों की यह मुविधारित सम्पत्ति है कि शिक्षा का उद्देश्य मन्त्री-मांति तमो पूरा हो सकता है जब वह मातृभाषा के माध्यम से हो जाए। कठिन विचार और दुस्साध्य तकनीकी बखालरूपएँ सदा अपनी भाषा के माध्यम से ही अनिवार्य ग्रहण की समशी और समझाई जा सकती हैं। दुर्भाग्य से ऐसी कोई भी बात

निन्दुर राजनीतिज्ञों के हृदयों को प्रभावित या द्रवित नहीं करती। उन्हें तो दूर हानन में सत्ता से चिपके रहते की ही चिन्ता रहती है।

याद रहे कि राष्ट्रभाषा का प्रश्न ऐमा मौलिक और सारभूत प्रश्न है जिस पर किसी राष्ट्र को नियति अतन निर्भर होगी है। प्रश्न प्रश्न का निष्पत्ति सावरवाही से सरसरी तौर पर नहीं हो सकता। किंतु वेद है कि स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद से ही हमारे मृत्यु-का रचना प्रत्येक महत्त्वपूर्ण मामले में ऐसा ही रहा है, चाहे वह धर्म-निर्पेक्षता का हो या समाजवाद का, शोषण-निषेध का हो या मध्य-निषेध का, एक समान नागरिक सहिता बनाने का हो या कश्मीर पंजाब समस्या का हल हो। हमारे नेता आखिरकार कब तक राष्ट्रभाषा के अहम नवाल को समझने की कोशिश में लगे रहेंगे और समस्या से आमने आमने होने से इनकार करते रहेंगे ?

मूलभूत प्रश्न यह है कि अंग्रेजी में जन-सामान्य की दक्षता और क्षमता की वर्तमान वास्तविक स्थिति क्या है ? तथ्य तो यह है कि लगभग दो सौ साल तक एही मोटो का पतौना एक करने के बाद भी अंग्रेजी राष्ट्र के हाजिये से भीतर नहीं बस पाई, यह सुखिकल से केवल दू प्रतियोग लोको तक ही पहुंच पाई है। ऐसी भाषा सदा-सदा के लिए लोगों के लिए लोगों के गले के तोजे कंसे उतारी जा सकती है ? हा, अगर सारे राष्ट्र को ही स्वतंत्र विदेशी बने पाश्चात्य बौद्धिक नौनों और अदना लोगों की मोठ में बवल देना चाहते हैं तो और बात है।

ससार में कोई भी देश अपनी भाषा अपनाए बिना अंग्रेजी पहचान नहीं बना सकता। यह एक ऐसी सच्चाई है जिससे इनकार नहीं किया जा सकता तथा जिस पर बहल नहीं हो सकती। समय मानवता के विचार और संस्कृति को पिछा में जो कुछ भी योगदान यह देश कर सका है, अपनी भाषाओं के माध्यम से ही कर पाया है। राष्ट्र की अखंडतम प्रतिभाएं अपनी भाषाओं के माध्यम से ही अपनी और चमकी हैं कालिदास, टंगोर, तुषसीदास, सूर, बंकिमचंद्र, प्रेमचंद, ज्ञानदेव और अन्य तमाम महाभारतियों की महान् साहित्यिक कृतियों के अनुसार ससार को अनेक भाषाओं में हुए हैं, और सराहना अर्पित हैं। हाल में दूरदर्शन द्वारा दिखाए गए दो अग्रिम आराधिका "रामायण" और "महाभारत" अपनी कहानी प्राप कहते हैं। कोई ऐसी कृति जो साहित्यिक उत्कृष्टता के प्रतिरिक्त, चक-चिन्न-निर्मण एव प्रशोषण की उत्कृष्टता में भी उनके बराबर की, वाशय में ही हो, प्रस्तुत कर सकता जिस की मनीषा के लिए एक चुनौती है। अंग्रेजी के पक्षधर किसी भी कृति की अंगे हांकते रहें, वह इनके आश्चर्यजनक रेकांड के सामने पानी ही भरती रहेगी।

एक बात और। अंग्रेजी के लिए उपरम्व सभी टेकों और वेसाधियों के होते हुए भी सारे देश में इसके अन्तरे में सर्वतोमुखी क्षुद्र हुआ है। यत्कि संस्थानों कायजनों और कर्म में केवली अंग्रेजी को संस्कृष नोसा-मुना जाता है, वह किसी के सिद्ध भी सम्मानप्रय नहीं है, बल्कि वह राष्ट्र के सुनाम पर निश्चित क्षमंक है। किंतु क्या कभी हमने बरा ठहर कर इस महान् संशुभ हासल के कार्यों पर विचार करने का कष्ट किया है ? कारण शोचना सुखिकल नहीं है। सक्षेप में कहें, तो सारे के सारे निवासियों को अतिव्यापक कोई भी विदेशी भाषा प्रभावी ढंग से और कुशलतापूर्वक सिखाना हासिक समय नहीं है। यही समस्या का मूल है। आजादी मिलने के बाद देश में शिक्षा का अत्यधिक विस्तार हुआ है, यहाँ तक कि यह लगभग केन्द्र और प्रत्येक कठिन काम हो गया है, और अगर इसके लिए जिम्मेदार व्यक्तिय अपना विल साब रखते हुए सचाई बरते तो कह सकते हैं कि समस्या का कोई सतोषजनक समाधान नहीं हो पाया। फिर भी स्वेच्छापूर्वक अंग्रेजी शीखने-सिखाने के बारे में कोई आपत्ति नहीं हो सकती और हमारे जैसे स्वतंत्र देश में यही अंग्रेजी का उचित स्थान हो सकता है। कोई भी समझदार और सक्षोष व्यक्तिय यह नहीं चाहेगा कि अंग्रेजी यहां से नोतिरान-बचना समेदकर चली जाए।

अग्नेयी के पक्ष में नेहरु के धारणासंन की प्रायः चर्चा की जाती है। किन्तु स्पष्ट है कि वह इस विषय में अंतिम निर्णय नहीं समझा जा सकता और न सदा-सदा के लिए लागू हो किमा जा सकता है। राष्ट्रीय जीवन और वास्तव में किसी भी स्तर का जीवन गतिहीन नहीं होता। उसमें सदा एक प्रवाह होता है। वह एक नवत प्रगतिशील और विकासमान प्रक्रिया है और परिस्थिति की आवश्यकताओं के अनुसार, उसके प्रति नई दृष्टि और नई प्रवृत्ति आवश्यक होती है। राष्ट्रभाषा, सम्पर्क भाषा अथवा राजभाषा के प्रश्न पर वास्तव की नौका का सुचारु संचालन निर्भर करता है। इसलिए यह सही और उचित हो है कि इसका फिर से ऐसी सच्चाई और ईमानदारी के साथ शकलन और मूल्यान हो बसो समस्या की गंभीरता की मांग है।

प्रत्येक समझदार व्यक्ति यह भी जानना चाहेगा कि देश के लोगों में से आखिर तमिल लोग ही भाषा-समस्या का प्रति इतने अधिक संवेदनशील क्यों हैं ? यदि लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति उनमें तनिक भी अंतर भाव है तो वे सारे राष्ट्र को अपने अग्नेयी के प्रति अनुचित प्रेम से, बल्कि मोह से, कबसे मुट्ठी में कर सकते हैं ? इस प्रकार से वे सारे राष्ट्र को बन्धक नहीं रख सकते। यही अर्थसर है कि वे इस मामले में शेष राष्ट्र के साथ मिलकर देश की अग्नेयी के शिकवे से छुड़ाने में सहायक हों।

प्रशासन में धीरे-धीरे परिवर्तनों में शिक्षा के माध्यम के रूप में बिदेसी भाषा के प्रयोग में उसका सांस्कृतिक आधिपत्य निहित होता है, और कुछ मिलाकर यह समझ लेना अत्यंत आवश्यक है कि किसी देश पर सांस्कृतिक आधिपत्य दूसरे देश के राजनीतिक आधिपत्य से भी अत्यंत बुरा होता है। सांस्कृतिक उदार के विना देश की स्वतन्त्रता प्रचुरी ही रहेगी। फिर भी, यह एक ऐतिहासिक प्रक्रिया है जो स्कावट जालने वालों की सारी भांसा-पट्टों के बावजूद अपने बांझित सत्य तक पहुंचे बिना नहीं रहेगी। यदि अग्नेयी देश के लिए इतनी ही अनिर्वाह है तो स्वयं तमिलनाडु राज्य इसे छोड़कर तमिल भाषा में क्यों काम करता है ?

भाषा समस्या हल करने के लिए यदि अधिकारियों में अपेक्षित दृष्टान्तात्मित और सक्रमण्णित होती तो तैत्तानीय वषं का समय निश्चित ही पर्याप्त था। सभी मोर्चों पर अत्यंत हठधमितापूर्वक अग्रगण्य हई अग्रमण्णस्क्ता की वसंमान नीति ने देश को अंतमान बधनीय ईशति में ला छोड़ा है। अंतिम विधेलेषण का परिणाम यह है कि यह सब सचा का खेल है। इतने सार्कों तक सता का निर्वाष उपभोग करके रहने के बाद अग्नेयी-पक्षा विधिचय वंश जिसने इस समय तत्परा पकड़ रखा है, उसे आसानी से छोड़ देगा, ऐसी आशा नहीं की जा सकती। उसे राष्ट्र का ध्यान विस्मृत नहीं है और वह अपनी पकड़ बनाए रखने के लिए अब तक सज्ज है। उसके विरुद्ध दुर्ग निरघय पूर्वक मर्षण हो तभी यह दब सकता है।

इस मामले में गांधी जी ने जो कहा था, उससे अधिक निर्णायक कुछ भी कहना समभव नहीं है। प्राइए जरा अहरकर उनके 'दूरदर्शी विचारों पर ध्यान दें। उन्होंने निर्णायक मोड़ देते हुए जो देकर कहा था, 'स्वराज्य की अपनी अर्थभारणा के ऊपर ही हमारा निर्णय निर्भर है। यदि यह स्वराज्य केवल अग्नेयी जाननेवाले भारतीयों का और केवल उनके लिए ही है, तो निस्संदेह अग्नेयी सर्वसामान्य माध्यम है ही। किन्तु यदि यह करोड़ों मुखे, निरररर र्को पुखों और दलित अक्षुतों का और उनके लिए है, तो केवल हिंदी ही एक सर्वसाम्य भाषा हो सकती है।'

किन्तु सचता है कि हम गांधी जी को शिक्षाओं का केवल मौखिक सम्मान ही करते हैं, उनका अनुसार केवल बही तक करते हैं, जहां वे हमारी सुविधा के अनुसार ही।

—दैनिक 'नवभारत टाइम्स' के २०-११-६० के अंक में छपे लेख का विस्तार

—प्रार्थसमाज सरस्वती विहार, दिल्ली-११००३४ द्वारा प्रचारित

### राष्ट्रभाषा की चेतना जगाएं !

"संस्कृति तब तक गूमी रहती है, जब तक राष्ट्र की अपनी भाषी नहीं होती, राष्ट्रभाषा नहीं होती। राजनीतिक परराधीनता की हमारी हथकड़ी-बेड़ी जरूर कटो है, किन्तु अग्नेयी और अग्नेयियत

के रूप में हमारे मनोबन्ध में जो दासता के चिह्न विद्यमान हैं, उन्होंने हमें निष्पत्ति बना रखा है। भाषा परिधानमान नहीं, राष्ट्र का व्यक्तित्व है। हमारे बहुभाषी देश के ही समाज हस भी बहुभाषी देश है, जिसमें ४२ भाषाएं बोली जाती हैं, किन्तु उनकी राष्ट्रभाषा कसी है। हमारी संस्कृति के गेमुस से निकली हुई सब भारतीय भाषाएं हमारी हैं, किन्तु उनमें अपनी व्यापकता, आरम्भ से ही जनविद्रोह और जनघर्ष की बाणी देते रहने के कारण एवं जीवन के हर क्षेत्र को सन्तान्त्रने में समर्थ होने के कारण हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है। केवल सचिवालय में लिख देने मात्र से यह बात पूरी नहीं हो पाती, इसे राष्ट्र के जीवन में प्रतिष्ठित करना होगा, अग्रघ्या स्वतंत्रता का स्या मूल्य है ? विरघ-वेतना जगाने के पहले अपने देश में राष्ट्रभाषा की चेतना जगाएं।'

—महादेवी वर्मा

(शेष पृष्ठ ३ का)

उनका दमन करना ही उचित है। हमारे भारतीय दर्शन में अहिंसा को परम धर्म स्वीकार किया गया है, किन्तु इस सिद्धान्त की सार्व-कता तभी है जब सभी इसे स्वीकार करें। भासूम लोगों की रक्षा के लिए आतताइयों का दमन करना आवश्यक होजाता है जिसे किसी रूप में अनुचित नहीं ठहराया जा सकता। हमारे राष्ट्रीय जीवन में जब तक इस भावना को बल मिलता रहेगा कि दवाब के जरिए किसी भी उचितानुचित बात को मनवाया जा सकता है तब तक परिस्थि-तियों में सुधार शाना कठिन है। दवाब पर टिकी हुई इस राष्ट्रीय व्यबस्था को बदलकर ही हम देश को आगे ले जा सकते हैं, अग्रघ्या कुछ समस्याएं इसी तरह जनमानस को उद्वेजित करती हुई अनेक नई समस्याओं को जन्म देती रहेगी और निर्दोष राजता का दामन इसी तरह रक्षारजित होता रहेगा। इति।

शांति: शांति शांति: ओ३५

### आर्यनेता प्र० शेरसिंह अभिनन्दनपंथ की तैयारी

दिनांक २०-१-६० को डा० रणजीतसिंह जी की अध्यक्षता में म० भरतसिंह वरिष्ठ उपप्रधान, श्री० सुवेदीजी सभासक्ति, डा० सुवर्ण देव वेदप्रचारसंस्थिता, प्रो० प्रकाशवीर विशालकार उपस्थित हुए। विचार विमर्श के उपरान्त सर्वसम्मति से यह निश्चय किया कि अभिनन्दन पंथ की संस्थापना इस प्रकार होगी—

सदस्य

प्रथम खण्ड :—प्रो० परिचय

द्वितीय खण्ड :—जो देश के राष्ट्रीय समस्याओं में तथा राष्ट्रीय सम्मेलनों के सम्बन्ध में लेख

तृतीय खण्ड :—प्रो० शेरसिंह जी के पत्र

चतुर्थ खण्ड :—प्रो० शेरसिंह जी के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानों के लेख

पंचम खण्ड :—वाणी महानुभावों के चित्र और प्रो० साहव से सम्बन्धित चित्र

इसमें से प्रथम खण्ड का लेखन का कार्य प्रो० साहव से संपूर्ण करके डा० रणजीतसिंह जी करेंगे।

द्वितीय खण्ड से सम्बन्धित सामग्री संकलन का कार्य श्री डा० सुदर्शनदेव जी को सौंपा गया।

तैसरा प्रो० शेरसिंह जी से सम्बन्धित सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक लेख तथा सवेस संग्रहाने का दायित्व प्रो० प्रकाशवीर विशालकार को दिया गया।

चौथा प्रो० शेरसिंह से सम्बन्धित पत्रों का कार्य डा० रणजीत सिंह को दिया गया।

पांचवां शानि महानुभावों के चित्र तथा अग्र चित्र सभामनी एव वरिष्ठ उपप्रधान को सौंपा गया।

इसमें यह भी निश्चय हुआ कि यह सामग्री २८ फरवरी, ६१ से पूर्व सभा कार्यालय में लाजानी चाहिए।

इस सम्पूर्ण सामग्री का सम्पादन करना डा० रणजीतसिंह जी का दायित्व है।

मुद्रण का कार्य भी डा० रणजीतसिंह जी को सौंपा गया।

इस अंग पर होनेवाले व्यय को जुटाने का कार्य डा० रणजीत सिंह पर होगा।

## सीता जन्माष्टमी पर गीत

( १ )

सुन्दर भोजन वस्त्र, राजसुख जिसेन छोड़ा ।  
साध, असुद, परिवार-श्रेय का बंधन तोड़ा ।  
हठ कर पति के संग विपिन में रहना चाहा ।  
हठ कर कष्ट कठोर पतिव्रत धर्म निबाहा ॥

( २ )

भारत के कवि कीर्ति न जिसकी कह सकते हैं ।  
उस देवी को भूल कभी क्या हम सकते हैं ॥  
जब तक हिन्दू जाति धरातल पर जीवित है ।  
तब तक उसकी कीर्ति-श्रवा साधर सचित है ॥

( ३ )

हृदय में यदि जाति-द्वेष का विष न रहेगा ।  
देश-प्रेम-भय सच्चरित्रता में न रहेगा ॥  
तो उस का सम्मान सत्य संसार करेगा ।  
मान उसे आदर्श नारि-जीवन सुधरेगा ॥

( ४ )

जनकसुता, सुन्दरी, शुभा, साधकी सुकुमारी ।  
सती, सुशीला, सदाचरिणी, विदुषी नारी ॥  
रामप्रिया, पति-भक्ति-भूषिता थी वह सीता ।  
जब तक है हृदयस्थ, काल यद्यपि अति बीता ॥

( ५ )

दशरथ ने सुवराज, राम को करना चाहा ।  
राज्य-भार अधिकतर उन्हीं पर बरना चाहा ॥  
सुनकर प्रजासमेत राजकुल में सुख माना ।  
पर कंकेशी कूट गई, उसने हठ ठाना ॥

( ६ )

भूप मानने लगे—'प्रिये, जागी, मैं दूंगा ।  
करता हूँ प्रण श्रद्धत, कहोगी वही कसंगा' ॥  
पति को वश में जान, कहा उसने, ये वर दो ।  
सच्चे हो तो सफल-मनोरथ मुझ को कर दो ॥

( ७ )

भरत बने सुवराज, राम हों कानन-नासी ।  
मुनिसे ही गिर पड़े भूप, छागई उदासी ॥  
पितु के प्रण की बात राम ने जब सुन पाई ।  
राज छोड़ बन चले राम लखन दोर भाई ॥

( ८ )

रो कर हाय, धकेत गिरी कौशल्या माता ।  
बड़ा हर्ष में शोक, विमुख होगया विधाता ॥  
सुना शोक-संवाद, बिकल सीता उठ भाई ।  
करती हुई विलाप, राम के सम्मुख आई ॥

( ९ )

निष्ठुर बनी न धार्यसुन करुणा उर धारो ।  
दासी को ले साथ नाय, बन जोर सिधारो ॥  
बन के कष्ट सहषं धायके साथ सहोगी ।  
नाथ तुम्हारे बिना स्वर्ग में भी न रहोगी ॥

( १० )

सुख से पति के साथ बसुगी निरभय बन में ।  
कुटिया का आनन्द कहाँ है राजमन में ॥  
साथ ले चलो नाथ, नहीं जीवित न रहूंगी ।  
कैसे विषम-वियोग-दुःख दुख हाय, सहूंगी ॥

( ११ )

सुन सीता के वचन राम श्रद्धा में साने ।  
उमड़ा प्रेम समुद्र, बधे उसको समझाने ॥  
दुर्गम बन का भूरि भयानक स्वय दिखाया ।  
पशु, निश्चिचर, भिरि, नदी आदि से बहुल डराया ॥

( १२ )

पर पति-प्रेम-सरोज-प्रमर सीता के मन में ।  
कष्टक-भय ने नहीं विधाव बढ़ाया बन में ॥

हठ कर पति के संग रही वह बन वन फिरती ।  
राक्षस द्वारा कभी विषम सकट में चिरती ॥

( १३ )

सा केवल कदमूल फल, भूपर सोती थी ।  
वलकल वस्त्र लपेट न मन-मलिना रोती थी ॥  
बन के दारुण कष्ट भयं धर कर सहती थी ।  
पतिसेवा में मग्न-प्रसन्न सदा रहती थी ॥

( १४ )

पचवटी में पट्टेच राम ने कुटी बनाई ।  
सीता देवी सहित बसे वे दोनों भाई ॥  
धोखा देकर उन्हें चोर लक्ष्मण ब्रह्मगा ।  
सूनी पाकर कुटी जानकी को ले भागा ॥

( १५ )

बिनती करने लगा—'कहा, 'बन भेरी रानी' ।  
पर सीता ने झिड़क कहा—'सुन रे शरणी ॥  
चोर, नीच, निर्वृजज जुरा कर साया मुझ को ।  
इसका दण्ड कठोर अवश्य मिलेगा तुझ को' ॥

( १६ )

पापी मेरे साथ मृत्यु धाई है तेरी ।  
जब तू अपने सर्वनाश में समझ न देरी ॥  
रहा मानना दूर, बात सुन भी न सङ्गुमी ।  
प्राणेश्वर से रहित कभी मैं जी न सङ्गुमी ॥

( १७ )

सागर में पुल बाध उत्तरकर डाखा डंरा ।  
वानर-सेन, सबकुं राम ने लंका भेरा ॥  
बेटा-बन्धु-समेत दुष्ट रावण को मारा ।  
मिला अशौकिक सती जानकी को छुटकारा ॥

( १८ )

बन-निवास की अबधि बधं चौबहू जब बीते ।  
कहा राम ने—'चलो अबध हे लक्ष्मण सोते' ॥  
सीता लक्ष्मण राम अयोध्या में फिर जाये ।  
मिलकर जननोबधु, मित्र से अति सुख पाये ॥

( १९ )

निष्कनक सचचरित जानकी ने बिलसाया ।  
पड़ रावण के हाथ सतीव स्वयमं बचाया ॥  
हठ पतिव्रता भारतीय सलना है जैसी ।  
पृथ्वी भर के किहीं देश में कही न बँधी ॥

(कविवर श्रीरामनरेश त्रिपाठी)

## हैदराबाद के सत्याग्रहियों को सम्मान पेशान के संदर्भ में

हैदराबाद सत्याग्रह १९३८-३९ के जिन ४१ सत्याग्रहियों को पेशान सुप्रीम कोर्ट से १७-७-६० को स्वीकार हुई थी, उसका युगतान सुप्रीम कोर्ट ने ३ मार्च के भीतर-भीतर करने के आदेश दिये थे और पेशान भी १-८-६० से ही देने के आदेश दिये थे । परन्तु भारत सरकार के गृहविभाग के कर्मचारी ८-१-६० केसों में तरह-२ के मासूकी धारणियाँ लगाते रहते हैं । अब पता चला है कि यह लक्षण २०-२-६१ तक दे दी जायेगी ।

हैदराबाद के दूसरे जिन ५८ सत्याग्रहियों का मुकदमा (रिट) सुप्रीम कोर्ट में दाखिल की थी, उसकी पेशा २१-१-६१ की । इस पेशा पर तो स्टाम्प जो लगना था वह माफ कर दिया गया । अगली पेशा १२ दिन में लग जायेगी और दूसरे वकीलों का देसा अनुमान है कि अगस्त मई तक इस केस का भी फैसला हो जायगा । इस केस में जो आगामी पेशा लगेगी उसकी सूचना सर्बहितकारी में दे दी जायेगी ।

महाशय भरतसिंह

संयोजक हैदराबाद स्वतन्त्रता सेनानी सम्मान पेशान समिति (हरयाणा) दयानन्द मठ रोहतक



**‘वेद ऋचाएं गूँज उठें’**

वेद महान् वर्षीस्येय है,  
ईश्वरीयं बुधि ज्ञान है ।  
मानवता की विमल विभूति ये,  
सद्गुरोरक विज्ञान हैं ।  
देसकाल व इतिहासों की,  
सीमाओं से हैं बाहर ।  
वेद ज्ञान की गरिमा से,  
मानव उन्नति करता सत्वर ।  
सभी सत्य विचारों का है,  
पुस्तक दिव्य हमारा वेद ।  
आदिकाल से पावन गंगा—  
धर्म की रहा बहाता वेद ।  
गंगसमय ही जीवन जन का,  
सदा सफलता बुधि सरने ।  
जन-जन में नवजीवन आए,  
वेदाभूत ज्ञान में बरसे ।  
दिव्य ज्ञान के पुञ्ज वेद है,  
जिनसे होता जग कल्याण ।  
सत्य-शिवम्-सुन्दरता पुरित,  
होता जन-मानस निर्माण ।

गौरव गणित वेद हमारे,  
कृते कृष-कृष का उत्पाण ।  
बुल-समुद्रि भरा जीवन ही,  
करके वेद बुधा का पान ।  
ज्योतिर्मयी ऋचाओं से यह,  
ज्योतिर हो सब संचार ।  
पुनः प्रकाशित जन का पथ हो,  
ज्ञात बिसत हो विमिरागार ।  
वेद ऋचाएं गूँज उठें फिर,  
हरती के बुधि प्राणम में ।  
सामगान की प्रबुल बहरियां,  
तहराएं नू-जागन में ।  
सायत ज्ञान पुनः प्रस्थापित,  
हो सारे महिमण्डल में ।  
पंथ तथा पाशब्द-संज्ञान,  
मत्सभूत हो रविमण्डल में ।  
‘कृष्णन्तोविस्वमायंम्’ से,  
गुणित हो सम्पूर्ण धरा ।  
बुल-समुद्रि-सफलता-समता—  
से ही पावन बसुधरा ।


राधेयाम् मायं विद्याशक्तित्वात्

## गुरुकुल

**कांगड़ी फार्मसी की**  
**आयुर्वेदिक औषधियां सेवन कर स्वास्थ्य लाभ करें**

**गुरुकुल**  
**ख्येयप्राथ**  
पुरे पीपल के लिए शक्तिवर्धक एवं शारीरिकक उत्पन्न।  
काली, उद व शारीरिक एवं केश्यों की रक्षाता से उत्पत्ती आयुर्वेदिक औषधीय द्रविक






**गुरुकुल**  
**च्योकिरल**  
दोष व मूल्यों के समतल रोचों से विरोगत पावोषिक से लिए उत्पत्ती आयुर्वेदिक औषधि



**गुरुकुल**  
**चाप**  
जुलप व इन्फ्लुएंजा, कबज और में बड़ी क्षीरों से बनी लायकारी आयुर्वेदिक औषधि



**गुरुकुलकांगड़ीफार्मसी हरिद्वार (ऊ प्र०)**

गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी

हरिद्वार

की औषधियां सेवन करें ।

शाखा कार्यालय  
६३ गली राजा केदारनाथ,  
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

स्थानीय विक्रेताओं एवं सुपर बाजार  
से खरीवें  
फोन नं० २६१८७१

शाखा कार्यालय : ६३, गली राजा केदारनाथ  
चावड़ी बाजार, दिल्ली-११०००६

‘प्रबु’ — वैशाख २०५१

प्रायं प्रतिनिधि सभा हरियाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदवत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के लिए सबहितकारी मुद्रणालय रोहतक में छपवाकर सबहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती मजन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित ।



# सर्वोत्तम विद्वान्मयी

## सर्वोत्तम

### आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाण का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—सूर्यसिंह सभामात्री

सम्पादक—देवदत्त शाल्की

सहसम्पादक—प्राकाशचौर विद्यानकाश एम० ए०

पृथं १८

अंक १२

१४ फरवरी, १९६१

वार्षिक मूल्य ३०)

(आजीवन मूल्य ३००)

विशेष में ८ पौंड

एक प्रति ७५ पैसे

### ऋषि बोध विशेषांक

## दयानन्द-जन्म दिन

अथवा

दयानन्द-बोधरात्रि फाल्गुन वदि १४

### बोध छन्द

विश्वविदित गुजरात देश में, टड्डुरा एक सुन्दर ग्राम ।  
उसमें था श्रीदोष्य ब्राह्मणों, का कुल बसूत एक सलाम ॥  
पुत्र सासजी के कर्मनजी, वे उसके मुनिमा अभिराम ॥  
महादेव में प्रविचन श्रद्धा, उनको रहती आठों याम ॥१॥  
उनके कुलपौत्र दयानजी, वे जन्मे अति प्रतिभावायु ॥  
शिवरात्रि-व्रतपूजन में थे, पितामा से श्रद्धावान् ॥  
शिवमन्दिर में निशि भर जागे, भटल ध्यान ही निष्ठावान् ॥  
पर शिवपिण्डी पर चूहे की, लोला देख हुए हैरान ॥२॥  
बोध हुआ उनको तब ही से, हो नहीं सकता शिव पावान् ॥  
हे यह जगती तब में फँस, जह-भदायं-युवा अज्ञान ॥  
निराकार शिव की पूजा ही, है वेदोक्त सनातन ज्ञान ॥  
इसी ज्ञान की महिमा से वे, दयानन्द बन गए भद्रान् ॥३॥

### शिवरात्रि

उस ही दिन से शिवरात्री भी, बोधरात्रि विख्यात हुई ।  
बोधदान से आर्यजनों को, महिमा उसकी ज्ञात हुई ॥  
पर्वरूप में तब ही से वह, जनता में सुप्रसिद्ध हुई ।  
उत्तमनाकर आर्यमण्डली, वास्तव-ज्ञान-समृद्ध हुई ॥४॥

(१० सिद्धयोगाल कविरत्न)

इस संसार में नाना प्रकार की साधारण घटनायें सर्वसाधारण के समान प्रतिदिन होती रहती हैं, जनसाधारण की दृष्टि में वे कोई महत्त्व नहीं रखती । कनसा एक क्षण में उन पर छिटापत करती हैं और दूसरे क्षण में उनको भूल जाती हैं । किन्तु यही साधारण घटनायें महापुरुषों के जीवन में महापरिचयन उत्पन्न कर देती हैं । इतिहास साक्षी है कि अति साधारण घटनाओं ने जन्तु में बड़ी-बड़ी क्रान्तियाँ कर दी हैं ।

साधारण रोगियों, बुढ़ों, बच्चों (मुदों) की से ध्राई जाती हुई रचियों और संन्यासियों को सहस्रों जन प्रतिदिन देखते हैं, किन्तु इन्हीं साधारण दृश्यों से वाक्य राजकुमार सिद्धार्थ को वह बोध प्रदान किया जिसका प्रथम संसार के आगे मनुष्यों पर श्वत तब चिद्यमान है । इन्हीं दृश्यों से उद्बुद्ध बुद्ध की दया ने क्रूरोंमें शर्मियों की निर्दय रक्तपात से रक्षा करके संसार में कल्याण और सहायुभूति का स्रोत बहाया था ।

बुढ़ों पर से फलों को गिरते हुए निरुद ही लसों मनुष्य देखते हैं, किन्तु आइजक म्यूटन की दिव्य दृष्टि ने एक वृक्ष से फल के पतन को देखकर पृथ्वी के मुखलाक्षणक के नियम का साक्षात्कार किया ।

बटवोई की माप अपने ऊपर के द्रव्यक को अनेक मनुष्यों के नेत्रों के सामने हिलासी रहती है, किन्तु म्यूकोमेन की दूरप्राप्ति बुद्धि ही उसमें वर्तमान वाक्य-बन्धन का बोध देस सकी ।

वृक्ष के पत्तों में से छनता हुआ सृण का आलोक वहुधा मनुष्यों की दृष्टि के सामने जाता रहता है, किन्तु इटली निवासी पोर्टी मदानुभाव ने एक वृक्ष के नीचे मध्याह्न के विश्राम करते हुए इसी दृश्य को देखकर आलोक चित्र (फोटोग्राफी) का मूल सिद्धान्त दृढ़ निकाला ।

इसी प्रकार की एक घटना आज हमारे प्रस्तुत प्रकरण से सम्बन्ध रखती है, जिसने वर्तमान गताम्दी के भारत के धार्मिक इतिहास में अपूर्व अंतिम उत्पन्न करदी ।

गुजरात प्रायद्वीप के मोरवी राज्य में मलुकटा के इवाके में 'टड्डुरा' एक ग्राम है । नप्रति यह ग्राम मडोदा राज्य के अन्तर्गत है । उसमें गुजराती ब्राह्मणों की श्रीदोष्य शाखा का दान्युष्योमीय एक समृद्ध सामवेदी कुटुम्ब चिरकाल से वास करता था । उसकी अल्ल भिवेदी थी । शिवपुराणोक्त शंखप्रदाय में इस कुल की असीम आस्था थी । वह बड़ी भक्ति से कैलाशाधिपति महादेव की पूजा-धर्च में पल्लव रहता था और शंभो के शिवरात्री पर्व को वड़े समारोह से मनाकर विश्व-अनुसार व्रत रखता था । १० करसनजी सासजी शिवारी इस कुटुम्ब का प्रमुख पुरुष था । शिवरात्री भिवेदी पर्व का अग्रभ्रम ही और करसनजी के पिता का नाम सासजी था । करसनजी के कई सन्ततियग्य-थी । उनमें से उनके एक पुत्र का नाम दयाराम वा दयालजी था ।

दयालजी बड़ा प्रतिभाशाली बालक था । ५ वर्ष की अवस्था में 'बदने' देवानगरी अग्रज सोलकर वहुन से स्तोत्र और श्लोक कथना-करे लिए थे । आठव वर्ष उसका यशोबोध संस्कार हुआ और १० वर्ष के समये संप्रदायानुसार सम्भ्यावपटनादि कर्म करने लगा । उसके पिता ने सामवेदी ब्राह्मण होने पर भी श्रद्धाद्वेषियों से युक्त होने के कारण उसको यजुर्वेद कथना कराया था और पार्ष्वि पूजन आदि का उपदेश दिया था । चौदह वर्ष को ध्रमस्था में दयालजी की नियमपूर्वक शंख मत की दीक्षा देने की शिवारी की गई और शिवरात्रि की महारात्रि का पर्व इत्येके लिए उचित युवा गगा । गुजरात देश में शिवरात्रि का पर्व माघ वदि १३ को होता है और उत्तर भारत में फाल्गुन वदि १४ को यह पर्व मनाया जाता है । इस अन्तर का कारण यह है कि दक्षिण भारत में श्रनाव-श्रान्त और उत्तर भारत में पृथिव्याभूत मास की गणना प्रचलित है । सवत् १८६४ विककी की शिवरात्रि को दयालजी नियमपूर्वक व्रत रखकर रात्रि जागण के लिए पिता के साथ ग्राम से बाहर वर्तमान धरने कुल के भिन्नभिन्न में गया । रात्रि के प्रथमार्ध की पूजा के परन्तु उसके पिता आदि के अतिशय के वक्षवर्ती होगये, किन्तु श्रद्धालु बालक दयालजी अन्तिन के आवेश में आंशो पर जल के छीटे मार-मार कर जागता रहा । बुद्ध देव पश्चात् वह क्या देमना है कि एक मूलक (बालक की मातृभाषा गुजराती में उसका नाम 'शोबर' था) शिव की पिण्डी पर आकर चढावे के अक्षत आदि लाने के लिए उछल-बूद मचाने लगा । दयाल जी के बाल हृदय में उसको देखकर शङ्कानु को समुद्र उमड़ पडा । वह धरने मत में सोचने लगा कि शिव तो पुराण में

समृद्ध बच्चों, शङ्कपुत्र अश्व और त्रिशूल से युक्त, वर और शाय देने में समर्थ, सर्वशक्तिमान् वर्णित है । यह कैसे सम्भव है कि धरणी भूति पर से यह इस चूहे को भी नहीं हटा सकता ? इस वास्तका ने दयालजी

को तर्कणा शक्ति में ऐसा आघात-प्रतिघात उत्पन्न किया कि उसी क्षण से उसको पाषाण की पिण्डी के शिव न होने का निश्चय हो गया और उसने उसी समय सत्य शिव की भवेयथा का सञ्चलन धारण कर लिया। उसने तत्काल अपने पिताजी को जगया और अपनी सञ्ज्ञा उनसे निवेदन की। उन्होंने उसकी सञ्ज्ञा के समाधान का नाता प्रकर से उघोया किया, किन्तु दयानजी का समर्थन निमित्त न हुआ, तब उसने अपने मन में यह व्रत दृढ़ कर लिया कि मैं शिव साक्षात्कार किये बिना उसका पुत्रन कदापि न करूंगा।

बूढ़े की इस अट्ट घटना ने ही दयानजी के दयानन्द बनने का सूत्रपात किया। भाग्य की घटनावली केवल उसकी सहायक मात्र थी, वह क्रिया-प्रतिक्रिया की रूपमात्र थी। वस्तुतः इस शिवरात्रि ने ही दयानन्द की बोध प्रदान किया था और वही दयानन्द के जीवन भर के मूर्तिपूजा के विरुद्ध विकट संघाम का प्रादि कारण था। इसीलिए उसको धार्यसमाज के इतिहास में 'दयानन्द-बोधरात्रि' कहते हैं जो आर्यासामाजिक परिवारों में उस दिन प्रत्येक वर्ष दयानन्द बोधरात्रि नाम का वर्ष मनाया जाता है। शायद इस समय, जबकि ऋषि दयानन्द के उद्योग ने मूर्तिपूजा के विश्वास को जड़ से हिला दिया है, साधारण दृष्टि में दयानन्द बोधरात्रि का उतना महत्त्व न जके, किन्तु आर्यसमाज के धारायें के कार्यक्षेत्र में अवतीर्ण होने से पूर्व की मूर्तिपूजा की दशा पर जब हम दृष्टिपात करते हैं तो दयानन्द बोधरात्रि के प्रभाव का पूर्ण चित्र हमारे हृदय-मण्डल पर अङ्कित हो जाता है। उस समय मूर्तिपूजा के विकट एक शब्द का भी उच्चारण शिष्ट वर्ग के मूल पर कुटारापात समझा जाता था और ऐसा करनेवालों को नास्तिक की उपाधि तर्काज मिलती थी। महाभारत युद्ध के पश्चात् अनुयायियों में अनेक सिखातों पर मतभेद उत्पन्न बहुत से मतप्रवर्तक उत्पन्न हुए हैं, किन्तु वेद के प्रमाणों के आधार पर मूर्तिपूजा के सञ्चन का गौरव वेद के ऋषिद्वारा प्रथम, आर्यसमाज के स्थापक ऋषि दयानन्द को ही प्राप्त है। ऋषि दयानन्द के आविर्भाव से पूर्व मूर्तिपूजा जनता मूर्तियों को साक्षात् उपास्यवेष मानकर ही पूजती थी और अब तक सर्वसाधारण अज्ञ जनों की यही भावना है। किन्तु ऋषि दयानन्द के मूर्तिपूजा का प्रबल परिहार करने पर सनातनी परिवर्तों ने इस मनोव युक्ति का आश्रयण धारण किया था कि मूर्तियां तो केवल चित्त की एकाग्रता का साधन मात्र हैं। वे मूर्तिपूजा के अर्थ मूलतः पूजा—मूर्ति की पूजा छोड़ कर मूर्तों पूजा—मूर्ति में पूजा करने लगे। परन्तु दयानन्द को दीर्घ दृष्टि ने खूब ताड़ लिया था कि ये युक्तियां पुनराचार्यों के द्रव्यापहरण के हथकण्ड हैं और अपने अनुयायियों को बुद्धियों को जड़ बनाए रखने का साधन मात्र हैं। ऋषि दयानन्द ने भले प्रकार अनुभव कर लिया था कि इस समय मूर्तियों के मन्दिर दुराचार के दुर्गम दुग बने हुए हैं। अधिकांश मादक-द्रव्य-सेवी मुग्ध, भोगेष्टियों नर्जेवियों और जपको को काली भैरव और महादेव के मन्दिरों में ही दारण मिलती हैं और वही उनका जमाव रहता है। स्वेच्छाचारी और अनाचारी महत्त्वों की सम्प्रतिष्ठासिद्धा के साधन भी यही मन्दिर हैं, इसलिए जब तक इनकी जड़-मूर्तिपूजा का उन्मूलन भारत से न होगा, तब तक सभ्यता के अन्त और भारत माता के उदार की धारा दुराधामात्र है। इसी विचार-परम्परा ने महर्षि दयानन्द को मूर्तिपूजा के घोर विरोध के लिए उद्यत और कठिबद्ध किया था और उसका परिणाम आपके नेत्रों के सामने स्पष्ट है कि चाहे हमारे पीराणिक भाई अपने मुझ से स्वीकार करे या न करे पर अन्त-करण में वे इस को नहीं प्रकाश करते हैं कि साधार जनता का विश्वास मूर्ति पूजा से उठ चुका है। इतना तो सनातनी परिवर्त भी धवस्व कहने लगे हैं कि मूर्तिपूजा केवल धर्माचार्यों के लिए है, जानियों को उसकी आवश्यकता नहीं है। क्या यह धार्मिक जगत् में बोधरात्रि की हुई महाकामिनी नहीं है कि जिस सञ्चलन को जड़ की महामुद गजन्वी का सङ्घम और औरङ्गजेब का क्रत्याचार अपने बल से न हिला सका था उसको महर्षि दयानन्द के प्रबल तर्क तथा प्रचार ने मुद्रुता-पूर्वक लोसका कर दिया। अथ समयम्भार सनातनी भी मूर्ति-मन्दिर-निर्माण की निरव्यकता का भले प्रकार समझ गए हैं और वे भी इमान स्थापन पर विचालय, ऋषिकुण्ड, गङ्गाधर्यमन और कौलेज खोल रहे हैं। ये बात सदा रहें हैं कि धार्यसमाज वास्तविक मन्दिरों के स्वरूप को जान गई है और उस स्वरूप को उनके समय लाने वाला दयानन्द

ही था।

बोधरात्रि का बुतान्त दयानन्द के व्रत की बुद्धता का भी सूचक है। उसने केवल १४ वर्ष की उपास्यवस्था में जो व्रत ग्रहण किया था उसको आजीवन निभाया। मूर्तिस्वधन छोड़ देने के लिए उसको नाना प्रकार के प्रलोभन और बल विखाये गए, किन्तु वह अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहा। उदयपुर राज्य की घटना आर्यसामाजिक पुत्रों को ज्ञात ही होगी कि उनके शिष्य उदयपुराधीश्वर महाराजा सञ्जनसिंह ने उनसे निवेदन किया था कि उदयपुर का राज्य एकलिंगेश्वर महादेव के मन्दिर के अधीन है। यदि आप यहां मूर्तिपूजन का सञ्चन न करें तो इस मन्दिर की गद्दी आप को मिल सकती है, जिस से आप का कई लाख रुपये का अधिकार हो जाएगा। यह सुनकर स्वामी जी को बहुत क्रोध आया और उन्होंने कहा कि 'तुम मुझको उच्छ्रुत्वा लवक देकर बड़े बलवान् ईश्वर को आज्ञा तुझवाना चाहते हो। यह छोटी सी रियासत और उसका मन्दिर जिस में मैं एक दोड़ से बाहर जा सकता हूँ, मुझे कभी भी वेद और ईश्वर की आज्ञा के तोड़ने पर वाशित नहीं कर सकते हैं।' (यह उक्ति पं० मोहनलाल विष्णुलाल पंडेया की बतलाई हुई पं० नेलराम जी धार्यपथिक-सङ्गृहीत धार्मिक की जीवनी में ही हुई है)। यह सुनकर महाराजा साहब ने उनके धार्मिक भाव से चकित होकर निवेदन किया कि 'महाराज मैंने यह सब इसलिये कहा था कि मैं देखू कि आप इसके षडयंत्र पर कितने दृढ़ हैं? अब मेरा निश्चय पहिले से बहुत अधिक दृढ़ होगा है कि आप वेद की आज्ञा पालने में दृढ़ हैं।' ऐसे ही दृढव्रतों और अविचलित निश्चय पुत्रों से संसार का कल्याण होता है, जो वास्त्यावस्था में ही दयानन्द और बुद्ध आदि के समान साधारण घटनाओं से भी बोध प्राप्त करने के अविद्याचकार को हटाकर आध्यात्मिक का प्रकाश करते रहते हैं।

आर्य महाजनों को दयानन्द-बोधरात्रि से यह शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये कि प्रत्येक पुत्र का कर्तव्य है कि वह साधारण घटनाओं को भी दीर्घदृष्टि से अवलोकन करने का अभ्यासी बने और अपने धर्मिक व्रत को प्राणपण से पालना रहे। दयानन्द-बोधरात्रि के कारण आर्य के यहा ऋषि दयानन्द के गुणों का कीर्तन होना चाहिये। व्रतः ऋषि की वास्तविक जन्मदिन ज्ञान न होने के कारण स दिन आर्यसंसार उनकी जयन्ती मनाने में असमर्थ है, इसलिए बोधरात्रि की उनकी जयन्ती मानकर उसका मनाया उचित है, क्योंकि तत्त्वदृष्टि से देखा जाए तो वही वास्तविक दयानन्द की जन्मदात्री है।

**पद्वति**

श्रीमदयानन्द जन्मदिनस समस्त धार्यसमाजों में प्राश्नीय श्रीमती आयप्रतिनिधि सभाओं द्वारा निर्धारित दयानन्द सप्ताह के रूप में निम्नलिखित कार्यक्रमानुसार मनाया जाता है—

कीर्तन—प्रतिदिन सुबोध से २ बड़ी पूर्ण मगर २ और शाम २ में टोशियां बनाकर कीर्तन करना चाहिये।

यज्ञ—कीर्तन के पश्चात् मन्दिर में सार्वजनिक यज्ञ किया जाना चाहिये। यथासम्भव इस सप्ताह में सम्पूर्ण बसुदेव संहरा से वृहद् यज्ञ की योजना का इस।

प्रचार—आर्य-मन्दिरों ग्रथवा ग्रन्थ सार्वजनिक स्थानों पर विराट् सभाओं की योजना करना और उनमें नैतिक सिद्धांतों तथा ऋषि जीवन पर सिद्धान्त पुत्रों के व्याख्यान करना, पुत्रों तथा धार्यों में ट्रेक बोटकर ब्याख्यान तथा मैजिक सेंट्रन द्वारा प्रचार करना चाहिये। प्रचार में अधिक ध्यान नैतिक (Moral) उपनिषु की ओर दिया जाए। विशेष योग्य व्यक्तियों को आर्यसमाज का सभासद बनाने का प्रयत्न करना चाहिये। अयोग्य आदमियों को सर्वथा समासद न बनाया जाए। जो ऐसे लोग धार्यसमाज में पहिले ही से प्रविष्ट हों, उन्हें सच्चा धार्य बनाने का पुत्र प्रयत्न करना चाहिये।

वसिंतोद्धार—इस सप्ताह में श्रद्धुता मानने वाली जातियों में विशेष प्रकार से जा-अ कर प्रचार करना चाहिये। उनको दूरी हटाई जायता की स्वाभिमान के भाव भरकर उठाना चाहिये कि

सहभोज—आर्यजनों को परास्परिक भ्रम-बुद्धि के लिए सप्ताह में एक दिन सहभोज भी पोषण की जाए। नोष-अंश के भावों को सुनाहर आयमान को सहभोज में सम्मिलित होना चाहिये।

## गुरुकुल धीरणवास (हिसार) का

### उत्सव सम्पन्न

दिनांक १, २, ३ फरवरी १९६१ को गुरुकुल धीरणवास का उन्नीसवाँ वार्षिकोत्सव विधिवत् सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सुधृष्य संस्थासे स्वामी ओमानन्द जी, स्वामी सदानन्द जी, स्वामी बगत् मुनि जी, प्रो० ओमकुमार शर्मा, पण्डित रणवीर शास्त्री, आचार्यो बहून सुनील आर्यो तथा वानप्रस्थी आनन्द मुनि प्रादि विद्वानों ने ईश्वर की सत्ता धर्म क्या है, महर्षि दयानन्द जी का दृष्टिकोण, आर्यसमाज क्या है क्या चाहता है। राष्ट्रराज, गोरखा, देश में फैला अन्धकार एव आतंकवाद, नारी शिक्षा, शारावबन्धी तथा आर्यों का इतिहास व शोचनीयता पर विस्तार से प्रकाश डाला। इसी अवसर पर श्रीमती शशि गुवाटी अतिरिक्त उपयुक्त हिसार भी पथारी। चिन्तिते दो शीर ऊर्जा की लाईट एव पानी को टकी लगाने तथा बनवाने की स्वीकृति प्रदान की तथा धार्मिक भवनोपदेशक वी० बेगारज, स्वामी इन्द्रवेश, महाशय रामकुमार, प० सुलतानसिंह, प० जबरसिंह शारी तथा महाशय फूलसिंह आदि के शिक्षाप्रद समाज सुधार के भजन हुये। इसके प्रतिरिक्त उत्सव पर सबसे आकर्षित कार्यक्रम गुरुकुल शृङ्गर के ब्रह्मचारियों का आसनो का व्यायाम, रस्ते पर महाराष्ट्र का व्यायाम तथा गुरुकुल धीरणवास के बच्चों का पीटी डबल, लेजियम एवं क्रांतिकारियों का नाटक रहा। ब्रह्मचारियों के व्यायाम प्रदर्शन ने लोगों पर अमित छाप छोड़ी।

दस बार गुरुकुल धार्मिक नगर के आचार्य प० रामस्वरूप तथा आजाद मुनि जी भी पुरी अद्वा से छात्रों को लेकर उत्सव में पथारी। प्रातःकाल यत्र पर कई नवयुवकों ने जनेऊ धारण किए तथा धराव व धूपाना को बुराई छोड़ने की प्रतिज्ञा की। उत्सव पर कक्षा सख्या में इलाके के अन्य नर-नारियों ने भाग लिया। दिन खोलकर दान भी दिया। भावस्थ है कि गत तीन महानों में गुरुकुल कार्यकास्थो कमेटी के प्रधान महाशय रामजीलाल आर्य एव श्री दीवानसिंह धार्मिक प्रदान आर्यसमाज वास्तुसम्बन्ध में ८८ हजार नकद रूपए का दान इकट्ठा किया। सभा का बंचसंचालन एवं विद्वानों की सेवा शुभ्या का कार्य श्री जतरसिंह धार्मिक क्रांतिकारी जी ने बड़ी कुशलता पूर्बक बड़ी अद्वा से किया।

आचार्य गंगासिंह,  
गुरुकुल धीरणवास

## डा० भवानीलाल भारतीय का प्रचार विवरण

### श्रद्धि दयानन्द की जीवनकथा

डा० भवानीलाल भारतीय द्वारा महर्षि की जीवनी पर सरस, रोचक तथा ज्ञानवर्धक कक्षाये विगत नवम्बर में आर्यसमाज संस्कर ७ तथा सेक्टर १६ चबोड के आर्यसमाजों में प्रस्तुत की गई। डा० भारतीय अबिल भारतीय प्राध्यापिका परिवर्द्ध के हरिद्वार अधिवेशन में सम्मिलित हुए तथा वहाँ की वैदिक परिषद् में वेदों का सांभोगी स्वरूप विषय पर अपना शोधप्रबन्ध प्रस्तुत किया। आर्य वानप्रस्थ धार्मिक ज्ञानाजपुर में उनके तीन मास श्रद्धि जीवन पर हुए।

दि० ३ दिसम्बर को डा० भारतीय सपलीक मध्यप्रदेश के उद्योग-नगर जिलाई पथारी। यहाँ धार्मिकस्था विद्यालय दुर्ग, सुलाराम धार्मिकस्था विद्यालय दुर्ग, बनरयाससिंह गुप्त कथा महाविद्यालय दुर्ग तथा सुप्रधाना कालेज दुर्ग में उनके प्रभावशाली मास्य हुए। वे रायपुर के रामबन्धु संस्कृत कालेज में भी वैदिक साहित्य और शोध विषय पर प्रसार आशय के लिए पथारी। ८ दिसम्बर को डा० भारतीय के करकमलों से श्री. ए. वी. माखल इन्ड्रज दुर्ग के नवीन भवन का उद्घाटन सम्पन्न हुआ। उनके दो प्रसावपूर्ण प्रबन्ध आर्यसमाज जिलाई के वार्षिकोत्सव में भी हुए।

× × ×

डा० भवानीलाल भारतीय के दो पीछों के क्रमशः जन्मप्रदान तथा नामकरण संस्कार दि० ३० दिसम्बर को उनके निवास कोठी ४१ सेक्टर १५-D चम्पोगढ़ में सम्पन्न हुए। नवजात पीछ का नाम प्रबन्ध रखा गया।

## अम्बाला छावनी में ऋषिबोध पर्व

वैदिक प्रचार मण्डल, अम्बाला छावनी के उत्सावधान में ऋषि-बोध पर्व दिनांक १२-२-६० को रामनगर में बड़े उत्साह पूर्बक मनाया जा रहा है। इसके अध्यक्ष श्री सतीग मिश्रल, अध्यक्ष हरयाणा लादी बोर्ड एन सदस्य हरयाणा सभा करने। इस अवसर पर अन्य विद्वान् एवं मन्वन्तोपदेशक पथारी रहे हैं।

कृपया आप सादर आमन्त्रित हैं।

नोट—नव-निर्मित भवन के जिये नीचे लिखे पते पर धार्मिक से अधिक दान भिजवाये।

वेद भिज हापुड वाले,  
मन्वी

वैदिक प्रचार मण्डल,  
७२-डी गोविन्द नगर,  
अम्बाला छावनी

## खुर्गाई जिला रोहतक में वेदप्रचार की धम

आर्यसमाज खुर्गाई जि० रोहतक में ४, ५ फरवरी को वार्षिक वेदप्रचार कार्यक्रम बूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सभा की ओर से प० जयपाल आर्य, प० ईश्वरसिंह तुफान तथा गुरुकुल शृङ्गर से प० आशाशार प्रेमी ने भजनों द्वारा वेदप्रचार किया तथा शराव, मांस, बहेय, गोहत्या आदि सामाजिक बुराइयों का जमकर लुप्टन किया और आर्यसमाज के कार्यों में सहयोग करने का परामर्श दिया। नवयुवकों ने प्रचार में भाग लिया। श्री राममेहरसिंह आर्य प्रधान तथा श्री प्रतापसिंह आदि ने प्रचार को सफल करने के लिए परिश्रम किया तथा सभा को ३०० वेदप्रचारार्थ दिए।

## सर्वहितकारी के आजीवन सदस्य

सभा के भवनोपदेशक श्री मुरारोलाल बेचैन ने गत मास सर्व-हितकारी के निम्नलिखित बनाये हैं।

- १-श्री देवीदास आर्य प्रबन्धक आर्य कथा इन्टर कालेज गौविन्दनगर, कानपुर।
- २-श्री महात्मावराय सोनो ग्राम भद्रक जि० महेन्द्रगढ़।
- ३-प्रधानाचार्य श्री आचार्यकुल सीटीपुरलोहा कलां जि० रोहतक।
- ४-आचार्य श्री गुरुकुल विद्यापीठ मधुपुरो जि० फरीदाबाद।
- ५-मन्वी आर्यसमाज बहा बाजार, मुन्वी सदरदीन लेन, कलकत्ता-६
- ६-श्री राजाराम शास्त्री ५६-ए वी. टी. रोड, फुलवागान, कलकत्ता-२

केदारसिंह आर्य

॥ ओम् ॥

धर्म प्रेमियों,

बड़े हृष्य की बात है कि 'आर्य इलेक्ट्रॉनिक फरीदाबाद' के श्री सत्यभूषण आर्य के सौजन्य से धार्मिकसमाज के सुप्रसिद्ध भवनोपदेशक व गायक

## श्री विजय आनन्द

(फिरोजपुर छावनी)

का पहला कैसेट बम्बई में तैयार होयगा है। श्री विजय आनन्द से भारत के सभी आर्यसमाजो भनोचित परिचित हैं।

भजनों के रसों से भरे

## भक्ति के रंग (कैसेट)

के निर्माण में फिलीपी दुनिया के सुप्रसिद्ध सपोतवादाकों एवं गायक-गायिकाओं ने अपना योगदान दिया है। कैसेट का मूल्य केवल रु० 25-00 है। धर्मप्रेमी मित्र पते पर सम्पर्क कर कैसेट प्राप्त कर सकते हैं।

- (1) श्री मदन रहेजा,
- (2) आर्य इलेक्ट्रॉनिकस,
- 4-रंजनासोसाइटी, 418-ए, 51, सेक्टर-16,
- 14वाँ रास्ता शार बम्बई-40052 फरीदाबाद (हरयाणा)
- (3) श्री विजय आनन्द, विल्किंग नं० 80, रेलवे रोड, फिरोजपुर छावनी, (पंजाब) 152001

## आर्यसमाज मिर्जापुर बाछोद का

### पुस्तकालय शिलान्यास समारोह

आर्यसमाज मिर्जापुर बाछोद जि० महेंद्रगढ (हरयाणा) के पुस्तकालय का शिलान्यास दिनांक २ फरवरी १९६१ को जिला महेंद्रगढ के उपायुक्त मानयोग श्री दिनेशसिंह जी डेसी के कर कर्मजों द्वारा किया गया। उपायुक्त महोदय के अभिनन्दन के पश्चात् श्रामवासियों ने 'प्याऊ' में कर्नवलन को मांग की। उपायुक्त महोदय ने श्रामवासियों को मांग सह्य स्वीकाराते हुए, आर्यसमाज के प्रगतिशील कार्यो को मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की तथा इस पुस्तकालय के निर्माण के लिए हरयाणा सरकार के पचायन विकास कार्यो के अन्तर्गत धनराशि देने का वचन दिया। इस समारोह के संयोजक म० ताराचन्द जी (प्रधान आर्यसमाज नारनौल), समारोह अध्यक्ष—श्री छोटेलाल जी प्रधान (मुडिया बेडावाले) थे। म० मोरमुक्तार्थसिंह प्रधान, डा० विश्वम्भर दयाल आर्य (मन्त्री) एवं समस्त श्रामवासी व अन्य सज्जनों के सतत प्रयास से विधिपूर्वक समारोह सम्पन्न हुआ। प्रातःकाल श्री प्रदुम्न जी प्राचार्य गुरुकुल खानपुर (म० गढ) द्वारा यज्ञ करवाया गया। इस समारोह में इस क्षेत्र के भजनार्थदेसको ने सुन्दर-सुन्दर वैदिक मजन मुनाये। वेदप्रचार मण्डल के संयोजक प० ताराचन्द जी वैदिक ने वेद-प्रचार और सामाजिक कुरीतियों पर प्रकाश डाला। श्री लालचन्द जी 'विद्यावाचस्पति' (श्री मगल अयकोर खा० ज्ञान बाधम बेडकी) ने ध्रुपते सधु 'भजन' में 'मृत्यु' जसे विशाल विषय को 'गागर में सागर' और सागर में भी मोती को तरहू बणित करके श्रोताओं को मग्न-मुग्ध कर दिया। 'मृत्यु' जोकि 'काल' है। यह 'काल' भी अपने आप में एक कट सत्य है; प्रतिक्षण मनुष्य को घण्टी बजाकर नेतावनी देता रहता है किन्तु मनुष्य जया कि प्रत्य महर्षि दयानन्द जो सरस्वती ने बताया है कि प्रयोजन को मिटि, हठ, दुराग्रह और अज्ञान के बधीभूत होकर इस 'काल की घण्टी' के उपदेश को नहीं समझता है। और धनतोमात्या फिर होता वहां है जो सवा से होता आया है। ध्रुपति 'इतः नष्टः तन भ्रष्टः'। इसलिये आर्ये, हम इस 'काल की घण्टी' के उपदेश को 'गाना' में सुन तथा इसकी नेतावनी से कुछ सीखे।

#### गाना

अव यात्री विस्तर गोल करो, घण्टी उपदेश सुनाती है।।टेक।।

जिस गाड़ी से तुझे जाना है।

बंसा हो मोल चुकाना है।।

रही घण्टी बजा यह डोल मुने, उठ नींद तुजे क्यो आती है।।१।।

घण्टी उपदेश.....

दुनिया मुसाफिरखाना है।

किसे जाना है किसे आना है।।

यह सही घण्टी का बोल मुने, तुजे बार-बार समझाती है।।२।।

घण्टी उपदेश.....

जानी टिकट से जाएगा।

तो मार्ग में फस जाएगा।।

नही करती है घण्टी मखोल मुने, ना राक्ष गीती-नाती है।।३।।

घण्टी उपदेश.....

ठीक टिकट ले बेठी आनन्द से।

ईश-गान मुने फिर 'लालचन्द' से।।

सदा साज-बाज का रमजोल मुने, घण्टी यही गाना गाती है।।४।।

घण्टी उपदेश.....

सकसनकर्त्ता—महात्मा मुशीलदेव  
श्री मगल अयन बेडकी (म० गढ)

## आर्य वन में योग शिविर

आर्य वन-विकास फार्म में ७ से १६ मार्च १९६१ तक दस दिवसीय योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया है। १७ मार्च को उत्सव मनाया जायेगा। शिविर में क्रियात्मक योगप्रशिक्षण के साथ योगादि दशों के चुने हुए सूत्रों का अध्ययन भी किया जायेगा। शिविर शुक्र १०० रुपये रखा गया है। जो आर्थिक दृष्टि से असमर्थ होंगे उनको योग्य आनन्द शुल्क में छूट दी जा सकेगी। शिविराचार्य २५ फरवरी से पूर्व ही धपनी योग्यता, ध्यवसाय, वायु सहित आवेदन पत्र निम्न पते पर लिखकर स्वीकृति ले लेव तथा मन्त्री, आर्य वन के पास शुल्क जमा करावा देव।

पता—दशम योग महाविद्यालय, आर्य वन विकास, रोड, प० सागपुर, जि० साबरकाटा, गुजरात ३८३०७

धन जी वाल जी पटेल

(प्रधान, आर्य वन)

—स्वामी स्वल्पसिंह

(प्रधान, आर्य वन)

महर्षि बोधोत्सव के उपलक्ष्य में :-

## महर्षि दयानन्द स्तवन

श्री० श्रीमन्महाराज आर्य सह-संयोजक वेदप्रचार मण्डल जि० जौड़ विस्मित चकित चिन्तन ने पूछा यह कौन निराला सपत्नी।

किसको प्रबल ससकारों ने भयभीत हुई मृत्वा काशी।।

यह किसका गर्जन तर्जन है यह किन्तने उगली व्यास है।।

किसको सासो से फूटी यह महाभयकर ज्वाला है।।

उत्तर दिया विशासों ने यह देव दयानन्द बोल रहा।।

जिसकी सिंहाजना से बरती और अम्बर डोल रहा।।

यह किसके तर्क तीर हैं कि पाण्डव-दुर्ग सब इवस्त हुए।।

पौगापन्यो सब सडम गए पा-पों के होमेले पस्त हुए।।

यह किनने चुगोती दी कि विरोधी मुग करके भयप्रस्त हुए।।

प्रकाश का दावा करते थे वे किसको चमक में अस्त हुए।।

इस बार हिमालय बोल उठा यह दयानन्द तपघाटी है।।

जिस एककेले के आगे यह सारी दुनिया हारी है।।

यह किसको बाप नगाहे पर कि सहसा फिरंगी चौका है।।

किस फोलादी के हाथों ने हर जोर बुल्ल को रोका है।।

दानवता की नाकत को किस महामानव ने टोका है।।

किस मलयगिरि से वहकर आया यह शीतल सुलकर झोंका है।।

सागर गरञ्जा है दयानन्द इतिहास बदलकर जायेगा।।

डोंग, गुल्बम रुडिवाद को कुचल नसलकर जायेगा।।

बनकर भगीरथ वेदज्ञान की गगा जग में बहा गया।।

सदियों से मोई पड़ी हुई जाति को दयानन्द जगा गया।।

जाहू ब्रह्मचर्य-शाक्ति का दुनिया को फिर से दिला गया।।

इतिहास साक्षी है योगी एक बार जमाना हिला गया।।

गगन चुम्बी अथितस्व-युक्त आला दम्भान दयानन्द या।।

सच तो यह है कि दुनियायों के लिए देवो वरदान दयानन्द या।।

**अत्युत्तम प्रचारार्थ**

अजिल्द **₹००** मेंकेडा

अजिल्द **₹००** मेंकेडा

**मृत्युार्थ प्रकाश**

घंट घण्टा पङ्चारि

सुफेद कागज़ सुन्दर छपाई

सुदृढ संस्करण विनिर्माण करनेवालों के

आकार 23x36-16 पृष्ठ ४20 की दर लिये प्रचारार्थ

अजिल्द ₹/अजिल्द ७/-

**आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट**

455, खारी बागली, दिल्ली-6 टाराम्बा-236360-233112

**बिक्री हेतु वैदिक साहित्य**

१- ओ वेदाज (अंग्रेजी भाषा में)—स्वामी युगानन्द जी	१-००
२- श्री प्रसिद्ध आषाढ आर्यसमाज—पं० चमूप्रति एम०ए०	१-५०
३- जीवन ज्योति (विषय-मंत्रों की व्याख्या) —	३-००
४- निहारिकावाद और उपनिषद्	०-५०
५- आर्यसमाज की विचारधारा—पं० सतीशचन्द्रमारा वेदालंकार	१-००
६- निजाम की जेल में	२-००
७- स्मारिका (हरनागा प्रांतीय आर्यसमाज शताब्दी समारोह)	१-००
८- आय प्रतिनिधि सभा शताब्दी समारोह स्मारिका	२-००
९- आर्यसमाज धीरे धीरे स्वरूपता निवारण—पं० श्रीमन्महाश्यामजी	०-५०
१०- बलिदान जयन्ती स्मृति ग्रंथ (आर्य गृहियों का परिचय)	४-५०
११- ईश्वर की सत्ता—डा० रणजीतसिंह	१-००
१२- हरयाणा के आर्यसमाज का इतिहास—डा० रणजीतसिंह	५-००
१३- धर्म-प्रवेशिका—डा० रणजीतसिंह	३-००
१- धर्म-सूत्र	५-००
१५- पंजाब का आर्यसमाज—श्री० रामचन्द्र जावेद	२-००
१६- आदर्श धातु रूपान्तरी—महानौर भ्राजद शास्त्री	२-००
१७- वैदिक उपासना पद्धति—डा० सुब्रह्मण्य आचार्य	३-५०
१८- सृष्टिपूजा—सम्पादक पं० जगदेवसिंह सिद्धांती	००-५०
१९- वेदस्वरूप निर्णय	००-५५
२०- वेदाधिकार	१-००
२१- वेदभाष्य पद्धति	१-००
२२- वैदिक विवाह पद्धति	६-००
२३- गोकुलनिधि—स्वामी दयानन्द सरस्वती	०-२०
२४- सत्यार्थप्रकाश	१-००
२५- महर्षि दयानन्द आत्मकथा	०-५०
२६- हमारा फाजिल्का—योगेन्द्रपाल	१-००
२७- बड़	स्वामी भोमानन्द सरस्वती
२८- श्री हनुमत्	०-५५
२९- पीपल	१-५०
३०- मिर्च	स्वामी भोमानन्द सरस्वती
३१- श्लोपद वा हायोपाव की चिकित्सा	०-२०
३२- विच्छन्न विष चिकित्सा	०-५०
३३- लवण	१-२५
३४- विदेशों में मैंने क्या देखा	२-५०
३५- नैरोबी यात्रा	१-५०
३६- महाचर्म सायन ६-११	१०-००
३७- " " १-२	१-००
३८- " " ३	१-००
३९- " " ४	२-५०
४०- " " ५	२-००
४१- " " ६	३-००
४२- " " ७	२-००
४३- " " ८	०-३०
४४- " " ९	१-५०
४५- " " १०	२-००
४६- " " ११	१-५०
४७- हस्वी	१-५०
४८- नीप	१-२५
४९- कर्तव्य दर्पण—मं० नारायण स्वामी	४-००
४९- विद्यार्थी जीवन रहस्य	२-५०
५०- योग रहस्य	४-००
५१- आर्यसमाज क्या है ?	२-००
५२- कथा सारा	१-२०
५३- संस्कारविधि	०-००
५४- वैदिकधर्म परिचय—पं० जगदेवसिंह सिद्धांती	३-५०
५५- वैदिक यज्ञ पद्धति—साम्बेदिक सभा प्रकाशन	००-६०
५६- मृत्यु के पश्चात् जीव की गति—श्री जगदेवसिंह सिद्धांती	१-५०
५७- नैतिक शिक्षा दसवां भाग—सत्यप्रभुए वेदालंकार एम.ए.	५-५०
५८- पं० जगदेवसिंह सिद्धांती जीवन चरित—डा० सुब्रह्मण्य	१०-००
५९- हैदराबाद सत्याग्रह में हरयाणा का योगदान—डा० रणजीतसिंह	३०-००

प्राप्ति-स्थान : आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ, सिद्धांती बवन, रोहतक

**हर गांव को पेयजल अगले चार वर्षों में**

—श्री० शेरसिंह  
भुजवर, ९ फरवरी : आगामी चार मान के दौरान देश का कोई गांव ऐसा नहीं होगा जहां पीने का स्वच्छ जल उपलब्ध न हो। उपरोक्त जानकारी केंद्रीय योजना आयोग के सदस्य एवं पूर्व केंद्रीय मन्त्री श्री० शेरसिंह ने यहां स्थानीय विश्रामगृह में पत्रकारों को दी। श्री० शेरसिंह कि हमारी सरकार ने निर्णय लिया है कि ४ साल के दौरान १५ से ३५ लाख तक की आयु वाले युवकों को अनपढ़ नहीं रहने दिया जाएगा।

उन्होंने बताया कि हमारी सरकार है कि बेरोजगारों को गांव में ही रोजगार उपलब्ध हो इसके लिए गांवों में व्यापक स्तर पर लघु उद्योग समेते ताकि गांव में ही कच्चे माल की वस्तुएं बनकर शहरों में आये।

श्री सिंह ने पीने के पानी की बरबादी को रोकने के लिए पानी के सदुपयोग पर बल दिया।

उन्होंने बताया कि सरकार वर्षों के पानी के सदुपयोग हेतु नई तकनीकी के इस्तेमाल पर काफी पैसा खर्च करेगी।

पत्रकारों के सवालों का जवाब देते हुए केंद्रीय योजना आयोग के सदस्य ने बताया कि केंद्रीय सरकार देश के बजट का ५० प्रतिशत देहात के विकास कार्यों पर खर्च करेगी।

श्री० शेरसिंह विश्रामगृह के वाद भारत सरकार के योजना आयोग के अंतर्गत भुजवर खण्ड के कार्यालय में समन्वित ग्रामीण ऊर्जा आयोजना कार्यक्रम द्वारा ऊर्जा पर आधारित विभिन्न प्रणालियों की प्रदर्शनों को देखने आए। वहां सहायक परिचोजना अधिकारियों ने बताया कि ग्रामीण इलाकों में हरिजन वस्त्रियों, पंचायत भवनों, सरकारी भवनों, स्कूलों आदि में प्रकाश प्रणाली, सौर जलतापन प्रणाली, सौर जल पान्थ प्रणाली, सामुदायिक बायोगैस सयंत्र, सामुदायिक चुपड़ा रहित कुछा और ऊर्जा चासित टेलीफोन लगाने के लिए ५० से ६० प्रतिशत तक की अनुदान राशि (सबसिडी) के रूप में आर्थिक सहायता दे रही है। (देनिक हिन्दुस्तान)

**आर्यसमाजों के वार्षिक उत्सव**

१	आयजमाज गुरुकुल भुजवर जिला रोहतक	१५ से १७ फरवरी
२	कन्या गुरुकुल खानपुर कला	१६ से १७
	जिवा रोहतक	
३	कबारी जि० हिसार	१५ से १७
४	दास बाजार लुधियाना (पंजाब)	१५ से १७
५	गुमाना जि० रोहतक	१५ से १७
६	कबरियावास जि० महेंद्रगढ़	२३, २४
७	गुरुकुल गदपुर जि० फरीदाबाद	२२ से २४
८	बालसमन्द जि० हिसार	२२ से २४
९	गुरुकुल मटिण्डू जि० सोनीपत	२२ से २४
१०	कन्या गुरुकुल मोरारजा	२२ से २४
	जि० पानीपत	

—सुब्रह्मण्य आचार्य, वेदप्रचारविद्युक्ता

**शोक समाचार**

दिनांक ८-१-६१ को लम्बी विमारी के कारण महाशय्य साध्वेयम (मकडोषी कला) की धर्मपत्नी श्रीमती कस्तुरी देवी का निधन होगया। वे ६७ वर्ष की थी अपने पीछे ६ लड़की, एक लड़का छोड़ गईं। वे धर्मात्मा महिला थीं। अतिथि सेवा उनका विशेष गुण था। वे आज सम्मेलनों में सदा मुकुट के उत्सवों में बड़-बड़ कर भाग लेती थीं। अपने सभी बच्चों की शादी में एक रूप में रहता किया। पाच बाराती बुजाए तथा बारात में चढाए। भगवान् से हमारी प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा शोकानुभव परिवार को दुःख सहन करने का बल प्रदान करे।

अंतरसिंह आर्य क्रांतिकारी, सभा उपदेसक

### मकरसंक्रान्ति पर्व

पानीपत आर्य महिलासमाज बड़ा बाजार पानीपत ने १०, ११, १२, १३, १४ जनवरी को मकरसंक्रान्ति के पर्व पर ५ दिन का बड़ी प्रश्रम से चतुर्वेद शतकों से यज्ञ किया जिसके बहुत पं० बर्सेपाल शास्त्री थे। साथ ही श्री गिरधरकुमार जी आर्य पुरोहित बड़ा बाजार पानीपत ने अव्यंजित वेदपाठ किया। उपस्थित से निरन्तर ५ दिन तक पूरा समाजमन्दिर २ से ५ बजे तक समय में भरा रहा। इस बखबर पर श्रीमती उमिला जी मार्या पं० जगदीशचन्द्र वसु तथा प्रो० उत्तमचन्द्र शर्मा ने अपने हृदयमग्न प्रोजेक्टो व्याख्याओं से महिला-साम्राज्य को प्रभावित किया।

इन यज्ञ की पूर्णहृदित के बाद महिलासमाज ने सभा को १०१ श्रद्धापूर्वक धान दिया।

आर्यसंतिनिधि सभा हरयाणा आर्य महिलासमाज का धन्यवाद करती है।

**स्वामी दयानन्द के आदर्शों पर चर्च**  
मक (उ०प्र०)—प्रधानमन्त्री चन्द्रशेखर ने आज बुधको और शिवको से प्रणाम को कि वे स्वामी दयानन्द सरस्वती के दिलाए रास्तों पर चले, जिन्होंने सामाजिक परिवर्तन और महिला मुक्ति के लिये अथक सघर्ष किया था।

यहाँ ०० ए० वी० कालेज के स्वर्ण जयन्ती समारोह का उद्घाटन करते हुए प्रधानमन्त्री ने यह बात कही। उन्होंने कहा कि हरिक बच्चे में विपुल ऊर्जा-शक्ति होता है और यह वैज्ञानिक संस्थाओं का दायित्व है कि वे इस शक्ति को जीवन्त व सक्रिय बनाएँ।

महिला शिक्षा पर बल देते हुए प्रधानमन्त्री ने मक शहर में एक महिला डिग्री कालेज खोलने के लिये पांच लाख रुपये देने की घोषणा की।

### आर्यनेता प्रो० शेरसिंह अभिनन्दन हेतु दान सूची

श्री जयपालसिंह आर्य भवनोपदेशक द्वारा	
श्री भरतसिंह शरणचं ग्राम द्वारकानगर, जिला रोहतक	१०१
श्री सुबेदार सोसराम ग्राम माजरा बुधसचन, जिला रोहतक	१०१
श्री सुजानसिंह मन्त्री आर्यसमाज कोसली जि० देवाशी	१०१
श्री मुरलीधर प्रधान आर्यसमाज लुली, " "	१०१
श्री रामपत प्रधान आर्यसमाज सिहोर, जि० महेंद्रगढ़	१०१
पं० सत्यनाथराय आर्य प्र० आर्यसमाज चरकीदादरी, जि० मिर्जापुरी	१०१
मा० छतरसिंह आर्य प्रधान आर्यसमाज बहरोड, जि० रोहतक	१०१
ठा० महाशेरसिंह आर्य मन्त्री आर्यसमाज बराधी, जि० रोहतक	१०१
श्री सत्यवान आर्य मन्त्री आर्यसमाज कासनी, जि० रोहतक	१०१
श्री प्रभातीलास सुबेदार मन्त्री आर्यसमाज सिहोर, जि० महेंद्रगढ़	१०१
श्री रामस्वरूप आर्य प्र० आर्यसमाज राजबूगडी, जि० सोनीपत	२००
श्री नौजीराम आर्य ग्राम नाहरी, जि० सोनीपत	१००
श्री रामस्वरूप आर्य मन्त्री आर्यसमाज नाहरी, जि० सोनीपत	१००
श्री दयाचन्द आर्य मन्त्री आर्यसमाज सरावड़, जि० रोहतक	२००
श्री सोसराम " " " गढी कुण्डल जि० सोनीपत	१००
श्री बलवीरसिंह " " " सिहोटी " " "	१००
श्री बंभ ठेकान्त आर्य ग्राम सिधाना, जिला रोहतक	१०१
श्री वृषसिंह आर्य प्र० आर्यसमाज " " " "	१०१
श्री सुभराम आर्य मन्त्री " " " "	१००
श्री जिलेसिंह आर्य सुबेदार " " " "	५०
श्री वृषसिंह सु० श्री अमृतप्रसाद " " " "	५०
श्री रामबाल मास्टर ग्राम मोरबावा जि० पिनानी	५१
श्री जयपाल आर्य सभा भवनोपदेशक ग्राम आसन जि० रोहतक	१००
स्वामी देवानन्द आर्यसभा भवनोपदेशक " सुवतानपुर	१००

जिला शाखाबाबाद

जिन दानदाताओं ने इस निधि में पैसा दिया भेजने का वचन अंकित करता रहा है, उनसे निवेदन है कि यथाशीघ्र धनना वसूला भेजने को कृपा करे जिससे अभिनन्दन समारोह की तैयारी शारम्भ की जाये।

म० भरतसिंह

संयोजक आर्यनेता प्रो० शेरसिंह, अभिनन्दन समिति

### वेदप्रचार मण्डल जिला जोध्द की मासिक बैठक

वेदप्रचार मण्डल जिला जोध्द की मासिक बैठक रविवार को २०-१-३१ को सुबह ११-०० बजे आर्यसमाज मन्दिर नरवाना में हुई जिसकी अध्यक्षता मण्डल के संयोजक गुरु स्वामी रत्नदेव जी ने की। बैठक में मण्डल के १० सदस्य उपस्थित थे। सर्वसम्मति से धर्मसंश्लेषित निर्णय लिये गये:—

प्रिक्खी बैठक की कार्यवाही को पुष्टि की गई और जनवरी मास के विचारकार्य का विवरण दिया गया जिस पर सभी सदस्यों ने संतोष व्यक्त किया तथा मण्डल के भवनोपदेशक श्री चन्द्रभद्र जी व उनकी भजन मण्डली की कार्ययमता की सराहना की गई। संयोजक श्री स्वामी रत्नदेव जी भी जिस समय व उत्साह से भागवत कर रहे हैं वह भी प्रशंसीय है और मण्डल के लिए सीमाध्यय का विषय है।

फरवरी मास के लिए प्रथम चरण में वे १२ गांव प्रचार हेतु चुने गए—बरोडी, सोन, काह्ला बेडा, फरायग कला, डुमर खां, शील, सुन्दरपुरा, दबसेण, धमतान साहू, सरल उत्सव (फरवरी ८, ९, १०) कुम्भाबेडा उत्सव (११, १२, १३ फरवरी) सन्धाबेडा (११, १२, १३ फरवरी) साथ ही संयोजक/सहसंयोजक को यह अधिकार भी दिया गया कि वे प्राक्कथकानुसार कार्यक्रम में यथाचित संशोधन भी कर सकते हैं। जनवरी मास का आर्य-अध्यय का व्योरा भी दिया गया जो कि सर्वसम्मति से पारित हुआ।

यह भी महसूस किया गया कि मण्डल के आय के साधन बढ़ाये जायें ताकि मण्डल और भी प्रभावी ढंग से कार्य कर सके। मण्डल की आगामी मासिक बैठक रविवार २४-२-३१ को सुबह ११ बजे आर्यसमाज मन्दिर जोध्द शहर में होनी तय की गई। सभी सदस्यों को इस बपट के माध्यम से सूचना दी जाती है कि वे कृपया बैठक में उपस्थित होंगें।

माननीय संयोजक श्री स्वामी रत्नदेव जी ने आर्यसमाज नरवाना के उत्साही एवं आत्मावात् अधिकारियों का धन्यवाद किया कि उन्होंने बैठक की सुन्दर व्यवस्था की। तत्पश्चात् सभा विच्छिन्न हुई।

—श्री० बीपेशप्रसाद आर्य  
सह-संयोजक, वेद प्रचार मण्डल, जिला—जोध्द  
आर्यसमाज जोध्द शहर

### मानव दैत्य बना

भारत की इस देव धरा पर मानव दैत्य बना।

धर्म छोड़ दिया मानव ने, अधर्म के बीच बना।।

महापुरुषों ने दिया हमें, वह ठोकर से ठुकराया।

किया उल्लंघन मर्यादा का, धर्म नजर नहीं आया।।

मान-सिंहनों को इच्छत का बज, सतरा बहुत बना।।

धर्म छोड़ दिया मानव ने अधर्म के बीच बना।।

हुष्का, बीड़ी, सिगरेट का अब बना नखेंडी आरो।

मांस, तन्हाकू के सेवन से अन्न गई आरो।

धर्म करेई दौत मसूदे, चबता नहीं बना।।

धर्म छोड़ दिया मानव ने अधर्म के बीच बना।।

लुटा रहे फेशन पर पैसा, नाल-गुन्ना नर-नारी।

क्षणिक सुलुओं में आज मनुष्य की, गई जिन्दगी सारी।।

कामवासना बढ़ी हुई है, जीवन तर्क बना।

धर्म छोड़ दिया मानव ने अधर्म के बीच बना।।

दृष्टियों का यह देव अनोखा, क्यों इत्ते भूव मिलाओ।

अपनी सभ्य संस्कृति को, पुनः आज दोहराओ।

भारत देश 'यज्ञे' आज फिर से सरताज बना।

धर्म छोड़ दिया मानव ने अधर्म के बीच बना।।

—महेश आर्य, राम पन्हेडा सुर्द, जिला फरीदाबाद।

## प्राचीन महाशिवरात्रि : आज का बोधोत्सव

(श्रीमती प्रभात श्रीमा पण्डित)

आर्यसमाज प्रतिबंध 'महाशिवरात्रि व्रत' के पर्व को 'ऋषि बोधोत्सव' के रूप में मनाता है। मूलशकर से बुद्ध चैतन्य व अस्ततः बुद्ध चैतन्य से ऋषि दयानन्द सरस्वती बननेवाले युगान्तरकारी महात्मान के निर्माण की कहानी 'महाशिवरात्रि' के प्रसंग से घटी एक साधारण सी घटना के साथ इस तरह जुड़ गई कि यह पर्व आर्य-जनों के लिए एक ऐतिहासिक प्रेरणा का विषय बन गया। घटना क्या थी? मूलशुक्र परिवारों में प्रचलित पौराणिक प्रथा अनुसार 'महाशिवरात्रि व्रत' के अनुष्ठान में उपवास रखकर जलक मूलशकर 'आगरथ' कर रहा था। घर के छोटे-बड़े अन्य सभी सदस्य अवश होकर नींद की गोद में समा चुके थे, लेकिन गहरी निष्ठा का धनी मूलशकर अकेला बड़े यत्न से नींद पर कानू पाकर सजग बंठा था। सभी अचानक जो कुछ घटित हुआ उससे मूलशकर ऐसा चींका कि उसकी नींद न केवल उस रात के लिए बल्कि सदा के लिए उड़ गई। वह आदित्य ब्रह्मचारी महायोगी ऋषि दयानन्द उस रात के बाद ऐसा जागा कि सदियों से सोये अपने पूरे देश व समाज को जगाकर रख दिया। सच तो यह है कि उसने सम्पूर्ण मानवजाति और मानवता को जगा दिया। न स्वयं सोया न जन को सोने दिया। मूलशकर ने देवा कि सिवालिपुत्र व चढाए गए भोगों—धर्मोत् कल व मिथ्यात्म को एक ढूँढे ने लाकर अड़ा कर दिया और 'विष्ठा से अपवित्र भी। लेकिन 'महाशिवरात्रि' के रूप में पूजित वह 'शिव' मीन रहे, पत्थर के जो थे। 'शिव' की मीन अष्टात्मवी बहु भारत के भाग्यकाश में एक अत्यन्त मुश्किल प्रमात की जननी सिद्ध हुई। एक अभूतपूर्व योग्य है कि इस वर्ष 'मूलशकर' और 'दयानन्द' दोनों का जन्मपर्व साथ-साथ पड़ रहा है।

इस निमित्त से 'महाशिवरात्रि' के अनुष्ठान का वास्तविक स्वरूप बता देना बहुत उपयुक्त होगा। पौराणिक धार्मिकों में महाशिवरात्रि की कथा से पहिले 'महाशिवरात्रि' सत का कहीं उल्लेख नहीं। वैदिक ऋषियों में 'शिव' का उल्लेख आया है और वह प्रायः 'शम' के साथ आया है। प्रतिष्ठित सन्ध्या में मन्त्र-पाठ किया जाता है।

ओ३म् नमः शम्भवाय च मयोगिनाय च ।  
नमः शक्राया च मयस्कराया च  
नमः शिवाय च शिवतराया च ।'

इस मंत्र के साथ साति प्रकल्प है कि 'शिवसकल' मन्मो को (तन्मे मनः शिवबन्धकल्पयन्तु) निष्कारक यहि पदं तो महाशिवरात्रि का स्वरूप समझना कुछ नो कठिन नहीं। पहिले उद्धृत मंत्र में 'कल्याण को सम्भाव्य (Possible) बनानेवालो 'ज्ञानशक्ति' के स्वरूप में प्रभु को याद किया गया है और किसी भी कल्याणकारी कार्य को सिद्ध करने के लिये सुविधाकारक उपकरणों की सम्भावना को प्रमाण किया गया है। महाभारत कथा का प्रसिद्ध इन्धोनिपय शिल्पी 'मय' था। किसी भी कार्यसिद्धि के लिए जो शिल्पी और यन्त्र-निर्माण कला है वही 'मयस्कन्ध' है। कल्याणकारी कार्यों के सम्पूर्ण होने का जो परिणाम है वही 'शिव' है। देश का सर्वोत्प्रसिद्ध शिव तीर्थ 'केदारनाथ' है। पहले सूर्यवंशी राजा समर और बाद में महाराजा भीमरथ ने देश को लुटे-बाढ़ी की व्यथना को छुट्ट करने के लिए हिमालय की अनेक छोटी-बड़ी धाराओं को दिशा देकर नगा का निर्माण किया। नगा का नाम 'भागीरथी' हसीलिये पड़ा। 'केदार' संस्कृत भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है कृषि-शैल। 'केदार-नाथ' के मन्दिर में जो 'शिवलिंग' है वास्तव में उसकी रचना दीपक में जलती हुई एक लो के जैसी है।

गीता में योगियों के हृदय में जलने वाली मक्ति व सफल 'दीप-शिला' का बर्णन करते हुए योगिराज श्री कृष्ण लिखते हैं—  
'यथा दीपो निवर्तमानो नंगे तो सोमना स्तुत'

'हृदा के भोक्तों से कम्पित न होनेवाली लो के समान वह सकल्प ज्योति होती है। शिवलिंग वास्तव में उन्नी पत्थर जैसी कठोर सकल्प शक्ति का प्रतीक है। भीमरथ के हृदय में यह शब्द-सकल्प यदि न होता तो कठोर तप करने की महाशक्ति का अपना स्वरूप कभी पुरा न कर पाते। समाज के कल्याण के लिए हर छोटा संकल्प एक

'शिवरात्रि' के मगन है, और प्रत्येक महाशिवराट संकल्प, जैसा कि भीमरथ ने लिया था महाशिवरात्रि पर्व है। अब जो चमत्कारिक सत्य 'रात्रि' शब्द का प्रयोग करने के पीछे है उसे समझ ने तो और भी श्रानन्द होगा। कोई भी सकल्प पूर्ण होने से अनेक मन्त्रों को बोर कट्यों और नाना प्रकार की कठिन समस्याओं को अंशुने के दौर से गुजरना पड़ता है और साथक द्वारा उस समस्याओं को बंध्यपूर्वक अंशुने को शांति पर ही निर्भर करता है कि कोई यज्ञ सफल होगा या नहीं यह कष्ट का सारा काल साथक इसी आशा में बिताता है कि एक दिन आएगा जब साधना सफल होगी और सुकृत्यामिनी सुवह के दर्शन होंगे। साधना का यह सारा काल एक लम्बी रात है लेकिन क्योंकि यह कष्ट किसी भावी लोक कल्याण को भावना से स्वेच्छा से उठाया जाता है। अतः हम इसे 'महाशिवरात्रि' नाम से याद करते हैं। वास्तव में सूर्यवंशी राजाओं ने 'पाग' को मोक्षोपयोगी बनाने के लिए तप किया उसकी ही याद में यह पर्व मनाया जाने लगा। इस पर्व की प्राचीन लोक जीवन में बड़ी प्रसिद्धा है जो भारतीयों के जीवन में आज १५ अगस्त तथा २६ जनवरी की है।

### महर्षि दयानन्द जी महाराज की अनुपम देन

पहलोदेन—महात्म्यागंधी, राजा राममाहनाराय आदि ने हिन्दू-मुसलमान-सिक्ख-ईसाई सब धर्मों के बराबर होने का प्रचार किया, बल्कि मुसलमान राज्य के समय जब एक विद्वान् को ऐसा प्रचार किया जाने पर मृत्युदण्ड भी दिया गया, जब तब मुसलमानों का राज्य रहा तब तक कोई हिन्दू अपने धर्म को इस्लाम के बराबर बनाने की हिम्मत नहीं कर सकता था।

केवल महर्षि दयानन्द ने ही यह घोषणा की कि केवल वैदिक-धर्म ही सत्य धर्म है और शेष सब असत्य कपोलकल्पित और झोत हैं—यह महर्षि की सबसे बड़ी पहलीदेन थी। महर्षि की इस घोषणा को सुनते ही हिन्दुओं में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई क्योंकि वह स्वाभिमानों थे उनके फूँके हुए सिर स्वाभिमान से ऊँचे हो गए।

दूसरी देन—सन् १८५० ई० की क्रांति के बाद महर्षि दयानन्द ने ही यह घोषणा की की क्याय और दयापूर्वक पसपतरहित विदेशी राज्य ऐसा नहीं हो नकना जैसा स्वदेशी राज्य होता है। महर्षि दयानन्द ने कायस्थ के स्वराज्य आन्दोलन से पहिले ही स्वराज्य की घोषणा कर दी थी और—

तीसरी देन—भारतीयों ने एका उत्पन्न की इसके लिए वेद को धर्म-पुस्तक के रूप में रखा। हिन्दुओं में अनेक मतमतान्तर थे। वैदिक-धर्मियों में भी मस्कार पद्धतिया अलग-अलग थी महर्षि ने संस्कार-विधि और पञ्चमहायज्ञविधि शिवलकर सब हिन्दुओं के संस्कार और उत्पत्तना की विधि एक कर दी और साथ ही अपना अमररक्षण सत्यार्थप्रकाश लिखकर सब भ्रान्तिया दूर कर दी।

चौथी देन सुद्धि-संस्कार—यह राष्ट्रीय शक्ति और सजग के राज्यों के बढानेवाली देन है। जो हिन्दू-मुसलमान और अण्डे के समय में मुसलमान ईसाई बन गए थे। उनको वापिस लाने के लिए सुद्धि-आन्दोलन चला। महात्मा गांधी का लड़का हीरासाल जब अन्दुल्ला बन गया था। महारथा गांधी इस कठने घट की चुपके से भी गए। माता कस्तूरबा रीती रही उनके आसू पृच्छेना भारत में कोई न था तब आर्यसमाज ने यह कार्य किया और अन्दुल्ला फिर हीरासाल बनाकर माता कस्तूरबा की गोदी में सा बिठाया।

पांचवीं देन—स्त्री जाति की कुरुष कहानी सुनी, साजपत सब बाई देनानन्द ने स्त्री जाति को रेंर की जूती समझा जाता था, सिखा से बचित रखा जाता, वेद भी पढ़ने का अधिकार न था। स्त्री-शिक्षा, विधवा विवाह को उचित बनाकर स्त्री जाति को सिर का मुकुट उवाया और घोषणा की कि जिस घर में नारी का सम्मान होता है वहां देवता जन्म लेते हैं।

आशा कि हम महर्षि दयानन्द की देन को पूर्ण समझ सकें।

—श्रीमत्प्रकाश वानप्रस्थी, पुस्तक बठिण्डा।



## महर्षि दयानन्दाभिमत 'वेद' शब्द की व्याख्या

(प्राचायं डॉ० सुरेश्रदेव स्नातक, शास्त्री, शिरोमणि, एम० ए० (संस्कृत तथा हिन्दी) पी-एच० डी०, अवकाश प्राप्त प्रोफेसर तथा अध्यक्ष, भोगाव (मैनपुरी))

'वेद' शब्द का निर्माण 'विद्' शब्द धातु से घञ् (अ) प्रत्यय करने से होता है। अतएव 'वेद' शब्द का साक्षात् सा ध्वं हुआ 'जान' किन्तु यह ज्ञान मानवीय अथवा मानव से उत्पन्न नहीं है। यह तो पूर्णरूपेण ईश्वरीय है। ईश्वर द्वारा मानवमात्र के लिये प्रदत्त यह ज्ञान है।

इस ज्ञानार्थक 'विद्' धातु के इतिरिक्त अन्य धर्मों के रचनेवाले तीन अन्य धातुओं से भी 'वेद' शब्द का निर्माण किया जाना संभव है। ये धातु हैं—(१) 'विद्' सत्तायाम् (२) विद् लुक् साधे श्रौ (३) विद् विचारणे। कहने का अर्थिप्राय यह है कि वेदों के प्रसिद्ध भाष्यकार महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 'होना' 'ज्ञान' तथा विचारणाधिक उपर्युक्त इन तीन धातुओं से भी 'वेद' शब्द का निष्पन्न होना स्वीकार किया है। उन्होंने स्वलिखित ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका के वेदोत्पत्ति विषयक विवरण में लिखा भी है:—

'विद् (ज्ञाने), विद् (सत्तायाम्), विद् लुक् (साधे), विद् (विचारणे) एतेभ्यो 'हलन्व' इति सूत्रेण करणाधिकरणकारकयोश्च प्रत्यये कृते वेदशब्दः साध्यते'।

उन्होंने उपर्युक्त चारों धातुओं के आधार पर 'वेद' शब्द की व्युत्पत्ति करते हुए उसी प्रकरण में लिखा भी है:—

'विदन्ति ज्ञानन्ति, विदन्ते भवन्ति, विदन्ति चिन्तन्ते सभन्ते, विदन्ते विचारयन्ति सर्वमनुष्ठाः सर्वाः सत्यविद्या येषु वा तथा विद्वान्भवन् भवन्ति ते वेदाः।'

अर्थात् एक 'विद्' धातु ज्ञानार्थक है, दूसरा 'विद्' सत्तायक है, तीसरे 'विद् लुक्' का भव साध प्रथमा प्राप्त करना तथा चतुर्थ 'विद्' का अर्थ विचार करना है। इन चारों धातुओं से करण और अधिकरण कारक में 'घञ्' (अ) प्रत्यय के करने से 'वेद' शब्द सिद्ध होता है।

जिन वेदों का अध्ययन करने से यथार्थ विद्या का ज्ञान प्राप्त होता है, जिनका अध्ययन करने से मानव विद्वान् हुआ करते हैं, जिनके अध्ययन से सब प्रकार के सुखों की प्राप्ति हुआ करते हैं तथा जिनके अध्ययन से शौक-शीक सत्या-सत्य का विचार मनुष्यों को हुआ करता है। इस प्रकार के प्रयोग का नाम हो 'वेद' है।

वेदों को 'धृति' नाम से भी कहा जाया करता है। इस सम्बन्ध में ऋषिबन्धन ने उपर्युक्त 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' के उसी प्रकरण में लिखा है—

'श्रु' श्रवणं इत्यस्मादादातेः करणकारके 'क्तिन्' प्रत्यये कृते, धृतिशब्दो व्युत्पद्यते।'

अर्थात् श्रवणार्थक (सुनना अर्थवाले) 'श्रु' धातु से करण कारक में 'क्तिन्' (ति) प्रत्यय के करने से 'धृति' शब्द सिद्ध होता है। कहने का अर्थिप्राय यह है कि मूढिके प्रारम्भ से लेकर आज तक सब सत्य विद्याओं का श्रवण करने की दृष्टि से 'वेदों' को 'धृति' नाम से भी कहा जाया करता है। अथवा मूढिके प्रारम्भ से मानव शुद्धमुख से श्रवण करते बने आ रहे हैं, अतएव वेदों को 'धृति' नाम से भी कहा जाता रहा है। श्रवण किये जाने के कारण ही वेदों को 'धृति' शब्द द्वारा भी कहा जाने लगा था।

यजुर्वेद भाष्यकार सायणाचार्य ने भी 'वेद' शब्द की व्याख्या इस प्रकार की है:—

'इष्टप्राप्त्यनिष्टपरिहारयोरौष्णिकमुपायं यो ग्रंथो वेदयति स वेदः।'  
(तैत्तिरीय-संहिता भाष्य की भूमिका में)

अर्थात्—जो ग्रन्थ इष्टप्राप्ति तथा अनिष्ट-निवारण का औष्णिक उपाय बतलाता है उसी का नाम 'वेद' है।

इन वेदों की सद्यथा चार हैं—(१) ऋग्वेद (२) यजुर्वेद (३) सामवेद (४) अथर्ववेद। मूढिके प्रारम्भ में अग्नि, वायु, आदित्य और अग्निरा नामक ऋषियों को ही इस ईश्वरीय ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। ऋग्वेद में 'ज्ञान' का, यजुर्वेद में 'कर्म' का और सामवेद में 'उपासना' का

विषय वर्णित है। अथर्ववेद में ज्ञान, कर्म तथा उपासना—इन तीन प्रकार के विषयों का प्रतिपादन किये जाने के कारण चारों वेदों को वेदत्रयी शब्द द्वारा भी कहा जाया करता है। 'वेदत्रयी' का अर्थ ही है 'ज्ञानत्रयी' अर्थात् तीन प्रकार का ज्ञान। परम्परा से यह ज्ञान उत्तरकाशीन ऋषियों को भी प्राप्त होता रहा।

ईश्वर तो अनन्तज्ञानसंपन्न है। इस ईश्वरीय अनन्तज्ञान में से परमात्मा उनमें ही ज्ञान को मानव-मात्र के लिए वेदों के माध्यम से प्रदान कर दिया करता है कि जितना ज्ञान मानव मात्र के लिए आवश्यक हुआ करता है।

ईश्वरीय ज्ञान होने के कारण ही वेदों को अथवा इस ईश्वरीय ज्ञान को प्राप्त प्रमाण अथवा शब्द प्रमाण माना जाया करता है। इस भाँति वेदों में प्रतिपादित ज्ञान को स्वतःप्रमाण स्वीकार किया गया है। 'प्रत्यक्ष' तथा 'अनुमान' प्रमाणों के आधार पर जिस ज्ञान को प्राप्त किया जाना संभव नहीं है इस प्रकार का ज्ञान हम मानवों को वेदों के द्वारा ही प्राप्त हुआ करता है। इसी दृष्टि से कहा भी गया है—

'प्रत्यक्षोपानुमित्या वा यस्तुपायो न बुध्यते।  
एव विदन्ति वेदेन, तस्माद् वेदस्य वेदात्।'

चारों वेदों के रूप में प्रदत्त यह ज्ञान अनन्तर अन्तर नित्य है। मानवों द्वारा लिखा गया ज्ञान तो विनाशो तथा घटाने बढ़ाने योग्य हुआ करता है। किन्तु यह ईश्वरीय-ज्ञान (वेद) सृष्टिके प्रारम्भ से ही एक रूप में ही चलता चला आ रहा है। इसको तो आज तक न घटाया, बढ़ाया जा सका और न किसी प्रकार का परिवर्तन ही किया जा सका है। भविष्य में भी इस प्रकार की कोई सम्भावना नहीं की जा सकती है।

आदि कृषि वाल्मीकि द्वारा रचित 'रामायण' में तो अनेक श्लोक तथा सांसारिक विषयों से सम्बन्धित बातों—विषयों को बढ़ाया जा चुका है। इसी भाँति महाभारत में भी बहुत कुछ बढ़ाया जा चुका है किन्तु वेदों में तो आज तक एक मन्त्र अथवा एक धर्म भी नहीं बढ़ाया जा सका है। इसका प्रमुख कारण वेदों का ईश्वरीय होना ही है।

भारतीय सस्कृति के मूल आधार चार प्रकार के पुरुषार्थ ही हैं जिनमें सर्वप्रथम स्थान 'धर्म' का है। इस 'धर्म' का मूलभूत 'ध्यायत' वेद ही है। मूलरूप में विद्यमान 'धर्म' के वास्तविक तत्त्वों को जानने तथा समझने का एकमात्र साधन वेद ही है जैसा कि मनुस्मृतिकार मनु ने कहा भी है—

'वेदोऽसौ धर्ममूलम्'। मनुस्मृति-२/६॥

मानवीय कृत्यम् मात्र के ज्ञान के निमित्त मनु द्वारा वेदों को ही स्वीकार किया गया है—

'यः कश्चिद् कस्मैचिद् धर्मो मनुना परिकीर्तितः।

स सर्वोऽपि हितो वेदः, सर्वज्ञानमयो हि साः।' (मनु २/३॥)

सम्पूर्ण प्राचीन वैदिक साहित्य (जैसे ब्राह्मण ग्रन्थ, भारण्यक ग्रन्थ, सूत्र ग्रन्थ तथा उपनिषद् आदि ग्रन्थ) की रचना भी वेदों के आधार पर की गई है। इसी कारण उन सभी ग्रंथों की प्राणायुक्तता भी स्वयं सिद्ध है।

ज्ञानपूर्वक कार्यों को करते हुए ईश्वरोपासना का किया जाना ही मानव जीवन का प्रधानतम सत्य है। अतएव 'वेद' वह ज्ञान है कि जो मानव मात्र को मानव जीवन के प्रमुख सत्य की ओर उन्मुख करता है।

चारों पुरुषार्थ (धर्म, धर्म, काम तथा मोक्ष) की पूर्ति के लिये कौन-कौन से कार्यों पर प्रयोग हैं तथा कौन-कौन से नहीं? इसका विवरण भी हमें वेदों द्वारा अथवा वेदों के आधार पर लिखे गए ग्रंथों द्वारा ही उपलब्ध हुआ करता है।

## स्वाधीनता के मंत्रद्रष्टा—स्वामी दयानन्द

(डॉ० सुरेशचन्द्र वेदालंकार प्रायसमात्र—मोरलपुर)

जब हम महर्षि के जीवन पर दृष्टिपात करते हैं तो हमें लगता है कि 'वह लाखों वनचरों में सिंह के समान पराक्रमी मर्द होकर जन्मा, बंसीरती धास-फूस और मच्छरों की तरह फीले हुए, मनुष्य जन्म की मूर्खता को चरमसीमा के प्रमाणावस्था मरतमान्तरों को जिसने मुझसे देखी निस्स्वस्वसिनी उजाला की तरह विडम्ब कर दिया, मेरे हुए हिन्दुधर्म को अपने जादू के चमत्कार में जीवित ही नहीं किया किन्तु उसे नोच-नोचकर खानेवाले गीदड़ों को एक ही हुकार से भगा दिया, कौड़े-मकोड़े और मच्छरों की तरह रोगकर पलनेवाले हिन्दू वनचों के लिए जिसने पुण्यधाम मुकुन्दों और अनायासलों की रचना की, निर्दयी हिन्दुधर्मों की आशों के सामने उकरातो, यदंन कटातो गायों के आसू जिसने धर्मि के नेत्रों से देखे, अबला, विचबाधों के कष्टों को दूर करने के लिए जिसने अमर छाया की, भ्रष्टों के अवसाध बाजों पर जिसने सजीवनी भरहम लगाया, जो अलंङ्ग ब्रह्मचारी या, जिसके अङ्गाङ्ग पांडित्य ने न दिया और कातो को पुरानी देतों की हिला दिया, सारी पृथ्वी पर जिसको आवाज मूज गई, बुधदेवता की तरह जिसने वेदों का उदार किया, जो सगतातर ६५ वर्ष तक ऊंची धावान में पुकाता रहा 'ऊठो, जागो, निर्भय रहो, खड़े होओ और सबके सिपाही की तरह रणक्षेत्र में जिनने अपने प्राण सबा दिए।' वह महर्षि दयानन्द वा।

इस सबसे शक्तिरिक्त महर्षि दयानन्द को मैं स्वतन्त्रता का मन्त्र-द्रष्टा, स्वदेश, स्वभाषा तथा स्वधर्म का उपासक मानता हूँ। पट्टामि सोता रामेया ने एक स्वान पर स्वामी दयानन्द की चर्चा करते हुए कहा था कि 'यदि महात्मा गांधी राष्ट्रपिता हैं तो हमें महर्षि दयानन्द को राष्ट्रपितामह कहना होगा।'

महर्षि दयानन्द की देशभक्ति, राष्ट्रभक्ति की भावना इतनी पवित्र, उच्छ्रेय और सर्वव्यापी थी कि उनके सारे जीवन में जो जीवन के समस्त कार्यों में मनुष्य के देह में रहित की तरह समाई हुई थी। उन्होंने सत्याग्रहकाय के म्यारहब समुत्सास में लिखा है कि 'यह आर्यावंत देव ऐसा है, जिसके सख्त भूगोल में दस्यु कोई देव नहीं। इसीलिए इस भूमि का नाम स्वयंभूमि है क्योंकि यही सुभगर्षि रत्नों को उत्पन्न करती है। ... जितने भूगोल में देह है वही देह को प्रयास करते और आशा रखते हैं कि पारसमणि पत्थर सुना जाता है, वह बात तो झूठी है, परन्तु आर्यावंत देव हो सच्चा पारसमणि है जिसको दरिद्र विदेशों छूने के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं।'

दिनकर ने प्रायानसमाजियों और ब्रह्मसमाजियों और महर्षि दयानन्द में अन्तर बताते हुए संस्कृति के चार अन्ध्याय पुस्तक में लिखा है कि दयानन्द एक विशाल अद्विग शिलाखंड के समान थे जिन्होंने ईशाग्रत को और पाश्चात्य संस्कृति की वेवाचनी धारा के सामने खड़े होकर उसे लौटा दिया और वेदों की ओर लौटो का नारा लगाया तथा दिनकर ब्रह्मसमाजियों और प्रायानसमाजियों को कमजोर समझा है और उनकी देशभक्ति राष्ट्रभक्ति में भी बह तेज नहीं बताया है जो महर्षि दयानन्द में है। आप सत्याग्रहकाय म्यारहब समुत्सास में देखिए वे कहते हैं 'ब्रह्मसमाजियों और प्रायानसमाजियों में स्वदेशभक्ति बहुत स्थान है। ... मला यह आर्यावंत देह में उत्पन्न हुए हैं और इसी देह का अन्न जस खाया-पीया, अब भी खाते-पीते हैं तब अपना माता-पिता व पितामहर्षि के मायों को छोड़ दूसरे विदेशी मयों पर धार्मिक शुक जाना और एतद्देशात्य संस्कृत विद्या से रहित अपने को विद्वान् प्रकाशित करना, इंगलिस भाषा पढ़के पण्डिता-निधारी होकर सटलिस एक मल चताने में प्रवृत्त होना, मनुष्यों का स्थिर और बुद्धिकारक काम क्यों हो सकता है।'

इन शब्दों में उनके हृदय में जितनी वेदना और व्यथा मिलती है। राष्ट्रभक्ति, स्वभाषा, स्वदेश और स्वराज्य के प्रति दी गई उनकी प्रेरणा के कारण ही पट्टामि सोता रामेया ने उन्हें पितामह कहा है।

महर्षि दयानन्द ने बड़ी वेदना, पीड़ा और व्यथा के साथ लिखा

प्रायसमात्र—मोरलपुर) है 'विदेशियों के आर्यों में राज्य होने का कारण थापस की फूट, मतभेद, ब्रह्मचय का सेवन न करना, विद्या न पढ़ना, पढ़ाना, बाल्या-वस्था में अस्वयम्बर विवाह, विधवाशक्ति और पिस्था भाषण आदि कुलक्षण वेदविद्या का अप्रचार, अश्वविश्वस आदि कुमर्म हैं।' वे कहते हैं कि 'जब थापस में भाई-भाई लडते हैं, तभी तोसरा आकर पच वनकर वेट जाता है।' उन्होंने फूट और पारस्परिक नेमनस्य से छूटकर स्वराज्य प्राप्त करने का निर्देश किया है। वे लिखते हैं— 'थापस की फूट से कौरव, पांडव और यादवों का नाश होगया, सो तो होगया, परन्तु अब तक भी वही रोग पीछे लगा है। न जाने यह मयंकर राक्षस कभी छूटगा या आयों को सब सुबो से बुझाकर दुःख-सागर में डबा मांरो। उसी दुष्ट गोन हत्यारे स्वदेश विनाशक, नीच के दुष्टमार्ग में आर्य लोग अब तक भी चलकर दुःख उठा रहे हैं। परमात्मा कृपा करे कि यह राजरोग हममें से नष्ट हो जाय।'

इस प्रसंग में अपनी भावना प्रकट करते हुए ऋषि ने लिखा है 'जब तक एक मत, एक हानि-नाम, एक कुल-दुःख परस्पर न मानें, तब तक उन्नति होना बहुत कठिन है।' महर्षि दयानन्द ने कुलभङ्ग-कथ से बचाने और दूरदृष्टि की स्थापना के लिए दशम समुत्सास के अध्याय और आचार धनाचार के प्रकरण में लिखा है 'क्या बिना देश-देशान्तर व द्वीप-द्वीपान्तर में राज्य व्यापार किए स्वदेश की उन्नति कभी हो सकती है? जब स्वदेश ही स्वदेशी लोग व्यवहार करते और परदेशी स्वदेश में व्यापार और राज्य करते तो त्रिना दुःख दारिद्र्य के दूसरा कुल भी नहीं हो सकता।' स्वामी दयानन्द उसी प्रकरण में प्रागे फिर एकता और अनुसुल को जागृति के लिए कहते हैं 'इसी मूढ़ना से इन लोगों ने चीका लगाते-लगाते विरोध करते-करते सब स्वातन्त्र्य, धानदंड, धन व राज्य, विद्या और पुत्रधर्म पर चीका लगाकर हाथ पर हाथ धरे अँडे हैं।' व्यापार और भ्रमण द्वारा देश को समृद्ध और उन्नत करने की प्रेरणा कितनी जोरदार भाषा में व्यक्त की गई है।

दादाभाई नौरोजी ने १९०६ ई० में होमरूल आडोलन के समय स्वराज्य शब्द का प्रयोग किया, तिसक सहाराज ने १९१६ ई० में 'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार होने की घोषणा की, १९२८ ई० में कादिस ने नाहरी में पूर्ण स्वराज्य की घोषणा की परन्तु स्वामी दयानन्द ने आधो सदी पूर्व ही घोषणा की थी 'कोई कितना हो करे, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अपना मतमतान्तर के भ्राह्मरहित अपने और पराये का पक्षपातधुष्य, प्रजा पर पिता-माता के समान कृपा, न्याय एक दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।

स्वामी दयानन्द की विचारधारा का आधार वेद वा। उन्होंने वेद को ऋग्वेदा, स्मृति-ग्रन्थों के बल्लोको और ऋषि-मुनियों के आच वनचनों से राष्ट्रवाद की शिक्षा और दीक्षा की थी। उनके कुल विरामनन्द ने अपनी शिक्षा द्वारा उन्हें बता दिया था कि 'स्वतन्त्रता स्वाधीनता, स्वराज्य का तात्पर्य है कि हमारे ऊपर किसी भी अन्य का अन्धन नहीं होना चाहिए। यदि अन्धन किसी का हो तो वह 'अन्ध' का अन्धन, अपनी आत्मा का अन्धन होना चाहिए। प्रथमवेद का १०।७।३१ का मन्त्र है—

यवः प्रथम सबभूय, सह तत्स्वराज्यमियाय।

यमान्मन्यत्परमस्ति भूतम् ॥

अर्थात् जब कि क्रमयोभी प्रजायम सबसे प्रथम सगठित होता है, तब वह स्वराज्य प्राप्त करता है। जिससे अंधे दूसरा कोई राज्य नहीं है। ऋषि ने इस मन्त्र को यही व्याख्या की है। इससे उनके स्वराज्य की रूपरेखा देखिए। हम अधिक स्पान न होने से इस विषय को समान करने से पहले यह बात देना चाहते हैं कि 'यादवों समुत्सास ने सत्याग्रहकाय में ऋषि ने लिखा है 'पृष्टि से लेकर ... पांच सहस्र वर्षों से पूर्व समय पर्यन्त आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती

(शेष पृष्ठ १० पर)

## कहीं आप बैल का मांस तो नहीं खा रहे ?

मेनका गांधी, पर्यावरण मन्त्री—भारत सरकार

क्या आप भोजन के अन्त में पान, मिठाई या लुसबुदवार सुपारी खाना परम्व करते हैं ? और अगर इन चीजों पर बक लगा हो सब तो क्या कहेंगे ? लुसबुदवार सुपारी पर भी बक चढ़ाया जाता है। पर मैं त्यौहारों पर बनने वाली मिठाई पर बक होता ही है।

चांदी का बक बहुत महंगा नहीं होता। कीमत उसके वजन पर निर्भर करती है। आमतौर पर १६० बक १०० से २०० से मिल जाते हैं। यानी करीब एक एक रुपये में एक बक लगाया जाने लगा है, कुछ आयुर्वेदिक दवाइयों को भी बक में लपेटकर खाने को सलाह दी जाती है।

आपका क्या ख्याल है—चांदी बक कैसे बनता है ? कलेजा घास सोजिये।

बैल की घ्रात को तहों को फिताव-सो बनाकर उसमें चांदी की पतली पत्ती रखकर, बक बनाया जाता है। दूसरे शब्दों में—बैल को बूचखाने में मारने के बाद उसको आत निकालकर फौरन बक बनाने वाले को बैल दी जाती है। पुरानी आंतों से बनी चमड़े काय नहीं, जाती, यहां तक कि एक दिन पुरानी घ्रात भी नहीं, क्योंकि कुछ घण्टे बाद लचक जाती रहती है।

बक बनानेवाला आंतों से रक्त और मल साफ करके उसके टुकड़े-टुकड़े कर देता है और एक के ऊपर एक टुकड़ा रखकर तहों को फिताव सी बना लेता है। अपने पर या 'काखलाने' में जाकर इस फिताव के एक-एक पन्ने में चांदी (या सोने) के टुकड़े रखकर हथोड़े से पीटाता है। ऐसा करने से चांदी (या सोने) की पत्ती पतली होति-होति बक का रूप धारण कर लेती है।

बैल को घ्रात इतनी मजबूत होती है कि लगातार हथोड़े मारने पर भी उसका कुछ नहीं बिगड़ता और फिर, इसमें रखी चांदी की पत्ती इच्च-उच्च रहती होती। हथोड़े मारने से बैल को आत का कुछ अंश बक में मिल जाता है।

इसके बाद बक बनाये बक हलबाइयों और मोठो सुपारी बनाने वालों को भोजन में बेच देता है। छोटे पैमाने पर बक तैयार करने वाले लोग मन्दिरों को बक बेचते हैं, जहां बक को प्रसाद पत्र चढ़ाया जाता है।

यह बक गन्धी चीज तो है ही, मांसाहार भी है। मांस खाने वाले भी आंत नहीं खाते। और तो और, यह बक, सुपारी और मिठाई को भी मांसाहार बना देता है। कुछ साल पहले इण्डियन एयर लाइंस की पता चला कि बक साकाहार नहीं है, तभी से भारतीय विमानों में परोसे जानेवाली मिठाई पर बक नहीं चढ़ाया जाता है।

पान के शौकीन शाकाहारी लोग अब तक बैल की कई भीष आंतें खा चुके हैं। उनके लिए एक और खबर—

जो बूना प्राप खाते हैं, वह भी शाकाहार नहीं है।

कुछ बूना तो असली बूना होता है, जो अपने आप में हानिकारक है। लेकिन पानवाले श्याउतार जो बूना इस्तेमाल करते हैं वह सीपियों से बनाता है। 'सीपों' क्या है ? समुद्री जीवों के खरीरुका एक हिस्सा है। वे जीव हमारे समुद्रों और तटों को साफ रखते हैं, इनमिये बहुत उपयोगी हैं।

इन छोटे-छोटे जीवों को पानी से निकालकर मार दिया जाता है। फिर सीपियों निकालकर भून लेते हैं। सीपियों भून जाने के बाद वह 'इयल' बन जाती है। इसे पानी में मिथीकर नरस कर लेते हैं। इसके परचाइ इसे गुलाकर, कूटकर, सफेद पाउडर बना लेते हैं। इसमें गोंद जैसा रसायन मिला लेते हैं। बस, बूना तैयार, जो पान में इस्तेमाल होता है।

आप चुना मूंह में डालते हैं, तो कई मते हुए जीवों को खा जाते हैं। यह कैसे हो है जैसे किसी बकरे या सूअर को मारकर खाना। जीवन से प्राणियों में है। पीर भी सभी को एक सी होती है।

प्रायः जब प्राप पान खाएँ तो बूना नहीं खायें। न ही मिठाई या मोठी सुपारी पर लगा बक बाहर जानवर की घ्रात खाएँ। अगर कोई

हलबाई या मोठी सुपारी बनानेवाला आपका परिचित हो, तो उससे कहिये कि बक इस्तेमाल न करे। कभी-कभी लुसबुदवार बक से सभी कुछ छिप जाता है, इसलिए सुपारी बनाने वाली कम्पनियों कभी-कभी बकड़ या पुरानी सुपारी से लुसबुदवार सुपारी बनाती हैं जो शरीर के लिये बहुत खतरनाक है। अगर वे बक न चढ़ाएँ तो यानी पता बल सकता है कि सुपारी खाना और खाने काकड़ है या नहीं।

—इलस्ट्रेटिड बीकली आफ इंडिया से सामार

## विश्वशान्ति यज्ञ

प्रसिद्ध आर्य समाजी साधुगुरु प्रिं. होग्यारसिंह जी की अध्यक्षता में गांधी वामनोकी (जिला—रोहतक) में विश्वशान्ति व भाईचारे के विकास व वाय्वात्मिक शान्ति की पुनोत्त कामना को लेकर आर्य समाज छोटीराम पोलीटैकनिक धंधरा की ओर से लोहडो व मकरसंक्रान्ति के पवित्र अवसर पर यज्ञ का आयोजन किया। जिसमें विश्वशान्ति की कामना से आहुतियां आधी गईं। यज्ञ में इसाके के गणमत्या व्यक्तित्व तथा आसपास के गाववाली बडी सख्या में आए हुए थे। यज्ञ समारिथ पर प्रिं. साहूव ने गांधी में यज्ञ-समिति का गठन किया जो गांधी के आर्य समाज के तत्वावधान में वैदिक रीति से समय-समय पर यज्ञ एवं धार्मिक गोष्ठियों व प्रशुनानों का आयोजन करती रहेंगी। सभा में प्रिं. साहूव का इसाके व आर्य समाज के कार्यों के लिए साधुवाद व सन्ध्यावाद दिया। उन्होंने सभा को सम्नोषित करते हुए यज्ञ का महत्व वैदिकधर्म आंध के परिवेश में विश्वशान्ति पर अपने विचार व्यक्त किए तदनन्तर सभा विसर्जित हुई।

—समवेरसिंह 'आर्य'

(मन्त्री) आर्य समाज छोटीराम पोलीटैकनिक धंधरा/कलाबला, दिल्ली-६१

## आर्यों! मुनहरा अवसर

जैसा कि आप सभी जानते हैं कि प्रायःकल जनगणना का कार्य पूरे भारतवर्ष में जोरों से चल रहा है। हरयाणा में यह कार्य ६ फरवरी से आरम्भ हो रहा है। सभी प्रायजनों, धार्यवीरों से निवेदन यह है कि आप इस अवसर का विशेष ध्यान करते हुए घर-घर जाकर इस बात का प्रचार करें कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी भाषा हिन्दी तथा संस्कृत आर्यभाषा ही लिखवाए। यह ठीक है कि हरयाणा एक हिन्दी बहुल राज्य है फिर भी इसमें काफी क्षेत्र ऐसा है जहां पर जागृति खाना आवश्यक है अतः इस अवसर पर प्रत्येक आर्यनोर अपने-अपने क्षेत्र में अधिक से अधिक प्रचार करें। इस कार्य से ही राष्ट्र एकता मजबूत होगी।

मनोहरलाख, सह संचालक  
धार्यवीर दल, हरयाणा।

वेदप्रकाश आर्य, प्राथीय मन्त्री  
धार्यवीर दल, हरयाणा।

(पृष्ठ ६ का शेष)

राज्य था। अन्त में इस प्रकरण में उन्होंने लिखा है—अब इनके सन्तानों का अन्तर्भाव होने से राज्यभ्रष्ट होकर विदेशियों के पदाक्रान्त हो रहे हैं' लिखा है। आठवें समुत्थान में लिखा है कि अन्तर्भाव होने से अन्तर्भाव के कारणों के अन्तर्भाव, प्रमाद, परस्पर के विरोध से अन्य देशों में राज्य करने की बात हो सका किन्तु धार्यवर्ष में आर्यों का अन्तर्भाव, स्वतन्त्र, स्वाधीन निर्भय राज्य इस समय नहीं है। इस प्रकार महर्षि दयानन्द ने राष्ट्रीयता को आगत करने के लिए और स्वतन्त्रता की प्रेरणा के लिए सार्वभौमिक सन्नवर्ती राज्य की चर्चा की है। हितवृध, मुसोलिनी, चीन, ब्रिटेन आदि को तरह उनका स्वयं शोषण, उत्पीडन और दमन नहीं। उन्होंने वेद, मनुस्मृति, सुकृतीति तथा बिदुरनीति के साथ उनका उल्लेख रखा है 'यस प्रजापतेः प्रजा अग्रम' अर्थात् हम सभी राष्ट्र के वाली परमेश्वर की प्रजायें और वह हमारा राजा है। प्रजापति की प्रजा और राजा का सम्बन्ध क्या होगा यह तो यजुर्वेद प्रश्नारह अष्टाध्याय के उन्नीसवें मन्त्र की उनही व्याख्या से समझ सकते हैं। वे परमात्मा से कहते हैं 'आपकी कृपा से हम 'स्वराज्य' उत्तम सुख को प्राप्त हों।'

इस प्रकार स्वधर्म, स्वभाषा और स्वदेश की भावना को आगत करनेवाले ऋषि के चरकों में अपनी श्रद्धालि धरित करते हैं।

साम-सुधा शतक

( ६ )

देव तुम मेरी टेक रख दो

धौं बचसो मां सनयतल्लनीन मेघां मे विष्णुमन्त्रसवास्तुम् ।  
सर्वं मे विन्दे निष्कण्डु देवाः स्मोनामापः पवनं पुनस्तु ॥

अथर्व० 1213 ॥

अनिमय है प्रभुवर मेरे,  
कर मेरा बचस् अविषेक ।  
बिभु प्रभु व्यापक कण-कण में  
कर दो मम भुविधा उदेक ।  
कर्मनिष्ठ हौं गुण-गुण मेरे,  
विषय विभ्रम का हौं अतिरेक ।  
ज्ञानी जन निज ज्ञान कर्म से,  
कर पवित्र रखें मम टेक ।

( १० )

धीर ही तो परं पद पाते हैं

ओं तद्विष्णोः परम पद सदा पश्यन्ति सुरयः ।

दिवोव चक्षुः राततम् ॥

श्रु० म० 1/सू० २२/मंत्र २०

रम्यमाण है जो अज जग में,  
विष्णु रूप में वह भगवान् ।  
चरम चरण है जो मुक्ति पद,  
है वह उसका परम महान् ।  
देख उसे पाते हैं वे ही,  
ज्ञानी जन हैं जो मुनि-धीर ।  
जैसे नेत्र विलोकन करता,  
विस्तृत रवि प्रकाश के तीर ।

( ११ )

यह धन किसका है !

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंच जगतां जगत् ।

तेन ह्यस्तेन भुञ्जीया मां गृधः कस्यचित्स्विद् धनम् ॥

यजु० अ० ४०

जह जंगम जो मो जगती मैं,  
दोख पड़े यह विभव अपार ।  
विभुवर ने विरथा है इसको,  
कण-कण में करता संचार ।  
दिया उसी का तुम भोगो रे,  
लाभ का कर दो तुम त्याग ।  
किसका यह विभव विरथ का,  
है उसका सो सबका भाग ।

( १२ )

बही उपासनीय है !

ओं हिरण्यगर्भः सप्तवर्ताभः भूतस्य जातः पतिरेक वासीदु ।

स दाक्षार पुत्रिणीं क्षामुतेमां, कर्मसे देवाय हविषा विधेम ॥

यजुर्वेद प्रथमाय ३२

बही ज्योतिमय प्रथम पूर्व था,  
विश्व ज्योति का परम निधान ।  
जगती भर के जीव जगत् का,  
था वह पासक एक महात्मा ।  
कर सर्वेन धारा उसने ही,  
धन मू-धु लोको का मार ।  
उसी एक मुखमय जगस्रष्टा,  
को हम होते हैं बहिहार ।

—श्री० धर्मचन्द्र विद्यालकार,  
पलवल

गुरुकुल कार्यालय का शिलान्यास

जीश्व—श्री देवराज, विजयी, सिचाई एच जेल राज्यमन्त्री ने यहाँ से लगभग २५ कि० मी० दूर कन्या गुरुकुल, सादोपुर (बुलाना) में गुरुकुल कार्यालय का शिलान्यास किया ।

इस अवसर पर उन्होंने कहा कि गुरुकुल हमारी प्राचीन सभ्यता को कायम रखे हुए हैं और अनेकी स्तूतियों को अनेका यह पद्वति उत्तम है जहाँ आने वाली पीढ़ियों को वैदिक शिक्षा मिलेगी एव सामाजिक कुरीतियों को दूर करने में मदद मिलेगी । इस अवसर पर उन्होंने अपने ऐच्छिक कोष से २१ हजार रु० देने की घोषणा की ।

इस अवसर पर शिक्षा राज्यमन्त्री श्री सुरेश्वरसिंह बरबासा ने अध्यापक कक्ष का शिलान्यास किया और २१ हजार रुपये गुरुकुल को देने की घोषणा की । उन्होंने बताया कि हरयाणा सरकार लक्ष्मियों की शिक्षा के लिए तीन गुणा भौतिक श्राट देती है । उन्होंने सोपों से अपनी की कि वे कन्याओं को जबरन शिक्षित करे क्योंकि एक कन्या को पढ़ाने से दो परिवारों का सुचारु होता है ।

इस समारोह की अध्यक्षता श्री कुलवीरसिंह मलिक, पद्मपावन राज्यमन्त्री ने की । उन्होंने कुलपति सवन का शिलान्यास किया एवं गुरुकुल को ११ हजार रुपये देने की घोषणा की ।

दांतों की हर बीमारी का घरेलू इलाज

23 जड़ी बूटियों से निर्मित  
आयुर्वेदिक औषधि

मस्तुई की मूर्जन

मुह की दुर्गन्ध

ठंडा गर्म पानी लगना

दांतों का शायदर

अब तो पैकिया में उपलब्ध

मिर्मापण

महाशियां दी हट्टी (प्रा०) लि०

8/44, इण्डियन एजिवा, सीता नगर - नई दिल्ली-15 फोन 538905, 537987, 537281

दात का दर्द

हरयाणा के अधिकृत विक्रेता

१. मसज परमानन्द शाईकिलामन, बिभानी स्टैंड, रोहतक ।
२. मसज फूलचन्द सीताराम गांधीचौक, हिसार ।
३. मसज सन-थप-टून्डन सारा रोड, सोनीपत ।
४. मसज हरीश एन्सीज 499/17 मुसहारा रोड, पानीपत ।
५. मसज भगवानदास देवकीनन्दन सराफा बाजार, करनाल ।
६. मसजधनस्यामदास सीताराम बाजार, बिभानी ।
७. मसज कृपाराम गोयल रूही बाजार, सिरसा ।
८. मसज कुलवन्त पिकल स्टोस श्राप न० 115, माफिट न० 1, एन० आई० टी० फरीदाबाद ।
९. मसज सिलला एन्सीज सदर बाजार, मुहगांव ।

### बोध शिवरात्री पर्व

शे० स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती (भारिष्ठता वेद्यचार वि०)  
(कुण्डलिया छ्द्र)

ब्रह्मचारी प्रिय मूल ने, पितृ भ्राता को पाप ।  
सत शिवरात्रि का रखा, प्रति मन में हरपाय ॥  
अति मन में हरपाय, चला शिव मन्दिर ध्याय ।  
वित्वादि, भिष्ठान, भोग शिवजी को चढाया ॥  
बजा शंख षड्रियाल, कीर्तन करके भारी ।  
बनकर शम्भुभक्त मूलचंकर ब्रह्मचारी ॥

शिवमन्दिर में बैठकर, कर्पेन जी का सास ।  
भाल तिलक मस में पड़ी थी रुद्रादी माल ॥  
थी रुद्राक्षी माल, पीत पट तन पर धारण ।  
बम बम हूर हूर श्लोकादि कर उच्चारण ॥  
कूट-कूट कर भरी हुई श्रद्धा दिल शम्भर ।  
बैठा धासन भार मूल शंकर शिव मन्दिर ॥

गुजराती प्रिय भक्तजन, लगा लगा कर भोग ।  
नापिस होगये रह गये, कुछ बोड़े से बाँग ॥  
कुछ बोड़े से बाँग, रात बाघी हो आई ।  
सगे ऊपने सभी, नींद ने लिये दवाई ॥  
छा रही पूर्ण स्तब्धता, अल रही दोषक बाती ।  
जाग रहा था सिर्फ एक, वालक गुजराती ॥

अभिधाया लिये कप रहा, मूल ईश का प्यान ।  
पिण्डी से प्रकटे अची, गौरीपति बगवाण ॥  
गौरी-पति बगवान्, विश्व से एक नूहा निकला ।  
लगा चढ़ावा साने, पिण्डी ऊपर उछला ॥  
भाल मूलचंकर ने देखा, श्रवण तथाहा ।  
बंच गई बात नहीं होय, पूर्ण मेरी बगिलाया ॥

कहलाता महादेव जो, हरे सकल सन्धाप ।  
कर नहीं पाता आय वह, रखा धपनी आय ॥  
रखा अपना बाप, जगत् में छाई महिमा ॥  
सुते शानचक्षु, ये है पाषाण प्रतिमा ॥  
उठ गई आस्था जड़ पूजा से तोड़ा नाहा ।  
इसीलिये यह पर्व, शोचरात्रि कहलाता ॥

### पुरोहित चाहिए

आर्यसमाज कृष्ण नगर विधानी (हरवाष्पा) के लिए एक विद्वान् योग्य व अनुसन्धी पुरोहित की तत्काल आवश्यकता है। वेतन योग्यता के आधार पर निम्नलिखित किया जायेगा। धावास, विजली, पानी की सुविधा नि.शुल्क होगी। इच्छुक सज्जन, मन्त्री आर्यसमाज कृष्ण नगर विधानी से शीघ्र पत्राचार कर।

—मन्त्री

—०—

## गुरूकुल

कांगड़ी फार्मसी की  
आयुर्वेदिक औषधियां सेवन कर स्वास्थ्य लाभ करें

### गुरूकुल

#### दयानुप्राश

पूरे परिवार के लिए अतिशय शक्ति-  
पूर्ण स्फूर्तिदायक दवायक।  
खांसी, उदर व शारीरिक एवं  
केन्द्रीय की दुर्बलता में  
उपयोगी आयुर्वेदिक  
औषधीय दवायक



### गुरूकुल

#### पायुर्विकल

कठोर व बमूरी के मजबूत रोगों  
में विशेषतः पायुर्विकल  
के लिए उपयोगी  
आयुर्वेदिक औषधि



### गुरूकुल

#### चाय

दुर्बल व इकानुपुत्रक परम  
शक्ति में बढी बढती  
शे बनी तापकारी  
आयुर्वेदिक औषधि

### हरिद्वार

की औषधियां सेवन करें।

शाखा कार्यालय  
६३ गली राजा केदारनाथ,  
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६



गुरूकुल कांगड़ी फार्मसी हरिद्वार (उ० प्र०)

शाखा कार्यालय : ६३, गली राजा केदारनाथ  
चावड़ी बाजार, दिल्ली-११०००६

स्थानीय विक्रेताओं एवं सुपर बाजार  
से खरीदें

फोन नं० २६१८७१

'अमर' - ६ मार्च २०५५

भाय प्रतिनिधि सभा हरवाष्पा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदवत्त शास्त्री द्वारा आचार्य विद्विग प्रेस के लिए सर्वहितकारी मुद्रकालय रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती बचन, बयानम्ब मठ, रोहतक से प्रकाशित।



प्रधान सम्पादक - सुबोसिंह सभामन्त्री

सम्पादक-वेदवत शास्त्री

सहसम्पादक-प्रकाशचर विद्यानकाश एम० ए०

वर्ष १८

बक १३

२१ फरवरी, १९६१

वार्षिक शुल्क ३०)

(आजीवन शुल्क ३०१)

विदेश में ८ रीर

एक प्रति ७५ पैसे

## आर्य प्रतिनिधिसभा हरयाणा के अन्तर्गत गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ को सुचारु रूप से चलाने का निश्चय

धार्मिकव्युत्पत् के विद्यार्थक स्यागो तपस्वी संघ्याही स्वामी बीमानन्ध जी सरस्वती की धर्म्यसहाता में गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की यथासाला में सभा के अधिकारियों तथा जि० फरीदाबाद के प्रमुख कार्यकर्ताओं की १० फरवरी ६१ रविवार को प्रातः ११ बजे बैठक सम्पन्न हुई। इस बैठक में निम्नलिखित आर्य महागुरुओं की उपस्थिति उल्लेखनीय है।

१. स्वामी बीमानन्ध सरस्वती, २. श्री वेदसिंह सभा प्रधान, ३. म० भरतसिंह सभा उपप्रधान, ४. मा० लखनवास आर्य सभा प्रधान, ५. श्री राजेशसिंह विद्याका पूर्ण विधायक, फरीदाबाद, ६. श्री कल्याणलाल महता फरीदाबाद, ७. डा० सोमवीरसिंह सभा उपमन्त्री ८. श्री वेदवत शास्त्री, ९. श्री० प्रकाशचर विद्यालंकार, १०. श्री० सत्यवीर शास्त्री, ११. श्री सुबोसिंह आर्य, १२. श्री भरतसिंह सरपंच, १३. श्री ब्रह्मबालसिंह आर्य, १४. श्री मदनलाल, १५. श्री मितल एड-कोमेट, १६. श्री भद्रुतसिंह सरपंच, १७. श्रीभीष्म आर्य, १८. श्री महावीर सिंह शास्त्री, १९. स्वामी विद्यमुनि, २०. स्वामी ब्रह्मानन्द, २१. श्री हरिचन्द्र शास्त्री, २२. श्री किरणाम जनगपुर, २३. श्री जगदीशचन्द्र जनगपुर २४. श्री तेजपाल चौहान बल्लभगढ़, २५. श्री गण्डपाल आर्य मिरसापुर, २६. श्री तरुण फरीदाबाद, २७. गिरधारीलाल फरीदाबाद, २८. श्री गोपीराम बल्लभगढ़, २९. श्री सत्यवीर शास्त्री सभा उपमन्त्री ३०. श्री ब्रह्मलालसिंह जनगपुर, ३१. श्री श्यामलाल आर्य गुदगांव, ३२. श्री सत्यवीरसिंह शास्त्री सोनीपत, ३३. श्री हरिराम धार्य कारोली, ३४. श्री सुरेश बहाण एडकोमेट बल्लभगढ़, ३५. अंतरसिंह सरपंच ३६. श्री सीमानसिंह नगर, कोषाध्यक्ष, ३७. श्री सत्यप्रकाश आर्य गावोली कर्ण, ३८. आचार्य विनोदकुमार लुधी, ३९. श्री फतेह सिंह आर्य कारोली, ४०. म० किशोरसिंह आर्य धोरणाबाद, ४१. श्रीचन्द्र

भद्राना पाली, ४२. श्री सुखपाल बल्लभगढ़, ४३. अंतरसिंह पूर्ण सरपंच पासी, ४४. श्री सत्यवीरसिंह भद्राना, ४५. श्रीमती कौसल्यादेवी, ४६. श्रीमती नन्दरीदेवी, ४७. विद्यानकाश आर्य, ४८. प्रिथिवरत्न शास्त्रिसिंह ४९. मजनलाल आर्य मितरोल, ५०. श्री रतनसिंह साठर, ५१. श्री धार. एत. तहलान दिसावर डेढी, ५२. सुबोसिंहसिंह आर्य बल्लभगढ़, ५३. ईश्वरसिंह आर्य मिरजापुर, ५४. रविन्द्र चावला फरीदाबाद, ५५. भद्रवीर शास्त्री सोनीपत, ५६. प० बुधराम आर्य तिलपत, ५७ श्री रामचन्द्र धार्य रोहवा तथा दयानन्द विद्यालय फरीदाबाद की अध्यापिकाएं तथा छात्राएं आदि।

बैठक में उक्त महागुरुओं ने श्री बीमानन्ध जी सरस्वती तथा श्री० वेदसिंह जी सभा प्रधान को आवाहन दिया कि हम गुरुकुल के संचालन में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को तन, मन तथा धन से पुरा सहयोग तथा समर्थन देंगे। इन्होंने सभा से यह भी अनुरोध किया कि स्वामीय आर्यकर्ताओं को भी प्रबन्ध समिति में सम्मिलित करके विद्यार्थक में लिया जावे जिससे गुरुकुल की सुरक्षा में योगदान दे सकें।

पर्याप्त विचार विमर्श करके सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि १ स्वामी बीमानन्ध जी सरस्वती, २ श्री० वेदसिंह जी, ३ ब्रह्मेश्वर प्रतापसिंह विधायक, ४ मा० लखनवास आर्य, ५ श्री सुबोसिंह सभा मन्त्री पर आधारित उपसमिति थीप्र ही गुरुकुल के सुवर्धनमें से विचार विमर्श के प्रस्थाप सभा की धोर से गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की प्रबन्ध समिति का गठन करके गुरुकुल संचालन तथा सभा की क्षम्यति की सुरक्षा का कार्यभार आरम्भ कर दिया जावे।

नेवारसिंह आर्य

### जिला सोनीपत वेदप्रचार मण्डल के नये अधिकारी

आर्य वेद प्रचार मण्डल सोनपत तथा जिला सोनीपत के आर्य-सभाओं की बैठक दिनांक १३ फरवरी ६१ को आर्यसमाज अम्बिदर १४ सेंक्टर सोनीपत में सम्पन्न हुई। जिला सोनीपत में आर्यसमाज के संघठन को सुदृढ करने तथा वेद प्रचार का प्रसार करने के उद्देश्य से आर्य वेद प्रचार मण्डल सोनीपत का जिला सोनीपत वेद प्रचार मण्डल में सर्वसम्मति से विसय किया गया। इस प्रकार जिला सोनीपत वेद प्रचार मण्डल के नये अधिकारियों का चुनाव निम्न प्रकार किया गया- संरक्षक श्री० सुयंमल आर्य नगर, महाशय देवचन्द्र आर्य बुराह, श्री रामगोपाल आर्य सोनीपत, प्रधान श्री सत्यवीरसिंह शास्त्री काठमण्डी सोनीपत, उपप्रधान श्री वेदप्रिय आर्य १४ सेंक्टर सोनीपत, मन्त्री श्री रामचन्द्र धार्य सोनीपत नगर, कोषाध्यक्ष श्री ईश्वरदयाल आर्य सेंक्टर १४ सोनीपत, कार्यलय मन्त्री श्री वेदवत आर्य सोनीपत नगर

जिला सोनीपत के अन्य आर्यसमाज के सक्रिय आर्य कार्यकर्ताओं का चयन करने का अधिकार मण्डल के प्रधान एवं मन्त्री को दिया गया। जिला सोनीपत में धार्मिकसमाज का प्रचार करने के लिए एक मजन मण्डली को नियुक्त करने का निश्चय किया गया। एक प्रस्ताव द्वारा श्री० वेद्यालस जी द्वारा ऋषि दयानन्द तथा धार्मिकसमाज के मन्त्र्यों के विरुद्ध लिखे गये लेखों की निन्दा की गई और श्री० वेद्यालस जी से अनुरोध किया गया कि वे अपने लेखों में सुधार करें अन्यथा दयानन्द एगोसो बैदिक विद्यालय प्रबन्धक समिति से त्याग-पत्र देने का कट कर जिससे धार्मिकसमाज के प्रचार कार्यों में बाधा डूर हो सके।

**आर्यसमाज १४ सेंक्टर सोनीपत का उत्सव सम्पन्न**  
आर्यसमाज १४ सेंक्टर सोनीपत का चौथा वार्षिक उत्सव ११ से १३ फरवरी तक बुधवार से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर बैदिक विद्वानों के प्रबन्ध तन श्रीमती राजबाला आर्यों के प्रभावशाली संगीत हुए। ऋषिबोध दिवस पर ऋषि तपस का भी धारोचन किया गया।  
केदारसिंह धार्य

## गुरुकुल झञ्जर की हीरक जयन्ती पर राज्यपाल तथा मुख्यमन्त्री का आगमन

गत वर्ष गुरुकुल झञ्जर को स्थापित हुए ७५ वर्ष पूरे होने पर हीरक जयन्ती महोत्सव का युवाभारत किया गया था। इस वर्ष १५ से १७ फरवरी को इसका समापन समारोह पूरुषमा में सम्पन्न हो गया। इस युवाभारत पर धार्यजगत के सभाम्य वीरराजी संघासी श्री स्वामी सर्वानन्द जी के अतिरिक्त हरयाणा के राज्यपाल श्री बनिक साहल मण्डल, मुख्यमन्त्री श्री हुकमसिंह उनके मन्त्री परिषद् मन्त्री श्री श्रीरामसिंह, श्री माणेराम, श्री कुलवीरसिंह मणिक, श्री श्रीकृष्ण हुड्डा तथा श्रीमती मेधावी कीर्ति आदि विशेषरूप से पधार। इस प्रकार अहा धार्यजगत के उच्चकोटि के सम्सासी मच पर विराजमान थे वहाँ हरयाणा प्रदेश के सर्वोच्च अधिकारी भी उपस्थित थे। इस समम को देखकर सभी का मन हर्षित था कि गुरुकुल मञ्जर का महत्त्व जहा धार्यसमाज में प्रमुल है वहाँ राज्य सरकार भी इससे अत्यधिक प्रभावित है। श्री स्वामी ओमानन्द श्री सरस्वती ने जन इस कार्यभार को सम्माला था, उस समय गुरुकुल वन्द होने की श्रध्दाया में था, परन्तु आज श्री स्वामी जो के निरन्तर तप त्याग तथा साधना से गुरुकुल एक विश्वविद्यालय का रूप धारण कर चुका है। यह धार्यजगत के लिए एक गौरव का विषय है।

१७ फरवरी को प्रातः यज्ञ की कांवाहो के साथ गुरुकुल शिक्षा सम्मेलन का उद्घाटन आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान, गुरुकुल काशी विश्वविद्यालय हरद्वार के कुलाधिपति, गुरुकुल झञ्जर के कुलपति तथा योजना आयोग भारत के सदस्य प्रो० शेरसिंह ने किया तथा गुरुकुल हीरक जयन्ती पर एक लाख से अधिक दान देने वाले अधिसान श्री मुनेरसिंह स्वर्णपत्र जिवासी तथा आर्य उद्योगपति श्री मिश्रनेन आर्य लाक्षणवेदी (हिंसा) का विशेषरूप से स्वागत किया गया। दोनों धार्य महानुभाव धार्यसमाज की श्रध्द सत्थाओं को भी उद्घाटनपूर्वक दान देते रहे हैं। इन पर आशंसमान को यव है। इस सम्मेलन पर सभा की प्रभावशाली भजन मण्डली की जयपालसिंह तथा प० हलाल ने गुरुकुल तथा आर्यसमाज की महिमा पर अजन युवाभार सभी को भीहित किया। आर्यसमाज के एक विख्यात विद्वाह पं० विद्यामणि जी ने अपने श्रोत्रस्वी व्याख्यान में गुरुकुल के संघालकों की सहायता करते हुए कहा कि स्कूल तथा काखेज बंधेगी तथा पवित्री संस्कृति को बढाया देरुहे हैं, परन्तु गुरुकुल सन्धे धर्यों में वैदिक संस्कृति का पालन-पोषण करके वैदिक विद्वाह तथा पण्डित तंवार कर रहे हैं। महाभागानी समभ्रोतावरी ने परन्तु ऋषि दयानन्द सिद्धान्तवादी थे। भारत को स्वतन्त्र कराते का मार्य रचोन ऋषि दयानन्द ने सर्वप्रथम किया। यदि ऋषि दयानन्द न आते तो भारत स्वतन्त्र नहीं हो सकता था। कांग्रेस के आंदोलन में ८५% धार्यसमाजि थे जिन्होंने बड़े से बड़ा वित्तीय दान दिया। आज भी आर्यसमाज राष्ट्ररक्षा के कार्यों में अग्रणी है। विख्यात समाजवादी कवि अश्वविहारी ने मनोहर कविता गुनाकर उनको पुष्टि की। हरयाणा के माननीय राज्यपाल तथा मुख्यमन्त्री आदि के मंच पर पधारते पर गुरुकुल झञ्जर के स्वातक बा० योगानन्द जी तथा डा० सुदर्शनवन्दी जी आचार्य ने उर्ध्व धामन्यत्र पत्र भेजे कि तथा सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने उनसे अनुपरोध किया कि स्कूल काखेजों की अति सरकार गुरुकुलों को उषारतापूर्वक अनुदान देने स्वीकि हरयाणा में वैदिक संस्कृति की रक्षा से गुरुकुल कर रहे हैं। स्वामी अद्दानन्द ने इसी उद्देश्य से हरयाणा को इस पवित्र धरती पर मञ्जर, मण्डल, भैरव, इन्द्रप्रथम तथा कुशलेज में गुरुकुलों की स्थापना करवाई की। आज गुरुकुल झञ्जर के स्वातक भारत के सभी गुरुकुलों में योगदान देरुहे हैं और वैदिक संस्कृति का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। प्रो० शेरसिंह ने जहाँ हरयाणा सरकार को बूझा तथा बेरोजगारों को पेशान देने की सराहना की वहाँ हरयाणा प्रदेश में शराब की नदियां बहाने पर आलोचना की और मुख्यमन्त्री को परामर्श दिया कि वे शराबबन्दी लागू करके हरयाणा की सुशाहासी तथा वैदिक संस्कृति की रक्षा करे अथवा विकास के भारे कार्य व्यर्थ जायेंगे। धार्यने कहा कि अभावलय, नामालेड, मिजोरम ने शराबबन्दी लागू कररि है। योजना आयोग ने गुजरात राज्य को उसकी जनसंख्या से अधिक योजना के लिए धन दिया है। वहा भी शराब बन्द है और वहाँ शराब की बिक्री

करनेवाले राज्यों से अधिक वार्षिक आय में वृद्धि हुई है। गुरुकुल बिकाहता के धार्यायं ब० ओमस्वल्प ने विद्यालयों की भाति गोशालाओं को भी अनुदान देने की मांग की।

श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने राज्यपाल तथा मुख्यमन्त्री महोदय को अपने श्रोत्रस्वी भाषण में स्मरण करवाया कि यदि धार्य-समाज धर्यने गुरुकुलों के सहयोग से ऐतिहासिक हिन्दी प्रांशोलन न चलाता तो हरयाणा प्रदेश न बनता और धार्यको हरयाणा राज्य की कुर्सी पर बैठने का अवसर न मिलता। अतः हरयाणा सरकार को आर्यसमाज को सत्थाओं को अधिक से अधिक आर्थिक सहायता देनी चाहिए।

श्री बनिकसाहल मण्डल राज्यपाल महोदय ने धार्यनेताओं की अपील को म्यायसंगत स्वीकार करते हुए कहा कि स्कूल कालेजों की भाति गुरुकुलों को भी सरकार को सभी प्रकार का संरक्षण देना चाहिए। कालेजों के विद्यार्थी जहाँ भौतिक विज्ञान में आगे बढ रहे हैं वहाँ गुरुकुलों के विद्यार्थी आध्यात्मिक ज्ञान में पीछे नहीं रह सकते परन्तु इनकी उपेक्षा होने पर समूलन विध्वंस रहा है। और इसी कारण भारत उतनी उन्नति नहीं कर सका जिनको उन्नति महाभारतकाल से पूर्व थी। आपने महर्षि दयानन्द सरस्वती को अद्दागलित देते हुए कहा कि उनके सिद्धान्तों पर ही चलकर विध्वंस वांति हो सकती है। उनके ही अनुयायी स्वामी अद्दानन्द तथा स्वामी ओमानन्द ने धर्यने तप तथा त्याग से गुरुकुलों का समासन करके सिद्ध कर दिया है कि वर्तमान की सभी समस्याओं का समाधान गुरुकुल शिक्षा पद्धति से हो सकता है। वैदिक धर्म तथा संस्कृति को गुरुकुल ही जीवित रहे हुए हैं। आपने विषयवार दिनाया कि गुरुकुलों की प्रत्येक प्रकार की सहायता करने के लिए तंवार रहना।

सम्मेलन के अन्त में श्री हुकमसिंह जी मुख्यमन्त्री महोदय ने गुरुकुलों की पधार की मुक्ति-भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि यदि येरा बस चले तो मैं बंधेगी की अनियावंता को एकदम बन्द करके परन्तु अभी रुकावटें हैं। धर्येजी आया के समर्थकों की पीछे पीछे हुए धार्यने कहा कि प्राचीन भारत के धार्य क्या बंधेगी काते थे ? वे विज्ञान में भी आज के युग के वैज्ञानिकों से बहुत धार्ये थे। आपने हरयाणा प्रदेश में १०-१२ पाठ्यक्रम में धर्येजी की अनियावंता समाप्त करने के पचात् श्रीप्रद और कालेजों में भी इसका सफाया करने की पोषणा की और गुरुकुल मञ्जर के छात्रावास को २ लाख व्यायाम-शाखाओं ८० हजार अनुदान दिया जायेगा। श्रीमती मेधावी कीर्ति ने भी २५ हजार अनुदान दिया।

### हरयाणा के शराबबन्दी कार्यकर्ताओं से निवेदन

### शराब के ठेकों की नीलामी स्थान पर प्रदर्शन करें

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह, हरयाणा प्रदेश के शराबबन्दी तथा आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं से निवेदन किया कि फरवरी के अन्तिम, सप्ताह तथा मार्च में जिलों के जिन मुख्यालयों पर शराब के ठेकों की नीलामी होगी, वहाँ प्रदर्शन करें तथा हरयाणा सरकार को पूर्ण शराबबन्दी लागू करने का आग्रह दें। स्मरण रखें कि यदि हरयाणा में शराब की बिक्री को समाप्त न कराई गई तो हरयाणा की प्राचीन वैदिक संस्कृति समाप्त हो जायेगी और विज्ञान मञ्जूरी की जून पतौने की कमाई शराब बढीरने तथा पीने पर बर्बाद हो जायेगी।

### अध्यापकों के चरित्र की निंदा

एलनाबाद, ११ फरवरी (निस)। निष्कटवर्ती पाप के निवारियों में सरकारी स्कूल के अध्यापकों को लेकर भारी रोष व्याप्त है। गांव शासकों का कहना है कि कुछ अध्यापकों को डोकटर कोई भी धर्यपाक समय पर स्कूल में नहीं जाता तथा जिस वक्त आते हैं तो शारा पीकर धार्ये हैं दिन बढाड़े स्कूल में भीट बनाई जाती है। तथा शराब उकड़ी है। गत दिनों उपायुक्त महोदय द्वारा लगाए गए खुले दरबार में भी गांव निवारियों ने एक अध्यापक को शराबी हालत में पेश किया था। वैदिक धन सन्धे

## कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में आयोजित अखिल भारतीय संस्कृत संगोष्ठी में आर्यसमाज के मन्तव्यों की गूँज

डा० भवानीलाल भारतीय

गत २८-३० दिसम्बर को कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के संस्कृत तथा प्राच्य विद्या संस्थान की ओर से एक राष्ट्रीय स्तर की संगोष्ठी आयोजित की गई। इसका उद्घाटन विश्वविद्यालय के कुलपति जनरल कृष्ण स्वामी बलराम ने किया और मुख्य अतिथि के रूप में आर्यसमाज के तप-पूत संन्यासी स्वामी ओमानन्द जी ने अपना भाषण प्रस्तुत करते हुए हरयाणा के प्रांचलिक भागों में बिसरी पड़ी पुरातात्विक सम्पदा की शौर शोध विद्वानों का ध्यान आकृष्ट किया। उन्होंने इस बात पर खेद व्यक्त किया कि प्राञ्च भारत के इतिहासविद् पश्चिमयुग देशों के इतिहासकारों ने अनुसूती बनकर धनेक गलत तथ्यों को प्रचारित कर रहे हैं जिससे हमारी राष्ट्रीय बलिष्ठाता को गहरा झकासा पहुँच रहा है। संगोष्ठी के निदेशक प्रो० यशवीर ने समागत विद्वानों का स्वागत करते हुये विभिन्न सत्रों में प्रस्तुत किये जाने वाले शोध-पत्रों तथा बाचकों का परिचय दिया।

तत्पश्चात् २८ दिसम्बर की प्रातःकालीन कार्यवाही आरम्भ हुई। इस सत्र में संस्कृत व्याकरण पर कुछ महत्त्वपूर्ण पत्र पढ़े गये। सर्वप्रथम पंजाब विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के प्रबन्धता डा० विक्रमकुमार ने संस्कृतव्याकरणलेखे दयानन्दस्वामिनियो 'योगदानम्' शीर्षक प्रथम विद्वत्सम्पूर्ण पत्र पढ़ा। इसमें महर्षि दयानन्द द्वारा आर्य व्याकरण के पुनरुद्धार, पाणिनीय अष्टाध्यायी तथा पातंजल महाभाष्य की व्याकरण अध्ययन में उपयोगिता प्रादि की चर्चा के साथ-साथ सिद्धान्त कौमुदी प्रादि ग्रन्थों की नूतनियों का भी निवेदन किया गया था। पत्र बाचन के पश्चात् प्रोफेसर काल में जब एक विद्वान् ने कहा कि व्याकरण अध्ययन में कौमुदी को उपयोगिता के तो स्वीकार करना ही पड़ेगा। इस पर परीक्षकारों के सम्पादक तथा दयानन्द कालेज अजमेर के संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डा० धर्मवीर ने अपना उद्देश्य समझाना प्रस्तुत करते हुए कहा कि कौमुदी की उपयोगिता उत्तमी ही है, जितनी परोक्षार्थी के लिये किसी Help Book (पाम बुक या डूबो) की होती है। मुख्य व्याकरण ग्रन्थ तो अष्टाध्यायी और महाभाष्य ही हैं जो व्याकरण की Text Books हैं। उनकी ध्वनित्व करने और केवल शासक कौमुदी की सहायता लेने से व्याकरण का ज्ञान अत्यन्त सामान्य स्तर का ही होगा।

उनके इस मुक्तिपूर्ण समाधान का मेजें बपचाप कर स्वागत किया गया। इस पर प्रतिपक्षी विद्वान् ने स्वामी दयानन्द द्वारा कौमुदी पर किये गये आक्षेपों से किञ्चित् उद्दिग्ध होकर व्यंग्यपूर्ण स्वर में कहा कि वस्तुतः कौमुदी तो विद्वानों के लिये ही है। इस पर डा० धर्मवीर ने पुनः कहा कि आप सच्चे सिद्धान्तकारों के मंगल श्लोक की व्याख्या को देखें वहाँ लिखा है—पाणिनीयवैशेष्या बालानां पाणिनीय व्याकरणव्यासने प्रवेशार्थं .....ताम् करोमि आदि। अर्थात् इस कौमुदी की रचना तो बालकों के लिये हुई है न कि विद्वानों के लिये। इस पर सभा भवन पुनः अट्टहास से गूँज उठा। प्रतिपक्षी विद्वान् ने जब कहा कि "बालानां" सुखबोधाय की बात तो सच्चेविद्वानों पर धटित होती है न कि सिद्धान्तकौमुदी पर तो सभी कौमुदीयों ने स्वीकार किया कि सारे ही कौमुदी सभ्य एक ही कोटि के हैं। इस प्रकार महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों का जयजयकार हुआ। इसी सत्र में पंजाबी विश्वविद्यालय के रीवर डा० भीमसिंह एवं डा० धर्मवीर ने भी अपने शोध पत्र पढ़े जो क्रमशः 'महाभाष्य के आधार पर शब्द का स्वरूप' तथा 'वैशकारणों की दृष्टि में ध्वनि का स्वरूप' विषयों पर थे।

द्वितीय दिन (२९ दिसम्बर) की संगोष्ठी वैद दशम दर्शन विषयों पर रखी गई। इसके प्रथम सत्र में दयानन्द शोध पीठ पंजाब विश्वविद्यालय के प्रो० भवानीलाल भारतीय ने 'महर्षि दयानन्द के शिक्षा विषयक विचारों की शासिकता' विषय पर अपना शोध पत्र

पढ़ा। इसमें महर्षि के ग्रन्थों से उनके शिक्षाविषयक विचारों का सङ्कलन तो था ही, इन विचारों की आज के सदर्भ में प्रासंगिकता भी स्पष्ट की गई थी। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के डा० निगम शर्मा ने संस्कृत में 'आर्य मीमांसा' शीर्षक पत्र का बाचन किया। इसमें विद्वान् वक्ता ने आर्य ग्रन्थों और शास्त्रों को भूरिस्तः उद्धृत करते हुए 'आर्य' शब्द की गरिमा का आशयान किया। आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द से सम्बद्ध अर्थ पत्र भी पढ़े गये जिनमें डा० कृष्ण शाल का सुकल यशुवंद प्रथम अध्याय के दयानन्द आर्य में यज्ञ, डा० सितरजनसिंह कौशल का स्वामी दयानन्द के यजुर्वेद भाष्य में इन्द्र का पारम्भायिक अर्थ प्रादि उल्लेखनीय हैं।

इस संगोष्ठी में जिन आर्य विद्वानों ने भाग लिया उनमें उल्लेखनीय हैं प्रो० यशवीर (सम्प्रति आम महर्षि दयानन्द विश्व-विद्यालय रोहतक के संस्कृत विभाग के अध्यक्ष पद के लिये चयनित हो चुके हैं तथा इन्होंने अपना नवीन पद भी सभाल लिया है) प्रो० भवानीलाल भारतीय (चम्बोखण्ड) डा० विक्रमकुमार (चम्बोखण्ड) डा० भीमसिंह (पटियाला) प्रायः आर्यसमाज के महार्थ विद्वान् यशुवंद पं० विधानिधि शास्त्री के पुत्र तथा संस्कृत व्याकरण के प्रकाशक विद्वान् हैं) डा० धर्मवीर (अजमेर) डा० अरविन्दकुमार (कुरुक्षेत्र) डा० रणवीर (कुरुक्षेत्र), डा० कृष्णलाल (लिली), डा० निगम शर्मा (हरिद्वार) डा० वलदेवसिंह (रोहतक) आदि।

मैंने अपने दस वर्ष के विश्वविद्यालय कार्यकाल में यह अनुभव किया है कि आर्यसमाज के प्रति भारतीय रसनेवाले तथा महर्षि के मन्तव्यों के प्रति यद्वा रखने वाले शतक. विद्वान् प्रोफेसर, रीवर तथा प्रबन्धता उत्तर भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों में कार्यरत हैं तथा वे अपने-अपने ढंग से संस्कृत भाषा तथा वैदिक साहित्य की सेवा कर रहे हैं। किन्तु हमारी संस्थाएँ और संगठन अपने साधनों को उन तक नहीं पहुँचाते और न इन विद्वानों की विद्वत्ता, वैचन शोध तथा अध्ययनशीलता का ही सुगुञ्जित उपयोग करते हैं। मेरा प्रयास है कि भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों में कार्यरत आर्यसमाजी विद्वानों का कोई मंच बनाया जाये ताकि वे अपने बौद्धिक योगदान द्वारा आर्यसमाज को भी सामाजिक करे। क्या हमारी शिरोमणि सभ्यें इस महत्त्वपूर्ण कार्य में हमारा हाथ बटावेंगी।

## आर्यसमाज खेड़ी आसरा का उत्सव सफलता पूर्वक सम्पन्न

२, ३ फरवरी को आर्यसमाज खेड़ी आसरा जिला रोहतक का प्रांचिक उत्सव सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर दोनों दिन प्रातः सायं यजुर्वेद से यज्ञ का आयोजन भी किया गया और पं० अर्जुनदेव शर्मा, पं० रवीन्द्र चित्तलकाश, पं० धर्मवीर आर्य ने यज्ञ पर प्रवचन दिये।

३ फरवरी को आर्य सम्मेलन पर सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी, स्वामी ओमानन्द जी सस्वर्गी, प्रिंसिपल हीरादर सिंह जो संयोजक वेदप्रचार मण्डल बहादुरगढ़, भी प्रियव्रत जी ठेकेदार, भीमती प्रजास बोभा पंडित आदि आर्य नेताओं ने श्राभीण नर नाशियों को सम्बोधित करते हुए आर्यसमाज के कार्यों में समर्पित होने की प्रेरणा की और सत्ताब आदि सामाजिक कुराहियों को छोड़ने का अनुरोध किया।

पं० जयप्राससिंह शर्मा, श्री ईश्वरसिंह तूफान की मण्डलियों के आगे प्रवचनों में सभ्य भाष्य दिया। आर्यसमाज की ओर से सभा को १४०० वेद प्रचारार्थ दिये गये।



गांधी उवाच—

## ‘दुनिया से कह दो कि गांधी अंग्रेजी भूल गया’

(सन् १९४७ में भारत स्वन्त्र होने पर बी.बी.सी. द्वारा मांगे गए सन्देश के उत्तर में गांधीजी द्वारा दिया गया केवल एक वाक्य का सन्देश)

‘अगर मेरे हाथ में तानाशाही सत्ता हो, तो मैं प्राय से ही विदेशी माध्यम के जरिए अपने लड़कों और लड़कियों की शिक्षा बन्द कर दू और सारे शिक्षकों और प्रोफेसरो से यह माध्यम सुरक्षित बदलवा दू या उन्हें बरबाद करा दू । मैं पाठ्य-पुस्तकों को तैयारी का इन्जाम नही करूंगा । वे तो माध्यम के परिवर्तन के पीछे-पीछे चली जाएंगी !’

—गांधी

‘युवक श्रीर मुबलिया अंग्रेजी और दुनिया की दूसरी भाषाएँ खूब पढ़ और जरूर पढ़ । लेकिन उनसे मैं प्रार्थना करूंगा कि वे अपने ज्ञान का प्रसार भारत को और सारे सप्ताह को उसी तरह प्रदान करेंगे, जैसे बोस, राय और स्वयं काँच खोत्रनाथ ने प्रदान किया है । अगर मैं हृदयगुज यह नही चाहूंगा कि कोई भी हिन्दुस्तानी अपनी मातृभाषा को भूल जाए या उसकी उपेक्षा करे या उसे देखकर शरमाए अथवा यह महसूस करे कि अपनी मातृभाषा के जरिए वह ऊँचे से ऊँचा चिन्तन नही कर सकता है ।’

‘मेरा यह गृहित्तित्त मत है कि जिस रूप में अंग्रेजी की शिक्षा यहा दी गई है, उनमे अंग्रेजी पढ़े-लिखे हिन्दुस्तानी कमजोर हो गए हैं । डम पढ़ति ने भाषनाय छात्रों को स्नायविक ऊर्जा पर भयानक दबाव डाला है तथा हम सबको नमाल बना दिया है । कोई भी जाति नमकालों की कीम पंथा करके बडी नही हो सकती ।’

‘युमे पक्का विश्वास है कि किंसां दिन हमको द्रविड भाई रहन, गम्भोर भाव से, हिन्दी का अध्ययन करने लगये । आज अंग्रेजी भाषा पर अधिकार प्राप्त करने के लिए वे जितनी मेहनत करते हैं, उसका आठवा हिस्सा भी हिन्दी सीखने में कर तो शायी हिन्दुस्तान, जो आज उनके लिए अन्ध किन्गव की तरह है, उससे वे परिचित होंगे और हमारे मां-उमका ऐसा नाम्नाय स्थापित हो जाएगा, जैसा पहले कभी नही था ।’

‘...जरा सोचकर देखिए कि अंग्रेजी भाषा में अंग्रेज लक्षकों के साथ शोध कराने में हमारे लक्षकों पर कितना वजन पड़ता है । पुना के कृष् प्रोफेसरो ने पेरु वान इई । उन्होंने बताया कि नू कि हर भारतीय विद्यापी को अंग्रेजी के मार्केत ज्ञान सम्पादन करना पड़ता है, इसलिए उसे अपने देशकीयती बरसों में से, कम से कम, छह वर्ष अधिक जाया करने पड़ते हैं । हमारे स्कूलों और कलियों से निकलनेवाले विद्यापियों की सख्या में डम छह का गुणा कीजिए और फिर देखिए कि राष्ट्र के कितने हजारा वर्ष नववी हो चुके हैं !’

‘हिन्दी भाषी लोगों को दक्षिण की भाषा सीखने की जितनी जरूरत है, उसकी प्रोत्सा दक्षिण भाषों की हिन्दी सीखने की आवश्यकता अवश्य ही अधिक है । सारे हिन्दुस्तान में हिन्दी बोलने और समझनेवालों की सख्या दक्षिण की भाषाएँ बोलनेवालों से दुगुनी है । प्रांतीय भाषा या भाषाओं के बदले में नही, बल्कि उनके अलावा एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त का सम्बन्ध जोड़ने के लिए एक सर्वमाध्य भाषा की आवश्यकता है । ऐसी भाषा तो एकमात्र हिन्दी या हिन्दुस्तानी ही हो सकती है !’

‘अगर स्वराज्य अंग्रेजी बोलनेवाले भारतीयों को और उन्हीं के लिए होने वाला हो, तो निस्सन्देह अंग्रेजी ही राष्ट्रभाषा होगी । लेकिन अगर स्वराज्य कठोरों भूलो मरनेवाली, निरक्षरी, निरक्षर बहनों और दलितो व अल्पजो का ही और इन सबके लिए होनेवाला ही, तो हिन्दी ही एकमात्र राष्ट्रभाषा हो सकती है ।’

‘अंग्रेजी आज इसलिए पढी जा रही है कि उसका व्यावसायिक एवं तथ्याकथित राजनैतिक महत्त्व है, हमारे बच्चे धरती की यह सोचकर

पढते हैं कि अंग्रेजी पढे बिना उन्हें नोकरियां नही मिलेंगी । लड़कियों को अंग्रेजी इसलिए पढाई जाती है कि इससे उनकी शादी में सहूलियत होगी । मैं ऐसी कितनी ही औरतों के बारे में जानता हूँ जो अंग्रेजी फकत इसलिए सीखना चाहती थी कि अंग्रेजों के साथ वे अंग्रेजी में बातचीत कर सक । मैं कितने ही ऐसे पतियों को जानता हूँ, जिन्हें इस बात का मसाला है कि उनको वीबियां उनके साथ और उनके दोस्तों के साथ अंग्रेजी में बात नही कर सकती । मुझे ऐसे परिवारों की जानकारी है, जहा अंग्रेजी मातृभाषा बनाई जा रही है । ... वे सारी बात मेरी नजर में गुलामी और घोर पतन के चिह्न है । मैं इस बात को यदायत नही कर सकता कि देशी भाषाएँ इस तरह कुचल दी जाए, भूलों मार डाली जाए ।’

‘वास्तव में ये अंग्रेजी में बोलनेवाले नेता हैं जो आम जनता में हमारा काम जल्दी आगे बढते नही देते । वे हिन्दी सीखने से इन्कार करते हैं जबकि हिन्दी द्रविड प्रदेश में भी तीन महीने के अंदर सीखी जा सकती है, अगर बोलने वाले इसके लिए दो घंटे हर रोज दे ।’

‘मालों लोगों को अंग्रेजी का ज्ञान कराना उन्हीं गुलाम बनाना है । मंगलने भारत में जिस शिक्षा को नीव र्पते, उनने हम सबको गुलाम बना दिया है ।’

‘आप और हम चाहते हैं कि करोड़ो अन्तर्प्रान्तीय सम्पर्क कायम कर । स्पष्ट है कि अंग्रेजी के द्वारा कई पीढिया गुजर जाएं पर भी वे परस्पर सम्पर्क स्थापित न कर सकेंगे ।’

‘मैं कहना यह चाहता है कि मुझे इस पत्रिक नगर में, उस महान् विद्यापीठ के प्राण्य में अपने ही देशवासियों से एक विदेशी भाषा में बोलना पड़ रहा है, यह बडी-अप्रतिष्ठा और शर्म की बात है ।’

‘क्या वे लोग जो अपनी मातृभाषा का प्रथमान करते हैं, कभी देश का भला कर सकते हैं ? मैं इसकी कल्पना नही कर सकता कि गुजरात के लोग अपनी मातृभाषा छोड़कर अन्य कोई भाषा अपना लें । ऐसा ही तो यह कहने में जरा बतिसयोचित्त न होगी कि जो लोग अपनी भाषा छोड़ देते हैं, वे देशद्रोही हैं और जनता के प्रति विश्वासघात करते हैं ।’

—‘मेरे सपनों का भारत’ से

## इन्सान बना

—नाथ सोनीपती

इन्सान नही, हैवान है, वे जो चाल चलन बेतानों की ।  
इस धरती पर इन्सान बनो, यह धरती है इन्सानों की ॥  
दाना तो फिर भी दाना है, उनकी भी दास नहीं पसती ।  
बेबस भी हैं, मजबूर भी हैं, इस बर्तनी में नादानों की ॥  
कुछ अमल करो तो बात बने यों बात बनाना ठीक नही ।  
इस दुनिया में जोकात है क्या ? बेहिसस भूटे एलानों की ॥  
अपनों से यह उम्मीद न थी कि अणयनन को सोचेंगे ।  
और अपने जाकर बैठेंगे, खुद महफिल में बेगानों की ॥  
बेचने में दिन कटता है और रात को किस बेताबी से ।  
जलते ही शर्मा जल मरते हैं, क्या बात है उन परचानों की ॥  
हसरत जो दिल को दिल में है, वह नाज निकल पाए क्योकर ।  
जिस दिल के घर में भोज सभी दुनिया भर के अरपानों की ॥

## इतने राम कहाँ से लाऊँ ?

प्राचीनकाल त्रेता युग में अयोध्यापति राजा दशरथ के घर मर्यादा पुरुषोत्तम राम का जन्म हुआ। श्री राम ने विश्वामित्र अगस्त्य आदि ऋषियों से उत्तम अस्त्र-बाण के संचालन की शिक्षा व उत्तम विद्या पाई थी। ऋषियों का उद्देश्य भी यही था कि श्री राम युद्ध संकापति रावण का वध करके ऋषियों व समाज को उसके अत्याचारों से मुक्ति दिलाय और जन्म में हुआ भी यही। श्री राम ने रावण को मारकर सत्य धर्म की स्थापना की।

हम देखते हैं कि उस समय की एक लका नगरी और उसके पासक रावण ने ऋषियों और सभ्य मनुष्यों का जीवन कष्टमय बना दिया था। रावण के अत्याचारों व दुराचारों से पीड़ित ऋषियों व मनुष्यों के हाहाकारों व चीत्कारों से चारों दिशाएँ पूजती थीं। ऋषियों का यज्ञ अष्ट करना, मनुष्यों को मारकर खा जाना, किसी प्रकार का धर्म कार्य न करना, धर्म जीवन से भरपूर किसी रमणीय स्थान को निर्धन व उजाड़ बना देना तो राक्षसों का नित्य का कर्म था। ऋषियों ने इनके मुकाबले में एक मर्यादित, शक्तिशाली व आज्ञान-वाहू श्री राम को ढूँढा किया। जिसने रावण व राक्षसों का वध करके उनके अत्याचारों से मुक्ति दिलाई।

रामायण की पढ़ने से पता चलता है कि रावण का वध हो गया था। भौगोलिक दृष्टि से लका नगरी नष्ट हो चुकी है, परन्तु क्या वास्तव में रावण नहीं रहा ? क्या लका नगरी समस्त नष्ट हो चुकी है, नहीं वे हैं और एक नहीं लाखों हैं। समाज में हथ-दण्टियाँ करते हैं तो हर मनुष्य रावण और हर घर लका नजर आता है। राम व मनु के द्वारा वसाई अयोध्या नजर नहीं आती। न कोई राम नजर आता है। निरपराध भक्तियों की हृदय, निरीह बच्चों का वध, अत्याचारों की इज्जत पर हमला, इज्जत के साथ खिलवाड़, शोषण, तानाशाही राक्षसों कर्म नहीं तो और क्या है ?

श्री राम का सिद्धान्त था कि 'केवलापो भवति केवलादौ' अर्थात् अकेला खानेवाला पाप करता है। ठीक इसके विपरीत रावण का सिद्धान्त था—'पावजोवेत् सुख जीवेत् परं ह्वा रस्त पिबेत्। भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमन कुतः।' 'Eat drink be merry धर्यात् खाओ, पिओ तो आनन्द, हम देवते हैं कि विष्व, देश, नगर, समाज और घर आदि में यज्ञ-तन्त्र सर्वत्र रावण के सिद्धान्तों का प्रचार प्रसार अधिक है और राम के सिद्धान्तों का कम। घर के अन्दर मुखिया रावण हैं तो अन्य सदस्य राक्षस हैं अर्थात् रावण व रावण की लका नगरी सैवार। मासमक्षण करना, सुरापान, व्यभिचार व गरीबों असहायों को सताना तो इनका काम ही है। एक रावण के मुकाबले में एक राम था। अब लाखों रामों की जरूरत है, किन्तु कहाँ से ढूँढा जाये फिर से उसी मर्यादित, आज्ञानवाहू देवज्ञ राम को जो अर्धम, अत्याचार और अन्याय को दूर करके धर्म, सदाचार और न्याय की स्थापना इस बसुंधा पर पुनः करे। रावण ने अपने भाई से ईर्ष्या व द्वेष किया तो उसे अपने प्राणों को त्यागना पड़ा क्योंकि सारे गुण देव बतलानेवाला उसका भाई विभीषण ही था। ठीक इसके विपरीत यदि कोई भाई या अन्य सदस्य सत्य बात कहता है तो उसे अपने प्राण त्यागने पड़ते हैं। सारे ही रावण के भ्रतृगामी हैं।

समाज के अन्दर हमें निराशा ही हाथ लगती है। मन यह सोचने को विवश हो जाता है कि क्या तुम सत्यधर्म की स्थापना होगी ? क्या फिर से मनु श्रीराम के सिद्धान्त प्रचलित होंगे ? क्या तुम लोग वेदमार्ग के भ्रतृगामी बनने ? अन्त में बड़े दुःख के साथ कहना पड़ रहा है।

अन्याय अवध में और अत्याचार को,  
हाथ कैसे दूर नगाऊँ।

जन-जन रावण, घर-घर लंका,  
इतने राम कहाँ से लाऊँ ॥

—अरविन्द कुमार 'कमल' विद्यावाचस्पति  
धर्मसमाज टोहना (हिसार)

## ऋषियों का संदेश

(१) ऋषियों को भोगकर इन्द्रियों की तुलना को समाप्त करने वाला तुम्हारा विचार ऐसा ही है, जैसा कि आज को बुझाने के लिए उसमें भी डालना।

(२) यह मानना तुम्हारा सबसे बड़ा अज्ञान है कि ' मैं कभी मरूँगा नहीं, " यह शरीर बहुत पवित्र है, " विषय भोगों में पूर्ण और स्वायी मुख है, " तथा " यह देह ही यात्सा है । "

(३) तुम्हारे मन में अच्छे या बुरे विचार अपने आप नहीं आते। इन विचारों को तुम अपनी इच्छा से ही उत्पन्न करते हो, क्योंकि मन तो यज्ञ के समान जड़ वस्तु है, उसका चालक मनुष्य है।

(४) किसी के अच्छे या बुरे कर्म का फल मत्काल प्राप्त होता न देखकर तुम यह मन विचारों कि इन कर्मों का फल प्राप्ते नहीं मिलेगा। कर्म-फल से कोई भी उच नहीं सकता, क्योंकि ईश्वर सन्व्यवसक, सर्वज्ञ तथा न्यायकारी है।

(५) मत्कार (=वहृति), मत्कार को भोगनेवाले (=भोग) तथा सत्कार को बनानेवाले (=ईश्वर) के वास्तविक स्वरूप को जानकर ही तुम्हारे समस्त दुःख भय, विन्मत्त मत्काल जे मकनी हैं, काई उपाय नहीं है।

(६) 'मनुष्य जीव ईश्वरपति के तिर मिळा है, " इस मुष्य सत्य को छोड़कर अन्य किसी भी कार्य को प्राथमिकता मत दो, नही तो तुम्हारा जीवन चन्दन के वन को चोपडा जनाकर नष्ट करने के समान हो है।

(७) तुम्हारे जीवन की मफलता तो काम, क्रोध, मोह, मोह, अहंकार आदि त्रिविधा के कुसस्फारों को नष्ट करने में ही है। यही ममस्त दुःखों में पूटने का श्रेष्ठ उपाय है।

(८) जय तक तुम मत्कार के सुखों के पीछे हुए दुःखों को समझ नहीं लोगे, नज तक बंराय उत्पन्न नहीं होगा। विना बंराय के चंचल मन एकाग्र नहीं होगा, एकाग्रता के विना समाधि नहीं लगेगी, समाधि के विना ईश्वर का दर्शन नहीं होगा, विना ईश्वर दर्शन के राक्षस का नाश नहीं होगा और भ्रमान का नाश हुए विना दुःखों की समाप्ति और पूर्ण तथा स्वायी सुख (=मुक्ति) की प्राप्ति नहीं होगी।

(९) तुम इस मन्त को समझने के लिये अज्ञानी मनुष्य हो जाओ वस्तुओं (=भूमि, मत्काल, सो, न, सारी) को चेतन वस्तुओं (प्रा, ज्ञानी, पुन, निन प्राप्ति) के जपना मानने का एक भाग मानकर, उनकी वृद्धि होने पर प्रसन्न तथा हासि होने पर दुःखी होता है।

(१०) तुम्हारे सोहृद्यों को मन को, विषय भोगरूपी चूम्यक सदा अपनी श्रौर शीतले रहते हैं। ज्ञानी मनुष्य विषय भोगों से होनेवाले हानियों का अनुमान लगाकर इनमें आसक्त नहीं होते, किन्तु अज्ञानी मनुष्य इनमें फसकर नष्ट होजाते हैं।

महात्मान, जन, आदि तुम्हें का भण्डार ईश्वर एक चेतन वस्तु है, जो अनादिकाल से तुम्हारे साथ है, न कभी वह अलग हुआ, न कभी होगा। उसी सत्कार के बनानेवाले, पालन करनेवाले, सत्के रक्षक, निराकार ईश्वर की स्तुति, प्रायना तथा उपासना तुम सब मनुष्यों को सदा करना चाहिए।

(सर्वत्र योग महाविद्यालय गुजराल)

## सत्यार्थप्रकाशस्य महिमा

सत्यार्थप्रकाशः नाम्ना प्रथम एव, अस्मिन्निवृत्तस्य प्रकाशयति ।  
बुद्धिमत्तः स्वपुत्रान् शिष्यान् च त्वमेव पाठयति ॥१॥  
ईसः नाम्ना व्याख्या तस्य स्वरूपस्य परिपूर्णाः सम्मुलासाः  
पठन-पाठन-राजनिमित्तमाश्चापि पश्यति प्रकाशा ॥२॥  
धर्मग्रन्थमण्डनम् अनापस्यमण्डनम् अत्य ग्रन्थस्य प्रवीणम् ॥  
सत्यासत्यसंस्कृतौ सर्वविधम् च महापुरुषस्य वर्णनम् ॥३॥  
ऋषिचिन्तितः अयम् ग्रन्थ उद्बोधयति कृष्णतो विद्यार्थम् ।  
रामचन्द्रार्थः मूढः कथयति मा काथ्यम् मम कार्यम् ॥४॥

—लेखक रामचन्द्र धर्म्य, नलगा (हिसार)

॥ १३ ॥

### यज्ञमयी नौका पर आरूढ हो

बौद्ध् पुष्पक प्रायद् प्रथमा देवहृतयोऽकृष्वत् श्रवस्यानि दुष्टरा ।  
न ये शैकुन्धियां नावमारुहमीर्मये ते ग्मविशास केपयः ॥

यज्ञमयी जो सन्कीर्णों की,  
नौका देवगणों की यान ।  
दिम्ब युगलों के वाहक जन ही,  
कर सकते उसका आह्वान ।  
चढ़ उस पर पा जाते भजित,  
बनते बन्धी और यशवान ।  
धारोहित जो हों न सकेगे ।  
भटकेंगे वे पतित समान ।

॥ १४ ॥

### सबल सत्संकरूपी बन !

धा नो भद्रा क्रतवो यन्तु विष्वतो  
बद्धस्थातो बधरीवास उद्भिः ॥  
देवा नो यथा सर्वमिद् द्रुवे असन्न  
प्राप्तुनो रक्षितारो विवे दिवे ॥ अ. १. १६ । यजु. २४. १४

सत्संकल्प करे हम मन में,  
सभी तरह से हो अधिकार ।  
स्वल्प सबल अभिमाया होने,  
देवे विपदों को ललकार ।  
देव विप्रजन जो जगती के,  
देवे हमें स्नेह-सहकार ।  
निरक्षस हो रखक नित होने,  
पा जाए उल्कर्ष अपार ।

॥ १२ ॥

### प्रभु भक्त तेजस्वी होता है !

यो ब्रह्मे ब्रह्म सं उत वा य ऊग्रनि,  
सोम सुनोति भवति युवं अह ।  
अपम शक्रुस्ततनुष्टि ऊहति,  
तनु शुभ्र भधवा यः कमासखः ॥  
उस प्रभुवर के ज्ञान ध्यान में,  
रहता निश्चिदिन जो सयमान ।  
भक्तिरसपायी वह होता  
धारण करता तेज महान ।  
विषय वासना में भटका नित  
जो जन तन का पोषक मात्र ।  
दुष्टजनों की संगति करता  
बने नाम, का ही वह पात्र ।

॥ १६ ॥

### देवों में भी देव !

ये देवा देवेष्वपि देवत्वमायद्,  
ये ब्रह्मासाः पुर एतारो अस्य ।  
येभ्यो न ऋते पवते धाम किंचन,  
न ते दिवो न पृथिव्याः अविस्तुषु ॥  
परमहंस योगिजन हैं जो,  
देवों में भी देव महान् ।  
यही वहन करते हैं देवो,  
देवों का वृहत्तर ज्ञान ।  
तप-पुत्र हैं वे ही तो जन,  
करते जगती को पवमान ।  
भूतल-भूतल तक न सीमित,  
भव के कण-कण में रममाण ।

प्रो. धर्मचन्द्र, विचारलंकार, पलवल


अ. १. २४. ३

यजु. १७. १४


### २१ फरवरी को अंग्रेजी की अनिवार्यता के विरोध में संसद भवन पर प्रदर्शन

नई दिल्ली ११ फरवरी (निज संवाचकाता द्वारा) २१ फरवरी १९६१ को एक विशाल प्रदर्शन संसद भवन पर किया जा रहा है । यह प्रदर्शन "सब लोक सेवा आयोग" की परीक्षाओं में अंग्रेजी की अनिवार्यता के विरोध में किया जाएगा । प्रदर्शन हुए पर पट्टी बांधकर मौनरूप से किया जाएगा । प्रदर्शन का आयोजन १६ बजते १६ बजे से निरन्तर अंग्रेजी की अनिवार्यता के विरोध में बूक रहा "प्रसिद्ध भारतीय भाषा सरलस्य संगठन" कर रहा है । स्मरण रहे पिछली १० जनवरी को संगठन के सस्थापक अध्यक्ष श्री योगेश्वर चौहान ने संसद की बर्षक दीर्घा से "अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करो" "बहरे सांसदों—भारतीय भाषाओं को स्वतन्त्र करो" के नारों के साथ नीचे छलांग लगा दी थी । संगठन के महासचिव श्री राजकरम सिंह ने सभी देशभक्त युवाओं से प्रदर्शन में भाग लेने की पुरजोर प्रार्थना की है । उन्होंने सरकार को चेतावनी देते हुए कहा है कि हम बाहरी दम तक सरकार से लड़ेंगे । अपनी मातृभाषा तथा राष्ट्रभाषा का सब स्तर पर प्रयोग कर सकना हर भारतीय का जन्मसिद्ध अधिकार है कोई भी सुनियां को ताकत अधिक तिन तक हमारे अधिकारों को नहीं कुचक सकती । एक दिन हम अपने अधिकार लेकर लौटें रहेंगे ।

### दांतों की हर बीमारी का घरेलू इलाज




**दंत मंजन**  
लौह युक्त




प्रसूतों की सुरक्षा

23 जड़ी बूटियों से निर्मित  
आयुर्वेदिक औषधि


काले का डक्टर




अस नये पैकिंग में उपलब्ध



दूर की दुर्गम



छात्रों का पानी लगाना



दात का दर्द

महाशियां वी हट्टी (प्रा०) लि०

5/84, इण्डिया स्ट्रीट, सीमा अरर, 17<sup>वीं</sup> फ्लोरा-15 गेट 539508, 537987, 537941

- ### हरयाणा के अधिकृत विक्रेता
१. मसर्न परमाणव्य सांख्यितामब, विवाजी स्टैंड, रोहकट ।
  २. मसर्न कुलचन्द सीताचाम बोधीचौक, हिसार ।
  ३. मसर्न सन-अप-टुबर्न सारंग रोड, सोनोपत ।
  ४. मसर्न हरीश एंजेलीज 499/17 गूडहारा रोड, पाबीपत ।
  ५. मसर्न भगवानदास देवकीनन्दन सराईका बाबाबा, कपनाल ।
  ६. मसर्न भगवानदास सीताराम बाबाबा, त्रिवासी ।
  ७. मसर्न कृपाराम गीयब रड्डी बाबाबा, सिरसा ।
  ८. मसर्न कुचवन्त पिकाब स्टोर्स शाप नं० 115, माफिट नं० 1, एन आई० टी० फरीदाबाद ।
  ९. मसर्न सिंगला एंजेलीज सदर बाबाबा, मुकामा ।

## हरियाणा के कोने-कोने में ऋषि बोधोत्सव

### १. बाघपुर बेरी रोहतक

आर्यसमाज बाघपुर बेरी जि० रोहतक में १२ फरवरी को ऋषि बोध दिवस के उपलक्ष्य में ५० जयपाल धार्य की भजन मण्डली तथा ५० धर्मवीर आर्य एवं ५० रबीन्द्रकुमार विद्यानकार के ऋषि दयानन्द के जीवन पर भजन तथा व्याख्यान हुए।

१३ फरवरी को प्रातः ६ बजे आर्यसमाज बेरी में ५० धर्मवीर आर्य ने श्रद्धा करवाया तथा समाप्रधान प्रो० वेरसिंह तथा धार्यसमाज बेरी की प्रधान श्रीमती प्रभात शोभा विद्यानकरता ने ऋषिबोध दिवस के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हम ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों के अनुसार धार्यसमाज के कार्यक्रम को पूरा करने के लिए शराब, दहेज आदि सामाजिक बुराईयों को समाप्त करें। सभी को धीरे से कई बार्दि से शराब बन्दी अभियान चलाया जा रहा है। अतः इस सामाजिक सर्वहितकारी कार्य में सहयोग देना चाहिए। ५० जयपाल धार्य ने भी भजनों द्वारा सामाजिक बुराईयों का सफ़्तन किया।

### २. आर्यसमाज जीन्द

ऋषि बोधोत्सव के उपलक्ष्य में आर्यसमाज रामनगर जीन्द ने अपने यहाँ तीन दिवसीय वेदप्रचार का आयोजन किया। फरवरी ११, १२, १३ को प्रातः सायं भजनोपदेश एवं वेदोपदेश हुआ। इस अवसर पर श्री जगदीशचन्द्र बसु तथा भजनोपदेशक श्री स्वयंसेवक सिन्हा केमल के व्याख्यान तथा भजन हुए। आर्यवीर दल के आर्यवीरों ने बह-बहकर भाग लिया। मन्थलपति श्री कर्णसिंह धार्य नगरनायक श्री दलवीरसिंह आर्य धीर कोषाध्यक्ष श्री मोहनसिंह आर्य तथा आर्यसमाज रामनगर जीन्द के प्रधान साक्षा जगन्नाथ आर्य आदि सभी अधिकारियों ने इस आयोजन में तन, मन, बल का पूरा योगदान दिया।

### ३. कालावाली मण्डी जिला सिरसा

११ और १२ फरवरी को कालावाली मण्डी में ऋषि बोधोत्सव का बड़ा सुन्दर कार्यक्रम रखा गया। हुनर यज्ञ के पश्चात् श्री योगप्रकाश शानप्रस्थी गुरुकुल बठिन्डा का "महर्षि दयानन्द जी महाराज की अनुपम देन" पर प्रवचन हुआ।

१२-२-६१ दिन मंगलवार को प्रातः दयानन्द महिला कालिज (आर्यसमाज मन्दिर कालावाली) में बुद्ध यज्ञ (जिसमें चार यजनान अपनी पत्नियोंसहित सम्मिलित हुए) के पश्चात् "महर्षि दयानन्द महाराज के उपवासों" पर अपने विचार व्यक्त किए। विद्यालय को कम्पाजों ने भजन प्रस्तुत किए।

### ४. टोहाना जिला हिसार

आर्यसमाज टोहाना (हिसार) में ऋषिबोधोत्सव बड़े ही धूमधाम से श्री नृबलाल मुन्ता प्रधान की अध्यक्षता एवं ५० धर्मप्रकाश शास्त्री की संयोजकता में मनाया गया। इस अवसर पर महर्षि दयानन्द उच्च विद्यालय के अंबुबाबा, दीपिका, मीनाबती, विनय आदि छात्राचार्यों ने अपने भाषण एवं भजन के माध्यम से ऋषि जी कीजनों पर प्रकाश डाला। आर्यसमाज के उपभोगी एवं विद्यालय के मनेवर भी योगप्रकाश ने सभी बच्चों को हस्त में दिये जिसका विवरण प्रधानजी ने किया। इस अवसर पर योगप्रकाश ने संकल्प लिया कि मैं सारा जीवन आर्यसमाज के प्रसार तथा प्रचार में लगाऊंगा। जल्द ही प्रधान जी ने धर्मवीर्य भाषण देते हुए कहा कि हम ऋषि के उपकारों को याद करते तथा उस पर चलने का प्रयत्न करें सभी हमारा जीवन सफल है।

मन्त्री

### ५. नरवाना में शोभायात्रा

ऋषि बोध दिवस के उपलक्ष्य में कन्या गुरुकुल सरल (जीन्द) के वार्षिक उत्सव पर जाते समय आर्यसमाज नरवाना, महिला आर्यसमाज नरवाना व आर्यवीर दल नरवाना ने प्रधान धार्यवीर दल नरवाना श्री राधाकृष्ण धार्य की अध्यक्षता में एक विशाल शोभायात्रा का आयोजन किया। यह शोभायात्रा स्कूटरों व फीरोक्रीडरों में सवार

शहर के मुख्य बाजारों के होती हुई तथा आर्यसमाज के मन्त्री श्री प्रिनलकुमार धार्य, उपप्रधान धार्यसमाज व शासनायक धार्य वीर दल नरवाना श्री विजयकुमार गुप्त, उपप्रधान आर्यसमाज व नगर नायक धार्यवीर नरवाना श्री जोगीराम मुन्ता, अभियंके धार्य, गोविन्द राम तायल, कोषाध्यक्ष आर्यवीर दल नरवाना व श्री नरेन्द्रकुमार सदस्य धार्यवीर दल ने 'धार्यसमाज अमर रहे', 'श्रीमती दयानन्द की जय'। वेद की प्योति, जगती रहे। धारि नाना प्रकार के नारों से सारा शहर नरवाना व पास के गाव वेनरखा, हमीरगढ़ व सरल को कुछ समय के लिए गुंजाया व दर्शकों पर आर्यसमाज के प्रति काफी अच्छा प्रभाव पड़ा। शोभायात्रा में आर्यसमाज के भूतपूर्व उपप्रधान श्री ओंकार जी भी शामिल थे।

यात्रा में आगे-आगे स्कूटरों पर हाथ में बोधोत्सव धिये सूर्य श्री राधाकृष्ण जी धार्य, नरेन्द्र जी, हरीश धार्य, अरविन्दकुमार धार्य, महावीर आर्य व रघुवीर आर्य चल रहे थे।

सरल में आर्यवीर दल के सदस्य हरीश धार्य ने एक मधुर भजन व श्री विजयकुमार गुप्त ने एक भावण भी प्रस्तुत किया।

रास्ते में जाते समय पूर्व मन्त्री व आर्यनेता श्री धर्मपाल धार्य एव श्री जयगोपाल धार्य ने सभी धार्य सदस्यों को जो कि शोभायात्रा में जा रहे थे, सबको हाथ हिलाकर आशीर्वाद दिया तथा मन से इस कार्य को प्रगति की कामना की। आर्यसमाज नरवाना की तरफ से २११ रुपये कन्या गुरुकुल सरल ने दान स्वरूप भेंट किये।

अरविन्दकुमार धार्य

### ६. रोहतक

आर्य केन्द्रीय सभा की ओर से १२ फरवरी को धनधनी आर्य कन्या विद्यालय रोहतक में ऋषिबोध दिवस धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर ५० सुखदेव शास्त्री ५० रबीन्द्र विद्यालंकार आदि विद्वानों ने ऋषि जीवन तथा उन द्वारा किये उपकार के जगदों पर प्रकाश डाला। ऋषि लखर का भी आयोजन किया गया।

मेघनाथ धार्य

## आर्यवीर दल नरवाना की ओर से गर्म कम्बल वितरित

सामान्य हस्तपाल नरवाना में धार्यवीर दल नरवाना द्वारा कम्प का आयोजन किया गया जिसमें आर्यवीर दल नरवाना की ओर से स्थानीय एच. डी. एम. श्री बलवीरसिंह जी ने गर्म कम्बल वितरित किये। एवं समारोह की अध्यक्षता धार्यसमाज नरवाना के मन्त्री श्री अनिल धार्य ने की।



नरवाना में आर्यवीर दल द्वारा हस्तपाल में निर्धन रोपियों को कम्बल वितरित करते हुए धार्यसमाज के मन्त्री श्री अनिल धार्य आदि।

## भारतों में लड़कियों के नाच पर पाबंदी

हासि, १० फरवरी (निः)। स्थानीय पंजाबी समाज ने भारतों में लड़कियों के नाचने पर पाबंदी लगा दी है। पंजाबी नेता जामचंद सेठी ने बताया कि भारतों में लड़कियों का नाचना पंजाबी संस्कृति नहीं है।

पंजाबी समाज में फैल रही कुरीतियों के सुधार के लिए युवकों ने पंजाबी सुधार बोधार्थ गठित किया है।

दैनिक ट्रिब्यून

## गुरुकुल आमसेना का महोत्सव एवं बुद्धि कार्यक्रम सम्पन्न

२६-२७ जनवरी ६१ को गुरुकुल के २३ वें महोत्सव में श्री स्वाधी दिव्यानंद जी, महात्मा प्रेमप्रकाश जी आचार्य हरिदेव श्री ओमप्रकाश वर्मा श्री ईश्वरिणियर त्रियवल दास जी, श्री रामदेव धार्य आदि अनेक विद्वानों के उपदेश तथा कई विविध सम्मेलनों का आयोजन हुआ। व्यायाम सम्मेलन में डॉ० कुजरेव नैष्ठिक का प्रभावशाली प्रदर्शन हुआ।

श्री महात्मा प्रेमप्रकाश जी अध्यक्षता में पुनर्मिलन (युद्धि) कार्यक्रम हुआ इसमें दस ईसाई परिवारों के ६०-६२ लोगों ने वैदिक धर्म की शोधा ली।

## जीन्ड में प्रभात फेरी का आयोजन

फरवरी १२, श्रुतिबोधोत्सव के उपलक्ष्य में जीन्ड की सभी समाजों द्वारा संस्थाओं एवं धार्यगौर दल की ओर से एक संयुक्त प्रभात फेरी का आयोजन किया गया। प्रभात फेरी प्रातः ५ बजे धार्यसमाज मंदिर जीन्ड शहर से प्रारम्भ हुई तथा नगर की प्रमुख सड़कों एवं मुख्य-मुख्य गलियों में से होती हुई धार्यसमाज मंदिर रामनगर जीन्ड में समाप्त हुई।

६०-६० की संख्या में आय नर-नारी वैदिक धर्म, महर्षि दयानन्द, धार्यसमाज मातृभूमि आदि के व्यकारे लगाते हुये मधुर भजन गाते हुए गलियों में विचरण कर रहे थे जिसका अच्छा प्रभाव पड़ा। वेद प्रचार मण्डल बिना जीन्ड के प्रजनोपदेशक महात्म्य चन्द्रमाल जी धार्य अपने मन्त्री के साथ प्रोजेक्सी गेट गाते चल रहे थे। धार्य गौर दल के उत्साही सैनिकों ने भी भरपूर सहयोग किया। इस प्रकार धार्यसमाज मंदिर शहर, धार्यसमाज रामनगर जीन्ड, धार्य समाज जीन्ड जन्मन धार्य प्राथमिक पाठशाला जीन्ड शहर, वेद प्रचार मण्डल/बिना जीन्ड धार्य गौर दल जीन्ड, ने अपने प्रयासों से प्रभात फेरी को सफल बनाया।

प्रो० ओमकुमार धार्य

०—०

# गुरुकुल

## कांगड़ी फार्मसी की

### आयुर्वेदिक औषधियां सेवन कर स्वास्थ्य लाभ करें

**गुरुकुल**

**कथं चला प्रोवा**  
 पूरे जीवन के लिए शक्तिपूर्वक एवं शारीरिकक स्वास्थ्य।  
 शांति, उन्नत व शारीरिक एवं केंद्रकों की सुस्थिति में उपलब्धी आयुर्वेदिक औषधीय द्रव्य।





**गुरुकुल च्यवनप्रश**  
 हीम व मनुष्यों के समस्त रोगों से निवारण-पाथीय के लिए उपलब्धी आयुर्वेदिक औषधि।



**गुरुकुल चाय**  
 दुबला व इन्जन्तुरा आदि रोगों की शक्ति से बनी लाभकारी आयुर्वेदिक औषधि।



**गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी हरिद्वार (उ० प्र०)**

## गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी

हरिद्वार

की औषधियां सेवन करें।

शाखा कार्यालय

६३ गली राजा केदारनाथ,  
 जाबड़ी बाजार, दिल्ली-६

स्थानीय विक्रेताओं एवं सुपर बाजार से खरीदें

फोन नं० २६१८७१

शाखा कार्यालय : ६३, गली राजा केदारनाथ  
 जाबड़ी बाजार, दिल्ली-११०००६

जब की जरूरत है तो

धार्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदवत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिदिंग प्रेस के लिए सबहितकारी मुद्रालय रोहतक में छपवाकर सबहितकारी कार्यालय १० जगदेवसिंह सिद्धान्ती बवन, बयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।



प्रधान सम्पादक—पूर्वसिंह सभामन्त्री

सम्पादक—वेदव्रत सारस्वती

सहसम्पादक—प्रकाशजीव विद्यानकार एम० ए०

वर्ष १८

अंक १५

२८ फरवरी, १९६१

वार्षिक मूल्य ३०)

(आजीवन मूल्य ३०१)

विदेश में ८ पौंड

एक प्रति ७५ पैसे

सत्याग्रहकास समुच्चय ६

## विद्या और अविद्या

(डा० नुरेमाचन्द्र वेदासंकार एम० ए० आर्यसमाज गोरखपुर)

विद्या चाञ्चिका च वस्तुतद्बोधोयं पितृह ।

अविद्याया मृत्युं शीतार्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते ॥ यजु० अ० ४०। म० १५  
स्वामी जी महाराज ने सत्याग्रहप्रकाश में इसको व्याख्या करते हुए लिखा है जो मनुष्य विद्या या अविद्या के स्वरूप को साध ही साध जानता है वह अविद्या अर्थात् कर्मापासना से मृत्यु को तर के विद्या अर्थात् यथार्थ ज्ञान से मोक्ष को प्राप्त होता है ।

यहाँ हमारे सामने पहला प्रश्न यह उपस्थित होता है कि विद्या क्या है? अविद्या क्या है? मृत्यु से मोक्ष और उपदेवक भी विद्येय रूप से यज्ञोपवेशक अपने गाने के साथ मञ्ज गाने हुए अविद्या का अर्थ अज्ञान कर देते हैं । परन्तु अज्ञान से मृत्यु तरना कैसे संभव है? अतः हमें इस अर्थ को समझने के लिए विद्या और अविद्या को समझना होगा ।

अविद्या का अर्थ है कर्म और विद्या का अर्थ है ज्ञान । नारायण स्वामी जी महाराज ने अपनी 'ईशोपनिषद्' की व्याख्या में लिखा है कि विद्या का सीधा अर्थ ज्ञान है और आत्मा के दो गुण प्रयत्न—कर्म और ज्ञान दोनों होने से विद्या का विपरीतायं कर्म ही हुआ । उन्होंने ज्ञान और कर्म का समन्वय किया है । ज्ञान के बिना कर्म अर्थात् आत्मा ही जाता है और कर्म के बिना ज्ञान लंगडा ही जाता है । जब दोनों का समन्वय होता है तभी मनुष्य का जीवन सफल होता है ।

अविद्या का अर्थ भौतिक ज्ञान और विद्या का अर्थ धार्मिक ज्ञान माना है । उनका कहना है कि जो अविद्या अर्थात् भौतिकज्ञान की उपासना करते हैं वे केवल उसकी उपासना से गहन अन्धकार में पहुँच जाते हैं । और जो विद्या अर्थात् जो अध्यात्मवाद में रत रहते हैं भौतिक ज्ञान की परवाह ही नहीं करते वे उससे भी अधिक गहन अन्धकार में चले जाते हैं ।

इस भौतिकवाद और अध्यात्मवाद के अतिरिक्त अविद्या या विद्या के और भी अर्थ किए हैं । अविद्या का अर्थ मुष्टि विद्या, प्रकृति विज्ञान, भौतिक विज्ञान है तथा विद्या का अर्थ ब्रह्मविद्या, धारमविद्या या अध्यात्मविद्या किया है । वास्तव में भौतिकवाद और अध्यात्मवाद अर्थ कल्पनावादी से उनका अर्थ मिलता ही है ।

महर्षि वेदान्त ने सत्याग्रहप्रकाश में इस उपर्युक्त अर्थ का अर्थ लिखते हुए बताया है— जो मनुष्य विद्या और अविद्या के स्वरूप को साध ही साध जानना है वह अविद्या अर्थात् कर्मापासना से मृत्यु को तर के विद्या अर्थात् यथार्थ ज्ञान से मोक्ष को प्राप्त होता है । आगे सत्याग्रहप्रकाश में स्वामी जी ने पाठवन्ध २० साधन पाद । सू० ५ दिया है—

'अनित्यायुषिःकालानामसु नित्यसुखिचारमस्यातिविद्या'  
अर्थात् अनित्य अर्थात् दुःख और अनात्मा में नित्य पवित्र सुख और आत्मा की प्रतीति ही अविद्या है ।

अनित्य को नित्य समझने का अभिप्राय यह है कि यह मेरा शरीर नित्य रहेगा, यह मुष्टि, शक्ति वन से संचित राज्य, यह वैभव, यह अमृत सम्पत्ति मेरी है और सदा रहेगी ऐसा जो मिथ्याज्ञान है, वह

अविद्या है । इस अविद्या से बहुत से लोग अन्धकार में पड़ते हैं ।

अधुनि, अपवित्रता ही अविधि है, अपवित्र मनुष्य को पवित्र समझ लेना अविधि है । अपने को चमड़ी उखेर कर देखिए इसके नीचे खून, मज्जा, शीश और मलमूत्र भरा पत्रा है । प्राणिव, यह शरीर मल मूत्र का समुदाय ही तो है परन्तु इसको सदा और दूबरे स्त्री या पुरुष को प्रेम के नाम पर प्राप्त करने के बाद यौन की इच्छा अविद्या ही है । इसको लेकर दूबरी का वच करते हैं । मूठ नोलते हैं । मलमूत्र, पाँसमलम, सिनेमा, कंबरे नृत्य और न जाने किन-किन, चयंकर कृत्यों में लीन हो जाते हैं । मत्तु हरि जी के जीवन की एक इच्छा है । एक बार वे अपने महल से घाम के पु बल्के में घूमने के लिए निकले । उन्होंने चन्द्रमा की किरणों के पड़ने से अन्धकार पदायं को देखा । उन्होंने उसे हीरा समझा मूठ कर बो उठाया तो देखा कि ज्वलंत हाथ पान की फेंकी हुई पीक से सन गया है । इसी समय उन्हें ज्ञान हुआ कि 'हित्कम्यमनेन प्रायेण सत्यस्यापिहितं मुल्यं' सत्य का मुल्य धर्मकीसे पदायं से उका हुआ है । यह एक अविद्या का रूप है ।

इसी प्रकार मत्तु हरि जी का एक मूबती से प्रेम होयगा । उन्हें कहीं से एक सुन्दर सोने का फल मिला । उन्होंने वह फल अपनी प्रेमिका को दे दिया । प्रेमिका किसी और को बाहरी को उसने वह उसे दे दिया । उस प्रेमो ने अपनी प्रेमिका को दिया, मत्तु हरि जी को पहुँचा दिया । यह सब देख जानकर मत्तु हरि जी को यह भी अविद्या प्रतीत हुई और उन्हें बरायत हुआ । उन्होंने बरायत धतक मुलक लिखा । उसका प्राश्नक इतो ही हुआ—

या पित्तयाभि संपातं मधि सा विरसता,  
साध्यव्यामिच्छति जने स जनांजससतः ।

अस्मकृतेऽपि पतिच्छति कापि अम्या  
भिकु तां च त च मदन च इमा भ मां च ।

कहते हैं कि मैं विद्यते बाह्यात्मा वा नह मुझे विरसता हीकर दूबरे को बाह रही को । वह किसी दूसरी से उंला था और वह मुझे प्रेम कर रही को । मत्तु हरि जी के मुल से निकल पड़ता है कि उसको विष्कार है, उस पुरुष को विष्कार है, कामदेव को विष्कार है । मुझे प्रेम करने वाली को विष्कार है और मुझे भी विष्कार है । यह भी अविद्या का रूप है ।

अविद्या का तीसरा रूप दुःख है । संसार के विषय दुःख ही है, परन्तु इन विषयों की प्रति के लिए मानव इतना विरत ही जाता है कि उनसे निकलना कठिन ही जाता है । काम, मोक्ष, मोना, मोह, भोक ईर्ष्या, द्वेष आदि ऐसे विषय हैं जिन्हें मनुष्य सुख समझता है और वे वास्तव में दुःख के कारण होते हैं ।

अविद्या का चौथा रूप अनात्मा में आत्मसुद्धि कर लेना है । अनात्मा को आत्मा समझकर विषय में अतिधाम्क अत्यंत पापों में लीन है । शरीर को आत्मा मानकर, सब आत्मा की पूजा जोडकर उसे पूजित कर रहे हैं ।

(अन्तः)

॥ १०॥

## तेरी शरण सुखमय है ।

ओं देवानामसि मिमो अद्भुतो  
वसुधैवकुतमसि चारुधरः ।  
समस्तस्थान तव समस्तभजे  
अने सख्ये मा रिषामा वचं तव ॥ स० १-१४-११  
अतिरूपं त्वं प्रभुवर मेरे  
देवों में हो देव महान् ।  
मित्रों में भी मित्र अनुपम  
सभी बनो के परम निधान ।  
विश्वयज्ञ के यात्रक हो तुम  
शरण तुम्हारी दीर्घ-जितान ।  
परम सखा तुमको शरकर हय,  
कभी न होवे सब क्षयमान ।

॥ १८ ॥

## देव हमें ऋजुपथगामी करें ।

ओं देवानां भद्रा मुमतिर्ऋजुपथात्  
देवानां रातिरधि नो निवतताम् ।  
देवानां सख्यमुपरोधिमा वयं  
देवान् न ज्ञायुः प्रतिरन्तु जीवसे ॥  
दिव्य गुणाकर ज्ञानी जन जो  
देवें हमें मुमति का दान ।  
मित्र समान वने हम उनके  
होवे सत्य में गनिमान ।  
दिव्य सम्पदा जो जगती की  
होवे हम पर वृष्टिमान ।  
चिर जीवन पावें सुखकारी  
सत्तल सुनाम मग में चिरदान ।

॥ १९ ॥

## वरुण हमारे पाप क्षम्य हों ।

ओं प्रतिकेचं वरुण देव्ये जने अभिद्रोहं अनुष्ण्यारुणायति ।  
अपिती यतवद्वयं सुयोपिम मा नस्तस्मान्निवसो देव रीरिष्यः ॥  
ॐ ७७-६६।। अर्थव. ६-११-२

राक्षसों के भी राजा तुम,  
जन हो दिव्य वरुण क्षममान ।  
तेरे नियम प्रदत्त हैं, प्रभुवर ।  
जय के कृण-कृण में अधिमान ।  
हम अल्पक्ष भीव अल्पत से  
करते तव आज्ञा क्षयमान ।  
कृपावशय यह पाप क्षम्य हो  
जिसे होवे न दुःखमान ।

॥ २० ॥

## उसकी लीला अपरम्पार है ।

ओं बुद्धते मन उत युं जते विमो विमा विप्रस्य बृहती विपश्चिततः ।  
वि होषा दशे वसुनाविदेक इन्द्रो देवस्य सवितुः परिष्टुतिः ॥

ॐ १-४-१

महामनस्वी उस प्रभुवर की,  
महिमा देशो अरु अवार ।  
ज्ञानी जन जगती के उससे  
ज्योते मन-बुद्धि का तार ।  
सकल जनों के सत्कर्मों का  
है वह देशो जाननहार ।  
'विश्व-यज्ञ' का यात्रक है वह  
जोला उसकी अपरम्पार ।

प्र० धर्मचन्द्र, विशालकार, पलवल

## भारतीय भाषाओं के योद्धा

### पुष्पेन्द्र चौहान की सुघ ली जाए

इस देश में उग्रवाहियों एवं युद्धों की भी जेल तक में सेवा की जाती है लेकिन भारतीय भाषाओं के विकास के लिए विगत अनेक वर्षों से बरनों प्रवर्धनों और अनसनों द्वारा यत्नशील, होहार युवक, प्रसिद्ध भारतीय भाषा संरक्षण संगठन के संस्थापक प्रभाष श्री पुष्पेन्द्र चौहान की विल्लो स्मित राममनोहर लोहिया अस्पताल में भी उचित देखभाल नहीं की जा रही है । यह अत्यन्त बेवजनक है । उक्त सख्य रोहतक नगर के प्रबुद्ध नागरिकों तथा भारतीय भाषा सेवकों की गोष्ठी में भारत युव सच के अध्यक्ष श्री महावीरसिंह कोणट ने कहे ।

श्री कोणट ने कहा कि स्थापना राष्ट्र में प्रत्येक नागरिक का यह जन्मसिद्ध अधिकार है कि वह हर स्तर पर राष्ट्रभाषा या मातृभाषा का प्रयोग कर सके लेकिन कौसी विरुध्मना है कि ४४ वर्ष की सम्मती स्थापनता के बाद भी आज भारतीय भाषाओं के विकास के लिए प्रबुद्ध युवकों को बहरी व यूंजी संसद को सुनाने के लिए संसद की दशकदीर्घा पर से नीचे छलायें लगाने पर मजबूर होना पड़ रहा है ।

स्मरण रहे पुष्पेन्द्र चौहान तथा उनके सहयोगी लगातार २ वर्ष से सच लोक सेवा आयोग के सामने प्रार्थनों की परीक्षाओं में भारतीय भाषाओं के माध्यम की भी छुट दिलाने के लिए बरना लिए हुए हैं । इन्होंने तब वचं महीना भर अनसन भी किया था तथा सरकारी आशवासन के बाद ही बत तोड़ा था । सरकार ने सतीशचन्द्र कमेटी भी इसके लिए गठित की थी । कमेटी ने रिपोर्ट भी दे दी थी लेकिन उसे दबाया हुआ है । लगभग ४०० संसदों ने भी हस्ताक्षर करके माध्यम में छुट देने की बात कही है । १८ जनवरी १९६० को संसद में भी ऐसा संकल्प पारित हुआ था इस सबके बावजूद भी जब बात मिनरे न चढ़ती दिखाई पड़ी तो गत ११ जन १९६१ को निराशा व भावावेश में ऊँचे श्री पुष्पेन्द्र चौहान संसद की दशकदीर्घा से नीचे ढूँढ पड़े थे । उन्हें काफी चोट आई है लेकिन बहरी और यूंजी संसद एवं सरकार के काम पर जूँ तक नहीं रेंग रही हैं । युवकों को एक ओर शराब और प्रश्लीलता फीकाकर चरित्र भ्रष्ट किया जा रहा है तथा दूसरी ओर उन्हें अपनी भाषा में शिक्षा व रोजगार प्राप्त करने के अधिकार से वंचित रखकर उसके अर्थव्यय को विगाड़ा जा रहा है । जो चार प्रतिशत लोगों की संतुष्टि के लिए ८० करोड़ बनता पर अंग्रेजी की अनिवायता का कहर डाला जा रहा है । उन्होंने कहा कि सभी सरकारें शराब प्रश्लीलता और अंग्रेजी की बढ़ती में एक मत रही पिछाई पड़ती हैं । ४४ साल से हिन्दी-हिन्दी चिल्लाकर हिन्दी को ही नहीं सच्ची भारतीय भाषाओं की दबाया जा रहा है । देश विदेश में जनता को भ्रष्ट बनाये के लिए अरबों ६० हिन्दी विकास के नाम पर व्यय किए जा रहे हैं लेकिन अवन पंदा होता है कि हिन्दी को उल्टा स्थान क्यों नहीं मिल रहा है ? यदि एक प्रान्त हिन्दी विरोध करता रहे तो पूरे देश पर अंग्रेजी की धोप रचना कहां की बुद्धिमता है ? सरकार पदेन ने तो ६०० के लगभग बिद्रोही रियासतों को भी कुछ बितों में ही भारत में बिलय के लिए बना लिया था लेकिन परवर्ती नेता राष्ट्रभाषा के प्रथम पर ४४ साल के लम्बे अलमल के बाद भी एक दो प्रान्त को नहीं संना सके ।

इस प्रकार अंग्रेजी आराम से बढ़ती रहेगी । यदि हम हिन्दी को इस प्रकार प्रस्तुत न करके प्रान्तीय भाषाओं और संस्कृत को महत्त्व देते तो हिन्दी आज तक बिन कड़े राष्ट्र भाषा बन गई होती । गोष्ठी में समाहावाय विद्वाय परिवर्ध के अध्यक्ष श्री श्रीधरप्रसाद अग्रवाल, श्री प्रदीप जैन, आर्यप्रतिनिधि सभा हत्याणा के प्रचार मंत्री श्री सत्यवीर शास्त्री, श्री सर्वजोत सांगवान आदि ने भाग लिया । गोष्ठी में अतिरिक्त हर स्तर पर भारतीय भाषाओं के माध्यम की (अंग्रेजी के स्थान पर) छुट देने के लिए तथा संकल्प अनिवार्य करने के लिए तथा राष्ट्रपति द्वारा किसी भी भारतीय भाषा में राष्ट्र संबद्ध सम्बन्धी प्रस्ताव पारित किए गए ।

## आर्यसमाज कंवारी के वार्षिकमहोत्सव

### का अद्भुत दृश्य

आर्यसमाज कंवारी वि० हिसार का वार्षिक महोत्सव दिनांक १५-१६-१७ फरवरी को ईश्वर कृपा एवं विद्वानों के आशीर्वाद से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर निम्न विद्वान् पक्षारे सर्व शी स्वामी सर्वदानन्द जी, स्वामी जगत् मुनि, स्वामी धर्मनिदेश भीष्म, वि० भगवानदास आर्य, प्रो० भोमकुमार आर्य, व्याकरणचाय देवानन्द शास्त्री, श्री महावीरप्रसाद प्रभाकर, श्री प्रतापसिंह शास्त्री, श्री जयसिंह जी योगी, विदुषी बहल आचार्या सुनीति धार्या तथा कुमारी नीलम एम० ए०, स्वतन्त्रता सेनानी श्री मानसिंह डांडा आदि विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से राष्ट्र रसा, गो रसा, हिन्दी रसा, नारी शिक्षा, अन्ध विश्वास, पत्थर पूजा व्यर्थ, आर्यसमाज का इतिहास, आर्यसमाज क्या है? क्या चाहता है? नवयुवकों का चरित्र निर्माण कैसे हो? अर्थापकों के कर्त्तव्य, महर्षि दयानन्द जी का जीवन एव सर्वहितकारी कार्यक्रम तथा शरावबन्दी पर विस्तार से विचार रखे। साथ में सरकार की शराव बढ़ाना नीति को सभी वक्तवाओं ने घोर नोन्दा की। प्रातः हवन पर १०-१५ निष्ठावान नवयुवकों ने जनेऊ शरण किये तथा मविध्य में जीवन में कोई भी गलत कार्य न करने का व्रत लिया।

इसके अतिरिक्त प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं० ईश्वरसिंह तूफान, पं० विष्णुविभ, महाशय धर्मवासिंह भालोटिया, महाशय धर्मसिंह, महाशय फूलसिंह, महाशय मनसाराग धारि के समाज सुधार के शिक्षा प्रद क्रांतिकारी भजन हुये।

आर्यसमाज कंवारी के प्रधान श्री अतरसिंह आर्य क्रांतिकारी ने १६-२-६१ को हवन पर नवयुवकों को आह्वान करते हुये अपने कर्त्तव्य की याद दिलाई तथा सच्चे आर्य वीर क्रांतिकारियों के कार्यों का इतिहास ब्रह्मराम। स्पष्ट शब्दों में कहा कि हमारा उत्सव सभी सफल होगा जब हम अपने गांव में अर्ध शराब की विक्री को रोकें तथा गांव में प्रत्येक बुराई का विरोध करें। यचना यह उत्सव ढींग बनकर रह जाएगा। हम धर्मों पर महर्षि का ऋण है। चाहे कितना भी ऋण आए हमें निस्वार्थ-भाव से नेक कार्य करने ऋषि ऋष्य चुकाना है। प्रातः १०-२-६१ को हवन पर कालेज में पढ़ने वाले विद्यार्थियों ने यज्ञोपवीत लिये। उसी समय हूँती से एक जीप अर्ध शराब के शराब के ऋण डालने आई। क्रांतिकारी ने तुरन्त नवयुवकों को आदेश दिया। सब वक्तवाओं को एकदो घोर सारी बोलने फोड़ दी। तब नवयुवक एवं दृक्ती अर्ध जीप पर दृष्ट पड़े, सँकड़ों बोलवें जमीन पर पटक कर फोड़ दी। विद्वानों के हस्तक्षेप से जीप जलने से बच गई। जीप के ड्राइवर को एक षट्टे सभा में बँठाकर प्रचार सुनाया। एक उनका साथी भाग गया। प्रधान जी ने उसे नेतावनी दो की अगर दुबारा ऐसी हरकत की तो जीप जला देंगे और तुम्हें इस नीक के पेट से बाँधकर पीटेंगे। सारे गांव में सुधी की सहार दोह गई। गांव की महिलाओं एव बुजुर्गों ने इस अर्ध कार्य के लिए आर्यसमाज कंवारी की सहारना की। कुछ बूझों के घरों में आतम छा गया।

इसबार उत्सव में गांव के अतिरिक्त जिंसा हिसार आर्यसमाज के प्रधान सेठ रामधारी मल, आर्य केन्द्रिय आर्य सभा हिसार के प्रधान श्री हरमन्साहाल कपूर, वैदिक पारंपारिक संस्था सभा के प्रधान श्री बुलीसाहा सम्बा तथा प्रोपर्टी डीलर श्री सुभेस सिंघल आदि महानुभाव अपने साथियों सहित अपने निजी बाहन लेकर उत्सव पर पक्षारे। श्री सिंघल ने ऋषि तंत्र का लखें दिया तथा आर्यसमाज मन्दिर बनवाने हेतु आर्थिक सहयोग देने का वचन दिया। विद्वानों को देशो भी का हलवा बिलयाया गया। लोगों ने बड़ी श्रद्धा से विद्वानों की बाते सुनीं तथा दिन लोलकर दान दिया। सभा को ५०० रु० दान दिया गया।

डा० ओमप्रकाश आर्य मन्त्री आर्यसमाज कंवारी

☞ चेहरे की शार्द्यों व मूहासों का हूर करने के लिए बही में गीहू तथा सँदरे के श्लिष्कों का सूखा पाउचकर, पोडा मेहन तथा गुलाब जल मिसाकर चेहरे का उद्वदन करने से फायदा होता है।

## धरम के ठेकेदार

ठेक—रिखत को वे ले लेकर के दे देते हैं मुक्तिद्वार।  
वे हैं धरम के ठेकेदार।

जन्म से जाति वतारक बुद ही सब उच्छ कहलाते हैं,  
जिसका मांगकर साते उसके घर पर मही वे लाते हैं।  
नित ही सफाई सेवा करता, करते उससे पूजा अपार,  
वे हैं धरम के ठेकेदार।

दो-दो बार पकाने पर भी कच्चा उसे बताते हैं,  
देशी घी में अगर पका दो, बड़े चाव से खाते हैं।  
भोटे पकवानों को सलके आ जाती है मूठ में लार,  
वे हैं धरम के ठेकेदार।

सध्या हवन-यज्ञ कभी न करते न करवाते हैं,  
वेदों का ये नाम न जाने, पण्डित जी कहलाते हैं।  
करम-विना वे "राम-राम" कहते से करते वेडा पार,  
वे हैं धरम के ठेकेदार।

अगर कही कोई भर जाता तो तेरही करवाते हैं,  
ब्रह्मोज के नाम पे लुद ही, भर-भर पेट वे लाते हैं।  
दु-खी जनों से गळ मांगकर करते हैं वंतिरणी पार,  
वे हैं धरम के ठेकेदार।

छुआऊन अर पाखण्डी ने बुरी तरह से घेरा है,  
यही अवस्था रही तो इकदिन लूटा ही भारत मेरा है।  
कृष्णपारसिंह इन्हे सभाजो, दो लाठी-डण्डों की मार,  
वे हैं धरम के ठेकेदार।

ये—कृष्णपालसिंह शास्त्री

आदर्श मुक्तक वीरक माध्यमिक विद्यालय  
सिंहपुरा, रोहतक

## वैदिक प्रचार मण्डल अम्बाला छावनी में ऋषि बोध पर्व

वैदिक प्रचार मण्डल अम्बाला छावनी के तत्त्वावधान में ऋषि बोध पर्व बड़े उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। समारोह के अव्यल पद से मोलते हुए आयवम्बु जी सतीश मितल मध्यम हरियाणा साक्षी प्राभोयोग बोर्ड ने ऋषि के बताये मांय पर चलने तथा आर्यसमाज के प्रचार को प्रागे बढ़ाने का आह्वान किया। इस अवसर पर नगर पालिका पापंद डा० कुलनूपच हरबाई, प्रो० नरेश वत्तरा तथा ब्रह्मचारी शमप्रकाश जी ने भी अपने विचार रखे। भजनोपदेशक श्री दादुबवाल जी ने भजनों से श्रोताओं को मनमगुध कर दिया। इस अवसर पर धीमयी लाजबन्ती बाठला ने ५,००० रुपये तथा श्री वेदप्रकाश जी शर्मा ने ५०,००० रुपये प्रकृ देने की घोषणा की। मण्डल के मन्त्री ने मण्डल का सफल संचालन किया तथा सभी का सन्तुष्टा किया। शान्ति पाठ एवं प्रसाद वितरण के बाद पर्व कार्य समाप्त हुआ।

कृपया निर्माण कार्य में अधिक से अधिक दान भेषकर कार्य को पूरा कराने में सहयोग दें।

वेदमित्र हापुड वाले, मन्त्री  
७२ बी, गोविन्द नगर अम्बाला छावनी

सम्पादक के नाम पर

## संग्रहणीय-विशेषांक

सर्वहितकारी का ऋषि बोध विशेषांक प्राप्त हुआ। विशेषांक वास्तव में काफी सुन्दर एवं आकर्षक था। इसमें सभी लेख शिक्षाप्रद एवं प्रेरणादायक हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती के सम्बन्ध में देव सारी सामग्री पढ़ने को मिली। इस पत्र के विशेषांकों की बड़ी वृद्धि रहती है। यह भी अपनी उद्यो शत के अनुकूल निकला है। अतः पत्रिका का यह बंध सभी दृष्टियों में उत्तम तथा सग्रहणीय रहा है। विशेषांक की सफलता के लिए बचाई स्वीकार करें।  
रामकुमार आर्य



## पानीपत में शिवरात्रि सप्ताह

याम केन्द्रीय सभा पानीपत की ओर से २१-२१ से १०-२-६१ तक शहर में प्रभात केरियां निकाली गईं। १० फरवरी को आर्य सौम्यार सेकेण्डी स्कूल में ऋषि भिसे का आयोजन किया गया। भवजा रोहण श्री रामानन्द सिंगल प्रधान केन्द्रीय आर्यसभा ने किया। बच्चों एव वृद्ध महिलाओं के आकर्षक खेल हुए। १२ फरवरी को शोभायात्रा निकाली गई जिसका नेतृत्व श्री रामानन्द जी एवं श्री राममोहनराय मंत्री आर्यकेन्द्रीयसभा ने किया। शिवरात्रि के दिन १३ फरवरी को आर्यसभाज वडा बाजार में मुख्य समारोह मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता श्री बलवीरपालसाह विचार्य पानीपत ने की। उसी समय उनका यज्ञोपवीत संस्कार कराया गया। यज्ञोपवीत संस्कार श्री शिवकुमार शास्त्री ने कराया। उन्होंने शपथ की कि जीवनभर यज्ञोपवीत नहीं उतारूंगा। मुख्य अतिथि के तौर पर श्री अनन्तकुमार दुल एस. पी. पानीपत जिस्सा ने की और विजेताओं को पुरस्कार दिये। मुख्य वक्ता श्री सोमभाई विद्यालंकार ने ऋषि भौवन पर प्रकाश डाला।

## 'सर्वहितकारी' के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से

### सम्बन्धित विवरण

काम-४ (नियम ८ देखिये)

- १ प्रकाशन स्थान
- २ प्रकाशन अवधि
- ३ मुद्रक का नाम
- क्या भारत का नागरिक है ?
- पता
- ४ प्रकाशक का नाम
- क्या भारत का नागरिक है ?
- पता
- ५ सम्पादक का नाम
- क्या भारत का नागरिक है ?
- पता
- ६ उन व्यक्तियों के नाम व पते जो सम्पादन-पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पृष्ठी के एक प्रतिगण से अधिक के सम्प्रेषणार्थ या हिस्सेदार हों।

में वेदवत शास्त्री एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

प्रकाशक के हस्ताक्षर  
वेदवत शास्त्री

## श्री दानीराम जी का देहावसान

श्री सेठ दानीराम जी डाकला निवासी का भ्रमणक हृदयगति रुकने से देहावसान २९-१-६१ को प्रातः ६ बजे होगया उनको प्रायु ६२ वर्ष की थी। वे नित्य यज्ञ तथा गीता पाठ करके भोजन किया करते थे। वे उबार हृदयदानी थे। कृत्कता, बन्धन, सोनीपत, डाकला में उनको बनाई धर्मशास्त्रियों तथा मन्त्रिज उनके कार्य को दिखा रहे हैं। हैदराबाद सत्याग्रह में पांच सत्याग्रहियों का म्यय दिया था। जेल में रहते तक भी परिवार को सहयोग देने का वचन दिया था। उसी समय इस धार्मिक युद्ध को सफलता हेतु दैनिक यज्ञ शुरु किया था। यह पवित्र कार्य अन्तिम दिन तक चलता रहा। प्रायु त्यागने वाले दिन भी नित्यकर्मों के बाद ही शरीर छोडा। इस पवित्र आत्मा के परिवारवालों को उनके दुःख सहन करने की शक्ति दे तथा पवित्र आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

दीपचन्द्र  
श्री पीट-कासनी

## जिला वेदप्रचार मण्डल महेन्द्रगढ़ में

### वेदप्रचार

गत मास ६ जनवरी से सभा की ओर से स्वामी देवानन्द जी की भवनमण्डली तथा आर्यसमाज नारनौल के पुरोहित पं० महावीर आर्य जिस्सा महेन्द्रगढ़ के शर्मों में वेदप्रचार, यज्ञाति का कार्यक्रम कर रहे हैं। शर्मों में भी भारी संख्या में नर-नारियों ने दैनिक धर्म प्रचार से लाभ उठाया। यज्ञ पर नवयुवकों तथा नवयुवकियों को यज्ञोपवीत धिये और उन्हें धूपपान, शराव, मांस खादि से दूर रहने की प्रेरणा दी। याम मुकुन्दपुरा, डीसरो, मडाग, खानपुर, बलाहा, तिगरा, भौडीकला, सुगिड्या, अखराना, नामसराणा, गुवा आदि में सफलता पूर्वक प्रचार सम्पन्न हुआ। सभी शर्मों में प्रातः यज्ञ तथा सायंकाल सामूहिकरूप में सन्ध्या करवाई गई।

वेदप्रचार मण्डल के सयोजक पं० ताराचन्द्र कार्य एव सहसंयोजक मं० ताराचन्द्र आर्य के मार्गदर्शन में फरवरी मास में भी वेद प्रचार कार्यक्रम सफलतापूर्वक चल रहा है। इसका विवरण आगामी प्रक में प्रकाशित किया जावेगा।

मन्त्री आर्यसमाज नारनौल

## घरोपेडा में ऋषिबोध दिवस

१३ फरवरी को घरोपेडा में प्रात यज्ञ की कार्यवाही के साथ ऋषिबोध दिवस मनाया गया। श्री स्वामी गोष्प के पीछ श्री शिव कुमार के भजन तथा श्री देववत आचार्य गुरुकुल गुरुनेत्र आदि के ऋषि जीवनी पर व्याख्यान हुए।

मन्त्री

## रोहतक शहर के सुधार हेतु ज्ञापन

गत सप्ताह समाजसुधार समिति लालचन्द कोलोनी रोहतक के संयोजक श्री धर्मचन्द्र जी ने एक शिष्टमण्डल के साथ रोहतक में श्री घोषप्रकाश चौटाला को ज्ञापन देकर रोहतक शहर में फैल रही गंदगी तथा प्रदूषणका की ओर ध्यान दिलाया और उनसे पक्की सड़क, सिंचनेज खादि की सुन्दर व्यवस्था करवाई जावे। रोहतक हरियाणा का प्राचीन ऐतिहासिक तथा राजनीति का प्रमुख केन्द्र है, परन्तु यहाँ नगरपालिका शहर की समस्याओं पर ध्यान नहीं दे रही।

## आर्य केन्द्रीय सभा गुडगांव का

### वार्षिक चुनाव

सर्वश्री किशनचन्द्र तुटानी प्रधान, किशनचन्द्र कोटि उपप्रधान, घोषप्रकाश कालड़ा महासम्प्री, सोवदत आर्य मन्त्री, यम्हट्टर ध्यान सुन्दर आर्य कोषाध्यक्ष, श्री प्रमोदचन्द्र शीषर भण्डारी एवं पुस्तकाध्यक्ष, गणेशवत कार्य वेत्ता निरीक्षक।

## शोक समाचार

आर्यसमाज के प्रचारक स्वामी वेदानन्द जी पुर्व की साहसवतिह भवनोपदेशक ग्राम कानीन्धा जि० रोहतक का १२ फरवरी को देहान्त होगया। उन्होंने शरीर वायु आर्यसमाज का प्रचार किया। प्रायकाल बधिक आश्रम २०वां मिनल जि० सोनीपत का संस्थापन कर रहे थे।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

केदारसिंह आर्य

## जीन्द ईकाई द्वारा आयोजित २५.१.६१ को रक्तदान शिविर

धार्मिकों वस जीव के उत्साही समाजसेवो धार्मिकों ने २५-१-६१ को रक्तदास भवन जीव में रक्तदान शिविर का सफल आयोजन किया। इस रक्तदान शिविर में ६५ आयुर्वीरों ने रक्तदान किया। आयुर्वीरों ने यह शिविर स्वेच्छा तथा स्वयंप्रेरणा से आयोजित किया था तथा जिला प्रशासन के सहयोग से यह कार्य सम्पन्न हुआ। रक्तदान महादान है, जीवनदान है तथा अत्यन्त मानवतावादी, समाजोपयोगी और राष्ट्रीय महत्त्व का कार्य है। उपायुक्त जीन्द तथा उप मण्डल अधिकारी (गा) जीन्द उपमण्डल ने आयुर्वीर दल को इस पुनीत कार्य के लिए बधाई दी तथा रचनात्मक कार्यों में दल की भूमिका को सराहना की और ऐसे कार्यों वास्ते दल को सदा पूरे सहयोग का आश्वासन दिया। श्राव्यम् है कि आयुर्वीर दल जीन्द प्रायसमाज मन्दिर रामनगर जीन्द में एक प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र भी चला रहा है जिसका अब और ज्यादा विस्तार किया जा रहा है तथा सुबह शाम तीन बार चण्डे प्रतिदिन रोगोपचार की निवमित व्यवस्था की जा रही है। धार्मिकों वस जीव के सभी अधिकारी और सासकर मण्डलपति श्री कृष्णसिंह धार्य, नगरपालय श्री दलवीरसिंह आर्य, मनमो श्री दिनेश आर्य, शिखर श्री राजवीर धार्य बड़ी मेहनत और रचि से इन कार्यों में जुटे हैं। यह हर्ष का विषय है कि आयसमाज की युवा पीढी समाजसेवा के कार्यों में रचि ले रही है। स्थानीय सभी आयसजनों, आयसस्थाओं एवं जिला प्रशासन का सहयोग एवं धार्मिकों वस आयुर्वीरों को प्राप्त है।

प्रेषक—प्रो० योमकुमार आर्य,  
आयसमाज, जीन्द

## हैदराबाद सत्याग्रहियों की एक आवश्यक बैठक

हैदराबाद सत्याग्रह के उन सत्याग्रहियों को सूचित किया जाता जिन्होंने केन्द्र से पेशान प्राप्त करने के लिए हमारे पास अपने प्रमाणित पत्र भेज रखे हैं। उनकी एक आवश्यक बैठक १०-३-६१ को ११ बजे दयानन्दमठ रोहतक में होगी। उन सभी से निवेदन है कि कालसतनामें पर हस्ताक्षर करने के लिए और बकील और दूसरे सब सबों के लिए दो हजार रुपये लेकर ठीक समय पर अवश्य पधारें, ताकि यह तीसरा मुकदमा भी सुप्रीम कोर्ट में दायर कर दिया जाये। इस तारीख के पश्चात् हम कोई मुकदमा सुप्रीम कोर्ट में नहीं करेंगे। इसके बाद तो जो भी भाई आये उनको अपना मुकदमा स्वयं सुप्रीम कोर्ट में दायर करना पड़ेगा। हम परामर्श प्राप्ति का जितना सहयोग होगा करेंगे।

जिन सत्याग्रहियों ने अभी तक हमारे पास १०-१० जेल के प्रमाण-पत्र नहीं भेजे हैं, ऐसे सब सत्याग्रहियों से भी निवेदन है कि यदि उनके पास जेल प्रमाण-पत्र मौजूद हैं और किसी कारणों से अभी तक उन्होंने हमसे सम्पर्क नहीं किया है और भारत सरकार से सम्मान पेशान प्राप्त करना चाहते तो ऐसे सब सत्याग्रही भाई भी १०-३-६१ को यहाँ आकर इस तीसरे केस में सम्मिलित हो सकते हैं। ऐसे सब भाई भी बकील बर्परह के लिए दो हजार रुपये साथ लावें।

भबदीय

संयोजक, हैदराबाद स्वतन्त्रता सेनिक सम्मान पेशान समिति

## शोक प्रस्ताव

आनन्दप्रिय जो (आता जो) का स्वर्गवास दि० १६-१-६१ को उनके निवास स्थान बड़ोदा में होया है। आने भ्रमणें जीवनकाल में आर्यजगत् व शिक्षा-संस्थाओं की तन-मन वन व सगन से जो सेवा की है वह अनुकरणीय है। स्वामी दयानन्द जी महाराज की जन्म-भूमि में स्मारक बनवाने में उनका महत्वपूर्ण योगदान है। श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा के वे प्राण वे।

बोधप्रकाश शारंगी

## धूम्रपान पर प्रतिबंध की मांग

कुश्नै, २५ फरवरी (गन्हा) : इन्डियन मेडिकल एसोसिएशन ने लोगों की सेहत के दृष्टिगत धूम्रपान पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाने की मांग की है। इन्डियन मेडिकल एसोसिएशन की हरयाणा इकाई की कल यहा एक कोफत हुई, जिसमें उक्त आयोग का एक प्रस्ताव पारित किया गया। यह प्रस्ताव एसोसिएशन की कुश्नै इकाई के अध्यक्ष डा० के० सी० अग्रवाल ने पेश किया। पी० जी० आर्ट० चण्डीगढ़ के पूर्व निदेशक डा० पी० एल० वाहो कार्फे से मुख्य अतिथि थे।

## वेद प्रचार मण्डल तथा धार्मिकसमाज के अधिकारियों से निवेदन शराब के ठेकों की नीलामो स्थान पर भारी संख्या में प्रदर्शन करें

हरयाणा प्रदेश में दिन प्रतिदिन शराब का प्रचार तथा विस्तार हो रहा है, जिसके कारण ग्रामीण तथा नगरों में वातावरण बहुत ही दूषित बनता जा रहा है। बहन-बेटियों को शरावियों से अपनी इज्जत बचानी कठिन हो रही है। स्कूलों के छात्र भी शराब के आल में फसते आ रहे हैं, वे अपने माता-पिता की कमाई शराब की बोटल खरीदने में नष्ट कर रहे हैं। परीक्षाओं में पास होने के लिए नकल करने हेतु परीक्षा केन्द्र निरीक्षकों को शराब पिलाई जाती है। इसी प्रकार सरकारी कार्यालयों में उचित अनुचित कार्य करवाने के लिए शराब का प्रयोग किया जाता है। हरयाणा जहाँ पूव दूध दही की नदिया बहने पर प्रसिद्ध था, अब यह प्रदेश शराब की नदिया बहने पर बदनाम हो रहा है। नगर के कोने कोने तथा ग्रामों की गली गली में अंधे रूप से शराब की विक्री दिन रात हो रही है। किसान-भजदूरों की परिश्रम की कमाई शराब के कारण खर्च हो रही है। भ्रष्टाचार, दुराचार तथा धीमागती आदि सामाजिक बुराइयों की जड़ शराब है। स्मरण रखें शराब रही तो हरयाणा की वैदिक संस्कृति नष्ट हो जायेगी और विकास आदि कार्य व्यर्थ होकर रह जावेंगे।

अन-शराब की मानन से छुटकारा दिवाने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से गत वर्षों से शराब विरोधी अभियान चलाया जा रहा है। पचासों से शराबबन्धो प्रस्ताव करवाकर सरकार को भिजवाये जाते हैं। ठेकों पर धरमों का आयोजन किया जाता है। जन जागृति के लिए शराबबन्दी समेलन तथा पदयात्रा भी की जाती है। सभा के प्रवर्तों के शराब हरयाणा घर में भूम-भूम कर शराब की बुराइयों से जनता को सावधान कर रहे हैं। परन्तु सरकार अपनी आयदनी बढ़ाने के लालच में शराब की विक्री बढ़ाती आ रही है। उसे शराब से होनेवालीहानियों को विना नहीं है।

अतः हरयाणा के वेद प्रचार मण्डल तथा धार्मिकसमाज के कार्यकर्ताओं से हमारा निवेदन है कि सरकार आ इस शरर ध्यान दिवाने तथा उसकी शराब को धासक नीति का विरोध करने के विवे जिस जिने वे जिस दिन शराब के ठेकों को नीलामो की जावे, उस स्थान पर अपने धर्म्य सहयोगियों के साथ भारी संख्या में पहुंच कर विरोध प्रदर्शन करें तथा हरयाणा में शराबबन्दी लागू कराने का आग्रह भी देकर अपने कर्तव्य का पालन कर।

प्रापके सहयोग के इच्छुक एवं निवेदक

ओमानन्द सरस्वती

सरसक

सूबेसिंह

मन्त्री

प्रो० शेरसिंह

प्रधान

मुदर्शनदेव आचार्य

वेदप्रचारविभागा,

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

सिद्धाढी भवन, दयानन्दमठ, रोहतक।

सांबंधिक समा को मांग :-

## कश्मीरी विस्थापितों को भी १९८४ के दंगा पीड़ितों जैसी सहायता दी जाए

दिल्ली, २० फरवरी—सांबंधिक आर्य प्रतिनिधि समा का त्रैमासिक अन्तरंग अधिवेशन १७ फरवरी १९६१ को आर्यसमाज श्रीवानन्दास, दिल्ली में समा प्रधान स्वामी धानन्दयोग सरस्वती की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन में देश के अनेक प्रांनों के आर्यनेताओं ने भाग लिया। अधिवेशन में देश की वर्तमान परिस्थितियों पर गम्भीरता पूर्वक विचार हुआ और संबन्धित से निम्न प्रस्ताव पारित हुए :-

### प्रस्ताव सं० १

सांबंधिक आर्य प्रतिनिधि समा पंजाब में सरकार की गिरती हुई सत्ता पर गहरो चिन्ता प्रकट करती है। पंजाब सरकार बाहरी से जारी पत्रिका आदेशों को मानने के लिए बाध्य है। पंथिक आदेशों से सचकारी एवं सरकारी स्तरों पर गुरुमुखी का प्रयोग, हिन्दी का प्रयोग बन्द करना, स्कूलों और कालेजों की छात्राओं को सलवार, कमीज तथा विशेष रंग का चुपट्टा पहनना तथा आकाशवाणी और दूरदर्शन पर भी हिन्दी भाषा के प्रसारण न करना आदि मुख्य हैं। ऐसे आदेशों का पंजाब के राजकीय प्रशासन द्वारा पालन करना भारत राष्ट्र का सारासर अपमान है। पंजाब के उपवासियों के साथ बिना शर्त वातचीत के प्रस्ताव से भी ऐसा प्रतीत होता है कि सरकार ने उपवासियों के सम्मुख आत्मसमर्पण कर दिया है। सांबंधिक समा राष्ट्र विरोधी पंथिक आदेशों का कडा विरोध करती है और सरकार से मांग करती है कि वह पंजाब के विषय में छद्मतापूर्वक कार्यवाही करे।

कश्मीर की दिन प्रतिदिन विगड़ती हुई परिस्थितियों पर भी यह समा गम्भीर चिन्ता प्रकट करती है। यदि वहाँ यथाशीघ्र नियन्त्रण न किया गया तो वह दिन दूर नहीं होगा जब हमारे देश का एक हिस्सा अलग हो जाएगा। कश्मीरी हिन्दुओं के भारत के अन्य भागों में पलायन को हमारी सरकार रोक नहीं पाई है, कश्मीर के उपवासियों पाकिस्तान में विलय की मांग करते हैं। वे इसे अलग राष्ट्र घोषित करने का स्वर भी बार-बार उठाते हैं।

सांबंधिक समा सरकार से मांग करती है :

१. पंजाब और कश्मीर को सेना के हवाले कर दिया जाए।
२. साम्प्रदायिकता और विषटनकारी प्रवृत्तियों को समाप्त करने के लिए सख्त कदम उठाये जावे।
३. कश्मीरी विस्थापितों को भी १९८४ के दंगा पीड़ितों जैसी सहायता दी जावे।
४. केन्द्र तथा प्रांतीय सरकारें अपने कर्तव्य से यह सिद्ध करें कि वे किसी भी प्रकार से विषटनकारी परिस्थितियों को जबरदस्त पंदा नहीं करने देगी।

### प्रस्ताव सं० २

यह बहुत ही चिन्ता एवं अपमान की बात है कि देश के कुछ भागों में विरोधकर पंजाब में हिन्दी के महत्त्व को कम करने के प्रयास ही नहीं किए जा रहे हैं, बल्कि उसके अस्तित्व को प्रशासकीय एवं राजकीय क्षेत्रों से पूरी तरह मिटाया जा रहा है। पंजाब में उपवासियों के दबाव में पंजाब सरकार हिन्दी को पूरी तरह समाप्त करने के लिए प्रयत्नशील है।

आर्यसमाज किसी भी भाषा का विरोध नहीं करता। आर्यसमाज यथा सम्भव अधिकाधिक भारतीय भाषाओं के अध्ययन एवं प्रयोग करने का प्रयास रहे। परन्तु आर्यसमाज राष्ट्रभाषा हिन्दी के महत्त्व को कम करने के प्रयास का पूरी ताकत से विरोध करने के लिए प्रतिबद्ध है।

### प्रस्ताव सं० ३

सांबंधिक आर्य प्रतिनिधि समा हमारे संचार माध्यमों-आकाशवाणी तथा दूरदर्शन द्वारा संगीत तथा चित्रण आदि के

माध्यम से अश्लील प्रसारणों तथा श्लोकों का कडा विरोध करती है। यह समा सरकार से मांग करती है कि इनके स्थान पर राष्ट्रभक्ति राष्ट्रिय एकता अथवा नवयुवकों के जतिजननीय सम्मूर्ति विषयों को प्रोत्साहन दिया जावे। यदि सरकार ने इन पर प्रतिबन्ध न लगाया तो आर्यसमाज इनके विरुद्ध राष्ट्रव्यापी आंदोलन छेड़ने के लिए बाध्य होगा।

डॉ० सच्चिदानन्द शास्त्री

मन्त्री सांबंधिक आर्य प्रतिनिधि समा

## हरयाणा में आर्यसमाज के उत्सवों की बहार

बैदिक आध्यम गुण्डो जिला रोहतक	२० फरवरी
आर्यसमाज प्रशाहर जिला यमुनानगर	१२ मार्च
” ऊण जि० बिवाली	२ से ४ मार्च
” मन्थार जि० यमुनानगर	१ से ३ मार्च
गुरुकुल साढोट भाग रोहतक (सिमान्यास)	३ मार्च
आर्यसमाज माना जिला पानीपत	८ से १० ”
” गुरुकुल भंखवाल जिला रोहतक	१६, १७ ”
” सोहना जिला मुहनाग	६ से ८ ”
” धारायंजली लोढा कला जिला रोहतक	६, १० ”
मेला मालीट जि० रोहतक	९, ७ ”
आर्यसमाज मुजाना जि० जोध	११ से १७ ”
” पावल जि० हिसार	११ से १७ ”
” उकलाना मण्डी जि० हिसार	२३ से २४ ”
” सालवाल जिला पानीपत	२४ से २६ ”
” बरोडा जि० करनाल	२६ से ३१ ”
” वैदिक आध्यम भादस जिला मुहनाग	३०, ३१ ”
” गुरुकुल ठिकाण्डा जिला पानीपत	२६, २७, २९ ”
” वैदिक यज्ञ समिति पानीपत	३१ मार्च से ७ अप्रैल
” माडल टाउन सोनीपत	१ से ७ अप्रैल
” गुरुकुल कुश्नोड	४ से ६ ”
” लोहाक जिला बिवाली	११ से १२ मई
” रावीर जिला यमुनानगर	३१ मई से १, २ जून

जो आर्यसमाज, गुरुकुल अपने उत्सव रखना चाहते हैं वे मार्च के तीसरे सप्ताह तथा अप्रैल, मई मास में तिथियां निश्चित करके समा को शीघ्र सूचित करें, जिससे उपदेसक तथा अजन मण्डलियों का कार्यक्रम बनाने में सुविधा रहे। समा के पं० श्रीरंजित विद्यालंकार, प्रो० श्रीमन्मनार आर्य, पं० रणधीरसिंह शास्त्री, पं० सुखदेव शास्त्री, श्री राममेहर एडवोकेट, श्री सत्यवीर शास्त्री आदि विद्वानों ने धार्मिक रूप में उत्सवों पर व्याख्यान देना स्वीकार किया है। इस समय समा में पं० चन्द्रपाल शास्त्री, पं० हरिचन्द्र शास्त्री उपदेसक तथा पं० सत्य सनातन आर्य, पं० अर्जुनदेव आर्य, पं० रतनसिंह आर्य, पं० अजनवाल आर्य, पं० अतरसिंह आर्य, श्री धर्मवीर आर्य पुरोहित पद पर तथा पं० तेरसिंह आर्य, पं० विद्याभूषण आर्य, अजनोपदेसक एवं पं० चिरन्जीलास आर्य, पं० ईश्वरसिंह तुलान, पं० केमसिंह आर्य, पं० जयपाल आर्य, पं० हरध्यानसिंह आर्य, पं० सीताराम आर्य, पं० सुपारीवाल आर्य, स्वामी देवानन्द अजन मण्डली के रूप में निरन्तर कार्य कर रहे हैं। अतः उक्तों का आदि पद एक मास पूर्व आमन्त्रित करके वेदप्रचारकार्यों में लाभ उठावे।

—सुरजानंदेव आचार्य,  
वेदप्रचारविभागाध्यक्ष

## वर्षेष्टि महायज्ञ पद्धति

सभी यज्ञमें उज्जनों के सामर्थ्य “वर्षेष्टि महायज्ञ पद्धति” पुस्तक छपवाई गई है। इसमें वर्षेष्टि की पद्धति के साथ-साथ वेद मन्त्रों का हिन्दी में अनुवाद भी प्रकाशित किया है। लेखक डा० सुरजानंदेव आचार्य, मूल्य सविस्त १२ ६०, बिना बिल्ट १० ६०।  
प्राति स्थान :-

१. आर्य प्रतिनिधि समा हरयाणा

दयानन्द मठ, रोहतक।

२. अर्जुनदेव आर्य उपदेसक,

छोदराम धर्मशाला, बहापुरहाट

## गुरुकुल की चिट्ठी

१९६० का आखिरी महीना गत वर्ष को भाँति इस वर्ष भी गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में कुलविता पुष्य स्वामी श्रद्धानन्द जी की स्मृति को समर्पित रहा। श्रद्धानन्द सप्ताह २३ दिसम्बर से ३० दिसम्बर के बीच गुरुकुल परिसर में सभी कुलवासियों, ब्रह्मचारियों, प्राध्यापकों सहित अधिकारियों और कर्मचारियों द्वारा अव्यस्य निष्ठा और उत्साह के साथ मनाया गया। २३ दिसम्बर को श्रद्धानन्द बलिदान विषय प्रयागवेदी के बाद सहराते "ओ३५" ध्वजों की सोमायात्रा के साथ प्रारम्भ हुआ। दयानन्दद्वारा ये यज्ञ भूषण की इस सोमायात्रा में कुलपति सहित सभी प्राध्यापक, अधिकारी, कर्मचारी और विद्यालय के उल्लसित ब्रह्मचारी शामिल थे।

यज्ञ संभव के रूप में बड़े-परिवार के यज्ञ-मन्दिर का उपयोग कई वर्षों के बाद किया गया। आचार्य श्री रामप्रसाद वेदानन्दकार ने कुलपति श्री सुभाष विद्यालंकार, कुलसचिव डा० वीरेन्द्र बरोडा और मुख्य प्रतिधि श्री रामनाथ वेदानन्द जी यज्ञमाल बनाकर यज्ञ सम्पन्न कराया। इसके बाद विद्यालय विभाग के ब्रह्मचारियों ने कुलविता की स्मृति में गीत प्रस्तुत किए। इस अवसर पर हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० विष्णुवत राकेल, सस्कृत के प्रोफेसर श्री वेदप्रकाश शास्त्री की अथावा कुलपति एश मुख्य प्रतिधि ने स्वामी श्रद्धानन्द के श्रेयक जीवन के घटनाएँ सुनाकर उस विराट व्यक्तित्व से प्रेरणा लेने की बात कही।

उसी दोपहर अखिल भारतीय श्रद्धानन्द हाकी टूनमिन्ट विषय-विद्यालय के नवागत क्रीडाध्यक्ष श्री आर०के०एस० डामर के संयोजन में वेधभर से आई तेरह टोमों के तिरक आरम्भ हुआ। वेधों जैसे प्राकृतिक ध्रुवरोषों के बावजूद टूनमिन्ट घाट दिव्य तक सफलतापूर्वक चला। कुलपति ने जहाँ पहले दिन सिलाड़ी टोमों के माघपास्ट की स्वामी ली बही प्रतिमि दिन स्वकी विवेका टोम-बी०ई०जी० जालंधर की उपविभेता टोम यंत्र पामं नवल को पुरस्कृत किया। इस टूनमिन्ट में दर्शकों के रूप में हरिद्वार नगर-परिसर के सैकड़ों लोग सम्मिलित हुए।

दिसम्बर १९६० की जनवरी, १९६१ के महीने विश्वविद्यालय परिवार के विज्ञान सभाग में बनसतिसारण विभाग में डा०डी०के० माहेश्वरी कोषण पर पद पर, भौतिकशास्त्र में डा० यशपाल, प्राणि-शास्त्र में डा० देवराज पन्ना, रसायन विभाग में डा० श्रीकृष्ण और कम्प्यूटर विभाग में सर्वश्री सिद्ध विनोद, कर्मवीर भाटिया, अचल कुमार ने कार्यभार संभाला।

मानविकी संकाय में संस्कृत विभाग में डा० सोमदेव सातपु ने रोडर पद पर, मनोविज्ञान विभाग में डा० ज्ञानेश खोसरा, वेद विभाग में डा० तैजोमित्र, प्रौढ शिक्षा में डा० बसवोरेसिंह मलिक तथा क्रीडा विभाग में श्री आर०के० एस० डामर ने कार्यभार ग्रहण किया।

विश्वविद्यालय में १९६१-६२ के छत्र से हिन्दी विभाग में हिन्दी पत्रकारिता डिप्लोमा कार्यक्रम करने का निश्चय किया है। इसके लिए हिन्दी विभाग में प्रतिष्ठित पत्रकार, नबमारत टाडस के सभादाता तथा श्रेयक वर्षों से हिन्दी साहित्य का अध्यापन कर रहे श्री कमलानन्द बुषकृ को प्रवक्ता के रूप में विश्वविद्यालय परिवार में सम्मिलित किया गया।

६ जनवरी को विश्वविद्यालय के माध्य कुलाधिपति तथा केन्द्रीय योजना आयोग के सदस्य प्रो० वेरसिंह ने पुस्तकालय के विस्तारित कक्ष के रूप में "संघर्ष एवं शोध पुस्तकालय" के लिए ७०.५० सरकार ने ७ लाख रुपये प्रदान किया है। जबकि केन्द्रीय सरकार ने सातवीं पंचवर्षीय योजना में इसके लिए १ लाख तथा आठवीं योजना में पन्द्रह लाख २० का प्रायदान किया है। इस तरह से २७ लाख की लागत से श्रद्धि में पुस्तकालय भवन का विस्तार कार्य संभव हो सकेगा। प्रसन्नता की बात है कि पुस्तकालय भवन का निर्माण कार्य प्रारम्भ हो गया है। आशा है कि मानविकी सभाग के भवन का भी निर्माण कार्य जल्दी ही शुरु हो जाएगा।

इसी बीच विश्वविद्यालय की शिष्ट परिषद् (सोनेट) की बैठक भी ६ जनवरी को अत्यन्त सौहार्दपूर्ण वातावरण में विश्वविद्यालय के

ही कुलाधिपति प्रो० वेरसिंह को की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस बैठक में विभिन्न आर्थ प्रतिनिधि सभाओं के घनेक प्रमुख महानुभाव सम्मिलित हुए।

आर्थ प्रतिनिधि सभा पचास के प्रधान श्री वीरेन्द्र ने कुलपति श्री सुभाष विद्यालंकार को उपयुक्ति और विश्वविद्यालय के कार्यों के लिए पात्र साल रुपये उपलब्ध कराने की घोषणा की। विश्वविद्यालय अपने स्तर पर तथा जिला प्रशासन के परामर्श एवं सहयोग से गंगाघाट कांगड़ी घाट की गुरुभूमि के भवनों और गंगा नदी के कारण कट रही भूमि की सुरक्षा के लिए शीघ्र ही प्रयास प्रारम्भ करेगा।

श्री वीरेन्द्र ने विश्वविद्यालय के दैनिक यज्ञ के बखतर पर प्राध्यापकों को सहयोग करते हुए कहा कि बरसों बाद वे गुरुकुल की गतिविधियों में जीवनता का अनुभव कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान कुलपति के नेतृत्व में जो परम्पराएँ गुरुकुल में पड़ रही हैं वे उसे उसके पुराने गौरव तक बढ़कर ले जाएंगी।

फरवरी के प्रथम सप्ताह में गुरुकुल में बर्जामिया विश्वविद्यालय के २० छात्र-छात्राएँ गुरुकुल पर आए। उन्होंने पुस्तकालय का निरीक्षण किया, गुरुकुल पढाति तथा यज्ञ-परम्परा के बारे में हृषि पूर्वक जानकारी प्राप्त की। इन अमेरिकी छात्रों ने गुरुकुल फार्मों में प्राथुर्विक औषध निर्माण को अत्यन्त उत्सुकता के साथ देखा। इन छात्रों ने गुरुकुल के पुरातत्त्व महालय और इसमें गणेशी के योगी और पर्वतारोही स्वामी सुन्दरानन्द द्वारा स्थापित की जा रही हिमालय दर्शन बीबी देवकर विस्मय और प्रसन्नता प्रकट की। बर्जामिया विश्वविद्यालय के ये छात्र योग की क्रियात्मक शिक्षा के लिए निष्कट श्रद्धि में जो फिर गुरुकुल आएंगे।

६ फरवरी को प्रौढ शिक्षा विभाग में तीस प्रशिक्षुओं के विशेष प्रशिक्षण शिबिर का कुलपति श्री सुभाष विद्यालंकार ने उद्घाटन किया।

बरसों बाद सकाय अधिष्ठाता (श्रीन) को नियुक्ति की परम्परा भी इन्हीं दिनों विश्वविद्यालय में प्रारम्भ की गई। मनोविज्ञान विभाग के प्रोफेसर ओमप्रकाश मिश्रा को मानविकी संकाय के शीन के रूप में नियुक्त करके विश्वविद्यालय को नई शैक्षिक गतिविधियों की ओर उन्मुख किया गया। इस दिशा में विभिन्न विभागों के प्राध्यापकों द्वारा अपने शोधकार्य पर शोधपत्र पढ़ने के लिए सप्ताहात में शनिवार का दिन सुनिश्चित किया गया। इसी सिलसिले में पहला व्याख्यान हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० विष्णुवत राकेल का "साहित्य और संस्कृति" पर ६ फरवरी को सम्पन्न हुआ। कुलपति इस अवसर पर अध्यक्ष के रूप में उपस्थित रहे।

### भूल सुधार

संघर्षितकारी के १५ फरवरी ६१ में पृ० ८ पर अखिलन्दन समिति की दान सूची में श्री सुभाषसिंह मन्वी आर्यसमाज कोसली की राशि २०१ के स्थान पर १०१ तथा श्रीसत्यनारायण आर्यसमाज चरली दादरी की राशि २०१ के स्थान पर १०१ भूलवश छप गई। अतः पाठक सुधार कर पढ़ें।  
व्यवस्थापक

**सत्य के प्रचारार्थ**

अजिन्ट **₹००** सैंकड़ा

**मर्यादा प्रकाश**

घर पर पहुँचाएँ

सफेद कागज सुन्दर छपाई

**सुदृढ़ संस्करण वितरण करने वालों के**

आंकड़ें: 23/35-16 पृष्ठ 8/20 की दर लिए प्रचारार्थ

अजिन्ट **₹००** सैंकड़ा

**आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट**

455, 7वाँ बावनी, दिल्ली-6 टारभाष: 238360/233112

## आया होली का त्योहार

यह होली का पर्व सुषान,  
पुनः देव में आया है।  
कण-कण भारत भू का इति,  
फूला नही समाया है।

मधु ऋतु को छवि में प्रमुदित,  
है नगर-नाग-वन-घर-आंगन।  
नव्य नवल चेतना जगी है,  
जायत है मधुरिष प्रांगण।

प्रकृति के उपादान हैं करते,  
उसके जीवन का मृगार।  
रंग-विरमे सुमनवलो का,  
सहराता है पारानार।

होली का यह पर्व सुषान,  
आया हमे जगाने को।  
भ्रान्तनिहित वृत्ति बाधुरी,  
का सब जाल हटाने को।

बाधो हम सब प्रेम-दया का,  
छा दे धरती पर साम्राज्य।  
सत्य-बहिष्सा भू पर फते,  
हो मानवता का मधु राज्य।

धुम संवेध रही होषो का,  
मधुरिष हो सबका अन्वहार।  
मानवता का पाठ पढाने,  
आया होली का त्योहार।

राधेश्याम भायें

## ऋषि बोध

वासक मूलवाकूर को, पिता ने यह कहा भाकर।  
करो उपवास और पूजा, शिवालय में वह आकर।  
वही है देव-देवों का, वही रत्न हमारा है।  
वही है पूज्य हम सबका, वही सबका सहारा है।

एत सब मूल मन्दिर में, किए उपवास और पूजा।  
लग्न भी शिव के दर्शन की, नहीं था ध्यान कुछ हुआ।  
चढ़े फल-मूल और मेवे, वहां जो शिव की मूर्त पर।  
सगे खाने उन्हें चूहे, वही शिवजी पर चढ़-बढकर।

जो देखा घटना यह, विचार मूल ने तक्षण।  
करेगा जग की रक्षा क्या, जो कर सकता न निररक्षण।  
मैं दूदूगा उसी शिव को, वह जो सबका सहारा है।  
जो पासक और दोषक है, जो रत्न हमारा है।

है जो देव-देवों का, जिसे महादेव कहते हैं।  
घटक ब्रह्माण्ड के जितने हैं सब आधीन रहते हैं।  
चले कर 'पाल' प्रतिज्ञा लिया फिर दूढ़ शकर को।  
जगया जानकर जग को, है शत-शत वन्य ऋषिवर को।

बर्मपाल आर्य, नरवाना

# गुरुकुल

**कांगड़ी फार्मसी की**  
**आयुर्वेदिक औषधियां सेवन कर स्वास्थ्य लाभ करें**

**गुरुकुल**

**च्यवनप्राश**

पूरे परिवार के लिए शक्तिवर्धक एवं स्वर्गीयवर्धक आहार।  
बाली, उम्र व शारीरिक एवं केन्द्रों की दुर्बलता में उपरानी आयुर्वेदिक औषधीय टॉनिक





**गुरुकुल**

**ज्योतिष**

होम व मन्त्रों के माध्यम से सभी संश्लेषण कार्यों के लिए उपयोगी आयुर्वेदिक औषधि



**गुरुकुल**

**चाय**

उदरग्न व इन्फ्लूएंजा, पक्षाघात और वृद्धि रुद्धि से सभी माधवरी आयुर्वेदिक औषधि



**गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी हरिद्वार (उ० प्र०)**

गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी

हरिद्वार

की औषधियां सेवन करें।

शाखा कार्यालय  
६३ गली राजा केदारनाथ,  
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

स्थानीय विक्रेताओं एवं सुपर बाजार  
से खरीदें

फोन नं० २६१८७१

शाखा कार्यालय : ६३, गली राजा केदारनाथ  
चावड़ी बाजार, दिल्ली-११०००६

'अर' - बीकानेर-२-५५

आयें प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक देवदत्त शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिथ्वि प्रसे के लिए संस्कृतकार मुद्रकालय रोहतक में छपवाकर संस्कृतकार कायालय पं० जगदेवसिंह सिद्धाम्ती मयन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।



# संपादन

## आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान संपादक—मुरेशिंह तथामाजी

सम्पादक—देवदत्त शाल्की

सहसम्पादक—प्रकाशवीर बिबालकार एम० ए०

वर्ष १८

अंक १६

१४ मार्च, १९६१

वार्षिक मूल्य ३०)

(मासिक मूल्य ३०१)

विदेश में ८० पैसे

एक प्रति ७५ पैसे

सत्यानुराग सन्मुख्य ६

## विद्या और अविद्या

(डा० मुरेशिंह देवानंद एम० ए० कार्यसमाज रोहरसपुर)

(गर्भक से प्राणे)

अविद्या अर्थात् भौतिकवाद या कर्म की दृष्टि अर्थात् अध्यात्मवाद या ज्ञान दोनों ही अपने-अपने क्षेत्र में विलक्षण या अद्वितीय हैं। जो व्यक्ति या राष्ट्र या समाज एक को ही अपनाता है, उन्हें असाहित्य का श्रापना करना पड़ता है। उदाहरणार्थ भौतिकवाद की उन्नति से अमेरिका या यूरोपीय राष्ट्र और रूस प्रायः बहुत चिन्तित दिखाई देते हैं। अमी-कमी अमेरिका आदि देशों के पत्र पत्रिकाओं को देखे तो पता चलेगा कि वन में हृत्पत्र, आत्महत्या, पागलपन, एड्स तथा अन्य यौन सम्बन्धी रोग अपनी चरम सीमा पर पहुँचे हुए हैं। वहाँ के लोग मात्रक बर्बरता लाए बिना सुख की नींद भी नहीं सो पाते हैं। हिंसावाद अपने को घोषा देने का मार्ग है। वे दवाइयों साकर समलेपिक एवं विषम सैविक भोगविवासों में डूबे हुए हैं। वहाँ की अध्यात्मिका का बर्षन करना भी संभव नहीं। मनुष्य नैतिकता को भ्रष्ट गया है। धातक सत्त्वों के निर्माण से संसार को विनष्ट करने का प्रसव को चित्र खींच दिया है। परन्तु भौतिक उन्नति की आवश्यकता से इन्कार नहीं किया जा सकता है। भौतिक विद्या की उन्नति करनी चाहिए। हाँ, केवल भौतिक विद्या की ही उन्नति में बने रहना ठीक नहीं। आत्मविद्या की ओर झुकना भी आवश्यक है। बिना इसके मनुष्य की शान्ति नहीं मिल सकती है। अमृतत्व की प्राप्ति संभव नहीं हो सकती। स्वामी जगदीश्वरानन्द की ये शिक्षा है "विद्या और अविद्या एक नदी के दो किनारे हैं। अथवा इनको एक रथ के दो पहिए की-कह सकते हैं। नदी पर पुत्र बनाने के लिए दोनों पहियों का होना आवश्यक है। अथवा जीवन रथी मोटर में प्रकृति विद्या इन्जन है और अध्यात्म विद्या ब्रेक है। प्रकृति विद्या के बिना जीवन की गाड़ी चले नहीं सकती और आत्मविद्या के बिना वह टकराकर धूर-धूर हो सकती है। अतः दोनों का समन्वय आवश्यक है।"

बृहदारण्यक उपनिषद् द्वितीय अध्याय चौथे ब्राह्मण में याज्ञवल्क्य भेनेयो संवाच आया है। याज्ञवल्क्य जब वातरथी बनने लगे तो उन्होंने अपनी दोनों पहियों कात्यायनी और मित्रा की पुत्री भेनेयो को अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति ऐश्वर्य और बन देने की इच्छा की। कात्यायनी तो लेने को तैयार होगी। पर भेनेयो ने कहा "भगवन् सारी पुत्री वित्त से पूर्ण करके मुझे दे दो वाग तो क्या मैं उससे धर्मरत्न या लूगी? याज्ञवल्क्य बोले "नैव-नैव। यथोक्तजनता जीवन सर्वत्र से जीवनं स्वात्, अमृतत्वय तु साक्षात् चित्तम्" नहीं, कमी नहीं। जैसे साधन सम्पन्न व्यक्ति बने से जीवन निबिड कर देते हैं वैसे ही सुन्दरता भी जीवन हो जाएगी। धनधान्य से अमृत चखने की आशा तो नहीं की जा सकती।

भेनेयो ने कहा "येनाह नामुता स्या किमह तेन कुर्वाम्" जिससे मैं धनतु को न चख सकूँ उसे लेकर मैं क्या करूँगी। "भेनेयो आने बोली" भगवन् धर्मर होने का नुस्खा यदि प्राप जानते हों तो यह

धन-दौलत न देखर मुझे उसी का उपदेश दीजिए। तब याज्ञवल्क्य ने कहा "अरे पति की कामना के लिए पति प्रिय नहीं होता है, अपनी आत्मा की कामना के लिए पति प्रिय होता है। अरे, पत्नी की कामना के लिए पत्नी प्रिय नहीं होती अपनी आत्मा की कामना के लिए पत्नी प्रिय होती है। इसी प्रकार पुत्र की कामना के लिए पुत्र प्रिय नहीं होता, अपनी कामना के लिए पुत्र प्रिय होता है, लोक की कामना के लिए लोक प्रिय नहीं होता आत्मा की कामना के लिए लोक प्रिय होता है। अरे, यह ध्यात्मा ही इच्छित्य है, श्रोतव्य, मन्त्रव्य, निदिश्यासितव्य है— उसी को देख, उसी को सुन, उसी को जान, उसी का ध्यान कर, आत्मा की देखने से, सुनने से समझने से और ध्यान करने से हृदय सभी गण्डें लुप्त जाती हैं।"

आगे इसी ध्यात्मा के लिए याज्ञवल्क्य ने कहा है "विष्वक् के प्राणिके वाद में जो तेजोयम, अमृतमय पुरुष है वह समष्टि रूप ब्रह्माण्ड को आत्मा है, व्यक्ति के प्राणमात्र में जो तेजोयम, अमृतमय पुरुष है वह व्यक्ति रूप पिण्ड का आत्मा है। आत्मा ही ध्रमत् है, आत्मा ही ब्रह्म है, आत्मा ही सर्वज्ञ है।"

इसी प्रकार उपनिषदों का कहना है "भौतिकवाद की उन्नति करो परन्तु 'त्यक्तेन सुखीना' बराग्यभाव से भोग करो। बराग्यभाव से भोग तभी हो सकता है जब हमें ध्यात्मभाव हो। इसलिए भौतिक विज्ञान से मृत्यु को तरकर आत्मविद्या द्वारा ध्रमत् को चखो। "विद्यां चाविद्यां च यस्तददोषम सह। अविद्याया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते।"

अध्यात्मविद्या और भौतिकवाद के समन्वय की तरह ज्ञान कर्म का भी समन्वय आवश्यक है। आपको सत्य का ज्ञान है पर कर्म में नहीं उतारते तो यह ज्ञान अनुपयोगी है। हाँ, सत्य का ज्ञान है और आप उसे जीवन में कर्म में प्रयोग करते हैं तो आप कर्म द्वारा मृत्यु को तरकर अमृत को चख सकते हैं। संसार सागर को पार करने का यही मार्ग है। याद रखने की बात है ज्ञान के बिना कर्म अथवा है वह रास्ता भटकना देना प्रार कर्म के बिना ज्ञान लंगड़ा है। वह कुछ नहीं कर सकता। दोनों यदि साथ-साथ और एक-दूसरे का साथ देते हुए चलने तो जीवन नौका ठीक तरह पार हो जाएगी। वेद के विद्वान् एक मुसलमान कवि ने एक सुन्दर कविता लिखी है। उस कविता का भाव है कि एक गाँव में आम लोग, सब भोग भागने लगे। अन्धा मार्ग कैसे और किधर? लंगड़ा चले तो कहाँ चले, कैसे चले? दोनों ने सोचा। अपने ने लंगड़े को कंधे पर विठा लिया और लंगड़े ने मार्ग दिखाया। दोनों आम की मुसीबत से बच गए।

इसलिए अहाँ भौतिक विद्या या अध्यात्मविद्या अर्थात् अविद्या और विद्या का समन्वय आवश्यक है वैसे ही ज्ञान और कर्म का समन्वय होने से मोक्ष प्राप्य किया जा सकता है।

## साम-युगा प्रतक

॥ २५ ॥

## एक्य-साधक ज्ञानी को दुःख कहाँ ?

ओ३म् यस्मिन्मर्षाणि भूताभ्यामेवाभ्युद्विजानतः ।  
तत्र को मोहः कः शोकः एकत्वमनुभवतः ॥ यजुः-मन्त्र-०४०-मंत्र ७  
बैठ गया है जो ज्ञानी जन,  
परम पिता के पावन अंक ।  
निजवत् जान रहा जो सबको,  
बहु राजा हो, हो या रक ।  
ऐक्य साधकर जीवमात्र से,  
राग-द्वेष ने हुआ निश्चय ।  
वही ऐक्यसाधक ज्ञानीजन,  
खिल उठना ज्यों प्रसन्न मयंक ।

॥ २६ ॥

## जीव का मोक्षधाम अयोध्यापुरी !

ओ३म् अष्टाचक्रा नव द्वारा देवाना पूरोष्या ।  
तस्यां हिरण्यः कोश स्वर्गो ज्योतिषावृतः ॥  
अष्ट-चक्र नव द्वार विनिर्मित,  
है तेरा यह तन पुर धाम ।  
दिश्य गुणों का वास यही है,  
है अजेय अयोध्या नाम ।  
धरे इसी में अर्तनिहित है,  
ज्योति का वह कोष सत्ताम ।  
आभासित करने तू उसको,  
हो जायेगा अमय, अकाम ॥

॥ २७ ॥

## प्रकृति जीव का मोक्ष साधन है !

ओ३म् अथाऽ प्राङ्गैति स्वर्षा गृभोती मर्ष्येना सयोजिः ।  
ता शश्वन्ता निष्पीना विद्यन्ताभ्योअस्य नि दुष्पण्य ॥

जब, वेतन दो मूल तत्त्व हैं,  
जगती के कारण कृतमात्र ।  
एक भ्रम है स्व पर से भी,  
हूना निज स्वयं पर ज्ञान ।  
अवर अनादि अवर हैं दोनों,  
मूल रूप में बिन तब जान ।  
साधक जीव को साधन है यह,  
हो निर्वन्ध बने सयमाण ।

॥ २८ ॥

## उस अकाय में परम आनन्द है !

ओ३म् वासादेकराण्यस्करमुतं मेव दायते ।  
ततः परित्वजीयसी देवता मन प्रिया ॥

धर्म० का. 1. सू. ८ मं. २५

बाल मात्र से भी लघुत्व जो,  
समभो उसको पूर्ण प्रकाय ।  
रहा तब भो अज जन में,  
जोनों का वह परम सहाय ।  
अन्तरतल के निविड कोर्य में,  
देवो लोगो उसका भास ।  
क्षामभुर हैं जगन्ने के मूल,  
मेरा प्रिय वह परम-विलास ।

प्रो० धर्मचन्द्र, विद्यालकार  
पसवल ।

## नए वर्ष का शुभारम्भ

भारतवर्ष के नए वर्ष का शुभारम्भ चंद्र शुक्ल एका प्रतिपदा से होता है। आगस्त्यक नए वर्ष की शुभ कामना प्रेषित है। राष्ट्र एवं आपका परिवार सुखी एवं समृद्धिवासी हो।

बभी तक हमारे देश के धार्मिकों नागरिक गुलामी के प्रतीक विदेशी नव वर्ष १ जनवरी को गुलामी की मानसिकता के कारण अपना नया वर्ष मानकर शुभकामनाओं का प्रार्थना-प्रदान कर रहे हैं।

इस अराष्ट्रीय मानसिकता को बदलकर चंद्र शुक्ल १ प्रतिपदा के अवसर पर नए वर्ष की शुभकामना प्रेषित करनी चाहिए।

अतः विनम्र निवेदन है कि अपने इष्ट मित्रों को चंद्र शुक्ल १ संबन्ध २०४८ (१७ मार्च ६१) के अवसर पर शुभकामना भेजने का कष्ट करे।

इस शुभ अवसर पर हम सकल्प करें कि गुलामी की निवानो श्रंखला को हटाकर हमारी मातृभाषा एवं राष्ट्रभाषा हिन्दी को सभी स्तरों पर प्रतिक्रियत करेंगे, तथा देश में सम्पर्क भाषा के लिए हिन्दी का उपयोग करेंगे।

इस सकल्प को पूरा करने के लिए जनशक्ति को आवश्यकता है। जनशक्ति के लिए संगठन होना जरूरी है। अभी तक कुछ नगरों में संगठन स्थापित होकर प्रचार का कार्य प्रारम्भ हो गया है। किन्तु जहाँ संगठन स्थापित नहीं हुवे हैं उन नगरों में सयोजक महोदय शीघ्र-शीघ्र संगठन बनाकर कार्य प्रारम्भ करे।

संगठन को धार्मिकताही नगाने के लिए प्रत्येक प्रांत में जिला, संभाग तथा प्रांतीय सम्मेलन करना अत्यन्त आवश्यक है। इसलिए शीघ्र ही सम्मेलन करने के लिए योजना बनाकर संचालित करने का कष्ट करे।

जगदीशप्रसाद वैदिक  
धर्म्यस्य श्रंखला हटाओ प्रांशोलन,  
प्रधानमन्त्र मन्त्र, महात्मा गांधी मांग  
इम्पीर

## बेरी में शराब बन्दी कार्यकर्ताओं की बैठक

दिनांक २० फरवरी को आर्यसमाज मन्थिर बेरी वि० रोहतक में आर्यसमाज बेरी की प्रधान श्रीमती प्रभात शोभा विद्यालङ्कता की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस बैठक में बेरी, नाथपुर, बजौरपुर बाबयां, दूनबलन आदि के आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। इस अवसर पर सभा के उपदेशक पं० रतनसिंह आर्य ने कार्यकर्ताओं को सचेत किया कि यदि शराब के माधे से शराब का कलक न मिटाया गया तो हमारी वैदिक संस्कृति लुप्त हो जायेगी। अतः धन समय आगया है कि प्रत्येक आर्यसमाज के कार्यकर्ता को शराब के ठंके बन्द करवाने के लिए तन, मन तथा बल से सहयोग करना चाहिए। सभा के अन्तर्ग सदस्य तथा प्राण दूनबलन के सरपंच श्री अरतसिंह तथा श्री भगवानसिंह सरपंच बेरी ने शराबबन्दी लागू करने के सुझाव दिये।

श्रीमती प्रभात शोभा ने आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि शराबाना में शराबबन्दी लागू करवाने के लिए सभी धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक कार्यकर्ताओं को मिलकर मेदान में कदना चाहिए। शराबियों से महिलाओं को प्रतिक कष्ट उठाने पड़ते हैं। अतः मैं अपनी बहिनों तथा बेटियों से अनुरोध करती हूँ कि वे जूल्मे चीके से समय निकालकर अपने-अपने घरों में शराब के ठंके बन्द करवाने के लिए संघर्ष करें। मैं शराब बन्द करवाने के लिए बड़े से बड़ा जमिंदार करने के लिए तैयार हूँ। उनके व्याख्यान से प्रभावित होकर निश्चय किया गया कि २४ मार्च को बेरी में कादयान साय की पंचायत बुलाई जायेगी-जिसमें इस क्षाप के सभी ग्रामों से शराब के ठंके बन्द करवाने तथा शराब पीने पर पावनी लगाने का कार्यक्रम तैयार किया जायेगा।

—केदारसिंह आर्य

## रोहतक में शराब के ठेकों की नीलामी पर आर्यजनता की ओर से विरोध प्रदर्शन किया गया

हरयाणा सरकार की ओर से दिनांक १२ मार्च को बोलता भवन की याकें भाइय टाउन रोहतक में शराब के ठेकों की सार्वजनिक नीलामी का आयोजन किया गया। हजारों की संख्या में शराब के ठेकेदार सालों रूपए की बोली बोलकर ठेके छुड़वाने के लिए होड़ लगा रहे थे। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधिसभा हरयाणा की ओर से प्रति बंध की भाति सभा उप-प्रधान महाशय भरतसिंह, विश्वप्रसिद्ध आर्य महिला नेता श्रीमती प्रभात शोभा विद्यालक्ष्मी, सभा के वरिष्ठ नेता श्री बचनचंद सेवानिबृत्त प्रतिरिक्त निदेशक सहकारी बैंक सभा के उपदेशक पं० अतरसिंह धार्य, श्री अर्जुनदेव धार्य, श्री रतनसिंह आर्य, श्री हेमासिंह आर्य, श्री घमंजोर आर्य, पं० रामुदेव शास्त्री, सर्वेखाप पंचायत महसूल के प्रधान श्री सूरतसिंह तथा सभा कार्यालय के कर्मचारी एवं रोहतक के निकटवर्ती ग्रामों के धार्यसमाज के कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन में भाग लिया। इसके पूर्व एक प्रचार बहुरेन जिस पर शराब सभी बुराहमों की जड़ है। शराब की बाय से विकास नहीं अपितु विनाश होता है। शराब के ठेकेदार देख के नृदार हैं, हरयाणा में शराबवन्दी लागू करो, शराब बिरुधी नारे लिखे हुए थे, बारा रोहतक के प्रमुख मार्गों पर जलूस निकाला गया। आकाशरी कराधान कायसय पर पहुंचने पर जलूस शराबवन्दी सम्मेलन के रूप में बदल गया।

### शराबवन्दी सम्मेलन का आयोजन

शराब के ठेकों की नीलामी पर पूजोचित तथा उनके सहयोगी एवं सरकारी अधिकारी हजारों की संख्या में उपस्थित थे। अतः उन तक धार्यसमाज की आभास पहुंचाने के लिए प्रचारबहुरेन पर खनि-विस्तार तथा बोली के ऋषडे लगाकर मंच तैयार किया गया। सभा के उपदेशक पं० अतरसिंह आर्य कतिकारी, पं० धर्मुदेव धार्य, प्रसिद्ध आर्य भास प्रभासवाली बका ब्रह्मचारी जितेन्द्र धार्य ने शराब से होने वाली हानियों से शराब के ठेकेदारों तथा उनके खालों को अवगत कराया। श्री हेमासिंह आर्य की भजन मण्डली ने शराबियों को अपने मधुर गीतों द्वारा खचेत किया कि जहररूपी शराब से बचो, अन्यथा तुम्हारे परिवार बर्बाद हो जायेंगे। इस सम्मेलन में अध्यक्षीय भाषण में श्रीमती प्रभात शोभा ने उपस्थित शराब के ठेकेदारों तथा सरकारी अधिकारियों को बिस्कारते हुए कहा कि तुम लोग अपने निजी स्वार्थ के लिए ठेकों की बोली बोल रहे हो। तुम्हें उस को पता है कि शराब एक जहर है जो भी इसका सेवन करेगा, उसको हानि होगी। तुम्हारे परिवारों के सदस्य भी शराब के नडे में फंसकर विनाश की ओर जायेंगे तब तुम्हें अपनी पाप की कमाई पर पछताना पड़ेगा। आपने भारत के प्रधानमन्त्री तथा हरयाणा के मुख्यमन्त्री को सम्बोधित करते हुए कहा कि आप अपने भाषणों में गरीबी दूर करने की दुहाई तो देते हैं, परन्तु अपनी जनता को जिनकी बोटी के कारण सता में आए हो, को शराबरूपी जहर पिलाकर सरकारी आय में वृद्धि कर रहे हो। अपनी जनता का अपने स्वार्थ के कारण अकल्याण करके कल्याणकारी नहीं बन सकते। चुनाव जीतने के लिए वृडे नारे लगाकर एक तक बोला दिया जायेगा। पाप का क्या एक दिन फूट कर रहेगा। आपने हरयाणा की जनता को आह्वान किया कि प्रायेणसे चुनाव में किसी भी शराबी तथा शराब पिलवाने वाले उम्मीदवार को वोट न देवें। सम्मेलन के बाद जिला उपायुक्त द्वारा हरयाणा के मुख्यमन्त्री को हरयाणा में शराबवन्दी लागू कराने की माग का ज्ञापन दिया गया।

### दयानन्दमठ मार्ग पर मांस की दुकानों का विरोध

धार्यसमाज के प्रदर्शनकारियों ने इसी दिन नगरपालिका रोहतक के कार्यालय पर प्रदर्शन किया तथा शराब तथा मांस के विरुद्ध नारे-वाजी की ओर नगरपालिका के प्रधान श्री तुन्दरसाज मेटो को ज्ञापन देकर मांग की गई कि दयानन्दमठ मार्ग पर जो शराब तथा मांस की दुकानें हैं वे हटाई जावें, धन्यथा धार्यसमाज के कार्यकर्ताओं की ओर से सवर्ष किया जायेगा।

### आकाशवाणी से स्वांग का प्रसारण बन्द करवाने की मांग

धार्यसमाज के कार्यकर्ताओं ने रोहतक स्थित आकाशवाणी केन्द्र पर भी प्रदर्शन किया और आकाशवाणी केन्द्र से अस्मोल रागिनियों

तथा श्री लखगोचन्द के स्वांग के प्रसारण को बन्द करवाने के लिए द्वार पर नारे लगाये। इस अवसर पर हरयाणा के कोने-कोने से राग-निया गानेवाले उम्मीदवार स्वर परीक्षा देने हेतु आए हुए थे। आकाशवाणी केन्द्र निदेशक को एक ज्ञापन देकर अनुरोध किया गया कि स्वांग की गन्धी रागिनियों का प्रसारण बन्द करके सभा के भजनों-पवेशकों के समाज सुधार तथा देशभक्ति के गीतों को प्रसारित करवाया जावे, जिससे रेडियो सुननेवालों पर अशुद्ध प्रभाव पड़े। श्री लखगोचन्द की रागनिया हरयाणा की सस्कृति नहीं है अपितु आर्यसमाज के भजनोंपदेशकों के गीत तथा ऐतिहासिक कथाओं के प्रसारण से ही हरयाणा को असली सस्कृति जीवित रह सकती है।

—केदारसिंह आर्य

### शराबवन्दी जनजागरण हेतु प्रचार अभियान

दिनांक १२ मार्च को धार्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यालय सिद्धान्ती भवन रोहतक में श्रीमती प्रभात शोभा जी की अध्यक्षता में धार्यसमाज के प्रमुख कार्यकर्ताओं को एक विशेष बैठक में निर्णय किया गया कि ग्रामीण जनता में शराब की सामाजिक बुराहमों के विरुद्ध जनजागरण करने के लिए दिन में दोपहर बाद नर-नारियों के साथ बैठकर विचारसोझी तथा रात्रि को शराबवन्दी समारोह का ग्रामों में आयोजन किया गया है। इस अवसर पर श्रीमती शोभा विद्यालक्ष्मी के व्याख्यान तथा सभा की मजन मण्डलियों के प्रभावशाली भजन हमें।

### प्रचार कार्यक्रम का विवरण

धार्यसमाज भाइय टाउन सोनीपत	११ मार्च
” गुरुकुल मेसवास कला	१६ ”
” बाराबड जिला रोहतक	१६ ”
” मन्डोली कला जिला रोहतक	२० ”
” पाकसा जिला रोहतक	२१ ”
” बलियाणा जिला रोहतक	२२ ”
” गोहाना मण्डी जिला रोहतक	२३ ”
” बेरी जिला रोहतक	२४ ”
” मुरादपुर टेकना जिला रोहतक	२५ ”
” मोक्षरा जिला रोहतक	२६ ”
” मदीन दायो जिला रोहतक	२७ ”
” सरकाडा जिला रोहतक	२८ ”
” लाखनमाजरा जिला रोहतक	२९ ”
” आहलाना जिला रोहतक	३० ”

उपरलिखित धार्यसमाज के अधिकारियों से निवेदन है कि वे इस कार्यक्रम को तयारी करते शराबवन्दी अभियान में सहयोग देवें।

सत्यवीर शास्त्री प्रचारमन्त्री

### शराब के ठेकों को नीलामी न करने का अनुरोध

उपायुक्त महोदय, जिला रोहतक

निवेदन है कि दिनांक १० मार्च १९६१ रविवार को धार्यसमाज बेरी जिला रोहतक में बेरी अंत्र के ग्रामों के प्रमुख सरपंचों तथा धार्यसमाज के कार्यकर्ताओं को एक बैठक सम्पन्न हुई थी, जिसमें सर्व-सम्मति से निर्णय किया गया है कि शराब प्रसार प्रचार से होनेवाली बुराहमों को समाप्त करने हेतु बेरी क्षेत्र (कादवान खाप) के किसी धार्य में शराब के ठेकों की नीलामी न की जावे। यदि सरकार ने पंचायत तथा धार्यसमाज को इस संबंधितकारी तथा जनकल्याणकारी मांग की अवहेलना की तो निवग होकर शराब के ठेकों को हटवाने के लिए कडा विरोध तथा सवर्ष किया जावेगा और ठेकों से शराब की विक्री नहीं होने दी जायेगी।

अतः आप से अनुरोध है कि कस दिनांक १२ मार्च को बेरी क्षेत्र (कादवान खाप) के किसी धार्य में ठेकों को नीलामी न करवाई जावे।

निवेदक:

मन्त्री धार्यसमाज बेरी जिला रोहतक



## आर्यसमाज क्या मानता है ?

१. वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, जो ईश्वर ने सृष्टि के घाटि में मनुष्यों के लिये प्रदर्शन और मार्गार्थ प्रदान किया। वेदों को पढ़ने का अधिकार बिना भेदभाव के संसार-भर में सब स्त्री-पुरुषों को है।

२. ईश्वर सच्चिदानन्द, ग्यायकारो, ध्रुवमाता, सर्वव्यापक, भगवति, सृष्टिकर्ता, कर्मफलदाता आदि गुणगुप्त तथा मनुष्यमात्र का उपास्य देव है। एकमात्र उसी की उपासना करनी चाहिए।

३. वेदों में ईश्वर का नाम भ्रोग्य (परम रसक), प्रः (सबका प्राणाधार), सुवः (सर्व दुःखनाशक), स्वः (सर्व सुखदाता) एवं माता, पिता, वन्द्य, इन्द्र आदि कई प्रकार से आया है।

(क) अन्न पदार्थों—अग्नि, सूर्य, जल, वायु, पृथ्वी आदि के गुणानुसार भी ईश्वर की सत्ता-महता समझने को वेद में ईश्वर का नाम अग्नि, सूर्य आदि आया है। इससे भ्रम पैदा होकर अन्न पदार्थों की पूजा भी कोई-कोई करने लगे। यह भाव्य नहीं।

(ख) रोगों में 'ज्वर' प्रमुख है। तुलसी जीर पीपल को शास्त्र में ज्वर को प्रमुख औषधि माना है। परन्तु उनसे लाभ उठाना तो दूर, हम उनकी परिक्रमा करते हैं, सूत लगेते हैं और उन्हें तुलसी भगवती तथा पीपल महादेव कहते हुए नमस्कार करते हैं। कितनी अज्ञानता आगई है।

४. ईश्वर निराकार और सर्वव्यापक है। उसकी मूर्ति नहीं हो सकती। ईश्वर के स्थान में देवी-देवताओं की कल्पित मूर्तियों की पूजा बेआङ्गुल नहीं, मूर्तिपूजा में भावना की युक्ति ठीक नहीं। भावना सीधे ही सत्-चित्त-ज्ञानन्द ईश्वर में होना ईश्वर-भक्त को मीमांसितौघ प्रकलता प्राप्त कराता है। 'भक्ति' यही कहलाने योग्य है, जहाँ नित्यचित्त ईश्वररोपासना-धर्म, धार्मिक जीवन और सुकर्म का उपदेश मिले। मन्दिर जाकर बण्टा बजा दिया, पंसा चढा दिया, चरभामृत ले लिया, इससे कुछ नहीं बनता, यदि बड़ा जाकर बैठे नहीं, उपवेश नहीं गुना, जीवन और कर्मादि में पवित्रता नहीं लाई।

५. जो ब्रह्म से भिन्न है। अद्वैतवादियों का 'ब्रह्म ब्रह्मात्मि' (मैं ब्रह्म हूँ) कहना युक्तियुक्त है। यदि सभी ब्रह्म हैं, तो पूजन किसका ? प्रायः न किताके आगे ? दुःख में आर्य किसका ?

'जगत् मिथ्या' कहना भ्रमजनक वाक्य है। जगत् स्पष्टतः इन्द्रिय-गम्य है, सत्य है। हाँ, इन्द्रियों के रसों में जहाँ धनोपाजनों में सुख मानना एवं उस प्रकार के जीवन तक ही जगत् को सीमित समझना मिथ्या है। जगत् के प्रलोभनों, विषय-विकारों में मग्नता मिथ्याचार है।

६. हरिद्वार आदि को ससंग के लिए जाना तो ठीक है, परन्तु 'ग्या', यज्ञना आदि में स्नानमात्र, हृत् में पापों के फल भोगने से छुड़ा सकते हैं, ऐसा मानना तो विवेकी श्रोतार्थों में योग्य नहीं। अच्छे कर्मों से मुक्त और बुरे कर्मों से दूना भोगना अवश्यम्भावी है।

तीर्थों पर जा करने से सीधे स्वर्गलोक का पहुँचने की भावना रखनेवाले बृद्ध स्त्री-पुरुषों की मति विकृत हो चुकने का चिह्न है। ससंग के लिए तीर्थ मले हो जाओ।

७. स्वाध्यायों में हिन्दुओं के दान की प्रथा को विगाडकर रख दिया है।

बेले-बेली बनकर 'सम्पत्तियों' के भास्त्रिक गुरुओं की घनमाल अर्पण कर देना शास्त्र-विरुद्ध है। महाभारत का प्रमाण स्पष्ट है—'भूमिने धनं या प्रयच्छ, द्रिद्वान्तरं मरु कोत्सेय', अर्थात् धनियों को धन मत दो, गरीबों, धनार्थों, दुःखी दरिद्रों की गलना करो। इसी प्रकार विद्यालयों, गुरुकुलों, अस्पतालों, परोपकार की परोक्षित सस्थाओं, धनहीन सच्चे दायों तपस्यों धर्मप्रचारकों आदि को ही दान पुण्य है। मुन्यत्रियों का दान देने में गण लगना है।

८. पितृभ्रष्ट तथा चरित्रभ्रष्ट श्रामा मात्र है, यह सभी पढ़े-लिखे जानते हैं। उन्हें राहु-केतु से ससा जाना मानना ठीक नहीं। ग्रहण के समय कुक्षेस आदि तीर्थों पर जाकर स्नान करने में पुण्य मानना अस्वीकार्य है। श्रोतार्थों को अब धर्मप्रचारण से ऊंचा उठाना योग्य है।

९. ईश्वर कभी किसी सुभर, कच्छ आदि की देह धारण करने अवतार नहीं लेता। बड़े-बड़े सनातनधर्मों धन पुराणों में ऐसे वर्णन को आलंकारिक मानने लगे।

१०. ईश्वर कर्मों का फलदाता है, धीर उसके न्याय-नियम में कर्मों का फल अवश्य मिलता है। कोई ईश्वर का अवतार, 'बुदा का पंगम्बर, बुदा का बेटा' दुष्कर्म के फल-भोग से किसी को बचा नहीं सकता। ऐसा मानना कि दुष्कर्मों के पाप क्षमा हो सकते हैं, पाप को बढावा देता है।

११. स्वर्ग-नरक का विशेष स्थान नहीं है। सुख का नाम स्वर्ग और दुःख का नाम नरक है, और वे भी इसी संसार में तथा इसी भरीर में भोगे जाते हैं। दरिद्रता, म्छ, रोग, क्रोध, विषय-विलासिता, परिवार आदि में कसह, मुकदमा, बेरोजगारी, सन्तान आदि की मूल्य अथवा विमुलता ये नरक हैं। धर्मपरायणता, सुख, स्वास्थ्य, सम्मान, ऐश्वर्य, अच्छे पति-पत्नी, माता-पिता, सन्तान आदि सन्निधियों का होना तथा सुख कर्म में रूचि होना आदि, यह स्वर्ग है।

१२. पुण्य दान, ईश्वरोपासना, स्वाध्याय, ससंग, सदाचार, माता-पिता, पुत्रजनों तथा दीन-दुःखी की सेवा, मांस-मदिरा और विषय-विलासिता का त्याग देवकर्म है।

१३. माता-पिता और धार्मायं तीव्र गुरु होते हैं। जीवित माता, पिता और गुरुजनों की श्रद्धापूर्वक सेवा करना ही श्राद्ध है। मृत पितरों के नाम पर श्राद्ध करना वेद-विरुद्ध और निष्फल है। 'सुभति ओष ससंग' का लाभ प्रदान करनेवाले सदाचारों मिःस्वायं विद्वान् शास्त्रों की सेवा करना आर्यसमाज पुण्य मानता है। श्राद्ध के 'विशेष दिन' श्राद्धण को खिलारा दूध पत्तायें मृत माता-पिता आदि को जा पहुँचाना, ऐसा मानना अज्ञानता और अस्वीकार्यता का—एक कटु सत्य के लिए क्षमा करना। वेद में 'श्राद्ध' का प्रतिपादन कोई नहीं दिखा सका, वेद में 'श्राद्ध' शब्द ही नहीं।

१४. वर्ण-स्वभावता 'पुण्य, कर्म, स्वभाव' से। ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य यदि आचार और विद्या से विहीन हो, तो उसका सुद बरों हो जाता है। जन्म से न कोई सुद है न ब्राह्मण। कर्म से ही वर्ण-स्वभावता मानने योग्य है।

१५. ईसाइयों-मुसलमानों के धर्म में इस प्रबन का कोई युक्तियुक्त उत्तर नहीं क्यों कोई बगहोन, अवस्थस या चिदितों के घर पैदा होता है, कोई सुन्दर, स्वस्थ धनी घराने में। केवल भेदिक (हिन्दू धर्म) धर्म में इसका उत्तर मिलता है कि पूर्ण जन्म के पुण्य पाप के आधार पर यह भेद निर्भर है। ईसाई, मुसलमान 'बुदा की मर्जी' कहकर अपने बुदा को ही अन्यायी और निन्द्य सिद्ध कर देते हैं।

१६. पशुओं के बलिदान से ईश्वर प्रसन्न नहीं होता, धर्म या यज्ञ के नाम पर मन्दिर आदि में पशु-हत्या करना गोर पाप है। अपने वर्णों की कामना के लिए हूयरों (पूजे पशुओं) के गले काटना, अपनी देवी-देवताओं की बुद्धि का अपमान करना है। इन्द्रियों का धमन, परोपकार, अग्निहोत्रादि धनुस्तान, भले कार्यों में दान, विद्वानों का ससंग, स्वाध्याय आदि 'यज्ञ' कहलाते हैं। धर्मधर्म में धोड़ों की आहुति नहीं, धर्मकार से श्रव्य (इन्द्रियों) के विषयविकारों का आहुति देना ही अग्निप्रेष है।

१७. भूत, प्रेत, वाहू, टोना, बागा, ताबीज, यन्त्र-तन्त्र, साक्षरुष सब मूल्यों को बहलाने, ठगने का है। व्यतिथियों के परामर्श से रस्ये देकर, कष्ट-निवारण के लिए किसी कर्मदे में जाप करना अपने-आपको खोखा देना है। स्वर्ग हो अथवा विचारकर महाभूल्युज्य, गायत्री मन्त्र का जाप करे और प्रभु की कृपा का साक्षात् प्राप्तावधि देखें।

१८. बिना किसी स्वायं के संसार का उपकार करना, अज्ञान, नास्तिकता और कुप्रथाओं का नाश करना, पाप क्षानने वाले रीति-रिवाजों की फिजूलखर्चियों से समाज को बचाना, सदाचरण और प्रभुभक्ति करना-कराना आर्यसमाज के मूल मन्त्र हैं।

१९. आजल धर्म के रूप में बुदा विचाराय का पुनर्विवाह होना चाहिए। कुकर्म, अधर्म अपवाद, अपयज्ञ, पश्चात्ताप से बचना चाहें तो 'युवा विषय' का पुनर्विवाह कर दें। (पृष्ठ २ पर)

## निर्माता आर्यसमाज के

(ने० स्वामी स्वकामानन्द सरस्वती)

आमारी हम सदा रहेंगे दयानन्द ऋषिराज के।  
वेदों के व्याख्याता और निर्माता आर्यसमाज के ॥  
रास्ता नहीं दिखाई दे जग बीहड़ वन में अटक रहा।  
पानी तक नहीं पहुँचा भ्रमचर डोल कुएँ में लटक रहा।  
खटक रहा जो माल मुफ्त का मजे थे बोधेबाज के।  
वेदों के व्याख्याता और निर्माता आर्यसमाज के ॥१॥  
सूरज बनकर उदय हुआ था दूर भ्रमेरा भ्रम दिया।  
प्यासों की प्यास बुझाकर बन्दा सत्य माग पर लगा दिया ॥  
जग दिया जब कन्दे काटे पोषे रीति रिवाज के।  
वेदों के व्याख्याता और निर्माता आर्यसमाज के ॥२॥  
ईश्वर का अवतार बताकर जड़ पूजा कर्वाते थे।  
कड़ियाँ अबिधा का सज साज तरावे गाते थे।  
बढ़काते थे प्याते चक्कर लगा रहे गिराँज के।  
वेदों के व्याख्याता और निर्माता आर्यसमाज के ॥३॥  
रज सत्यायंप्रकाश देश के नई रोशनी दिखा दई।  
जड़ पूजा छुड़वाई सबको ईश्वर भगते सिखा दई ॥  
नब सबस्तर बंधवदी प्रतिपदा लिपि सरताज के।  
वेदों के व्याख्याता और निर्माता आर्यसमाज के ॥४॥

छोरा हरयाणू का

## पहलवानां के अखाड़े बी दाह के अड्डे बनग

दो-एक दिन पहल्यां सांभ के टैम में पहलवानां के एक बसाड़े में  
बसा गया था। कई नै सुनी थी के पहलवानां म्यू बरजिस करे, अरन्तू  
बरजिस करे से म्यू करके इनकी मेहत शरीर ठीक रहबे से, अर इनकी  
खुराक को आच्छी होबे से, लोग मतलब पहलवानां के बारे में बेरा  
ना के के कहा करते। पर मैं जब अखाड़े में गया तो मने एकदम  
उल्टा हिसाब दिख्या। अर देख के वहीत जो कुल पाया के पहलवानां  
की रज या ह्याता होरी से। जिस हिसाब तै उन धखाड़े में रग डग  
देख्या उस तै तो आम आदमी बी अम्ब्या लगा ते के ये असली पहल-  
वान नही नकली से मतलब कायजी पहलवानां से।

सांभ के टैम में जब उस अखाड़े में पहोष्या तो पांच सात  
पहलवान तयार होरे ये बरजिस कर सातर खेर शक कर दी उनमें  
बरजिस। अर मेरे ब्याल में एक डेढ बंदे ताही ये बरजिस करते रहे।  
इतनी देर ताही उनमें प्रपनी देई तोइन में कसर नही छोड़ी। खेर  
बहीत बकि्या साम्या पहलवानां का यो काम। धर फेर पहलवानां का  
काम बी बरजिस करना। अर आच्छी खुराक लेवणा हो से, अर फेर  
कोए घणा बोलीं तो उसतै समारन का काम बी इन पहलवानां का  
हीषे से।

बरजिस करन ताही तो मने इन पहलवानां का काम ठीक साम्या,  
पर जब ये बरजिस करके हाटे तो मैं देलता रह्या के ईब ये खुराका  
के लेबे। बोड़ी सी बार तो उनमें आराम सा करवा अर बिसनें बीडी  
सिमरट पीबलीं धो, उसने बीडी सिमरट पीयी। बोड़ी सी बार पाछे  
के होया जोलत सुल्समी खण्डी दाह की अर सामे घाल घाल के  
पीबक एक परत सी मैं टमाटर, मूली, गाजर, प्याज काट राबे ये  
अर एक पत्तीने में बेराना के धा कोए उसने चीकरन बताबे था अर कोए  
किमा। ईब उमे देलव्यो बरजिस करके इसी खुराक जो तेता नोगा  
बो किसा पहलवानां होगा। अरे भाई साहब हर्णू नै की नमने पाच चार  
ही रपईने खचं होये। ससका बी साम्या बहिंये था, दूध पीवणा  
बहिंए था और बहीत से मेने से साम्य के। पहलवानां का अर दाह  
का मतलब के ?

अबल मैं तो बात या से ईब पहलवानां के अखाड़े नही बसके  
खण्डे के धखाड़े रह्ये। धारे अखाड़े इसे नही से पर बहीत से इसे से।  
अर फेर सरकार ने माशा मोट्टा ध्यान इन पहलवानां कानी देवणा  
बाहिंए। पर सरकार धीरे इतना टैम नही। लोडर नोगा माशा मोट्टा  
ध्यान देबे से इन पहलवानां कान्ही पर कद, जब इलेषन हो जब।

खेर धीर तो किये के बसकी नही इन पहलवानां कान्ही ध्यान देवणा,  
पर उपप्रधानमन्त्री चौ० देवीलाल और चौटाला साहब इन कान्ही जरूर  
ध्यान दे सके से। म्यू इनमें बेरा से पहलवानां की कौमत के होबे से।  
तो चौ० साहब की भाज के दिन चुरगदे में सरकार से, यो चाहबे नरो इन  
पहलवानां का भला कर सके से ना तो ये म्यूए बरजिस करे अर  
दाह पीवबे। (दैनिक जनसत्ता)

## उठो आर्यवीर देश को कौन बचायेगा

अष्टाचार को मिटाना, दोन-हीन को उठाना।  
इतिहास को बताना, नही मानव रहे ॥  
अधे मास का ही खाना, रक्त जोष का वहाना।  
निबंली को सताना, प्रत्याचार कर रहे ॥  
पुण्य वरा पर कौन धर्म का, बुद्ध मचायेग।  
तुम उठो आर्यवीर देश को, कौन बचायेगा ॥१॥

शिक्षा है प्रतिज्ञा, नही वेद अनुकूल।  
सविद्या है कूल, व्यभिचार ही बूढ ॥  
ब्रह्मचर्य है मूल, शिक्षक मये मूल ॥  
देश मिल गया बूल, ऊँसे धाये बूढ ॥  
बैदिक शिक्षा धाम देश में, कौन चलायेग।  
तुम उठो आर्यवीर देश को, कौन बचायेग ॥

अभ्यविश्वास लाना, पाण्डव को बहाना।

जोवन विषयो में लगाना, मनमानी कर रहे ॥  
मुद्रिकल आज भाई, भाई-भाई को लड़ाई।  
मर्यादा मिटाई, खब मूल ही रहे ॥  
दयानन्द सन्देश गहाँ पर, कौन बुलायेगा।  
तुम उठो आर्यवीर देश को, कौन बचायेगा ॥३॥

राम कृष्ण के साल, अब उठो गोपाल।

हुआ हास बेहाल, वीर बलशारी ॥  
चाहे पदनें कडाओ, पर गीग न लुकाओ ॥  
ध्यान ईश में लगाओ, जो न्यायकारी ॥  
महेश आर्यवीर दलों को, कौन बनायेगा।  
तुम उठो आर्यवीर देश को, कौन बचायेगा ॥४॥

—महेश आर्य प्रा० पो० पन्हेडा लुदं, तह० बल्सभगद  
जिसा फरोदाबाद (हरयाण)

(पृष्ठ ४ का शेष)

२०. शूद्रों या धरने से विभन्न जाति के साफ-सुधरे स्त्री-पुरुष द्वारा  
पकाये हुए भोजन से धर्म प्रच्छेद नहीं होता। परन्तु अशर्म, अन्याय, भ्रष्ट,  
स्वैक मार्किट, मिसालत आदि पाप-कर्मों से प्राप्त होनेवाले बन से  
खरीदे हुए धन्न के खाने से धरमस धर्म प्रच्छेद होता है। (वायुपिमानो  
जन हृदय पर हाथ धरकर अपनी-अपनी कमाई जीवनों को इस कसौटी  
पर परखें।)

२१ आर्यसमाज कोई असंग सम्प्रदाय नहीं। आर्य का मतलब  
श्रेष्ठ है, आर्यसमाज श्रेष्ठ, सदाचारी, आरिस्तक, ईश्वर-विश्वासी और  
वैदिक धर्मों वनों का सङ्गठन है। ऊपरलिखित गुण धारण करनेवाले  
सभी व्यक्ति श्रेष्ठ हैं और आर्य हैं, चाहे वे किसी सम्प्रदाय के हों।  
आर्यसमाज सम्प्रदायवादा को स्वीकार नहीं करता।

२२ 'विद्या धर्मण शोभते' अथवा, कर्तव्यहीन, चरित्रहीन,  
स्वार्थत तथा 'खाने-पीने और मन को मोच' (Eat Drink and be  
Merry) तक जिसका जीवन सोमित हो, ऐसे किसी दुर्गुणयुक्त प्रेरुष्ट  
एव डबल प्रेरुष्ट को विद्या कहना अशोभनीय है। विद्या की दामा  
पवित्र जीवन से ही है।

२३. आर्यसमाज ऐसा मानना है कि मर्यादा, प्रायना, अग्निहोत्र,  
यज्ञ, स्वाध्याय, पूजापाठ, नित्य कर्म करने हुए यदि किसी व्यक्ति में  
'सदाचार, दान, पुण्य, पवित्र कमाई, शुद्ध आचार, सत्य व्यवहार  
नहीं', तो वे नित्यकर्म सभी नित्यकर्म हैं। इसलिए सभी लोग आर्य  
धर्मात् श्रेष्ठ बनें। बहो आर्यसमाज को मान्यता दे, यही आर्यसमाज  
का सदेश है।

## आर्यजन आर्यसमाज स्थापना दिवस उत्साहपूर्वक मनावें

सांबेदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती ने आगामी चैत्र शुक्ला प्रतिपदा (७ मार्च १९६१) को आर्य-समाज स्थापना दिवस समारोह उत्साहपूर्वक आयोजित करने के लिए आर्यसमाजों और आर्यजनता तथा वैदिक धर्मियों से अपील की है कि इस दिन आर्यसमाज मन्दिरों में बृहत् यज्ञ करके ओ३म् ग्यज फहराये और सार्वजनिक सभा का आयोजन करके आर्यसमाज की स्थापना का महत्त्व महर्षि दयानन्द के जीवन—वेद और वैदिकधर्म की महत्ता पर विद्वानों के प्रवचन कराये और समाज मन्दिरों को दीपमाला से सुशोभित करें।

स्वामी जी ने इस दिन प्रत्येक आर्य समाज एव आर्यजन आत्म-निरीक्षण करे और देख कि उनके वैयक्तिक एवं सामाजिक आचरण से आर्यसमाज का कितना गौरव बड़ा है अथवा उसके काय विस्तार में उनका कितना योगदान रहा है? यदि स्वयं में कोई कमी अनुभव करे तो भविष्य के लिए उसमें सुधार करके अपने को आर्यसमाज, देश, धर्म और जाति की रक्षा के लिए अधिकाधिक उपयोगी बनाने का व्रत ले।

स्वामी जी ने महर्षि दयानन्द के मनतथ्यों तथा वेद प्रतिपादित-सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार के लिए सांबेदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा में स्थापित 'वेदप्रचार' निधि के लिए सभी आर्यसमाजों से अपील की है कि वेदप्रचार के लिए अधिक से अधिक राशि संयुक्त करके सांबेदेशिक सभा में भेजकर धर्मप्रचार के पुनोत्त कार्य में यथा के भागी बनें।

—तन्त्रिवालय शास्त्री  
सभामन्त्री

## वैदिक आदर्शों की ओर बढ़ता गांव कुंड

आर्यसमाज की स्थापना—संकड़ों युक्त आर्यसमाज में दोषित

दिवस २२, २३, २४, फरवरी को ग्राम कुण्ड के चतुर्दश पर सभा आर्यसमाज का पाण्डाल गांव के प्रत्येक वस्त्रे, युक्त व दृष्ट के लिए आकर्षण का केन्द्र बना रहा। प्रातःकाल ८ बजे से लेकर रात्रि ११ बजे तक आर्यसमाज के पाण्डाल में मेला सा बना रहता था। प्रतिदिन प्रातःकाल ८ से ११ बजे तक यज्ञ भजन उपदेश तथा १ से ५ बजे तक भजन उपदेश तथा रात्रि ८ से ११ बजे तक फिर भजन उपदेश कार्यक्रम नियमित चलता रहा। प्रातःकाल ज्यों ही मैं गुरुकुल शंखर के ब्रह्मचारियों के साथ मिसकर यज्ञ प्रारम्भ करता, स्त्री-पुरुष अपने घरों से पानो में मृत लेकर आने प्रारम्भ हो जाते। देखते ही देखते संकड़ों की उपस्थिति हो जाती। तीन दिन से गांव के ४६ व्यक्तियों ने यज्ञोपवीत धारण किए। अनेकों ने दुर्लभों से यज्ञोपवीत की प्रशिक्षा की। २३ फरवरी को श्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज को पाण्डर तथा दीपहर की सभा में भाषका प्रभावशाली उपदेश हुआ। इस तीन दिवसीय उत्सव में श्री स्वामी शत्रुघ्न जी के क्रांतिकारी भजनों एवं उपदेशों का विशेष प्रभाव रहा। श्री ए० चिरवीरवाल जी ने भी अपने विद्वत्ता-पुर्णनों ने श्रोताओं को काफी प्रेरित किया। गुरुकुल शंखर के ब्रह्म-चार्य शोष, ब० नन्दकिशोर तथा ब० सोमदेव के मधुर भजनों को सुनने के लिए ग्रामवासी हमेशा लासालित रहते थे। अन्तिम दिन श्री हृदयानसिंह जी भजनोंपदेशक भी इस वैदिक कुम्भ में आकर सम्मिलित हुए। आषाढ कार्यक्रम भी प्रभावशाली रहा। दीपहर तथा रात्रि की सभाओं में श्रोताओं की सख्या हजारों में होती रही।

आकर्षक व्यायाम प्रदर्शन :-

२४ फरवरी को दीपहर गुरुकुल शंखर से श्री आचार्य विजयपाल जी अपने ब्रह्मचारियों के साथ ग्राम कुण्ड में पधारे। ४ बजे तक वेदप्रचार का कार्यक्रम चलता रहा। ठीक ४ बजे गुरुकुल के ब्रह्म-चारियों का व्यायाम प्रदर्शन प्रारम्भ हुआ। हजारों की सख्या में स्त्री-पुरुष उपस्थित थे। समीप के घरों की छतों पर भी भारी मख्या में स्त्री-पुरुष बडे दिलाई दे रहे थे। यहां पर ब्रह्मचारियों ने योगासन, दश-भङ्क, साठी, माला, तलवार, मलसम्भ तथा रस्ते के व्यायाम का प्रदर्शन किया।

मलसम्भ तथा रस्ता मलसम्भ के व्यायाम ने विशेष रूप से प्रभावित किया। ब्रह्मचारियों के व्यायाम के उपरान्त श्री आचार्य विजयपाल जी ने कण्ठ से लोहे के मोटे-मोटे सरिए ओहकर दिखाए और छाती पर भारी पत्थर तुड़वाकर तो दर्दकों को स्तम्भ ही कर दिया। श्री आचार्य जी ने हाथों से कांच पीसकर भी दिखाया। श्री आचार्य जी तथा ब्रह्मचारियों के व्यायाम ने युवकों को अत्यधिक प्रेरित किया। इस व्यायाम को देखकर अनेक युवकों ने प्रतिदिन व्यायाम करने का संकल्प किया। स्त्री-पुरुषों ने ब्रह्मचारियों को श्रद्धापूर्वक पारितोषिक भी दिया। जयशोषो के मध्य ६ बजे व्यायाम प्रदर्शन सम्पन्न हुआ।

—लेखक स्वामी सुभेषानन्द

## हुराणा में आर्यसमाज के उत्सवों की सूची

आर्यसमाज युवाजी जि० ओन्द	१५ से १७ मार्च
पायल जि० हिसार	१५ से १७ "
गुरुकुल भंसवाल जि० रोहतक	१५ से १७ "
बौहान कंठरी पानीपत	२० से २२ "
गोहाना मण्डी जि० रोहतक	२२ से २४ "
डोल जि० कुश्न	२२ से २४ "
कम्पा गुरुकुल नरेशा	२३, २४ "
उकलाना मण्डी जि० हिसार	२३ से २४ "
सालवन जि० पानीपत	२४ से २६ "
गुरुकुल डिक्काला जि० पानीपत	२६ से ३१ "
घरीशा जिला करनाल	२६ से ३१ "
वैदिक ग्रामम भादव जि० गुडगांव	३०, ३१ "
बाहलाना जिला रोहतक	२८ से ३१ "
माडल टाउन सोनीपत	१ से ७ अप्रैल
गुरुकुल कुश्न	५ से ७ "
अदानन्द नगर पवलन जि० फरीदाबाद	५ से ७ "
नारा जि० शिरमौर (हि० प्र०)	२६ से २८ "
लोहाक जि० सिवाली	११, १२ मई
रावरी जि० यमुनानगर	१, २ जून

—सुदमनदेव आचार्य  
सामवेदप्रचारसिद्धांत

## छोटाराम आर्य कालेज को प्रथम पुरस्कार

सोनीपत : स्वामीय छोटाराम आर्य कालेज को प्रथम पुरस्कार राष्ट्रीय-सेवा-योजना के क्षेत्र में सर्वोत्कृष्ट कार्य के लिए प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। साथ ही कालेज के कार्यक्रम अधिकारी सत्यराम देशवाल को सर्वोत्तम कार्यक्रम अधिकारी का सितारा दिया है।

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के प्रांश में आयोजित एक समारोह में विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार डाक्टर के. एच. सांघवान ने राष्ट्रीय सेवा योजना में प्रथम व द्वितीय स्थान पाने वाले कालेजों को ट्राफी प्रदान की।

(देविक बनसन्देश से साभार)

**सत्य के प्रचारार्थ**

अजिल्द ६००/-  
सेंकेडा

**मर्यादा प्रकाश**

अजिल्द १००/-  
सेंकेडा

**घर पर पहुंचाएँ**

**सफेद कागज सुन्दर छपाई**

**सुदृढ़ संस्करणवितरण करनेवालों के**

आत्म 23x36=16 पृष्ठ 820 की दर, लिए प्रचारार्थ

अजिल्द ६००/- अजिल्द १००/-

**आर्यसाहित्य प्रचार ट्रस्ट**

455, 7वारी बावली, दिल्ली-6 दूरभाष : 238360-233112

## बिक्री हेतु वैदिक साहित्य

१- हो वेदाज (अंग्रेजी भाषा में) — स्वामी भूमानन्द जी	१-००
२- श्रीप्रतिपत्न्य ऋक धार्यसमाज—पं० चण्डपति एम०ए०	१-५०
३- जीवन ज्योति (वेदमंत्रों की व्याख्या) — ”	३-००
४- निहारिकावाद और उपनिषद्	०-५०
५- आर्यसमाज की विचारधारा—पं० क्षितिबिद्युत्कार वेदासंकार	१-००
६- निखाम की जेल में	२०-००
७- स्मारिका(हरगंगा प्रांतीय आर्यसमाज शताब्दी समारोह)	१०-००
८- आय प्रतिनिधि सभा शताब्दी समारोह स्मारिका	२०-००
९- आर्यसमाज प्रीर प्रत्यक्षता निवारण—पं० ओम्प्रकाश त्यागी०-५०	
१०- बलिदान जयन्ती स्मृति ग्रंथ (धार्य ऋषीदों का परिचय)	४-५०
११- ईश्वर की सत्ता—डा० रणजीतसिंह	१-००
१२- हरयाणा के धार्यसमाज का इतिहास—डा० रणजीतसिंह	५-००
१३- धर्म-प्रवेशिका—डा० रणजीतसिंह	३-००
१४- धर्म-भूषण	५-००
१५- पंचांग का आर्यसमाज—प्रि० रामचन्द्र जावेद	२-००
१६- भादवंत धातु रूपान्ती—महावीर प्रसाद शास्त्री	२-००
१७- वैदिक उपासना पद्धति—डा० सुदर्शनदेव आचार्य	३-००
१८- मूलिपुत्रा—सम्पादक पं० जगदेवसिंह सिद्धाती	००-५०
१९- वेदस्वरूप निर्णय	००-५५
२०- वेदाधिर्भाव	१-००
२१- वेदभाष्य पद्धति	१-००
२२- वैदिक विवाह पद्धति	६-००
२३- गोकर्णानिधि—स्वामी दयानन्द सरस्वती	०-२०
२४- सत्यायप्रकाश	१०-००
२५- महर्षि दयानन्द आत्मकथा	०-५०
२६- हमारा काजिका—योगेन्द्रपाल	१-००
२७- बड	स्वामी भोमानन्द, सरस्वती
२८- नीर हेतू	१-५०
२९- पीपल	१-५०
३०- मिचं	स्वामी भोमानन्द सरस्वती
३१- श्लोपद वा हाथीपाद की चिकित्सा	०-२०
३२- बिच्छु विष चिकित्सा	०-५०
३३- लक्ष्म	१-२५
३४- विदेहों में मैंने क्या देखा	२-५०
३५- नैरोबी यात्रा	१-५०
३६- ब्रह्मचर्यं साधन ६-११	१०-००
३७- ” १-२	१-००
३८- ” ३	१-००
३९- ” ४	२-५०
४०- ” ५	२-००
४१- ” ६	३-००
४२- ” ७-८	२-००
४३- ” ९	०-३०
४४- ” १०	१-५०
४५- ” ११	२-००
४६- हल्दी	१-५०
४७- नीप	१-२५
४८- कर्तव्य दर्शन—पं० नारायण स्वामी	४-००
४९- विद्यार्थी जीवन रहस्य	२-५०
५०- योग रहस्य	४-००
५१- आर्यसमाज क्या है ?	२-००
५२- कथा माता	१-२०
५३- संस्कारविधि	०-००
५४- वैदिकधर्म परिचय—पं० जगदेवसिंह सिद्धाती	३-५०
५५- वैदिक यज्ञ पद्धति—सार्वदेशिक सभा प्रकाशन	००-६०
५६- मृत्यु के पश्चात् जीव की गति—श्री जगदेवसिंह सिद्धाती	१-५०
५७- वैदिक शिक्षा दसवां भाग—सत्यभूषण वेदासंकार एम.ए.	५-००
५८- पं० जगदेवसिंह सिद्धाती जीवन चरित—डा. सुषोमदेव	१०-००
५९- हैदराबाद सत्याग्रह में हरयाणा का योगदान—रणजीतसिंह	३०-००

प्राप्ति-स्थान : धार्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा  
दयानन्दमठ, सिद्धाती भवन, रोहतक

## आर्यसमाज स्थापना दिवस और हमारा कर्तव्य

आर्यसमाज की सिरोमणि सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के आदेशानुसार १७ मार्च को सारे विश्व में आर्यसमाज स्थापना दिवस मनाया जा रहा है। धार्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती के आर्यसमाज के छोटे नियम के अनुसार सत्ता का उपकार करना इसका मुख्य उद्देश्य बताते हुए हमें शारीरिक, जालिग, और सामाजिक उन्नति करने का आदेश दिया है। अतः आर्यसमाज स्थापना दिवस मनाते समय इस महात्वा कार्यक्रम को पूरा करने के लिए आवश्यक पग उठाना चाहिए। आज सारा संसार आर्यसमाज की ओर निहार रहा है क्योंकि आर्यसमाज कोई सम्प्रदाय नहीं है अपितु एक आंदोलन है और इसके सिद्धान्त विधानों को कसौटी पर खरे उतरते हैं। आज तक कोई भी विद्वान् इसके नियमों तथा सिद्धान्तों को अन्वय सिद्ध नहीं कर सका है। धार्यसमाज किसी एक ऋषि के लिए नहीं बनाया गया अपितु संसार का उपकार करने के लिये बनाया गया है। वेद इसका आधार है जोकि संसार के पुस्तकालय में सबसे पुराना तथा वैज्ञानिक है।

आज संसार के सामने अनेक समस्याएँ मुहू बाये लगी हैं। इनका समाधान धार्यसमाज के नियमों के पालन करने से ही सम्भव है। अतः धार्यसमाज के प्रत्येक कार्यकर्ता को आर्यसमाज के नियमों तथा ऋषि दयानन्द के अमर वच्य सत्यायप्रकाश को श्रद्धिक से अधिक मन-नारियों तक पहुँचाने के लिए भ्रमरक प्रयत्न करना होगा। १२ मांस, गोरुत्या का प्रसार हो रहा है जिससे वैदिक संस्कृति के नोप होने का खतरा है। भाग्य वष ऋषि मुनियों की तपोभूमि रही है यज्ञ से वैदिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए विदेशों से छात्र आने थे, परन्तु आज हम पढ़ने के लिये पश्चिम के देशों में जाकर अवैदिक शिक्षा ग्रहण करने के लिए भाग रहे हैं। अतः राष्ट्र के नेताओं को धर्मनो प्राचीन पुस्तक शिवा पद्धति तथा वैदिक संस्कृति को श्रद्धासाहन देना चाहिए।

केदारसिंह धार्य

## आर्यसमाज स्थापना दिवस

(वि० पं० गंगाप्रसाद विद्यापी एम. ए. एम.फिल. जवहरपुर सिटी)

स्थापना दिवस मनाएँ हम,  
जब मे कुछ कर जाएँ हम।  
निज को धार्य बनाय हम,  
फिर सब जब जायँ बनाएँ हम।  
ऋषि की जय बोलने से क्या,  
सबमुच ऋषि बन जायँ हम।  
समाज की जय बोलने से क्या,  
समाज को जंचा उठायेँ हम।  
ओ३म् का शब्दा जंचा उठेगा,  
यदि ओ३म्भय बन जायँ हम।  
वेदों की जय ही न बोलते रहूँ,  
वेद पढ़ेँ गुने व जायँ हम।  
हम वेद पढ़े वेदांग पढ़ेँ,  
व्याकरण निरुक्त व निष्पठ पढ़ेँ।  
छह हयंन और उपनिषद पढ़े,  
सत्यायप्रकाश व भूमिका पढ़ेँ।  
संस्कारविधि पढ़ जायँ हम,  
गाहृह्य प्रेम उपाजेय हम,  
मत जीवन व्यर्थ गंवायेँ हम,  
ना अन्त समय पछतायेँ हम।  
बोधोत्सव मनाया तुमने,  
क्या सही बोध पाया तुमने।  
स्वाहाकार किया तुमने,  
क्या जीवन यज्ञमय किया तुमने।  
कोई साधी नहीं मिलता,  
तो प्रभु को साधी बनाओ तुम।  
जंसा बोले वसा ही बने,  
केवल नारे नहीं लगाओ तुम।  
ऋषि धर्मों का सरसम करो,  
तो सत्य को जान जाओ तुम।  
सत्य की परीक्षा करते रहो,  
अरु सत्य ही को अपनाओ तुम।

## लाडौत में नए गुरुकुल की स्थापना

जिला रोहतक के प्रसिद्ध ग्राम लाडौत में ३० हुरिदत जी उपाध्याय के प्रयत्नों से दिनांक ३ मार्च १९६१ रविवार को नए गुरुकुल की स्थापना की गई। इस उपलक्ष्य में प्रातः यज्ञ किया गया। सभा के अजनीपदेसक पं० जेम्ससिंह आर्य, स्वामी जगतगुनि, श्री जगदीरसिंह आर्य, म० भाविराम आर्य तथा श्री मनकृष्णसिंह आर्य ने श्रद्धेय ध्यानार्थ तथा गुरुकुल की महिमा पर मधुर गीत गाये। श्री सत्यवीरसिंह एडवोकेट, श्री सुखदेव शास्त्री, श्री वेदव्रत शास्त्री पूर्व मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, श्री सत्यव्रत शास्त्री, डॉ० राजकुमार आचार्य, श्री भगवानसिंह मन्त्री भागडीवा, स्वामी सत्यानन्द जी, पं० रामचन्द्र आर्य भारौट आदि वक्ताओं ने जि० रोहतक में नए गुरुकुल की स्थापना करने के लिए ३० हुरिदत जी के योगदान को सराहना की। स्मरण रहे श्री ३० हुरिदत जी ने अपनी ३ एकड़ उपजाऊ भूमि, उनके परिवार ने एक लाख २० केकर एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। इस कार्य में मा० जलजोतसिंह बहादुरगढ़ ने एक लाख बपए, सेठ हरमोहन ने १० हजार २०, श्री० हरकिशनसिंह कटवाडा निवासी ने ११ हजार २० पान केकर गुरुकुल धिशा पदति के प्रति सच्ची श्रद्धा प्रकट की है। उत्सव पर पंचारे हुए अनेक आर्यकर्तवियों ने भी उदारता पूर्व दान केकर योगदान दिया।

गुरुकुल की आचारशिला गुरुकुल कालदा के सचालक तथा शिल्पज्ञ गुरुकुल धिशा शास्त्री आचार्य जलदेव जी ने रखी और गुरुकुलों की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि गुरुकुल धिशा

प्रवासी से ही राष्ट्र रखा तथा संसार का कल्याण हो सकता है। श्रद्धि दयानन्द के आदर्शों पर चक्कर ही हूब वैदिक संस्कृति को जीवित रख सकते हैं। जहाँ-जहाँ गुरुकुल तथा गुरुकुलों के स्नातक हैं, वहाँ आर्यसमाज का प्रचार हो रहा है और परीपकार के कार्य हो रहे हैं। आज आर्यसमाज के कार्यकर्ता शरावबन्धी तथा गोरेखा के लिए प्रयत्नशील हैं।

## दयानन्द क्या था

बराएँ तुम्हें हम, दयानन्द क्या था।  
 श्रद्धि या फरिस्ता, था या देवता था ॥  
 ये बिधा से भरपूर उसके सजानें।  
 शहन्शाह था वो बजाहिर गया था ॥  
 रहा उन्नमर शेवये, हकपरस्ती।  
 बसन का था शंदा, धर्म पर फिदा था ॥  
 या मसकरी मसरूर पी जाते बहदत।  
 खुदा का था वो शौर उसका खुदा था ॥  
 धम्बरे में जो ठोकरे ला रहे थे।  
 वह उन गुमरहों के लिए रहनुमा था ॥  
 बिसे हमने गसती से समझा था इस्मन।  
 वही किरिये कीम का ना खुदा था ॥

—०—

# गुरुकुल

कांगड़ी फार्मसी की  
 आयुर्वेदिक औषधियां सेवन कर स्वास्थ्य लाभ करें

## गुरुकुल

### च्यवनप्राश

पूरे परिवार के लिए शक्तिदाक  
 एवं स्मृतिदाक चयन।  
 प्राणी, उम्र व शारीरिक एवं  
 केन्द्रों की दुर्बलता में  
 उपचारों औषधिविद  
 औषधीय द्रविक



### गुरुकुल

चायकिल  
 लोहे व मरुतों के मजलत सेवों  
 मेथिरोधन पायोरेखा  
 के लिए उपयोगी  
 आयुर्वेदिक औषधि



### गुरुकुल

चाय  
 तुलस व इन्कगुला, चक्कर  
 खरि में उन्नी लट्ठियों  
 में बने जाधरती  
 आयुर्वेदिक औषधि



गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी हरिद्वार (ऊ प्रग)

शाखा कार्यालय : ६३, गली राजा केदारनाथ  
 बावड़ी बाजार, दिल्ली-११०००६

## गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी

## हरिद्वार

की औषधियां सेवन करें।

शाखा कार्यालय  
 ६३ गली राजा केदारनाथ,  
 चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

स्थानीय विक्रेताओं एवं सुपर बाजार  
 से खरीदें

फोन नं० २६१८७१

'अनार'—देवनागरी १००४

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए गुरुकुल और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य त्रिदिग प्रेस के लिए सर्बहितकारी मुद्रालय रोहतक में छपवाकर सर्बहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।



# सर्वेहितकार्य

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाण का साप्ताहिक मुखपत्र

१।मान सम्पादक—सूवेसिंह सभामन्त्री

सम्पादक—वेदव्रत भास्वी

सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालकार एम० ए०

वर्ष १८

अंक १७

२१ मार्च, १९६१

बाँधिका शुल्क २०)

(आजीवन शुल्क ३०२)

विदेश में ८ पाँच

एक प्रति ७५ पैसे

## आर्यों सावधान !

श्री स्वाधी वेदमणि परिषदाय,  
ग्रामल—वैदिक नरपान नगीबाबाबाद (उ०प्र०)

२० फरवरी को मेरठ नगर में पत्रकारों से बातलाप करते हुए विश्व हिन्दू परिषद् के महासम्मी श्री प्रभोक सिंघल ने कहा कि "अगर कोई यह कहे कि—कुरान, बाइबिल और दयानन्द की पुस्तक के आधार पर सरकार चलाओ तो अब यह नहीं हो सकता।" उन्होंने महर्षि दयानन्द की पुस्तक को कुरान और बाइबिल के समकाल क्यों रखा ? क्या वह महर्षि की पुस्तक को भी—जिसकी ओर उनका इ गित है, निश्चय ही वह सत्यार्थप्रकाश है—कुरान और बाइबिल की भाँति बिदेसी शासिक सम्प्रदाय की पुस्तक मानते हैं ? इसका स्पष्ट ही यह उत्तर है कि वह ऐसा न तो स्वीकार कर सकते हैं और न कह सकते हैं परन्तु फिर भी उन्होंने ऐसी बात कही तो उसका भी कारण है। इस विषय में बहुत कम लोग जाते हैं। हाँ, इससे उन आर्य-वन्दुओं को अच्छे खुश जानी चाहियें जो विश्व हिन्दू परिषद् का अन्ध-समर्थन करते हैं।

नास्तिकता है और है २० स्व० से० संघ का ही एक मोर्चा विश्व हिन्दू परिषद् है और २० स्व० से० संघ के लोग आर्यसमाज के प्रबल विरोधी हैं। इसका मुख्य कारण तो यह है कि इनको सम्पूर्ण विचार-धारा का मूलाधार "हिन्दू" शब्द है। आर्यसमाज की अवस्थिति और आर्यसमाज के द्वारा "आर्य" शब्द तथा आर्यत्व के प्रचार-प्रसार से इनकी आधारशिला ही उलझती है। इसका कारण यह है कि आर्य और आर्यत्व का आधार ठोस है, क्योंकि यह वेद पर आधारित है और हिन्दू का आधार वेद शास्त्राधारित नहीं है। आर्य जाति के आदिकाल से मिलने वाली ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को धार्य, आयत्व और आर्यवर्त पर आधारित है, जबकि हिन्दू और हिन्दुत्व का कोई शास्त्रीय आधार नहीं है जैसुतु यह शब्द भारतीय आर्य जाति की पतनावस्था और लगभग एक सहस्र वर्ष की पराधीनता के परिणामक है परन्तु संघो मनोवृत्ति को यही अधिक मिय है। यह लोग तो इस देश का नाम भी भारत नहीं बरिषुतु हिन्दुस्तान ही पसन्द करते हैं। इस प्रकार राष्ट्रीय स्वाधीनता की बात भी पराधीनता के धारवरण में परिवेष्टित करके ही प्रस्तुत करते हैं।

विचारणीय प्रश्न यह है कि यह पराधीनता की मनोवृत्ति बनाये रखकर स्वाधीनता को कितने समय सुरक्षित रखा जा सकता सम्भव है ? हिन्दू शब्द का तो अर्थ ही गुलाम, काला, काफिर भादि है, जबकि आर्य का अर्थ अंध, सज्जन, सदाचारी, ईश्वरपुत्र भादि है। हिन्दु-स्तान का अर्थ बनता है गुलाम, चोर, काफिर आदि का निवास स्थान तथा हिन्दुत्व का अर्थ बनता है इसी प्रकार के लोगों की विचारधारा। दूसरी ओर आर्यवर्त का अर्थ होता है अंध, सज्जन, सदाचारी लोगों का केंद्र स्थान और आवास स्थल तथा इसी प्रकार आर्यत्व का अर्थ हुआ अंधता, सदाचारपूर्ण आचार-विचार, परन्तु संघी वन्दु इसे स्वीकार करने को कदापि तैयार नहीं।

इनका इस उन्मत्तापूर्ण आचार-विचार वाली विचारधारा को

स्वीकार न कर पतनावस्था, पराधीनता की विचारधारा को धमोकार कर उसी का पिच्छेपण करते रहने का कारण है पतनोन्मुख आर्य जाति को उसके नास्तिक तथा गौरवपूर्ण धरनों बर्षों के इतिहास, उसकी उच्च तथा पवित्र वैदिक संस्कृति से दूर रखकर उन्हीं अन्धविश्वासों में फंसाये रखना, जिनके कारण यह वैदिक ऋषि-मुनियों की सन्तति और राम कृष्ण को प्रिय जाति सहस्रों बर्षों के पतनोन्मुख होती हुई एक सहस्र वर्ष पूर्व पराधीनता के पास में आबद्ध हो गई थी। यह लोग समझते हैं कि इसी प्रकार अन्धविश्वास में फंसी रहकर जति हमारी राज्य विषया की पूर्ति का साधन बनी रह सकती है और इसकी गांठे खून-पसीने की कमाई पर हम धारिक, राजनीतिक तथा शासकीय रूप से मुलभर उड़ाते रह सकते हैं।

महर्षि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश को एक बार भी ध्यानपूर्वक पढ़ लेनेवाला व्यक्ति अन्धविश्वासों में फंसा नहीं रह सकता। यह वह ग्रन्थ है जिसकी देश-विदेश के उच्चकोटि के विद्वान् विचारकों ने मुकुल कण्ठ से प्रशंसा की है और भारतीय स्वाधीनता संग्राम के वड़े-बड़े सेनानी इसी धर्मग्रन्थ को पढ़कर स्वतन्त्रता संग्राम में कूड़े तथा उत्तम से अनेक ने फाँसी के फंदे को प्रसन्नतापूर्वक चूमकर मारुतुर्षि की स्वाधीनता के लिए जीव न होय दिया तथा ब्रिटिश सरकार को जैसों में उन दिनों अस्सी और पिचासी प्रतिशत तक आर्यसमाजी ही हुवा करते थे। सत्यार्थप्रकाश को एक बार पढ़ लेने पर हृदय में स्वाधीनता की ज्वाला बजक उठती है किन्तु तिसल जी और उनके समर्थक हैं अन्धविश्वासों में लिप्त और यह लोग समझते हैं कि महर्षि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश के रहते इनके नए मठ स्थापित नहीं हो सकते, इसी कारण इन्होंने सत्यार्थप्रकाश की कुरान और बाइबिल जैसी विदेशी संस्कृति और मतधाराओं की पुस्तकों की खंणो में रक्खा है।

यदि सिंघल जी में कुछ माहस और सत्यार्थप्रकाश की विचार-धारा को निषया, भ्रात तथा भ्रान्तिकारक सिद्ध करने की योग्यता है तो वह सार्वजनिक रूप से इस विषय पर निगायिक वार्तालाप के लिए हमारा निमन्त्रण स्वीकार कर अपना पस सिद्ध करे। प्रमथया अपने दक्षतव्य पर सार्वजनिक रूप से शैव व्यक्त करते हुए अभायाचना करे।

उन्हीं यह ध्यान रखना चाहिए कि राम अम्मभूमि के प्रश्न पर सार्वजनिक रूप से प्रकाश में आ जाने से वह न तो सर्वसामर्थ्ययुक्त हो होयवे हैं और न सिद्धांतों के पश्चित ही रन गए हैं तथा न इतिहास मर्मज्ञ। हाँ, उनकी महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमर ग्रंथ सत्यार्थ-प्रकाश के प्रति इस अभिव्यक्ति का धर्म या तो नकटे व्यक्तित द्वारा नाकवालों को देखकर "नाक-नाक" पुकारने लगने की अभिव्यक्ति करना है अथवा उनका यह ह्वलन है कि अमर का सिद्ध उनको विचारधारा के लोगों के हाथों में आनेवाला है तो सबसे पहले आर्यसमाज को ही कुचलना होगा। एतदर्थ इस काय के लिए अभी से पृष्ठभूमि तैयार की जाए और इसके लिए आधार बनाया जाए महर्षि दयानन्द की विचार-धारा और विशेषकर उनके प्रमुख सिद्धांत निर्णायक धर्मग्रन्थ सत्यार्थ-प्रकाश को।

हम तो हृदय के अस्तसल से चाहते हैं कि भारत की शासन सत्ता इन लोगों के हाथों में आ जाए किन्तु इन्हें ध्यान रखना चाहिए कि (शेष पृष्ठ ६ पर)

**साम-मुषा सतक**

॥ २२ ॥

**पुष्टिदाता प्रभु**

भों अनिना रविमननवत् पोषवध विवेचिने ।  
यशस वीरवत्समम् ॥ **श्रुत्वेदं ॥** सू. १/मंन ३  
ज्ञान-रूप हे प्रभुवर मेरे,  
ज्योतिर्मय ही तुम्हीं सपार ।  
अन्न-धनों के दाता भी तुम,  
लुटा रहे अपना भंडार ।  
वह वल बंधव मुझे दीविए,  
तुम सतोषो का आगार ।  
दिन दिन फूल-फल मे जगत् में,  
सौम्य-कीर्ति का या आधार ।

॥ ३० ॥

**समर्पण की महिमा**

ओं यदग दाशुषे स्वामने अन्नं करिष्यति ।  
देवैतत्सप्तमर्षिः ॥ **श्रु. मं. १, सू. १, नग ६**  
सभी जगत् के प्यारे बन्धु,  
और सभी के मित्र महान् ।  
ज्योतिरूप तुम प्रभुवर मेरे,  
नायक भी हो तुम भगवान् ।  
जो जन मन प्राण से अर्पित,  
करना निशचिन तेरा ध्यान ।  
अपने षट्पल नियम में बंधकर,  
करते तुम उसका कल्याण ।

॥ ३१ ॥

**प्रभु से पुकार**

ओं तमोज्ञान जगत्स्वरूपस्वर्षति,  
धिय जिन्मवसे हृदहे षयम् ।  
पूषा नो यथा वेदसामखट् वृषे  
रक्षिता पापुरदव्यः स्वस्त्ये ॥ **श्रु. मं. १/सू. ८६, म. ५**  
सकल जगत् के स्वामी प्रभुवर,  
जह चेतन के रचनाकार ।  
सद्बुद्धि के प्रेरक हो तुम,  
ज्ञान-विज्ञान के जो भण्डार ।  
पालक, पोषक, दाता तुम हो,  
देते बाध-नसन-आहार ।  
जोवन, साधन दिये तुम्हीं ने,  
रसा हित कर रहे पुकार ।

॥ ३२ ॥

**दुष्ट तत्त्वों से रक्षा करो**

ओ पाहि नो अने रक्षः पाहि धूर्तराभ्याम् ।  
पाहि रीयत उत वा जिघांसतो बृहद्भानो यविष्यन् ॥  
अनिरूप तुम प्रभुवर मेरे,  
दुष्टजनों से कर निस्तार ।  
कपटी कृपणों की सगत प्रभु,  
होवे सदा हमे दुष्पार ।  
चिकट तेज बलवालो स्वामिन,  
दिसकों का कर दो संहार ।  
सभी दुष्ट दुर्गुण, जन धन को,  
हससे करो आज परिहार ।

—प्रो० चमन्धल विद्यालकार, पलवल

**शंका समाधान**

प्रश्न—जब ईश्वर, जीव और प्रकृति तीनों ही अनादि और धनस्त हैं फिर ईश्वर की क्या विशेषता है ?  
उत्तर—यही तीनों अनादि हैं परन्तु योग्यता अर्थात् गुण, कर्म, स्वभाव का अन्तर है । योग्यता का अन्तर ही महत्त्व रखता है ।  
जीव—सत् चिद् है—चेतना सत्ता है । कार्य करने में स्वतन्त्र भोगने में ईश्वर आशोच ।  
ईश्वर—सत्-चिन् धानम् है—सृष्टिकर्ता है । जीवों को उनके कर्मों के अनुसार फल का देनेवाला है ।  
प्रश्न—जब ईश्वर और जीव की सत्ता भिन्न है तो जीव को ईश्वर का अंश क्यों माना जाता है ?  
उत्तर—जीव को ईश्वर का अंश मानना प्रज्ञानता है । ईश्वर अविभाज्य है—अंश उसी का हो सकता है जिसके टुकड़े लच्छ हो सकें—ईश्वर अलच्छ है । इसलिए जीव को ईश्वर का अंश नहीं कहा जा सकता ।  
प्रश्न—ज्ञान में धारणा (जीव) को परमात्मा का पुत्र कहा है—जब परमात्मा ने जीव को पेश नहीं किया, तब वह उसका पुत्र कैसे हुआ ?  
उत्तर—परमात्मा जीव को शरीर से युक्त करता है । शरीर के बिना जीव कर्मों का फल नहीं भोग सकता । इसलिए धारण परमात्मा को पिता और जीव को पुत्र कहते हैं ।  
प्रश्न—जब ईश्वर ने जीव और प्रकृति को उत्पन्न नहीं किया तो उन पर ईश्वर की शासन करने का क्या अधिकार है ?  
उत्तर—श्ववहारा में देखिए स्वामी ने सेवक को उत्पन्न नहीं किया, पुत्र ने जिये को उत्पन्न नहीं किया, राजा ने प्रजा को उत्पन्न नहीं किया ; परन्तु यह सब उनके अनेके लिए शासन करते हुए भी बड़ा उपकार का कार्य करते हैं । इसी प्रकार ईश्वर भी जीवों के कल्याणार्थ ही ऐसा करते हैं जोकि अभ्याय नहीं है ।  
प्रश्न—क्या ईश्वर सर्वोच्चार है ? सर्वोच्चार किन्ते कहते हैं ?  
उत्तर—जो पदार्थ जिसके आश्रय में रहता है वह उसका आचार होता है । जैसे वृष या जल का आचार वर्तन है इसी प्रकार ब्रह्माण्ड का आचार ईश्वर है । ईश्वर स्वयं निराधार है ।  
कमः  
बीजप्रकाश वागप्रवृत्ती  
आर्य वागप्रथ अश्वम नुक्तुल,  
भट्टिण्या (पंजाब)

**स्वर्ण जयन्ती समारोह सम्पन्न**

मानवती धार्यकन्या उच्च विद्यालय हृषी का स्वर्ण जयन्ती समारोह २३ फरवरी को बृजभ्रम के साथ त्यागमूर्ति महामण्डलेश्वर पूज्य स्वामी गणेशानन्द जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ । जिसके मुख्य अतिथि श्री० सुरेन्द्रसिंह जी (शिक्षामन्त्री) हरयाणा राज्य ने स्वर्ण जयन्ती स्मारक भवन का शिलान्यास भी किया ।  
इस शुभ अवसर पर विशिष्ट अतिथि श्री वेदप्रकाश भी गयं (बम्बई), श्री प्रेमनाथ जी जैन (दिल्ली), कु० जिनबा जी मुख्याध्यापिका का अभिनन्दन किया गया । स्वर्ण जयन्ती स्मारक भवन के निर्माण हेतु निम्नलिखित धानराशि प्राप्त हुई :-

श्री वेदप्रकाश जी गयं	२,००,००० रूपए
श्री नन्दकिशोर जी गीयनका	२१,००० "
स्व० महाशय पारसनाथ जी के सुपुत्रों ने	६१,००० "
स्व० श्री नुनियामल जी कड़ियोवाले ने सुपुत्रों ने	४१,००० "
श्री प्रेमनाथ जी जैन- दिल्ली	११,००० "
श्री साजयतराय जी, हाँसी	११,००० "
पूज्य स्वामी गणेशानन्द जी ने	११,००० "
श्री प्रकाशचन्द जी दिल्ली	२१,००० "
वाजू किशोरीसास जी	५०० "

श्री० सुरेन्द्रसिंह जी शिक्षा मन्त्री महोदय ने २१ हजार रूपए विद्यालय के लिए और २१ सौ २० छात्र एवं छात्राओं को मिष्ठान्न वितरित करते हेतु दिये । साथ ही उपरोक्त वी हुई धनराशि का मंत्रिण श्रेष्ठ द्वारा तीन गुणा देने की घोषणा की ।

## सोनीपत में शराब के ठेकों की नीलामी पर विरोध प्रदर्शन

रोहतक की भाँति सोनीपत में भी दिनांक १६ मार्च को शराब के ठेकों की नीलामी के अवसर पर आर्यसमाज के कार्यकर्त्तों की ओर से विरोध प्रदर्शन का आयोजन किया गया। आक्रांती करवाचन कार्यालय सोनीपत से ठेकों की नीलामी की तारीख १५ मार्च की सूचना मिली थी। अतः सभा की ओर से आर्यसमाज के कार्यकर्त्तों को १५ मार्च को सोनीपत पहुंचने के लिए पत्र लिखे गए थे, परन्तु उसके बाद सोनीपत से सौतकर सभा के उपदेशक श्री रत्नसिंह आर्य ने कार्यालय को बताया कि नीलामी १५ की बजाय १६ मार्च को होगी। इसकी सूचना सभी कार्यकर्त्तों को डाक से देना सम्भव नहीं था। अतः वहाँ सम्भव हुआ वहाँ सभा के उपदेशकों को भेजकर १६ मार्च को सोनीपत पहुंचने की सूचना भेजने का प्रयत्न किया गया। विन्ने सूचना न मिल सकी वे १५ मार्च को विरोध करने के लिए सोनीपत पहुंच गये, उन्होंने प्रायः केन्द्रीय सभा सोनीपत की ओर से जिला उपमुख्य द्वारा निदेशक आक्रांती करवाचन विभाग हरयाणा को आपन दिया तथा मांग की गई कि शराब के बढते हुए प्रसार से प्रत्येक क्षेत्र में अष्टाचार परित्रहीनता, भुक्त्यादि तथा अनियमितता का बोझ-जाला होरहा है। शराबियों के दुष्प्रवहार से वहाँ तथा जेलों में शांता करना कठिन हो रहा है। शराबियों के कारण ही दुष्प्रतनाओं में वृद्धि हो रही है। स्वयं शराब पीनेवाले भी चले बहुत बुरा भ्रमन मानते हैं और वे अपनी सभाना को इससे दूर रखना चाहते हैं। अतः जनकल्याण के लिए शराब के ठेकों की नीलामी बन्द की जाये।

१६ मार्च को विरोध प्रदर्शन करने के लिए हम सभा के उप-प्रधान महाशय भरतसिंह, सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य तथा आर्य अहिंसा उपदेशिका श्रीमती किरणमयी आर्या के साथ रोहतक से सोनीपत गये। नई दिल्ली से आर्यमहिंसा नेता श्रीमती प्रभातशोभा ने इस प्रदर्शन का नेतृत्व करने भ्राना था। अतः हमें उन्हें लेने के लिए लोकमार्ग विभाग के विभागाध्यक्ष पर गये, जहाँ वहाँ शराब के ठेकों की नीली नोलेने वाले व्यापारियों का हतना जनपद था कि वहाँ उनके प्रतिष्ठित अर्थ कोई भी दिखाई नहीं दिया। इसके बाद हम सभा के अतिरिक्त सदस्य भी पंजूराम आर्य के निवास पर गये तथा उनसे प्रदर्शन की तैयारी करने का अनुरोध किया। वे हमारे साथ चयन पड़े। समाज टाउन सोनीपत जहाँ ठेकों का नीलामी स्थल था, वहाँ जाकर देखा तो वहाँ भी शराबी व्यापारियों, सरकारी अधिकारियों तथा पुलिस कर्मचारियों का मेला सा भरा हुआ था और एक सजे सजाये बागियाना में नीली की तैयारी की जा रही थी, हमने स्थानीय एक साइड स्पीकर वाले से बात की परन्तु वह कहने लगा कि मत बर्षो से इस अवसर पर पुलिस की ओर से प्रदर्शनकारियों पर लाठीचार्ज बादि होता रहा है अतः हम साइड स्पीकर किरारये पर देने का बोलिख नहीं लेना चाहते, हमने इसे कहा कि हम जिम्मेवारी लेते हैं कि तुम्हें कुछ हानि नहीं होने देंगे। इस प्रकार पुलिस जातक के कारण बर्षा कठिनाई से बहु साइड स्पीकर देने की तैयारी हुआ। हमने एक रिक्शा पर उसे रखा तथा ओरूफ का मश्या सवाकन शराबबन्दी के नारे लगाये आरम्भ कर दिव्य। एक उर्व के ऊचि के अनुसार "हम बकेले हो चले थे बलिख-बलिख, हम सकर लिखते एए और काचवां बनता हूँ।" हमारी साइड स्पीकर पर बोली ही टैर में श्री ठेक-समाज आर्य कुराड, श्री सूरजमल आर्य बाबुर, श्री रामगोपाल आर्य शहर समाज के कार्यकर्त्ता हमारे साथ था। प्रमिले। आर्यसमाज रोहता के कर्णधार महाशय दरवासिंह आर्य, प्रमिले श्री इन्द्रसिंह आर्य तथा उनके धर्म साथी भी एक ट्रैक्टर में ओरूफ का मश्या सेकर सोनीपत पधारे।

शराबबन्दी सम्मेलन का आयोजन :-

नीलामी स्थल पर सरकारी अधिकारी शराब के ठेकों की नीली करते हुए घोषणा कर रहे थे कि श्री बी० के० एफ० कम्पनी एक करोड़ ४० लाख रु० और अन्य ने एक करोड़ ५१ लाख रु० करी। इस प्रकार शराबबन्दी जहर बेचने के ठेके लेने के लिए ४० करोड़ रुपए की नीली देने पर हाइ लग रही थी और दूसरी ओर आर्यसमाज के मंच पर

श्रीमती प्रभात शोभा शराब के ठेकेदारों को उनके नीच कर्म के लिए चिक्कारते हुए जनसमूह को तता रही थी कि भारत को आजाद करवाने के लिए क्या सरदार भगतसिंह, लाला लाजपतराय, श्री अंध-बेलाव आजाद, नेताजी सुभाष, और साबरकर आदि बलिख से अधिक वसिदान करवाने के लिए होइ इतिहास लगा रहे थे कि हमारे प्यारे भारत में धात्रादी मिलने पर शराब के कारण हमारी बहन-बेटियों की इच्छत जतरे में पड़ेगी, किसान यजदूर की कमाई शराब में नष्ट होगी। यदि उन्हें मालूम होता कि हमारे वसिदान पर देश के गहारा मौज उठावेगे तो वे अपनी मरी अजानी देश पर नहीं लुटाते। आपने अपने संस्मरण सुनाते हुए बताया कि बचपन में मैं जब अपने पुरुष पिता पं० बुद्धदेव विद्यालकार के साथ साहौर में रहती थी तो एक दिन वे हमारे घर पर आये थे और भारत को आजाद करवाने की प्रशिक्षा करते हुए एक बलती हुई मोमबत्ती पर अपना हाथ रखा और लूह टपकना आरम्भ होया था। उन्होंने जानादी प्राप्त करने के लिए फाँसी के तख्ते पर लटक अनी प्रशिक्षा पूरी की। आपने शराब के ठेकेदारों को सावधान करते हुए कहा कि आज तुम लोप घन बढोले के सालच में अपने देश के लिए गहारी कर रहे हैं। तुम भी जानते हो कि शराब एक जहर है जो इसका सेवन करेगा उसके शरीर तथा चरित्र की हानि होगी। तुम्हारे परिवार के सदस्य भी इस रोग में फंस सकते हैं। शराब के कारण देश के नीजबानों की अजानी बर्ध हो रही है। यदि हमारे सैनिक शराब के नशे में होंगे तो रुस्मन से किस प्रकार टक्कर ले सकते हैं। इस प्रकार आज शराब के ठेकेदार तथा इनके सहायक शराब के ठेके लोचकर तथा जनता को धारकीकी जहर पिनाकर पाप के भारी बन रहे हैं। जाने वाली पीठी इस पाप के लिए तुम्हें क्षमा नहीं करेगी। आपने दुष्कर्मरे शब्दों में कहा कि शराब ने हमारे नवयुवक समानत कर दिए प्रथया आब मैं नवयुवकों को धातून करती कि वे देश के इन गहुरों को ठिकाने क्या देवे परन्तु शराब ने सारा खेल बिबाध दिया। शोभा जी इस प्रकार शराब के ठेकेदार तथा इनकी सहायता करनेवाले सरकारी अधिकारियों पर पटकार डाल रही थी तो एक सित पुलिस अधिकारी धार्यसमाज के मंच के समीप आकर मंच भी तो एक हिटाने के लिए अपना रौब अमाने बने। इस पर आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता उनके सामने डडकर खड़े होये और उस पुलिस अधिकारी को कहा कि हमने समाज सुधार के लिए तथा जनता को शराब की हानियों से सचेत करने के लिए यह मंच लगाया है। हम यहाँ से नहीं हटेंगे। आपने जो करना हो करो। शोभा जी ने उस पुलिस अधिकारी को सम्बोधित करते हुए कहा कि यह आर्यसमाज का मंच है हम अपनी बात कहकर रहेंगे। तुम में यदि नैतिक साहस है तो उन ठेकेदारों को यहाँ से दूर भगामो जो राष्ट्र के विनाश के लिए बोधी दे रहे हैं। उनका लचकार तुमकर वह अधिकारी विवक्ष होकर वहाँ से सितक गया।

इस अवसर पर धार्य उपदेशिका बहन किरणमयी आर्या ने अपने प्रभावशाली व्याख्यान में हरयाणा सरकार से पूर्ण शराबबन्दी सापू करने की माग की और इससे होनेवाली हानियों का उत्खल करते हुए कहा कि इस शराब ने बड़े-बड़े राजाओं, जमींदारों तथा घन वाण्य से सम्पन्न व्यक्तियों को बर्षाकर दिया। परन्तु हमारी सरकार पंथा कमाने के लिए शराब के ठेकों की संख्या प्रतिवर्ष बढ़ रही है और पंचायतों की भी शराब की अधिक विक्री करने के लिए एक बोलत की सिक्की करने पर एक कथा देने का सालच देकर धामोण जनता का विनाश करने की नीति अपना रही है। आपने पूछा कि जब शराब पीने से नर-नारियो का शरीर तथा चरित्र बिनाश आयेगा तब शराब की विकी की आबन्दी से विकास के कार्य बिके जावेंगे उनका उपयोग तथा सुरक्षा कौन करेगा। आपने जिना रोहतक के साठोत धाम के सरपच का उदाहरण देते हुए बताया कि जिना विकास अधिकारी ने धाम में शराब की अनुचित रूप से की गई शराब की विक्री के साते से १५०० के लगभग देने बाहे तो उस आर्य विचारों के सरपच ने उस सचरासि को ठुकराते हुए कहा कि हम पाप की कमाई से धाम से विकास नहीं कर सकते।

(शेष पेज १४)



## गुरुकुल कांगड़ी हरद्वार का वार्षिकोत्सव

समस्त आर्यबन्धुओं को यह ज्ञानकर परम होगी कि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरद्वार का ६१वां वार्षिकोत्सव एव दीक्षांत ७ अप्रैल, १९६१ से समारोहपूर्वक मनाया जा रहा है। इस अवसर पर ७ से १४ अप्रैल तक श्री पी० मदनमोहन विद्यासागर के श्रद्धालु में यजुर्वेद पाठ-यणायक होगा। वैदिक प्रदर्शनों गुरुकुल जन्मोत्सव, कवि सम्मेलन, संगीत सम्मेलन, राष्ट्रीय-पत्र और उनकी समसाम्ये आदि पर विभिन्न सम्मेलन होंगे। गुरुकुल के महाचारियों द्वारा सांस्कृतिक एवं विविध शारीरिक व्यायाम के कार्यक्रम भी प्रस्तुत होंगे। इस शुभ अवसर पर धार्मिकविद्वानों व सन्यासियों के विविध प्रवचन और भाषण सुनने को मिलने। शार्वेदिक सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोध जी, स्वामी आनन्द जी, प्रो० शेरसिंह कुलाधिपति, श्री बन्धे मातरम् जो तथा शोचस्वी वक्ता श्री सितीश वेदालंकार आदि पधार रहे हैं। आया है अत्यन्त अधिक से अधिक सस्या में पधारकर पुण्य के भागी बनें और कुलधारियों के उत्साह को बढ़ायें।

## नवशास्त्रेष्टि पर्व (होली-पर्व) पर आर्यसमाज हड़डौल (जिला भिवानी) की ओर से

### यज्ञ का आयोजन

होली-पर्व के उपलक्ष्य में आर्यसमाज हड़डौल जिला भिवानी के कर्मठ एव उत्साहो कार्यकर्ता श्री कमलसिंह प्रार्य एव श्री नन्दराम शर्मा के प्रयत्नों से यज्ञ एव प्रचार कार्य का आयोजन किया गया। गांव के भू० पु० सरपंच श्री मानुराम जो आर्य के निवास पर यज्ञ रखा गया जिसमें उनका समस्त परिवार और गांव पड़ोस के स्त्री-पुरुष भी शामिल हुए। प्रो० भोमकुमार प्रार्य ने यज्ञ कराया तथा यज्ञ के महत्त्व पर प्रकाश डाला। सर्वेप में यह भी बताया कि हमें अपने परिवार, गांव आदि को दुर्भस्मनों से मुक्त रखने हेतु तथा शुद्ध सात्त्विक वातावरण के निर्माण हेतु आर्यसमाज और महाविद्यालय द्वारा व्रतों व्रतों राखे का धनुकरण करना जरूरी है। श्री मानुराम जो आर्य ने आर्यसमाज हड़डौल को २१-००-६० दान दिया, सबका बन्ध्यापक किया और आगे भी ऐसे पुनोत आयोजन करते रहने की इच्छा व्यक्त की। श्री कमलसिंह प्रार्य, श्री नन्दराम शर्मा तथा अन्य सहयोगी सारे गांव की मदद से एक ब्यापक आयोजन भी निकट भविष्य में करने की सोच रहे हैं। हड़डौल गांव आर्यसमाज का गढ़ रहा है और कोई भी बड़े से बड़ा आयोजन सहर्ष कर सकता है। हम सभी से सहयोग की अपील करते हैं।

— प्रो० भोमकुमार प्रार्य  
उप-संचालक, आर्यवीर इन हरयाणा

### प्रभु का सच्चा बरबार है

(तर्ज—सावन मेरा उस पार है।)

प्रभु का सच्चा बरबार है।

वही वे मुझ बेधुमार है।।

उसके लिए तू क्यों भटकता है।

वह तो दिल में सबके ही रहता है।

दिल के अन्दर ही तेरा गार है।

कुल दुनिया का सरकार है।। प्रभु.....

विषयों का पर्दा जब उठाओ।

दखन तुम उसके तब कर पाओगे।।

सारे जग का वो आधार है।।

सारंभुओं का वो सगार है।। प्रभु.....

विष्णु रूद्र महेश्वर और रचयिता है।

सारे जगता का पालनकर्ता है।।

'हमस' वो ब्रह्मा सर्वोधार है।।

अजर अमर निर्गमकार है।। प्रभु.....

— धरविन्द कुमार 'कमल'

## श्रीराम-जन्मोत्सव

(सिलक—स्वामी स्वस्थानन्द सरस्वती)

- १—जन्म दिवस श्रीराम का, ऋतु वसंत बहार।  
शुभच पक्ष तीनों तिथी, महामानव तनवार।।
- २—सुविख्यात है अगत में, पुरी धयोध्या धाम।  
नृप दशरथ बर प्रकटे, पुष्टपोष्य श्रीराम।।
- ३—उदय हुआ रघुकुल रवि, किया ज्ञान प्रकाश।  
भूतल-तम का कर दिया, श्रीराम ने नाश।।
- ४—राजमहल में होरहे, सुन्दर सगलाचार।  
वेद ध्वनि आने लगी, हृष्टित सब तर-नाश।।
- ५—दृढव्रती जितेन्द्रिय, आर्यवीर विद्वान्।  
सत्यवादी महामनुज, धृति उत्तम सन्धान।।
- ६—वैदिक मर्यादाय, जीवन भर पवंस।  
शूरवीर क्षत्रिय प्रबल, किया दुष्टों का अन्त।।
- ७—रघुकुल राघव राम को, जाने देश तमाम।  
सालों वर्षों बाद भी, अमर राम का नाम।।
- ८—पितृ वाक्य पालन किया, नहीं उल्लंघन कीन।  
ईश-भक्त रघुकुल तिलक, इच्छाकु वंस कुलीन।।
- ९—वेद पथिक युग परिवर्तक, दृढप्रतिष्ठ श्रीराम।  
बशरव मन्दन राम को, कीटि कीटि प्रणाम।।
- १०—जन्मोत्सव यह आपका, मना रहे हरयाव।  
सुपय प्रेरक राम तुम, प्रकटो फिर से आप।।

## राम राज्य आ जाये

- जितेन्द्रिय जब आज देश का, हर मानव बन जाये।  
भारत की इस पुण्य धरा पर, रामराज्य जा जाये।।
- रूपबती बनकर सूकनसा, पंचवटी पर जायी थी।  
मोहित होकर राम सलन की, पत्नी बननी चाहती थी।।  
बम की राह खुलाई थी फिर, नाक कान कटवाये।।  
भारत की इस पुण्य धरा पर, रामराज्य जा जाये।।
- लंका में प्रवेश हुआ वह, हनुमान ब्रह्मचारी।  
जमा पेर बनव ने दिया, कंसा भ्रजव सिलारी।।  
दूत था राम का ब्रह्मचारी, लंकापति बरवाये।  
भारत की इस पुण्य धरा पर, रामराज्य जा जाये।।

रखे सबको सिंहासन पर, अस्त ने त्याग दिसाया।  
किन्ही तरह का भी नहीं स्वार्थ, अपने अन्तर छाया।।  
परमार्थ में जीवन पाया, राम के हृदय भाये।  
भारत की इस पुण्य धरा पर, रामराज्य जा जाये।।

महेश्वर देश में रिक्तखोरी, प्रध्ताचार न पाये।  
भविदा माल और तम्बाकू, कीर्षों नजब न बाये।।  
फिर से देश स्वार्थ बन जाये, जगतपुत्र कहलाये।  
भारत की इस पुण्य धरा पर, रामराज्य जा जाये।।

—महेश्वर प्रार्य  
पन्हैडा सुंद तं० बल्लभगढ़ (फरीदाबाद)

## आर्यसमाज बेरी जिला रोहतक का

### चुनाव

१. प्रधान भोमवी प्रभावशोभा पंडिता, २. उप-प्रधान श्री बनराज, ३. मन्त्री श्री रामकिशन, ४. उप-मन्त्री श्री इन्द्रसिंह, ५. कोषाध्यक्ष श्री फतहसिंह।

तमा का नया टेलीफोन नम्बर ७४८१२ से ७६७२२ हो गया है।

## सन्तति निर्माण

'पुत्रान्म नरकात् प्रापते इति सः पुनः' अर्थात् जो माता-पिता को नरक से निकाले और उनका यश लोको में फैलाये उसे पुत्र कहते हैं। मनुष्य पुत्ररत्न की प्राप्ति के बाद अत्यन्त प्रसन्न होता है। वह भिन्न-भिन्न प्रकार के उत्सव करता है। मां का मन मयूर प्रसन्नता से नाच उठता है। पुत्र के जवान होने पर माता-पिता को धीरे धीरे सुखी होती है। वे अपने पुत्र को ऊंचे पद पर बढावा चाहते हैं। यह मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। किन्तु बड़ी पुत्र विवेकवान् होकर क्या-क्या धर्म के कार्य नहीं कर डालता। उसके इस कार्य से मां-बाप अत्यधिक दुःखी होते हैं। ऐसे समय पर माता-पिता कहने लग जाते हैं कि अगर यह पुत्र पैदा न होता तो अधिक अच्छा था। पुत्र के अन्दर विवेक क्षमता से कौन-सा अनर्थ नहीं होता। कहा है—

जीवनं धनसम्पत्तिः प्रत्युत्पन्नविवेकित्वात्।

एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम् ॥

अर्थात् अशानी, धन, सम्पत्ति, अधिकार वाता हीमा तथा धर्मविवेकता (विवेक क्षमता) ये एक ही धर्मार्थ को उत्पन्न करनेवाले हैं। अहाँ पर ये चारों ही तो कौन-सा अनर्थ नहीं होता।

सन्तान के इस तरह के व्यवहार के लिए कौन जिम्मेदार है? महर्षि दशाम्बुद्विषयते हैं 'प्राग्गुण्यं पितृमानचार्यव्याम् पुरुषो वेद' जो तीन शिक्षकवाला धर्मार्थ माता, पिता तथा आचार्यवाला ही बड़ी पुरुष मानव्य बनाता है ये तीनों शिक्षक उत्तम विद्या तथा उत्तम आचरणों के धनी होने चाहिये क्योंकि वेद का आदेश है 'मनुष्यं जनया वैश्वयं जन्म्यं' पहले मनुष्य बनो तत्पश्चात् विषय सुशीलवासी सन्तान पैदा करो। जितना या सन्तान का निर्माण कर सकते हैं उतना धीरे धीरे नहीं कर सकते। तभी तो कहा है 'माता निर्माता भवति' माता निर्माण करने वाली होती है।

माता भूयः पिता वीरी येन बासो न पाठितः।

न शोभते सामाभ्यं हंसमभ्ये नको यथा ॥

अर्थात् वे माता-पिता शत्रु तथा वीरो हैं। जिन्होंने बालक को नहीं पढ़ाया। बालक सभा के अन्दर उसी प्रकार शोभा नहीं पाता जैसे हंस के बीच में चमूला शोभा नहीं पाता। माता-पिता ने धन्य कर जन्मा भी ज्ञानवाचक दे दिया तो वह वच्चा कुल का नाम रोशन कर देता है। 'स जातो येन जातेन साति वामः सगुणनर्तकः' जो पैदा होकर कुल की उन्नति करता है उसी का जन्म सायक है।

माँ का कर्तव्य—

सन्तान ज्यादा माँ के सम्पर्क में रहती है। माँ चाहे उसका निर्माण कैसे भी करे। माँ से ही सन्तान अधिक गुणवान् बनती है। माँ वह सत्य शक्ति है जो बच्चे का निर्माण कर महान् बनाती है। ऐसी माताओं से देहा का महिम्न उत्पन्न होता है जो देश के लिए अपने मातृ स्नेह की परवाह नहीं करती। माँ के बलिदान, माँ के तप, माँ का त्याग धीरे माँ का स्नेह हरय हरय इन सबके योग से ही सन्तान का निर्माण होता है। इतिहास साक्षी है कि समय-समय पर माताओं ने अपनी कोख से उज्ज्वल रत्न उत्पन्न किये। कहा गया है 'कोषोः पुत्रेण जातेन यो न विद्वान् न चात्मिकः अतः माँ को चाहिये कि पुत्र को विद्वान् तथा धार्मिक बनाये। उसे उत्तम विद्या तथा धर्मों की शिक्षा दे। सभी प्रकार की सिद्धि विद्या से ही सम्भव है। विद्या से कई गुण व्यक्तिके अन्दर जा जाते हैं।

विद्या ददाति विनयं विनयाद्वाति पात्रताम्।

पात्रत्वाद् धनमाप्नोति धनाद् धर्मं ततः सुखम् ॥

× × ×

विद्यानाम नरस्य रूपकौशिकस्य प्रकल्पनम् धनम्।

सभी सुखों का आधार विद्या है। माँ सन्तान को अच्छा आचार व व्यवहार सिखावे ताकि वह कुसंति में न पड़े। वेद में कहे गये पंच कर्तव्यों का नित्य पाठ करावे।

१. ईश्वर की सर्वभ्यापक आनी।
२. त्यागपूर्वक भोग करो।
३. किसी के धन का भोग न करो।
४. कर्म करते हुये सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करो।
५. धर्मा के प्रतिरूप आचरण मत करो।

पिता का कर्तव्य—

दूसरा नम्बर पिता का है। सन्तान के निर्माण में पिता का महत्वपूर्ण स्थान है। 'प्राति इति पिता' अर्थात् रक्षा करनेवाला पिता क-

साता है। माता का कोमल अंग बालक में कस्या दया आदि रूपों में अभिव्यक्त होता है धीरे पिता का पीरय बालक में पीरय का प्रतीक बनकर जलता है। पिता की आशापालन तथा सेवा जहाँ कोई धर्म नहीं है। माता फिर तैयार करती है और पिता रखण रूपी शक्ति ने उस चित्र को चमकदार करता है। पिता को चाहिये कि वह सन्तान को हर तरह से देखलभ करे। उसे हमेशा धर्म का उपदेश कर नया शारीरिक बर्ण से उसे परिपुष्ट करे।

आचार्य का कर्तव्य—

आचार्य बालक के रूप को हर तरह से निखारता है। वह वच्चे की आध्यात्मिक, मानसिक और शारीरिक हर तरह से उन्नति कराना है। बालक के जीवन में किसी प्रकार को कमी न रहे यह आचार्य का हमेशा प्रयास रहता है। माता, पिता तथा आचार्य ये तीनों स्तम्भ हैं जिनसे मनुष्य का निर्माण होता है। वर्तमान में छात्र से छात्रापक का सम्बन्ध केवल पाठ्य पुस्तकों को पठाने मात्र के लिए होता है। यह पढाई औपिका तो दे सकती है किन्तु जीवन का निर्माण नहीं कर सकती है। प्रतः आचार्य को चाहिये कि उत्तम विद्या की शिक्षा दे। उन्हें असत्य से हटाकर सत्य को धीरे प्रेरित करे। उन्हें सत्य नोसने का, धर्म पर चलने का तथा स्वाभ्याय में प्रयास न करने आदि का उपदेश देवे। ईश्वर तथा धर्म की जानकारी देवे। शारीरिक बर्ण से उन्नति के लिए ब्रह्मचर्य आदि का उपदेश देवे। क्योंकि कहा गया है—

दुराचारी हि पुरुषो लोको भवति निम्नतः।

दुष्टमग्री च सततं व्याधितोऽप्यनुरेव च ॥

अच्छे आचार्य द्वारा जिन सन्तान और चरित्रवान् छात्रों का निर्माण किया जाता है वही माता-पिता की सेवा करते हैं तथा उनके महत्त्व को समझते हैं।

माता-पिता तथा आचार्य इन तीनों को चाहिये कि सन्तान का हर तरह से निर्माण हो तभी समाज तथा देश का कल्याण होता तथा माता-पिता व आचार्य भी सुख पायेंगे। अन्वया अर्थात् पुत्र से माता-पिता क्या सभी दुखी होते हैं।

जननी जन्म भूमिर्भूमी, मां वाता दानी वीर रहे।

कपटो देशप्रदोयि से माँ, सुनी देती गौर रहे ॥

—अरविन्द कुमार 'कमल' विद्यालयव्यपति

आर्यसमाज टोहाना (हिंसा)

(शुद्ध ३ का चेष)

सभा के उपदेशक पं० बरसोहर आर्य आतिथीको ने अपने श्रोतवत्को आशय में कहा कि पापी लोग शराब के ठंके लेते हैं परन्तु हम आर्य-समाज के कार्यकर्ता समाज सुधार का ठंका लेते हैं। हमारी आर्य प्रतिनिधि सभा सच बाँसे से शराबबन्दी अभियान इसी उद्देश्य से चला रहे हैं। हम गिनती में बाहे कम हों परन्तु हम आर्य हैं जो आन्दोलन धारण करते हैं उसे सफल करके ही बच लेते हैं। ईश्वरवाद तथा हिन्दू रक्षा धांदोलन इसके साक्षी हैं। यदि मनुष्यक उपारा साथ देवें तो हम इन देशद्रोही ठंकेदारों को दिन में तारे दिखा सकते हैं। हमें विश्वास है एक दिन ऐसा आने वाला है। जिन्हा वेदप्रमाण मध्यम सोपीत के संरक्षक श्री टंकुबन्ध आर्य, श्री सुब्रह्मण्य आर्य तथा बाबू केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री रामगोपाल आर्य ने जो इस शराबबन्दी सम्बन्ध में सोचते हुए आर्य महिला नेता पंडिता शोभा जी के सार्वजनिक अभियान में तन, मन तथा धन से सहयोग करने का आवाहन देते हुए कहा कि आर्यसमाज के कार्यकर्ता इस भयंकर सामाजिक दुराई को समाप्त करने का भरसक प्रयत्न करेंगे। क्योंकि शराब गली-गली में बिकने लगी है और इस कारण प्रामों के स्कूलों में पढ़नेवाले छात्र भी इसके जाल में फँसने लगे हैं। शराबियों के उत्पन्न दे प्रामों का वातावरण दुष्टित हो गया है। अतः हम आने वाले युवाव में किसी ऐसे उम्मीदवार का ढटकर विरोध करने को स्वयं शराब पीता है तथा अपने समर्थको को शराब पिलायेगा।

सम्बलन की समाप्ति पर सभा का विपटमण्डल जिला सानीन के उपायुक्त राज रामचन्द्र जी को शराबबन्दी का ज्ञान देने —के निवास पर गया। उपायुक्त महोदय ने सभा के साराबन्दी आर्यमन्त्री की सराहना करते हुए कहा कि मैं आर्यसमाज के कार्यकर्ता का ज्ञान हरयाणा के मुख्यमन्त्री को अपनी टिप्पणी के सा प्रेष दूँगा। इन प्रकार सोपीन में आयोजित शराब विरोधी प्रदर्शन से आर्यसमाज का सन्देश सरकार तथा जनता तक पहुँचाने में सफल रहा।

—केदारिंह आर्य

## आर्यों सावधान !

(पृष्ठ १ का शेष)

इनका धार्यसमाज धीरे सत्याग्र्यप्रकाश के विषय में उस समय सत्ता के मद से उठायी गयी विरोधी पध इनके लिए "बही के पीछे में चूना खा लेना" सिद्ध होगा।

दूसरी की बात नहीं कहता किन्तु मैं भली-भांति जानता हूँ कि सिधल जो जिस बर्ग से सम्बद्ध है, वह सम्पूर्ण बर्ग—धर्मवाद स्वरूप कुछ व्यक्तियों को छोड़कर... माथताओं धीरे सिद्धांतों के विषय में एकदम उचलता धीरे सलही है। उदाहरणार्थ गत मास मास मे भारतीय जनता पार्टी के तात्कालिक अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी ने एक प्रेस भेट में कहा था कि राम और कृष्ण दोनों मांस खाते थे, यह मैं शास्त्रों से सिद्ध कर सकता हूँ। पाठकगण ध्यान दे कि भारतीय संस्कृति के उन्नायक और सरसक बनने का दम भरनेवाले इतने बड़े दल के शीर्षक नेता को यह तक पता नहीं कि कियो का व्यक्तितगत बर्गन ऐतिहासिक विषय होता है, शास्त्रीय नहीं। इससे तो यह सिद्ध होता है कि श्री आडवाणी जी शास्त्र धीरे इतिहास का अन्तर तक नहीं जानते, शास्त्रों तथा शास्त्रीय बातों को समझना तो हूँ को बात है।

रामजन्म भूमि को समस्या को भी इन लोगों ने सांप्रदायिक धाराधर धर धीराम को परमेश्वररावतार के रूप में मान्यता देते हुए ही उठाया है, राष्ट्रीयवाद की दृष्टि से नहीं। यह लोग बार-बार राम को हिंदुओं का आराध्य और उनके हृदय में बसा हुआ ही बताते हैं किन्तु भारत का राष्ट्रीय गौरव, राष्ट्र-मुख्य या राष्ट्र-भक्त राम नहीं करते। यद्यपि इस प्रकार की अभिव्यक्ति यह सिद्ध और स्पष्ट कर देती है कि उस भारतीय राष्ट्रीयता के गौरव और भारतीयों के प्रेरणा स्रोत राष्ट्र-भक्त और राष्ट्र-मुख्य राम का जन्म स्थान उनका स्मारक होने से भारत राष्ट्र के गौरव और स्वाभिमान का प्रतीक है, जिसे विदेशी बर्बर आक्रामका बाबर मुगल द्वारा तोड़-फोड़ कर अथवा मस्जिद का रूप दिया गया था। इस कारण आक्रामता द्वारा निर्मित पतनभङ्गना और पराधीनता के चिन्ह को मिटाने रामजन्म स्थान को राष्ट्रीय स्मारक के स्वाभिमान और गौरववाली रूप में स्थापित कर सुरक्षित करना हमारा सत्य है।

आर्यसमाजियों का जो समर्थन रामजन्म भूमि के धामोत्सव को बन-जन के रूप में प्राप्त हो रहा है, उसका कारण उसका यह राष्ट्रवादी स्वरूप है। परन्तु क्योंकि सिधल जो धीरे उनका साथी नेतृत्व समयरूप से अन्धविश्वासों धीरे यथास्थितिवादी है धीरे इस अन्ध-विश्वास और यथास्थितिवाद को बनाये रखने में अपने भाभी निहित स्वार्थ देखता है। इसीलिये उसके राष्ट्रवादी स्वरूप को स्वीकार न करने यही अन्धविश्वासी स्वरूप बनाए रखना चाहता है और इसी कारण से ऋषिबदर दयानन्द के उस पवित्र ग्रंथ का विरोध किया गया है जिसके कारण सिधल जी और उनके साथी रामजन्म भूमि का प्रथम उदघाटन की स्थिति में हैं और नेता बन बैठे हैं। यदि ऋषिबदर दयानन्द धीरे उनका यह ग्रंथ न होता, जो सिधल जी की धार्यों में कांटे की भांति लटक रहा है तो सिद्धल जी, उनके साथ समर्थक धीरे हृदय सब कुछ तो हजरत मोहम्मद की उम्मत में परिवर्तित हो चुके होते और कुछ ईसा के अनुयायी हो गये होते। कृच्छ्रता की भी तो कुछ सीमा होती है किन्तु "स्वार्थी दोष न पश्यति" स्वार्थी दोष नहीं देता करता।

अन्ततोगत्वा यह तो निश्चित है कि जिस दिन भारत में यह वंग सत्तासीन होगा, सिधल की मुस्लिम लीगी सरकार की भांति सत्याग्र्य-प्रकाश पर प्रतिबन्ध लगा देने में कदापि कमी उठा नहीं रखेगा। लुक-फिज कर यदा कदा दबी लागी से यह लोग आर्यसमाज के विरोध का प्रदर्शन करते ही रहते हैं किन्तु सिधल जी के इस वक्तव्य ने तो यह सिद्ध कर दिया है कि अब विल्ली दिने से बाहर धाने लगी है। भलमतिविस्तरेण बुद्धिभङ्गरिरोपयति।

हृर. सरकार को शराबबन्दी हेतु बिया गया ज्ञापन हरयाणा राज्य में दिन-प्रतिदिन शराब का प्रसार हो रहा है। जहाँ पूर्ण हरयाणा दूध बही के खाने के लिए प्रसिद्ध था, वहाँ आज हरयाणा गली-गली में शराब की नदियाँ बाहाने पर वबनाम ही रहा है। शराब सभी सामाजिक घुटाइयों की जड़ है। शराब के सेवन करनेवालों से बहन-बेटियों को इज्जत खतरे में पर जाती है और अष्टाचार, अनाचार, दुर्घटनाओं आदि का विस्तार होता है। किसान मजदूरों को खून पतौने को कमाई शराब के कारण नष्ट हो रही है और शराब के ठेकेदार मातामान हो रहे हैं। जिन धर्मों की पंचायतों ने शराबबन्दी के प्रस्ताव करके भेज रहे हैं वहा भी अन्ध ठेकेदार अवेधायिक रूप से चोरोखिने जीप में शराब की बोटल डालकर धर्मों में बिक्री हेतु भेजते रहते हैं। सिकायत करने पर भी उनके विरुद्ध कार्यवाही नहीं की जाती क्योंकि शराब के ठेकेदार अष्ट सरकारी अधिकारियों को भुगत में शराब आदि पिनाकर तासतस रखते हैं। इस प्रकार शराम-धाम में शराब की बिक्री हो रही है। इन्होंने के छात्र भी शराब पीने के ध्रावी होने लग गये हैं। परोसा केन्द्रों पर नकस करवाने के लिए अष्ट निरीक्षकों को शराब की रिश्तत दी जाने लगी है। इस प्रकार शराब पीने तथा पित्तने वालों के कारण प्रत्येक क्षेत्र में अष्टाचार का विस्तार हो रहा है। अतः आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा आपसे अनुरोध करती है कि भुजरात, मिजोरत, नागालैण्ड ध्रादि प्रदेशों की भांति हरयाणा में भी शराबबन्दी लागू करके इसे कल्याणकारी राज्य बनाने की कृपा करें। जो राज्य अपनी जनता को जहर रूपी शराब पिनाकर धरपनी ध्रामदनी बढाती है वह कल्याणकारी राज्य नहीं हो सकता क्योंकि इस प्रकार को जामदनी से राज्य का विकास नहीं अपितु विनाश होता है।

ध्याप एक समाजवादी तथा धार्मिक स्वभाव के अनुभवो नेता हैं। आपने कल्याणकारी कार्य किये हैं। अनेक संस्थाओं की उदारता पूर्ण सहायता की है। अतः आपसे हम नम्रनिवेदन करते हैं कि हरयाणा जो कि ऋषि-मुनियों की भूमि रही है, इस पवित्र धरती से शराब का कर्लक हटाने की कृपा करें अन्धया जाप जो विकास के कार्य करता रहे है, वे शराब से होनेवाली सामाजिक घुटाइयों से बन्ध सिद्ध होंगे। हम ध्यापको पिन्धवास पिन्धवाते हैं कि इस कुछ कार्य में सभा तथा धार्य जनता ध्यापको पूर्ण सहयोग देती। —धार्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

सभा द्वारा आयोजित शराबबन्दी प्रदर्शन का चित्र



# मनुस्मृति में वेद महिमा

(पं० धर्मदेव 'मनोमो' बिरतीर्य, गुच्छल कालवा)

शुचि दधानन्द जी महाराज सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में लिखते हैं—

“जो इष्य वेद वाङ्म, कुतिसत पुत्रों के बनाये संसार को दुःख-सागर में डुबाने वाले हैं वे सव निष्कल्प, असत्य, अन्धकार रूप इस लोक क्षीर परलोक में दुःखदायक हैं। जो इन वेदों से विरुद्ध ग्रन्थ उत्पन्न होते हैं वे आधुनिक होने से क्षीर नष्ट हो जाते हैं। उनका मानना निष्कल्प क्षीर कृदा है।”

मनु जी महाराज वेद की महिमा के विषय में कहते हैं—

चातुर्वर्ण्यं त्रयो लोकाश्चरवारश्चाधमाः पृथक् ।  
भूतं भ्रष्टं भविष्यच्च सर्वं वेदात्प्रसिध्यति ॥  
विभक्तिं सर्वभूतानि वेदसाधनं सनातनम् ॥  
तस्मादेतेत्वरं मन्ये यज्वल्लोरस्य साधनम् ॥

(वैदिक मनुस्मृति १२/४०-४६)

चारों वर्ण, चारों आश्रमों, भूत, वर्तमान और भविष्यत् प्रादि की सव विद्या वेदों से ही प्रसिद्ध होती है। क्योंकि यह जी सनातन वेद-शास्त्र है सो सब विद्याओं के दान से सम्पूर्ण प्राणियों का धारण क्षीर सब सुखों को प्राप्त कराता है, इस कारण से हम लोग उसको सर्वथा उत्तम मानते हैं—और इसी प्रकार मानना चाहिए—क्योंकि सभी सुखों का साधन यही है ॥

मेनापत्य च राज्य च दृष्टनेतृत्वमेव च ।  
सर्वभोकाधिपत्य च वेदशास्त्रविदहृति ॥  
वेदशास्त्रावलम्बनो यश्च तन्नाश्रमे वसत् ॥  
इहैव लोके तिष्ठत्स ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥

(मनु० १२/५०-५४)

सब सेना और सेनापतियों के ऊपर, राज्याधिकार, दृष्ट देने की व्यवस्था के सब कार्यों का आधिपत्य क्षीर सत्रके ऊपर वर्तमान सर्वाधीश राज्याधिकार इन चारों अधिकारों से सम्पूर्ण वेदशास्त्रों में प्रवीण पूर्ण विद्यावाले, धर्मात्मा, जितेन्द्रिय सुखी जनों को स्थापित करना चाहिए। अर्थात् मुख्य सेनापति, मुख्य राज्याधिकारी, मुख्य व्यायाधीश और प्रधान—राजा ये चार सब विद्याओं के पूर्ण विद्वान् होने चाहियें। वेदशास्त्र के तत्त्व को जाननेवाला किसी प्रायश्च में रहता हुआ इस लोक में स्थित हुआ-हुआ जीवनयुक्त होजाता है ॥

तपो विद्या च विप्रस्य निःश्रेयसकरं परम् ।  
तपसा क्लित्थवं हन्ति विद्यायाःसुतमश्नुते ॥  
प्रत्यक्ष जानुमानं च शास्त्रं च विविचागमम् ।  
यय सुविदितं कार्यं धनसुदिमभीप्सता ॥  
धार्षं धर्मोपदेशं च वेदशास्त्राधिचिन्तितानि ।  
यस्तकंभानुसंघत्तं स धर्मं वेद नेतरः ॥

(मनु० १२/५३-५४)

तप—धर्मगुष्ठान और वेदविद्या—ज्ञान ये दोनों ब्राह्मणार्थि मनुष्यों के लिए परम कल्याण करनेवाले हैं। तप—धर्मगुष्ठान के द्वारा मनुष्य पापों से बचता है और ज्ञान के द्वारा मोक्ष को प्राप्त होता है। सुद रूप में धर्म को पाने के इच्छुक व्यक्तित को प्रत्यक्ष, अनुमान और वेदादि विविध शास्त्र—इन तीनों को धर्मो प्रकार जानना चाहिये। जो मनुष्य धार्षं धर्मोपदेश को वेदशास्त्र के अविरोधी तत्त्व द्वारा अनुसंधान करता है वह धर्म को जानता है ॥

एकोऽपि वेदविः धर्मं य व्यवस्मेदु द्विजोत्तमः ।  
स विज्ञेयः परो धर्मो नान्नाज्ञानमुहितोऽपुतः ॥  
अत्रतानाममन्त्राणां आतिमानोपजीविनाम् ।  
सद्ब्रह्मचः समेतानां परिपश्यं न विद्यते ॥  
यं बदनितं तमोभूता मूलां धर्ममन्तद्विदः ।  
तस्यापं शतथा भूत्वा तद् बन्धनमुगच्छति ॥


(मनु० १२/६१-६३)

एक अकेला भी सब वेदों को जाननेहारा द्विजों में उत्तम मण्डाली जिस धर्म की व्यवस्था करे वही श्रेष्ठ धर्म है क्योंकि अज्ञानियों के सहर्षों, नाशों, करीबों मिल के जो व्यवस्था करे उसको कभी न मानना चाहिए। जो ब्रह्मधर्म-सत्यभाषणादि त्रत और वेदविद्या या विचार से रहित ग्रन्थ मान ले गृह्यत् वर्तमान है उन सहर्षों मनुष्यों के मिलने से भी सभा नहीं कहावी। अविद्यायुक्त, मूल वेदों को न जानने-वाले मनुष्य जिस धर्म को कहे उसको कभी न मानना चाहिए क्योंकि जो मूलों के कहे हुए धर्म के अनुसार चलते हैं उनके पीछे संकटों प्रकार के पाप बण जाते हैं ॥


वेद के विषय कवि ने कहा है—

वेद ही जग में हमारा ज्योति जीवन सार है ।  
वेद ही सर्वत्र प्यारा पूज्य प्राणाधार है ॥

### दांतों की हर बीमारी का घरेलू इलाज



**दंत मूलन**  
लोहा सुखा



दंत मूलन  
लोहा सुखा

23 जडी दूरीटो से निर्मित आयुर्वेदिक औषधि

हम की छाप्टर

उस नये पैकिंग में उपलब्ध

का. नम्र

महाशियां की हली (प्रा०) लि०

8-44, इण्डियन स्ट्रीट, बीरों कपूर-नं० सि०, लॉक १११११ २१३७ ११३४

दांतों की ज्वला

दुब की सुखी

दांतों की पीली

दांतों का दर्द

## हरयाणा के अधिकृत विक्रेता

१. मैसजं परमानन्द साईंरितामल, भिवानी स्टेट रोहकत ।
२. मैसजं कूलचन्द सीताराम गांधी चौक, हिसार ।
३. मैसजं सन-अप-डूडगं सारंग रोड सोनोपत ।
४. मैसजं हरीश एजेसीज ४६६/१७ मुडद्वारा रोड, पानीपत ।
५. मैसजं भगवानदास देवकीनन्दन सरौका बाजार, करनाल ।
६. मैसजं धनश्यामदास सीताराम बाजार, भिवानी ।
७. मैसजं कृपाराम गोयल रुबी बाजार, सिरमा ।
८. मैसजं कुलबन्त पिपल स्टोर्स शाप नं ११४, माफिक नं १, नं ० आई० टी० करीदाबाद ।
९. मैसजं सिपला एजेसीज सदर बाजार, मुडगांव ।

**आर्यों ने देश जगाया री**

- आर्यों ने देश जगाया री, कोई माने चाहे ना
- १—भारत महाभारत पीन्हे=गिर चुका था विलकुल नीचे फिर से ऊंचा उठाया री, कोई माने चाहे ना
  - २—कोहे-कोहे में विचर करके=प्रचार वेद का करके बलिचा अन्धकार नशाय री, कोई.....
  - ३—नीच ऊंचे का भेद मुझकर=दलितों को गले लगाकर नफरत का भूत भगाया री, कोई.....
  - ४—वन गिन मूले बलकाने=फिर से अपने को जाने बुद्धि का संल बजाया री, कोई.....
  - ५—एक समय नर नारी जाति=पूरी दरजा पाती नारी का माल कराय री, कोई.....
  - ६—विदेशों में धाना जाना=निकृष्ट गया कभी माना वह भ्रमजाव हटाया री, कोई.....
  - ७—कम से कम प्रस्ती सों में=गये जेल कारिसियों में अंग्रेज का विश दहबाया री, कोई.....
  - ८—अनगिन फोखी पर सटके=चले गये थे वेष्टके ना मृत्यु से भय छाया री, कोई.....
  - ९—वीरेन्द्र कष्ट उठाकर=प्राणों को बली चढ़ाकर भारत आजाद कराय री, कोई.....

प्रस्तुतकर्ता—जयपालसिंह  
आर्य प्रतिनिधि सभा अजमेरप्रदेशक

**सूर्य बन प्रकाश दिखाओ**

भारत में अंधकार कष्ट में पड़ी मुसीबत भारी ।  
सूर्य बन प्रकाश दिखाओ छाई है अंधियारी ।।  
सोने की चिड़िया था भारत सभी ने शीश लुकाया है ।  
साधा जीवन देश ह्वार, उच्च विचार ही पावे ।।  
रंग बिरंगे फैशन में अब, फंसे हुए हैं भारी ।  
सूर्य बन प्रकाश दिखाओ छाई है अंधियारी ।।  
अपड़े ही रहे अगह-अगह आतंक ने पैर जमाया ।  
अष्टाचार रित्तत बोटसा, पुष्प घर पर भाया ।।  
सम्य संस्कृति को छोड़ा नीति सभी विचारों ।  
सूर्य बन प्रकाश दिखाओ छाई है अंधियारी ।।  
सत्य, बहिष्ता, बापू जी ने, जाबीबन प्रपनाये ।  
समय समय पर महापुरुषों ने, हमको भाग्य दिखाये ।।  
भागे भागो अमर सपुतो प्रजा के हितकारी ।  
सूर्य बन प्रकाश दिखाओ छाई है अंधियारी ।।  
अनपढ़ से भी नीच कर्म अब पड़े मिले करते हैं ।  
दारु, मांस, चाय, तम्बाखू, स्वागत में भरते हैं ।।  
'महेश' डूब रहा देश वासना, बड़ी हुई है भारी ।  
सूर्य बन प्रकाश दिखाओ छाई है अंधियारी ।।

—महेश धामं  
धाम-पन्डैश सुदं, बलबगड,  
फरीदाबाद (हरियाणा)

# गुरुकुल

कांगड़ी फार्मसी की

आयुर्वेदिक औषधियां सेवन कर स्वास्थ्य लाभ करें

गुरुकुल

च्यवनप्राश

पुरे पाँचवार के लिए सर्वकार्यक  
एष स्थूलितानक रसायन ।  
शारी, उग्र व शारीरिक एष  
फेफड़ों की रबीला से  
उपयोगी आयुर्वेदिक  
औषधीय टाबिक

अपे पूरा  
स्वास्थ्य  
के लिये

गुरुकुल

पार्यायिकल

कोले व अमुरों के मकरन सेवी  
मे विरिण्यन पायोरीषा  
के लिए उपयोगी  
आयुर्वेदिक औषधि

गुरुकुल

चाय

मुझप व अन्यपुरुषक  
अति रं अती बुदिये  
से बनी माधवरी  
आयुर्वेदिक औषधि

गुरुकुलकांगड़ीफार्मसी हरिद्वार (उ० प्र०)

**गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी**

हरिद्वार

की औषधियां सेवन करें ।

शाखा कार्यालय  
६३ गली राजा केदारनाथ,  
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

स्थानीय विक्रेताओं एवं सुपर बाजार  
से खरीदें

फोन नं० २६१८७१

शाखा कार्यालय : ६३, गली राजा केदारनाथ  
चावड़ी बाजार, दिल्ली-११०००६

'अमर' - ११ मार्च २०६१

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक वीर प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिदिगुप्रेसके लिए संस्कृतकारी मुद्रणालय रोहतक में छपवाकर संस्कृतकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, बवानम्बूमठ, रोहतक से प्रकाशित ।



जो ३म् एवन्तो विश्वमार्यम्

# समाह्वानिका

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक -सूर्येन्द्रिह सभामात्री

सम्पादक --वदयन शाल्मी

महसम्पादक--प्रकाशानार विद्यानकार एम० ए०

वर्ष १८

अंक १८

२८ मार्च १९६१

वार्षिक शुल्क ३०)

(आज्ञोपन शुल्क ३०१)

दिनेश मे ८ पोस्ट

एक प्रति ३५ पैसे

## शराबरूपी रावण तथा दुर्योधन राक्षसों का वध करें

खराबड़ तथा मकड़ौली में शराबबन्दी प्रचार अभियान

श्रीमती प्रभात शोभा का आर्य नर-नारियों को आह्वान

रोहतक २२ मार्च (कार्यालय संवाददाता द्वारा) -आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा नवसंवत्सर (आर्यसमाज स्थापना दिवस पर्व) से शराबबन्दी प्रचार अभियान और अधिक गतिशील कर दिया है। धन्तराष्ट्रीय स्वातिप्राप्त आर्य महिला नेता श्रीमती प्रभात शोभा विद्यानकरता ने इसी सिलसिले में दिनांक १२ मार्च को रोहतक तथा १५ मार्च को सोनीपत में शराब के ठेकों की नौशायी के अवसर पर विरोधप्रदर्शन का नेतृत्व किया और कार्यक्रमों की बैठक में शराब बन्दी प्रचार कार्यक्रम बनाया। उनका प्रथम कार्यक्रम स्वर्गीय आर्य नेता श्री० माधुसिंह जी के श्रम शराबवृत्त जिना रोहतक में दिनांक १६ मार्च को रखा गया। इससे पूर्व सभा की ओर से १८ मार्च को ग्राम की बीपाल में रात्रि को पं० ईश्वरसिंह तुफान तथा पं० जयपालसिंह आर्य की भजनमण्डलियों ने शराब तथा सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध जमकर प्रचार किया। १६ मार्च को प्रातः सभा के उपदेशक पं० जयनन्द आर्य ने यज्ञ करवाया तथा उपस्थित युवकों को यशोवीर्य धारण करवाते हुए शराब बादि सामाजिक बुराईयों से दूर रहने की प्रशिक्षण करवाते। दोपहर बाद दिल्ली से श्रीमती शोभा जी श्रम में पधारती और श्रम के आर्यसमाज के कार्यक्रमों के साथ ग्राम पंचायत की महिला सरपंच श्रीमती सन्तोष से उनके मकान पर मिली तथा शराबबन्दी प्रचार हेतु सहयोग देने की प्रेरणा दी। सरपंच महोदया ने शोभा जी के विचार सुनकर उनकी सहायता करते हुए इस समाज सुधार के कार्य में सहयोग देने का वचन दिया और उन्होंने बताया कि शराबवृत्त पंचायत की ओर से शराब का ठेका न खोलने का प्रस्ताव करके भेज रखा है, परन्तु ग्राम में निष्कट के ठेकों से अनुचित तथा नैकानूनी रूप से शराब की बोलचाल चोरी-छिपे बेची जाती है।

रात्रि को ८-३० बजे ग्राम की मुख्य बीपाल के पास प्रचार का आयोजन किया गया। सभा की भजनमण्डलियों ने प्रभावशाली ढंग से शराब की बुराईयों की जानकारी देकर इसे सेवन न करने का परामर्श दिया। इसके बाद श्रीमती शोभा जी ने उपस्थित नर-नारियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि यह कार्यक्रम आर्यसमाज की ओर से बनाया गया है। आर्य उसे चूकते हैं जो शेरुत हैं तथा दूसरों के सुख दुःख में सम्मिलित रहें। आज शराब की महामारी से हरयाणा की जनता दुःखी है।

किसान-मजदूर श्रमणों कफाई शराब के नशे के लिए नष्ट कर रहे हैं और जब उनकी धर्मपत्नी उन्हें शराब पीने से रोकती है तो वे उनको पिटाई करते हैं और जो सन उनके बच्चों के पावन पोषण तथा शिक्षा आदि के लिए व्यय होना चाहिये उसे शराब खरीदने में खर्च कर देते हैं। इसी प्रकार शराबी तब श्रम की बहु-भेदियों को नष्ट करने के ग्राहक बन रहे हैं। इन दुःखी नारियों को ईशुने वाला इच्छत है। राज्य सरकार अपनी राजस्व की क्षामयती बढ़ाने के लिए प्रतिबंध शराब के ठेकों की मुद्रि कर रही है और शराबियों को

अनुचित गतिविधियों के विरुद्ध कठोर कार्यवाही नहीं कर पाती क्योंकि अधिकार सरकारी अधिकारी तथा पुलिस कमचारी स्वयं शराब के नशे में अन्धे हो चुके हैं।

अतः आर्यसमाज ने श्रमणों पुरानी परम्पराओं के अनुसार इस संकट काल में महिलाओं के दुःख-दर्द को दूर करने का काम आरम्भ किया है। हम इस कार्य के लिए शहीद भगवान्, चन्द्रशेखर तथा रामप्रसाद विष्मिल की गांठि बंधे से बड़ा बलिदान करने की तैयारी हैं। यह शुभ कार्य हमें नये वर्ष से पूरी शक्ति के साथ आरम्भ कर रहे हैं। आज पुन हमारा राष्ट्र रावण तथा दुर्योधन जैसे राक्षसी राजाओं के युग की ओर जा रहा है। अतः हम सभी को मिलकर शराब रूपी राक्षस का वध करना होगा। इस प्रचार कार्य में आर्यसमाज के श्री दयानन्द आर्य, डा० राजसिंह आर्य, श्री श्रीमसिंह नन्दवार आदि कार्यक्रमियों ने तन, मन तथा धन से सहयोग दिया।

इसी प्रकार २० मार्च को रात्रि आठ बजे रोहतक के प्रसिद्ध ग्राम मकड़ौली कला के नवनिर्मित आर्यसमाज मन्दिर में शराबबन्दी प्रचार अभियान का आयोजन किया गया। सभा कार्यलय के नवयुवक स्टेनो टाइपिस्ट श्री सत्यवान ने अपने श्रम के श्रम आर्यसमाज के उत्साही कार्यक्रमियों को कृतातरसिंह आर्य, श्री श्रुतिपाल शास्त्री आदि के सहयोग से इस प्रचार कार्यक्रम को सफल करने के लिए सहाय्योय परिश्रम किया। आर्यसमाज मन्दिर श्रम के आर्य नर-नारियों तथा छात्र एवं छात्राओं से लगासच भरा हुआ जा और बाहर भी सैकड़ों की संख्या में ग्रामीण आर्यसमाज के प्रचार को बढ़ा अट्टा देने सुन रहे थे। पं० ईश्वरसिंह तुफान के मनोहर बजनों के प्रभाव्य श्री सत्यवस शास्त्री ने श्रीमती शोभा जी का परिचय कराते हुए बताया कि ये आर्यसमाज के प्रकाश विद्वान् स्वर्गीय पं० बुद्धेश जी विद्यासंकार को सुपुत्रो तथा धार्य नेता श्री० देवसिंह जी की धर्मपत्नी हैं जिन्होंने कन्या बुद्धेश देहरादून से शिक्षा पाकर आर्यसमाज तथा समाज सुधार के अनुकरणीय कार्य किये हैं। शराब रूपी जहर के रोग को समाप्त करने के लिए नई दिल्ली की सुखसुविधाओं से शराब आकर शराब के विरुद्ध प्रचार अभियान ग्राम ग्राम में आरम्भ करने का निश्चय किया है।

श्रीमती शोभा जी ने नर-नारियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द का हम पर बहुत बड़ा उपकार है जिन्होंने हमें जीने का मार्ग दिखाया। एक हजार बूझें हुए दीपक किसी श्रम दीपक को जला नहीं सकते परन्तु एक जलता हुआ दीपक हजारों दीपकों को जलाकर प्रकाश कर सकता है। स्वामी दयानन्द ने ही वेदाध्ययन करने के स्वयं प्रकाशित होकर संसार को वेदज्ञान का प्रकाश दिया।

श्रीमती शोभा जी ने अपना आस्थापना जारी रखते हुए दुःखय श्रमों में कहा कि श्राव पुनः सत्ताधारी नेता रावण तथा दुर्योधन के कुमार्ग पर चलने का यत्न कर रहे हैं। अपनी जनता (जेष पृष्ठ ६ पर)

साम-सुधा शतक

॥ ३३ ॥

## उसकी महिमा अपार है

ओ३म् त्वमस्य पारे रजसो ध्योमनः स्वभूत्वोभा अवसे घुषमननः ।

चक्रवे प्रुमि प्रतिमानमोजसोऽयः स्वः परिभूरेव्या शिवम् ॥

ऋ० मं० १/सू० ५२/मंत्र १२

जगव्यापी हे प्रभुवर मेरे,  
तुम इस नम के बीनों पार ।  
छाये हो अपनी महिमा से,  
करने हम सबका उपकार ।  
धुल-भूतल और स्वर्ग के,  
भो तुम हो हो सिरजनहार ।  
यथाभाव सबको विरचा है,  
निज की लीला अपरम्पार ।  
॥ ३४ ॥

## आर्य और दस्यु

ओ३म् वि जानीह्यार्यान् ये च दस्यवो बहुष्मते रन्वया शासवज्रताम् ।

शाकी भव यजमानस्य चोदिता विषयेता ते सधमायेषु चाकन ॥

ऋ० मं० १/सू० ५१/मंत्र ८

जग वेत्ता हे ज्ञानी स्वामिन्  
जान रहे तुम आर्य-अनाय ।  
धर्मनिष्ठ सत्सकलो हूँ जो  
उन्हें मानते हो तुम आर्य ।  
सम्पद, कामी, क्रोधी, वचक  
दुष्कृतकर्ता दस्यु अनाय ।  
सत्कर्मों के वाचक जो जन  
उनका करो नाश अनिवाय  
सम्प्रेरित करते तुम सबको  
मैं भी वनू सदा सत्कार्य ।  
॥ ३५ ॥

## उत्तम प्रतिष्ठायुक्त सदैव रखो

ओ३म् ऊर्ध्वो न पाद्व्यंहसो निकेतुना विवर्ष समविष्णं दह ।

कृषी न ऊर्ध्वचिरधाय जीवसे विधा देवेषु नो तुव ॥

ऋ० मं० १/सू० ३६/मंत्र १४

सबके ऊपर शोच रहे तुम  
श्रेष्ठ सकल गुण गण मंडार ।  
पाप-ताप से कर भय रक्षा  
शेष वहन कर कर अविचार ।  
रस पुरित जीवन यापन हित  
भरदो सद्गुण गण सम्भार ।  
उत्तम बन उन्नति को पावें  
देवों में ही मान जुहार ।  
॥ ३६ ॥

## भगवान् की मित्रता

ओ३म् त्वं न सोम विवसतो रक्षा दासनायामता ।

अ रित्स्वेषु रक्षन्तः सखा ॥

ऋ० मं० १/सू० ६१/मंत्र ८

कावियामी हे ! प्रभुवर मेरे  
इस भग के स्वामी भववान् ।  
करो हमारी रक्षा, निज ही  
पाप निरत हूँ जो अज्ञान ।  
करे न पाप किसी से हम भी  
करे न कोई हमें दुःखमान ।  
सभी भाँति रक्षण वो हमको  
तुम्हीं हमारे मित्र महान् ।  
सुनते हैं हम तो प्रभुवर निज  
मित्र न वेदा हो क्षयमान ।

—प्रो० चर्चकन्द विशालकाश  
पलवल ।

## 'वैदिक धर्म धरा पर फले'

सचियों से यह भारत प्यारा,

रहा परतन्त्रता से आचार ।

भारत माँ असहाय हुई थी,

देंदी या निर्धम-प्रतिबद्ध ।

गहन तिमिर छाया था, चारों,  
कीर, काश्मिरा रही अमानक ।  
ऐसे ही युग में ज्योतिर्मय,  
किरण एक निकली भी अचानक ।

उसी किरण ने भारत माँ को,

दिया एक अनुपम संध्यासी ।

जिसने नष्ट किया धरती की,

युगों-युगों से धिरी उठासी ।

सी युग ने नूतन बंगझाई,  
वेदों का फेला आलोक ।  
हुई प्रफुल्लित भारत-माता,  
ऋषिधर के सत्कर्म विभोक्त ।

सारे भारत में नव जागृति,

की अरुणिस—आभा छाई ।

नए जागरण की वेला में,

जमी जपानों की तरफापी ।

वेद पथों पर बढे सभी हय,  
बचा पुनः वेदों का डका ।  
धरती पर अज्ञान-अनय की,  
जसी पुनः रावण की लंका ।

आज पुनः सारे भारत में,

बढ़ता है धमधाम—अनय ।

भारत की धरती पर होता,

दानवता का सूर्य—उदय ।

जायें सपूतो ! उठो, बढो तुम  
बनो वेद-पंथ के अनुगामी ।  
दूर करो भारत माता की,  
निर्मम सो सांस्कृतिक युक्तामी ।

ऋषिवर, दयानन्द के स्वप्नों—

की निर्धम साकार करो ।

सहमी-सहमी मानवता है,

उसका तुम उपकार करो ।

सैनिक हो तुम ! दयानन्द के,  
दनुज भूमियों से टकराओ ।  
तिमिरमयी यह रचनी कलौ,  
यदिगच्छ से हूँ यथासी ।

'कृष्णरतो विष्णुमायम्' का,

मूँके बहुधा पर कथनाम ।

वैदिक धर्म धरा पर फेले,

भारत अपना बने महात्त ।

सत्य-धर्म फेलाएँ हय,  
शास्त्री हय सब लें सकल्प ।  
मानवता की रक्षा का है,  
बचा न कोई धर्म विकल्प ।

राधेश्याम 'आर्य' विद्याशास्त्राति  
मुसाफिरखाना, सुसतानपुर (उ०प्र०)

## अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर जारी आर्यसमाज का घोषणा-पत्र

आर्यसमाज की सर्वोच्च संस्था 'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा' आर्य शब्द को परिभाषित करते हुए कहती है कि आर्य वह लोग हैं जो किसी पंच के अनुयायी न हों, जो जातिवाद को न मानते हों और जिनका इतिहास युद्ध बर्षिण विघ्नाचार और विवेकशीलता से परिपूर्ण हो। यह परिभाषा आर्यसमाज के संस्थापक, महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा आर्य शब्द की व्याख्या पर प्राधारित है।

१४वें अन्तर्राष्ट्रीय आर्य सम्मेलन के शुभ अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा समस्त विश्व के आर्यसमाजियों का आह्वान करती है कि वे आर्य शब्द को इस वास्तविक परिभाषा के अनुसार आचरण के संकल्प की दौहृपयें धीरे वास्तव में आर्य कहवाने के अधिकारी बनें।

### मातृ-भूमि की धारणा

आर्य धर्म (वैदिक धर्म) का अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण है परन्तु इस दृष्टिकोण के अवसर पर आर्य धर्म लोगों की भौगोलिक इकाइयों पर आधारित राष्ट्रीय पहचान की अवहेलना नहीं करता। मातृ-भूमि की धारणा आर्यों के लिए नई नहीं है। अथर्ववेद के 'भूमि-सूक्त' में इसकी सजीव व्याख्या की गई है। लगभग १२ मन्त्र २० के अनुसार जिस पृथ्वी पर हमारे उपकार के लिए फस, फूल, पूष आदि वृक्ष उत्पन्न होते हैं उस भूमि की हम सावधानी से सदा रक्षा करते रहें।

आर्यावर्त (भारत) नामक भौगोलिक इकाई पर आर्य सबसे पहले निवासी हैं। राष्ट्र की एकता तथा अल्प विधेयताओं की रक्षा के लिए इन्होंने किसी भी बड़े से बड़े अधिदान को महान् नहीं समझा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा यह प्रस्ताव करती है कि भारतीय संविधान में संशोधन करके आर्यावर्त को देश के मूल नाम की तरह अनुच्छेद (१) में शामिल किया जाए तथा धर्मों की आक्रमणकारी और आर्यावर्त के मूल निवासी नहीं हैं कहे कर इतिहास का अशुद्ध वर्णन कानून की दृष्टि में एक दृष्टनीय अपराध माना जाए। धर्म धर्म।

धर्म से हमारा अभिप्राय आचार संहिता से है। कुछ लोग इसका धर्मिण्य सर्वोच्च प्राकृतिक सत्ता में विश्वास धीरे एक निश्चित पद्धति के अनुसार उसकी पूजा से लेते हैं। इस प्रकार के धर्म अपने धार्मिक विश्वासों को पूर्ण समझते हैं जिनमें किसी भी क्षीय पर परिवर्तन नहीं किया जा सकता। आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती धर्म के इस दृष्टिकोण पर समस्त मुख्य धर्म समुदायों के उच्चाधिकारियों में आपसी विचार विमर्श के इच्छुक थे। सार्वदेशिक सभा उन्हीं प्रयत्नों को पुन सचेत करना चाहती है। यह सब सत्य है कि राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इस प्रकार का विचार विमर्श आसान कार्य नहीं है, परन्तु सभा की दृष्टि में विश्व की धार्मिक कट्टरतावाद की बुराइयों से बचाने का यही एकमात्र तरीका है। अतः इस दिशा में कार्यरत अल्प विश्वव्यापी समूहों की सहायता लेकर सार्वदेशिक सभा का यह संकल्प है कि निर्धारित परिभाषा प्राप्त करने के लिए अग गम्भीर प्रयत्न किए जाने चाहियें।

### संस्कृति

संस्कृति से हमारा अभिप्राय लोगों की मानसिक शुद्धता से है जो कि उसके व्यक्तियों, भाषाओं, परम्परागत रीतियों, विश्वासों और अन्य कार्यकलापों में दृष्टिगोचर होती है। संस्कृति धर्म का पर्यायवाची नहीं है। परन्तु मिन्न-मिन्न धार्मिक विश्वास, संस्कृति के विकास या ह्रास में योगदान प्रषय करते हैं। धार्यावर्त में रहनेवाले लोगों की एक विशेष संस्कृति है। नेपाल के वर्तमान संविधान में भी राजा को धार्य संस्कृति का रक्षक कहा गया है जिसके लिए सार्वदेशिक सभा नेपाल के लोगों तथा सरकार को हार्दिक बधाई देती है।

### पंच निरपेक्ष संस्कृति

भारत की संस्कृति को पंच निरपेक्ष संस्कृति कहा जाता है।

भारत के संविधान मे सन् १९५६ के संविधान संशोधन के फलस्वरूप 'पंच निरपेक्ष' शब्द भी जोड़ा गया था परन्तु कृही पर भी इस शब्द को परिभाषित नहीं किया गया। 'पंच निरपेक्ष' शब्द पर विस्तृत चर्चा करने के हूर प्रकार के प्रयत्नों का सार्वदेशिक सभा स्वागत करेगी और इसमें भाग लेकर हूर प्रकार का सम्भव योगदान भी दिया जाएगा।

हमारे कुछ राजनीतिक नेताओं की दृष्टि में भी 'पंच निरपेक्ष' से अभिप्राय धर्म-विरोध से नहीं है, कि इसे सर्व-धर्म सम्भाव की सजा देते हैं जिससे समस्त धार्मिक विश्वासों के लिए समान धादर की भावना पैदा हो ?

संज्ञात्मक रूप से सार्वदेशिक सभा इस दृष्टिकोण का विरोध नहीं करती जिस प्रकार से हमारे देश में पंच निरपेक्षता का पालन किया गया है वह दौहृय माप की प्रक्रिया का सूचक हुआ है।

सार्वदेशिक सभा अपने इस विचार के समर्थन में भारतीय संविधान के अनुच्छेद ४४ तथा विधि आयोग के १४ सदस्य श्री टी० के० टोपे की रिपोर्ट का उल्लेख करती है। अनुच्छेद ४४ के अनुसार समस्त भारत के नागरिकों को भारत सरकार एक समान नागरिक संहिता देने के लिए प्रयत्नशील रहेगी। श्री टोपे ने इस बात पर गहरा धीक धक्का किया है कि समस्त नागरिकों के लिए समान संहिता देने में भारत सरकार की अर्हति भी इस पर आधारित है कि इस कार्य से उन्हीं मुसलमानों का समर्थन चुनावों में नहीं मिलेगा।

मुसलमान लोग अपने इस्लामिक कानून से किसी भी प्रकार हटाने का विरोध करते हैं क्योंकि इसमें उन्हें ही अधिक समय पर चार पलियाँ रखने की अनुमति दी गई है। इस सम्बन्ध में उनकी जिद (कठोर हृदयता) संविधान की पंच निरपेक्ष पद्धति का हानन करती है। इन लोगों को अन्य नागरिकों के समान नागरिक एवं कर्तव्य देने के लिए हमारे शासक दृढ़ निश्चय लेने में अवसर्य हैं।

### तुष्टीकरण नीति

आर्यावर्त के मुख्य समुदाय से भिन्न इस मुस्लिम समुदाय के लिए शासकों की तुष्टीकरण की नीति के कारण ही १९४७ में अजहद पर आधारित पाकिस्तान बना। इस पाकिस्तान में से एक अन्य राज्य बंगला देश बना जो कि अजहद पर ही आधारित है।

इस तुष्टीकरण की नीति ने जिस पर आज भी हमारे शासक चल रहे हैं, एक बार फिर उसी प्रकार के हातात बना दिए हैं, जैते कि इस विभाजन से पहले थे। वही पाकिस्तान आज हमारे देश के धार्मिक सामाजिक एव राजनैतिक धातोलनों को सुनागा रहा है। इस विपरीत हमारे शासकों की पाकिस्तान के विरुद्ध अत्याचारी या आरोप लगाने से ही सन्तोष हो जाता है। सार्वदेशिक सभा का सुझाव है कि सीधी प्रतिक्रियात्मक कार्यवाही से ही इस संकट का निवारण होगा।

राष्ट्रीय मोर्चा सरकार ने बोट बेंक लगाने की आकुलता में मजदूर धार्यों की सिफारिशों को लागू करने के देश को गृह युद्ध के कमार पर लडा कर दिया है। हमें इस प्रश्न में नहीं रहना चाहिए कि हमारे समाज में हिंसात्मक प्रवृत्तियाँ राष्ट्रीय मोर्चा सरकार के समय में सर्वाधिक थी और ये पुनः प्रारम्भ नहीं होंगी, क्योंकि वर्तमान सरकार ने भी अभी देश को इस संकट से उभारने के लिए कोई ठोस निर्णय नहीं लिए।

### राष्ट्रवाद

वर्तमान परिस्थितियों से जूझने के लिए देश को योग्य ईमानदार तथा उत्तरदायी नेतृत्व की आवश्यकता है। सार्वदेशिक सभा यह महसूस करती है कि विराष्ट्रवाद की धारणा ही इस वर्तमान संकट के लिए जिम्मेदार है। अनेकता से भरे राष्ट्र में इस प्रकार के संकट भी



पैसा हो जाते हैं। इसलिए हम समान संस्कृति पर आधारित राष्ट्रवाद को विकसित करने पर बल देते हैं।

**श्री राम जन्म-भूमि**

यदि इस प्रकार के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का पूर्ण विकास प्राप्त तक कर लिया गया होता तो राम जन्मभूमि का विचार इस क्षत्रवर्ण व्यवस्था तक न पहुँचता। ऐसा प्रतीत होता है कि आज के मुल्ता मौजबो राष्ट्रीय अपमान को उस घड़ो को शादगर बनाना चाहते हैं जब हिंदीयो आक्रान्ताओं ने इस देश को नूट कर सा जाने के हर प्रकार से प्रयत्न किए।

सांभदेविक सभा इस देश के किसी भी वर्ग के लोगों को सामुदायिक भावना को डेस पहुँचाना नहीं चाहती परन्तु राष्ट्रीय सम्मान को किसी भी कीमत पर खोना पसन्द नहीं करेगी।

मुस्लिम तथा ईसाई सम्प्रदाय के लोग अपने को अल्पसंख्यक मानते हैं और संविधान उन्हें कुछ विशेषाधिकार देता है, परन्तु अल्पसंख्यक शब्द को वह कहीं भी परिभाषित नहीं करता और न ही कोई प्रतिशत सख्या निर्धारित की गई है जिससे कम रहने पर एक समुदाय के लोगों को अल्पसंख्यक माना जाए।

साधारणतः आप से कम सख्या वाले समूह को अल्पसंख्यक घोषित करने के ह्यारे संविधान ने विभाजन का कदम उठाया है अतः इस प्रकार के आश्वासनों को निम्नो जल्दी हटा दिए जाए, इस देश की एकता के लिए उतना ही प्रच्छा होना।

सांभदेविक सभा शिक्षा प्रणाली में भी कुछ परिवर्तन करवाने के लिए प्रयत्नशील रहेगी जिससे इस प्रकार की जातिगत तन्ता से पैदा की जा सके कि सभी हिन्दु (बायें) चाहे वह अमी हिन्दू हूँ या कुलसमान और ईसाई धर्मों में जा चुके हैं—सांस्कृतिक एवं षष परम्परागत रूप में एक हूँ। सभा इस बात के लिए भी सरकार पर दबाव डालेगी कि भारतीय संविधान के वे सभी अनुच्छेद जो नागरिकों को धार्मिक समूह, क्षेत्रीयता जाति और भाषा के आधार पर बाँटते हैं, उन्हें गुरुर संविधान में संशोधन करके हटाया जाए।

**समाज के पुनर्निर्माण के लिए सामाजिक व्यवस्था**

वर्तमान परिस्थितियों का गहरा अध्ययन करने के फलस्वरूप सांभदेविक सभा आर्य समाज को इस प्रकार पुनर्गठित करना चाहती है जिससे सांस्कृतिक राष्ट्रवाद से जुड़े धार्मिक रूप से स्वतन्त्र तथा जोषण रहित समाज के निर्माण के लिए प्रयत्न तेज किए जा सकें, जिससे सबको रोजगार उपलब्ध हो, प्राकृतिक संसाधनों का उच्चतम उपयोग सम्भव हो और समाज के सर्वांगीण विकास के साथ-साथ समस्त विश्व में शान्ति स्थापित करने के लिए प्रयत्न किए जाए।

वेदों में बलिष्ठ वर्णाश्रम पद्धति पर आधारित सामाजिक व्यवस्था को इसके प्राचीन शुद्ध रूप में लागू करने से ही इन उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकता है। इसके लिए एक ऐसी कानून पालक प्रक्रिया की भी प्रावश्यकता है, जो इस प्रकार की सामाजिक व्यवस्था की रक्षा रक्षा के साथ-साथ मनुष्यों में बढ़ती पाषाणिक प्रवृत्तियों पर नियन्त्रण और उनके सामूहिक विकास के लिए विमोदित हो।

भारतीय संविधान से निर्मोदाओं ने अनुच्छेद ३० में एक ऐसी ही सामाजिक व्यवस्था की कल्पना की है जिसमें सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक ग्याय राष्ट्रीय जीवन की सभी संस्थाओं को अनुमति मिले। इस प्रकार की सामाजिक व्यवस्था की स्थापना और रक्षण के द्वारा लोककल्याण का नैतिक दायित्व सरकार पर डाला गया है।

सांभदेविक सभा यह स्पष्ट कहना चाहती है कि इस अनुच्छेद के पीछे वर्णाश्रम पद्धति को ही मानना है, इसलिए सरकार को अपने नैतिक दायित्वों का पालन करने के लिए अविविम्ब इस पद्धति का शुद्ध प्रचार एवं प्रसार करके इसे राष्ट्रीय प्रणाली बनाने के लिए प्रयत्न करने चाहिए।

सांभदेविक सभा वर्णाश्रम पद्धति पर आधारित सामाजिक व्यवस्था को समस्त मानवता के कल्याण के लिए लागू कराने के विशेष प्रयास करेगी।

सांभदेविक सभा प्रजातन्त्र में अपना पूर्ण विश्वास व्यक्त करती है तथा आर्थिक नाकूतों और तुल्योत्पन्न जैसी नीतियों का चूनामों में प्रयोग काने का विरोध करती है। देश का युवाव तन्त्र हर प्रकार के प्रभावों से मुक्त होना चाहिए।

हम आशा करते हैं कि १५वे अन्तरराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के अवसर पर जारी इस घोषणा पत्र का सरकार सावधानी से अध्ययन

करे तथा प्रथमो नीतियों में उक्त परिवर्तन करके शुद्ध राष्ट्रीय विचारधारा को प्रोत्साहित करे। राजकार्यों तथा शिक्षा के क्षेत्र में हिन्दी, जिसे हमने एक सम्पूर्ण भाषा के रूप में स्वीकार किया है तथा अन्य भारतीय भाषाओं को उचित स्थान दिया जाए।

सीमान्त क्षेत्रों में घुसपैठ बन्द करने और देश के अन्दर राजदौरी ताकतों को उखाड़ने जैसे तरीकों से ही वर्तमान हिंसा को रोकना जा सकता है।

### गुरुकुल कांगड़ी विद्वद्विद्यालय, हरिद्वार के प्रेमो आर्य बन्धुओं को सेवा में

मभी स्नातक बन्धुओं को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि गुरुकुल कांगड़ी को पुरानी भूमि को महानदी गंगा के कटाव से बचाने के लिए तथा वहा अवशिष्ट रूप में विद्यमान भवन के पुनर्निर्माण का कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है। गुरुकुल धीरे विष्वद्विद्यालय के अधिकांशियों ने स्वयं प्रयत्न कटाव से बचाने के लिए बांध निर्माण हाथ में लिया है। २४ फरवरी १९६१ को बांध निर्माण का कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है। इस कार्य का नेतृत्व गुरुकुल कांगड़ी विद्वद्विद्यालय के कुषपति श्री सुभाष विद्यालंकार ने किया और डा० हरिप्रकाश मायुबंसलकार, विद्वद्विद्यालय के प्राध्यापकों तथा गुरुकुल विद्यालय के बहचारिणों तथा गुरुकुल के अन्य अनेक कर्मचारियों ने श्रमदान द्वारा इसमें योगदान किया। भवन के चारों ओर की सफाई की जा चुका है और यज्ञभाला के पास-पास पेड़ लगा दिये गये हैं। ताकि इसका उद्धार

काम्यक ढंग की रचना के रूप में हो सके। भवन के पुनर्निर्माण धीरे उसकी भी विस्तार की योजना तैयार की गई है जिससे गुरुकुल विद्यालय विभाज्य की छठी से दसवी तक कक्षाएँ वही लगायी जा सकें। सम्पूर्ण लक्ष्य यह है कि पुरानी भूमि में पुनः गुरुकुल के बहचारिणों तथा भाषा, अध्यापकों की सर्वांग गतिविधि जाए और हम सभी लोगों की पुरानी स्मृतियों का साकार रूप से।

यद्यपि कार्य प्रारम्भ हो गया है और हमारे आक्रांसाएँ साकार होने लगी हैं, परन्तु इस कार्य के लिए अर्धों और सय दोनों की आवश्यकता है। गुरुकुल से सम्बन्धित सभी लोगों से तथा प्रशासन से भी इस कार्य में सहयोग प्रदान करने का अनुरोध किया गया है और स्थिति बहुत बालाजनक है परन्तु स्नातक वर्ग का विशेष दायित्व है कि वे स्वयं आर्थिक सहयोग तो प्रदान करें ही, श्रमदान के लिए भी समय देने की कृपा करें तथा अपने क्षेत्र के धनी मानो लोगों से सम्पर्क कर अर्थ संकट में सहयोग करें। इस सम्बन्ध में कृपा की सुभाष विद्यालंकार, कुषपति गुरुकुल कांगड़ी विष्वद्विद्यालय (हरिद्वार) तथा श्री विद्यासागर विद्यालंकार, ए-२२२ राधा प्रताप बाग, दिल्ली-७ से सम्पर्क करें।

विश्वास है कि कुसमाता के पुराने शौर्य को लौटाने धीरे उम्मेद आर्यों की प्रवृत्ति के लिए भाषाका पूर्ण सहयोग तथा होगा।

आपके कुषबन्धु

सुभाष विद्यालंकार

कुषपति एवं कुष्याधिष्ठाता

गुरुकुल कांगड़ी विष्वद्विद्यालय, हरिद्वार

विद्यासागर विद्यालंकार

ए-२/२२ राधा प्रताप बाग

दिल्ली-११०००७

**अत्यंत प्रचारार्थ**

अजिल्द  
₹००  
सेकंड

अजिल्द  
₹००  
सेकंड

**मृत्यार्थ प्रकाश**

घर घर पहुँचाएँ

सफेद कागज सुन्दर छपाई

सुदृढ़ संस्करण प्रतिरक्षण करनेवालों के

आकार 23x36-16 पृष्ठ 820 की दर लिख्य प्रचारार्थ

अजिल्द ₹/अजिल्द ०/-

**आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट**

455, खारी बावली, दिल्ली-6 ट.रा.भा.प. 238360-233112

## हरयाणा के किसानों का व्यापारियों द्वारा

### जबरदस्त शोषण

राजाओं का भी राजा कठोर धम करके अन्धविश्वास का पदार्थों का उत्पादन करने वाला, मनुष्यों का घेरे करने वाला यह मोला किसान आज बड़ा दुःखी है। इस की ओर किसी राजनैतिक ध्येयवाचक नेता का ध्यान नहीं। यह कितनी विषम बातों है। फसल के समय किसान उसे बेचने अनाज मण्डी में जा जाता है और फिर किसान की जितनी खरीदने उस की बोली बोलनेवाले ग्राहक व्यापारियों की घण्टों प्रतीक्षा करता रहता है। जब व्यापारी लोग फिर से किसानों के माल को बोली बोझने लगते हैं तो बोले किसान उस समय उनके रहम-कर्म पर निर्भर हो उनका मुँह टाकने लग जाते हैं, और देखते हैं कि उन का भाग्य का किशोरा यह लोग बोली चढ़ाकर करते हैं या फिर एक-दो बोली बोल एक-दो-तीन कह कर कम भाव में छीज देते हैं और किसान को मजबूरी में अपनी बिम्ब बेचनी पड़ती है। जबकि व्यापारी लोगों की ओर धाड़ती (दयाला) की परस्पर साठ-गांठ होती है। जिस ने जितना माल खरीदना होता है और जहाँ उसे वह ठीक जचता है वह अपने साथियों को गुप्त संकेत कर अपनी मन्तवानी बोली बोले उसे छुड़वा नेता है। दूसरे व्यापारी वहाँ कोई शान्त रहते हैं। ऐसा सिलसिला बना हुआ है, और यह सब मैंने देखा-सुना तथा वहाँ जाकर स्वयं अनुभव किया है। मैं किसान का नेता हूँ। सत्य बात तो यह है, कि इस देश में जबरदस्त किसान निर्धन लोगों का नही पूँजीपतियों का शासन है। चाहे कोई भी सरकार हो इन के इशारों पर चलती है इसका विशेष कारण यह भी है कि चुनाव के समय यही लोग राजनैतिक दलों को बडा धन देते हैं, और फिर कोई भी सरकार इन व्यापारियों को किसानों द्वारा उनके माल से अधिक लाभ अर्जाने उनका शोषण करने, उनके प्रति अन्याय करने से वह उनको रोक नहीं सकती। उन पर किसी भी प्रकार का अंकुश लगा नहीं सकतो। ऐसा अन्ध्याय किसानों के साथ बहुत समय से हो रहा है, निखले वर्ष जब किसानों की सरसों को फसल मण्डी में धाई हो रोहतक आदि के व्यापारी लोगों ने किसानों से ५०० रुपये प्रति किबटल के भाव से खरीद कर वहाँ १३०० रुपये प्रति किबटल के भाव से बेची। कुछ भाव कमया इस बार फिर इन व्यापारियों के वही हथ-कण्ठे, सच मैंने पहले ६५०० का भाव था जब किसानों की सरसों मण्डी में अपनी प्रारम्भ हुई तो फिर भाव घटाते-घटाते ६०० रुपये प्रति किबटल तक कर दिया, मैं स्वयं ३० किबटल सरसों रोहतक में मण्डी में बेचने गया था। बहुत किसानों को दुर्बला देलकर मुझे बडा दुःख हो रहा था, किसान बड़े दुखी और परदेनान थे। उनके साथ प्रति वर्ष फसल के समय वह अन्याय क्यों हो रहा है। मैंने किसानों के मध्य में उन व्यापारी लोगों से कहा कि राजाओं के राजा किसानों का आज जो जबरदस्त आप शोषण कर रहे हो यह अविषय में जाति का एक कारण बनेगा। लोकसभा बहूँ होते हो आप लोगों ने किसानों का अपनी मन बर्जी से खरीदना शुरु कर दिया है। लोकसभा इनकी मिसला चाहिए था। परिवर्ष में यही सरसों आप ने १२/१३ की रुपये प्रति किबटल बेचकर जब लाभ कमना है। तो हरयाणा सरकार शीघ्र इस ओर ध्यान दे, यदि वह इन किसानों की हितों है। अन्याय किसान लोग इन चुनाव में अपना मत किसी को नहीं देंगे धरने भर बैठे रहेंगे, हरयाणा के किसानों का संगठन हो, इनकी प्रतिपत्ति बने, राजनैतिक गण धार्ये कीन राजनैतिक अन्याय वाचिक नेता धार्ये जाकर अपने साहस का परिचय देता है और देशबन्धु भी० श्रोत्रुम भी की भांति किसानों का सच्चा हितैषी बनता है। प्रयु इन बोले किसानों की रक्षा करे इनको न्याय दिलाये।

डा० रघुवीर बाय्यं गो प्रेमी, गांव कलाबड़ संवाल्का—अखिल भारतीय गोशाला पहरावर

### आर्यसमाज की भूमिका

पंजाबी विश्वविद्यालय के डा० शिवकुमार गुप्ता ने स्वतन्त्रता-संग्राम में आर्यसमाज की भूमिका को समीक्षा की और कहा कि आर्य समाज ने शिक्षा-संस्थाएँ खोली, शास्त्र-विवाह का विरोध किया और अपने अनुयायियों पर पावन्यो लगाई कि वे २५ वर्ष से कम लड़के धीरे १६ वर्ष से कम लड़की को शादी न करे। विधवा-विवाह का प्रचार किया, पर्दा-प्रथा समाप्त की तथा सामाजिक बुराईयों को दूर करने के लिए आंदोलन चलाया।

## महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय की यज्ञशाला में यज्ञ व्यवस्था तथा हिन्दी में पत्रव्यवहार करने की मांग

रोहतक १६ मार्च। कार्यालय सच्य दाता को रोहतक गहर के वाचिक तथा सामाजिक कार्यकर्ताओं ने महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के उपकुलपति त्रिगेदियर श्री ओमप्रकाश जा चौधरी से उनके कार्यालय में भेंट की तथा उन्हें एक प्रारण देकर मांग की गई कि महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय में समस्त पत्रव्यवहार रोहटकी भाषा में करने का आदेश देव क्योंकि इस विश्वविद्यालय के साथ महान् धमना सुधारक महर्षि दयानन्द का नाम जुडा हुआ है जिन्होंने गुजराती होते हुए हिन्दी भाषा को अपनाया और अपने सभी ग्रन्थ हिन्दी भाषा में लिखे।

उपकुलपति महोदय को विश्वविद्यालय में बनाई गई यज्ञशाला में दैनिक यज्ञ की व्यवस्था हेतु एक विद्वान् पुरोहित द्वारा करने का अनुरोध किया गया और उन्हें इस पवित्र कार्य में रोहतक की आर्यजनता की ओर से पूरा सहयोग देने का वचन दिया गया।

उपकुलपति महोदय ने शिष्टमण्डल को बताया कि वे इन मांगों पर सहानुभूति पूर्णक विचार करके आवश्यक पत्र उठाया जावेगा और समय मिलने पर धार्यसमाज के प्राधिकारियों से विस्तार में विचार विमर्श करेगा। इस शिष्ट मण्डल में महात्मा रघुपति वैदिक साधनाध्यक्ष, स्वामी अन्नारानन्द सोम्य प्राध्याप, श्री महावीर शास्त्री धार्यसमाज प्रेमपुर रोहतक, श्री सुरेशकुमार धार्य सनीरोग तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यालय से श्री केदारसिंह आर्य आदि सम्मिलित हुए।

### शान्ति महायज्ञ

आर्यसमाज के प्रसिद्ध कर्मठ कार्यकर्ता श्री० हररूखसिंह के परिचार में धार्यपीप मा० धर्मवीर आर्य राम बदानी (रोहतक) की पुण्या माता श्रीमती धर्मवीर का दिनांक ०-२-६१ को ८० वर्ष की अवस्था में आत्मिक निधन हो गया। उसके उपलक्ष्य में दिनांक १-०-६१ को उनके परिचार में एक शांति महायज्ञ का आयोजन किया गया। जिसमें पारिवारिक सदस्यों के अतिरिक्त भ्रमर के वरिष्ठ अध्यापक, पं० मनुदेव शास्त्री शाखादास, पं० शान्तदेव शास्त्री शहर, को आर्षत जी शास्त्री रोहतक आदि विद्वानों ने भाग लिया। पं० सुरेशचन्द्रेय धार्यय वेदप्रचारार्थिष्ठता धार्य प्रतिनिधिसभा हरयाणा रोहतक का वैदिक प्रवचन हुआ। दिवंगत आत्मा को अष्टाञ्जलि अर्पित की गई। इस शान्ति महायज्ञ का उत्तम प्रभाव रहा। २५१ रुपये उपकुल भ्रमर को तथा १०१ रुपये सर्वहितकारी पत्र को दान दिया गया।

—फोर्सिंह भन्वारी उपकुल शरकर (रोहतक)

### अमर सपुतो आजी

मातर माता हुकार रही है, धर्म का स्वयं उठाओ देश धर्म जाति के हित में, अमर सपुतो धाबो जब रही हैं सीता साध्वी, गीता और मनोता धार्य-हत्या करती देखी, रीता और सनीता सगा कलंक देखे प्रया का, मिलकर रहे हटाओ

देश धर्म जाति के हित में, अमर सपुतो आजी। मानव बनकर मानवता का, सबको पाठ पढाये नफरत की दीवारों को हूय, तहस-नहस कर जायें मिलकर भायें भारत माँ का, नारा एक लगाओ देश धर्म जाति के हित में, अमर सपुतो आजी। नरुकाळ धरलोस जो शिक्षा, यह स्वयं हो जाये मदिरा मांस चाय तम्बाकू, कोसों नजर न आये महापुरुष बन प्राय घरा पर, अपने कर्म बडाओ देश धर्म जाति के हित में, अमर सपुतो आजी।

गौरव का इतिहास हमारा, पुनः प्राय रोहराये भूले निखड़े होन जनो को, भाव गमे लयायें महेश यह देग तभी बनेगा, शिष्टाचार दिलाओ देश धर्म जाति के हित में, अमर सपुतो आजी। भारत माता पुकार रही है, धर्म का स्वयं उठाओ। —महेश आर्य पन्हेड़ा पुद्रे, तं० बल्लबगढ (फरोदाबाद)

## गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार विज्ञापित

गत वर्ष दिसम्बर में दिल्ली में आयोजित आर्थ महासम्मेलन में निवचन किया गया था कि भारतसन्धर्ष के सभी गुरुकुलों की पाठविधि समान करने पर विस्तार से विचार विमर्श किया जाए। तब यह भी घोषणा की गई थी कि इस प्रकार का विचार विमर्श गुरुकुल कांगड़ी के वार्षिकोत्सव के अवसर पर १० अप्रैल के प्रासपास किया जाएगा। अब निवचन किया गया है कि यह विचार विमर्श संगीठो आगामी ६ से १० अप्रैल के बीच गुरुकुल कांगड़ी में आयोजित की जाए। सभी गुरुकुलों के आयामों एवं संघालको से निवेदन है कि वे इस संगोष्ठी में भाग लेकर अपने अनूय सुसाव देने की कृपा करे ताकि जुलाई १९६१ से प्रारम्भ होनेवाले शिक्षा सत्र से समन्वित पाठविधि पर क्रियान्वयन किया जा सके।

सूचनायं यह भी निवेदन है कि ऐसी समान पाठविधि बनाने का विचार है जिसमें संस्कृत, धर्मशिक्षा, वैदिक शास्त्रमय की शिक्षा के साथ साथ हिन्दी माध्यम से आधुनिक विषयों की भी शिक्षा दी जा सके ताकि बहुचारी प्राचीन भारतीय शास्त्रों और आधुनिक विषयों का ज्ञान समान रूप से प्राप्त कर सकें। यदि इस सम्बन्ध में कोई अन्य जिज्ञासा हो तो सम्बद्ध व्यक्तिकुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार-२५६००४ से पत्र व्यवहार कर सकते हैं। सभी गुरुकुलों के आयामों एवं संगोष्ठी को इस संगोष्ठी हेतु अवगत से निमन्त्रित किया जा रहा है किन्तु सभी गुरुकुलों के पत्र आदान से होने के कारण यह विज्ञापित प्रकाशित की जा रही है ताकि अधिक से अधिक गुरुकुलों के संघालक/आचार्य इस सम्मेलन में भाग ले सकें। इस संगोष्ठी में यथारुत वाले महानुभावों के निवास प्रौर भोजन की समुचित व्यवस्था गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में रहेगी।

कुलपति/मुख्याधिष्ठाता

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार।

## अंग्रेजी में काम करनेवाले अधिकारी निलंबित होंगे

कानपुर, (निस)। राज्य सरकार के जिस कार्यालय में अंग्रेजी का प्रयोग होता थाया जाएगा उस विभाग के विभागाध्यक्ष को निलंबित करने में विलम्ब नहीं किया जाएगा। यह घोषणा ७-३० के मुख्यमन्त्री मुनायमसिंह यादव ने यहाँ से ६० मील दूर बिल्हौर कस्बे में आयोजित एक चुनाव सभा में की। —दैनिक वीर अर्जुन से

## रेवाड़ी में नशाबन्दी अभियान शुरू

रेवाड़ी, (निस)। रेवाड़ी जिले में नशाबन्दी अभियान शुरू कर दिया गया है। केन्द्रीय सरकार के तत्वावधान में एक जाहूर तथा दूसरे सम्बन्धित कार्यक्रमों की एक टीम एक सप्ताह के दौरे पर जिले के गाँवों में नाना प्रकार के मनोरंजन कार्यक्रम रख करके लोगों को नशाबन्दी के लिए प्रेरित कर रही है। इस अभियान का उद्घाटन गत दिवस नजदीकी गाँव लिटभाना में जिले के उपायुक्त श्री सखनसिंह ने किया। एक भारी जनसमूह को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि नशा से आर्थिक स्थिति के साथ-साथ मानव शक्ति के अपभरण धर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। उन्होंने नशा की ब्यावत को समाज के उत्थान में रुकावट के साथ-साथ कलक बताया।

श्री सिंह ने कहा कि सिमरेंट बीड़ी और शराब पीने की ब्यावत से कई एक दुःखार्थों एवं कुबोतियों को जन्म मिला है। उन्होंने बजात से नशा से दूर रह कर जीवन यापन करने की सलाह दी।

—दैनिक वी अर्जुन से

## आर्थ कन्या गुरुकुल महाविद्यालय का वार्षिक उत्सव

आर्थ पाठविधि के अनुसार सम्पूर्ण कार्य करने की शिक्षा देने वाले एकमात्र आर्थ कन्या गुरुकुल परेशा का वार्षिक उत्सव ३०, ३१ मार्च १९६१ को बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस शुभ अवसर पर अनेक वैदिक विद्वान्, आर्थ उपदेशक, आर्थ साधु-संग्घारी, भजनो-पदेशक पहुंच रहे हैं।

## घोषणापत्रों में शराबबन्दी सम्मिलित करें

आर्थ प्रतिनिधि सभा हरयाणा की राजनैतिक बलों से मांग

आर्थ प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान श्री वेदसिंह ने अपने एक प्रस वक्तव्य द्वारा सभी राजनैतिक दलों के नेताओं से अनुरोध किया है कि वे अपने अपने दल के लिए चुनाव घोषणा पत्रों में बहो अनेक कल्याणकारी कार्यक्रम चालू करने का वचन देते बहो पूर्ण शराबबन्दी लागू करने को भी घोषणा करें क्योंकि शराबबन्दी सभी कार्यक्रमों से अधिक कल्याणकारी योजना है। आपने स्मरण करवाया है कि शराबबन्दी करनेवाले राज्यों को उसकी घाटापूर्ति के लिए केन्द्रीय सरकार भी ५०% से अधिक अनुदान दे सकती है। यदि शराब के बढते हुए प्रचाप पर रोक न लगाई गई तो सारे विकास कार्य ठप हो जायेंगे।

## पुस्तक-समीक्षा

महामानव श्रीराम के जीवन संस्मरण

संकलनकर्ता—स्वामी केवलानन्द सरस्वती

प्रकाशक—ज्ञानसामर वैदिक साहित्य प्रचार केन्द्र

आनासागर कृष्णपत्र १५, प्रथमवर्ष

मूल्य—दो रुपये।

प्रस्तुत संकलन में स्वामी केवलानन्द जी ने मर्यादा उपरोक्त महाराष्ट्र राम के पावन संस्मरण वाल्मीकीय रामायण के आधार पर संकलित किए हैं। स्वामी जी ने वाल्मीकीय रामायण के मूल श्लोक उद्धृत करके वैदिक मान्यताओं की पुष्टि की है। रामायण काल में श्री श्री राम स्वयं आदि राजकुमार तथा अन्य प्रजावन भी वैदिक रीति से सम्बोधित तथा अग्निहोत्र एवं गायत्री जप प्राणायाम आदि करते थे। यज्ञगुप्टान आदि धार्मिक कार्य गृहस्थ जन पत्नी-सहित करते थे। सुप्रसिद्ध राक्षस राजा रावण भी वेदादि शास्त्रों का पठित था किन्तु अशर्माचारण के कारण राक्षस कहलाया।

रामायण की शिक्षा, ईश्वरभक्ति, राष्ट्र की उन्नति के अनेक भजनों का संग्रह किया है और अतः में आर्यसमान के संस्थापक महर्षि ब्रह्मनन्द सरस्वती के जीवन की भाँकी प्रस्तुत की है। सब मिलाकर समग्र अच्छा है। —वेदवत शास्त्री

(पृष्ठ १ का शेष)

नारा लगाकर शराब में बेहोश रहकर राजगद्दी पर बैठे रहना बाहते हैं। वे शराब की बिक्री से आमदनी बढ़ाकर विकास नहीं आणितु विनाश कर रहे हैं।

यदि इसी प्रकार शराब बिलाई जाती रही तो हरयाणा के लोग ५० वर्ष की आयु तक पहुंचने से पूर्व ही इस संसार को छोड़ जाया करेंगे और सरकार को बृद्धावस्था पेन्शन भी नहीं देनी पड़ेगी।

सरकार विकास के कार्यों का नाम लेकर परीची दूर करने के लिए साधारण जनता को भ्रम में डाल रही है क्योंकि अधिक से अधिक शराब पीनाकर परीची को दूर करने की बजाय परीची को ही मिटाना चाहती है।

आपने आर्थसमाज के कार्यक्रमों को स्वतन्त्रता प्राप्त आंदोलन की भाँति शराबबन्दी आन्दोलन जोकि एक आर्थिक स्वतन्त्रता प्राप्त आन्दोलन कहा जा सकता है को सफल करने के लिए बलिदान करने के लिए तैयार रहें। शराब घातक बस्तु है। शराब के पीनादा देशाहो है। अतः हमें उनके साथ सझाई सझनी ही पड़ेगी। इस सझाई में हमारी बहने प्रमुख भूमिका निभा सकती हैं क्योंकि शराबियों से जितना संकट झंझू है उतना पुरुषों को नहीं है। आप ने हाथ उठाकर आर्थ नर-नारियों को शराबबन्दी आन्दोलन में सहयोग देने को तैयार किया और विश्वास दिलाया कि मैं इस आन्दोलन की तैयारी के लिए पुनः यकड़ीली तथा अन्य प्रायों में पहुंचने का कार्यक्रम बनाऊँगी। परन्तु अब लोकसभा के चुनाव की घोषणा हो जाने के कारण राजनैतिक पतिविधियों तथा अपचार कार्य बढने से हलात बदल गये हैं। अतः शराबबन्दी प्रचार अभियान को चुनाव सम्पन्न होने के बाद पुनः आरम्भ किया जावेगा।



### यह खुदाई भी क्या खुदाई है ?

टांग सब ने यही अड़ाई है ।  
 बात बिगड़ो कहुँ ? बनाई है ।  
 नुब को बन्दे, छुरा समझ बेंडे ।  
 कैंसी ! या रब ? तेरी खुदाई है ॥  
 हम सम्राए किसी को आँसों में ।  
 बपने दिल में यही समझाई है ॥  
 मुँह ने कह दो, खरी-खरी बेसाक ।  
 साफ कहने में क्या बुराई है ॥  
 जिसको अपना समझ रहे हो तुम ।  
 बुनिया अपनी भी भन पराई है ॥  
 रौ रहु है जो रोना, रोने दो ।  
 धीर किस ने कित्ते बँबाई है ॥  
 अकलमन्हीं ने बेवकूफी की ।  
 प्रकल अपनी भी बेच खाई है ।  
 अब न कहना, बुरा, बुरे को भी ।  
 नाज इसमें तेरी अबाई है ॥

#### मुक्तक

भौत के जब ठिकाने बनते हैं ।  
 हर तरह के बहाने बनते हैं ।  
 काम आती गही है, चतुराई ।  
 लोग बेधाक सयाने बनते हैं ॥

—नाज सोनीपठी

### लाम्बा जि० भिवानी में आर्यसमाज स्थापित

जिसा वेद प्रचार मण्डल भिवानी के सहसंयोजक श्री सत्यनारायण आर्य के प्रयत्न तथा श्री जयपाल धाम्य की अजन मण्डी के प्रभावशाली भजनों से प्रभावित होकर विनांक ८ मार्च को ग्राम लाम्बा तहसील चरखीवादी जिला भिवानी में आर्यसमाज स्थापित हो गया । इस कार्य में सन श्री रामदेव, वेरसिंह, कमलसिंह, भरतसिंह भगवानसिंह आदि ने पूरा सहयोग दिया । रात्रि को ग्राम में प्रचार हुआ जिसमें श्री जयपालसिंह ने शाराव, मांस, दूधेज तथा गौहत्या आदि सामाजिक बुराईयों का जमकर खण्डन किया और महर्षि दयानन्द के बताये हुए मार्ग पर चलने की प्रेरणा को । श्री पं० सत्यनारायण आर्य ने भी इस अवसर पर धाम के नर नारियों को सम्बोधित करते हुए आर्यसमाज के संघटन को सुदृढ़ करने तथा ग्राम में आर्यसमाज मन्दिर बनाने का सुझाव दिया ।


प्रातः यज्ञ के अवसर पर १२ पुरुषों तथा दो महिलाओं ने यज्ञोपवीत धारण किये और आर्यसमाज को सदस्यता ग्रहण की । सभी ने विश्वास दिलाया कि हम शीघ्र ही आर्यसमाज मन्दिर बनवाने का प्रयत्न करेंगे । सभा को वेदप्रचारार्थ ३०१) दान भी दिया ।

—कमलसिंह मन्नी आर्यसमाज लम्बा

## गुरुकुल

**कांगड़ी फार्मसी की**  
**आयुर्वेदिक औषधियां सेवन कर स्वास्थ्य लाभ करें**


**गुरुकुल**  
**च्यवनप्राश**  
 दूरे परिवार के लिए शक्तिशालक एवं स्फूर्तिदायक रसायन।  
 शारी, ठंड व शारीरिक एवं केफरु की दुर्बलता में उपयोगी आयुर्वेदिक औषधीय टॉनिक





**गुरुकुल**  
**पायोक्विल**  
 कौनो व मनुषी के मनन रोना में विरोगक पायोक्विल के लिए उपयोगी आयुर्वेदिक औषधी





**गुरुकुल**  
**चाय**  
 दुग्धय व इन्कमूरक, खल्ल आदि में बड़ी कृतिमी से बनी शाककारी आयुर्वेदिक औषधी



**गुरुकुलकांगड़ी फार्मसी हरिद्वार (ऊ प्रग)**

### गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी

हरिद्वार

को औषधियां सेवन करें ।

शाखा कार्यालय

६३ गली राजा केदारनाथ,  
 चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

स्थानीय विक्रेताओं एवं सुपर बाजार से खरीयें

फोन नं० २९१८७१

शाखा कार्यालय : ६३, गली राजा केदारनाथ  
 चावड़ी बाजार, दिल्ली-११०००६

'अक्षर' - वैशाख २०४५

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य ब्रिटिश प्रेस के लिए सर्बहितकारी मुद्रणालय रोहतक में छपाकार सर्बहितकारी कार्यालय पं० जयदेवसिंह सिद्धान्ती अवन, क्यानम्ब मठ, रोहतक से प्रकाशित ।



प्रधान सम्पादक—सूर्यसिंह मशामाणी

सम्पादक—वेदव्रत शम्भो

सहसम्पादक—उकाशचौधरी विद्यालकाश एम० ए०

वर्ष १८

अंक १६

७ अगस्त, १९६१

वार्षिक शुल्क ३०)

(आजीवन शुल्क ३०१)

विदेश में ८ पौंड

एक प्रति ७४ पैसे

## गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

६१वां वार्षिकोत्सव

विलम्ब ७ अगस्त से १४ अगस्त १९६१ तक

### कार्यक्रम

**प्रतिदिन : रविवार ७ अगस्त १९६१ से  
रविवार १४ अगस्त १९६१ तक**

प्रातः ७-३० से १०-३० बजे तक : यजुर्वेद पारायणयज्ञ एवं प्रवचनादि

बह्वा : पं० भद्रमोहन विद्यासागर जी संयोजक : डा० हरिप्रकाश जी सहसंयोजक डा० महावीर जी

**सोमवार ८ अगस्त से १० अगस्त १९६१ तक**

प्रातः ७-३० से १०-३० बजे तक : यजुर्वेद पारायण यज्ञ ११-०० से १-०० बजे तक : "गुरुकुलों के पाठ्यक्रम के एकीकरण" पर विचार संयोजक : आचार्य श्यामसुन्दर जी स्नातक

**बृहस्पतिवार, ११ अगस्त १९६१**

प्रातः ७-३० से १०-३० बजे तक : यजुर्वेद पारायण यज्ञ ११-०० बजे ध्वजारोहण

द्वारा-श्री ओम्केसर शेरसिंह कुलाधिपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्व-विद्यालय, हरिद्वार एवं सदस्य योजना आयोग भारत सरकार मध्याह्नोत्तर २-३० से ५-३० बजे तक : वैदिक प्रदर्शनी एवं वेदसम्मेलन

अध्यक्ष : आचार्य रामनाथ जी वक्ता : आचार्य विश्वप्रभा जी श्री सुमिष्ठर जी योगांतक श्री मनोहर जी विद्यालंकार

संयोजक : डा० लक्ष्यव्रत राखेज

प्रातः ७-३० से ८-३० बजे तक : भजन श्री शोमप्रकाश वर्मा ८-३० से १०-०० बजे तक : विशेष व्याख्यान वक्ता : श्री सूर्यदेवजी डा० प्रभात वेदालंकार

**शुक्रवार, १२ अगस्त १९६१**

प्रातः ७-३० से ८-३० बजे तक : यजुर्वेद पारायणयज्ञ गुरुकुल जन्मोत्सव (सुष्यभूमि शंकापार)

अध्यक्ष : स्वामी आनन्दचोखे सरस्वती प्रधान, सांख्येशिक तथा ध्वजारोहण : द्वारा श्री शीरेन्द्र जी प्रधान, आर्यप्रतिनिधि सभा, पंजाब मुख्य अतिथि : आचार्य शिवव्रत जी वेदवाचस्पति वक्ता : श्री० शेरसिंह जी कुलाधिपति एवं प्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा, डा० धर्मपाल जी प्रधान, आर्यप्रतिनिधि सभा, दिल्ली

संयोजक : डा० हरिप्रकाश जी सहसंयोजक : डा० श्रीकृष्ण राशि ८-०० से ८-३० बजे तक भजन, श्री शोमप्रकाश वर्मा ८-३० से ११-०० बजे तक : कवि सम्मेलन अध्यक्ष : डा० श्यामसिंह राशि निवेदक, प्रकाशन-विभाग भारत सरकार

कवि : श्री रामनाथ अक्बरी डा० कुन्दर देवचंन श्री मधुर शस्त्री श्री शोमप्रकाश आदित्य श्री कुम्हड़

संयोजक : डा० विष्णुव्रत राखेज सहसंयोजक : श्री कमलकान्त दुषकर

**शनिवार १३ अगस्त १९६१**

प्रातः ७-३० से ९-३० बजे तक : यजुर्वेद पारायण यज्ञ ९-३० से १२-०० बजे तक : दौलापत-समारोह अध्यक्ष : श्री प्रो० शेरसिंह जी कुलाधिपति, स्वागत एवं परिचय : श्री शुभाष विद्यालंकार कुचपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

दीक्षांत आयुष्य द्वारा : श्री चन्द्रशेखर जी प्रधान मन्त्री, संयोजक : डा० वीरेन्द्र अरोडा कुलसचिव, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

राशि ८-०० से ८-३० बजे तक : भजन, श्री शोमप्रकाश वर्मा ८-३० से १०-३० बजे तक : संगीत सम्मेलन

अध्यक्ष : श्री विनयचन्द्र जी मौजूबत्य संयोजक : आचार्य श्यामसुन्दर स्नातक सहसंयोजक : डा० कीलतकुमार ।

**रविवार, १४ अगस्त १९६१**

प्रातः ८-३० से १०-३० बजे तक : यजुर्वेद पारायण यज्ञ एवं पूर्णाहुति १०-३० से १२-०० बजे तक : वेदारम्भ संस्कार (नवीन बह्वाचारियों का प्रवेश)

संयोजक : आचार्य श्यामसुन्दर स्नातक सहसंयोजक : श्री सरस्वदेव मध्याह्नोत्तर २-०० से २-३० बजे तक : भजन, श्री शोमप्रकाश वर्मा २-३० से ५-०० बजे तक : पत्रकार एवं राष्ट्रीय मसला

अध्यक्ष—श्री शीरेन्द्र जी प्रधान, आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब, वक्ता : सिद्धि वेदावकार संयोजक : श्री कमलकान्त दुषकर

राशि ८-०० से ८-३० बजे तक : भजन, श्री शोमप्रकाश वर्मा, ८-३० से १०-३० बजे तक : ध्यायाम सम्मेलन अध्यक्ष : श्री स्वामी शोमानन्द

जी महाराज संयोजक : श्री ईश्वर मारडाज सहसंयोजक : श्री रजनीतसिंह

आचार्य शिवव्रत निवेदक

सुभाष विद्यालंकार कुचपति एवं मुख्याधिष्ठाता

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

### गुरुकुल कांगड़ी के उत्सवों में सम्मिलित होने के इच्छुक नर नारियों के लिए विशेष अवसर

गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार का वार्षिक उत्सव ११ से १४ अगस्त तक भूमिगत से बनाया जा रहा है। इसमें सम्मिलित होने के लिए छात्रों को नर नारियों को सभा की ओर से बुलाया दी गई है कि वे केवल एक बोर का रोहतक से हरिद्वार तक का किराया ८ अर्सेब तक सभा कार्यालय दवानन्दमठ रोहतक में ५० से ६० देकर अपना स्थान सुरक्षित करवा लेवें। सभा की ओर से जाने तथा जाने के लिए सवारों का प्रबन्ध किया जा रहा है। भोजन तथा आवास का प्रबन्ध गुरुकुल की ओर से किया जायेगा।

सभा मन्त्री

सत्यार्थप्रकाश का एक पाठ

## स्तुति और उसका प्रयोजन

(डा० सुरेशचन्द्र वेदान्तकार एम० ए०, आर्यसमाज गोरखपुर)

'सत्यार्थप्रकाश' के सत्य समुत्प्लास में स्वामी दयानन्द महाशय ने ईश्वर को देखा, स्वाधी, निराकाश सर्वव्यपितामय ब्रह्मते के बाद ईश्वर की स्तुति श्रावनी और उपसना करने का विधान किया है। स्तुति का अभिप्राय है ईश्वर के गुणों का कथन। ईश्वर के गुणों के कथन को हम ब्रह्मविद्या भी कह सकते हैं। जिस विद्या में ब्रह्म का वर्णन हो वह विद्या ब्रह्मविद्या कहलाती है। ब्रह्म का वर्णन उसके गुणों द्वारा होता है और गुण उसके वर्णनातीत हैं। अतः ब्रह्मविद्या से हमारा अभिप्राय यह है कि मनुष्य को अपनी उन्नति श्रधात् ब्रह्मप्राप्ति के लिए जिन गुणों की आवश्यकता है, परमेश्वर के उन गुणों का चिन्तन, कथन, मनन यही स्तुति है। परमेश्वर की स्तुति तथा मनन इसलिये नहीं की जाती कि वह नुशादपदसम्पन्न है, न उसे स्तुति की जरूरत है और न वह पापों की माफ करता है। फिर, यह प्रश्न उपस्थित होता है कि स्तुति और भजन का क्या लाभ है? हमारे विचार से स्तुति और भजन का यह लाभ है कि मनुष्य के प्रत्येक कर्म का संस्कार उसके अन्तःकरण पर पड़ता है और अन्तःकरण पर गिरकर संस्कार पड़ने से वे ही संस्कार स्वभाव का रूप धारण कर लेते हैं। परमेश्वर के गुणों के कथन, चिन्तन और मनन से स्वभाव पापरासा नहीं बन पाता।

परमेश्वर की महिमा और उसके गुणों के चिन्तन से आत्मा नञ होता है। हमें अपनी अल्पज्ञता और प्रभु की सर्वज्ञता का बोध होता है और इस प्रकार उसकी महिमा के चिन्तन से अहंकार का नाश होता है और अहंकार जो पापों की जड़ है उसके उन्मूलन से पाप की प्रवृत्ति का दलन पक्ष नाश होता है। परमेश्वर के गुणों के स्मरण से मनुष्य में अदोनाता और निर्भयता का संस्कार होता है। मनुष्य को यह विश्वास होता है कि वह अकेला नहीं उसका प्रत्येक स्थान पर और प्रत्येक समय कोई न कोई सहायक है अतः वह संसार में अपने कार्य आत्मविश्वास के साथ करता चल जाता है। अतः स्वामी जो ने "स्तुति से ईश्वर में प्रीति उसके गुण कर्म स्वभाव से अपने गुण कर्म स्वभाव का सुधारना" स्तुति शब्द का अर्थ लिखा है। स्तुति के उदाहरणस्वरूप हम निम्न मंत्र को से सकते हैं—

स पर्याम्च्छुक्कमकायमजगत्प्रणाविष्टं बुद्धमपापविदम् ।  
कविर्गनीतो परिभूः स्वभूमूर्गायाध्यातोऽर्धत् व्यध्याच्छास्वतीभ्यः  
साम्भ्यः । यजुः ४० व ५ म

भावार्थ—(सः) वह ईश्वर (परिभ्राष्टः) सर्वत्र व्यापक है (शुद्धम्) जगदुत्पादक (अकायम्) शरीररहित (अजगम्) शारीरिक विकार रहित (अर्णाविष्टम्) नाशी और नश के बन्धन से रहित (शुद्धम्) पवित्र (अपापविदम्) पाप से रहित (कविः) सुसमदर्शी (गनीतो) जानी (परिभूः) सर्वोपरि बतमान (स्वभूम्) स्वर्गविद (शास्वतीभ्यः) अनादि (साम्भ्यः) प्रजा (जीव) के लिए (यातातप्यतः) ठीक-ठीक (अर्धत्) कर्म फल का (व्यध्याष्टः) विधान करता है।

वह ब्रह्म सर्वत्र व्यापक है। वह समूर्ण भूतों में है और सब भूत प्राणी केतन समुदाय उसमें है यह ज्ञान विश्वभर को भावना का जालक है। "यस्तु सर्वानि भूतानि आत्मन्येवाभ्युपगम्यति, सर्वभूतेषु चात्मन ततो न बिभृशुष्यते"। और वह विश्वभर को भावना परमेश्वर को सर्वव्यापक समझने से ही प्राप्त करती है। "तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वव्याप्त्यस्य वाप्यतः"। यह परमेश्वर सबके अन्तर और बाहर भी है। यह परमेश्वर की स्तुति हममें विश्वभर, निर्भयता, पाप को देखने वाला होने से पाप से बचने की प्रवृत्ति आणी है।

इसी प्रकार जगत् का आदि (सृष्टकारण) होने से अपने निर्माता के प्रति कुस्रता, शुद्ध अर्थात् ब्रह्म की शुद्धता से ब्रह्म की समीपता प्राप्त करने के लिए जब से शरीर, सत्य से मन, तप से आत्मा और निराल बुद्धि को पवित्र करने को भावना, अर्थात् बुद्धि अर्थात् समीपता निष्पाप परमेश्वर से स्वर्ग निष्पाप अर्थात् पाप के मूल कारण मिथ्या ज्ञान से निवृत्ति की इच्छा तथा अन्नम् फोड़े कुंसी आदि शारीरिक विकारों से रहित होने से स्वास्थ्य की प्रेरणा हमें स्तुति के द्वारा ही प्राप्त होती है।

इसी प्रकार परमेश्वर के कवि, ज्ञानदर्शी, सर्वप्रष्टा सर्वज्ञ, मनीषी, स्वर्ग्य अर्थात् अपनी सत्ता से आप विद्यर, फलदाता यातातप्यतः ठीक ठीक विधान करने वाला परमेश्वर है। इस प्रकार इस मंत्र में परमेश्वर की स्तुति की गई है।

यदि हम लोक में सच्चे हृदय से किसी की समीपता प्राप्त करना चाहेंगे या किसी के प्रति भक्ति करना चाहेंगे या किसी के प्रति भक्ति करने से उसके लिए यह आवश्यक है कि हम पहले उसके गुणों का ज्ञान प्राप्त करें, उनका चिन्तन, मनन और ध्यान करें। इसी प्रकार उपसना और भक्ति के लिए परमेश्वर की स्तुति, गुणकीर्तन श्रवण ब्रह्मविद्या में प्रवेश के लिए उसके गुणों का ज्ञान आवश्यक है।

स्वामी की महाराज ने स्तुति के दो भेद माने हैं (१) समुण स्तुति (२) निर्गुण स्तुति। समुणस्तुति का मतलब है गुण के साथ प्रभु की स्तुति करना अर्थात् व्यापक, शीघ्रकारी अन्तर्भावों, सत्य शुद्ध, बुद्ध इत्यादि गुणों के साथ परमेश्वर की स्तुति समुण स्तुति कहलाती है। ऐसी स्तुति में वह अंका को जा सकता है कि यदि परमेश्वर समुण है तो निर्गुण कैसे हो सकता है? यहाँ तो विरोधाभास दिखाई देता है। परन्तु इस विरोधाभास का परिहार इस प्रकार किया जा सकता है कि जिस-जिस राग द्वेषादि गुणों से पृथक् मानकर परमेश्वर की स्तुति की जाती है वह निर्गुण स्तुति कहलाती है। इसलिये आर्यसमाज और वैदिक धर्म के अनुसार अभावानु समुण निर्गुण दोनों हैं। इसीलिए हमारी उपसना की स्तुति के समाप्त ही गुण निर्गुणोपासना है। स्वामी जी ने स्तुति के प्रकार के अन्त में स्तुति का प्रयोजन लिखा है "इसका फल यह है कि जैसे परमेश्वर के गुण हैं वैसे गुण कर्म स्वभाव धरने को करता। जैसे वह व्यापकरी है तो भाप को व्यापकरी होने और जो केवल नाश के समान परमेश्वर के गुणकीर्तन करता जाता और अपना चरित्र नहीं सुधारता है उसका स्तुति करना व्यर्थ है।"

### जिला रोहतक के ग्राम बिचपड़ो तथा सिवानका में हरिजननों को ईसाई बनाने का आर्यसमाज द्वारा विरोध

दैनिक नव भारत टाइम्स नई दिल्ली के १३ मार्च के अंक में कई हरिजन परिवारों ने ईसाई धर्म अपनाया समाचार की सूचना आर्यभट्ट हुजा कि जिला रोहतक के ग्रामों में ईसाई प्रचारक निधन हरिजन परिवारों को नोकरियाँ बना दिववाने का प्रलोभन देकर ईसाई धर्म ग्रहणने का पद्ययत्न बना रहे हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से सभा के महोपदेशक पं० सुखदेव शास्त्री तथा श्री केदारसिंह आर्य दिनांक १३ मार्च को ग्राम बिचपड़ो गये और आर्यसमाज के कार्यकर्ता श्री धर्मदास शास्त्री के सहयोग से ग्राम के बानक परिवार भी महासिंह के परिवार में गये, जिनके लकड़े की रूहतास ने ईसाई धर्मप्रचारकों से सम्पर्क कर रखा है। श्री सुखदेव शास्त्री ने उनके परिवार के सदस्यों को वैदिक धर्म की विशेषता बताते हुए उन्हें विदेशी धर्म ईसाई मत के बहूकाने में न श्रावें क्योंकि आपके पूर्वजों ने विदेशी युसलमान शासकों के दवान से भी अपना वैदिक धर्म नहीं छोडा था। इसी कारण आर्यसमाज के कार्यकर्ता आपकी पक्षप्रष्ट होने की सूचना मिचते ही आपकी सचेत करने आपके पास पहुँचे हैं। इससे अभावित होकर परिवार के सदस्यों ने आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं के विश्वास दिलाया कि हम पूर्ववत् वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) में ही बने रहेंगे। इन्होंने ईसाई धर्मप्रचारकों द्वारा दो गई उनको पुस्तक "कहानी यीशु की" बापिस कर दी।

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से ग्राम बिचपड़ो तथा सिवानका में शीघ्र ही सभा की भजन मण्डलियों द्वारा वेद प्रचार करवाकर शुद्ध सम्मेलन का आयोजन किया जायेगा। इसी प्रकार गतसप्त मेवात क्षेत्र के ग्राम इटौली जिन फरीदाबाद में एक शास्त्रीक परिवार द्वारा इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया था, उस परिवार से भी सभा के उपदेशक पं० चन्द्रपाल शास्त्री आर्यसमाज के जम्प का कर्मियों के साथ सम्पर्क करने उम्हें वैदिक धर्म में बापिस करने का प्रयत्न कर रहे हैं।

## बेरी जिला रोहतक में शराबबन्दी पंचायत

गत मास २४ माच को आर्यसमाज बेरी जिला रोहतक की ओर से स्थानीय जाट धर्मशास्त्रा में बेरी क्षेत्र के सर्वपत्तों तथा आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं की एक पंचायत का आयोजन किया गया। इस की अध्यक्षता सभा प्रधान प्रो. शेरसिंह जी ने की।

यज्ञ की कार्यवाही के बाद श्री भगवानसिंह जी प्रधान कावयान साय से सभा प्रधान प्रो. शेरसिंह तथा श्रीमती प्रभान शोभा प्रधान आर्यसमाज बेरी का स्वागत करते हुए कहा कि हरयाणा में शराबबन्दी करने के अभियान में कावयान साय तथा आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं की ओर से पूरा सहयोग किया जावेगा। हमें प्रसन्नता है कि इस अभियान का नेतृत्व बेरी क्षेत्र से सम्बन्धित आर्यपरिवार के सदस्य धर्मनेता प्रो. शेरसिंह जी तथा महिला आर्यनेता श्रीमती प्रभान शोभा जी कर रहे हैं। इसे सफल करने के लिए ही बेरी में शराबबन्दी पंचायत चुनाव गई है।

सभा की ओर से पं. रत्नसिंह धाम ने शराब की दुराइयो का उल्लेख करते हुए कहा कि शराब के बन्दे हुए प्रचार से शराबी सरेशाम हुदक मचाकर साधारण नर-नारियों के लिए जीना दुमर कर रहे हैं और शराब को इस दुरी लत में नबधुक् भी फंसते जा रहे हैं। इस प्रकार इस महादुरा को समाप्त करने के लिए सभा ने शराबबन्दी अभियान चलाया है। सभा प्रधान प्रो. शेरसिंह राजनीति में रहते हुए आर्यसमाज के कार्यों को प्रयुक्तता देते हैं और जब श्रीपती शोभा जी ने भी इस अभियान को सफल करने के लिए अपना समय देना स्वीकार कर लिया है। यदि पंचायत सहयोग करे तो हमें गीघ्र ही इस समाज सुधार कार्य में सफलता मिल सकती है। आपने मुझा दिया कि आलोचना करने के स्थान पर अपनी ब्रिटियों को दूर करके लत मन तथा लन से सभा को सहयोग देबे। आज सारे देश की शक्ति आर्यसमाज की ओर है। प्रो. साहेब का सारा जीवन देश सेवा तथा समाज सुधार के कार्यों में लगा है और आर्यसमाज के सभी आनेतुर्व में बड़-बड़क भाग लिया है। आशा है इनके नेतृत्व में हरयाणा में शराबबन्दी होगी और आर्यसमाज का नाम ऊंचा होगा।

सुबेदार हरिसिंह ने शराबबन्दी प्रस्ताव का समर्थन करते हुए कहा कि आर्यसमाज मन्दिर बेरी के समीप ही शराब का ठेका खुला हुआ है। इसे यहाँ से हटवाने के लिए हम सभी ने मिलकर सचर्च करना चाहिए। हम सभा का इस कार्य में पूरा सहयोग करेंगे। अतः श्रीमती प्रभान शोभा जी कि आर्यसमाज बेरी की प्रधान भी हैं, इसे हटवाने के लिए हमारा मार्ग दर्शन करें।

श्रीमती प्रभान शोभा ने उपस्थित कार्यकर्त्ताओं का धन्यवाद करते हुए विषयावलि विषयाया कि आज रामनवमी के पावन पर्व पर बेरी में यज्ञ करने की शराबबन्दी कल्याणकारी कार्य शारम्भ किया गया है उसे सफल करने के लिये मैं पीछे नहीं रहूँगी और बड़े से बड़ा जित्दान देने के लिए तैयार हूँ। आपको भी शराबबन्दी के लिए जुट जाना होगा और अधिक से अधिक नर-नारियों से शराब छुड़ाने की प्रशिक्षा करावें। आर्य जिस कार्य की हाथ में लेते हैं, उसे पूरा करने दम लेते हैं। इतिहास इसका साक्षी है। राम ने शक्तिशास्त्री राक्षस का मुकाबला किया और सीता का अपहरण करने पर उस पापी का बध किया। इसी प्रकार महाभारत काल में भीकृष्ण जी ने द्रौपदी का चीर हट्टन करनेवालों का नाश करवाया। परन्तु आज शराब के नशे में अनेक सीताओं का अपहरण हो रहा है और अनेक द्रौपदियों का चीर हट्टन हो रहा है और आपसोय इन शराबरूपी राक्षसों को सहन कर रहे हैं। आर्यकल के प्रायः सारपत्न स्वयं शराब के नशे में वेहोश हैं। अतः समय प्राणया है कि हरएगने की इस पवित्र धरती से शराब हटाकर युजरात प्रदेश की भांति ही भांति हमें महर्षि ध्यानान्ध धीर महात्मा गांधी के सपनों को पूरा करना चाहिए। हरयाणा तो आर्यों का प्रदेश रहा है अतः इसे जगाने के लिए हमें सचर्च करना ही होगा।

इस अवसर पर प्रो. शेरसिंह ने अपने अध्यक्षीय भाषण में उपस्थित कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि आर्यसमाज

सुधारवादी संस्था है। अपने जन्मकाल से ही समाज सुधार के कार्यों में अग्रणी रहा है। जब भी राष्ट्र पर किसी प्रकार का संकट आता है आर्यसमाज देशसेवा में सबसे पहली पवित्र में खड़ा मिलता है। आज शराब के कारण अनेक प्रकार की सामाजिक दुराइयो फैल रही हैं। यदि इसी प्रकार प्रसिद्ध शराब पीनेवालों की संस्था बन्दती रहेगी तो ग्रामीण जनता इसमें फनकर बर्बाद हो जावेगी। अतः इस दुराई को समाप्त करने के लिए सभा ने ६-७ वर्षों से शराबबन्दी अभियान चला रहा है। सभा के प्रचारकों द्वारा शराब के विषुद्ध प्रचार करवाया जा रहा है। ग्रामीण पंचायतों को प्रेरणा करके शराब के ठेके बन्द करवाने के लिए प्रस्ताव करवाकर सरकार को जिजवाये जाते हैं। पंचायत के प्रस्तावों की अवहेलना होने पर जहाँ ठेके खोल दिए जाते हैं, वहाँ स्थानीय आर्यसमाज के सहयोग से धरनों का आयोजन करके शराब की विक्री बन्द कराई जाती है। इसी प्रकार बालावास जिला हिसार, नाहरी, हसनगड, कतलपुर जिला सोनीपत, प्रासोधा, सांघी रिष्ठाणा जिला रोहतक, वापीली जिला करनाल प्रादि अनेक स्थानों पर शराब के ठेके बन्द करवाये गए। शराब के ठेकों की नीलामी स्थानों पर विरोध प्रदर्शन किया जाना है। जनता में शराब के विषुद्ध जन-आर्गुनिताने के लिए पद-पत्राओं का भी आयोजन किया जाता है। आपने अन्न में कहा कि इसी उद्देश्य से बड़ी पंचायत जून या जुलाई में की जावेगी।

—मध्यमान आर्य

### ध्यान योग-शिविर

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी योगधाम में श्री स्वामी दिव्यान्ध सरस्वती की अध्यक्षता में गुजरात बंसाज कृष्णा ५ तदनुसार ४ अगस्त १९६१ ई० से शनिवार बंसाज कृष्णा १४ तदनुसार १३ अगस्त १९६१ ई० तक ध्यान योग-शिविर का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें प्राणायाम, प्रत्याहार धारण, ध्यान आदि अष्टांग योग का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया जाएगा तथा यम नियमादि का पालन कराया जाएगा। शिविरार्थी वारिदिक निर्वलता तथा मानसिक अशांति से छुटकारा पाने के लिए विविध योगिक उपायों से लाभ प्राप्त करके आत्मदर्शन का मार्ग प्रशस्त कर सकेंगे। शिविर में यथासमय अन्न विद्याओं के प्रबचन तथा सन्नि संगीत भी होंगे। १२ अगस्त मध्याह्नोत्तर २ बजे से डॉ० नरेस कुमार ब्रह्मचारी निदेशक योग एष प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्रीय सरकार दिल्ली की अध्यक्षता में 'योग और स्वास्थ्य विषय' पर सफोष्ठी होंगे। १३ अगस्त को नवनिर्मित योग भवन का उद्घाटन होगा। धतः योगाभिलाषी धरने इष्टमिनों एव परिवार सहित पधार कर प्रशिक्षण प्राप्त करें।

—ब्रह्मानन्द संजोवक

### महात्मा कन्धूसियस के विचार

- बुराचारी मनुष्य को ऊंचा पद नहीं देना चाहिए।
- ईश्वर की आज्ञा क्या है—जब तक समझ में नहीं आ जाता, तब तक कोई श्रेष्ठ मनुष्य नहीं बन सकता।
- अन्न विचार अन्न में मत लाओ।
- मनुष्य सौम्य को जितना चाहता है, उतना सद्गुण को चाहने वाला प्रायः नहीं मिलता।
- इच्छा करो कि मैं सद्गुणों व नू और सद्गुण तुम्हारे पास हूँ।
- श्रेष्ठ मनुष्य सद्गुण का चिन्तन करता है और मनुष्य सुख सुविधा का चिन्तन करता है।
- जो बगबहार तुम अपने प्रति पसन्द नहीं करते, वह दूसरों के प्रति न करो।
- बड़ा आदमी अपना दोष देखता है और छोटा आदमी दूसरे का।
- यदि तुम मनुष्य की सेवा नहीं कर सकते तो देवता की सेवा क्या करोगे।
- मनुष्य और उसका कर्त्तव्य समाज के लिए है।



## इस तरह बनेगा स्वर्ग सभी संसार

सब से पहले आयेगा सब में भिजवाये जाये ।  
 भ्रष्टाचारी खोब खोब जहाजों में बिठाये जाये ।  
 ये जाके समुन्दर बीच पत्थर बाँधकर डुबाये जाये ।  
 मादक वस्तुओं के ठेके बन्द सभी करवाए जाये ।  
 पीते जो शराब उलटते पेड़ पर लटकए जाये ।  
 मास खानेवाले गर्म तेज में पकाये जाये ।  
 पके हुए तन के नगभंग टुकड़े तीन करवाये जाये ।  
 चील काग कुत्ते आदि जीवों को सिलाये जाये ।  
 सुनफई सट्टेवाजों पर पड़े गजब की मार ॥१॥  
 करते जो बनेंक गर्म सन्धे के बन्धवाये जायें ।  
 गिन करके पचास कोड़े पीठ में लगवाये जाये ।  
 लुप्ठे गुण्डे वेईमान गोली से उड़ाये जायें ।  
 जो बीजों में भिजावट करे वो जेल में पठाये जायें ।  
 डांडी मारे कमती तोले खोद के नडवाये जायें ।  
 फूटी जो गवाही देते वो कोल्हू में पिडवाये जायें ।  
 पंच जो भ्रम्याय करते होलौ में जलाये जायें ।  
 युगलजोर हौं खत्य कर जो दिन और रात बिगाड ॥२॥  
 डाकू और चोरों के पाव घुदनों से कटवाये जायें ।  
 मसंडे बिलारों सारे काम पर लपवाये जायें ।  
 कामी नरनारी आये घरती में नडवाये जायें ।  
 नये तन पर बंत मारें कुत्ते भिर छुडवाये जायें ।  
 दबालों के हाथ केवल कोहनी से कटवाये जाये ।  
 रिबती लोगों के तन आरे से चिरवाये जाये ।  
 लुप्ठे और लफने प्लेटफार्म पर ले जाये जाये ।  
 आये जब तुकानमेल जायें सभी गिराये जायें ।  
 सगिरी और नचकहयों का कोई करे नहौं सतकार ॥३॥  
 जुआरी जूआराज हवालात में पट्टुचाये जायें ।  
 बीड़ी पीनेवालों के मुह में लूटे टुकवाये जायें ।  
 हुक्का पीनेवालों के मुह इन्जन पे बन्धवाये जायें ।  
 भांग पीनेवाले पक्के रोड पर सुलाये जायें ।  
 माल भरे ठेले इन पर सारे दिन घुमाये जाये ।  
 बूचड़खाने तीइ प्राण गी के बचाये जायें ।  
 अलग अलग लडके लडकी मुचकुल में पढ़ाये जायें ।  
 धायों के जलसे सारे विश्व में करवाये जायें ।  
 कह नरदेव सुखी हौं फिर सब सुनियाँ के नरनार ।  
 इस तरह बनेगा स्वर्ग सभी संसार ॥४॥

—सुसतानसिंह बायं  
 धाम पोस्ट आहुवाना, गोहाना (रोहतक)

## शराबबन्दी (भजन)


मुनो हरयाणा के बहिन और भाई ।  
 इस शराब ने हरयाणा की शान चटाई ॥१॥  
 मुनो हरयाणा के लोग और लुगाई ।  
 या शराब आयों ने शराब बताई ।  
 इस बुराई को त्याग दो भेरे भाई ।  
 मुनो हरयाणा के बहिन और भाई ॥२॥  
 शराब छोड के जिम्मेगी आजाद बनाई ।  
 इसमें खुश रहते बच्चे और भाई ।  
 इस शराब ने बहिन और बेटियों की इज्जत चटाई ।  
 इन आयों की बाल समझ में आई ।  
 मुनो हरयाणा के बहिन और भाई ॥३॥  
 ये शराब बडे बडे घरों को खत्य कर भाई ।  
 जतरसिंह आयं की शिक्षा सो भेरे भाई ।  
 इसी में है देश की नभाई ।  
 मुनो हरयाणा के बहिन और भाई ॥४॥

—सन्दीकुमार आयं, ग्राम नवधा (हिसार)


## कुराड़ जि० सोनीपत में आर्यसमाज का चुनाव

बिनांक ३ मार्च रविवार को प्रातः ८ बजे सा० सुरजभान की दुकान पर आर्यसमाज कुराड़ की बैठक हुई और महाशय टेकचन्द ने ग्राम के नवबुजकों और बडे आदमियों को ग्राम के उत्थान और भलाई के लिए आर्यसमाज की भावश्यकता के लिए प्रेरित किया और प० रतनसिंह आयं उपदेशक प्रायं प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने आर्यसमाज के सिद्धान्त और आर्यसमाज से लाभ के ऊपर रोशनी डाली । सभा के लिए वेद प्रचार दशांश व सब शुल्क केवल १७० ६० प० रतनसिंह आयं उपदेशक का वे दिए और आर्यसमाज के पदधिकारियों का निम्न प्रकार सर्वसम्मति से चुनाव हुआ —प्रधान महाशय टेकचन्द प्रायं, मन्त्री मास्टर हरजानसिंह आयं, कोषाध्यक्ष सा० सुरजभान आयं, उपप्रधान मास्टर महेन्द्रसिंह आयं, उपप्रधान श्री जयकरण आयं, उपमन्त्री श्री मास्टर खजानसिंह आयं, पुस्तकालय श्री रमेशकुमार आयं, प्रचार मन्त्री श्री नीरजन प्रायं, और ६ बजे मास्टर हरजानसिंह आयं के मकान पर यज्ञ और पारिवारिक सत्संग हुआ और महाशय टेकचन्द और प० रतनसिंह प्रायं ने यज्ञ और सत्संग से लाभ दशाया । —मन्त्री

### दंतों की हर बीमारी का घरेलू इलाज



**दंत मंजन**  
लौह युग्म




मन्दी की दूख


---

23 जस्डी कृतिटो ने जिम्मित  
आयुर्वेदिक औषधि

दाँवों का इन्टर



अब नये पैकिंग में उपलब्ध




दुह की दुर्गन्ध

---

विश्वप्रसिद्ध

**महाशिया टी हट्टी (प्रा०) लि०**

9/44, इण्डिया स्ट्रीट लौह युग्म । नई दिल्ली 15 फोन 536609 । 37893, 537341




उखा नामं चामी लज्जा

---

विश्वप्रसिद्ध

**महाशिया टी हट्टी (प्रा०) लि०**

9/44, इण्डिया स्ट्रीट लौह युग्म । नई दिल्ली 15 फोन 536609 । 37893, 537341



दाँव का दर्द

## हरयाणा के अधिकृत विक्रेता

१. मैसर्ज परमानन्द साईंवितामल, विधानी स्टेट रोहतक ।
२. मैसर्ज फूलचन्द सीताराम गांधी चौक, हिसार ।
३. मैसर्ज सन-अप-ट्रेडिंग सारंग रोड सोनोपत ।
४. मैसर्ज हरीश एवेंसीज ४६१/१७ मुचद्वारा रोड, पानीपत ।
५. मैसर्ज भगवानदास देवकीनन्दन सराफा बाजार, करनाल ।
६. मैसर्ज धनद्वामदास सोताराम बाजार, विधानी ।
७. मैसर्ज कृपाराम गोपाल रड़ी बाजार, सिरसा ।
८. मैसर्ज कुलवन्त पिकल स्टोर्स थाप नं० ११५, मार्किट नं० १, एन० आई० टी० फरीदाबाद ।
९. मैसर्ज धिगला एवेंसीज सहर बाजार, मुकामा ।

## जिला हिसार में शराब बन्दी एवं वेदप्रचार की धूम

दिनांक १८-३-६१ को धेतों की डाणो (आर्य निवास) नववा में वेदप्रचार किया गया। अन्य डाणियों के नर-नारियों ने बड़-बड़कर प्रचार भी लाए। प्रातः श्री धरेराम आर्य नववा निवासी की डाणी में नवमवन निर्माण उपलब्ध में यज्ञ किया गया। दो नवयुवकों ने यज्ञोपवीत धिया। श्री धर्मसिंह ने शराब व बोटी न पीने को प्रतिज्ञा की, यज्ञ में नववा गांव से भी काफी नर-नारियों ने भाग लिया। माताएं अपने-अपने घरों से वृत भी थड़ा से लाईं।

दिनांक १६-३-६१ को श्री जयसिंह जी योगी के प्रयास एवं लगन से ग्राम जालौद खेड़ा में उनके योग आश्रम में प्रचार किया गया। श्री योगी जी हिसार से परिवार सहित प्यारे साथ में अपना लाऊड स्पीकर भी लाए। परिवार ने बड़ी थड़ा से विगानों की सेवा की। प्रातः हवन किया गया। एक अल्पायुक्त समेत श्री फूलसिंह, जयवीर तथा शमशेरसिंह ने जनेऊ लिया। शराब एवं बोटी न पीने का व्रत लिया। दो बीड़ी के बण्डल तोड़े। दिनांक २०-३-६१ को ग्राम मिलापुर में प्रचार किया गया। श्री काशोराम आर्य के घर प्रातः हवन किया गया तथा यज्ञ में काफी सख्या में नवयुवकों ने भाग लिया। श्री रमेशचन्द्र, पृथ्वीसिंह, केदारसिंह, रामनारायण, सुरेन्द्रसिंह तथा ओमप्रकाश प्रादि ने जनेऊ लिया तथा शराब, धूपदान न पीने व जुआ न खेलने का व्रत लिया। कइयों ने बीड़ी के बण्डल भी तोड़े। दिनांक २१-३-६१ को ग्राम मानस्थान में प्रचार किया गया। श्रीराम आय पूर्व सरपंच का विशेष सहयोग रहा। उपरोक्त गांव में सखा उपदेशक श्री अतर्सिंह आर्य क्रान्तिकारी ने आर्यसमाज का इतिहास तथा शराब से होनेवाले नुकसान एवं शराब बन्दी के बारे में विस्तार से विचार रखे। श्रावण्य है कि मानस्थान गांव में स्वर्गीय स्वामी देवानन्द जी की जन्म स्थली है। स्वामी जी ने आर्य नगर तथा मताना डीपी (फतेहाबाद) दो युक्तियों को स्थापना एक संचालन किया। क्रान्तिकारी जी ने गांव में शराबियों को लताड़ते हुये मानस्थान गांव को ऐतिहासिक मान बताया। श्री जयसिंह जी योगी ने प्राणायाम, योग-विद्या, प्रासन तथा व्यायाम के महत्त्व पर प्रकाश डाला। श्री जेम्ससिंह जी, अमीचन्द आर्य तथा श्री चतर्सिंह आर्य के क्रान्तिकारी भजन हुये। साथ में दानमोर कण, सुन्दरवादी एवं रानो पधनी का इतिहास भी रखा। इस प्रचार का बहुत ही अण्डा प्रभाव देखने को मिला। धेतों में काय होने के बाद श्री लोणी ने बड़ी सख्या में प्रचार में भाग लिया। श्री योगी जी ने इस प्रचार कार्य में विशेष भूमिका निभाई। मोटर सार्विक पर क्रान्तिकारी जी को साथ लेकर गांव-गांव में जन सम्पर्क करना तथा १०१ रुपये दान स्वयं दिया व अन्य लोगों को प्रेरित किया। कुल मिलाकर शराब बन्दी प्रचार कार्यक्रम इस इलाके में कई वर्षों बाद सफल रहा।

मा० जयप्रकाश आर्य

जालौद खेड़ा निवासी

## श्री अशोक सिंहल का स्पष्टीकरण

नई दिल्ली-२६ मार्च १९६१। कुछ इस प्रकार की गलत धारणाएँ फेसाई जा रही हैं कि २० फरवरी, १९६१ को मेरे नाम से पत्रकारों से बातलाप में मैंने महर्षि व्यानन्द सरस्वती या उनको पुस्तक के सम्बन्ध में कोई अपवाद कहे थे। यह बात बिल्कुल निराधार है। मेरे मन में स्वामी जी के प्रति अत्यन्त थड़ा व आदर का भाव है। स्वामी जी ने हिन्दू समाज में व्याप्त अनेक कुरीतियों को मिटाकर जो समाज का उपकार किया है, उसके लिए हिन्दू समाज उनका हमेशा ऋणी रहेगा।

जारीकर्ता

जसवन्तराय गुप्त  
केन्द्रीय संयुक्त मंत्री

## सिवानका (रोहतक) में लालच देकर हरिजननों को ईसाई बनाने का षडयन्त्र आर्यसमाज द्वारा विफल

रोहतक ३ ग्रंथ — (कार्यालय नवाबखाना द्वारा) तहसील मोहाना के ग्राम निचपट्टी तथा सिवानका में गगतस ईसाई धर्म के कुछ एजेंटों ने हरिजन नर-नारियों को लालच के फन्दे में फसाकर ईसाई धर्म अपनवाने का षडयन्त्र रचा था। इसका समाचार दैनिक नवभारत टाइम्स में प्रकाशित हुआ था।

आर्य प्रतिनिधि समा हरयाणा की घोर से अपने पिछड़े भाई-बहनों को पुनः वैदिक धर्म में लाने के लिए दिनांक २ अप्रैल को ग्राम छतेहरा के प्रधान डा० जयसिंह आर्य सरपंच तथा ग्राम निवानका के श्री रिसालसिंह, श्री रघुवीरसिंह पंच, श्री धर्मसिंह पंच, श्री गोवधन, प० रामकिशन बंरागी आदि के सहयोग से ग्राम की चौपाल को कि हरिजन परिवारों के समीप है, में प्रचार का आयोजन किया गया। प० ईश्वरसिंह गुफान तथा प० जयपालसिंह आर्य ने अपने प्रभावशाली भजनो द्वारा वैदिक धर्म को विशेषता तथा ईसाई मत का जमकर खण्डन किया और श्रांमियों से शराब आदि सामाजिक बुराइयों में मूर रहने की प्रेरणा की। सभा के उत्साही उपदेशक श्री अतर्सिंह आर्य क्रान्तिकारों तथा श्री रवीन्द्र विद्यालकार ने अपने ब्यक्तियों में देश को आजाद कराने में आर्यसमाज के योगदान का उल्लेख करते हुए कहा कि ग्रंथन वाचको से स्वतन्त्रता प्राप्ति की सहाई में ८५% आर्य-समाजी सम्मिलित हुए थे। इसका उल्लेख कांग्रेस के इतिहास में लिखा हुआ है। परन्तु ध्यान ईसाई मिशनरों भारत में ईसाई मत फैलाकर पुनः भारत में अंग्रेजों का राज्य स्थापित करने को योजना बना रहे हैं। उन्होंने अब हरयाणा में जो प्रायों का प्रवेश माना जाता है, की घुमपेठ बारम्बार कर रहे हैं और इस काम के कुछ हरिजनों को लालच में फसाकर ईसाई बनाने का कार्यक्रम बनाया है। इन्हें बहुकारक सोनोपत तथा दिल्ली के गिरजाघरों में से आकर उनका धर्म परिवर्तन करने का यत्न कर रहे हैं। आर्यसमाज राष्ट्र का चौकीदार है। अतः इन देश द्रोही ईसाई प्रजाओं द्वारा राष्ट्र की कमजोर करने का षडयन्त्र सफल नहीं होने दिया जावेगा और अपने पिछड़े हुए भाइयों को अपना प्राचीन वैदिक धर्म में ही रखेंगे। उनके दुःस-सुख में हम भागीदार रहेंगे। इस वेदप्रचार में हरिजन भाइयों ने भाग लिया। ३ अप्रैल को प्रातः आयसमाज के उपदेशक उन परिवारों में गये श्रीर उनसे पृष्टाताछ करने पर उन्होंने बताया कि हमने अपना धर्म नहीं बदला है। हमारे नाम तथा रीति-रिवाज पूर्ववत् हैं। कुछ ईसाई प्रचारक हमारे घरों में ईसाई मत का साहित्य देकर ध्वंस्य गये हैं। उसे पढ़ने से हमारा मन परिवर्तन हुआ है। हम शराब तथा मांस प्रादि का प्रयोग नहीं करते। इन परिवारों को महिमाओं ने जोर देकर बताया कि हम अपनी सन्तान को ईसाई नहीं होने दोगी क्योंकि हमारे पूर्वज हजारों वर्षों से हिन्दू हैं। आयसमाज के कार्यकर्ताओं ने उनसे धार्मिकसमाज का सम्ये, वैदिक उपासना पद्धति तथा ईसाई मत खण्डन की पुस्तके वितरित की। ग्राम के सरपंच श्री कटारसिंह ने श्री त्रिवांस विलागा है कि किसी के दवाव में हम अपने भाइयों को धर्म परिवर्तन नहीं करने देते।

## पाठकों की सेवा में

धार्मिक-साहित्य-प्रचार-दुष्ट ऋषि-कृत ग्रन्थों का प्रकाशन करके सागत-मात्र मूल्य से विक्रय करता रहा है जिससे ऋषिबन्ध के धमर-ग्रन्थ, विशेषकर 'सत्यायुक्तप्रकाश' को जन-जन तक पहुंचाया जा सके। परन्तु कायज का मूल्य, छायाई एवं अज्ञानों इत्यादि प्रतिशय बढ़ने से हैं भी विचय होकर इसका मूल्य बढ़ाना पड़ रहा है? किन्तु यह बढ़ा मूल्य पहली जुलाई १९६१ से लागू होगा। सज्जन, सभा व संस्थायें पहली जुलाई से पूर्व इस अमर ग्रन्थ को मराने के लिये प्रादेश करंगे, उन्हें पुराने मूल्य से ही प्रारत हो सकेगा।

धर्मपाल आर्य

मन्त्री, धा. स. प्र. दुष्ट ५१ लारीबावनी दिल्ली-६

## चुनाव प्रचार के समय शराब पर पाबन्दी लगाने का अनुरोध

समाप्रधान द्वारा मुख्य चुनाव आयुक्त के नाम पत्र

लोकसभा के चुनाव की घोषणा होते ही राजनैतिक गतिविधियां बढ़ गई हैं। राजनैतिक दल अपने प्रत्यासिद्धों का चयन करने में व्यस्त हैं। इस सदर्भ में मैं आपसे अनुरोध करना चाहता हूँ कि चुनाव प्रचार के समय शराब की बिक्री तथा इसके पीने-पिंसाने पर पूर्ण पाबन्दी लगाई जाने क्योंकि चुनाव प्रचार कार्य में शराब के प्रचार तथा प्रसार से अप्रष्टाचार में वृद्धि होती है। शराब आदि पोकर प्रत्याशी अपने-अपने समयों से मुष्कामर्दी करवाते हैं और मतदान केन्द्रों पर लगातार कब्जे प्रादि करवाने की धीगामस्ती की जाती है। साधारण मतदाता इस प्रकार अपने प्रमुख मतदान के अधिकार से वंचित रह जाता है। यह लोकतन्त्र की हत्या है। इसी प्रकार चुनाव प्रचार अभियान में निर्वन प्रत्याशी शराब को मांग पुरो न कर सकते की धरन्धा में अपने लिए मुलकर प्रचार नहीं कर सकता क्योंकि शराबी तत्त्व इस प्रकार के प्रत्यासिद्धों की प्रचार सभाओं में विध्वन बाधाएं डालते हैं।

प्रायः देखने में आया है कि चुनाव के समय शराब की बिक्री अत्यधिक होती है। शराब का सहारा लेनेवाले प्रत्याशी शराब की बोटले अवैध रूप से खरीदकर धरने ममर्कों में वितरित करते हैं। यही कारण है कि इस वार शराब के ठेकों की नीलामी के अवसर पर व्यापारियों ने एक-एक करोड़ से अधिक की राशि की बोली देकर शराब के ठेके छुड़वाये हैं। इस प्रकार जहाँ शराब के कारण झगड़ होंगे वहाँ शराब जैसी सामाजिक बुराई के विस्तार से राष्ट्र को करोड़ों रूपयों की धार्मिक हानि होगी।

आशा है आप मेरे सुझाव को स्वीकार करेंगे और चुनाव सम्पन्न होने तक शराब की बिक्री पर पूर्ण पाबन्दी लगाकर एक कल्याणकारी पण उठावेंगे।

भवदीय  
(प्रो०) हेरसिंह समाप्रधान

## विश्वविद्यालय यज्ञशाला में यज्ञ का

### प्रबन्ध करने की मांग

उपकुलपति के नाम समा मन्त्री का पत्र

आपको महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय में उपकुलपति के महत्त्वपूर्ण पद पर नियुक्त किया है, हमारी सभा इसके लिए आपका हार्दिक स्वागत करती है। आपका एक आर्य परिवार तथा छोड़कर आर्य कालेज सोनीपत से सम्पर्क रहा है। इस प्रकार आप पर महर्षि दयानन्द तथा वैदिक सिद्धान्तों की छाप है। इसी कारण गत सप्ताह रोहतक के आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं ने भेंट करके मांग की थी कि इस विश्वविद्यालय में निम्नलिखित यज्ञशाला में प्रतिदिन यज्ञ कराने की व्यवस्था हेतु एक वैदिक विद्वान् (पुरोहित) की नियुक्ति की जाये। प्रायः इस मांग पर सहानुभूति पूर्वक विचार करने का आश्वासन दिया था। इस विश्वविद्यालय में गत ३-४ वर्षों से योग की शिक्षा देनेवाले प्राध्यापक का पद भी रिक्त है। अतः प्रायः पुनः अनुरोध है कि सभा की इस न्यायोचित तथा समय की आवश्यकता की मांग को स्वीकार करके कृतार्थ करें। इन कार्यों में सभा की ओर से यथासम्भव पूरा सहयोग दिया जावेगा।

भवदीय  
सुनेसिंह समा मन्त्री

## सांघी (रोहतक) में ब्रह्मचर्य शिक्षण शिवर

आर्यसमाज सांघी जिला रोहतक की ओर से दिनांक ६ से १० जून तक ग्राम में ब्रह्मचर्य शिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। जो युवक अपने जीवन में सुधार लाने तथा सुधार कार्यों में भाग लेना चाहते हैं, वे सम्पर्क करें।

बोधप्रकाश आर्य मन्त्री

## आर्यसमाज बालसमन्द (हिसार) का ६३वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिनांक २२-२३-२४ फरवरी १९६१ को आर्यसमाज बालसमन्द का वार्षिकोत्सव विजयवत् सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर बालसमन्द के सूर्यभंग सन्ध्यासी स्वामी जोमानन्द जी, स्वामी जगत् मुनि जी, स्वामी सर्वदानन्द जी, प्रो० श्रीमकुमार आर्य, प्रो० रामविचार, महात्मा आनन्द मुनि, आचार्य बहान सुनीति आर्य, सभा उपदेशक श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी तथा ५० प्रमुखाल प्रभाकर आदि ने आर्य महापुरुषों का इतिहास, देव की आजादी में आर्यसमाज का योगदान, राष्ट्ररक्षा, गोरखा, नारीशिक्षा, समाज में फैला पालख व अन्ध-विश्वास, धर्म क्या है, भ्राष्ट्रा क्या है, परमात्मा का स्वरूप, मनुष्य के कर्त्तव्य, शराब वन्दी त्योहारों का महत्त्व, महर्षि दयानन्द जी के जीवन एवं कार्यों पर प्रकाश डाला। साथ में सरकार में फैला अप्रष्टाचार व शराब बढावा नीति की भीोर निन्द्य की। प्रातःकाल प्रतिदिन यज्ञ पर श्रध्दा का रहस्य, पंच महायज्ञ तथा गायत्री महामन्त्र की व्याख्या की। ४ नवयुवकों ने जनेऊ धारण किया।

दिनांक २३ फरवरी की रात्री को ईश्वर कृपा से वर्षा हुई जिसके फलस्वरूप वेदप्रचार आर्यसमाज मन्दिर के पंढाल में न होकर पंचायत घर में हुआ। दिनांक २४ फरवरी को मध्याह्न की बंटक में गत वर्ष की भांति आर्यसमाज बालसमन्द की ओर से नवयुवकों के प्रेरणाद्योत सभा उपदेशक एवं आर्यसमाज कवारी के प्रधान श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी का अभिनन्दन एवं सम्मान किया गया। अभिनन्दन समारोह की अध्यक्षता श्री रामजीलाल आर्य (बाहाउद्दी) ने की। मंच संचालन श्री महेशसिंह आर्य बंक मनेजर (शोभी) ने किया। महाशय रामजीलाल आर्य पूर्व सरपंच (बालसमन्द) ने एक करण्डी (शास) भेंट किया। नवयुवक श्री सुनीलदत्त आर्य ने वैदिक साहित्य भेंट किया। स्वामी जोमानन्द जी ने भी सैंकड़ों रूपयों की दो पुस्तकें भेंट कीं, श्री सुभेस सिंगला (हिसार) ने स्वास्थ्य हेतु दो किन्नी च्यवनप्रास भेंट किया। आर्यसमाज शोभी ने १०१ रूपया, इन पत्रिकों के लेखक मन्त्री ने २१ रूपये, मा० प्रेमसिंह आर्य ने २१ रु०, श्री दिवानसिंह आर्य ने २१ रूपये साबर भेंट किए।

इसके अतिरिक्त स्वामी जोमानन्द, स्वामी सर्वदानन्द, स्वामी जगत्मुनि, प्रधान श्री दिवानसिंह आर्य, महाशय धर्मपाल भासोठिया, श्री सुनीलदत्त आर्य तथा महेशसिंह आर्य के प्राणिकारी जी के जीवन एवं कार्यों पर पंच-पांच मिनट प्रकाश डाला व मूरि-भूरि प्रशंसा की। उपरोक्त सभी विद्वानों ने आशीर्वाद के साथ-साथ उसे सच्चा कर्मठ आर्यवैरि बसाया। तत्पश्चात् क्रान्तिकारी जी ने आर्यसमाज बालसमन्द के अधिकारियों तथा विद्वानों का आभार व्यक्त किया और विश्वास दिलाया की ब्रह्मचर्य में श्रद्धि श्रद्धेन से अनुग होने के लिए वेदप्रचार एवं शराबवन्दी प्रचार करता रहूंगा।

इस उत्सव पर महाशय रामकुमार आर्य, महाशय धर्मपालसिंह भासोठिया, महाशय भास्कर तथा महाशय कूलसिंह आदि के समाज सुधार के क्रान्तिकारी भजन हुए। उत्सव में गाव के नर-नारियों के प्रतिरिक्त निकट के बुवाओं से भी काफ़ी संख्या में लोगों ने भाग पाईलाल आर्य

मन्त्री आर्यसमाज बालसमन्द

## शोक समाचार

स्वामी वेदानन्द (श्री साहबसिंह जी) का दिनांक १२ फरवरी सन् १९६१ को दुर्घटना में देहावसान हो गया। स्वामी जी ने दयानन्द शारदावी समारोह अजेर में स्वामी सर्वदानन्द जी से सन्ध्यास लिया था और वैदिक साधन आश्रम प्रोत्सवपुरा (सोनीपत) में पाठशाला का संचालन व आर्य मजनीपदेशक का कार्य कर रहे थे।

मन्त्री—आर्यसमाज कानौदा

## धर्म का स्रोत वेद

(५० धर्मवेद "मनीषो" वेदनायें, गुरुकुल कालवा)

मनुस्मृति कोई असम्बद्ध पुस्तक नहीं। यह वैदिक साहित्य का एक ग्रन्थ है। वैदिक धर्म का प्रतिपादन ही इसका कार्य है। वेद ही इसका मूलाधार है। यह बात कल्पित नहीं है, किन्तु मनुस्मृति से ही सिद्ध है। नीचे के श्लोक इसके साक्षी हैं—

वेदोऽधिको धर्मसूत्रं स्मृतिषोले च तद्विद्याम् ।  
आचारार्थं च साधुनामात्मनस्सुधिन्द्रे च ॥

वैदिक मनुस्मृति २/५

सम्पूर्ण वेद, मनुस्मृति तथा ऋषिप्रणीत शास्त्र, सत्यपुरुषों का आचार और जिस जिस कर्म में अपनी आत्मा प्रसन्न रखे अर्थात् भय, लज्जा, शंका जिनमें न हो उन कर्मों का सेवन करना उचित है। देखो, जब कोई विन्यासाभ्यास, घोरी आदि की इच्छा करता है तभी उसके आत्मा में भय, शंका, लज्जा अवश्य उत्पन्न होती है। इसलिये न कर्म करने योग्य नहीं ॥

सर्वेषु समवेष्टेऽने निखिलं ज्ञानचक्षुषा ।  
श्रुतिप्रामाण्यतो विद्वान्स्वधर्मं निविशेत् वै ॥  
श्रुतिस्मृत्युक्तिं धर्ममनुतिष्ठन् हि मानवः ॥  
इह कौतुभशान्तीति प्रेयं चातुल्यं सुखम् ॥  
श्रुतिस्तु वैदो विज्ञेयो धर्मशास्त्रं तु न स्मृतिः ।  
तैः संशोषेणवमीमांसे ताभ्यां धर्मो हि निर्बन्धो ॥

मनु० २/६-८ ॥

विद्वान् मनुष्य सम्पूर्ण शास्त्र, वेद, सत्यपुरुषों का आचार अपने आत्मा के अधिक अन्धे प्रकार विचार कर ज्ञाननेत्र करके श्रुति-प्रमाण से स्थापनायुक्त धर्म में प्रवेश करे। क्योंकि जो मनुष्य वेदोपेत धर्म और वेद से अधिक स्मृत्युक्त धर्म का अनुष्ठान करता है वह इस लोक में कौतुभ और मरकर सर्वोत्तम सुख को प्राप्ति करता है। श्रुति वेद को जीव स्मृति को धर्मशास्त्र कहते हैं। ये सब कर्तव्य प्रकृतव्य विषयों में निविदा है क्योंकि इनके द्वारा ही धर्म का मखी प्रकार पूर्ण रूप से प्रकाशन हुआ है।

योऽवमन्येत ते मूले हेतुशास्त्राभ्यामुद्भिजः ।  
स साधुभिर्बहिष्कार्यां नास्तिको वेदनिन्दकः ।  
वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्थः च प्रियमात्मनः ।  
एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षादधर्मस्य लक्षणम् ॥  
धर्मकामेधसक्तानां धर्मज्ञानं विधीयते ॥

मनु० १/६-११ ॥

जो कोई मनुष्य वेद और वेदानुक्त ज्ञानग्रन्थों का अपमान करे उसको श्रेष्ठ लोग जाति बाह्य कर दें क्योंकि जो वेद की निन्दा करता है वही नास्तिक कहलाता है। वेद, स्मृति-वेदानुक्त ज्ञान मनुस्मृत्यादि शास्त्र, सत्यपुरुषों का आचार और अपने आत्मा में प्रिय बस्य जिसको आत्मा चाहता है जैसा कि सत्यभाव्य, ये चार धर्म के लक्षण कहे गये हैं अर्थात् इन्हीं से धर्मार्थ का निश्चय होता है। परन्तु जो इन्हीं के लोभ और काम प्रधान विषय सेवा में फँस हुआ नहीं होता उसी को धर्म का ज्ञान होता है। जो धर्म को जानने की इच्छा करे उनके लिये वेद ही परम प्रमाणा है ॥

वेदमेव सदाभ्यसेत्पस्तस्यप्य द्विजोत्तमः ।  
वेदोभ्यासो हि विशिष्य तः परमिहोच्यते ॥  
योजनोच्य द्विजो वेदमयस्य कुस्ते अमस्य ।  
स जीवनेऽथ शुद्धत्वमाशु मच्छति साध्यवः ॥

मनु०-२-११७-११८

द्विजोत्तम अर्थात् ब्राह्मणादिकों में उत्तम सज्जन पुरुष सर्वकाल-तपस्वर्वा करता हुआ वेद का ही अभ्यास करे। जिस कारण ब्राह्मण वा बुद्धिमान् जन को वेदाभ्यास करना इस संसार में परम तप कहा है इससे ब्रह्मचर्यात्म सम्पन्न होकर अवश्य वेद विद्याभ्यास करे। जो ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य वेद को न पढ़कर अन्य शास्त्र में श्रम करता है वह जीवित ही अपने बंध के सहित शुद्धन को प्राप्ति हो पाता है। ब्रह्मचर्यात्म सम्पन्न होकर वेद-विद्या को अवश्य पठे ॥

षट्पिण्डाष्टिकं चर्म गुरो ऋषेदिकं वतम् ।

तदधिकं पारिकं वा यथाभ्युक्तमेव च ॥ मनु० ३/१॥

आठवें वर्ष से आगे छतौसेठे वर्ष पर्यन्त अर्थात् एक-एक वेद के सामोपान पहले में बारह-बारह वर्ष मिलके छतौसे और आठ मिलके चत्वारोस अथवा १८ वर्षों का ब्रह्मचर्य और आठ वर्ष के मिल के छत्तीस वा नौ वर्ष तथा जब तक विद्या पूरी ग्रहण न कर लेवे तब तक ब्रह्मचर्य रहे ॥

ऋषि दयानन्द जी ने आर्यसमाज के नियम में बताया है "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पठना-पढ़ना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है ॥

## अनमोल वचन

नेलक—मद्देश धार्य गाम पो० पहेड़ा सुर्दे तह० वल्लभगड़,  
जिला—फरीदाबाद (हरयाणा)

1. हर कान हर परिस्परि में नीतर मौजूद आत्मा के संकेत पर चलो जो संदेव समागं का नियंय देतो है।
2. प्रत्येक मनुष्य का अन्तस्थ केवल सत्य को आजावे देता है, स्वार्थी मन को रोक जो इसका अनुभव करता है वह सद्-चित् ज्ञानत्व को पाता है।
3. सुख आये या दुःख महापुरुषों के जीवन को सर्वव अपनी दृष्टि के सामने रखना चाहिए।
4. जो प्रकृति के नियमों को प्रकहेलना करके कृत्रिम सुखों का जाधि होता है प्रकृति उसे नष्ट कर देतो है।
5. मानव योगसाधना से चमकता है तथा विषय विकारों से मखीन होकर नष्ट हो जाता है।
6. सोहे के साथ ककरोट चुना कई मज्जिलों तक स्थिर रहता है उसी प्रकार इद निश्चय आत्मनिर्भर लोहपुरुष सम्पूर्ण राष्ट्र को स्थिर किये होते हैं।
7. उद्देश्य को प्राप्ति के लिए सतन, श्रम तथा चरित्रवत्ता होना अत्यन्त आवश्यक है।
8. छोटा नुषस पूराता को कुण्ठित करता है।
9. परोपकार करने वाला कष्टों में रहते हुये भी जीवनभर सुख शान्ति का अनुभव करता है।
10. साहस पर चके रहना उद्देश्य के पथ पर चलना है और साहस छोड़ देना पथहीन होना है।
11. कामवासना में कसे मनुष्य को सम्भव कार्य भी असम्भव लगते हैं किन्तु सच्चे ब्रह्मचारी पुरी कर उसमें चमकते हैं।
12. आत्मा से मिली शुभ कार्य को प्रेरणा को तुरन्त कोनिये नहीं तो स्वार्थी मन विचारों को त्रुणित कर देता है।
13. वहाँ से हाथ मिलाणा उचित नहीं, मुककर प्रणाम करना चाहिए।
14. सत्य से विमुख होकर जो असत्य मार्ग से बचना चाहता है सत्य उसका सर्वनाश कर देता है।

## दूसरा पारिवारिक महायज्ञ

धार्यवीर दल नरवाना की ओर से दूसरा पारिवारिक महायज्ञ श्री रणवीर आर्य के घर पर रविवार को साय ४ बजे बड़ी धूम-धाम से सम्पन्न हुआ। इस महायज्ञ में प्रधान श्री राधाकृष्ण आर्य के साथ काफी सैनिक आर्यवीरदल के भी उपस्थित थे। सजमान श्री रणवीर ने धार्य वीरदल को दान स्वरूप १५/- रुपये दिये।

मन्त्री आर्य वीर दल नरवाना

## आर्यसमाज शान्ति नगर सोनीपत द्वारा

### श्रद्धाञ्जलि

आर्यसमाज शान्ति नगर सोनीपत के सदस्य एवम् आर्य बीर दल सोनीपत मण्डल के कर्मठ कार्यकर्ता श्री मा० गोपीबन्ध जी बुध की बड़ी बहिन श्रीमती यशोदा देवी चर्मपत्नी श्री देवराज इडेडा मन्नीर निवासी का हृदय गति अवरोध के कारण ११-०३-१९६१ को आकस्मिक निधन हो गया। उनकी आयु लगभग ४५ वर्ष थी।

वह एक नैक देवी थी जिसमें ईश्वर भक्ति, दयालुता, धार्मिकता, कर्तव्यपरायणता एवम् प्राणी मात्र की सेवा की भावना कूट-कूट कर बरी हुई थी।

आर्यसमाज शान्तिनगर। आर्य बीर दल सोनीपत मण्डल के सदस्यों द्वारा उस महात्मा देवी को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए परम्पिता परमात्मा से उनकी दिवङ्गत आत्मा को शान्ति एवम् सद्गति प्रदान करने तथा उनके परिवार को इस आकस्मिक कष्ट, दुःख एवम् विषयों को पशियों में शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की गई।

चिनित

हरिनन्द स्नेहो (मण्डलपति) आर्य बीर दल एवम्  
महामन्त्री आर्यसमाज शान्ति नगर सोनीपत

## यज्ञशाला के लिए दान

श्रीमती सुरला देवी आर्या रोहतक की भेटणा से सिद्धान्ती भवन रोहतक में यज्ञशाला निर्माण हेतु निम्नवानी महानुभावों ने दान दिया है—

श्री सुभाषकुमार आर्य सीकर (राजस्थान) १०१

श्री धामराज सुपुत्र श्री कर्नेलसिंह दिल्ली १०१

सभा की ओर से इनका धन्यवाद।

बाधा है अन्य दानों भी इस पवित्र कार्य में दान देकर यद्य के भागी बनें।

शामान्द सिंहल  
स भा कोषाध्यक्ष

## आर्यसमाज मन्धार का वार्षिकोत्सव

१-२-३ मार्च को बड़ी धूम धाम के साथ सम्पन्न हुआ जिसमें लिम्न विद्वानों ने भाग लिया श्री पं० सत्यप्रिय हितार श्री स्वामी गुरुदत्त मुनि श्री महाशय हृत्वाल बालप्रस्थो श्री नरेखपाल उ० प्र० श्री दयल सिंह श्री पं० विद्या गुरुण शेरसिंह आर्य श्री मार्गसिंह आर्य के व्याख्यान तथा प्रभाषणात्मी भजन हुये। इस अवसर पर सभा की ३०१ व० वेद प्रचार वद्याल व सर्वहितकारी के लिये दान लिया।

मन्त्री

# गुरुकुल

कांगड़ी फार्मसी की  
आयुर्वेदिक औषधियां सेवन कर स्वास्थ्य लाभ करें

### गुरुकुल

#### च्यवनप्राथ

पूरे परिवार के लिए शक्तिवर्धक  
एवं स्मृतिवर्धक रसायन।  
बाली, उम्र व शारीरिक एवं  
केन्द्रीय की दुर्बलता में  
उत्पत्ती की आयुर्वेदिक  
औषधीय टॉनिक



### गुरुकुल

#### चयविल्ल

दोनों व मातृ के विकास दोनों  
मेकिरोशन पार्श्विक  
के लिए उपयोगी  
आयुर्वेदिक औषधि



### गुरुकुल

#### चाय

दुःख व इन्फ्लूएन्जा, बदन  
ज्वर में अती शक्ति  
से अने लाभकारी  
आयुर्वेदिक औषधि



गुरुकुलकांगड़ी फार्मसी हरिद्वार (ऊ० प्र०)

शाखा कार्यालय: ६३, गली राजा केदारनाथ  
चावड़ी बाजार, दिल्ली-११०००६

## गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी

### हरिद्वार

की औषधियां सेवन करें।

शाखा कार्यालय  
६३ गली राजा केदारनाथ,  
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

स्थानीय विक्रेताओं एवं सुपर बाजार  
से खरीदें

फोन नं० २६१८७१

‘अमर’ - २०/४/६३

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए गुरुकुल बीर प्रकाशक देवदत्त शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के लिए सर्वहितकारी मुद्राशालय रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदीपसिंह सिद्धान्ती भवन, बवानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।



प्रधान सम्पादक—सूर्यसिंह सामाजमी

सम्पादक—वेदप्रत साल्मी

सहसम्पादक—प्रकाशनीर विद्यानकार एम० ए०

वर्ष १८

बक २०

१४ मार्च, १९६१

वार्षिक मूल्य ३०)

(माजीवन मूल्य ३००)

विदेश में ८ पौंड

एक प्रति ७४ पैसे

## मोक्ष—सत्यार्थप्रकाश समुल्लास ६ का एक पाठ

डा० सुरेशचन्द्र वेदालंकार, एम० ए० आर्यसमाज, गोरखपुर

मुक्ति, अपवर्ण, पुत्रधर्म और मोक्ष शब्द एक ही पर्य को बतलाने वाले हैं। 'मुच्छते अनाया इति मुक्तिः' अर्थात् जिस अवस्था में दुःख दूर हो उस अवस्था का नाम मोक्ष है। स्वामी जी महाराज ने मुक्ति की परिभाषा करते हुए लिखा है कि 'मुच्छन्ति पूष्यन्वन्ति जना यस्मां सा मुक्तिः'। जिससे छूट जाना हो उसका नाम मुक्ति है। भव प्रथन उत्पन्न होता है किससे छूट जाना मुक्ति है। स्वामी जी महाराज ने उत्तर दिया है कि जिससे छूटने की इच्छा मोक्ष है। उत्तर देते हुए कहा गया है कि मनुष्य दुःखों से छूटने की इच्छा सब लोग करते हैं। भोजन करना, सोना, काम करना, दौटना, घूमना आदि जितनी भी क्रियायें मनुष्य या अन्य जैतन प्राणी करते हैं उन सब का मुख्य उद्देश्य दुःखों से छूटना ही है।

मनुष्य को दुःख क्यों होता है? मनुष्य के दुःख का कारण अविद्या या अज्ञान है। अविद्या का अर्थ है 'यया तत्त्व स्वरूपं न जानाति ब्रह्मादभ्यस्मिन्नयमिनिचिन्तितं साविद्या।' अर्थात् जिससे तत्त्व स्वरूप न जान पड़े, अर्थ में अर्थ की बुद्धि होने बूझ अविद्या कहाती है और इस अविद्या के द्वारा ही हम संसार में दुःख प्राप्त करते हैं। इस अविद्या के कारण मनुष्य में अविद्यामान या भ्रममानना की स्थिति आती है, यह दोनों अवस्थायें दुःख का कारण होती हैं। यह अविद्याम ही वह बीजार है जिससे आत्मा को सोमिष्ठ और सौर्वर्षद बना रखा है। यही वह भ्रांति है जिससे परिच्छिन्न आत्मा को अनन्त भ्रांति के बंधन से बंधित कर रखा है, यही वह उन्नमन है जिसने हमारे विद्युद स्वरूप को हम से ओझल किया हुआ है और इसी के कारण हम अनित्य में नित्य की, अशुचि में शुचि की, अनात्मा में आत्मा की कल्पना करते हैं। यह कल्पनायें वास्तविक न होने से हमें दुःख देती हैं और इनसे छूटकारा पाने पर हम सुख या आनन्द की अवस्था में आ जाते हैं। किन्तु जो व्यक्ति अविद्या में है वह बड़ है और जो व्यक्ति अपनी इच्छा से काम नहीं कर सकता, दूसरों की सोचा में बचकर चलना पड़ता है वह दुःख में है यह एक निश्चय सत्य है। कहा है 'सर्वपरवशश्च दुःखस्य, सर्वमात्मबन्धश्च सुखश्च' अर्थात् अपने से होने वाले सब कामें सुख और दुःख के बंध में जो काम किए जाते हैं वह दुःख जनक होते हैं।

अब प्रश्न होता है कि जब मनुष्य अविद्या को दूर कर विद्या को प्राप्त करता है और विद्या या ज्ञान के द्वारा मुक्ति को प्राप्त कर लेता है तब उसका जीवात्मा कहा रहता है? इसका उत्तर स्वामी जी महाराज ने सत्यार्थप्रकाश में दिया है कि वह ब्रह्म में रहता है। ब्रह्म प्राप्ति के लिए हमें अविद्या से छूटकारा पाना चाहिए। अविद्या, अधर्म, कुसंस्कार, बुद्धे अज्ञानों से अलग रहने और सत्यसाधन, ज्ञान विद्या अक्षयत रहित न्याय धर्म की बुद्धि करने, ईश्वर की उपासना, प्रार्थना, स्तुति, योगाभ्यास, विद्याभ्यास, धर्म से पुत्रधर्म कर ज्ञान की उन्नति करने, पक्षपातरहित धर्माचरण करने से मनुष्य बन्धन से मुक्त होकर मोक्ष पा सकता है और वह ब्रह्म को प्राप्त कर सकता है।

मुक्ति की अवस्था में जीव का ब्रह्म से मिलन होता है। मिलन का मतलब सब समझना भूल होना। मिलन की अवस्था में जीव ब्रह्म में विद्यमान रहता है और सर्वत्र व्यापक परमेस्वर में मुक्तजीव अर्थात् गति अर्थात् विना किसी स्कावट के सर्वत्र विचरता है वह उस समय भ्रान्दन्त स्वरूप ब्रह्म में विद्यमान रहने के कारण आत्मन्यय, विज्ञानस्वरूप होता है। यही अब यह प्रश्न किया जा सकता है कि मनुष्य स्थूल शरीर के द्वारा हो जानन्द का उपभोग करता है और मुक्ति में स्थूल शरीर नहीं होता तो यह जीव किस प्रकार आनन्द की अनुभूति करता है? सात्वत में मुक्ति की अवस्था में स्थूल शरीर तो नहीं परन्तु अस्कार शरीर बना रहता है। शरीर तीन प्रकार के हैं १- स्थूल शरीर २- सूक्ष्म शरीर और ३- कारण शरीर। इनमें से सूक्ष्म शरीर पांच प्राण, पांच आनेन्द्रिय, पांच सूक्ष्म शरीर तथा बुद्धि इन सत्रह तत्वों का समुदाय है। यही सूक्ष्म शरीर है। यह सूक्ष्म शरीर कर्म मरणादि में भी जीव के साथ रहता है। इसके दो भेद हैं :- (१) भौतिक अर्थात् जो सूक्ष्म शरीरों के ब्रह्म से बना है। (२) सूक्ष्म स्वाभाविक जो जीव स्वाभाविक मनुष्य रूप है। यह दूसरा भौतिक शरीर मुक्ति में भी रहता है। इसी से जीव मुक्ति में भी सुख भोगता है।

स्थूल शरीर उसको कहते हैं जो यह चीखता है।

तीसरा कारण शरीर है जिसमें सुषुप्ति और गाढनिद्रा होती है, वह प्रकृतिरूप होने से सर्वत्र विद्यु जीव सब जीवों के लिए एक है।

चौथा शरीर शरीर उसको कहते हैं जिससे समाधि द्वारा जीव परमात्मा के प्राणन्दस्वरूप में मान होते हैं। इसी समाधि संस्कार जय बुद्ध शरीर का पराक्रम मुक्ति में भी यथावत् सहायक रहता है। इन सब कीव अवस्थाओं से जीव पृथक् है, क्यों जब सुषुप्त होती है तब सब कोई कहते हैं कि जीव निकल गया यही जीव सब का प्रेरक, सब का धर्ता, साक्षी, कर्ता, भोक्ता कहाता है। जो कोई जीव को कर्ता, भोक्ता नहीं माने तो प्राणिके की है।

सत्यासत्य का ज्ञान करने के लिए बुद्धि, स्मरण करने के लिए चित्त और प्रह्लाद के अर्थ अहंकार रूप अपनी स्वशक्ति से जीवात्मा मुक्ति में ही जाता है। और संकल्पमान शरीर होता है जैसे शरीर के बाह्य रहकर इन्द्रियों के गोचर के द्वारा जीव स्वकार्य करता है जैसे मुक्ति के सब आनन्द भोग लेता। जीव में वन, पराक्रम, आकर्षण प्रेरणा, भक्ति, भाषण, विवेचन क्रिया, उत्साह, स्मरण, निश्चय, इच्छा, प्रेम, द्वेष, सयोग, वियोग, संयोग, विभाजक, अवन, स्पर्शन, दर्शन, स्वादयन और गन्ध ग्रहण तथा ज्ञान इन २४ प्रकार के सामर्थ्य से जीव मुक्त है। इससे वह मुक्ति में भी आनन्द की प्राप्ति करता है। यदि मुक्ति में जीव विद्यमान न रहता तो तीन उस सुख को भोगता यही मोक्ष है।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

## वैदिक पंचशील—बिना शान्ति नहीं

रचयिता— लालचन्द 'विद्यावाचस्पति' श्रीमंगल अयकोर आ० प्राथम बेड़की (महेन्द्रगढ़)

मन्त्र

ईशा वास्यमिद सर्वं यदिकञ्चब्रजगत्या जगत् ।

तेन त्वयन्तेन भुञ्जीषा मा युषः कस्य त्विदमस्य ॥

(यजुर्वेद अ० ४०, मन्त्र १)

भावार्थ—हे मनुष्यों ! इस जगत् में जो भी चराचर वस्तुएं हैं, वे सभी ईश्वर से हो आच्छादित हैं क्योंकि ईश्वर सर्वव्यापक है। सभी पर ईश्वर की छत्रछाया विद्यमान है। अतः उसी ईश्वर के दिए हुए पदार्थों का, वस्तुओं का, साधनों का साधक बनकर साधना करते हुए भोग करो, प्रयोग करो, सदुपयोग करो तभी साध्य मिलेगा। किसी के भी धन का लालच मत करो, लोभ मत करो क्योंकि कितना है यह धन ? किसी का नहीं, केवल प्रभु का ही सब कुछ है।

प्रस्तुत मन्त्र यजुर्वेद के चासीसेवें अध्याय अथवा ईशोपनिषद् के प्रारम्भ में आता है। यजुर्वेद में कर्मकांड वर्णित है। कर्म के भी कई रूप हैं जैसे कर्म, विकर्म, कुकर्म, अकर्म, सकाम कर्म, निष्काम कर्म, इत्यादि। गीता में भी कहा गया है 'योगः कर्मणु कौशलम्'। योग क्या है ?

“योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः” (योग० सूत्र २)

अर्थात् चित्त की वृत्तियों के निरोध का नाम ही योग है। योग का ही दूसरा नाम अध्यात्मविद्या है। उपनिषद् में अध्यात्मविद्या का अर्थ भ्रष्टा है। “उपनिषद्” अर्थात् उप=वास, नि.—निश्चय से सद्=वेदना। उपनिषदों का रहस्यात्मक अमूल्य ज्ञान का एक बार अवलोक्य या मनन करने से समझ में नहीं आता है। अतः प्राचीन समय से ही अध्यात्मविद्या के जिनानु, शांतिमय कल्याणपूर्ण ज्ञान के पिपासु श्राद्धसु सज्जन युक्त के पास निश्चित रूप से बैठकर इनका रहस्य समझते थे। इसी कारण इनका नाम उप+नि.स.र (उपनिषद्) प्रसिद्ध हो गया। उपनिषदों में पराविद्या है। इनका रस ऐसी रसायन है जिसके सेवन से मनुष्य का जीवनप्रवाह ही बदल जाता है। ईशोपनिषद् यजुर्वेद का ४०वाँ अध्याय है। यह साक्षात् वेद का ही भाग है। इसके प्रथम भाग में पांच कर्तव्य बताए गए हैं जिनका पालन करने से मनुष्य ब्रह्मविद्या का अधिकारी बन सकता है अथवा वह मानव मानवता को छोड़ दानव बनता है। इन्हीं पांचों कर्तव्यों को यहाँ वैदिक पंचशील का नाम दिया गया है। ये इस प्रकार हैं—

१. ईश्वर सर्वव्यापक है।

ईश्वर सर्वत्र विद्यमान है। कण-कण में उसकी शक्ति छिपी हुई है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने भी सत्याचं प्रकाश के अन्तर्गत 'स्वमन्तव्यामन्तव्याप्रकाशः' में तथा आर्यसमाज के दूसरे नियम में भी ईश्वर की सर्वव्यापक माना है। अतः ईश्वर की सर्वव्यापकता जानकर सदैव हमें ज्ञानपूर्वक भुग, शुद्ध और पवित्र कर्म करने चाहियें।

२. सब भोग्य वस्तुएं भी ईश्वर की हैं।

इस सृष्टि का कर्ता, सर्वात् ईश्वर ही है। सब भोग करने योग्य वस्तुओं में ईश्वर की ही हैं क्योंकि मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र होते हुए भी फल के लिए ईश्वर पर आश्रित है।

३. किसी के धन पर कुदृष्टि न करो।

मनुष्य का तीव्रता कर्तव्य है कि वह किसी के धन पर कुदृष्टि न करे क्योंकि अन्याय से प्राप्त धन से कभी भी शांति नहीं मिलती है। क्योंकि बिना धन के सुख को प्राप्ति भी नहीं होती है।

४. फल की प्राप्ति के लिए कर्तव्य बुद्धि से कर्म करो

अब चौथा कर्तव्य यह है कि मनुष्य कर्म करे फल की आकांक्षा छोड़कर। गीता में भी कहा है—

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।

(गीता अ० २, श्लोक ४०)

और भी—ब्रह्मध्यायाय कर्मणि सग त्यक्त्वा करोति सः ।

लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिन्द्रमण्डलम् ।

(गीता अ० ४ श्लोक १०)

अर्थात् फल की आकांक्षा छोड़कर कर्तव्य बुद्धि से कर्म करने का ज्ञान प्राप्त भक्त अपने भगवान् से कह उठता है—

जो कुछ किया तर्न किन्हीं में कुछ किन्हीं गहीं।

जहाँ भी जो कुछ मैंने किन्हीं तो तुम ही थे मुझ माहीं ॥

५. आत्मा का हनन न करो।

आत्मा सर्वत्र सत्य, धर्मयुक्त पथ पर चलने की प्रेरणा देता है किन्तु दुष्ट मनुष्य आत्मा को प्रेरणा को दबाकर बुरे कर्म कर लेता है। इसी को आत्मा का हनन कहते हैं। उपयुक्त वर्णित वैदिक पंचशील का पालन करते हुए मनुष्य को चारों पक्षों धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष प्राप्त कर जीवन सफल बनाना चाहिए। किन्तु यह सब ज्ञान, कर्म, उपासना बिना असम्भव है। प्रस्तुत गीता में भी यही बताया गया है कि बिना ज्ञान मानव मानवता को छोड़ दानव बन जाता है।

माना

बिना ज्ञान इप्साम नृणां, प्रायः समन्तां धरती पर मानव नहीं देखो दानव हैं, ऐसे नर-नार को धरती पर ॥

येधाम् न विद्या न तपो न दानम् ऋषि चाणक्य ने बतलाया है।

ऋषि सन्तो का कहना यही और लेख वेद में पाया है।

सुम कर्मो से मानव तन पाया है,

करें बेटें विचार कुछ धरती पर ॥१॥

प्राहार निद्रा विषय भोग तो प्रत्येक शायो करते हैं।

मननशोल से मनुष्य बने जो ध्यान देव का धरते हैं।

भगवान् के स्मरण करते हैं,

हो आनन्द प्रपार इस धरती पर ॥२॥

करें परमार्थ और पुण्यार्थ वह कर्मवीर कहलाते हैं।

कर्मवीर कर्मों के बन्ध से नाम अजय वे पाते हैं।

मृते गीत भाग्य के गाते हैं।

बालसी लहवार पड़े धरती पर ॥

मानव करते ध्यान, ज्ञान बिना कर्म नाम नहीं पायेगा।

अजन, उपदेश और संतों से जो पैंने लेकड़ धायेगा।

भाड़े का पशु कहलायेगा,

यह 'खालचन्द' का प्रचार धरती पर ॥३॥

### “जीवन की अमूल्य फुलवाड़ी—वीर्य”

मूक बनकर बहुमूल्य विषयों भाज विगाड़ी।

बहा रहे दिन रात व्यर्थ में जीवन की फुलवाड़ी ॥

मन लपी हाथी को ज्ञान का बहुल नहीं लगाते।

ज्ञान और विज्ञान की बातें विलुक्त दूर अगते।

कामवासना की लपटों में रकी देह की गाड़ी।

बहा रहे दिन रात व्यर्थ में जीवन की फुलवाड़ी ॥

महामुष्यों ने समय-समय पर आकर हम सज्जाने।

धारण किया वीर्य धर्म अद्भुत कर्म दिखाये।

इतिहास खोलकर आज देख लो एक से एक सिखाड़ी।

बहा रहे दिन रात व्यर्थ में जीवन की फुलवाड़ी ॥

भड़के जिससे कामवासना, गन्धे गाने गाते।

सहस्रला से सड़का सड़की पतन मार्ग पर प्राते।

प्रथमने फेंशन की सुलकर दौड़ रही है गाड़ी।

बहा रहे दिन रात व्यर्थ में जीवन की फुलवाड़ी ॥

शक्तियों का यही खजाना अपनी देह रमायो।

शरीर आत्मा प्रपनी बुद्धि उच्च सिखर पड़वायो।

‘महेश’ देस में कामराज ने कैसी हवा विगाड़ी।

बहा रहे दिन रात व्यर्थ में जीवन की फुलवाड़ी ॥

—महेश धर्म, ग्राम—पण्डेश सुन्द तह० बल्लभचन्द्र

जिना—फरीदाबाद (हरयाणा)

**एक लड़की को शिक्षित करने से दो परिवारों का भला होता है : हुकम**

कुल्लेन २६ मार्च (कमलेस मदनगर) वह दिवस हरियाणा के उपमुख्यमंत्री श्री हुकमसिंह ने स्वामीय दयानन्द महिला महाविद्यालय के अग्रशिक्षक लक्ष्मण शीर पुस्तकालय भवन का शिलान्यास किया जिसको इस साल रुपये की लागत से बनाया जाएगा।

इस अवसर पर उपस्थित छात्राओं को सम्बोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा है कि हरियाणा सरकार शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कृतसंकल्प है, ताकि छात्र-छात्राएँ शिक्षा ग्रहण करके प्रतिस्पर्धा के इस आधुनिक युग में नई चुनौतियों का सामना कर सकें, लड़कियों को शिक्षा देने की आवश्यकता पर बल देते हुए उन्होंने कहा कि एक लड़की को शिक्षित करने से दो परिवारों का कल्याण होता है इसलिए लड़कियों की शिक्षा पर अधिक ध्यान दिया जाना चाहिए। इस दिशा में आर्य समाज द्वारा शिक्षा के प्रचार और प्रसार में किये गये प्रयत्नों की श्री हुकम सिंह ने प्रशंसा की।

इस अवसर पर श्री हुकम सिंह ने इस महाविद्यालय के लिए एक लाख रुपये का अनुदान देने की घोषणा की।

इसके पश्चात् श्री हुकम सिंह ने गुरुकुल कुल्लेन के ज्योतिष द्वारा का उद्घाटन किया। इस मौके पर सम्बोधित करते हुए श्री हुकम सिंह ने कहा कि मुझे बड़ी खुशी है कि यह गुरुकुल अपनी प्राचीन परम्पराओं को सजोकर रहे हुए है। उन्होंने कहा कि हमारे लिए यह बड़े ही गौरव की बात है कि इस विद्या मन्दिर में दूसरे प्रांतों से भी बच्चे शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते हैं। श्री हुकमसिंह ने विश्वास बिसाया कि गुरुकुल में विज्ञान क्लब पुस्तकालय आदि बनाने के मामले में धन की कमी नहीं घाने दो जायेगी।

उपमुख्यमंत्री ने अपने निजी रूप से गुरुकुल के लिए ५१ हजार रुपये का अनुदान देने की भी घोषणा की और गुरुकुल के प्रयोग में एक बट बस का पीषा सगया। इस अवसर पर सभी बलबलोर सिंह सैनी जयसिंह द्वारा हरियाणा कृषि विपणन बोर्ड के चेयरमैन श्री अशोक कुमार अरोड़ा तथा मखन सिंह विद्यायक भी उपस्थित थे।

**१३० परिवारों के ६०० से अधिक ईसाई**

**बैंकिंग हिन्दू धर्म में दीक्षित**

मध्यप्रदेश में श्री स्वामी धर्मानन्द जी की देखरेख में धर्म रक्षा अधिवान निरन्तर प्रगति पर है, इस शृंखला में फुलवणी जिले के टीकावाले ग्राम में व्याक चेरमैन श्री अक्षिभूषण भाई एंव उलका भाई प्रतिनिधि समा के प्रवक्ता श्री नारायण शास्त्री की प्रेरणा पर १३० परिवारों के ६०० से अधिक ईसाइयों ने २५ फरवरी १९६१ को अल्पत श्रद्धा एवं उत्साह के साथ वैदिक धर्म में अवेश किया। यज्ञोपवीत लेने एव प्राङ्गति देने के लिए लोग धार्यत उल्लुकपूर्वक प्रतीक्षा कर रहे थे, वातावरण अल्पत श्रद्धास्पदा था। नगर के अनेक विधित एवं मुख्य सज्जन भी इस दृश्य को देखकर अल्पत प्रभावित हुए।

सभी ने इस कार्य को देखकर अल्पत महत्त्वपूर्ण बताया एव पूर्ण सहयोग दिया। कार्यक्रम शुरू होने से पहले एक कार्यक्रम प्रतिनिधि समा के प्रधान श्री स्वामी धर्मानन्द जी उक्त सभी की विधिसिद्धन शास्त्री का अर्थ स्वागत किया एव विचार सौभा आना निकाली गईं। ब्रह्मि संस्कार श्री विधिसिद्धन शास्त्री ने करवाया। सारा कार्यक्रम श्री स्वामी धर्मानन्द जी की प्रेरणा एवं देखरेख में सम्पन्न हुआ।

**राजा कौन**

तं राजेश्वर ये च देवा रक्षा नृणांस्तुव त्वमस्मात् ।

तं स्वयंतिर्मयवा नस्तत्रस्वर्चं सत्यो बवानः सहोदाः ॥

परायं-हे (इन्द्र) परमेश्वरबन्धुक (त्वम्) आप (सत्यतः) देव वा सज्जन को पालनेवाले (मयवा) अर्थात्त बनवान् (नः) हम लोगों को (तस्वम्) दुःखरूपी समुद्र से पार उतारनेवाले हैं । 'स्वयं' आप (सत्यः) सत्य में उत्तम (वसानः) बन-आदि करने और (सहोदाः) बल के देनेवाले हैं तब (त्वम्) मेरा (राजा) स्वय और विषय से प्रकाशमान राजा है इससे हे (अबु) मेय के समान ! (त्वम्) आप (भस्मान्) हम (नून) मनुष्यों को (गाहि) पालो (ये, च) और जो (देवाः) श्रेष्ठ गुणोंवाले धर्मात्मा विद्वान् हैं उनकी (रक्ष) रक्षा करें।

भाषार्थ-—जो राजा होना चाहे वह शासक उत्तुष्य विद्वान् मन्त्री-वनों को अच्छे प्रकार रख के उनसे प्रयोजनों की पालना करावे । जो ही सत्याचारी बन्वान् सज्जनों का संय करने वासा होता

**सामाजिक बुराइयों के खिलाफ आंदोलन होगा**

धोनीपत, २५ मार्च (व्याग्री)। नौजवान ब्राह्मण समा ने समाज में व्याप्त कुुरीतियों को दूर करने का आह्वान किया है। मत दिवस यहा समा को बैठक में फेरला किया कि ब्राह्मण समा बड़े प्रया, शरारत के प्रचलन तथा अल्प सामाजिक बुराइयों को रोकने के लिए आगामी मास एक आन्दोलन प्रारम्भ करेगी तथा जनता को जागृत करके उक्त बुराइयों को रोकने हेतु व्यापक प्रचार करेगी।

बैठक में नौजवान ब्राह्मण समा का वार्षिक चुनाव भी किया गया, जिसमें सर्व सम्मति से निम्न गणितकारो मनोनीत किए गए: प्रधान-नरेश भार्गव, उपप्रधान-श्रीमन्मनान शर्मा, महासचिव-कृष्ण कुमार भार्गव, सचिव-जय मन्वान शर्मा, सहसचिव-हरिजीन तथा कोषाध्यक्ष-तिलकराज बसिष्ठ ।

**पति को सरेआम पीटा**

जीद, २५ मार्च। स्वामीय सामाय बस अड्डे पर गत दिवस उस समय ससनों फेंक गईं, जब एक महिला ने अपने पति को सरेआम बण्ड जड़ दिए।

बीद पुलिस के एक कर्मचारी के अपनी ससुराल को एक लडकी के साथ कथित अश्लेष सम्भन्ध थे। वह अपनी इस प्रेमिका को कई बार धपने साथ धपने बहाटेर पर भी ले गया। गत दिवस जब वह अपनी इस प्रेमिका को लेकर कहीं जाने के लिए सामाय बस अड्डे पर धाया तो उसकी पत्नी को भी इसकी भनक लग गई और वह अपने दोनों बच्चों को लेकर अड्डे पर पहुंच गईं। पत्नी ने अपने पति को रोकने को कोशिश की तो पति ने उसे बण्ड मार दिया और बच्चों की भी पिटाई कर कर दी।

पत्नी से अपने पति की चोरी व ऊपर से सीनाचोरी की यह घटना बर्दाश्त नही हुई तो उसने भी पुलिस में बाकर अपने पति पर हाथ उठा दिया। पति पर पत्नी द्वारा हाथ उठाए जाने की इस घटना ने अड्डे पर लोगों की भीड़ इकट्ठी कर दी और सभी ने पुलिस कर्मचारी को आलोचना की।

(नव भारत से)

**दूरदर्शन कार्यक्रम की आलोचना**

इन दिनों दूरदर्शन पर मुसलमानी कार्यक्रमों की अरबाह हो गई है। कभी-कभी तो ऐसा लगता है मानो भारत के नही बल्कि पाकिस्तान के प्रोग्राम देख रहे हैं। राष्ट्रपिता हिन्दी की बजाए उर्दू को अत्यधिक समय दिया जा रहा है। मुसलमानी सीरियल भी बहुत बढ़ गये हैं। कई नाटकों में योजनापूर्वक हिन्दू धर्म के प्रति घृणा फैलाने के लिए हिन्दू धर्माचार्यों को डग और धोखेदार दिखाया जाता है। तिलकचारी तथा चोती पहनने वाले को बेईमान और कमजान व्यक्ति दिखाते हैं। सभी संस्कृत पढ़ने वाले को बूझ दिखाते हैं। २६-२-६१ को रात ६ बजे 'यह गुलिस्ता हमारा' मे तो एक हिन्दू मन्दिर में लम बनाता है, वहां हथियार रखता है और बम फट जाने से वह मर जाता है, ऐसा दिखाया गया। जबकि सच जानने हैं कि हिन्दू मन्दिरों में कभी बम या हथियार नही मिले बल्कि हिन्दू और उनके मन्दिर ही तो बमशीर मे या पजाब में पाकिस्तान से लाये गये हथियारों का शिकार बन रहे हैं। जिस बमों के पुजास्थलों में तमो और हथियारों के मन्थार रखे जाते हैं उस बमों की क्षति उभारने का प्रयास हो रहा है। हिन्दू ८०% से अधिक संख्या में होते हुए भी यह अन्वय सहन कर रहे हैं, क्योंकि नेतागण हिन्दू समाज को कोई चिन्ता नही करते। वे तो अपनी गद्दों को बचाने के लिए भारत विरोधी तरकों से समझौता करने मे भी नही डूकते।

दूरदर्शन के कार्यक्रमों को देखने से हिन्दू धर्म और भारतीय संस्कृति के प्रति श्रद्धा की बजाये अनादर और उपेक्षा ही पैदा होती है। वास्तव में हिन्दू संस्कृति ही देश की भावनात्मक एकता का आधार है। जब-जब और जहाँ-जहाँ हिन्दू संस्कृति कीए हुई बहू-बहू पाकिस्तान या नागावंड बन गये। हिन्दू संस्कृति को मानने वाले ही तो भारत को अलख रखना चाहते हैं वे ही कमजोर, गंजाय या मुसौलर भारत के ईसाई बहुल राज्यों, मोजोर, नागावंड, मणोरुप आदि को भारत का अन्तिम अंग बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील हैं। धनः देश की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए सरकार को चाहिए कि दूरदर्शन को सखत नीति को सुरक्ष ठीक करे नही तो हिन्दू समाज में फेंक राज रोष और बढ़ेगा।

(डा० कंताचन्द्र)



## हरयाणा में आर्य समाज के उत्सव

आर्यसमाज खिजराबाद पूर्वी जि० यमुनानगर	२०,२१ अप्रैल
” देवाराज कालानी पातोला	१६,२०,२१
” बालानाथ योगाश्रम धाममपुर	
” डाडी जि० भिवानी	२१ से २८
” जंकमपुरा गुडगांव	२२ से २८
” नाराज हिमाचल प्रदेश	२६ से १८
” सोहाड़ जि० भिवानी	११,१२ मई
” नांगल (बहुल) जि० भिवानी	१६,१४
” कौल जि० कंथल	१३ मई १,२ जून
” रादौर जि० कुल्शेठ	४३ मई १,२ जून
” साधो जि० रोहतक	६ से १० जून
” (शिखार शिविर)	सुदशनदेव प्राचार्य वेद प्रचारविप्रेक्षा

## विशाल व्यायाम प्रशिक्षण शिविर

दिनांक २१-४-६१ से २८-४-६१ तक श्री बालानाथ योगाश्रम बसाली, आदमपुर डाडी (भिवानी) में एक विशाल व्यायाम प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। जिसमें योग्यप्रशिक्षकों द्वारा साठी, भाला डंड बेंटक, कुत्ती, कनकड़ी, बोलिंग, वासन, प्रारणायाम, हठ योग (गाड़ी रोकना, बाण संघा पर सोना आदि) वद कर्म (नीती, चोती आदि) व्योली क्रिया व अन्य आधुनिक व प्राचीन शारीरिक व्यायामों का प्रशिक्षण दिया जायेगा। इसके साथ-साथ नौजवानों को प्रतिदिन वृद्ध योग्य विद्वानों के द्वारा नैतिक शिक्षा दी जायेगी।

—शिविर का प्रवेश २० रुपये होगा।

दिनांक २८ अप्रैल १९६१ को व्यायाम प्रवर्षन के बाद एक विशाल हनामी कुतिया का दान लगेगा।

नोट—आशुष दायरी से सतनाली रोड पर भोक्कला के नजदीक बसाली गांव के पास दादरी से लगभग ४४ किलोमीटर दूर स्थित है।

निवेदक व प्रवर्षक :

श्राम बसाली, कसाली, आदमपुर डाडी

## गुरुकुल टटेसर जान्ती में प्रवेश सूचना

प्रायं गुरुकुल टटेसर जौन्ती दिल्ली ८१ का प्रवेश प्रथम अप्रैल सन् १९६१ से प्रारम्भ हो चुका है। यह गुरुकुल हरयाणा दिल्ली के जोड़र पर स्थित है। दिल्ली में होते हुये भी इस गुरुकुल की पसंदीद प्रामोण्य एवं सादगी ने ओतप्रोत है। छठी कला से दसवीं कला (विद्याधिकारी) तक गुरुकुल कागरी विष्वविद्यालय हट्टिराद से मान्यता प्राप्त है। जो प्रभिभाषक अपनी सन्तान को सुयोग्य बनाता चाहते हैं वे यथाशोभ इस अवसर का लाभ उठाये। इस गुरुकुल की कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्न हैं—

- १) शिक्षित एवं योग्य प्राध्यापक एवं प्राध्यापकों की व्यवस्था।
- २) योग्य सरक्षक की देख रेख में छात्रावास में भोजन एवं आवास की सुव्यवस्था।
- ३) कुशतो एवं अन्य शारीरिक विकास हेतु विशेष कोचिंग का प्रवन्ध।

४) हरयाणा एवं दिल्ली में पढ़ाये जानेवाले सभी विषयों की पढ़ाई का उचित प्रवन्ध तथा बर्षशिक्षा अनिवार्य विषय है।

नोट—पढ़ने का मार्ग रोहतक की ओर से खंबरा स्टेज से या बस द्वारा भी गुरुकुल पहुँचा जा सकता है। दिल्ली रेलवे स्टेशन से ११४ नं० जी.टी.सी. बस द्वारा गुरुकुल बस स्टैंड पर उतरते।

## मुरथल जि० रेवाड़ी में वेदप्रचार

५ अप्रैल को श्राम मुरथला जि० रेवाड़ी में श्री सुरजोतसिंह आर्य की स्मृति में उनके सुपुत्र कप्तान महासिंह जी ने अपने घर पर यह तथा वेदप्रचार का आयोजन करवाया। इस अवसर पर सभा की ओर से पं० जयपालसिंह आर्य की भजन मण्डली ने भजनों द्वारा वेदप्रचार किया। नर-नारियों ने भारी सभा में पहुंचकर प्रायंसमाज का प्रचार सुना। कप्तान जी ने विस्वास दिलाया कि हम अपने पिता जी के पदचिह्नों पर चलते हुए श्राम में आर्यसमाज का प्रचार करवाते रहेंगे। सभा की २०० वेद प्रचारार्थ दान दिया।

## वेद का दीप जलाया तूने

ले०—स्वामी स्वर्कूपानन्द सरस्वती (दिल्ली)

कर पावन वेद प्रकाश द्युति, भूतल-उप दूर भगाया तूने।  
आर्यसमाज बनाया वेदामृत, पीयूष पिलाया तूने॥  
ये पशुभ्रष्ट यज्ञो सारे, मोहद वन में डोल रहे।  
कपट प्रपंची चोर लुटेरे ध्रुमत में विष बोल रहे॥  
बोल रहे उल्लूक भवानक, वहाँ प्रकाश दिवाया तूने।  
आर्यसमाज बनाया, वेदामृत पीयूष पिलाया तूने॥॥  
मुहृत से सुभा बाग पका, दर्शन नहीं थे हरिवाली के।  
कुमलाई डाली डाळी, मीरान हुआ बिन माली के॥  
शुष्क मरस्थल में भी, सुरजिह हरा वन बहराया तूने।  
आर्यसमाज बनाया, वेदामृत पीयूष पिलाया तूने॥॥  
मिथ्या मत पालकों के स्तम्भ पकड़ कर हिसा दिये।  
फिर से वैदिक बगियों में दूध सुगन्धित खिला दिये॥  
मिथा दिये भाई भाई, समता का पाठ पढाया तूने।  
आर्यसमाज बनाया, वेदामृत पीयूष पिलाया तूने॥॥  
निबिधि विकारों की सरिता में, मानव गोते साखा था।  
वैदिक नया फली फिनारा, दूर नजर नहीं आता था।  
विश-भ्रान्त यानियों को, पकड़ के बाँह बचाया तूने।  
आर्यसमाज बनाया वेदामृत पीयूष पिलाया तूने।  
परम पूज्य दण्डी सुबकर की आज्ञा में ठोकर मार दी।  
इद वत ध्रुव सम करके सुख वैभव में उठकर मार दी।  
कहे 'स्वर्कूपानन्द' देश में वेद का दीप जलाया तूने।  
आर्यसमाज बनाया वेदामृत पीयूष पिलाया तूने॥॥

## विवाहसंस्कार पर सभा को दान

सभा के सभ्यो की सुवेसिंह जी ने अपने सुपुत्र श्री सुरतसिंह जी के शुभ विवाह के अवसर पर दिनांक २ अप्रैल को अपने निवास स्थान पर सभा के उपवेदक पं० चन्द्रपाल शोभा, पं० रतनसिंह आर्य तथा पं० धर्मवीर जी से यह करवाया तथा सभा के कर्मचारियों को सहयोग पर आमन्त्रित किया। सभा को १०१) वेद प्रचारार्थ दान दिया। इस प्रकार श्राम सुसाईना तथा सिधुपुरिया जि० सिरसा में २३ माच को भी इच्छाल आर्य सुपुत्र श्री शोमप्रकाश आर्य के विवाह के अवसर पर पं० जयपालसिंह ने वेदप्रचार किया। बारात में १५ व्यक्तिके ५ विवाह संस्कार वैदिक रीति में किया गया। सभा को ४००) वेद प्रचारार्थ दान प्राप्त हुआ।

## नरवाना में राम नवमी पर्व

दिनांक २४ मार्च १९६१ को राम नवमी के उपलक्ष्य में आर्यवीर दल की ओर से प्रातःकाल प्रायंसमाज मन्दिर नरवाना से आर्य वीर प्रायंसकार्यकर्ता सली मुहल्लों एवं बाजार जाते हुए, स्वामी दयानन्द, मर्षदा पुष्पोत्तम रामचन्द्र के भजन गाते हुए बुद्ध आर्य नेता श्री राम सिंह प्रायंस की अध्यक्षता में विशाल शोभा यात्रा का आयोजन किया गया।

सार्वाकाल ४ बजे आर्यवीर दल करवाना के पारिवारिक सत्संग के अन्तर्गत श्री जोगीराम जी की अध्यक्षता में की विष्णुकुमार आर्य शास्त्रानायक आर्य बीरदत्त नरवाना के घर पर वैदिक यज्ञ किया गया तथा बहिनों ने मधुर प्रभुमति का एक गीत सुनाया। यज्ञ के पश्चात् श्री जयगोपाल आचार्य नरवाना ने रामनवमी पर्व पर बहुत अच्छा भाषण दिया श्रीरामचन्द्र जी के जीवन से। अन्त में श्री राधाकृष्ण जी आर्य नरवाना ने अपने भाषण में कहा कि यदि मनुष्य को सुख चाहिए तो जड़ चिन्तों को पूजा छोड़कर राम जैसे महापुरुषों के चरित्र की पूजा करनी चाहिए।

मंत्रो आर्यवीर दल नरवाना

## शोक समाचार

कन्या गुरुकुल शाहीपुर जुलाना जि० जोन्द के संचालक स्वामी सत्यवेश जी का दिनांक २ अप्रैल को हृदयगतिक बन्द होने पर निधन हो गया।

दिनांक १८ अप्रैल को प्रातः १० बजे गुरुकुल में शान्तिपूज्य तथा शोक सभा का आयोजन किया गया है।

## शुभ विवाह सम्पन्न



श्री जालोक आर्य (सुनु श्री इन्द्रजीतदेव यमुनानगर) एव सीमायवती सुमेधा धार्या (सुनु श्री विद्यावत शास्त्री, रोहतक) जिनका शुभ पाणिग्रहण-संस्कार विगन दिनों रोहतक में जन्मनाजाति बन्धन होकर सम्पन्न हुआ। विवरण देखें "सर्पहिलकारी" के ७ मार्च ६१ के अंक में। इस अवसर पर बर एल की श्रौर से विभिन्न संस्थाओं की ६,५००/६० का सार्विक दान दिया गया। इनमें हरयाणा धार्य प्रतिनिधि सभा भी सम्मिलित है जिसे १५०/६० का दान प्रदान किया गया।

—मन्त्री आर्यसमाज, रेलवे रोड  
यमुनानगर।

## आर्यकुमार सभा रादौर का चुनाव

प्रधान सरदार सतविन्दरसिंह आर्य, उपप्रधान श्री पबनकुमार धार्य, मन्त्री श्री सुनील मोहित, कोषाध्यक्ष श्री सचीन पक्की—  
स्वामी सेवकानन्द

## झज्जर में वेदप्रचार की धूम

झज्जर में १ अप्रैल से ४ अप्रैल तक वेदप्रचार का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सभा के वेद प्रचारविद्यता एव विद्वान् आचार्य सुदर्शनदेव जो ने वेद मन्त्री की मधुर व्याख्या द्वारा लोगों को वेद की महिमा का दिग्दर्शन कराया। सभी लोगों पर आचार्य जी के उपदेश का अच्छा प्रभाव पड़ा। लोग उनको मन्त्र व्याख्या को सुनकर गर्वपूर्वक हो रहे थे। पं० सीताराम जी मन्त्रोपदेशक धार्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सुन्दर मन्त्रों का काफी अवसर प्रभाव हुआ सभा को इस अवसर पर ५००/- रुपए का दान दिया गया और भविष्य में वेद प्रचार मण्डल गठित करने पर विचार किया गया।

संयोजक  
रमेशकुमार धार्य झज्जर

## आर्य वीरदल सुदकैन कलां का गठन

प्रधान श्री महावीर आर्य, मन्त्री श्री सुरेश आर्य, उपमन्त्री श्री रामचन्द्र आर्य, कोषाध्यक्ष श्री रामविद्या धार्य, शाखानायक श्री मा० रजुवीर धार्य, उपनायक शाखा श्री रमेश आर्य

## आर्यसमाज कौल जि० कैथल का चुनाव

प्रधान डा० तारचन्द आर्य, उपप्रधान श्री किशनसिंह, मन्त्री श्री बसन्तसिंह आर्य, उपमन्त्री श्री रणवीरसिंह आर्य कोषाध्यक्ष श्री मा० प्रकाशचन्द, स० कोषाध्यक्ष श्री बलजीतसिंह धार्य, सरसक श्री मा० सेवासिंह श्री रामकिशन निरीसक श्री बा० रामसिंह, प्रचारमन्त्री श्री सु० मन्थाराम श्री रामकुमार, श्री सुखतानसिंह, श्री महावीरसिंह आर्य।

## साम दाम दंड भेद से सुरापान रोकना

हैदराबाद ६ अप्रैल (बुध) नक्सलवादी सगठन पोपुल्स वार ग्रुप के एक संगठन सिगरेटी कार्मिक समरथा (सिकासा) ने आंध्रप्रदेश के कोयला क्षेत्रों में पूर्ण शराबबन्दी लागू करने में सफलता प्राप्त कर ली है। इस प्रकार उन्होंने बहू कर दिखाया है जो कानून के कई निर्माता भी नहीं कर पाए थे।

इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उन्होंने मुसामद दबाव, भय और यहाँ तक कि लोगों के हाथ-पैर काटने तक का काम किया।

भादिनावाद धीरे धीरे नगर के कोयला क्षेत्रों की महिलाओं ने इस शराब बंदी का स्वागत किया है। इनमें से कहीं के पति शराब के ठेकेदारों के चपुल में फसे हुए थे।

देश में निर्मित विदेशी शराब और अर्क का चंचा करनेवाली लगभग एक हजार दुकानें पिछले छः माह से बंद पड़ी हैं और किसी को शराब बेचने की इजाजत नहीं है। सिकासा के एक सूत्र ने नाम गुप्त रखे जाने की शर्त पर बताया कि हैदराबाद से २५० किलोमीटर दूर स्थित शहर मन्थरयाव में ही करीब १०५ दुकानें बंद पड़ी हैं।

इस शराब बंदी से लगभग एक लाख लोगों को शराब ठेकेदारों से छुटकारा मिला है। एक अनुमान के अनुसार बदनाम के श्रमिक लगभग २० से १५ रुपए प्रतिदिन शराब पर खर्च करते थे। इस प्रकार वे साल में लगभग ७० से ८० करोड़ रुपए केवल इस बात पर खर्च करते थे।

शराब बंदी के पहले कोयला सदानों के लिपिक श्रमिकों के वेतन में से पैसे काट कर उसके बदले में उन्हें शराब के लिए पर्चा दे देते थे। इस प्रकार उनके वेतन का लगभग ५० प्रतिशत शराब पर खर्च होता था।

सूत्र ने बताया कि कोयला क्षेत्र में सफलता के बाद अब शराब बंदी पूरे तेलगाना क्षेत्र में लागू की जाएगी।

युद्ध में शराब के ठेकेदारों को पुलिस संरक्षण भी दिया गया था पर भारी विरोध के कारण उसे वापिस ले लिया गया।

शराब ठेकेदारों और विक्रेताओं को कई नेतागणियों के बाद उन्हें दब भी दिया गया। कई लोगों के हाथ पैर काटे गए जबकि कुछ को हत्या तक कर दी गई।

सिकासा ने व्यापारियों को नेतावनी के अतिरिक्त शराब के विकल्प नुकरड नाटक धीरे धीरे भी किए।

नवभारत टाइम्स

## आर्यसमाज सुदकैन कलां जि० जीन्द का चुनाव

प्रधान मा० वेदपाल धार्य, उपप्रधान श्री मनीराम आर्य, मन्त्री श्री बिलयाग शास्त्री उपमन्त्री श्री भीमसिंह धार्य, कोषाध्यक्ष श्री प्रेमदास आर्य, प्रचार मन्त्री श्री रमेशधार्य,

## सूचना

आज अति हृद्य का विषय है कि सेवा भारती रोहतक नगर की ओर से एक महिला सितार्द केन्द्र आपकी बस्ती (गढ़ी मोहल्ला) में खुल रहा है इसके पूर्व भी दो केन्द्र खल रहे हैं जिनमें लगभग ६० महिला सितार्द का कार्य चल रहा है इसके साथ साथ एक बाबुसकारकेन्द्र जो कि कक्षा ५ से ७ तक के बच्चों को अपने कोश में ट्यूशन तथा धार्मिक शिक्षा प्राप्त कराई जाती है। केन्द्रों में मासिक यज्ञ भी किया जाता है।

यह सभा समय-समय पर हरिजन बस्तियों का सर्वेक्षण भी करती है। इसी बस्ती का विचिंत ससंस्था अक्टूबर १९६६ में किया गया। सभा की कार्यकारिणी के प्रतिरिक्त मासिक दानों स० ८० है। वर्ष ७७ में कम से कम ५ पर्वों को सम्मिलित-रूप में मनाया जाता है। हम आपसे आग्रह करते हैं कि आप इस सभा के सदस्य बन, मासिक चन्द्रा देकर पुण्य के भागी बनें और अपने सम्पर्क में मंगलनिधि हवन यज्ञ द्वारा सहायता प्रदान करें।

प्रबदीय :

केसरदास आर्य मन्त्री

सेवा भारती रोहतक शाखा

## हैदराबाद सत्याग्रह में हरयाणे का योगदान

लेखक—प्रि० डा० एरजीतसिंह। प्रकाशक व प्रावि-स्थान—  
आर्य प्रतिनिधि समा, हरयाणा, दयानन्द मठ, रोहतक। मूल्य ३० रु०।  
आर्यसमाज के गौरवपूर्ण इतिहास में 'हैदराबाद का सत्याग्रह'  
अनीय प्रसिद्ध है। यथार्थ में यह आर्यसमाज की भीष्मक भ्रमिन-परीक्षा  
का समय था। एक मुस्लिम सङ्घर्ष के कट्टर व क्रूर हिमायती  
हैदराबाद के नवाब ने आर्यों पर अत्याचार करने में कोई कसर नहीं  
छोड़ी थी। हिन्दुओं के मस्जिदों में प्रवेश व कीर्तन करना, शासक व पट्टा  
बजाना और आर्यसमाज के मस्जिदों में हुजूम-यज्ञ करने पर भी कठोर  
पाबन्दी लगा दी थी। आर्य विचारों के प्रचारकों पर तरह-तरह के  
मिथ्या धारावी सगवाकर कठोर यातनायें दी जा रही थी। जिनका  
विरोध करने का साहस किसी धार्मिक व राजनयिक नेता का ही  
नहीं पाता था। ऐसे अयकर समय में 'करो या मरो' के सिद्धान्त की  
अनुनाकर आर्यजगत् ने जो कठोर कदम एकजुट होकर उठाया था,  
वह अत्यंत प्रथम उपहासास्पद सगवा था, परन्तु 'सोत्साहानां  
समुद्रोपि कुल्याते, अग्निरपि शोतायते' के अनुसार उत्साही व्यक्ति  
वसंतवर्ष को सम्मन कर देते हैं। इस अग्नि-परीक्षा रूप सत्याग्रह में  
हरयाणा प्रदेश के आर्यवीरों का सर्वोच्च स्थान रहा है। उन आर्य  
वीरों के दिशाल परीचय व इतिहास इस पुस्तक में संक्षिप्त किया  
गया है। प्रत्येक आर्य परिवार में यह पुस्तक सप्रहणीय है। माध्य  
विद्यालय में बहुत ही श्रम करके इस पुस्तक का संकलन किया है।

## श्री स्व० पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती का जीवन-परिचय

लेखक—श्री डा० सुब्रह्मण्य स्वामीयें। प्रकाशक व पुस्तक प्रेषित  
स्थान—आर्य प्रतिनिधि समा, हरयाणा, दयानन्द मठ, रोहतक।  
मूल्य १० रुपए।  
आर्यसमाज का कौन विद्यालय व उपदेशक होगा कि जो माध्य  
सिद्धान्ती जी के नाम व काम से परिचित न होगा? ऐसे बड़े सिद्धान्त  
प्रिय व्यक्ति से ही आर्यसमाज जीवित रहा है। अपने जीवन का  
कल्याणमय-पथ स्वयं बनाते-बनाते सिद्धान्ती जी का यह जीवन का  
आर्यों के लिए भी एक उत्तम मार्गदर्शक, सुरेख एवं कठिन परीक्षा के  
अभसरो पर भी संरक्षक बनकर कार्य करेगा, ऐसी मुझे पूर्ण आशा है।  
(दयानन्द स्वयंसेवक से)

## मतदाता राष्ट्रविरोधियों से सावधान रहें

राष्ट्रपति द्वारा नीची लोकसभा भंग किए जाने के साथ ही  
जुनावाँ की सरगामी आरम्भ हो गई। जुनावाँ के समय क्या-क्या  
हथकण्डे प्रयोग किए जाते हैं, यह एकबार पुनः देखने को मिलेगा।  
आज देश में अनेक समस्याएँ हैं। पंजाब, कश्मीर, असम आदि राज्य  
आतंकवाद की आग में लूटख रह चुके हैं। कश्मीर एवं पंजाब से लाली  
हिन्दुओं को पलायन के लिए मजबूर किया जा रहा है।

आज देश में ऐसी शक्तियाँ सर उठा रही हैं जो भारत का  
विघटन एवं विनाश चाहती हैं। विदेशी ईसाई पादरियों ने नागालैण्ड  
तथा मिजोरम में ईसाई प्रचारकों एवं सख्त ईसाई संगठनों का  
निर्माण करके देश के कई भागों में विद्रोह फैलाने का षडयन्त्र रच  
रखा है। नागालैण्ड (एन. एस. सी. एफ.) नेमलान् कोडिसिल ऑफ  
नागालैण्ड नामक सन्धि ने असम में उल्का तथा बोडो उग्रवादियों को  
हथियारों से लैस किया। आन्ध्र प्रदेश एवं महाराष्ट्र में नथसवावियों  
के नाम से जो सख्त विद्रोह खड़ा कर रहा है, उसके पीछे भी विदेशी  
पादरियों का ही हाथ है।

भारत की जनता देश में कौन उग्रवाद से तम आगई है। लोग  
अब उस दल या पक्ष की सरकार चाहते हैं जो देश विरोधी आन्दोलनों  
का दमन करे।

—डॉ० कौलाचरण

संस्कृतमोचन आश्रम, रामकुम्भपुर, संकेत-६ नई दिल्ली-२२

(पृष्ठ १ का शेष)

म्याय सूत्र १२२२ में अथर्व की परिभाषा करते हुए कहा है—  
तदव्यभिचारीभोक्ष्यः। दुःखममप्रवृत्तदोषमिथ्याज्ञानानामु-  
त्तरोत्तरायां तन्मनःरासावायवयवः।

जो दुःख का अत्यन्त विच्छेद होता है वही मुक्ति कहाती है।  
क्योंकि जब मिथ्या ज्ञान, प्रविषा लोभादि दोष, विषय, दुष्टव्यसन  
में प्रवृत्तियन् और दुःख का उत्तरोत्तर घटने से पूर्व के निष्कृ-  
त होने से मोक्ष होता है जो कि सदा बना रहता है। अब मोक्ष के साधन  
देखने चाहिये।

## बृद्ध आर्य बन्धुओं जीते जो कारण करो

### इतिहास बन जाएगा

यह सर्वविविध हो रहा है कि शराब ने देश को बरबाद कर  
दिया है। जब तक शराब रहेगी देश का विकास नहीं हो सकता चाहे  
दक्षक का वेदा राम ही राज्य सम्भाल ले। पूर्व इतिहास इसका  
साक्षी है। मैं आर्यकी बताता हूँ। शराब के कारण मेरा घर बरबाद  
हो गया। सड़के शराब पीकर अपनी कमाई को खोकर लुटकों से  
पिटछर पर आते हैं। अब योधा होश हो जाता है तब अपनी गृहस्थियों  
को गालो गबोच देते हैं मारते हैं, घर में कहर मचा देते हैं। बालक  
भयभीत हो जाते हैं, उनका विकास ठप्प हो जाता है। इस प्रकार यह  
'बंदासनी' बासकों पर भी हाथ साफ करती है। बरबाद हुए बालकों  
के बालक क्या बनेंगे यह आप विचार लें। शराबी माय के मूल साधनों  
को खत्म कर जाता है। ऐसी प्रवृत्त्या में आते इस घर में पैदा होने  
वाले मजदूर ही बनेंगे। सरकार उन्हे गिरोजनों हरिजनों लाली  
रियासत ही देती नहीं। सरकार का कर्तव्य है, विन्धेयाही है कि हुए  
अधिक के स्वास्थ्य की विवर्धने न दे। पर सरकार स्वयं जहर पिना  
कर आज भीत में मारने का प्रवृत्त्य ठेके खोकर फोबियों को परचित  
से शराब रियायती देकर बरबाद कर रही है। इसका दलाज बृद्ध  
आर्यसमाजी ही कर सकते हैं। यह बात तो सत्य है कि वृद्धों ने प्राये  
अपनी जलाद आर्य नहीं बनाई। अब हमारे कार्य नहीं करेगा। देश  
में कारख करने का रिवाज मरने पर करने आते हैं। कहेते हैं उसका  
नाम अन्न हो जाता है।

मैं प्राय का नाम बमर करने की योजना आप को दे रहा हूँ।  
यह बात भी सत्य है कि प्राय बन्धुओं ने आश्रम मर्यादा नहीं चलाई।  
बानप्रस्थी बन गए वे घरना ही घण्टा करते रहे। संन्यासी बन गए  
वे अपना बन्धा करते रहे। वास्तव में जो होना चाहिए था वह हुआ  
नहीं। भाइयो आज ५४ वर्ष के प्राय नीकरी करते हैं, मठाधीश बने  
बंटे हैं। सत्यागी जिन्हे गाव-गांव घूमकर अपनी धामी और करती  
सत्ता आचारविचार से भ्रष्ट करनी को लहर चलाना भी। यदि यह सहर  
बली होती तो आज घर-घर में शराब नहीं होती।

खैर जो हो गया, अब जीते जो कारण कर जाओ।  
जितने बृद्ध आर्य संवजन जिला लोहक में हैं, वे सब चित्तजी की  
देवियों की तरह उपगुक्त महोदय की कश्चरी के सामने पेश करके  
ज्ञान देकर जोहर की अग्नि जलाकर सब उस में डूब जाओ।\*

निश्चित दिन सूर्य के डिस्कटर में पांच मन लकड़ी, कम से कम दस  
सेर धो, २० किण्वक और मित्रों के साथ शराब के साथ शराब  
शराब के नाम पर बलि देकर ऐतिहासिक मोल (सरीर त्यागने) का  
नया नियम छोड़ जाओ। शराब सरकार भले ही बन्द न करे हमारा  
कर्म्य बुरा हो जाएगा। बरबाद की दवा सूई तो कोई न कोई वेदा  
पीठा बेटी पीठी बहु जरूर आर्य बन जाएगा। यह सामूहिक बलि  
ऐतिहासिक बलि के नाम से सदा अमर रहेगी। चित्तोज के जोहर से  
यह जोहर अधिक नहीं तो कम भी नहीं रहेगा। अब मेरी प्रार्थना  
निवेदन सब वृद्धों से है कि वे इस घर विचार कर दिन निष्चय कर  
सरकार की आंचे जला दें। भाइयो मंडल आयोग पर अनेक  
छान छानाये युवक युवतियाँ बलिदान हो गए। उनका जो रोटी-रोटी का  
प्रश्न था। हमारा तो धात्रार बनाने का विचित्र प्रश्न है। आशा है  
आप मेरी इच्छा को अवश्य पूर्ण करेंगे।

प्रायका सार्दी—दीपचन्द्र, ग्राम पो० कासनी जिला रोहतक।

## प्रवेश सूचना

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से माध्यता प्राप्त्-आर्य  
गुरुकुल किशनगढ धासेड़ा वि० देवारी में १ अगस्त १९६१ से नवीन  
छात्रों के प्रवेश आरम्भ हो चुके हैं।

इस वर्ष शरानामाव के कारण केवल २२ नवे छात्रों को ही (छोटी  
एवं सातवीं कक्षा में) प्रवेश मिल सकेगा। छात्र का बुद्धिमान एवं  
शारीरिक रूप से स्वस्थ होना अत्यावश्यक है।

आचार्य आर्य गुरुकुल किशनगढ

\*अग्नि में जलकर मरना, प्रायश्चित्त करना अवैदिक और  
कायरतापूर्ण निष्कृत कर्म है। संघर्ष, सत्याग्रह, प्रचार आदि के द्वारा  
साम दम दण्ड आदि उपार्यों से शराबबन्दी सम्भव है।

—वेदवत् शास्त्री

## जलियांवाला बाग की खूनी होली

## १३ अप्रैल सन् १९१९ को अंग्रेजों ने देशभक्तों को दानों की भाँति भून दिया

७२ वर्ष की उम्र में १३ अप्रैल सन् १९१९ को अमृतसर के जलियांवाला बाग की घराती खून से साहस हो गयी थी। अंग्रेजों तानाशाही पूरे जोरों पर थी। अंग्रेज सामन्तशाही का कि वह इतना शक्तिशाली है कि जो वह चाहेगा वही होगा।

महात्मा गांधी जो अभीका से सत्य और अहिंसा से सफल लड़ाई लड़कर भारत लौटे थे। बापू गांधी को अंग्रेजों ने बोला देकर कि यदि वह पहली बर्बाद (लड़ाई) जीत गया तो भारत को स्वतन्त्र कर देंगे। गांधी जी ने सेना को भरती में और लड़ाई के लिये चम्पा इकट्ठा करने में सहायता की। लड़ाई जीती जाने पर महात्मा गांधी को स्पष्ट कह दिया कि वह भारतीयों को राज खानदान के साथ नहीं समझते। इससे महात्मा गांधी के कहने पर सारे देश में रोष प्रकट किया। सारे देश में जलसे जलूसों पर पाबन्दी लगा दी गई।

महात्मा गांधी ने रोल्ट एक्ट के विरुद्ध आन्दोलन की घोषणा की कि ६ अप्रैल को सारे देश में प्रार्थना सभा की जाये और गान्धिविरोध जुलूस निकाले जाय। देहली में स्वामी धरमनन्द जी के नेतृत्व में जुलूस निकाला गया। जब जलूस चान्दनी चौक पहुँचा तो अंग्रेजों ने उसे आगे बढ़ने से रोकने का आदेश दिया। स्वामी जी ने अपनी खीती खोलकर ललकारा कि "यदि हिम्मत है तो सबसे पहले मेरी छाती पर गोली मारो" और जलूस की आगे बढ़ने को कहा। अंग्रेजों ने उस नाजूक स्थिति को भाप दिया और जलूस को जाने दिया।

बापू गांधी को जब वे रेलगाड़ी में पंजाब आरहे थे, पलवन रेलवे स्टेशन पर गिरफ्तार कर लिया। सारे देश में जुलूस निकाले गए और प्रदर्शन किये गये। पंजाब में उस समय के कांग्रेस नेता डा० सख्तसिंह कृष्ण और डा० सत्यपाल दोनों की बन्दी बना लिया गया और पंजाब की जनता में अपने नेताओं की गिरफ्तारी से बड़ा रोष पैदा हो गया और उन्होंने अमृतसर में प्रोटेस्ट के तौर पर भारी जलूस निकाला। जब जुलूस उपायुक्त की कोठी पर चला तो अंग्रेजों ने जुलूस पर गोली चला दी जिससे कई लोग शहीद होगये। जोस में आए देशभक्तों ने एक अंग्रेज को मारकर खून का बदला खून से लिया। ११ अप्रैल को भारी जलूस शहीदों की लाशों का निकाला गया और ३० अप्रैल को जलियांवाला बाग में जलसा करने की घोषणा कर दी।

अमृतसर में बैसाखी के पर्व पर लोग भारी सन्ध्या में अमृतसर आए थे। अंग्रेजों ने सहर को सेना के सुदूर कर दिया था। और जलसे पर रोक लगा दी थी परन्तु लोग भारी संख्या में जलियांवाला बाग में एकत्रित हो गए। जनरल डायर जो सेना का इन्चार्ज था, क्रोध में साहस हो गया और सेना तथा मशीनगनों की सैकड़ जलियांवाला बाग पहुँच गया और बिना किसी चेतावनी के जलसे पर फायरिंग आरम्भ कर दी। जिसके परिणामस्वरूप लाशों के ढेर लग गए। जलियों को पानी तक नहीं दिया गया। लोग एक-एक बूँद पानी को तड़प कर मर गए।

अंग्रेजों ने अमृतसर सहर में पानी, बिजली के कनेक्शन काट दिये। लोगों को घेरे के बन् रंगने को मजबूर किया गया। "मैं भविष्य में कोई छुई नहीं कर्ना" में क्षमिया हूँ जनता को कहा गया कि जब कोई अंग्रेज नजर आए तो उसे झुककर सलाम किया जाए। अंग्रेजों ने जनरल डायर को पुरस्कार देकर इंग्लैंड भेज दिया।

क्रांतिकारी सरदार उपमसिंह ने वह खूनी कांड अपनी आशों से देखा था। वह २१ वर्षों तक जनरल डायर और राज्यपाल सर ई०बी० डायर की ताक में रहा। उसने इंग्लैंड जाकर जनरल डायर को १३ मार्च १९४० को अपनी पिस्तौल की गोशियों से भून दिया और पिस्तौल को तोड़े रखकर "यास्त जाता की जय" के नारे लगाकर कहा मैंने जलियांवाला बाग खूनी कांड का बदला ले लिया

(स्वतंत्रता सेनानी डा० शान्तिस्वरूप धर्म) (पत्रकार, कुशकोट)

है। उस वहादुर देशभक्त सरदार उपमसिंह को सम्मन में फाँसी पर लटकया गया। हम उन सभी शहीदों को आज श्रद्धांजलि भेंट करते हैं जिनके बलिदानों ने यह देश स्वतन्त्र हो गया।

शान्तिस्वरूप धर्म

## सांग का खण्डन

सन्ध्या तपंभ हवन गायत्री महर्षियों की बानी थी बापू धूम्र नाचन लागे धर्म देस ने बानी थी

१—गाम बीच में तल गिरा दें कके मारे लगबाड़ा हीर वने एक रासा बन आ एक वने अक्खन गाड़ा एक पड़या सादिक में रोवे याद सांग का सँ काड़ा एक उत ने पयो ठाने सारी रात रहे साड़ा दयानन्द का देस डोव दिया हीर नहीं पुकवानों था

२—मूह लोत्या सब दिया फटकारा सब के कारज सार दिये भजन रामनी गजल कवाली बना कापीये चार दिये फर बृहम्मन कौन कहे जब वेत डूम ने मार दिये सारी रात वहु रासा तने तडके लते तार दिये आध योग कहे पालंगा रात डूम को रानी थी

३—हराचन्द में बानी थे भगी घर नीर भरया करते मचनावत रोहतास बिके जो कहेके नहीं फिरया करते पतजलि और कण्णद गोतस घर-घर सँ करया करते परगराम से बृहम्मन थे चारों बण बरया करते उन के बेटे पीयां ने के दुमया की वहु कहानी थी

४—बड़े आदमी गाल बके जा सगबाड़ा ते प्यार रहे सीसा देखे मांग पाड ले सहरा बोरसा त्पार रहे गोपीचन्द्र कालवे बसता मन में सोच बिचार रहे पिछले दिन देस लियां भाई देवों का प्रचार रहे चन्दगीराम सांग का करना कुछ ना बानी जानी थी बाप धूम्र नाचन लागे धर्म देस ने बानी थी

पुलवानसिंह आर्य  
गाम पोस्ट बाहुसाना मोहाना रोह्तक

**सत्य के प्रचारार्थ**

अजिल्द  
**₹००**  
सेकंड

अजिल्द  
**₹१००**  
सेकंड

**मर्यादा प्रकाश**

घर पर पहुंचाये

**सफेद कागज मुन्दर छपाई**

शुद्ध शेरकरणावितरण करनेवालों के

आकर 23x36-16 पूरक 820 की दर लिये प्रचारार्थ

अजिल्द ६/अजिल्द ६/

**आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट**

455, खारी बागान, दिल्ली-6 दूरभाष: 238360-233112

## यति मण्डल द्वारा गुरुदत्त विद्यार्थी शताब्दी मनाने का निर्णय

विराट नगर में सहोद गुरुराज शास्त्री बलिवान अर्द्धशताब्दी के अवसर पर १६ भाचों की यति मण्डल की एक महत्वपूर्ण बैठक हुई। बैठक की अध्यक्षता श्री स्वामी श्रीमानन्द जी सरस्वती ने की। बैठक में यति मण्डल के अध्यक्ष अश्वेय श्री स्वामी सवानन्द जी महाराज व श्री स्वामी बोधानन्द जी के अतिरिक्त अन्य २६ व्यक्ति उपस्थित थे। बैठक में निम्न प्रस्ताव पारित हुए।

(१) आगामी सितम्बर मास में दयानन्द मठ रोहतक में विद्यालय स्तर पर पं० गुरुदत्त विद्यार्थी शताब्दी समारोह मनाया जावे। यति मण्डल के अध्यक्ष श्री स्वामी सवानन्द जी महाराज ने यति मण्डल के सभी सदस्यों से कहा कि हमें अभी से इस कार्यक्रम की तैयारी में जुट जाना चाहिए। आचम समाज की सभी संस्थाओं से भी इस पुण्य कार्य में तन-मन व अन्न-धन से सहयोग की अपील की।

(२) इस बैठक में सर्व सम्पत्ति से प्रस्ताव पारित किया गया कि भारत में की जाने वाली जनसंख्या में जो परिषद भरयाया जाता है। उसमें सम्प्रदाय भी लिखा जाता है प्रतः इससे पृथक्तावाद को बढ़ावा मिलता है। सम्प्रदाय के स्थान पर केवल भारतीय ही लिखा जाना चाहिए। इससे सम्प्रदायवाद को बढ़ावा न मिलकर राष्ट्रीयता की

भावना पैदा होगी। इस सम्बन्ध में यति मण्डल स्थान-२ पर सम्मेलनों के माध्यम से जनता में जागृति पैदा करेगा। पं० गुरुदत्त शताब्दी समारोह पर भी इस विषय पर सम्मेलन आयोजित किया जावेगा।

नोट—पं० गुरुदत्त शताब्दी समारोह की तैयारी के लिए एक समिति का गठन किया गया। जो इस प्रकार है—

सर्वेधी स्वामी सवानन्द जी, स्वामी श्रीमानन्द जी, स्वामी प्रमानन्द जी, स्वामी सुमेधानन्द श्री गंगानगर, स्वामी सुमेधानन्द शम्भा, स्वामी चर्मानन्द उड़ीसा स्वामी चर्मानन्द झाबू पर्वत, आचार्य हरिदेव जो, ब्र० नन्दकिशोर जो, आचार्य जीवानन्द जी मेरिठक।

इस सम्मेलन की तैयारी के लिए श्री स्वामी सवानन्द जी महाराज ने श्री स्वामी सुमेधानन्द जी (श्री गंगानगर) को सम्मेलन का संयोजक नियुक्त किया। श्री वेदव्रत जो शास्त्री रोहतक को कोषाध्यक्ष, तथा श्री श्रीवानन्द जो को प्रचार मंत्री नियुक्त किया। दयानन्द मठ रोहतक में शोध ही कार्यलय खोलने का निर्णय लिया गया। यह भी निर्णय लिया गया कि दयानन्दमठ रोहतक में शोध ही एक बैठक बुलायी जावे जिसमें अन्य समितियां गठित की जावें। इस बैठक में यति मण्डल से सदस्यों के प्रतिरिक्त अन्य आचमजनों को भी आमंत्रित किया जावे।

सुमेधानन्द  
संयोजक

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी शताब्दी समारोह

# गुरुकुल

## कांगड़ी फार्मसी की

आयुर्वेदिक औषधियां सेवन कर स्वास्थ्य लाभ करें

**गुरुकुल च्यवनप्राथ**

पूरे परिवार के लिए शक्तिवर्धक एक स्फूर्तिदायक रसयुक्त। छाती, ठंड व शारीरिक तब रोकने की दृष्टिगत में उपचारी आयुर्वेदिक औषधीय द्रव्य।





अपनी पवित्रता के लिए

**गुरुकुल पायोकिटल**

दोनों व मनुष्यों के समस्त रोगों में निरोग्यता पायोकिटल के लिए उपचारी आयुर्वेदिक औषधीय



**गुरुकुल चाय**

दुखान व इन्कलुजिन परबन आदि से बनी सुखी से बनी नाचवारी आयुर्वेदिक औषधीय



**गुरुकुलकांगड़ीफार्मसी हरिद्वार (ऊ० प्र०)**

## गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी

हरिद्वार

की औषधियां सेवन करें।

शाखा कार्यालय  
६३ गली राजा केदारनाथ,  
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

स्थानीय विक्रेताओं एवं सुपर बाजार से खरीयें

फोन नं० २६१८७१

शाखा कार्यालय: ६३, गली राजा केदारनाथ  
चावड़ी बाजार, दिल्ली-११०००६

'प्रकाश' - २०/४

आयं प्रतिनिधि द्वारा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य ब्रिटिश प्रेस के लिए सर्वहितकारी मुद्रणालय रोहतक में छपाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती मदन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।



# आप हितकारी

मावन्तो विश्वमार्यम्

आय प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—सूर्यसिंह सभामन्त्री

सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

सहसम्पादक—प्रकाशचण्ड विद्यानकार एम०ए०

वर्ष १८

अंक २१

२१ अप्रैल, १९६१

वार्षिक शुल्क ३०)

(आजीवन शुल्क ३०१)

विदेश में ८ रौप

एक प्रति ३५ पैसे

बाल जगत्—

## ओं क्रतो स्मरः (हे जीवात्मा ! 'ओ३म्' का स्मरण कर)

डा० सुरेशचन्द्र वेदासंकार, एम०ए० आर्यसमाज, गोरखपुर

एक कहानी है। बहुत सुन्दर है। बालको, तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ।

एक महात्मा थे। उनके धनेक शिष्य थे। महात्मा अपने शिष्यों को कहानियाँ सुना-सुनाकर उत्तम विषयायें दिया करते थे। एक दिन उन्होंने अपने शिष्यों को यज्ञ यज्ञियां बतलाई और कहा कि यज्ञ में सब कुछ समाजा हुआ है। यह समाजाने के बाद एक शिष्य से कहा कि जाकर बाजार से ये ये सामान ले आओ। शिष्य गया। बाजार तक जाते-जाते उसे बस्तुओं का नाम मूल गया। दुकान पर पहुँचकर उसने दुकानदार को पंसा दिया और कहा कि इस पंसे से यह भोज दे दो, वह भी दे दो और सब कुछ दे दो। बाजार से किन्हीं बस्तुओं को नहीं लिया और यह, वह सब कुछ मांगता रहा। दुकानदार ने पंसा तो असमंजस में पड़ा पर वह समझदार और विचारवाली थी। वह दुकान से बोले उतरा। कागज की पुस्तिका में बीबी सी लिखी रक्त की बीर कहा कि जो यह 'वह भी है, वह भी है और सब कुछ है'। सबका उसे लेकर भुज की के पास पहुँचा और वह पुस्तिका भुज को को देकर सब बात सुना दी। भुज जो पहले तो अचकचभये पर पानी देष बाब सोचकर और शिष्य की बातों पर विचार कर बोले कि देखो यह लिखी है। भूमि को संस्कृत में 'वसुधरा' भी कहते हैं। वसुधरा का अर्थ होता है जो सब कुछ धारण करे अर्थात् वह रत्नों से भरी पत्थी है, इसमें सर्वत्र ऐश्वर्य ही ऐश्वर्य है। आम का मूल रत्नों में से निम्बक, नींबू लतास, नीम कड़वाहट, मिष भरकराहट से लेती है। इसमें सब प्रकार के रस, सब प्रकार के व्यञ्जन भरे पड़े हैं। तो अच्छी, ऐसा ही है प्यारा 'ओ३म्' नाम इसमें सब कुछ समाया हुआ है। सम्पूर्ण सत्ता का ज्ञान-विज्ञान इसमें है, इसलिए उपनिषद्में से कहा है :-

सर्वदेवा यत्पञ्चामर्शस्य सर्वाणि सर्वाणि च यदवर्णिता।  
यत्किञ्चिन्नो ब्रह्मचर्यं चरन्ति, तत्ते पद संप्रहेष इमोऽम्योऽम् इत्येतत्।

धर्मत् समस्त देव जिज्ञासा प्रतिपादन करते हैं, समस्त तप जिसे बलसाते हैं, अर्थात् जिसके लिए जिम्मे जाते हैं, जिसको प्राप्त करने के लिए साधकगण ब्रह्मचर्य का अनुष्ठान करते हैं वह पद में संश्लेष से बलसाता है वह पद है 'ओ३म्'।

प्रभु के नाम और कर्मसाधक अक्षय नाम ही परमपुत्र बालको, ईश्वर का मुख्य नाम 'ओ३म्' है। 'ओ३म्' स्वयं ही धीर सशक्त है। 'ओ३म्' सर्वव्यापक और सर्वज्ञ है। 'ओ३म्' सर्वाधिक और सर्वशक्ति है। 'ओ३म्' अजर और अमर है। 'ओ३म्' सर्वसंश्लेषितमान, निराकार और अक्षय है। 'ओ३म्' हमारे विचारों, भावों और कर्मों को जानता है और उसके अनुसार फल देता है। 'ओ३म्' व्याघ्रबादी और दयालु है। 'ओ३म्' अजन्मा धीर अनन्त है। 'ओ३म्' प्रत्येक परिस्थिति की प्रत्येक क्षण अपनी रक्षा का ऋत हस्त ह्म पर रखता है। 'ओ३म्' का अर्थ है 'अचरणीय ओ३म्' को सदा सर्वदा हमारी रक्षा करता है। संस्कृत में 'अचरणीय' वास्तु से 'ओ३म्' शब्द बनाता है। इसका अर्थ है

रक्षा करने वाला। एक कहानी सुनो कि परसेवर किस तरह रक्षा कर रहा होता है।

एक बार एक राजा अपने मन्त्री के साथ विचार के लिए जंगल में निकल गया। चलते चलते कांटों वाली झाड़ी में उसके कपड़े उमड़ गए। हाथ से बर्तनों को सुलभने का यत्न किया तो कपड़ों में बाध लग गए। रक्त बहने लगा। राजा कराहने लगा। मन्त्री ने मरहम-पट्टी की ओर कहा रहा "कोई बात नहीं, प्रभु जो करते हैं अच्छा ही करते हैं।"

राजा बार-बार मन्त्री के वचन सुनकर क्रुद्ध होगया। धीर मन्त्री से बोला "मैं जोड़ा से परेशान हूँ और आप कह रहे हैं ईश्वर जो करता अच्छा करता है अतः धाम अपना रास्ता लीजिए। मैं ऐसे व्यक्तित्व के साथ रहने की प्रमेक्षा जकेला ही अच्छा।"

मन्त्री ने कहा "ईश्वर जो करता है अच्छा ही करता है। जो धायकी आज्ञा, मैं धयना रास्ता लेता हूँ। मन्त्री वहाँ से चला गया।

राजा भी बनेला बस पड़ा। वह दूसरे राजा के राज्य में पहुँच गया। वहाँ देवी पर मनुष्यों की बलि बड़ाई जाने वाली थी। सिपाही किसी पुरुष को बलि के लिए शोध रहे थे। राजा मिल गए। सुन्दर है, शरीर अच्छा है। कहकर बलि के लिए पकड़ ले गए। पुरोहित को बुसाया गया और बलि से पूर्व स्नान करवाया जाने लगा। पर पुरोहित ने स्नान कराते समय राजा की कटी अंगुलि देखकर 'अरे, यह तो बालमंग व्यक्तित्व है। इसकी बलि नहीं चढ़ाई जा सकती।

राजा बच गया। उसे अब समय में धायका कि मन्त्री ने कहा था, प्रभु जो करते हैं, अच्छा करते हैं, वह ठीक है। यदि धंशुलि में बाध न होता तो मृत्यु निश्चित थी। अपने राज्य में लौटने के बाद मन्त्री की खोज हुई। उसे बाघर से राजा ने बुसाया और कहा 'आपने मेरी अंगुलि कटने पर बड़े पत्ते की और मर्म की बात कही थी। मैं अल्प बुद्धि समझ न पाया। इसी क्षणुकी के बाव के कारण मेरी रक्षा हुई, मैं मीत के मृत से बच गया। परमपुत्र मन्त्रिकर, अब मेरी डाँटकर आपको निकाल दिया, इसमें प्रभु ने आपकी कौनसी भलाई देखी? आपने उस समय भी यही कहा था कि 'प्रभु जो करते हैं, अच्छा करते हैं'।

मन्त्री ने मुस्कराते हुए कहा 'वह तो धीर की प्रमेक्षा हुआ। यदि आपने मुझे निकाला न होता तो मैं आपके साथ रहता। आप तो धायक होने से मुक्त जाते क्योंकि सिपाही आपके साथ मुझे भी पकड़ ले जाते? मेरा तो बालमंग नहीं हुआ था अतः बलि का बड़रा तो मुझे ही बनना पड़ता। मेरे ऊपर तो प्रभु की और भी अधिक कृपा हुई। मुझे पायल भी न किया और मृत्यु से भी बचा लिया। इसलिए प्रभु जो करते हैं, अच्छा करते हैं। उसमें मानव का कल्याण होता है। (शेष पृष्ठ ७ पर)

# जो डूबे हैं गिलासों में, न उभरे जिन्दगानी में

आचार्य दयानन्द शास्त्री, प्रा० दयानन्द बहुा महाविद्यालय-हिसार

देवी-विदेवी सभी इस बात पर सहमत हैं कि प्राचीनकाल में भारतवासी नौरथ की पराकाष्ठा पर पहुँचे थे। उस समय की एक पद्यता का छात्रोद्योगनिष्ठपद में उल्लेख है कि एक बार कुछ अध्यात्म-चिन्तक महात्मा अपने एक प्रश्न के समाधान के लिए समित्याधि होकर ब्रह्मचि महााराज अश्वपति के पास गए। राजा ने उन्हें भोजन के लिए आर्यता की। परन्तु उन महागुरुओं ने स्वीकार न की। राजा ने समझ—राजा की आय में पाप का भाग होने से ये महात्मा मेरा अन्न स्वीकार नहीं करते। अतः उसने गर्वपूर्ण किन्तु वास्तविकता का चोटक यह वचन कहा—

नभे स्तेनो जनपदे न कवयों न मधय ।

नानाहितानिनीचिद्वान् न स्तेरो स्वरिणोकुलः ॥

अर्थात् "ने देश में कोई चोर नहीं, कोई कपूज नहीं, कोई धाराही नहीं, अग्निहोत्र न करनेवाला कोई नहीं, वेपदा-सिखा कोई नहीं, अग्निचारी कोई नहीं, ब्यभिचारिकी कंसे हो सकती है?" इस पर महात्माओं ने भोजन कर लिया।

आज यदि वह राजा भारत में किसी भ्राति प्रा सके तो वह इस देश को प्रह्वान न सके। प्राय इस देश में चोरो की, पदे-लिसे चोरों की, समाज के शिरोमणि चोरों की, रक्षा के नाम पर चोर करने-वाले चोरों की सम्पन्न होते हुए भी चोरी करनेवाले चोरों की भरमार है। शराबियों, दुराचारियों का तो कहना ही क्या? विद्याहीनता में यह देश सबको शिरोभूषण है। यह अवस्था देखकर वह राजा अश्वपति विस्वास हो न करेगा कि यह भारत बर्ष है।

देवता को इस पतिवत अवस्था से उन्मत्त इसे फिर जगद्गुरु पद पर आसीन करना प्रत्येक भारतीय का प्रथम कर्तव्य है। उस धन्यता को पुन प्राप्त करने के लिए अथर्वना का त्याग अल्पम् अनिवार्य है जिनमें से शराब ने तो हमारा सर्वनाम ही कर दिया है। जब हम पराधीन थे तो संघर्षी शासन ने अपने दो प्रयोजनों की सिद्धि के लिए यहाँ शराब का प्रचार किया—पहला तो यह कि भारतवासी मद्यमत्त होकर बुद्धिहीन तथा विधिपर शरीर होकर किसी भी आदि-जन में समर्थ न हो सकें। दूसरा शराब के विक्रय से आय में वृद्धि होती थी। वह शासन भी कँसा, जिसके बाधार स्तम्भों में 'शराब' भी एक प्रधान स्तम्भ है। विदेशी शासन तो चला गया। परन्तु अपने सहज दुर्युगों और दोषों को साथ नहीं ले गया। वे अभी तक हमारे देश को अपनी दासता के बन्धन में बाँधे हुए हैं।

शास्त्र में शराब एक मनोसा विषयान है। देहात का किसान आज इस दुरार्द्र में डूबा हुआ है। किसानों के मसीहा, किसानों के नेता दोनबन्धु सर छोटाराम, दानवीर सेठ छात्राराम, अमर मुलसिंह, चौ० चरणसिंह आदि ऐसे महागुरुओं को चुके हैं जो शराब को हमेशा घुरी समझते थे तथा किसानों को इस दुरार्द्र से दूर रहने की नेक सलाह देते थे। लेकिन किसान इन मार्गस महागुरुओं को शिसावों को आज भूल गया है। इतिहास पर दृष्टिपात करने से पता चलता है कि शराब की लत से दुनिया के बड़े-बड़े साम्राज्य नष्ट हो गए। इसी शराब ने राजपूतों का राज्य क्षीना और मुसलमानों का ताब क्षीना। ब्रह्मचरियों का नाम शराब से हुआ। यहूदी मुसलमान, प्रबंध सभी शराब की दुरार्द्र से लताशुद्ध हो भारतभूमि को छोड़गये। मि० मिल्टन ने कहा था—संसार की सारी सेनाएं मिसकर इतने लोगों एवं सम्पत्ति को नष्ट नहीं कर सकती, जितना शराब कर देती है।

महात्मा गांधी ने कहा था—' मैं शराब को सभी पापों की जननी मानना हूँ। यहाँ तक कि शराब देखावृत्ति से घुरी है। यदि मुझे माया चष्टे के लिए लिफ्टेटे शासक बना दिया जाए तो मैं बहुरी कसम से हो शराब को बन्द कर दूँगा।'

मृत्यु वर की दृष्टि से देखा जाए तो शराब का मना सबसे घातक नशा है किन्तु भारत बर्ष का किसान विशेष कर हरयाणा का किसान विवाह के धनस पर, चुनाव के अवसर पर खुशी व गयी में

शराब अधिक होने पर पार्टी (वाय प्रायि के साथ) के अवसर पर मेहमान सने-सम्बन्धी की सेवा के बहाने प्रत्येक अवसरों पर शराब पीने पिलाने से कमी नहीं बूकता। इसमें यह धरणी शान नवान के लिए घर फूंक तमासा करने लगा है। उसे पता नहीं कि प्रति वर्ष हजारों लोग हमारे देश में शराब पीने से आकस्मिक मीठ से मर जाते हैं। आज देश में संकड़ों परिवार ऐसे मिलने जो अनाश, असहाय सम्पत्तिहीन, भुविहीन व बेघर होकर जैसे जैसे जीवन यापन करते हैं। कारण स्पष्ट है इनके पास सब सामन थे परन्तु परिवार का मुखिया शराब व अधीन जैसी शरीर शत में सारी सम्पत्ति का पीकर मर गया और परिवार को बरताव कर गया।

अच्छे भले पडे लिले शराबी लोगों की माय्मता है कि शराब से बिम्बा, पीडाओं और तनाव से मुक्ति मिलती है एवं शरीर में रक्तमि जाती है किन्तु स्वास्थ्य-विकारकों एवं बेनामिकी का कणन उपरोक्त मत के सवथा विरुद्ध है। डाक्टर लोगों का कहना है कि शराब में 'अलकोहल' नाम का विष होता है जिसके कारण पीने वाले के रक्त में उत्तेजना हो जाती है। उसको स्वभा जोर पेट की सूखन से पूछ जाती है उससे खून स्वचा की धोर आने से स्वचा गमं हो जाती है तो मनुष्य गर्मी अनुभव करता है। इस प्रकार शरीर की बहुत सी गर्मी ब्यर्थ में बाहर निकल जाती है। यह गर्मी शक्ति होती है। शराब के नये के साथ यह भी काफ़ूर हो जाती है धोर तब दुनियां नौरस एवं शून्य बगली है। उसकी वास्तविकता उसे कष्ट पहुँचाती है। यह आनन्ध एक घोसा है। परिणाम घातक निकसता है।

शराबी यह भी समझते हैं कि शराब पीने से पाचन शक्ति बढ़ती है इस पर डाक्टर लोग कहते हैं कि शराब का प्रभाव भेदे के धनक उत्पन्न करने वाले अंग पर बुरा पड़ता है। जिससे अजोएं दूद नहीं होता परन्तु शराब के प्रभाव से दब जाता है और वह शराब के नये में अजीबों के कष्ट को अनुभव नहीं करता। नये के कारण वह जो अधिक भोजन खा जाता है वह पचता नहीं और न ही शरीर का अंग बनता है। कँसा का कँसा मल के रूप में निकल जाता है। अन्न जोर पेट दोनों सराब होते हैं। इसलिए शराब से शक्ति बढ़ती नहीं पड़ती है। शराब में जो घनकालिण होता है उससे दिमाग और शरीर में उत्तेजना उत्पन्न होती है और शराबी बस वा शक्ति अनुभव करता है। किन्तु यह उसकी कल्पना होती है जब नया उतरता है तो रोता है और तिर बुनकर पड़ताता है। शराब के नये में वह यह समझता है कि ऐसे धन्धर नई शक्ति का संचार हो गया है किन्तु इस अलकोहल से बाँध गक्ति पर बुरा असर पड़ता है। शरीर की सब क्रियायें घुस और ठीकी पड जाती हैं। बस का मन्डार शरीर का सार वीय शराब की गर्मी से पतला पड जाता है और बाहर निकलने लगता है। इस प्रकार शराबी वीय हीन हो जाता है उसका हृदय दुर्बल और मुख निलिख हो जाता है। शरीर धीर मर शुकम में सगता है। शराबी बाससी निरत्साहो कामी और कोपी हो जाता है। शराब मनुष्य की धोर बुझाती और मोंडाहारी बनाती है। दुनिया का कौन सा पाप है जो यह पीने वाले से नहीं कराती। यह लोक और परलोक को विनाशती और मनुष्य जीवन की मिट्टी में मिटा देती है। हमें दुःख है कि 'देशों में देश दुराशा, शित दूध दही का लाखा' की प्रसिद्धि प्रायः प्रवेश ऐसे लोगों को अपना नेतृत्व सौंपता है जो अधिकोश शराबी होते हैं अतः यह सत्य है कि—

जल रहा यह घर मेरा कंसे अताऊ तुमको ।

मेरे अपने हो है इस कर को जमाने वाले ॥

अन्त में 'सर्वहिसकारी' के माध्यम से शराबी भाइयों से निवेदन है कि—

जो डूबे हैं गिलासों में, न उभरे बिम्बानी में ।  
हजारों वह गये इन बोधनों के मन्ध पानी में ।

# धर्म का स्वरूप

सांख्यी शास्त्री एम० ए०, जनता कालोनी, रोहतक

धर्मसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने धर्मसमाज के नियम रूप १० भौतियों में प्रथम तथा द्वितीय नियम में ईश्वर को सत्ता एक स्वरूप का वर्णन करते के उपरान्त तीसरे नियम में धर्म के विषय में कहा—“वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।”

क्योंकि स्वामी जी महाराज ने पूर्ण धर्म का वास्तविक स्वरूप वर्णन, स्मृति ग्रन्थों में विद्यमान होते हुए भी सामान्य जनता की पहुँच से बाहर हो रहा था सब ओर श्रद्धा का रूप श्रद्धाकार व्याप्त था जिसके आचरण ने सब कुछ पूरी तरह जकड़ रखा था। अतः मानव का परम धर्म वेद पढ़ना सुनना है इस बात को महर्षि दयानन्द ने पुनः प्राणियमान को स्मरण कराया।

मनुस्मृति में भी मनु महाराज ने धर्म के लक्षणों का जहाँ वर्णन किया है वहाँ सर्व प्रथम वेद को ही स्वीकार किया है—

वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वल्प च प्रियमात्मनः ।  
एतच्चतुर्विधं प्राणैः साक्षाद् धर्मस्य लक्षणम् ॥

मनु० १/१०

धर्मात् वेद, स्मृति, श्रेष्ठ आचरण तथा जो अपनी आत्मा को प्रिय करे ये धर्म के साक्षात् चार लक्षण हैं।

स्मृति को धर्म शब्द के रूप में वैदिक वाक्य में माना गया है। इसलिए मनुस्मृति में मनु महाराज ने धर्म के लक्षण बड़ी विषयता एवं विषय रूप से वर्णन किए हैं।

धर्म का प्रथम लक्षण वेद माना है क्योंकि वेद में परा एवं अपरा दोनों प्रकार की विद्या है इसलिए सबसे पूब मनु महाराज ने वेद को धर्म का लक्षण बताया। वेद पढ़के तदनुसार आचरण करना ही मनुष्य का धर्म है। इतना ही नहीं अपितु “नास्तिकों वेद निम्नकः” लिखते हुए नास्तिक की परिभाषा भी करदी कि जो वेद की निन्धा करता है वह नास्तिक है।

नास्तिक शब्द पर यह व्याकरण की दृष्टि से विचार किया जावे तो पाणिनी मुनि द्वारा अष्टाध्यायी में “अस्ति नास्ति चिद्धं मतिः” ४/४/६० सूत्र द्वारा नास्तिक शब्द बनाता है जिसकी व्याख्या में काशिकाकार लिखते हैं कि यहाँ इस सूत्र से मति सत्ता मात्र में प्रत्यय चक्रण से शब्द नहीं बनते बरन् “नास्ति परलोके मतिरस्य सः नास्तिकः” इस अर्थ में उपर्युक्त नास्तिक आदि शब्द बनते हैं। इस प्रकार से दोनों ही व्युत्पत्ति एवं परिभाषाओं की सम्मम्यता है, कारण कि जो परलोके एवं पुराजन्म को नहीं मानता वह ही वेद की निन्धा कर सकता है अतः मनु महाराज ने अन्वयस्था बाँध दी कि वेद की निन्धा करने वाला ही नास्तिक होता है।

वेद के स्वाध्याय को परम तप भी मनु महाराज ने स्वीकार किया है तथा जो वेद का पढ़ना छोड़कर वेद चिद्ध पुस्तकों के पढ़ने में धन करता है वह स्वयं ही नहीं बरन् बंध सहित शूद्रत्व को प्राप्त होता है ऐसी घोषणा भी की है—

वेदमेव सदा म्यसेत्तपरतद्व्यम् द्विजोत्तमः ।

वेदाभ्यास्तो हि विप्रस्य तपः परिमिहीष्यन्ते ॥

योऽनवीत्य द्विजो वेदमभ्यस्य कुस्ते भ्रम्यम् ।

स जीवन्मिष शूद्रव्यभामु न गच्छति साम्ब्यम् ॥

मनु० २/११०-१११॥

इस प्रकार प्रथम लक्षण निरूपण करते धर्मशास्त्र में धर्म का द्वितीय लक्षण स्मृति को स्वीकार किया गया है। क्योंकि धर्मशास्त्र अर्थात् मनु महाराज यह भली भाँति जानते थे कि वेद ज्ञान का प्रकाश है और परम धर्म है। इतना होते हुए भी समाज के सभी मनुष्य वेदों का पूर्णतया नहीं समझ सकते क्योंकि सब मनुष्यों की मन

एव बाधन शक्ति एक समान नहीं होती जैसा कि वर्णन वेद के स्वयं है।

अश्रवणन् कर्णवन्त सरवा गो मनोजवेऽस्यमाः वभूवुः ।

प्रादघ्नन्तः उपकसासः उत्वे दृढा इव म्नात्वा उवेवेदुर्ध्वम् ॥

ऋ० १०/७१॥

इस मन्त्र को व्याख्या करते हुए निम्नकार शास्त्र मुनि लिखते हैं कि—“अश्रिमन्तः कर्णवन्तः सरवायः, मनसा जवेऽस्यमाः वभूवुः रास्यदधना अपरे उपकसदधना अपरे” अर्थात् सब मनुष्य समान श्रावण व कान वाले होते हुए भी ज्ञान ग्रहण करते हुए मानसिक प्रक्रिया में असमान हैं। कोई ज्ञान के साक्षात् में स्नान करते हुए मनु तक सराबोर हो जाते हैं जबकि दूसरे केवल श्रावण तक ही हुक्का लगाते हैं।

कहने का अभिप्राय यह है कि वेदज्ञान को समझने के लिए सभी में समान रूप से ऊहाप्रीह नहीं होती प्रत्येक दूसरे क्रम में धर्म का लक्षण मनु जी ने बतलाया स्मृति।

जिनकी वेदों को समझने की असमर्थता है वे स्मृति ग्रन्थ पढ़कर तदनुसार आचरण करे और जीवन को संकलता को मोरे से बाधें तथा धर्म का पालन करे ऐसी व्यवस्था मनुस्मृति में है। क्योंकि स्मृति की भाषा वेद की भाषा से अत्यधिक सरलतम है।

परन्तु यदि दुर्भाग्यवश इतना ज्ञान नहीं कि स्मृति ग्रन्थ पढ़ सकें तब धर्म का स्वरूप कैसे जाना जाये? क्या ऐसे व्यक्तियों के लिए धर्म जानना वा तदनुसार आचरण करना आवश्यक नहीं है? परन्तु नहीं, ऐसे व्यक्तियों के लिए ही धर्म का तीसरा लक्षण बताया है सदाचार। व्याकरण बुद्धि से सदाचार को अर्थों का शोक्तक है। १—सतया आचारः सदाचारः श्रम्यत् श्रेष्ठं दुर्गमं का आचरणम् । १—सत् वासी आचारः सदाचारः श्रम्यत् श्रेष्ठं आचरणम् ।

इस कारण से मनु महाराज जी धर्म की व्यवस्था बाँधते हुए कहते हैं कि जो वेद भी नहीं पढ़ सकता, स्मृति ग्रन्थ भी जिसकी बुद्धि गम्य नहीं है ऐसा मनुष्य धर्म का स्वरूप गम्य नहीं है ऐसा धर्म का स्वरूप जानने के लिए निराश न हो बरन् उसके लिए धर्म का लक्षण है सदाचार।

सदाचार से अभिप्राय है कि उसके समीप अथवा समर्थ में जाने वाले जो श्रेष्ठ पुरुष महात्मा साधु सत्यासौ रहते हैं उनसे आचरण को देखकर तदनुसार अपनी श्रेष्ठ आचरण बनाए, यह सदाचार भी धर्म के पालन करने में परम सहायक होगा जो कि धर्म के लक्षणों में तृतीय क्रम में आता है।

चतुर्थ नम्बर पर मनु जी महाराज में धर्म का लक्षण बहुत सुन्दर तथा सरल शब्दों में बताया कि “स्वल्प च प्रियमात्मनः” अर्थात् यदि उपर्युक्त तीनों लक्षण धर्म पालन में, धर्म का स्वरूप जानने में सहायक न बने तब भी धर्म का ज्ञान, पालन तथा तदनुसार आचरण ही सकता है “स्वल्प च प्रियमात्मनः” के अनुसार। अर्थात् जैसा व्यवहार तुम्हारे प्रात्मा को प्रिय लगता है वैसा ही व्यवहार तुम दूसरों के साथ करो। यदि ऐसा करते हो तो धर्म के रास्ते पर चल रहे हो।

कितना सस्ता तथा सुयोग्य है चौथा लक्षण, क्योंकि ससार का प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि मुझ से कोई झूठ, कडवा न सोके, अश्रद्ध तथा छल कपट का व्यवहार न करे। तब मनु जी कहते हैं कि तुम्हारा भी यह धर्म है कि किसी के साथ छल कपट का व्यवहार तथा असत्य एवं श्रद्धि सम्मानण न करो। यदि तुम ऐसा कर पाओगे तब प्रशस्तः धर्म का पालन कर लओगे।

इस प्रकार से धर्म का स्वरूप जानने के लिए तथा धर्म का पालन करने के लिए वेद का स्वाध्याय परम आवश्यक है। यदि मनुष्य दुर्ब बुद्धि के साथ कोई भी कामना करके तत्प्राप्ति का प्रयत्न करता है तब उनमें सफलता अवश्यम्भावी है। आवश्यकता है केवल सधन शोर दृढता की।



## राष्ट्रभाषा का स्वाभिमान क्यों नहीं ?

किसी भी राष्ट्र की राष्ट्रभाषा उस देश को भावनात्मक एकता में संयोजने वाली कड़ी हुंदा करती है। अपनी राष्ट्रभाषा का स्वाभिमान से देखने से राष्ट्रोत्थान की वेतना का संचार करता है। देश में राष्ट्रभक्ति को लहर को जन्म देता है। स्वयं ब्रिटेन में विदेशी आधिपत्य का प्रभाव के कारण अंग्रेजी का राष्ट्रीय जीवन ने कोई स्थान नहीं था। लेकिन भाषा और फुज का श्री बोलचाल था। किन्तु संवसपीयर और जॉनसन जैसे देशभक्त लेखकों के कारण जिन्होंने ब्रिटेन की जनता ही भाषा अंग्रेजी को साहित्य और दासकी कामकाज में लोकप्रिय ज्माने के आन्दोलन का नूतनता किया। इंग्लैंड में फूड और दरिद्र मजदूरी जाने वाली अंग्रेजी भाषा को राजकीय कामकाज में स्थान मिलने लगा। न्यायालयों में अंग्रेजी के व्यवहार की अनुमति मिली। इंग्लैंड में प्राग्ति आई और इंग्लैंड ऊंचे राष्ट्रों की श्रेणी में लडा हो गया।

जोटा-सा देश इच्चाईल आज मध्य एशिया में जो एक महाशक्ति के रूप में प्रसक्त उन्नत किये लडा है उसकी सफलता का मूलभूत रहस्य भी उनकी राष्ट्रभाषा हिन्दू के लिए इच्चाईल के लोगों का उत्कट प्रेम ही है। १९४८ में जब इच्चाईल को स्वतन्त्र देश के रूप में मायता मिले तो वहा बहुत कम लोग राष्ट्रभाषा का ज्ञान रखते थे क्योंकि अल्पकाल अल्पकाल भाषा-भाषी देशों से आकर यहुदी लोग इच्चाईल में बसे थे। हिन्दू को तो मृत भाषा ही माना जाता था। अंग्रेजी, जर्मन, पोलिश, फ्रेंच भाषा-भाषी का बहुमत था तो भी इच्चाईल के देशभक्त नेताओं ने बहुसकल्प लिया कि समूचे राष्ट्र को यहुदियों की प्राचीन भाषा हिन्दू का ज्ञान करायेंगे। केवल हिन्दू में ही राजकीय कामकाज चलाने की प्रतिया की। यहाँ तक कि सेना में भी हिन्दू पढ़ाने का कार्यक्रम निरधारित किया गया। राष्ट्रभाषा के प्रति प्रगाथ प्रेम और श्रद्धा उत्कट राष्ट्रभक्ति के रूप में प्रस्तुतित हुई। ससार ने देखा कि छोटे से नवोदित राष्ट्र इच्चाईल ने अपने से मो गुना अनसुखा वाले घरब देशों के भरपूर आक्रमण से अपनी मातृभूमि को रक्षा की।

किन्तु भारत है कि अपनी सम्पन्न राष्ट्रभाषा हिन्दी को जिसके पीछे संसार की सर्वोत्कृष्ट भाषा संस्कृत को महान् धरोहर है, निरादृत और पददलित करने पर तुला हुआ है। सविधान में हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित किया गया था किन्तु भारत की केन्द्रीय सरकार ने हिन्दी को कभी राष्ट्रभाषा का स्थान प्राप्त नहीं होने दिया। सरकार का कामकाज में केवल अंग्रेजी को बनाए रखने की जिब कमी रही। उच्च न्यायालयों से तथा भारत के उच्चतम न्यायालय में हिन्दी का प्रयोग निषिद्ध है। अधिकारियों के लिए अंग्रेजी का ज्ञान आवश्यक है। सरकार द्वारा अंग्रेजी को ही सम्मान दिया जाता है। सरकार दूरदर्शन द्वारा अंग्रेजी का ही प्रचार करती है। अंग्रेजी को जन-जन की भाषा बनाने का स्पष्ट प्रयास है।

राष्ट्रभाषा मात्र भाषा ही नहीं है बल्कि एक संस्कार भी है। जहाँ राष्ट्रभाषा से राष्ट्रोत्थान के संस्कार निरभते हैं वहाँ विदेशी भाषा से राष्ट्रोत्थान के संस्कार नष्ट होते हैं। यही कारण है ८० करोड़ की जनसंख्या वाला भारत जेना प्राचीन राष्ट्र जिसने अनेक देशों को स्वतन्त्रता और संस्कृति प्रदान की उन्हीं ज्ञान और धर्म के प्रकाश से शालोक्ति किया। जो देश कभी विषय गुच लहवाता मात्र पिछड़े राष्ट्रों की श्रेणी में लडा अपनाति हो रहा है। जब तक देश में राष्ट्रभक्ति का धुंकाग जाएगा, राष्ट्रभाषा का निरादर होगा देश उन्नति नहीं कर सक्ता। ससार के छोटे-छोटे देश भी अपनी राष्ट्रभाषा का प्रादर करते हैं किन्तु एक भारत ही है जहाँ राष्ट्रभाषा के ट्रेणी कुञ्ज नेताओं का बर्चस्व सरकार पर अजो तक बना हुआ है, जो जब समाप्त किया जाना चाहिये।

श्री० कृपाशचन्द्र, सकट मोचन धाधम, नई दिल्ली-२२

## आर्य वीर दल की प्रान्तीय बंडक

आर्य वीर दल २७ भाषा की प्रान्तीय बंडक दिनांक २७-४-६१ जनशरार शक्ति दल २७ भाषा का सम्मान रामनर बौद्ध में होगी। जिसमें आगामी शीर्षकावकाश के लिए विचिरो को घोषणा बनाई जावेगी।

—वेदप्रकाश धार्य, प्रान्तीय मन्त्री

## कवि की अन्तर्व्यथा और कामना

(वेदोपदेशक ब्रह्मप्रकाश धार्य की विद्याभारतस्यति)

स्वाधीन भारत में हमारी यह दशा क्यों हो रही ? इतिहास अपने का पता हम बालकों को है नहीं। धाराबा विचिन्तन और भगत को जो हुई कुर्बानियां। भूल उनको है गये क्या कम हैं ये नायनिया। हम कौन थे क्या हो गये इस बात को सींचो जरा। रागा शिवा गौरविक को उस जीवनी में बना भरा। गौतम कणाद पतञ्जलि को भावनाय खो रही। दयानन्द विवेकानन्द को आशाय फिर से सो रही। गौरव कहा अब रह गया हम राम को सन्तान हैं। हे कृष्ण प्यारे ध्रुव तेरी सन्तान क्या सन्तान हैं। मानुसभित का पतन कैसे पतन यह हो गया। सारी धर्म्या कैसे कहे सबस्व धरणा खो गया। इनके पतन के मार्ग में कुञ्ज दोष इनका है नहीं। अधिकार से बन्धित किया क्या पाप का फल है नहीं। मार्गी सुलभा व सीता उमिन्ना बनती नहीं। मन्दालसा की गल तो अब कोई भी करता नहीं। अब तो खिबर देखो उषर ही एक्टरों की जात है। ब्रह्मविद्या तो यहाँ ध्रुव यात को ही वात है। पथभ्रष्ट नेता ही रहे आदमों इनका है नहीं। समय नियम का पाठ तो कथनी में है करनी नहीं। काले श्री काले है यहाँ सब साडें भंकासे बने। काले ही धर्मो में फसे ये कालिमा में है सने। हे प्रभो ! इस राष्ट्र का गौरव पुनः भी प्राप्त हो। सब ओर क्रन्दन है मचा सत्वर ही उसका ह्रास हो। भगवान् सारे विषय में गूजे हमारी भारती। फिर से सारा जब उतारे भारती की आरती ॥

## शराब के ठेकों पर महिलाओं का धरना

अम्नाला, १४ अग्रेल (एम)। अम्नाला छावनी स्थित बाहरी वस्ती एकसा विहार कालोनी की महिलाओं ने भी गत २ अग्रेल से नुली अगव को एक दुकान के बाहर लगातार धरना दे रखा है। उनकी मांग है कि कालोनीवासियों को हुरयाणा सरकार द्वारा दिया गया यह उपहार तुरन्त वापस लिया जाए।

आज जब इस संवाददाता ने क्षेत्र का दौरा किया, तो शराब की यह दुकान बन्द थी और लगभग ५०-६० महिलाये रामायण की चौपाइयों का जाप कर रही थी। शराब के ठेकेदार के दो कर्मचारी उक्त दुकान के साथ पडो चारपाई पर तो रहे थे।

धांदोलनकर्ताओं के प्रवक्ता श्री कौशल के अनुसार धरना व रामायण पाठ का यह कार्यक्रम शराब की दुकान हटाए जाने तक जारी रहेगा। उल्लेखनीय है कि यह ठेका बस टैंक से मात्र ५-७ गज और मन्दिर की जमीन के बिलकुल सामने है।

(दैनिक नवभारत टाइम्स से)

## आर्यसमाज कुराड़ (सोनीपत) की स्थापना

मन्ना के प्रचारक पं० रतनसिंह आर्य के प्रचार के फलस्वरूप प्रायंममाज के विभिन्न नेताओं सर्वेधी देवप्रिय श्री धार्य, जिला सोनीपत वेदप्रचार मण्डल के प्रधान सत्यधी जी शारधी, महाधाय टेकचन्द जो आर्य के सत्प्रपत्न्यों से ३१-३-१९६१ को बंदिक्त संसर्ग के साथ आर्यसमाज की स्थापना की गई तथा निम्न पदाधिकारी नियुक्त किए गए।

प्रधान—श्री महाधाय टेकचन्द, उपप्रधान—श्री हरदेवा (हरिचनन), मन्त्री—श्री मा० हरजानसिंह, उपमन्त्री—श्री मा० महेशसिंह, प्रचार मन्त्री—श्री मा० सजानसिंह, कोषाध्यक्ष—श्री सेठ सुरवरचण, पुस्तकालयध्यक्ष—श्री मा० सुरेशकुमार, लेखा निरीक्षक—श्री मा० सालचन्द। इसके साथ यह भी निर्णय लिया गया कि फसल को कटाई के पश्चात् श्रीप्र ही वेदप्रचार कार्यक्रम आगोजित किया जायगा।

विनोत—हरिचन्द सैधी

## राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा द्वारा प्रेरित “हम चालीस”

‘हम चालीस’ राष्ट्रभाषा हिन्दी को अगले सात वर्षों में सारे भारत में उपयोग में लाए जाने के उद्देश्य को पूर्ण करने हेतु प्रयत्न करनेवाले निष्ठावान हिन्दी प्रेमियों का एक समूह है, उसका न तो कोई संबन्ध है, न कोई पदाधिकारी और न ही किसी बैंक या फिन्ताव में कोई हिसाबो खाता। ये चालीस निष्ठावान कार्यकर्ता राष्ट्रभाषा प्रचार के लिए अपने सच से जो भी कार्य करते उसकी शलक ‘राष्ट्रभाषा’ मासिक के एक स्तम्भ द्वारा परस्पर एक-दूसरे को देते रहेंगे।

इसका प्रत्येक सदस्य प्रति माह एक बार नए १०-१५ साधियों से सम्पूर्ण कर एक स्थान पर एकत्र करेगा और उनसे राष्ट्रभाषा के महत्व पर चर्चा करेगा। इसमें सम्मिलित होनेवालों का गुणनफल साधारण सात वर्षों में करीब ४० करोड़ तक हो सकता है। यह समूह सिर्फ एक करोड़ भी हो जाए तो अपूर्व सफलता मानी जाएगी। गुणन फल से बढती संख्या प्रतिवर्ष भारत के किसी एक स्थान पर एकत्र होगी और अगले वर्ष के लिए अपने उद्देश्य को पूरा करने हेतु पुनः शक्ति एकत्र करेगी। इसमें सम्मिलित होने वाले लोग अपने सच से जानेने और भारत की भावनात्मक एकता को दृढ़ करने के लिए कटिबद्ध होंगे।

इस कार्य को योजनाबद्ध तरीके से पूरा करने का प्रशिक्षण इन चालीस कमठ व्यक्तियों को मत २२ से २६ अक्टूबर १९६१ तक राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा की ओर से दिया गया है।

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा १९६६ में अपनी ‘हीरक जयन्तों’ मनाएगी। तब तक ‘हम चालीस’ के उद्देश्य को पूरा करना है। इसी लिए ७ वर्ष को मर्यादा रखी गई है। उद्देश्य नीचे दिए हैं :-

- १- भारत में प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में ही हो।
- २- साक्षरान्त परीक्षा एवं उच्च शिक्षा में अग्रणी को अनिवार्यता न हो।
- ३- सरकारी कामकाज में प्रान्तीय स्तर पर प्रादेशिक भाषा और राष्ट्रीय तथा अन्तरिम व्यवहार में राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रयोग हो।
- ४- भारत के लोग अपने हस्ताक्षर नागरी लिपि में करें।
- ५- भारतीय सचिवालय में ऐसी कोई भी धारा जो राष्ट्रभाषा हिन्दी को कार्यान्वित करने में सहायक आसती हो उसे दूर किया जाए।
- ६- जहाँ जो काम हिन्दी में हो रहा हो उसके साथ अग्रणी को अनिवार्यता न रखी जाए।

‘हम चालीस’ के इन सदस्यों को उपर्युक्त उद्देश्य पूरा करने के लिए दिनांक २६ दिसम्बर ६० से २ जनवरी ६१ तक बम्बई में आयोजित प्रशिक्षण शिविर में प्रशिक्षण दिया गया है। ये प्रशिक्षित चालीस सदस्य अपने क्षेत्र में जाकर अगले वर्ष में अन्य ४० कमठ व्यक्तियों को इसी प्रकार का शिक्षण देंगे।

ये शिक्षार्थी इसी क्रम से थुंलवाबाबद शिविर आयोजित करते गए तो आगामी ७ वर्षों में करोड़ों लोगों तक यह संदेश पहुंचाया जा सकेगा। शिविर में प्रशिक्षित लोग यदि दस प्रतिशत भी क्रमबद्ध आयोजन करने में सफल हुए तो कुछ साल अर्थात् निश्चित ही मानसिक रूप से राष्ट्रभाषा के समर्थक को जन-जन में पहुंचाकर एक श्रद्धालु विचारक्रान्ति लायेंगे।

६० साल का लक्ष्य प्राप्त न हो सके और मात्र दस प्रतिशत सफलता मिल सकी तो भी सम्बोध का विषय। षाठ साल की यह सेना अग्रणी को गुलाम मानसिकता दूर करने में प्रबल शक्ति सिद्ध होगी।

इंग्लैण्ड को अपनी भाषा अग्रणी लाने में ४०० वर्ष लगे थे। तो

हमारे विशाल देश में हमारे ८८ प्रयास से ७ साल के प्रयत्नों से हिन्दी की मानसिकता बनाने का यह प्रयास है। जिसकी श्रद्धा हो वे इस योजना को सफल बनाने में महद्योग दें। इसे हमके लिए कोई आर्थिक सहायता नही चाहिये। चाहिये निरंक मानसिकता। आइये, भारतीय प्रसिद्धता को जगाने के लिए एक कटिबद्ध हो।

## सोनोपत में महात्मा दयानन्द की स्मृति में गायत्री महायज्ञ

स्वामी जगदीश्वररामन्द महाराज की अध्यक्षता एवं ब्रह्मायत में तपोभूति महामाया दयानन्द महाराज को पृथक् स्मृति में हिन्दू मन्त्र, प्राय वोर दक (मण्डल) सोनोपत, मत जिन्हा कन्याया रामनोला क्लब सोनोपत के तत्वाधान में गायत्री महायज्ञ एवं विज्ञान मण्डारे का आयोजन किया गया। इस अवसर पर ब्रह्मचारी आचार्य ब्रह्मिसेवर जी (गुरुकुल कालवा), स्वामी योतानन्द, बहिल प्रतिभा शुक्ला, श्री मुभाएचन्द आर्य, श्री भ्रान प्रकाश, श्री शान्तेन्द्र शास्त्री (स्वतन्त्रता सेनानी), आशानन्द वचना (सयोजक हिन्दू मन्त्र), हरिचन्द्र स्नेही (मण्डलपति आर्य बोरदल), श्री प्राधानन्द (मैजिक लास्टेन वाने), श्री मोभराज श्याम, श्रीमती सुनीता अरोडा, श्रीमती शोभादेवी, मगलमा प्रेममिथु जी वानप्रस्थी (गम्भीर), दयानन्द जौहर, रघुनाथ शास्त्री, अमरनाथ श्याम, दयालचन्द, छवीलदास के प्रभावशाली प्रवचन एवं गीतोपदेश हुए। बेंसाखी पर्व पर मुलतानी कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। —हरिचन्द्र स्नेही

## प्रवेश सूचना

महर्षि दयानन्द अन्तारष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टकारा जि० राजकोट (सौराष्ट्र) में नए सत्र ६०-६१ १९६१-६२ में १ जुलाई ६१ से प्रवेश प्रारम्भ है।

इन विद्यालय में वैदिक संस्कृति के प्रचारार्थ उपदेशक एवं पुरोहित तथा धर्मशिक्षक तैयार किये जाते हैं।

४ वर्ष के पाठ्यक्रम में वेद, उपनिषद्, व्याकरण, साहित्य एवं ऋषि दयानन्दकृत ग्रन्थों का अध्ययन कराया जाता है।

छात्रों की धारास, भोजन, वस्त्र, पुस्तक, लेखन सामग्री, साबुन व तेल आदि की सम्पूर्ण व्यवस्था जिना किसी भेद भाव के विद्यालय की ओर से संबंधी निःशुल्क होती है। छात्र को स्वयं किसी भी प्रकार का आर्थिक बोझ नहीं उठाना पड़ता।

अतः दसवीं (मैट्रिक) संस्कृत सहित प्रवेश के इच्छुक छात्र विद्यालय की नियमावली एवं प्रवेश-पत्र यथा समय निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं।

—विद्याभास्कर पं० आर्मप्रकाश शास्त्री, एम.ए.  
प्राचार्य

## विवाह संस्कार पर दान

आर्यसमाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक भी नृणासिंह जी आर्य के पौत्र श्री जयदेव का विवाह संस्कार २४ फरवरी को जठराना जि० यमुनानगर में वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। सभा को ४० वेद प्रचारार्थ दान भेजा गया है।

## आर्यसमाज धरोण्डा का वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज धरोण्डा जि० कन्याल के वार्षिक उत्सव २६ से ३१ मार्च के अवसर पर विद्याल सोभायाना निवासों में हुआ। इस अवसर पर स्वामी प्रोमानन्द जी सरस्वती, डा० देवव्रत जी, आचार्य देवव्रत जी, श्री रघुनाथसिंह जी शास्त्री, पं० सुखदेव शास्त्री, पं० चन्द्रपाल शास्त्री आदि के वेदोपदेश तथा पं० चिरञ्जीवाल तथा पं० मुरारोवाल वेचन के मनोहर भ्रजन हुए। सभा को एक हजार ६० दान दिया गया।

## शोक समाचार

कन्या गुरुकुल गारीपुर जुलाना (जोध) के सचालक स्वामी सचचिन्नेन जी का २ अप्रैल को निधन हो गया। १८ वर्षों का शान्तिव्रत किया गया।

## गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के दीक्षान्त-समारोह पर स्वागत-भाषण

अद्वय संघासीबन्ध, माननीय परिदृष्टा महोदय, आदरणीय कुलासिधियों जी, माननीय प्रधानमन्त्री श्री चन्द्रशेखर जी, आर्यवन्दुओं, माताओं, बहिनों, नवदीक्षित स्नातकों, ब्रह्मचारियों एवं सहयोगियों !

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय का यह परम नोभाष्य है कि आज विश्वविद्यालय के १५ वें दशान्त समारोह के शुभ अवसर पर भारत के माननीय प्रधानमन्त्री श्री चन्द्रशेखर जी हमारे मध्य बिराजमान हैं। मैं इस दीक्षान्त समारोह में उपस्थित सभी विद्वत्बन्ध तथा समस्त कुलवासियों को और से आपका हार्दिक स्वागत करता हूँ और साथ ही अनुमोद करता हूँ कि यदि आपके उचित वास्तव्य में हमारी ओर से कोई नृति रह गई हो तो उसपर इस विश्वविद्यालय के सीमित एवं अल्प साधनों को ध्यान में रखते हुए ध्यान न देने की कृपा करे।

अनर शहीद स्वामी अद्यानन्द जी महाराज ने प्रायः से ६० वर्ष पूर्व हरिद्वार में पुष्पलोधा गाँवस्थी के तट पर हिमाचल की उपत्यका के घने वन में जिस गुरुकुल की स्थापना की थी उस जन्मभूमि को आज फिर एक बार गंगा की बाढ़ के कारण गम्भीर खतरा पैदा हो गया है। सन् १९२४ को विनाशकारी बाढ़ से आज तक हुए भूमि के कटान के कारण पुष्पभूमि का बहिष्काश गया के नहीं समा चुका है। किन्तु जिस अवन में महत्त्वात्मा गाँव, उनके सुपुत्र, दक्षिण अन्तका के फौजिनस आश्रमवासी तथा ब्रिटिश प्रधानमन्त्री श्री रैन्डे मंत्रबानसह, वायसराय वेल्सफोर्ड और लार्ड मैस्टन जैसे महापुरुषाव ठहरे वे उस राष्ट्रीय एवं ऐतिहासिक महत्त्व के भवन को भी आगामी बाढ़ में नष्ट हो जाने का वास्तविक खतरा पैदा हो गया है। यदि हमने इस राष्ट्रीय स्मारक को बचाने के लिए तत्काल प्रयत्न नहीं किये तो नित्य की पीढ़ी हमें क्षमा नहीं करेगी।

गुरुकुल के सीमित साधनों से तथा ब्रह्मचारियों के धनदान से इस भूमि को बचाने के प्रयत्न किए गए हैं किन्तु सरकारी सहाय्य एवं सहायता के अभाव में हमारे प्रयत्न अचरे ही सिद्ध हो रहे हैं। ब्रिटिश सरकार ने गुरुकुल काँगड़ी को हर सम्भव सहायता देने की अनेक कोशिश की थी किन्तु राष्ट्रीय आत्मसम्मान के प्रतीक स्वामी अद्यानन्द ने ब्रिटिश शासकों की कोई सहायता कभी स्वीकार नहीं की। आज स्थिति पूरी तरह विपरीत है। माननीय प्रधानमंत्री जी और माननीय मुख्यमन्त्री महोदय के आदेशों के बावजूद इस दिशा में कोई प्रगति नहीं हो पा रही है।

गुरुकुल शिक्षाप्रणाली संसार की सबसे प्राचीन शिक्षा पद्धति है। भारत की इस गुरुकुल शिक्षा पद्धति का पुनरुद्धार करने के लिए स्वामी जी ने गुरुकुल काँगड़ी की स्थापना की थी। गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली के मुख्य उद्देश्य हैं : सभी ब्रह्मचारियों को अमीर-गरीब के भेदभाव के बिना समान खान-पान, समान रहन-सहन और शिक्षा के समान अवसर प्रदान करना, छात्र और तत्समाम्य जीवन व्यतीत करना, चरित्र निर्माण, गुरु शिष्य के बीच घनिष्ठ एवं निरन्तर सम्पर्क, सयम और स्वाध्याय।

गुरुकुल में इन उद्देश्यों को पूरा करने के प्रतिक्रि बौद्धिक पोषण और संस्कृत के साथ-साथ आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की उन्नततम शिक्षा द्वितीया माध्यम से देने का भी क्रम पिछले ६० वर्षों से निरन्तर चला आ रहा है।

इन दिनों गुरुकुल में निम्नलिखित कार्यक्रम पूरे करने के लिए प्रयत्न किए गए हैं :

१- बौद्धिक साहित्य, भाषाविज्ञान, संस्कृत, पाली एवं प्राकृत के अध्ययन अध्यापन एवं अनुसंधान केन्द्र की स्थापना।

२- योग शास्त्र के अध्ययन एवं अनुसंधान केन्द्र की स्थापना।

३- इस विश्वविद्यालय के द्वितीय परिसर बनाना गुरुकुल देहरादून में मानविकी के आधुनिक विषयों में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम प्रारम्भ करना।

४- भारतीय विद्याओं, प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति संस्थान की स्थापना।

५- हिमालय के पर्यावरण पर विशेष ध्यान देते हुए पर्यावरण के क्षेत्र में अनुसंधान तथा गंगाजल की प्रदूषित न होने देने के उपायों का अध्ययन।

६- विश्वविद्यालय के निकटवर्ती क्षेत्रों में ग्राम विकास की सुविधाएं जुटाना तथा ग्रामवासियों को ऊर्जा के नये स्रोतों से परिचित कराना।

उपरोक्त कार्यों के अतिरिक्त हरिद्वार तथा निकटवर्ती क्षेत्रों के निवासियों की अनेक वर्षों से माग है कि गुरुकुल को उनकी बालिकाओं को उच्च शिक्षा का प्रबन्ध भी करना चाहिए। गुरुकुल की यह माग पूरी करने में कोई हिचक नहीं है लेकिन सरकार द्वारा मायता एवं सहायता न देने के कारण यह योजना प्रायः नहीं बढ़ पाई है।

इस अवसर में माननीय प्रधानमन्त्री जी और माननीय मुख्यमन्त्री जी से यह भी निवेदन करना चाहूँगा कि वे गुरुकुल के प्राधुनिक महाविद्यालय और कृषि महाविद्यालय के भवन हमें सौंपने के आदेश सम्वद्ध अधिकारियों को देने को कृपा करें। उत्तरप्रदेश के महाप्रमुख राज्यपाल महोदय कुलवासियों को इस सम्बन्ध में आवगतान दे भी चुके हैं। अतः गुरुकुल के ये भवन हमें सौंपने में और अधिक विलम्ब उचित प्रतीत नहीं होता।

मुझे आशा हो नहीं, एवं विश्वास है कि माननीय प्रधानमन्त्री जी और माननीय मुख्यमन्त्री जी की उपस्थिति का लाभ न केवल विश्वविद्यालय की उपरोक्त योजनाओं को गति देने में और स्वामी अद्यानन्द जी की तप स्वधी एवं राष्ट्रीय स्मारक की रक्षा करने में ही नहीं मिलेगा अपितु हरिद्वार के निवासियों की कृपा महाविद्यालय की मांग पूरी करने में भी होनें ही महापुरुषाओं का सक्रिय एवं उत्सेखनीय सहयोग मिलेगा ताकि अगले शिक्षा सत्र से गुरुकुल कक्षाओं में गंगापर ब्रह्मचारियों के अध्ययन एवं निवास की सुविधा फिर से प्रारम्भ करने के प्रतिक्रि ग्राम विकास के कार्यक्रम को गति प्राप्त हो सके।

मैं एक बार पुनः माननीय प्रधानमन्त्री जी और आर्यवन्दों को कुलवासियों की ओर से हार्दिक धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने अपने अमूल्य समय में से समय निकालकर यहाँ पधारने को कृपा की और हम कुलवासियों को अपनी उपस्थिति से कृतार्थ किया।

सुभाष विद्यालंकार  
कुलपति

## आर्यसमाजों के वार्षिक उत्सव

कुचपुरा जि० महेश्वरगढ़	२०, २१ अगस्त
जंरमपुरा गुडगांव छावनी	२६ से २८ अगस्त
योगाश्रम बालानाथ धारमापुर बाड़ी जि० महेश्वरगढ़	२६ से २८ अगस्त
नाग (हिमाचल प्रदेश)	२६ से २८ अगस्त
लोहाक जिला भिवानी	११, १२ मई
नांगल (बहल) जि० भिवानी	१३, १४ मई
कौल जि० कंवल	३१ मई, १, २ जून
रादौर जि० यमुनानगर	३१ मई, १, २ जून
सांभी जि० रोहतक	६ से १० जून

जो आर्यसमाज मई तथा जून मास में अपने उत्सव अथवा वार्षिक वेदप्रचार रत्नना चाहते हैं, वे सीधे तथियाँ लिखित करके समा को सूचित करें।


—सुदार्शनदेव धार्याय वेद प्राचार्याध्याता

### प्रावचन सूचना

ध्याय प्रतिनिधि समा हरयाणा को अगस्त सप्ता की बैठक २८ अगस्त को रात १०-१० बजे रोहतक में होगी।


—समा मन्त्री

**दंतों की हर बीमारी का घरेलू इलाज**




**दंत मंजिन**  
लोगो युक्त


23 जड़ी बूटियों से निर्मित  
आयुर्वेदिक औषधि




मसूनों की सूजन




मुँह की दुर्गंध




ठंडा गर्म पानी लगना



दाँतों का द्रव्य



दाँतों का दर्द



**दंत मंजिन**  
लोगो युक्त

प्रत्येक पैकेट में 23 जड़ी बूटियों का संग्रह

महाशियाँ जी हट्टी (प्रा०) लि०

104, इन्द्रचोक रोड, काठमांडू, नेपाल ११२२ • फोन ६२१०८ • ३७०१८ ५३२४३

### प्रौढम ऋतु में जरा स्थाल रखें

✖ प्रौढम ऋतु में स्रोपहर को घर से बाहर निकलने से पहले एक गिलास ठण्डा पानी अवश्य पी लिया करे और एक साबित प्याज जेब में रख लिया करे। इस उपाय से लू का प्रभाव नहीं होता।

✖ यदि याना घर जा रहे हों तो २-४ बत्तैसे और देहराइन वाली अमृतधारा फार्मसी की बनी "घमसुभार" या शबर की बनी पुदीन हरा या इन्दोर को "प्राय सूधा" की एक छोटी अवश्य साथ रखे। उसटी, दस्त, पेट दर्द, सिरदर्द आदि व्याधियों के लिए इनमें से किसी भी एक दवा की ३-४ वृत्त बत्तैसे पर टपका पर खा लेने से बरामान हो जाता है।

✖ यदि रात को १० बजे के बाद भी जागना पडे तो १-१ घण्टे से १-१ गिलास ठण्डा पानी पीते रहें। इससे वात और पित्त कुपित नहीं हो पाते।

✖ तेज धूप में जाना हो तो सिर पर टोपी, हेलमेट हेड लगा कर जाएं या तौलिया अथवा कपड़ा सिर पर लपेट कर जाएं ताकि सिर पर धूप की सीधी किरणें न पडे। इस उपाय से लू नहीं लगती।

✖ धूप में तेज गर्मों में घुसते हुए ठण्डा पेय न पिएं, घर पहुँच कर भी तत्काल ठण्डा पानी न पिएं। थोड़ी देर सब रूबर और जब पसीना सूख जाए तथा शरीर ठण्डा हो जाए तब चूट-टचू, चर धीरे-धीरे पानी पिएं।

✖ धाम को मारी, तले हुए, तेज मिर्च मसाले वाले और उष्ण प्रकृति के पदार्थों का आहार न करे। इससे धमक होने पर क्षमिद्र, कज्ज या अतिसार, स्वप्न दोष, शीघ्र प्रसव, सिरदर्द, पेट दर्द, कमर, या पीठ का दर्द, मुँह के छाले और मुसुहा से होना आदि व्याधियाँ हो जाया करती हैं। दही, प्याज, लहसुन भी धाम के भोजन में न खाएँ। यदि पहले से ही अवच, उदर विकार, कब्ज, या एसिडिटी आदि की शिकायत हो तो फिर धाम को भूंग को दाल-ज चानल को लिखवी ही खानी चाहिए। ३-४ दिन में ही पेट ठीक हो जायगा।

✖ सुबह उठ कर शोध जाने से पहले ठण्डा पानी पीना, सुबह-शाम दोनों बरक शोध जाना और सोने से पहले एक गिलास मोठे दूध में १-२ चम्मक चूड़ भी डालकर चूट-चूट करने से भीना चाहिए। यह दूध धाम को भोजन करने के दो घण्टे बाद पीना चाहिए।

✖ प्यास के वेग को न रोके बरक प्यास के भी १ गिलास पानी घण्टे-घण्टे भर से पी लिया करे। शोधंग साधवावाधिपें सम्मोह भ्रम हूदगया. के अनुसार प्यास का वेग रोकने से मुँह सूखना, श्रंगों में शिथिलता, ज्ञान का अभाव, चक्कर घाना और हृदय को पीडा होना आदि परिणाम होते हैं।

✖ दिन में एक या दो बार नौलू पानी शककर डाल कर जिंकजी बनाकर या मोठी सस्सी, मोठा शबूल या मोठा पतला सत्तू अवश्य पीना चाहिए। ठण्डाई भोट कर ले सकते हैं। कुछ न मिले तो एक गिलास पानी में १-२ चम्मक रूकोज पोल कर पी लेना चाहिए। इससे शरीर में शीतलता व तरावट बनी रहती है।

### गुरुकुल खोलो आर्यसमाज बचाओ

तमाम हिन्दुस्तान, नेपाल वृत्तकर में वैदिक धर्म का हास महसूस करता है। बच्चे आर्यसमाज में नहीं आते। प्रायः रविचार को दो घण्टे के लिए सत्यंग होता है। पीछे कोई आर्यसमाज में कुछ धर्मप्रचार नहीं करता चाहता। मुसलमान ईसाई अन्य जनार्थ भी शीघ्र स्वयं दिखा रहे हैं। आय देल रहे हैं। धर में वृद्ध शोचार् को सेवा नहीं करना चाहते। स्वतन्त्रता के बाद डेड साल बर्ष भी ल इलाका चीन और पाकिस्तान के नीचे बल गया है। कहां हैं साहो और कराची के आर्यसमाज मन्दिर। आयों सोचो। हर आय अपनी आय का कम से कम शीवां हिस्सा गुरुकुल को दे। जगह-जगह गुरुकुल खोलो। बच्चों को २४ घण्टे वैदिक वातावरण में खिला जाये। ब्रह्मिक विद्वानों का पूर्ण सम्मान किया जाए तभी आर्यसमाज की पूर्ण रूपेण उन्नति होगी। बच्चों को जंदा खिलाया जाएगा वंसा ही वे करदें। जोशू वेद पढो।

—राधकृष्ण मित्तल प्रचारक, मुसलमान मन्चीन, धारमधी (उ.प्र.)

### हरयाणा के अधिकृत विक्रेता

१. मेसजें परमानन्द साहँवित्तामन, भिवानी स्टेंड रोहतक।
२. मेसजें फूलचन्द सीताराम, गांधी चौक, हिसार।
३. मेसजें सन-जय-देवबं, सारंग रोड, सोनीपत।
४. मेसजें हरीश एजेंसीस, ४६६/१७ गुड्डारा रोड, पानीपत।
५. मेसजें नगवानदास देवकीनन्दन, सरफा बाजार, करनाल।
६. मेसजें धनश्यामदास सीताराम बाजार, भिवानी।
७. मेसजें ऊपाराम गोयल, रबी बाजार, सिरसा।
८. मेसजें कुलवन्त पिकल स्टोर्स, शाप नं० ११५, माफिक नं० १, एन०आई०डी०, फरीदाबाद।
९. मेसजें गिलला एजेंसीज, सबर बाजार, गुडगाँव।

(पृष्ठ १ का शेष)

प्रभु हजारों सिरों वाला, हजारों आंखों वाला है। उसकी आंखें बहुत दूर दूर तक देखती हैं।

तुम्हारी चाही में प्रभु है मेरा कल्याण।  
मेरी भाङ्गी मत करो मैं पूरख नादान।

इसलिए वालकी, ईश्वर भक्त बनो। ईश्वर भक्ति सब रोगों को अचुक दबा है। ससार के सभी महापुरुष, ऋषि, महर्षि भक्त हुए हैं। राम, कृष्ण, प्रताप, शिवा ईश्वर भक्त थे। गांधी महात्मा ने ईश्वर का नाम लेते हुए प्राय छोड़े। स्वामी दयानन्द ने 'ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो' कहते हुए हस्तें हुए प्राय छोड़े। स्वामी श्रदानन्द ने प्रभु का नाम लेते हुए प्रभुने निःश्वास त्यागे। इसलिए तुम भी 'जोशु' का नाम स्मरण करो। कष्ट दूर होगा। सुख में सोते, जागते, लिखते-पढ़ते, खेलते-कूदते, खाने-पीते 'जोशु' का ध्यान रखो। तुम्हारा कल्याण होगा। विवेक स्वामी के शब्दों में याद रखो—

जोशु का ले नाम पंजी।  
जोशु का कर काम पंजी।

**आर्यसमाज स्थापना दिवस की भव्य झलक**

सांख्यिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पूज्य स्वामी ब्रह्मवैवोह जी सरस्वती की प्रमुखता से चंन शुक्ल प्रतिपदा (दि० १७ माघ १९६१) को आर्यसमाज (पुराना) नारनोल लिजा महोदय (हरयाणा) में आर्यसमाज स्थापना दिवस समारोह बहुत ही नोजस्नी, तेजस्वी, भव्य और दिव्य रूप से मनाया गया। इस शुभभर पर प्रातः यज्ञ और 'ओ३म्' ध्वजारोहण हुआ। समारोह की अध्यक्षता श्रीमती जयवन्ती इयोकन्द, आई.ए.एस. अतिरिक्त उपायुक्त नारनोल ने की। श्रीमती इयोकन्द ने अध्यक्षीय भाषण में महर्षि दयानन्द जी सरस्वती, आर्यसमाज के नियमों तथा नारी जाति इत्यादि पर प्रकाश डाला। इस समारोह की मुख्यवस्था प्रसिद्ध कार्यकर्ता म० साराचन्द जी प्रधान आर्यसमाज नारनोल, श्री छोटेवाल की प्रधान सुधिमां बेड़ा बलि, श्री रामनरेख जी मन्नी, श्री महावीर जी पुरोहित तथा अन्य महदुभाओं ने की। श्री छोटेवाल जी प्रधान अत्येक उत्सवों की शीति इस उत्सव में भी बहुत उत्साहपूर्वक भाग ले रहे थे। मच संयोजक का कार्य श्री हरिश्चन्द्र जी संभल ने किया। महाशय प्यारेवाल जी आर्य, स्वामी देवानन्द जी आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, पं० साराचन्द जी वैदिक, श्री बालचन्द्र जी विद्यावाचस्पति इत्यादि ने बहुत ही सुन्दर भजनों द्वारा श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया। श्री सासुचन्द जी विद्यावाचस्पति ने स्थापना दिवस की विषय-व्यापकता को बखति हुए महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के प्रतिभय सम्बन्ध, अन्तर उपदेश, अमृतमय निदेश जो उन्होंने अजमेर नगर में

आर्यों को एकज करके दिया। माने के रूप में गा कर सुनाया। (महर्षि दयानन्द जी सरस्वती कहते सगे)

**गाना**

अब आर्यों मेरी नमस्ते है, इस जग से अब मैं जाता हूँ टेका  
 वृत्त बन्दन सभिसा निकर दूर नगर से ते जे जाना।  
 मन्वेष्टि संस्कार कर बहा शरीर मेरे की जलाना है।  
 बुद्ध बाल सुनो, कर श्याल सुनो, मैं जो उपदेश सुनाता हूँ।।।  
 उपपाक भूमि में आर्यों गढ़डा एक बनाना है।  
 हड्डियों खहित मरम मेरी को पुष्पी बीच बनाना है।  
 नहीं स्वाय ह्ये, परमाण्य ह्ये, मैं परोपकार फेलाता हूँ।।।  
 बना समाधि ना पालक करना आप मेरे समधान पर।  
 उसकी लागत बनराधि लगाना किसी होनहार नोजधान पर।  
 यह पूजा बड, हो ना गडबड, मैं जब-पूजा लुडवाता हूँ।।।  
 और नहीं बाहुता यह बाहुता मैं करना उन्नत देस की।  
 देकर यह उपदेश ह्येपिरे रटने लये धुबनेस की।  
 हुए बोस बन्द, कह लालचन्द, यह रोना है नहीं गाता हूँ।।।


—महारमा सुधीसवेध

जला के झाक बना वेगी तेरे ढांचे को,  
 शराब आय है मुंह से न लगाना हरगिज।

## गुरुकुल

**कांगड़ी फार्मसी की**  
**आयुर्वेदिक औषधियां सेवन कर स्वास्थ्य लाभ करें**

**गुरुकुल**  
**पार्यवेदन**  
 पूर्ण पौष्टिक से लिए, पौष्टिकसम्ब  
 एवं शरीरलाभक स्वरूप।  
 बाली, उम्र व शारीरिक एवं  
 केन्द्रों की पूर्णता में  
 उत्तमोरी आयुर्वेदिक  
 औषधीय द्रव्य।





अपनी  
 शक्ति  
 के लिए

**गुरुकुल**  
**पार्यवेदन**  
 शरीर व मनुष्य के शरणांतर योग  
 में विरोगना-पौष्टिक  
 के लिए उत्तमोरी  
 आयुर्वेदिक औषधि



**गुरुकुल**  
**चाय**  
 गुणवत् व इन्फ्यूजन, बलन  
 और में उन्नी शक्ति  
 से बने लाभकारी  
 आयुर्वेदिक औषधि



**गुरुकुलकांगड़ी फार्मसी हरिद्वार (उ० प्र०)**

गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी

हरिद्वार

की औषधियां सेवन करें।

शाखा कार्यालय  
 ६३ गली राजा केदारनाथ,  
 चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

स्थानीय विक्रेताओं एवं सुपर बाजारों  
 से खरीदें  
 फोन नं० २६१८७१

शाखा कार्यालय: ६३, गली राजा केदारनाथ  
 चावड़ी बाजार, दिल्ली-११०००६

'अमर' - ६६५५२०५५

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदवत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रतिभा प्रेस के लिए सर्वहितकारी मुद्रणालय रोहतक से  
 छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेसिंह चिदाप्ती भवन, ब्रह्मनन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।



# सर्वोत्पापार्थी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—सुवेसिंह सहायगनी

सम्पादक—देवदत्त शार्लो

सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालंकार एम० ए०

वर्ष १५

अंक २२

२८ अप्रैल, १९६१

वार्षिक शुल्क ३०)

(मासिक शुल्क ३०१)

विद्वेष में ८ पौड

एक प्रति ७१ पैसे

## वेद भगवान् आज्ञा देता है किसे चुने ?

रचयिता—साक्षरचन्द्र "विद्यावाचस्पति"

श्रीनि राजाना विद्वेषे पुरुषि वरि विद्यमानि भूषयः सवासि ॥  
(ऋग्वेद ३।३८।६)

वेद उपदेश करता है कि हम किसे चुने ? क्योंकि चुनाव पर ही राज-व्यवस्था, प्रशासन-प्रबन्ध, दण्ड-विधान इत्यादि निर्भर है। लोकहित भी प्रसिद्ध है—“यथा राजा तथा प्रजा” अर्थात् यदि राजा विद्वान्, ध्यायकारी, प्रजा का हितवीही है तो प्रजा भी सुखमय, शांतिमय और समृद्धिवर्धक जीवन व्यतीत करेगी। अतः शासक, नेता या राजा में सर्वप्रथम और सर्वोपरि यह गुण हो कि वह अज्ञान, अभाव और जप्प्याय को खट्ट सहित नष्ट करे। इसीलिए प्रशासन को सुदृढ़, सुव्यवस्थित बनाने के लिए उपर्युक्त मंत्र के आधार पर युग प्रबलक महर्षि दयानन्द सरस्वती भी ने अमर दण्ड सत्यार्थ प्रकाश के बन्ध समुल्लास में तीन समाएं बताई हैं—

१. विद्यार्थं समा, २. धर्मार्थं समा, ३. राजार्थं समा।
- तं समा च संमितिवच सेना च ॥अथर्व० १५।१।२॥
- सम्य समा में बाहि ये च सम्याः समासवः ॥
- ॥अथर्व० १५।२।५।६॥

अर्थात् उस राजधर्म की व्याप व्यवस्था का तीनों समाएं, सेना, राजा और समासव सभी पालन करें। प्रस्तुत पद्य-संकलन में भी यही विषय दर्शाया है कि हम किसे चुने ?

### ॥ गाना ॥

जुनने-योग्य बताएँ तुमहें प्रधान देस का ।  
बिस्के चुनने से होवेगा उत्थान देस का ।।टेक ॥  
लोकहित, जितोन्द्रिय त्रिपु बल का नाश करे ।  
वेदोक्त विधान बाध करे तो हो कल्याण देस का ॥१॥  
बिस्के चुनने से... - - -

दीनों श्रेष्ठ समा करे स्थापित तो नहीं हो जनता को कष्ट ।  
गोली से मरबा बासे जो हों नर-नारी अष्ट ॥  
दुर्व्यसन हों नष्ट सुधरे ज्ञान-मान देस का ॥२॥  
बिस्के चुनने से.....

बन बाध कोष भरपूर करे, ना करे कभी पक्ष-पात ।  
कड़ा दण्ड है उस दानव को जो करे मानव से छुआ-छात ।  
ना करे कभी उत्पात तो, हो सम्मान देस का ॥३॥  
बिस्के चुनने से.....

वेद-युक्त प्रधान चुनने से होवेगा मानव्य ।  
वेद-पथ पर चलें सभी तो कटे दुःखों के फण्य ॥  
बिस्के छन्द "साक्षरचन्द्र" निरर्थ महान् देस का ॥४॥  
बिस्के चुनने से.....

संकलन कर्ता—महात्मा सुधीसदेव श्री मंगल भवन  
लेखकी महेंद्रगढ़ (हरयाणा)

## शराबियों को वोट न देना

श्री पृथ्वी सिंह जी बेमड़क का पुराना गीत

बाज के बनुवाब में पापियों को नाव में बंटियों ना भाई

जो इस नोका में बंटोगे तो दूब जाओगे,  
पांच साल तक रोओगे और गोटे खाओगे।  
गड मारी जायंगी कहीं ना कुपुडो पावंगी,  
जो दूध और मलाई ।

एक बंध ने दबा पिलाई पाच साल तक,  
पेट की हड्डी टूटी अन्धी होगी साल तक ।  
जिसने नहीं नाड़ी परखी ऐसे मुखे डाक्टर की,  
मतना लेना बताई ।

भारत के मजदूर किसानों देस विगाओं ना,  
भौटे घंटे बाबटी बरकर दूध निकालो ना ।  
जैसी बाई वैसी मरेगी बच्चा पैवा करेगी,  
कभी को बांस लुगाई ।

जाति-पातो छुआ-कूत मिटाकर यहाँ प्रेम रहे,  
पाटी-बाबी झगड़े मिटाकर भारतीयों में प्रेम रहे ।  
देवियों की सख हो खुद हमारा काज हो,  
सब परिवार हो सुखदाई ।

मुकदमा ठगी झूट मचाई चोरी उकंठो होवे ना,  
जिस कारण दुःख पाते हो यहाँ शराब को प्यासी होवेना ।  
बहेज का यहाँ लेना-देना पास ना रतौ चान्दी गहना,  
जिससे मरती महान-बेटियां भाई ।

प्रायना है ईश्वर हमारी भारत अखण्ड अपार रहे  
मुदकुल सुखवाये जायें वेदों का प्रचार रहे ।  
धार्म्यसमाज हो सन्मया हवन का रिवाज हो,  
ऋषि दयानन्द ने बतसाई ।

चान्दी सोना चीज कीमती नोट ना लेना,  
कहू पृथ्वीसिंह हन शराबियों को वोट ना देना ।  
जिसने सारे देस की भाषा और भेष की,  
सम्मदा सभी मिटाई ।

प्रस्तुत कर्ता—जयपालसिंह बायें समा बजनोंपदेशक

## सूचना

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार हरयाणा में १ जुलाई से नवीन छात्रों का प्रवेश आरम्भ है। जो छात्र मेट्रिक हो ने आवेदन कर सकते हैं। यहाँ २५०/- रु० प्रवेश शुल्क है। बाकी सारी व्यवस्था निःशुल्क है। स्थान सीमित है। प्रवेशार्थी आचार्य से पत्र व्यवहार कर स्वीकृती लेवे।

## वेद का सूर्य अस्त होगया

(डा. सुरेशचन्द्र वेदालंकार, प्रार्यसमाज गोरखपुर)

वा गतानामा दीवीषा ये नवन्ति परवत्सम् ।  
धारोह समसो ज्योतिरिष्ठा ते हस्तो रामाभे ॥

(अथर्वणं ८।१।८)

अर्थात् गए हुओं की, नरे हुए लोगों की मत विस्था कर, जो दूर तो जाते हैं, अन्धकार को छोड़कर प्रकाश पर आबद्ध हो जाते हैं हाथों को हथ वेगयुक्त करते हैं ।

जीवन और मरण का चक्र दिन रात चल रहा है । जीवन-मरण एक दूसरे के अनुषङ्गों हैं । ससरा में यदि मरण न हो तो जीवन में कोई रस ही न रहे । विविधता ही जीवन है । पुरुष में एकरसता है, स्मिरता है, जड़ता है । मनुष्य उत्पन्न होता है, बढता है, विकसित होता है, प्रौढ होता है, वृद्ध होता है और फिर मृत्यु भी हो जाती है । होने, घटने, बढने और बदलने का नाम जीवन है । 'या गतानामा-दीवीषाः' इन शब्दों में वेद कहता है नरों की विस्था मत कर । आज समाचार-पत्र से वेद के सूर्य की पृथ्व पंडित विरचनाय जी वेदालंकार की मृत्यु की सूचना मिली । उस पत्र में यह भी पड़ा कि उनकी आयु १०३ वर्ष की थी । मैंने पृथ्व पंडित जी से वेद पूछे थे । वेदों में रस भी लिखा था । मेरे एक छोड़े समय के शुभ श्री पं० रामनाथ जी वेदालंकार को उनके लिखे थे । अत्यन्त योग्य । श्री रामनाथ जी की योग्यता का वर्णन तो कठिन है पर मेरे अध्यापकों में श्री पं० बामोत्तर जी, श्री पं० सत्यकेतु जी विद्यालंकार, डॉ० सत्यप्रत सिद्धान्तालंकार जैसे विद्वान् थे । आचार्यों की अग्रभवेन श्री और स्वर्गीय चन्द्रगुप्त वेदालंकार भी अध्यापक थे । शायद समझता हूँ कि वह विद्वता की दृष्टि से पुरुकुल का स्वर्णयुग था । प्राचर्य और महानता की दृष्टि से उस समय के सभी आचार्यों और अध्यापक इतने ऊंचे थे कि वर्णन करना असम्भव है । इनमें धाम्पु में सत्य के ज्ञान, नम्रता की और सौजन्य की मूर्ति श्रीर विद्वता तथा वैदिक अल्प के सूर्य श्री पं० विरचनाय जी विद्यालंकार स्मरण धारते ही आज भी अन्धा से तिर लुक जाता है ।

श्री पं० विरचनाय जी मर गए । पर, मैं समझता हूँ कि वे कभी नहीं मर सकते । नास्ति येयं यथा, काये चरा मरणजम् मयम्' वे तो ऐसे अमूर्ति थे । जिनके शरीर में जरा और मरण ही ही नहीं सकता था । उनका प्रपना कहना था—'प्राणो वै मृत्युः' मृत्यु प्राप्त है । उनका विचार था 'वैदिक विद्याधारा ने मृत्यु का दस कष्टकर उसे सुन्दर और मधुर बना दिया है' । वे मानते थे 'मृत्यु मानो वेद है ।' मृत्यु मानो आनन्द है । मृत्यु मानो काव्य है । मृत्यु मानो पुराने वस्त्र बदलना है । जिन्होंने मृत्यु के इस काव्य को समझा है, उन्हें मृत्यु ने भय नहीं लगता । उन्हें मृत्यु में भी काव्य का हा रस मिलता है ।'

शंर, उन्होंने अपना शरीर छोड़ दिया । पर उनका दिया ज्ञान क्षमर है । मैं कक्षा में बहुत तेज पढ़नेवालों में न था । पर, कक्षा में विषयों की प्रधान से सुनता था और समझ में न घाने पर अपने प्रोफेसर से पूछता भी था । चाओस वर्ष तक अध्यापन काम करने के बाद मुझे बहुत न अनुभव हुए । इन अनुभवों पर अपने विद्वान् प्रोफेसरों का ध्याचार था । मैं अध्यापकों को परेशान करने के लिए और अध्यापन के समय को रूप करने के लिए प्रयत्न पूछता था । एक बार की बात है कि मैंने उनसे किन्ती प्रश्न में पूछा—'भारतें वेदों में श्च, यजु, सप्त और अथर्ववेद का वर्णन जाता है, तो क्या इनसे पूर्व भी कोई और वेद थे ?' उन्होंने वेद और सृष्टि की चर्चा की और शयमय पूरा पीरिखड यह समझाने में लगाया । उनकी एक-एक बात और शब्द सुनते समय कक्षा में सन्नाटा छा गया । ऐसा लगा कि साक्षात् रसस्वतो वेदों के प्रमाणों के साथ उनके मुख से ध्रवर्तित हो गईं । उन्होंने कहा श्चवेदादि वेद ही अपने से पूर्व श्चवेद का वर्णन करता है । वह पूर्व श्चवेद और कुछ नहीं है, वह बही वर्तमान श्चवेद ही है । इस पूर्व और वर्तमान दोनों ही समयों में एक ही वेद अर्थात् पत्ति से चले धारहे हैं । जित प्रकार वर्तमान श्चवेदार्थ में वेदों का वर्णन धा जाने से यह वर्तमान श्चवेद उस श्चवेद से नया नहीं होता, ठीक इसी प्रकार अब तब वर्णित ऐतिहासिक अर्थियों के नाम धा जाने से वेद उनके पश्चात् के नने हुए सिद्ध नहीं होते ।'

उन्होंने बताया कि वेदों की विविध शैलियों है, जो अब मायिक ढंग से मृत, मरिच्य और वर्तमान पदावों का वर्णन एक ही रीति से करता है ।' उन्होंने धागे विस्तृत रूप में वेदों की निरवता का प्रति-पादन करते हुए कहा 'इस एक रीति से वर्णन करने से वेदों की निरवता ही कारण है । नित्य पदाव, नित्य और अनित्य पदावों को एक ही समान अनुपम करता है । इसी प्रकार नित्य सिद्ध वेद भी नित्य और अनित्य पदावों का वर्णन एक ही समान करते हैं ।'

उनका व्याख्यान तो विस्तृत था पर भाव बही था और गोरखपुर जिले की आर्यसमाज चुबकी में इसी प्रश्न का मेरा किया हुआ समा-धान विज्ञानों ने स्वीकार किया । पर वह मुझे पंडित जी से ही मिला था ।

एक बार की बात है कि वे अथर्ववेद पढ़ा रहे थे । मैं कक्षा १३ या १४ में था । अथर्ववेद में 'बृहच्छेष' का प्रयोग किया था । कुछ सकोच के साथ उन्होंने इस शब्द का अर्थ बताया । दीर्घ शिवा अर्थात् 'बृहत् वर्णन ।' इसी प्रकार श्चवेद में 'सत्त्वर्ण' और 'शिपि-विष्ट' का भी वर्णन किया है । हम लोगों ने पंडित जी से पूछा पंडित जी, प्राय यह बताइए कि क्या वेदों में अलोपता मिलती है ? क्या वेदों में गुण्यद्विगों का भी वर्णन है । उन्होंने अथर्ववेद के मन्त्र का पाठ किया और इतनी सारगभित, निरुत्स आदि से पुष्ट व्याख्या की मुझे आज वह मन्त्र तो याद नहीं । क्योंकि प्राय उस बात को नीचे १४ वर्ष से श्रायिक समय बीत गया है, पुरा-पुरा तो मुझे याद नहीं उन्होंने कहा 'ये वेद गुण्यद्विग के वर्णन नहीं । आकाश स्व शार्त्त किरणों का वर्णन है । शार्त्त किरणों एक साथ मिलकर पृथ्वी की ओर जाती है तब उनका रूप श्विन—सिंग की तरफ हो जाता है और उसी श्कार में वह पृथ्वी की ओर बढता है और यदि रास्ते में बाधक धा जाते हैं और उनमें बह छिप जाता है तो अलंकारिक भाषा में उसे 'बधिया' होना मानते हैं ।' उन्होंने कहा 'आकाश में भी स्वी-पुष्य है, उनके बिवाह है, गर्भाधान है, रति है और बाजीकरण धादि भी है । वेदों में गुण्यद्विग के वर्णन विषयक प्राकाशिय वर्णन से हुई आंति का भी निराकरण किया गया है । वेद में कहा गया है 'या श्विन-देवा प्रपि गुण्यं तं । संस्वर ८।१।१५ में स्वरूप से कहा गया है । धरे लोगो ! याद रनो जो श्विन को देव मानकर उसी की सेवा में रहते हैं अर्थात् अग्निभार के चक्कर में रहते हैं प्रयु कहता है वे मुझे प्राय नहीं कर सकते ।'

श्री पं० विरचनाय जी की ब्रह्मयज्ञ—संध्या पर लिखी गई पुस्तक 'संध्या रहस्य' एक अद्भुत और अनुपम कृति है । कक्षा में बहुत आदि ज्ञान का स्वरूप वैदिक ज्ञान का स्वरूप—मज्ञ, यज्ञ की महिया यज्ञों में आयुर्वेद, यज्ञों में ज्योतिष, यज्ञों में भौगोलिक ज्ञान, यज्ञों में ललित कलाये आदि विषयों पर लिए गए प्रमाण, मन्त्र तथा प्रमाण, वैदिक ज्ञान की अपौरुषेयता आदि विषयों पर मुझे तो अन्य कोई इतना प्रभावशाली विद्वान् शिष्टियोंकर नहीं हुआ । यदि उनकी रचनाओं पर लिखा जाय तो लेख क्या एक पुस्तक संसार हो सकती है । वे मृत्यु से एक सप्ताह पूर्व तक वेदमाय्य करते रहे । वे केवल वैदिक साहित्य के विद्वान् नहीं थे । संस्तर साहित्य के ज्ञान के विषय में पं० बाबोत्तर जी उनका उल्लेख करते थे और उनसे मिलकर संध्याओं का निवारण करते थे । दर्शनशास्त्र के भी प्रकांड विद्वान् थे । श्री पं० सुरेन्द्रनाथ जी दर्शनशास्त्र के पुरुकुल से जाने के बाद छात्र इस विषय की समस्याओं का उत्तर समाधान करते थे और सबसे बही बात यह है कि साहित्यिक ब्रह्मज्ञान नहीं हो सकता इसके अर्थात् स्वरूप रसायन-शास्त्र का उन्होंने गहन अध्ययन कर रखा था । दंतिलोडार के कार्य में उनकी प्रयुक्त भूमिका थी । ध्यायों अग्रभवेन जी कश्चित्, धारविष्ट तथा गांधी से प्रभावित थे परन्तु गांधी जी के अनुयायी हरिकन सेवक सच के संस्तरों की उत्पन्न बाध्या इनसे इतने प्रभावित थे कि उनके लिखने से मुझे भी उत्कर्ष काया ने गोरखपुर में होय आति के लिए काम करने को नियुक्त किया था । मैंने सफलतापूर्वक ५ मास कार्य किया पर अपने लिए शिक्षा-क्षेत्र को अर्थिक अयुक्त समझकर मैं (विष्य पृष्ठ ६ पर)

## सात्विक बुद्धि का कार्य

लेखक—स्व० स्वामी आत्मानन्द जी सरस्वती

मनुष्य को अविद्या भावि क्लेशों के नीचवर्ध से लीच कर बाहर निकाल लेना भी बुद्धि देखी का ही काम है। हम अपने आप को (आत्मा और शरीर के सम्बन्ध को) और अपने साथ सम्बन्ध रखने वाली, परिवार, भवन, भूमि, धन भादि सामग्री को नित्य समझे हुए हैं। चाहे हम यह कहते भी रहें कि यह सब जगत् बदल रहा है, नामवान्त है, परन्तु जिस समय कार्य-लेश में पहुँच हमारे व्यवहार की ओर कोई ध्यानित करता है तो उसे यह प्रतीत हुए बिना नहीं रहता कि हम अपने धारण को और इस सामग्री के प्रति कि जीवन के अन्तिम समय तक भी पूरा होने में नहीं आता। हमारे उस कार्य-क्रम का लक्ष्य, ऊपर गिमाई गई इस सामग्री के प्राप्ति व्यय और बुद्धि ही हुआ करते हैं। इसी चक्र में पड़े हुए हम "मननव जीवन का यथायं ध्येय क्या है?" इस विषय पर विचार करने में भी असमर्थ रहते हैं। कारण स्पष्ट है कि हमें इन सांसारिक प्रलोभनों के लिए बनाये हुए कार्य-क्रम से कभी ध्वस्त ही नहीं मिलता, हमारे अन्तःकरण पर प्रयुक्त रखने वाली अविद्या का यह एक ध्रुव है। यदि हम यह निश्चय कर ल कि यह सब सामग्री अनित्य है, और प्रत्यक्ष इसके साथ हमारा सम्बन्ध कुछ काल के लिए ही है, वह तत्त्व और है जिसके साथ हमारा वास्तव सम्बन्ध है तो हमारा दृष्टिकोण ही बदल जाये। और इसी लिए हम अपने कार्य-क्रम में भी कुछ परिवर्तन करने पड़े। यह बतलाने की आवश्यकता नहीं कि अन्तःकरण से अविद्या के इस पद को हटाने और अपने दृष्टिकोण के बदलने के काम में बुद्धि के अतिरिक्त हमारा और कोई सहायक नहीं।

इसी प्रकार कितनी ही अपवित्र वस्तुओं को पवित्र, दुःख-दायक को सुखदायक और अनारम्भक वस्तुओं को आत्मा समझकर हम किसी ऐसे कार्य-क्रम के लोभ में बड़े चला करते हैं जिससे पार होना कठिन हो जाता करता है। अविद्या के इन तीन महालक्ष्यों में बहते हुए मनुष्य को, इनसे निकाल कर बाहर लड़ा करना भी बुद्धि का ही काम है।

—प्रा० धर्मेश्वर शीर्षा,  
आँकरा कृष्ण, शारीवाच मार्ग, बडोदरा-३६००१

## स्वस्थ रहने का उपाय

ले० स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

- १ जो आहार विहार में, रहते समन्वयान।  
उमसे रहते दूर सब, रोग शोक, भयमान।
- २ नित्य प्रति भोजन करो, उच्छे ही प्रभात।  
ताजे जल से स्नान कर, सुखी रहेगा मात।
- ३ भोजन के पश्चात् दो, मूत्र वेग को त्याग।  
बनी रहे नीरोम्यता, ब्राह्मपुत्र ही मे जाग।
- ४ जब भी तुमको बने, भूल कड़ाकेदार।  
भोजन करने के लिए, हो जाओ तैयार।  
हो जाओ तैयार और चबा चबा कर खाओ।  
बिना भूल भोजन के कभी पास मत जाओ।  
बलदा रोग तुम्हारी चीखत पर आयेगा।  
भोजन खाया हुआ, तुम्हें ही सा जायेगा।
- ५ पैदल चलना स्वास्थ्य को, बेता है आराम।  
मांसपेशियों का सभी, हो जाये व्यायाम।
- ६ चाय, तम्बाकू, बासबा जो नही करो प्रयोग।  
किर उस तर से दूर रहे, भाँति-भाँति के रोग।

## आर्यसमाज कंबारी (हिसार) का चुनाव एवं महत्त्वपूर्ण निर्णय

दिनांक १५-४-६१ को आर्यसमाज कंबारी की एक महत्त्वपूर्ण बैठक श्री बख्तरसिंह आर्य कान्तिकारी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठकान आर्यसमाज कंबारी के कार्यक्रम पर सभी ने समुचित व्यक्त की तथा कान्तिकारी के कुशल नेतृत्व एवं लग्न की सब ने प्रशंसा की। तत्पश्चात् आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा निम्नानुसार तीन बर्ष के लिए समाज का चुनाव सर्वसम्मति से किया गया।

प्रधान—श्री बख्तरसिंह आर्य कान्तिकारी, उपप्रधान—श्री भानोराम आर्य (पूर्व धरपच), मन्त्री—श्री सुबेदार रामेश्वरदास आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री महेशसिंह आर्य, संगठनमन्त्री—श्री हरिसिंह आर्य, सचिवमन्त्री—डा० योगप्रकाश आर्य, लेखानिरीक्षक—श्री बजोरसिंह आर्य।

इसके अतिरिक्त आर्यसमाज कंबारी की ओर से कल्याणपुर कुकुल सादीपुर चुनाव के कुलपति स्वामी सरयेश जी के २-४-६१ के आकस्मिक निधन पर दुःख व्यक्त किया गया तथा शोक प्रस्ताव पास किया गया। दिनांक २४, २६ मई को स्वामी पं० तानेशराम आर्य का दशवां स्मृति दिवस मनाने का निश्चय किया गया। गांव में फसल के समय अनादी किसानों-मजदूरों में धराब पीने की बढती धावत पर चिन्ता व्यक्त की गई। साथ में सभी अधिकारियों एवं सदस्यों ने निर्णय लिया कि बर्ष में कम से कम प्रत्येक आर्य सदस्य ५-५ धराबियों को समझा-बुझाकर धराब बुझवाये। विवाह शादी में जनाने कपड़े पहनकर वाचा बजाने, धराब पीने पिनाने, वारात में ज्यारा धादमी ले जाने भादि बुराईयों को भीन करने का प्रत लिया। गांव में नवयुवकों की भावना व्यायाम एव चरित्र निर्मास के कार्यों में रुचि पैदा करने का भी निर्णय लिया गया। शांति पाठ के बाद समाज समाप्त हुई।

सुबेदार रामेश्वरदास आर्य, मन्त्री आर्यसमाज कंबारी।

## आर्यसमाजों के वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज बबरपुर जि० करनाल

प्रधान—श्री यशवन्तसिंह, उपप्रधान—श्री जयपाल, मन्त्री—श्री पूर्णचन्द, उपमन्त्री—श्री सुन्दरलाल, प्रचार मन्त्री—श्री हरिसिंह, पुस्तकाध्यक्ष—श्री हरिराम, कोषाध्यक्ष—श्री सोहनलाल, लेखानिरीक्षक—श्री सुवराम।

आर्यसमाज सोलधा जि० रोहतक

प्रधान—श्री हजारीसिंह, मन्त्री—श्री रामानन्द, कोषाध्यक्ष—श्री नन्दराम, लेखानिरीक्षक—श्री हृत्तराज, अधिष्ठाता—श्री भीमसिंह, पुरोहित—श्री रिसाबसिंह।

मेवात अल्प संख्यक रक्षा समिति का चुनाव

अध्यक्ष—श्री स्वामी अनुरानन्द सरस्वती भावस, उपाध्यक्ष—स्वामी विजयानन्द सरस्वती आर्य कल्याण कुकुल हसनपुर जिंसा फरीदाबाद, मन्त्री—श्री बर्मसिंह आर्य भावस, उपमन्त्री—वैद्यकृष्ण बनीराम, प्रचारक—धर्मपाल आर्य।

आर्यसमाज नरवाना जि० जोन्ड

प्रधान—श्री नरेशचन्द, उपप्रधान—श्री जितेश्वरनाथ, श्री अनिल आर्य, मन्त्री—श्री राधाकृष्ण धार्य, उपमन्त्री—श्री अविनाश कुमार, कोषाध्यक्ष—श्री रमेश कुमार।

आर्यसमाज धर्मनगर गुडगाँव

प्रधान—श्री प्रदुदायल स्वर्णकार, उपप्रधान—श्री किसानचन्द, श्री बाबुदेव, मन्त्री—श्री मा० सोमनाथ, उपमन्त्री—श्री बलदेव कृष्ण, श्री ईश्वरचन्द, कोषाध्यक्ष—डा० स्वामिसुन्दर आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—श्री भारत रतन, भण्डारी—श्री भीमचकास, लेखानिरीक्षक—श्री मत्स्युराम, पुरोहित—श्री अमीनाल शास्त्री।

## वेद भाषा—सत्य भाषा



## आर्य नरेश शाहपुरा के राजाधिराज श्री सुदर्शनदेव जी के पावन संस्मरण

(डा० भवानीलाल भारतीय)

राजस्थान के राज्य शाहपुरा का राजघराना गत तीन पीढ़ियों से महर्षि दयानन्द तथा आर्यसमाज के प्रति अनन्य आस्थावान रहा है। इस राज्य के शासक राजाधिराज सरनाहरसिंह जी स्वामी दयानन्द के अन्त्य भक्त थे। उन्होंने अपने राज्य में स्वामी जी को आमन्त्रित किया तथा उनके उपदेशों को क्रियान्वित करने में महुरी रचि की। उनके पुत्र राजाधिराज उम्मेदसिंह जी ने तो राजगद्दी का त्याग कर बानप्रस्थ आश्रम की दोखा ली। स्वामी जी के नाम से कहलाना पसन्द करते थे। वे स्वाध्याय में महुरी रचि रखते थे। उन्होंने अपने पुत्र सुवर्चनदेव जी को १९४६ में ही शासन भार सौंप दिया था। राजाधिराज सुवर्चनदेव जी ने भी राज्य की पुकार तथा प्रजातन्त्र के महत्त्व को स्वीकार करते हुए अपने पुत्रों में प्रतिनिधि शासन की स्थापना की और शासनाधिकार जनता के प्रतिनिधियों की सौंप दिये।

श्री सुवर्चनदेव जी की शिष्या-दीक्षा राजगुरु सुरेन्द्र शास्त्री के द्वारा हुई थी। वे भी अपने पिता तथा पितामह की भाँति आर्यसमाज के प्रति परम निष्ठावान थे। वे ६ नवम्बर १९४७ को परोपकारिणी सभा के प्राचीन सदस्य थे। १९५६ में दयानन्द दीक्षा लताम्नी समारोह की उन्होंने अग्र्यक्षता की। जब प्रज्जरे में आर्यसमाज के प्रयात कवि, गायक और प्रज्जरोवेदक १० प्रकाशचन्द्र कविरत्न का १९११ में प्रथिनन्दन किया तो इस समारोह की अध्यक्षता भी उन्होंने की तथा वयोवृद्ध प्रकाश जी को ५०० रुपये अपनी ओर से भेंट दिये। १९७२ में दिल्ली को आर्यसमाज बीबान हाल में सांख्यिक सभा तथा राजधानी की विभिन्न आर्य संस्थाओं द्वारा राजाधिराज तथा महाश्री श्री स्व० श्रीमती हर्यवन्तमहाराी का मन्त्र्य स्वागत किया गया था। उन्हें वेदभाष्य की प्रति भेंट की गई। इस अवसर पर बोले हुए सुवर्चनदेव जी ने अपने पूर्वजों की आर्यसमाज के प्रति आस्था का विवरण देते हुए कहा था कि वे ऋषि दयानन्द की अपना गुरु मानते हैं तथा उनके उपदेशों को स्वीकार करना अपना पुनोक्त कर्तव्य समझते हैं।

मेरा स्वर्गीय राजाधिराज से प्रत्यन्त आत्मीय सम्बन्ध था। जब-जब मेरा शाहपुरा जाना होता मैं उनसे उनके रैतिया बाग राज-महल में भेंट करने अवश्य जाता। उन्होंने अपने पुत्राने राज महल का एक बहुत बड़ा भाग महर्षि दयानन्द महिला शिक्षण केंद्र की दे दिया था, वहाँ एक महत्त्वपूर्ण शिक्षा संस्था सफलतापूर्वक चल रही है। राजाधिराज ने मुझे स्व० देवधामजी अग्र्य लिखित वैदिक विनय का प्रथम स्रष्टा भेंट रूप में दिया जो उनके पिता स्व० उम्मेदसिंह जी का निजी स्वाध्याय का ग्रन्थ था। भारत के गणराज्य में रियासतों के विनाशोत्तर के पश्चात् यद्यपि राजाओं के शासनाधिकार समाप्त हो गये थे, किन्तु राजाधिराज सुवर्चनदेव जी ने विधिपूर्वक की कमी चिन्ता नहीं की और निजी तौर पर कृषि तथा वागवानी जैसे अम साध्य कार्यों में लगे रहे। वे आर्यसमाज शाहपुरा के प्रधान तथा संरक्षक रहे और १० बीरसेत वेदधामी तथा अग्र्य विद्वानों को प्रार्थनात कर समय-समय पर अनेक प्रकार के वैदिक यज्ञ कर्म कराते रहे। उन्होंने अपने पितामह राजाधिराज माहरसिंह जी को लिखे स्वामी दयानन्द के मूल पत्र भी परोपकारिणी सभा को भेंट कर दिये थे।

वे विगत कुछ वर्षों से लगातार अग्र्यस्थ रहे तथा कुछ पारिवारिक कठिनाइयों का भी उन्होंने सामना करना पड़ा, किन्तु बड़ो से बड़ो विपत्ति को भी धैर्यपूर्वक सहन करने की उच्चमें क्षमता थी। वे प्रत्यन्त सीधे मुद्दे स्वरुप के व्यक्ति थे। गत ६ फरवरी को दिल्ली में उनका निधन हो गया। आशा है उनके पुत्र श्री इन्द्रजितदेव भी अपने स्वर्गीय पिता के चरण-चिह्नों पर चलेंगे तथा ऋषि दयानन्द एवं आर्यसमाज के प्रति उनकी भक्ति पूर्वजत् रहेगी। मैं स्व० राजाधिराज की परम पावन स्मृति में अपनी विनम्र अश्रुजलित प्रार्थित करता हूँ।

## आर्यसमाज नारनौल में रामनवमी पर्व

आर्यसमाज नारनौल (पुराना) जि० महेश्वरप्रद (हरयाणा) में विनांक १४-२-६१ को आयोजित के आदर्श-पुस्तक, अलौकिक चरित्र सभ्यता, मोक्षर, पर्याप्त पुस्तकोत्सव श्री रामचन्द्र की का जन्म-दिवस सुन्दर और सुचितर विधि से मनाया। यह समारोह सुविधापूर्वक, ब्योवृद्ध कार्यकर्ता महालय सार्वभौम जी धार्य प्रधान प्रारंभसमाज (पुराना) नारनौल की प्रधानता में आयोजित किया गया। श्री छोटालाल जी धार्य (प्रधान मुष्णियां वेड़ा वाले के संवाहन में इस कार्यक्रम की व्यवस्था बहुत ही सराहनीय थी। समारोह के प्रमुख वक्ता इस प्रकार थे—संशोधो स्वामी देवानन्द जो आर्य प्रतिनिधि समारोहक (हरयाणा) ने मधुर अजनों से श्रोताओं को मनमुग्ध किया। वेंच हरिश्चन्द्र जो धार्य ने अपने प्रवचनों द्वारा अद्वैय श्री रामचन्द्र के जीवन व आशंसों पर प्रकाश डाला। श्री साधुचन्द्र जो विद्या-वाचस्पति (श्री मंगलजयकोर आ० ज्ञान आश्रम वेड़मी) ने बताया कि वैदिक धर्म, वैदिक-संस्कृति और आर्यसमाज श्री रामचन्द्र की भी मर्दादा पुस्तोत्सव और आदर्श-परिच, सम्पन्न मानता है। हमारी वैदिक संस्कृति, हमारे वेदों और आदर्श वेदों की वाणी में ऐसी किसी महात्मा शक्ति की कि हम 'अबन्ध-गुद' और हमारा आर्यायित 'सोने की चिडिया' कहलाता था। प्रस्तुत घाने में देखिये कि हमारे कितने ही महापुस्तक और वीरगानपण्डे हुए हैं जिनके कारण हम सारे विश्व में अपनी पहचान बना सके।

### गाना

जिस द्वारा गुरु कहलाते थे, हम वेद की वाणी भूल गए। आटेका। कपिल कणाधि जैमिनी योगी सुनो, उन कुटियों में ध्राज की सुनो। थे महाप्राणी हम भूल गए। ह्यम वेद की वाणी ---  
रामायण गोता के ये पाठ यहाँ, बाज चलचित्रों के ठाठ यहाँ। रामकृष्ण योगी ध्यानों को भूल गए। ह्यम वेद की वाणी ---  
अग्र्यकार का नाम किया, यहाँ वेदों का प्रकाश किया। दयानन्द बहुज्ञानों को भूल गए। ह्यम वेद की वाणी ---  
चित्तौड़ में बिता बनाई थी, स्वयं प्रपनी साव बचाई थी। पद्मनी क्षत्राणों को भूल गए। ह्यम वेद की वाणी ---  
लिटक गोखले दुर्गादास सुनो, नेता थी सुभाष सुनो। उनकी कुवानी भूल गये। ह्यम वेद की वाणी ---  
बा लक्ष्मण ने नहीं धरयाया था, पूज्य पिता का बदला कुकाया था। ऊषम लक्ष्मणों को भूल गए। ह्यम वेद की वाणी ---  
पीठ के ऊपर साव लिया, साव के ऊपर बाव किया। झांसी की राणी को भूल गए। ह्यम वेद की वाणी ---  
हो देव के लिए बलिराम सुनो, तो लोक परलोक में मान सुनो। सावचन्द्र कर्ण से दानी को भूल गए। ह्यम वेद की वाणी ---

### संयोजक—महात्मा सुभाषदेव

श्री मंगल जयकोर आ० ज्ञान आश्रम वेड़मी (महेश्वरप्रद)

### आवश्यक सूचना

हेवराबाद सत्याग्रह के उन ५५ सत्याग्रहियों को सूचित किया जाता है, जो सुप्रोमकोर्ट में दूसरे केस में सम्मिलित हैं। इस केस की पहली पेची २१-१-६१ दूसरी पेची २४-३-६१ और अब तीसरी पेची ६-४-६१ की है। ऐसा विश्वास है कि अग्रिम तिथि पर निर्णय हो जाएगा। अगर किसी वजह से निर्णय न हो सका तो अग्रणी तिथि को लगेपेो उसपर तो अवश्य निर्णय हो जायेगा। निर्णय होते ही सब सत्याग्रहियों को पत्र तथा सर्वहतिकारी द्वारा सूचित कर दिया जायेगा।

भवदोय

महालय भरतसिंह

संयोजक, हेवराबाद सत्याग्रह सम्मान पंथान समिति दयानन्दमठ, रोहतक

## दहेज की विनाश लीला

(लेखक—कविराम छात्रराम शर्मा शास्त्री)

नहीं अपना दुःख मन नहीं कोई संभेन ।  
सब से बढ़कर देख का दुःखन हुआ दहेज ॥  
पापी दहेज ने साधों ही बर धाये ॥

इस पापी पहेज को बाढ़ों से सारा हिन्दुस्तान ।  
नष्ट होता जा रहा है मय तमाम मालो जान ॥  
एक क्या कितनों की दुनिया तम होते आ रहे हैं ।  
कितने अमीबारों के दिवाले पिटते आ रहे हैं ॥  
इसी कुप्रथा से कितनी कन्याएं पुत्र धरती हुईं ।  
और इसी कारण धृषा धारियों से कटती हुईं ॥  
जो शादी विवाहों से अल्पम दुखी हो चुकी हैं ।  
न जाने सदा से कितनी कन्या लो चुकी हैं ॥

पी विष के प्याले ॥ दहेज ने ... ॥१॥  
ब्याह के बाजार में सब नलारी बचाकर डोख ।  
पसुओं की तरह से अपने लड़कों का सुनाकर मोल ॥  
कोई कहता मेरा लड़का संभेको पड़ता है देख ।  
बस हजार रुपयों से कोठी कम न लूंगा एक ॥  
हुसरा कहता है इतने मेट्टिक किया है धर्मो ।  
और फस्ट डिवीजन का सॉफिकेट लिया अभी ॥  
इसलिये हम तुमको सत्य बताते हैं भाई ।  
मौस हजारा से तो कभी कम न लेगे एक पाई ॥  
इस ऊँचे महल वाले ॥ दहेज ने ... ॥२॥

तीसरा कहता है मेरा जो ०० पास कर चुका है ।  
और अब देख लीजिये एन. एल. पी. में बह चुका है ॥  
धादी करनी हैं तो भाप एक लाख भाइयेगा ।  
साथ में सामल सारा कान न फड़काइयेगा ॥  
क्योंकि आज दुनिया को हुआ को नहीं देखते हैं ।  
मीस हजारा रुपये तो मेट्टिक वाले ले लेते हैं ॥  
चौधे ने कहा चुभां इस बात पर देंगे हम ।  
लड़के को विलासत भेजने का लक्ष्य लेगे हम ॥  
इसी तरह पांचवे ने मोटर साइकल के लिये ।  
छठा मांग करता एक बड़िया कार के लिये ॥  
'बे' पाले डाले ॥ दहेज ने ... ॥३॥

एक अरबेज लेख लिख चुका है जसवार को ।  
लड़कों के विवाह में एक राजपूत सरदार को ॥  
इस पापी दहेज में ही सतसह लाख देखा पदा ।  
हुदरे को इतने भी ज्यादा भार सहना पड़ा ॥  
लड़के वाले को तो चाहे मील मांग कर लायें ।  
चाहे दसलख से या निष्ठाभी बंटे पर लायें ॥  
बिना इसके कन्याओं का ब्याह नहीं होता कभी ।  
बिच बुरे रिवाज को संसार बर के जाने सभी ॥  
दूध युवा वाले ॥ दहेज ने ... ॥४॥

जितनी इस प्रथा से हिंसा होती नबर आ रही है ।  
और इसी कारण जाने कितनी जाने आ रही हैं ॥  
बंगाल बिहार की तो हासत क्या ब्याज करे ।  
बिन ब्याही कन्या कहां संभ्या में हजारी फिर ॥  
बस इसी कारण आत्महत्या करती हुईं जहां ।  
बाई दो हजारा लड़की हूँ हाल भरती ही बह ॥  
बाकी सब बिचारियों के पेट पातने के लिये ।  
संसार के अन्दर जाने कीय त न काम किये ॥  
बिन देखे भाले ॥ दहेज ने ... ॥५॥

लड़की वाले से लड़के वाले की जो ठहरे है ठहर ।  
कुछ भी कम दिया तो लड़की को न समझे सौर ॥  
नयी वस्त्र बन नये परिवार में जाती है बह ।  
बड़े-बड़े अत्याचारों से सतायी जाती है बह ॥

रोबे और बिल्लावे तो डामोस कर देते हैं उसे ।  
कहीं मारते-मारते बेहोश कर देते हैं उसे ॥  
छत से गिरावे कोई परधर से जिन कोस देवे ।  
कोई किसी मदे अन्दर गहरे जल में छोड़ देवे ॥  
वीमारी की हासत में तो कहा तक ब्याज कर ।  
स्वास्थ्य के यत्राय सारे मरने के सामान करे ॥  
फिर भी न मरे तो जालिम मूढ़ में वस्त्र दूध देवे ।  
जल्दी से जल्दी बाकर वे बियां को ही फूक देवे ॥  
कर ऐसे वाले ॥ दहेज ने ... ॥६॥

सब से अधिक जो पहले रोयांकारी काफ़्त हुआ ।  
स्नेहलता देवो का बंगाल में बलिवान हुआ ॥  
सब से पहले प्रकाश में आया हुआ हाल है जो ।  
सन् उन्नीस सौ चौदह चार फरवरी को सोख देवे ॥  
स्नेहलता तेल और आग का सहारा ले कर ।  
सामग्री की जगह अपने प्राणों को ब्याहति देकर ॥  
भार गई उजियाले ॥ दहेज ने ... ॥७॥

ऐसे ही लड़की वाले से सब सत्यानाशी को बेल ।  
अपने पुत्र को शादी में खुद धोरो का निकाले तेल ॥  
ऐसे ही संघ आकर मिल जाति को सब लक्ष्मियों में ॥  
जो जाति बसती है सिन्धु प्रांत की कुछ बलियों में ॥  
सब ने एक बार सिन्ध भर में यह एलान किया ॥  
एलान करते समय इस तरह से ब्याज किया ॥  
या तो इस दहेज को प्रथा को भाप लोड़ कीजे ।  
नहीं लोड़ते ही तो अब हमारी भाषा लोड़ कीजे ॥  
या तो 'तेजसिंह' हम तमाम जहर खा संरोजे ।  
नहीं तो प्रपना घर छोड़ यवनों के घर जा पड़ोजे ॥  
करके मूढ़ काजि ॥ दहेज ने ... ॥८॥

उन्मति के इच्छुक मानव को ब्रह्मचर्य का तेज चाहिये ।  
अगर स्वस्थ रहना चाहे तो रोमी को परदेज चाहिये ॥  
देश धर्म के रखक मानुष को कटिों की सेज चाहिये ॥  
'छात्रराम' शादी में लीमो गवे लूके को बदेज चाहिये ॥

—०—

## पूणिमा यज्ञ सम्पन्न

बिनांक ३०-३-६१ को धार्यसमाज उमरा (हिंदार) के मन्त्री श्री बलचन्द्रसिंह धार्य के घर में पूणिमा के उपलक्ष्य में सधा उपवेशक श्री अतरसिंह धार्य क्रांतिकारो जो द्वारा हुबन किया गया । क्रांतिकारी श्री ने पंच महायज्ञ एवं धार्यसमाज को गति-विधियों के बारे में विस्तार से विचार रखे । परिवार ने बड़ी अझा से यज्ञ में भाग लिया ।

—सत्याग्राम धार्य

## आवश्यक सूचना

समस्त धार्यबन्धुभो, धार्य संस्थाओं तथा परिवित मित्रों को सूचना दे रहा हूँ कि ३० अगस्त १९६१ को पूणाच विद्यमविद्यालय से मेरे अक्षकाश प्रदण कर लेने के परभाव मेरा स्थायी निवास एवं डाक का पता निम्न रहेगा । सभी से निवेदन है कि मई १९६१ के वारम्भ से ही से निम्न पते पर मुझ से पत्र-व्यवहार करे ।

प्रो० बबानीलाल भारतीय, रत्नाकर, ८/३३३, नन्दनवन, चौपासनी आवासन मण्डल, जोधपुर (राजस्थान)

धार्य लेखक कौन तैयार—मई में भेजा जायेगा

सब सम्बन्धित सजनों को सूचित किया जाता है कि आर्य लेखक का मुद्रण कार्य समाप्त हो चुका है । यह अग्रिम हाहकों को रजिस्टर्ड डाक द्वारा मई मास में भेजा जायेगा ।

भवानीलाल भारतीय

\*आज तो बाल लालो पर पहेज नई है ।

## आध्यात्मिक विकास और साम्प्रदायिक सद्भाव के लिए गार्मिक शिक्षा अनिवार्य हो—इन्डोनेशियाई नेता का अभिकथन

हरिवाङ्मय कंसल केन्द्रीय समुक्त मंत्री (विदेश सम्बन्धन)

इन्डोनेशियाई नेता, मास्को के ससय सदस्य श्रीर हिन्दू धर्म परिवर्तन के अध्यक्ष डा० आई० वी० जी का मुख्य आत्मजा ने आज जारी अपने वक्तव्य में वैश्विक माध्यक्रम में गार्मिक विद्या के महत्त्व पर बल दिया है। उनका कहना है कि किसी भी राष्ट्र के आध्यात्मिक विकास और विद्य के जनक में साम्प्रदायिक सद्भाव बढ़ाने के लिए गार्मिक विद्या देना जरूरी है। उन्होंने यह अपील भारत के लिए विशेष रूप से की है जहाँ मौजूदा परिस्थितियों के कारण इस देश के नेतागण चिन्तित हैं।

डा० मुख्य आत्मजा ने अपने देश इन्डोनेशिया का उदाहरण देते हुए कहा है कि इन्डोनेशिया के स्कूलों, कालेजों और विश्वविद्यालयों में गार्मिक शिक्षा अनिवार्य है। वहाँ मुस्लिम, हिन्दू, बौद्ध, ईसाई और अन्य धर्मावलम्बी छात्रों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने-अपने धर्म के सिद्धान्तों का अध्ययन कर अपना नैतिक और प्राध्यात्मिक उत्थान करें।

डा० मुख्य आत्मजा ने आंशिक व्यक्त की है इस प्रकार की वैश्व प्रणाली के अभाव में हमारी भावी पीढ़ी भौतिकता-वादी, नारिस्तक और अज्ञेय-वादी बन सकती है। इसके अलावा, उनका कथन है कि कस्मियुग की अवर्धित सम्प्रदाय के अभाव में आकर वे अनैतिक, लम्पट, अनाचारी, व्यभिचारी और हिंसा-वादी भी बन सकते हैं।

डा० मुख्य आत्मजा ने राष्ट्रवाद, देशभक्ति, स्नेह और बलिदान की भावना को प्रोत्साहन देने के लिए राष्ट्रीयता के अध्ययन पर भी अधिक बल दिया जो गार्मिक भेद-भाव के विना किया जाए। उनका कहना है कि सम्बन्धित राष्ट्रीय जीवन के लिए धर्म और देश प्रेम को साथ-साथ चलना चाहिए।

मात्र अध्ययन, ज्ञान-प्राप्ति, बौद्धिक विकास और बौद्धिक व्यायाम ही शिक्षा नहीं है। डाक्टर ने कहा कि यह उच्च नैतिक सत्यनिष्ठा, सञ्जनता, सञ्चरित्र, सदाचार, सारी मानवों के साथ एकात्मकता की भावना आदि गुणों से युक्त व्यक्तित्व के निर्माण के लिए है। इसकी परम उपलब्धि प्राध्यात्मिक सिद्धि, ईश्वर बोध, शान्ति और परमात्मक की अनुभूति होती है जिसे हिन्दू धर्म में 'मोक्ष' का नाम दिया गया है।

जीवन से सम्बन्धित केवल धर्म और काम का उपयोग करना ही नहीं है यद्यपि इस ऐहिक सञ्चार में इनका महत्त्व है। सच्चा ध्यान, शान्ति और मन की स्थिरता केवल धर्म और काम की पूर्ति होने से प्राप्त नहीं होती। डा० मुख्य आत्मजा का अभिमत है कि धर्म के पथ पर चलने से ही इस जीवन में शान्ति, सुख समृद्धि और इसके बाद परमानन्द की प्राप्ति सम्भव है।

उच्च स्तर के सामाजिक जीवन के धर्म-ग्रन्थों में उल्लिखित नैतिक शिक्षा भी समान रूप से अनिवार्य है। समाज को स्वयं समान बनाने के लिए अहिंसा, ब्रह्मचर्य, सत्य, अस्तेय, अपवित्रता, मनी, कष्ट, उपेक्षा, मुद्रिता आदि सदगुणों का विद्यान हमारे धर्म-ग्रन्थों में है। वह राष्ट्र सचमुच सम्पन्न होगा जिसके नागरिकों में ये सदगुण विद्यमान होंगे। प्रत्येक राष्ट्र को अपनी युवा पीढ़ियों में इन सदगुणों का विकास करने का प्रयास करते रहना चाहिए।

यदि शिक्षा मनुष्य के बौद्धिक रहने के लिए, आनन्दक विद्यान और धर्म-शास्त्र विद्यों तक अथवा विश्व के गणनायक महापुरुषों के जीवन चरित्र के अध्ययन तक सीमित रहे तो उतने ही से वह समृद्ध और ध्यायक नहीं हो जाती। अपने देश के इतिहास तथा पूर्वजों-

मूर्तियों के दिव्य सम्बन्ध का अध्ययन राष्ट्र हित और भावी पीढ़ियों के कल्याण के लिए आवश्यक है।

डा० मुख्य आत्मजा इस समय भारत में तीर्थयात्रा पर जाते हुए हैं। नेपाल में काठमांडू स्थित पशुपतिनाथ मन्दिर के दर्शन कर लेने के बाद उन्होंने हरिद्वार, ऋषिकेश, कुशीनर, मयूरार, वृन्दावन, दक्षिणेश्वर (कलकत्ता) आदि स्थानों का भ्रमण किया है।

### ब्रह्मचर्य शक्ति

जीवन सुखी बनाना है ब्रह्मचर्य अपनाओ। सम्पत्त में जो भी जाये रहस्य खोल बताओ।

सभी साधनों का साधन, ब्रह्मचर्य ही पाया। चित्तने भी महापुरुष दुखे, सभी ने यह अपनाया ॥

धर्म पशुपत की रक्षी जनक ने कोई उठा न पाया। ब्रह्मचर्य की शक्ति ने ही, श्रीराम ने तोड़ दियाया ॥

हनुमान की शक्ति ने ही, सागर पार उतारा। लक्ष्मण ने धारण करके, मेघनाथ को मारा ॥

शंभु ने लंका में जाकर, अपना पैर जमाया। चित्तने भी योधा वहाँ थे, कोई उठा न पाया ॥

रामचन्द्र ने छोडा था, वह योडा रोक दियाया ॥ लवकुश की शक्ति के आगे, हर योडा ध्वराया ॥

'महेश' ब्रह्मचर्य की शक्ति, वर्णन क्या कर सकता ॥ धारण करने बाबा ही शक्ति का अनुभव करता ॥

—महेश आर्य, प्रा० पो०-पण्डित सुदं, (वल्लभगढ़)

### माता जी की स्मृति में दान

दिनांक १६-४-६१ को चौ० बलबीर सिंह गहलौत समुक्त चौ० धोमप्रकाश गांव सलीम सर माजरा ने अपनी माता जी के देहावसान पर प० रतनसिंह प्रार्थ उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हृदयवाण से शान्ति यज्ञ करवाया यज्ञ पर काकी रत्नी-पुत्र उपस्थित थे जो कि आर्य जी के ज्ञान पर उपदेश से बड़े प्रभावित हुए और चौ० बलबीर सिंह गहलौत ने सभा के लिए १०५ रु० दान दिया। चौ० रतनसिंह ने भी इसी शान्ति गहलौत ने अपनी माता जी की पुण्य तिथि पर आर्य प्रतिनिधि सभा हृदयवाण को भी १०५ रु० दान दिया।

(पृष्ठ २ का देखें)

मुक्त महाविद्यालय वैद्यनाथ धाम में आचार्य एवं अध्यापक के रूप में सात वर्ष तक कार्य करता रहा। इस बीच पंडित जी से मेरा सम्पर्क बना रहा। वेद में प्राकृतिक चिकित्सा और मानसिक चिकित्सा पर अनेक बार कथ-व्यवहार हुआ। वे अपने स्वभावबल और सचलता से सदा सम्बन्ध-बन्धे वक्त प्रेषित रहे। बीच में बालोंसे बर्ष तक उनसे छंपकर कम होयया और अब तो वे बहाँ चले गए जहाँ से न उनका बुद्ध शरीर, दुर्बल शरीर, पर अत्यन्त अनेक ज्ञान के सूर्य की तरह जगमगाता प्रकाश धम भी मिलता रहेगा।

आइए हम वेद की धोर सोदते की प्रेरणा लें। यही हमारी उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

**बिक्री हेतु वैदिक साहित्य**

**अपना धर्म निभाएँ**

१- श्री वेदाङ्ग (अथर्वी भाषा में)—स्वामी भूमानन्द जी	१-००
२- श्री-प्रियदर्शन आफ धर्मसमाज—पं० बभ्रूपति एम०ए०	१-५०
३- जीवन ज्योति (वेदमन्त्रों की व्याख्या)—	३-००
४- निहारिकाबाद और उपनिषद्	०-५०
५- आर्यसमाज की विचारधारा—पं० शिरोजीकुमार वेदासकर	१-००
६- निवास की जेल में	२०-००
७- स्मारिका(हरपाणा प्रतीय आर्यसमाज शताब्दी समारोह)	१०-००
८- आय प्रतिनिधि सभा शताब्दी समारोह स्मारिका	२०-००
९- आर्यसमाज श्रीर भद्रपूज्यता निवारण-पं० ओम्प्रकाश त्यागी	००-५०
१०- बलिदान जयन्ती स्मृति ग्रंथ (धर्म गृहीतों का परिचय)	४-५०
११- ईश्वर की सत्ता—डा० रणजीतसिंह	१-००
१२- हरपाणा के आर्यसमाज का इतिहास—डा० रणजीतसिंह	५-००
१३- धर्म-प्रवेशिका—डा० रणजीतसिंह	३-००
१४- धर्म-भूषण	५-००
१५- पंजाब का आर्यसमाज—प्रि० रामचन्द्र जावेद	२-००
१६- धावदें धातु रूपान्तों—महावीर शाखाद शास्त्री	२०-००
१७- वैदिक उपासना पद्धति—डा० सुवर्णनन्देय आचार्य	३-००
१८- मूर्तिपूजा—सम्पादक पं० जगदेवसिंह सिद्धांती	००-५०
१९- वेदस्वरूप नियंत्रण	००-७५
२०- वेदान्तिक	१-००
२१- वेदान्तिक पद्धति	१-००
२२- वैदिक विवाह पद्धति	६-००
२३- गोकुलानिधि—स्वामी दयानन्द सरस्वती	००-२०
२४- सत्याभंगकाथा	१०-००
२५- महर्षि दयानन्द आत्मकथा	०-५०
२६- हृम्वारा फाजिल्का—योगेन्द्रपाल	१-००
२७- ब्रह्म स्वामी ओमानन्द सरस्वती	१-५०
२८- बीर हेतु	०-७५
२९- पीपल	१-५०
३०- सिद्ध स्वामी ओमानन्द सरस्वती	१-५०
३१- श्लोपद वा हाथीपाँव की चिकित्सा	०-२०
३२- विच्छेद विष चिकित्सा	०-५०
३३- लवण	१-२५
३४- विदेशों में मैंने क्या देखा	२-५०
३५- नैरोबी यात्रा	१-५०
३६- ब्रह्मचर्य साधन ६-११	१०-००
३७- " १-२	१-००
३८- " ३	१-००
३९- " ४	२-५०
४०- " ५	२-००
४१- " ६	३-००
४२- " ७-८	२-००
४३- " ९	०-३०
४४- " १०	१-५०
४५- " ११	२-००
४६- हल्दी	१-५०
४७- नीम	१-२५
४८- कर्तव्य दर्पण—म० नारायण स्वामी	४-००
४९- विद्यार्थी जीवन रहस्य	२-५०
५०- योग रहस्य	४-००
५१- आर्यसमाज क्या है ?	२-००
५२- कृष्ण माता	१-२०
५३- संस्कारविधि	८-००
५४- वैदिकधर्म परिचय—पं० जगदेवसिंह सिद्धांती	३-५०
५५- वैदिक यज्ञ पद्धति—सांवेदिक सभा प्रकाशन	००-६०
५६- मृत्यु के पश्चात् जीवन की गति—श्री जगदेवसिंह सिद्धांती	१-५०
५७- नैतिक शिक्षा दसवा भाग—सत्यप्रकाश वेदालंकार एम.ए.	५-००
५८- पंच जगदेवसिंह सिद्धांती जीवन चरित—डा. सुवर्णनन्देय	१०-००
५९- हृम्वाराद सत्याग्रह में हरपाणा का योगदान—डा. रणजीतसिंह	३०-००

प्राप्ति-स्थान : आर्य प्रतिनिधि सभा हरपाणा  
दयानन्दमठ, सिद्धांती भवन, रोहतक

सत्य-धर्म के दिव्य पथों पर,  
मानव फिर से कदम बढ़ाए।  
प्रेम-दया का, सहानुभूति का,  
समरसता का पथ प्रपन्नाए।  
विश्वतों का दीप जले फिर,  
मुहु सम्मन्त्र पुन गहराए।  
'सत्यमेवजयते' का गाना,  
फिर समवेत स्वरों में गाए।

मिटे तिमिर सब भ्रान्तों का,  
ज्ञान प्रदीप प्रदीप कराए।

'धर्म' नाम पर आओ हम सब,  
आपस का यह लड़ना छोड़।  
धर्मव्यवस्था का भाओ हम,  
निर्मय होकर गला मरोड़ें।  
जाति-पाति का, दुष्प्रा-भूत का,  
सारा बन्धन भाओ तोड़ें।  
दूटे हुए हृदय फिर से हम,  
प्रेम तथा सहयोग से जोड़ें।

सर्वनाश से इस धरती को,  
भाओ ! आज बचाए।

आज बचा पर मूर्ति आबुदो,  
अपना कदम बढ़ाओ।  
अपने खूनी पंजों से है,  
मानवता दहलाती।  
होता है अन्ध्या—धन्य का,  
भारत भू पर ताण्डव।  
सकटग्रस्त हुआ भारत का,  
सत्यप्रती है पाण्डव।

भाओ ! आज जवानो जवानो—  
अपना धर्म निभाए ॥

(राधेश्याम जायं, विद्यावाचस्पति)

**वानप्रस्थी तथा संन्यासी महानुभावों से प्रार्थना**

आर्यसमाज के वानप्रस्थी तथा संन्यासी महानुभावों से प्रार्थना है कि आर्यसमाज के प्रमुख वेदप्रचार कार्य हेतु सभा को सहयोग तथा समय प्रदान करने के लिए अपने नाम तथा डाक के पूरे पते लिखकर सूचित करे। हरपाणा के प्रत्येक जिले में वेदप्रचार तथा उसके प्रसार के लिए वेदप्रचार मण्डल की स्थापना की गई है। वेदप्रचार कार्य में वानप्रस्थी अथवा संन्यासी समय दे सकें तो प्रत्येक ग्राम तथा नगर में वेदप्रचार द्वारा आर्यसमाज की स्थापना हो सकती है। अतः इस पवित्र कार्य में सभा को सहयोग देने की कृपा करे।

निवेदक—सया मन्त्री

**सत्य के प्रचारार्थ**

अजिल्द

**₹ 00**

सैंकिडा

अजिल्द

**900**

सैंकिडा

**मृत्यार्थ प्रकाश**

घर पर पहुँचाएँ

संपेद कागज सुन्दर छपाई

शुद्ध शंकेरण वितरण करनेवालों के

आकर 23x36-16 शुद्ध 220 की दर लिए प्रचारार्थ

साजिल्द ₹/अजिल्द ७/-

**आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट**

७५, रावी बागली, दिल्ली-६ दूरभाष- 2 38360-2331

## आर्यत्व का आह्वान

महावि स्वामी दयानन्द जी महाराज ने जब से मूर्ति पूजा के स्थान पर एकेश्वरवाद और निराकारोपसना का वेद मन्त्रों द्वारा निरूपण और साकारवाद का खण्डन किया तभी तो पौराणिक जन धार्यसमाज के धार्य शब्द का प्रचलन विरोध करने के हेतु हिन्दू शब्द को बाध्य दे रहे हैं।

पौराणिक विद्वान् अलीभान्ति जानते हैं कि सृष्टि के आरम्भ से आज तक सारे धार्य साहित्य में हमारे महापुरुष धार्य कहलाते और धार्यत्व पर गर्व करते आये हैं किन्तु वर्तमान में पौराणिक विद्वानों के जमना वष्य व्यवस्था सिद्धान्त से ही विदेशी हिन्दू शब्द को प्रथम दिया जा रहा है।

स्वर्णिय पं० गोपाल शास्त्री जी ने बड़े साहस के साथ धार्यशब्द का बलपूर्वक समर्थन किया। वह काशी विद्वत्परिषद् के प्रधान भी थे तो एक बहुत बड़े धार्यधर्म में मैनै उनका प्रमाण उपस्थित करके विधायियों द्वारा धार्य जाति में फूट डालने के कुचक्र का सम्मुख किया था। यह प्रमाण (इलाहाबाद) के पुरुष देहलवी जी के प्रधानत्व में पादरी अन्दुलक के साथ बड़े भारी शास्त्रार्थों का वर्णन है।

मैं पुरुष स्वामी वेदमुनि जी परित्रावक का वष्यवाद करता हूँ कि उन्हीं धार्य जाति के नेताने के लिये प्रभावोत्पादक में धार्यत्व को निरूपित किया है।

प्रमाण धार्यधर्म में तो मैनै काशी विद्वत्परिषद् का निर्णय निरूपित कर दिया था कि—

हिन्दू शब्दों ही यत्नेव्वामि जन बोधकः।

अतो नार्हति उच्छब्दो बोध्यात् सकसो जनः॥

परमात्मा की कृपा ही धार्य समझे, उठे, सोचे, समझे और सत्य के आवाहन के साथ उसका स्वर्ण स्वीकरण भी करे।

महावि दयानन्द जगा गये। जाग कर स्वर्ण को कर धरने विनाश का आवाहन करना कदापि शोभनीय नहीं, किन्तु शोचनीय है।

भगवान् बस दे कि हम धार्यत्व का आवाहन करने को समुत्सह हों।

—भान्ति प्रकाश

### शराब के ठेके से जनता में रोष

बल्लभगड, २२ अप्रैल (विष्णु)। फरीदाबाद के एक अस्पताल के निकट खुले शराब के ठेके को लेकर यहाँ जनता में काफी रोष फैला हुआ है। जबकि ऐसा कानून बनाया गया है कि किसी भी धार्मिक संस्था, स्कूल, कालेज या अस्पताल के निकट कोई भी शराब या वष्य नशोशी वस्तु की दुकान नहीं खोली जा सकती।

यह ठेका बिल्कुल अस्पताल की दीवार के साथ एक टेन्ट धमाकर खोला गया है। जनता ने प्रवासन से भागी की है कि इस ठेके को तुरन्त हटाया जाए।

(जन संदेश से)

कहाँ और ले जाओ, इस शराबखाने को।

# गुरुकुल

कांगड़ी फार्मसी की  
आयुर्वेदिक औषधियां सेवन कर स्वास्थ्य लाभ करें

## गुरुकुल

### ध्यानप्राथ

पुरे पौराणिक के लिए सौकर्यार्थ  
एक स्थूलतिकाक सम्पन्न।  
काशी, उरु व शास्त्रीयिक एवं  
केन्द्रों की दुर्लभता में  
उपयोगी आयुर्वेदिक  
औषधीय दारिक



## गुरुकुल

### प्रायिकिल

दोनों व मनुष्य के मजबूत रोषों  
वेदिकीयान्ता सौकर्यार्थ  
के लिए उपयोगी  
आयुर्वेदिक औषधि



## गुरुकुल

### चाय

उत्तम व इन्कमूलक, खण्डन  
आदि में बड़ी बृद्धि  
से बनी सामान्यरी  
आयुर्वेदिक औषधि

## गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी

हरिद्वार

की औषधियां सेवन करें।

शाखा कार्यालय  
६३ गली राजा केदारनाथ,  
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६



गुरुकुलकांगड़ी फार्मसी हरिद्वार (उ० प्र०)

शाखा कार्यालय : ६३, गली राजा केदारनाथ  
चावड़ी बाजार, दिल्ली-११०००६

स्थानीय बिक्रेताओं एवं सुपर बाजार  
से खरीवें

फोन नं० २६१८७१

'अर' - देशा' २०२५

धार्य प्रतिनिधि सभा हत्याणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा धार्यधर्म विद्विग प्रेष के लिए सर्बहितकारी मुद्रकालय रोहतक में छपवाकर सर्बहितकारी कार्यालय पं० जयदेवसिंह सिद्धान्ती बचन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।



# ओ३म् सर्वे हितकारिणः

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

संस्कृत

प्रधान सम्पादक मुनेन्द्र नारायण

सम्पादक—वदवन साहू

सहसम्पादक—प्रधानाचार्य विद्यानकार एम०ए०

वर्ष १८

अंक २२

५ मई, १९६१

वारिधक अंक २०

(आजीवन अंक २०१)

विदेश में ८ पौड

एक प्रति ७५ पैसे

## आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का महत्त्वपूर्ण निश्चय

आराबी, मांसाहारी तथा भ्रष्टाचारी प्रत्याशियों का चुनाव से समर्थन न किया जावे

रोहक २८ अप्रैल—आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अंतरंग सभा की बैठक सिद्धांती भवन में सभा प्रधान प्रो० वेदरसिंह जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में हरयाणा के कोने-कोने से आये सभा के अन्तर्ग सभस्यों ने भाग लिया। इस अवसर पर निम्नलिखित निश्चय सर्वसम्मति से किये गये—

### विश्वंभर भार्य नेताओं को अस्वाञ्जलि

सर्वकार पंचायत के महासचिवों की कन्वेंसिंह भार्य (सौरभ उ०प्र०) भार्यसमाज की सदस्यता के पूर्व प्रधान श्री छत्रोबास भार्य तथा भार्य समाज रेवाड़ी के सचिव श्री बाबूबाबू श्री लोचनार भार्य के निधन पर सभा की ओर से दो मिनट का शोक रचकर सड़े होकर अर्द्धाञ्जलि दी गई। उन द्वारा भार्यसमाज की की गई सेवाओं की सराहना भी की गई।

चुनाव में शराबी, मांसाहारी तथा भ्रष्टाचारी प्रत्याशियों का समर्थन न किया जावे

मई मास में लोक सभा तथा विधान सभाओं के चुनाव हो रहे हैं, इस सम्बन्ध में अन्तर्ग सभा ने भार्यसमाज के कार्यक्रमों से अनुरोध किया है कि वे चुनावों में किसी ऐसे प्रत्याशी का समर्थन न करें जो स्वयं शराब पीता हो अथवा अपने समर्थकों को शराब पिलाता हो या मांसाहारी तथा भ्रष्टाचारी हो। इस प्रकार के प्रत्याशियों के सफल होने पर शराब की बुराई तथा भ्रष्टाचार का विस्तार होगा। अतः ऐसे प्रत्याशियों का तन मन धन से समर्थन किया जावे, जो शराब पीने तथा पिलाने तथा भ्रष्टाचार का व्यवहार न करने वाला हो और जिसकी सामाजिक सेवाओं में रसिंह हो। यदि वह किसी कारणवश भार्यसमाज का सदस्य न हो तो उसे भार्यसमाज के नियम तथा साहित्य आदि भेंट करने सहित बनाया जावे। इस प्रकार जिस भी हल से ऐसे प्रत्याशी सफल होकर लोकसभा अथवा विधान सभा में पहुँचें, वे भार्यसमाज के कार्य में सहायक रहेगें।

स्वामी अश्वानन्द बंकि पुस्तकालय भवन का निर्माण

सभा ने अमरदुर्गाता स्वामी अश्वानन्द जी की स्मृति में एक पुस्तकालय भवन का निर्माण शीघ्र ही पूरा करने का निश्चय किया। इसका नक्शा बन चुका है। भार्य प्रतिनिधि सभा की सहायता से शराब के अवसर पर स्वामी अश्वानन्द जी महाराज द्वारा इसकी नींव रखवा दी थी और अनेक शान्ति महापुत्राओं ने इस भवन के निर्माण हेतु दान देने का संकल्प किया था। अतः उन सभी महापुत्राओं से सभा ने निवेदन किया है कि वे अपने वचन के अनुसार अपना योगदान सभा को नकद, भनायेत तथा बैंक ड्राफ्ट द्वारा शीघ्र भेजने की कृपा करें। सभा को दिने कथे दान पत्र आकर में छूट मिली हुई है।

गुरुकुल कुशबंध तथा इन्द्रप्रस्थ को श्रावर्ध शिक्षण संस्था बनाने की योजना

सभा द्वारा संचालित गुरुकुल कुशबंध तथा गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ को एक श्रावर्ध शिक्षण संस्था बनाने की योजना बनाई गई है। इस कार्य हेतु सभा ने नवीन प्रवक्ता समितियों का गठन किया गया है। दोनों गुरुकुलों में प्रवेश आरम्भ हो चुका है।

जिला वेदप्रचार मण्डलों की प्रभावशाली बनाया जावेगा

हरयाणा में अत्यंत जिते में वेदप्रचार मण्डलों का गठन पूरा करके वहाँ एक-एक उपदेसक तथा एक-एक भजन मण्डली नियुक्त की जा रही है। भार्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् भार्यभूषण जी वेद प्रचारविष्ठाता इन मण्डलों को प्रभावशाली बनाने का यत्न कर रहे हैं।

—केदारसिंह भार्य

### मतदाताओं से अपील

प्रिय जनो! आपको मालूम है कि मई में ससद के सभ्यत्ववि चुनाव होने जा रहे हैं। सभी प्रायः श्रवर्ध राजनीतिक दल सत्ता में आने के लिए हर प्रकार के फार्से अपना रहे हैं। सत्ता में आने के बाद फिर वही दाक के तीन पात नजर आते हैं। घोषणा पत्र में किये बायबों को भूल जाते हैं। देश की हानत में कोई सुचार होता दिखाई नहीं देता।

सुचार आये कैसे? सत्ता में आते ही पहले उन्हें उस दल को बटोरने की चिन्ता होती है जो चुनाव में दल खोल कर सच किया था। फिर अपने जोर रिश्तेदारों की स्वार्थ सिद्धि में लग जाते हैं। देश में चिन्ता की प्रतिन धक्क रही है उसकी कोई चिन्ता नहीं है। गरीब महंगाई को चक्को में पिस रहा है। बेरोजगारी बढ़ती जा रही है। भ्रष्टाचार और बेईमानी की कोई सीमा नहीं है। कुल मिलाकर चरित्र का जनावा निकल रहा है।

जिस देश में चरित्र समाप्त हो जाता है वह देश पतन की ओर चला जाता है अर्थात् वहाँ शांति अमन नहीं रहेगा। चरित्रहीन व्यक्ति शासन में आकर भ्रष्टाचार की अमिन को तीव्र कर देते हैं। आज मेरे देश को आनरु खतरें में हैं। मतदाताओं से अपील है इसे बचाना चाहो, बचाओ। बोट देते समय चरित्रवान् व्यक्ति को अपना प्रतिनिधि (सिता) चुनो। चरित्रवान् व्यक्ति ही देश का हितैषी और शुभचिन्तक हो सकता है। चरित्रवान् व्यक्तियों द्वारा गई सरकार ही देश का कल्याण कर सकती है। चरित्रवान् कौन है? यह उसका दैनिक जीवन स्पष्ट बता रहा है उसकी भावतें ज्ञानपान उसके चरित्र का परिचय दे रहे हैं।

—देवराज भार्य

प्रचार मन्त्री, भार्यसमाज नल्लभपद

## नेताओं की फुलझड़ियों पर मुस्कराइये

१- चुनाव का एक उम्मीदवार अपने मित्र से कह रहा था—अब तिराहा हो चुका हूँ। मुझे विजयवाह होने लगा है कि लोग मुझे बोट नहीं देंगे और इसका कारण मेरी अजानी है।

मित्र ने जवाब सिफकते हुए कहा—आपकी आगु तो पचास के लगभग होगी, अजानी तो बीस चुकी है।

यही तो मुसीबत है, उम्मीदवार सज्जन बोले—लोगों को मासूम हो गया है कि मेरी अजानी किस प्रकार होती थी।

२- एक नेता जो भाषण देने के लिए मंच पर चढ़े और चारों ओर नजर दौड़ाकर कहने लगे, "भाइयो धीर रहनो, आजकल किसी पर विश्वास नहीं किया जा सकता, सब देईसानी करते हैं। सब देखिये न, मैंने दस टुक आवदमी (जनता) एकत्र करने के लिए पंजे दिए थे, जबकि यहाँ मुश्किल से तीन-चार टुक आवदमी ही एकत्र हैं।

३- एक नेता जी चुनावी दौरे में बिदेस जाया पर थे। बिदेस में एक अधिकारी ने उसका पासपोर्ट देखकर कहा—पासपोर्ट का चित्र बतता है कि आपका सिर मंका है पर आपके स्त्रिर पर तो दास है। इसलिए आपका पासपोर्ट नकली है।

नेता जी—समा करना, पासपोर्ट नहीं, मेरे बाल नकली हैं।

४- चुनाव में जीते हुए नेता जी को एक हारे हुए नेता जी वधाई देते हुए बोले, "बाई चुनाव भी क्या अतुलपूर्व है—कभी हम भूतपूर्व—कभी तुम भूतपूर्व"।

५- समासद चुनाव के दौरान प्रत्याशी सिचचन्द्र साहू जी तथा उनके सहयोगी मुहल्ले-मुहल्ले प्रचार कर रहे थे। एक कार्यकर्ता ने हमारी सादृश रोड निवासिनी चाची जी से बाई नं० ६ से सिचचन्द्र साहू जी को बोट देने को बचन ले लिया।

मतदान के समय चाची जी अपना बोट पेटी में न डालकर उसे अपने साथ लाने लगी तो वहाँ तैनात अधिकारियों ने उसे मतपत्र साथ ले जाने से रोका और उस पत्र को पेटी में डालने के लिये कहा। इस पर चाची ने कहा, "मैं तुम्हारे वहकाने में नहीं आऊंगी, अपना बोट तो सिचचन्द्र जी को ही दूंगी।"

६- एक बोटर का कथन, लड़ना महिलाओं की जागरूकता का प्रतीक है। जो महिलायें जागरूक होती हैं, वे अपने पतियों से लड़ती हैं, जो ज़्यादा जागरूक होती हैं, वे अपने पड़ोसियों से लड़ती हैं, और जो बहुत ज़्यादा जागरूक होती हैं, वे चुनाव लड़ती हैं।

७- एक नेता जी ने बड़े बाब से अपना फोटो खिचवाया, जब फोटो तैयार होकर उनके सामने आया तो वे फोटोग्राफर पर विगड़ पड़े। बोले—क्या खिचियात तस्वीर लींजी है मासूम है इसमें मैं अपनी उम्र से दस साल बड़ा लगता हूँ।

तो क्या नात हुई जनाब, फोटोग्राफर बोला, इसमें तो आपका ही फायदा है।

बो कैसे ? नेता जी शस्त्राक्षर बोले।

आपको दस साल बाब फिर फोटो खींचवाना पड़ेगा।

फोटोग्राफर ने मुस्कराकर जवाब दिया।

८- राजनीतिक कहस के दौरान दो नेताओं के मध्य हो गयी। पहले ने कौणित होकर कहा, "मैं जानता हूँ कि तुम किसके इशारों पर बस नाचते हो ?"

"ठीक है, लेकिन राजनीतिक बहस में तुम मेरी पत्नी को बंधों बचौट रहे हो।" दूसरे ने कहा।

९- समासद के पिछले चुनावों में समादतयंन बाई क्षेत्र से श्री राधेस्वाम साहू (एडवोकेट) भा.ज.पा. के उम्मीदवार थे। अनेक समयकों ने दीवारों की पुताई करके नारे लिखे। एक दीवार पर इस प्रकार से लिखा नजर आया—

"समादतयंन बाई क्षेत्र से भारतीय जनता पार्टी के उम्मीदवार राधेस्वाम साहू, एडवोकेट को बोट बेकर सकल बनाना। और (एक हवाय रुपये) १,०००- रुपये का इनाम पार्श्व"।

असल में हुआ यह कि इस दीवार पर स्वास्थ्य विभाग का यह विज्ञापन लिखा था "बेचक की सूचना किसी बड़े अस्पताल में द और

(एक हवाय रुपये) १०००/- इनाम पार्श्व"। पुताई के दौरान विज्ञापन के नीचे वाली पंक्ति छूट गयी जिससे नारे का नया रूप सामने आया।

१०- भाषण शुरू करने से पहले नेता जी ने कहा "भाइयो धीर रहनो ! मेरे भाषण में कोई गलती हो तो कृपया मेरे सेक्रेटरी को समा करे।

—महेश साहू 'वदह', लखनऊ

## वेद संगोष्ठी प्रयाग

पिछले वर्षों में हमारी वेद संगोष्ठियां सुविधानुसार दिल्ली, वम्बई, चण्डीगढ़, अजमेर एवं काशी आदि नगरों में होती रही हैं। उली श्रुलक्षा में १९६१ में बह गोष्ठी प्रयाग इलाहाबाद में विज्ञान परिषद प्रयाग विद्वत्विद्यालय, गंगानाथ भ्वा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ एवं चन्द्रशेखर आजाद पार्क में स्थित म्भूजियम, विभिन्न आर्यसमाज और आर्य संस्थाओं के सौजन्य से शुरुकार १० मई एब रातिवार ११ मई १९६१ को होगी।

गोष्ठी के प्रायोजन का भार हमारे आग्रह पर प्रयाग विद्वत्-विद्यालय की सेवाविभूत, प्रो० प्रीति अदाबाल ने स्वीकार किया है। उनका पता पत्र व्यवहार के लिए निम्नलिखित है—२ बंक रोड, इलाहाबाद-२२१००२

इस वेद संगोष्ठी के संवाचन के लिए एक कार्यकारिणी समिति का गठन किया गया है।

गोष्ठी का विषय है : वेद प्रतिपादित युद्ध और शान्ति

दिल्ली, हरिद्वार और उत्तर प्रदेश तथा बिहार के वैदिक विद्वानों को इस गोष्ठी में भाग लेने के लिए हमारा विशेष निमन्त्रण है। यदि वे किसी संस्था का प्रतिनिधित्व करते हैं और उनको संस्था उनका मार्ग ध्यय वहन नहीं कर रही है तो हम वहाँ साधारणतः द्वितीय श्रेणी का मार्ग-ध्यय इस संगोष्ठी में भाग लेने के लिए और समय से सूचना मिलने पर उनके भाषास और भोजन का प्रबन्ध भी करेंगे और हम चाहेंगे कि हमारे प्रतिधियों को प्रयाग में किसी प्रकार की अनुविधान न हो। गोष्ठी के अन्तगत बंधुओं और संस्कृत बहिनी इत सीन भाषाओं का प्रयोग हो सकता है। हम चाहेंगे कि हमारे इन भाषणों का स्वर दयानन्ध वेद पीठ की प्रतिष्ठा के अनुकूल हो वे भाषण कालान्तर में संवह के रूप में वेद पीठ प्रकाशित भी करेगा और हो सकता है कि इनमें से कोई भाषण अनरल बाँव द इष्टरत्नसमर्थ दयानन्ध वेद पीठ की पत्रिका में प्रकाशित हो। अन्तमा हो कि भाषण की एक प्रति गोष्ठी संवाचिका के बते पर गोष्ठी के एक मन्संहर्षुषं तक भेज दी जाए।

—स्वामी सत्यशंकासं सरंस्त्री

## शराब न पीने का संकल्प लिया

जयपुर, २४ अप्रैल (कास)। मातृवीय नगर की शुक हरिजन महिलाओं ने दो वर्षन हरिजनों से संकल्प करवाया है कि वे मत्थिय में शराब नहीं पीएंगे। इन हरिजनों ने यह संकल्प ब्रह्मसत् आन्दोलन के प्रगता आचार्य सुबरी के विषय मुनि लोकायकाल लोकेष और सुबल मुनि के समक्ष लिया। जिस समय इन हरिजनों से शराब न पीने का संकल्प लिया, उस समय नारी संस्था में उपस्थित महिलाओं ने करतल ध्वनि कर सुनी वाहिद की।

मुनि लोकायकाल लोकेष और मुनि सुबल ने मातृवीय नगर की केमगिरी अस्पताल के धार-नास की हरिजन स्त्रियों के बीच २४ घण्टे बिताए और हरिजनों से ही जिवा की। (महभारत टाइम्स से)

## आवश्यकता

आर्य कथा गुरुकुल महाविद्यालय नरैसा (दिल्ली-४०) हेतु शास्त्री, आचार्य परीक्षोत्तीर्ण ट्रेड/अट्रेंड अभ्यापिकाओं की भी श्रम आवश्यकता है। आर्य पाठशिक्ष से शिक्षित प्राधियों की वरीयता दी जाएगी। वेतन योग्यतानुसार। प्राधान्य-पत्र द्वारा अथवा स्वयंसेवक संघर्ष करे।

निवेदक :

(बेच भवनीर धार्य)

महात्मान्नी, कथा गुरुकुल महाविद्यालय नरैसा, दिल्ली-४०

## वैदिक वीरांगना नारी

डा० सुरेन्द्रचन्द्र वेदान्तकार, श्रायंसमाज गोरखपुर

वेद में बहुत सौ नारीवाचक देवियों का उल्लेख किया गया है। इनकी देवी देवियों, अथि की दुर्गा और विद्या की सरस्वती है। इनके अतिरिक्त वेदों में अदिति, उषा, इन्द्राणी, इना, भारती, होमा, सिनीवारी, श्रद्धा, पुत्री आदि देवियाँ अनेक वस्तुओं की अभिष्ठात्री हैं। उनको दिव्य युगों की माता या कहीं कहीं पुत्री एवं कन्या के रूप में माना गया है। ऋग्वेद आप देविये तो आपको पता चलेगा कि अदिति का २० बार से भी अधिक बार वर्णन है। एक विद्वान् राम गोविन्द मिश्रे ने अदिति शब्द की चर्चा करते हुए लिखा है "जिस तरह मिथ्र वाले 'मात' (Maat) को पूजते थे और जिस प्रकार यूनानी थेमिस (Themis) को पूजते थे और देवमाता मानते थे, वैसे ही आर्य लोग अदिति को मानते थे। वे अदिति को मित्र, वरुण, सूर्य, इन्द्र आदि की माता मानते थे। अदिति को सर्वव्यक्तिमती मानकर कहीं उन्हे आठ वस्तुओं की पुत्री और कहीं श्रादित्यों की भगिनी भी कहा गया है।" उन्होंने अदिति के विषय में लिखा है "अदिति शब्द से आदित्य बना है।

ऋग्वेद देखने से आपको पता चलेगा कि उसके मण्डल १० सूक्त १०० मन्त्र १ में अदिति की सर्वव्याप्ति (सर्वव्याप्तियों) कहा गया है। अदिति शब्द का अर्थ है स्वयन्मुक्त स्थायी। अदिति को विरवजन्मा (७-१०-४) अर्थात् सर्वहितिणी कहा गया है। १-५६-१० में कहा गया है अदिति का अर्थ प्राकाल, अमरित, माता, पिता, पुत्र और समस्त देव है। १०-३६-३ मंत्र में कहा गया है धनी मित्र और वरुण की माता अदिति हूँ मैं पापों से बचावे। एक दूसरे मन्त्र ७-८२-१० में यज्ञवर्धिका अदिति का तेज हमारे लिए सुलकर हो। उषा भी देवी है। इसका अर्थ प्रभातकालीन देवा है। ऋग्वेद में ३०० से अधिक नाम उषा शब्द आया है। सूक्त के सूक्त की स्तुति से अरे पक्षे हैं। सूर्य की पुत्री सूर्या है। इन्द्र की पत्नी इन्द्राणी है। वाक् की भी देवी माना गया है। ऋग्वेद के १० मण्डल १२२ सूक्त वायेदो का है। परन्तु हमारे मत से यह सब निर्य देवियाँ हैं। निर्यदेवो का मतलब है ऐतिहासिक नहीं है। इन सबका देवी जगत से सम्बन्ध है। यातव जगत पर विचार करते पर क्रात होता है कि आर्य लोग नारियों का बड़ा सम्मान करते थे। वे नारी की ही घर मानते। 'गृहिणी गृहमुच्यते' ३-४३-४ मानते थे। नारो के बिना वे घर का धरितरह ही नहीं मानते थे।

वेदों के अनुसार रिचानों पितृति होती थी, यज्ञ करती थी, वैदिक उपदेश देती थीं। वे मन्त्रद्रष्टा भी होती थीं। यम स्मृति में आया है—

पुराकल्पे कुमारीषां मौञ्जीबन्धनमिष्यते।

अध्यापनं च वेदानां सावित्रीबन्धन तथा।

पिता पित्र्यो जाता या नंनामध्यापयेत्परः ॥

अर्थात् पुराने समय में कन्याओं का उपनयन होता था, वे वेद पढ़ती थी, गायत्री भी पढ़ती थी परन्तु उन्हें पिता, माता, चाचा, चाई के समान ही लोग विद्या पढ़ाते थे। यह तो वेदों की नारियों के प्रति भावना का दिव्यदर्शन करायी है। वेदों के मन्त्रों का देना सम्भव नहीं। परन्तु यहाँ वेदों में नारी को वीरांगना वीर कुल की जन्मदात्री बताया गया है।

भारत के इतिहास का वह एक दुर्दिन था जब उसे सबला के स्थान पर धनवा माना गया। यह स्थिति यहाँ तक पहुँच गई कि कोय तक में नारी के पर्यायवाची शब्दों में 'धनवा' शब्द का प्रयोग किया जाने लगा। परन्तु वेद नारी को अबला नहीं सबला बताया है और इसलिये विवाह समय वधू की माता या चाई बाहिनै हाथ से वधू का हाथों पर एक शिला पर रखता है और कहता है—

धारोहेमस् अरमानममेव त्वं स्थिरा भव।

धर्मिष्ठिष्ठ पृतम्यतोऽववास्त्व पृतनापतः ॥

—पारस्कर गृह सूत्र १-७-१

हे देवी ! इस पत्थर पर अपने कर्मज जैसे कौमल चरणों को रख। जैसे यह शिला लक्ष्मि और और सुदृढ़ है वैसे ही तू भी मातृप, स्थिर, सुदृढ़ तथा मजबूत बन। जो लोग हमें दानना चाहे या आक्रमण करने वाले हों उन्हें तू इस पत्थर की भाँति दबाकर रख और जो

सेना और भारी झूठ द्वारा आक्रमण करना चाहे उनकी कोशियों को तू पत्थर वनकर कुचल डाल। उनको तू चकनाचूर कर दे।

अथर्ववेद के १४-१-४७ मंत्र में कहा गया है—

स्योमं ध्रुवं प्रत्रायै वारयामि ते अरानम देव्याः प्रुषिव्या उपस्ये।  
तमातिष्ठानुमाया मुवर्णं दीवं तं प्रायु। अविता कुणोतु ॥

अर्थात् हे नाग ! तू राक्षसों की प्रजा है तेरे लिए इस दिव्य राक्षसों के पृष्ठ पर मैं अरानम देव्याः शिलाशब्द की रखता हूँ। इस शिलाशब्द पर तू खड़ी हो यह तुझे हटता का पाठ पाढाएगा। मन्त्र कहता है कि तू इस शिलाशब्द के समान ही बर्चस्विनी, तेजस्विनी और बहादुर बन। सिन्धवा परमेस्वर और तेरे अम्बर तेज का आधान करते तेरो आयु को सुदीर्घ करे।

अथर्ववेद के १४/४३-४४ मन्त्र में कहा है

एवा त्वं साराज्येभि पत्युस्तं परत्ये।  
साराज्येभिश्चयुर्युरे साराज्युत देवतु।

नतान्तुः साराज्येभि साराज्युत्तरथनाः ॥

हे वधू ! तुम अब पति के घर जाकर वहाँ (अबला नहीं) महारानी बनकर विराओ। पति के घर सात, सतुष्ट, देवदर, नन्द श्रादि पर तुम महारानी जैसी बनकर रहो। क्या यह धनवा के लिए संभव है? वे अब अत्याचार का मुकामवा करने और अत्याचारों का विरुद्ध डालने को जाता देता है। इतमत बधाती है। वेद की नारियों को ऐसे ही वीर भावों से ओतप्रोत है। एक नारी को विचारधारा सुनिष्ट—

धनोराविम मामव शाराभिर्मम्यते।

उताहमस्मि वीरिणीन्द्रवत्तनो मस्तसखा विष्वस्मादिन्द्र उत्तरः ॥

ऋ० १०-८६-८

वह स्पष्ट रूप में कहती है प्रदे, यह बातक मुझे धनवा मानकर मेरी वैद्वज्जती करना चाहता है पर मैं अबला नहीं वीरांगना हूँ। मौख की परवाह न करनेवाले वीर मेरे हैं। मेरा पति ससारा में धनवी तुल्यता नहीं रखता। वह अपने सब रूप को धरित करते हुए कहती है—

यम पुत्राः सानुहणोऽपो मे सुहित्वा विस्तद।

उताहमस्मि संजया, पत्यो मे यतोऽक उत्तमः ॥ ऋ० १०-१५६-६

सबला नारी औरदार शब्दों में कहती है मेरे पुत्र भी कम बहादुर नहीं, वे शत्रु के छुटा देनेवाते हैं, मेरी पुत्री भी धनवा नहीं वह अद्वितीय तेजस्विनी है। मेरा पति विरव्यवस्था वीर है और मेरा परिचय सुनो, कोई मेरी तरफ कुञ्चित से ताक नहीं सकता, मैं उसकी आल निकाल लूगी, वह ऐसा परास्त होकर सोटेगा कि सवा याद रहेगा।

यह है वैदिक नारी।

(क्रमः)

## आर्यसमाज स्थापना दिवस पर यज्ञोपवीत संस्कार

सन्तरी मण्डी जिला संकर (पञ्जाब) के प्रतिष्ठित आर्यसमाजी श्री मायेराम जी, श्री प्रोतिसात जी और श्री केवलकृष्ण जी के आर्य परिवार ने २१ मार्च आर्यसमाज स्थापना दिवस पर सम्मिलित बहुध यज्ञ पं० धर्मवेद मनीषी देवीवी से करवाया। इस शुभावसर पर श्री केवल कृष्ण जी ने अपने सुपुत्र महारानी का यज्ञोपवीत संस्कार भी कराया। इनका सारा परिवार अत्यन्त श्रद्धालु है। सब सार्यसज्जन इनसे शिक्षा लें।

## नामकरण संस्कार सम्पन्न

२१ मार्च को शाम ढाण्ण रामबास (महेन्द्रगढ़) में श्री महावीर जी सिन्धी गोशाखा उषाना सुई के परिवार में नामकरण संस्कार विधिबिधान के अनुसार किया। वालक का नाम पवनकुमार रखा गया। वालक तथा परिवार वालों को अत्यन्त स्वाभी गौरवान्वर रखा महाराज, स्वामी बर्मानन्द जी, पं० धर्मवेद मनीषी, पं० देवदत्त जी शास्त्री प्रादि विद्वार्थों ने प्राशोर्वादि तथा शुभकामनायें व्यक्त की।



## कैसा हिन्दुस्तान ?

(शोरज गाथा, काठमांडू, टोहारा)

हे भगवान् कैसा हो गया मेरा हिन्दुस्तान ।  
जिसमें अब नहीं रहो कोई भी ।  
नहीं गते लोग अब यहाँ हिन्दी का पाण ।  
हिन्दी और संस्कृत से घटा इनका मान ।  
समझता नहीं कोई यहाँ वेद और पुराण ।  
पुस्तकों पर मैं रह गया सद्गुणों का ज्ञान ।  
नहीं करते बच्चे देखो माता-पिता का सम्मान ।  
देते नहीं जरा भी कुछ बच्चों पर ध्यान ।  
विगड़ गया सबका यहाँ ज्ञान और पाण ।  
पाती महैया 'शोरज' यहाँ सस्ती यहाँ जान ॥

गीत

## ओ३म् का झण्डा लहराओ

लेखक—कवि हरैराम बेंगला रेडियो व टो०बी० टिगर  
बडोली (फरीदाबाद)

जागो आज आर्याजाति समय नहीं है सोने का,  
बला हृषा यदयन्म, हमारा नाम जमी तं सोने का ।  
एक लुटेरा बाबर था जो इस भारत में आया था,  
फिरोज कुकर्म किए यहाँ शाहों का लून बहाया था ।  
पुद्बोत्तम श्री राम का मन्दिर जिसने तोड़ गिराया था,  
अपनी मस्जिद बना बई को बरा नहीं रहनाया था ।  
क्या हमको अकसोस नहीं बदनामी सर पे देने का ।।  
हिन्दू अगर अयोध्या में मन्दिर बननाया चाहते हैं,  
अष्टाचार्य नेना ससको पेशवाइ बतलाते हैं ।  
अगर कारसेवा कचने को रामचक्र कहा जाते हैं,  
जन्ता पर मोली बरसा सल्लों का लून बहाते हैं ।  
ये मांग रहै प्रभाव अयोध्या में जन्म राम के होने का ।।  
इन गद्दरों से पुखी क्यों हतना करनेवाय हवा,  
अपनों को मरवाते से क्या जन्मका का बनय हवा ।  
हिन्दू राष्ट्र खत्म होना भारत में बर्ष इस्लाम हुवा,  
औरन्नेज हूमायूँ बाबर इनका, ये देख गुलाम हुवा ।

इन नीचों ने ठेका से राख्य म्हाार बंध बुनोने का ।।  
ये मुस्लाहों की पीठ टोकते ऋषियों को मरवाते हैं,  
सालों रूपसे हान मस्जिद को पर मन्दिर को लुडवाते हैं ।  
कश्मीर के मुस्लिम हिन्दुओं पर जुलम रात-दिन डाले हैं,  
वहनों की इच्छत लुटती ये जरा ना काम हिलाते हैं ।

आज तमक ह- मजा बाल रहे बीज बरी के मोने का ।।  
टी०बी० पर इस्लाम का भण्डा बार-बार फहराते हैं,  
ऋषि दयानन्द का नाम नहीं टोपु सुलतान दिखाले हैं ।  
संस्कृत का श्लोक नही उर्दू की गजल सुनाते हैं ।  
ध्यान रखो ये पापी हिन्दुस्तान मिटाना चाहते हैं ।

हिन्दू राष्ट्र खत्म होयगा टेर निर्वं ना रोने का ।।  
हृषा बटवारा भावादी पांडे भारत देश महान् का,  
हिन्दू का हिस्सा यहाँ रहा शौर मुस्लिम पाकिस्तान का ।  
फेर वताबो काम यहाँ के रहत्या मुसलमान का,  
देख लिए फिर बटवारा कमी होगा हिन्दुस्तान का ।  
भूष पे कालिख पुते मिले ना मीका मुखडा बोने का ।।  
बीड जैन और सिख धर्म हिन्दू शाखा में आते हैं  
अपने स्वार्थ के कारण कुछ हन्ह लड़ाना चाहते हैं ।  
भरजों से संसा आता फिर देने यहाँ कराते हैं ।  
इनके बहकाने में ह्रा इन सपना ही लून बहाते हैं ।

इसीलिए नकसा बदला मेरे भारत देश सजोने का ।।  
जुनें जाट गद्दर बाहुम राजपूत हरिजन आधो,  
सारी जाल इकट्ठी होके आपस में गले बण जाधो ।  
ऋषि दयानन्द को जय बोधो ओ३म् का झण्डा सहाराओ,  
धर्म को रखा करनी है अब हाथों में सख ठाधो ।  
नहीं समय 'हरैराम' आज आपस में भ्रमद छोने का ।  
बहा हृषा यदयन्म हमारा नाम जमी तं सोने का ।।

## सर्वखाप पंचायत सौरम के महामन्त्री, इतिहास के मूर्धन्य विद्वान् चौधरी कबूलसिंह जी चले गए

यह सार्वजनिक दुःख सूचना देने में हमें बहुत हादिक दुःख हो रहा है कि प्राचीन विद्यालय हृषावा की सर्वखाप पंचायत के महाधर्मो चौधरी कबूलसिंह जी ११-१२ वर्ष की अवस्था में ४ अप्रैल १९६१ को सार्थ सात बच्चे हूमें छोड़ गए । आप पत्र ५-६ वर्ष से बुढाना करने में रहते थे । १९२५ से इस पंचायत के प्रतिष्ठित मन्त्री थे । आपको उक्त हृषावा का इतिहास कम्प्लेक्स स्मरण था । आपने इतिहास के पांच शोधकर्ताओं को पी-एच.डी. की उपाधि दिलाई । संकल्प पंचायतों में सत्य स्वायत्तपुं पीसते कराये थे । संकल्प आसमाजवादी, मुसकुलों में देव धर्म उपदेश दिया था । १९५१ ई० में आपको चितौड़गढ़ तथा मयूरस के किसान सम्मेलन में ५०० रुपये हुआसे से आपका अभिनन्दन किया १९५२ में धार्यसमाज हृषाओ में ब्रह्मजी राज के विरुद्ध भाषण से ६ मास का निर्वासन दण्ड मिला था । आप वेतन धर्म, महान् दयानन्द, वेद के सुदृढ़ ईश्वर उपासक आर्य योगी थे । आपने स्वामी श्रदानन्द, दर्शनानन्द के दर्शन किये थे । आजीवन यज्ञोपवीत रखा ।

आपके धाम सौरम में ६ अप्रैल को वैदिक पद्धति से आपका दाह संस्कार किया गया । कई हृषार नर-नारी उपस्थित थे । १८ अप्रैल को उनके घर के सामने हृषारों की जनसमस्या में अग्रदूत आपों के प्रयानों द्वारा यज्ञ करके आपके बड़े सुपुत्र केरुसिंह को ६१ सम्मान पत्रद्वारा बांधी गई और शोक अर्पणित सभा में उनको विनंत आत्मा की शान्ति की प्रार्थना की गई । उनके दो सुपुत्र तथा एक पुत्री, ६ पौत्र समग्र हैं । अन्तोष्टि में दस शहीदी, एक बोरी साधुजी का हवन किया ।

विनोत शोकमुर—

निहासिंह आर्य अघ्यापक, चौ. केरुसिंह बालियान  
श्राय सौरम, तहसील बुढाना, जिला मुजफ्फर नगर ।

## श्री रतीराम आर्य का निधन

धार्यसमाज के प्रसिद्ध कर्मठ कार्यकर्ता श्री रतीराम आर्य धाम वालोड (रौहलक) का १९-१-११ को ८०- वर्ष की अवस्था में स्वर्गवास हो गया । उक्त उपलक्ष्य में दिनांक २१-१-६१ को उनके परिवार में एक शान्ति यज्ञ का आयोजन किया गया । जिसमें पारिवारिक सदस्यों के शिरिक रिस्तेदारों व सभी यानने वालों ने भाग लिया । रिचन्त आत्मा को यद्वाजलि अर्पित की गई । शान्ति यज्ञ का उत्तम प्रभाव रहा । बोला छोडेने से पहले ही परिवार को इकट्ठा करके यही कहा कि धार्यसमाज की सेवा मेरे से भी बढाया होतौ है ।

—जयपालसिंह धार्य, सभा मजबोरपेशक

## आवश्यक सूचना

स्वामी परमानन्द जी महाराज (छोटा बाबा वाले) को पुष्कल कालका के प्रधान श्री विरसमान जी सिंहावा (नींद) वाले प्रत्यक्ष आवश्यक कार्य में मिलाया चाहते हैं । स्वामी परमानन्द जी इस सूचना को पढकर श्रीप्रतिशीघ्र प्रधान विरसमान जी सिंहावा वाले से मिस लें ।

## वीर्य रक्षा

देश की नाव मसभार पढी, प्राणों ने नौर बहाया ।  
वीर्य नष्ट किया हुए जानी, नहीं समझ में आया ।  
स्वन्तदोष मेषुन प्रादि से शक्ति नहीं बहायो ।  
बूद - बूद है बहुत अमृत्य, देह में इसे रसायो ॥  
शौर शौर गम्भीर हमेशा नियंत्र वन आधोने ॥  
युद्ध अवस्था में ही बुद्ध कमी न हो पावोने ॥  
पितामह मोक्ष की भांति, मृत्युधन्य वन जावोने ॥  
नगने वाले काम असम्भव, तुम करके दिखवावो ॥  
सभी महापुरुषों ने शक्ति 'अपनी देह रमाई' ।  
वीर्य स्थिरता का मूल्य सपको मेरे याई ॥  
महेश नाथ व्रत धार से सिद्ध हों सब काज ।  
इससे बढकर नहीं तपस्या भूष गये क्यों काज ॥

—महेश नाथ, मन्दीरा बुद्ध, बल्लभगढ़ (फरीदाबाद)

## एकता

राजेश प्रतापसिंह श्याम हाटा, जिला देवरिया (पू०पी०)

संगच्छन्नं संवत्स्रं सं वो मनांसि जानताम् ।  
देवा भागं यथा पुत्रं संजानामा उपासते ॥

ॐ००-१-१९१-२

हे मनुष्यो मिलकर चलो। मिलकर बोलो। तुम्हारे मन एक प्रकार के विचार करें जिस प्रकार प्राचीन विद्वान् एकमत होकर अपना-अपना भाग ग्रहण करते थे (उसी प्रकार तुम भी एकमत होकर अपना भाग ग्रहण करो।)

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। उसका सम्बन्ध समाज से है। वह समाज का एक अंग है। व्यक्ति व्यक्ति है और समाज समष्टि। संगठन से समष्टि सुदृढ़ होती है। संगठन निर्बल को भी बलवान्, शक्तिहीन को शक्तिशाली बना देता है। अतः कहा गया है कि—'साथे शक्तिः कबो तुये' कसियुग में संगठन में हो शक्ति है। नीति का श्लोक है कि—  
संहतिः श्रेयसो पुरां सुगुणैरल्पकल्पि ।  
तृणैर्गृत्ववापान्नैः कल्पन्ते मन्तवस्तिनः ॥

सद्गुणमुक्त बोड़े व्यक्ति भी हों, तो उनका संगठित होना कल्याणकारी है। तिनके से मिलकर रस्सा बनता है और उनसे मत्त हाथी भी बंधे जा सकते हैं। संगठन की महिमा अथार है। समाज में प्रतिष्ठित रूप से जीवित रहने के लिए संगठन अनिवार्य है। अतएव मन्त्र में कहा गया है कि प्राचीन ऋषि-मुनि एव आर्यजन एकत्व के महत्त्व को समझकर सुसंगठित थे, उसी प्रकार हम भी सुसंगठित हों। इसके लिए आवश्यकता है कि सभी व्यक्ति साथ उठें बेंलें। मिलकर विचारविनिमय करे और सामूहिक निर्णय का पालन करे। जो साथ चलेंगे, मिलकर बोलेंगे और जिनमें संज्ञान (एकत्व बुद्धि) होगा, वे सदा उन्नति करेंगे। उनका समाज, देश तथा सभार में उत्थान करेगा।

एकता तथा संगठन के लिए विचारों की एकता तथा हृदय की एकता का होना निताल आवश्यक है। जब विचार और हृदय में एकता होगी तब हम इस एकता को सच्ची, सुदृढ़ तथा निर्भल-पवित्र एकता कहेंगे।

बेद का कथन है कि परमार्या में सभी को समान सुविधाएँ दो हैं और समान उपकरण दिए हैं। मनुष्य का कर्तव्य है कि वह उनकी सुविधाओं को ठीक उपयोग करके अपनी और समाज को उन्नति करे। व्यक्तिगत और सामूहिक उन्नति का साधन है विचारों की एकता, भावनाओं का समन्वय और क्रियाकलापों में एकप्यता। इनके लिए ही हम शीघ्र समिति का गठन किया गया था। इनमें विचार विनियम के द्वारा समाज की एक निश्चित प्रक्रिया निर्धारित की जाती थी। इसका पालन करने से समाज सुसंगठित था। इसको ही मन्त्र में कहा गया है कि मन या विचार समान हों। सजाज के सभी सदस्यों के विचारों में एकप्यता हो। सभी एक निर्णय करके उसका पालन करे। यह संगठन या एकता की भावना ही समाज को उन्नति प्रदान कर सकती है। समाज के सभी सदस्यों के विचार तथा हृदय में एकता हो। अतः इसका वृत्तायुर्वक पालन करना चाहिए।

हृदय की एकता तथा मन की एकता के अतिरिक्त द्वेष का अभाव तथा प्रेम और सद्भाव भी आवश्यक है। यदि संगठित होने वाले समाज में पारस्परिक द्वेष है, कलह है, ईर्ष्या है और मनोमालिन्य है, तो वह समाज सुसंगठित नहीं हो सकता है। अतः आवश्यक है कि संगठन को सुदृढ़ बनाने के लिए पारस्परिक द्वेष मनोमालिन्य और ईर्ष्या को तिलाजलि द्रो जाय। इसके अतिरिक्त अन्य आवश्यकता है—पारस्परिक प्रेम और सहायुगुति की। जैसे भाग अपने गच्छ वच्छ से बन्धित प्रेम करती है। इसके लिए यह प्राम देने को भी उद्यत रहती। इसी प्रकार यदि समाज में बन्धित प्रेम का प्रवाह होगा, एक-दूसरे के लिए प्राम देने को उद्यत रहेंगे और यदि परस्पर हित-चिन्तन करेंगे, तो वह समाज अवश्यमन सुसंगठित होगा।

इतिहास के पृष्ठ साक्षी हैं कि एकता के धाम का दुष्परिणाम कितना भयानक होता रहा है। कौरव और पाण्डवों की जापसी घृत् के कारण इतना बड़ा महाभारत हुआ जिसे सारा ससार जानता है। अनाचारी रावण भी शायद ही पराजित होता यदि धरमे ही छोटे माई विभीषण को सात मारकर वह अपने से विलग नहीं करता। पृथ्वीराज चौहान भीरु अयचन्द की घृत् से हमें विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा युलाम बनाया तथा मौरजाफर का हमसे शिटक फाका हमारी दासता का कारण बना। हम जब हिन्दू युलसमान एक रहे तो हमने अरब जैसे राजनीतिक घुरम्पनों के छक्के छुड़ाये और जब आपस में सड़ने लगे तब हमने भारत माता की छाती के दो टुकड़े किये। मुट्ठी भर जापानियों और जर्मनी के सामने बड़ी-बड़ी शक्तियाँ साक्षात् दम्बन्त् करती रही—इसका एक मात्र कारण है उन देशों के लोगों की दुदृ एकता।

परन्तु बहुत दुःख से कहना पड़ता है कि आज हमारे राष्ट्र के सम्मूल सबसे बड़ी समस्या उनकी एकता को भग करने के लिए अनेक चेष्टाएँ हो रही हैं। राष्ट्र टुकड़े-टुकड़े होना चाहता है। पंजाब में भातकबादी, सिक्ख पंजाबी सूदे के नाम पर सस्ती लीडरी रखने के लिए राष्ट्रीय एकता की पीठ में छुरा मोकना चाहते हैं और धरम, नागालैण्ड, केरल साम्प्रदायिकता फेला रहे हैं। एक शीर पार्थसालन काश्मीर को हड़पने की घुडकियाँ दे रहा है तो दूसरी शीर चीन भी सीमातिक्रमण कर रहा है। अतः आज राष्ट्र के सम्मूल समस्या एकता की है।

राष्ट्रीय एकता की रखा के लिए सर्वप्रथम राष्ट्र के महत्त्व को सर्वोपरि स्वीकार करना होगा। हमें समझना पड़ेगा कि राष्ट्र, जाति, धर्म, भाषा, बल प्राप्त, व्यक्तिगत स्वार्थ जाति के अग्र है। राष्ट्र के प्रति कर्तव्यपालन का दृढ सकल्प करना होगा। राष्ट्र के लिए धन, बल से त्यागपूँजक सर्वेव प्रस्तुत रहना पड़ेगा। राष्ट्र की सम्पत्ति को, राष्ट्र की मर्यादा को अपनी सम्पत्ति और मर्यादा समझकर उसकी रखा के लिए उद्यत रहना पड़ेगा।

साम्प्रदायिकता का समूलोन्मूलन करना होगा। धर्म निरपेक्ष राष्ट्र में साम्प्रदायिकता को राजनीति में कोई स्थान नहीं मिलना चाहिए। जो धर्म व सम्प्रदाय के नाम पर भगडा करते वाले हैं। उनको कठोर दण्ड देना होगा।

धर्म निरपेक्षता के आधार पर ही शिक्षा का संगठन होना चाहिए। सरकार को कानून द्वारा किसी विद्यालय का नाम साम्प्रदायिक जातीय या धार्मिक आधार पर न रखने देना चाहिए। हिन्दू विस्वविद्यालय, मुस्लिम विस्वविद्यालय, खालसा कालेज, सनातन धर्म कालेज, शी० ए० बी० कालेज, मुस्लिम कालेज आदि नामों पर प्रतिबन्ध खना देना चाहिए।

भाषा के आधार पर भगडा या धपरराज नहीं करना चाहिए। क्योंकि भाषा का धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं है। देवगरी लिपि को ही देश की समस्त भाषाओं के लिए ग्रहण करना चाहिए। एक लिपि के कारण भाषा में एकता होगी जिससे राष्ट्रीय एकता को बल मिलेगा।

प्रांतीयता का भेदभाव सबका सामान्य होना चाहिए। हम सब भारतीय हैं। इन सबके लिए मन और विचार समान होने चाहिए ऋचेद के एक मन्त्र से—

समानो व आकृति, समाना हृदयानि वः ।  
समानमस्तु वो मनो, यथा व सुमहासति ॥

तुम्हारे संगठन समान हों। तुम्हारे हृदय समान हों। तुम्हारे मन समान हों, जिससे तुम्हारा संगठन हो।

इस मन्त्र में संगठन के तीन मूल तत्वों का निर्देश किया गया है वे निम्न हैं—

- १) विचार साम्य।
- २) हृदय साम्य।
- ३) मन साम्य।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

## वेद में प्रश्नोत्तर विद्या

(१०) धर्मवेद 'मनोषी' वेदतोषी, गुरुकुल काशबा)

यजुर्वेद के २३वें अध्याय में ४४वें मन्त्र से लेकर ६२वें मन्त्रों तक विद्वानों से जिज्ञासु बनकर कसे प्रश्न करने चाहिए यह वचन किया है। पहला मन्त्र प्रश्नों का है अगला मन्त्र उत्तरों का है—

नः शिक्रेकाकी चरति कउत् स्विन्वायते पुनः ।

कि ऽस्त्विदं हिमस्य भेषज किन्वावपनं महत् ॥ यजु० २३।४४

धर्म—हे विद्वान् ! इस संसार में (कः स्वित्) कौन (एकाकी) अकेला (चरति) प्राप्त होता है एव भ्रमण करता है ? (क उ स्वित्) और कौन (पुनः) फिर (जायते) उत्पन्न होता है ? (कि स्वित्) क्या (हिमस्य) शीत—ठंड की (भेषजम्) औषध है ? (किम्) और कौन (महत्) महान् (आवपनम्) सर्वाधार है ? यह वचनाव्ये।

भावार्थ—अकेला कौन भ्रमण करता है ? शीत—ठंड का निवारण कौन है ? बार-बार कौन उत्पन्न होता है ? महान् उत्पात्ति-स्थान है ? इन प्रश्नों के समाधान अगले मन्त्र में समझे।

पूर्वाक्त प्रश्नों के उत्तर—

सूर्यएकाकी चरति चन्द्रमा जायते पुनः ।

अनिहिमस्य भेषज भूमिरावपनं महत् ॥ यजु० २३-४६

अर्थ—हे जिज्ञासु ! (सूर्यः) सूर्यलोक (एकाकी) अकेला (चरति) भ्रमण करता है । (चन्द्रमाः) आकाशकारी चन्द्र (पुनः) फिर (जायते) प्रकाशित होता है । (अनि) अनि (हिमस्य) शीत—ठंड का (भेषजम्) औषध है । (महत्) विस्तृत (आवपनम्) बीज बोने का क्षेत्र (भूमिः) पृथिवी है, ऐसा समझ ।

भावार्थ—हे विद्वानो ! सूर्य अपनी ही परिधि में भ्रमण करता है, किसी लोक में चारों ओर नहीं घूमता । चन्द्र आदि लोक उड़ी से प्रकाशित हैं । अनि ही शीत—ठंड का निवारक है । सब बीज बोने के लिए महान् क्षेत्र भूमि ही है, ऐसा तुम समझो ।

मन्त्रों के प्रश्न और उत्तर—

इस संसार में अकेला कौन भ्रमण करता है ? तत्पश्चात् कौन उत्पन्न होता है ? शीत का निवारक औषध क्या है ? कौन सर्वाधार एवं महान् उत्पात्ति स्थान है ? इन प्रश्नों का समाधान इस प्रकार किया है—

हे जिज्ञासु ! सूर्य अपनी ही परिधि में अकेला ही भ्रमण करता है । वह किसी लोक के चारों ओर नहीं घूमता । तत्पश्चात् चन्द्रमा उत्पन्न होता है अर्थात् चन्द्र आदि लोक सूर्य से ही प्रकाशित होते हैं । अनि ही शीत का निवारक औषध है । सब बीज बोने के लिए महान् क्षेत्र भूमि ही है ।

विद्वानों से इस प्रकार प्रश्न करें—

कि ऽस्त्विदं सूर्यस्य ज्योतिः कि ऽस्त्विदं सूर्यस्य सरः ।

कि ऽस्त्विदं सूर्यस्य वर्षाः कस्य मात्रा न विद्यते ॥ यजु० २३।४७

धर्म—हे विद्वान् ! (किस्वित्) कौन (सूर्यसमम्) सूर्य के तुल्य (ज्योतिः) प्रकाशस्वरूप है ? (किम्) कौन (समुद्रसमम्) समुद्र के तुल्य (सरः) तालाब है ? (किस्वित्) और (सूर्यस्य) पृथिवी से (वर्षा) अधिक है ? (कस्य) किसका (मात्रा) परिमाण (न) नहीं (विद्यते) है । यह वचनाव्ये।

भावार्थ—सूर्य के समान तेजस्वी, समुद्र के समान तालाब और सूर्य से अधिक कौन है ? और किसका परिमाण नहीं है । इन प्रश्नों के उत्तर अगले मन्त्र में समझे ।

मन्त्रोक्त प्रश्नों के उत्तर—

ब्रह्मा सूर्यसमं ज्योतिषीः समुद्रसमं ऽसिरः ।

इन्द्रः पृथिव्यं वर्षायान् योस्तु मात्रा न विद्यते ॥ यजु० २३।४८

धर्म—हे जिज्ञासु ! तू (सूर्यसमम्) सूर्य के तुल्य (ज्योतिः) प्रकाशक (ब्रह्मा) सब से महान् अनाम ब्रह्म, (समुद्रसमम्) समुद्र के तुल्य (सरः) तालाब (योः) अन्तरिक्ष, (पृथिव्यं) पृथिवी से (वर्षायान्) बड़ा

(इन्द्रः) सूर्य, (गो) वाणी की (तु) तो (मात्रा) मात्रा परिमाण (न) नहीं (विद्यते) है, ऐसा जान ।

भावार्थ—ब्रह्म के तुल्य अपने प्रकाश से प्रमासमान ज्योति कोई नहीं है । सूर्य-प्रकाश से युक्त मेघ—बादल के तुल्य कोई जलाशय—तालाब नहीं है । सूर्य के तुल्य कोई लोकों का स्वामी नहीं है । वाणी के तुल्य व्यवहार-साधक कोई वस्तु नहीं है, ऐसा सब निश्चय करे ।

विद्वानों से इस प्रकार प्रश्न करें—

सूर्य के समान प्रकाशस्वरूप एवं तेजस्वी कौन है ? समुद्र के समान तालाब कौन है ? पृथिवी से बड़ा एवं अधिक कौन है ? किसकी मात्रा अर्थात् परिमाण नहीं है ? वेद में इन प्रश्नों के उत्तर इन प्रकार हैं—

हे जिज्ञासु ! अपने प्रकाश से प्रकासमान, सब से महान्, अनन्त ब्रह्म के समान कोई ज्योति नहीं है । समुद्र अर्थात् सूर्य के प्रकाश से युक्त मेघ के समान कोई जलाशय—तालाब नहीं है । आकाश पृथिवी से बड़ा है और सूर्य सब लोकों का स्वामी है । वाणी की मात्रा—परिमाण नहीं है एवं वाणी के तुल्य व्यवहार-साधक कोई वस्तु नहीं है ।

वेद के आदेशानुसार विद्वानों से सदा ज्ञानवर्द्धन करना चाहिये । इन मन्त्रों से यही शिक्षा प्राप्त होती है । यहाँ केवल बार ही प्रश्नोत्तर के मन्त्र प्रस्तुत किये हैं । आगे भी यथावसर प्रश्नोत्तर के मन्त्र प्रस्तुत किये जायेंगे ।

## भारतस्य दुर्दिशा

रोचते गानं न मष्टम् रागयुक्तं साम्प्रतम् ।

ऋन्ते चित्तं मदीयं बीक्ष्य देशं दुर्गुप्तम् ॥

इकतः उदयेषु अयम् क्षुधा क्रीणहस्य ।

अन्यतः अट्टाधिकार्यां कामिनीं कैलिकम्पम् ॥

दीनजनताया नेता यः ऐश्वर्यं मत्तं सदा ।

उदारं कर्तुं जनानाम् वर्तते समयः कदा ॥

दीनाहीनाः शामीवास्ते क्वं कुर्वन्तः सदा ।

नगरास्ते ये जीवन्ति शोषयन्तः तान् मुदा ।

संकटे प्राणाः जनानाम् क्रीडिषी न संरक्षकः ।

वस्तुतः ये रक्षकाः न ते भवन्ति भक्षकाः ॥

रोचते गानं न मष्टम् रागयुक्तं साम्प्रतम् ।

ऋन्ते चित्तं मदीयं बीक्ष्य देशं दुर्गुप्तम् ॥

पं धर्मशास्त्र शास्त्री, हिसार ।

(गुप्त ५ का लेख)

किसी भी संगठन के लिए सर्वप्रथम आवश्यकता है कि संघटित होने वाले समूह में विचारों की एकता हो । यदि विचारों में एकता नहीं है, विचारभेद है, मतभेद है, तो वह संगठन सुदृढ़ नहीं हो सकता है । जहाँ विचारों की एकता होगी वहाँ लक्ष्य एक होगा, साध्य एक होगा । वह एक लक्ष्य सबको संगठित रहेगा । दूसरी आवश्यकता है—हृदय की एकता । लक्ष्य भले ही एक हो, पर यदि हृदय उसमें हार्दिक सहयोग नहीं दे रहे हैं, हृदय के साथ नहीं हैं, वहाँ हार्दिक एकता नहीं है, लक्ष्य एक होने पर भी सफलता नहीं मिलेगी । अतः एक लक्ष्य की पूर्ति के लिए हृदय की एकता भी आवश्यक है । तीसरी आवश्यकता है—मन की एकता । यदि लक्ष्य एक है और हृदय में सहानुभूति भी है, पर यदि कियाधीनता नहीं है, प्रेरणा और प्रबुद्धता नहीं है तो वह संगठन दृढ़ नहीं होगा । कठोपनिषद् के अनुसार—“मनः प्रग्रहनेव च” मन शरीर में लगाम का काम करता है । लगाम जिस ढंग से नियन्त्रित की जाएगी, उतनी प्रकार कोई चलेगा । यदि मनको लगाम को ठीक नियन्त्रित रखेंगे, नियन्त्रितरूप से उस कार्य को गति देंगे और पूर्ण मनोयोग देंगे, तभी हमारा संगठन सुव्यवस्थित और सुदृढ़ होगा ।

**आर्यसमाज चित्रगुप्तगंज लखर का चुनाव**

१- प्रधान-श्री मनाराम गुप्त, २- उपप्रधान-श्री भरोसीलाख प्राम्, ३- मन्त्री-श्री प्रकाशचन्द्र बघवास, ४- उपमन्त्री- श्री जगदोष शर्माकर, ५- कोषाध्यक्ष-श्री नरोद्ध गुप्त, ६- पुस्तकाध्यक्ष-श्री सुरेन्द्र घटनागर, ७- लेखानिरीक्षक-श्री प्रेम सतीषा, ८- पुरोहित एवं संरक्षक-श्री गोकुलप्रसाद शास्त्री ।

**आर्यसमाज घण्टाघर भिवानी का चुनाव**

दिनांक १४ अप्रैल, को माननीय डा० प्रमोदसिंह जी की अध्यक्षता में आर्यसमाज घण्टाघर भिवानी के पदाधिकारियों का चुनाव सम्पन्न हुआ जो निम्न प्रकार से है—

१- प्रधान-डा० अमरीसिंह जी, २- उपप्रधान-श्री आनन्दस्वरूप जी, ३- मन्त्री-श्री विमलेश प्राम्, ४- उपमन्त्री- श्री रामफल जी, ५- कोषाध्यक्ष-श्री रतनलाल जी पंढरी, ६- पुस्तकाध्यक्ष-श्री मोमप्रकाश जी गोयल, ७- प्रचार मन्त्री-श्री रामरत्न श्री 'भजनोपदेशक' ८- लेखानिरीक्षक-श्री राधेश्याम जी, ९- पुस्तक विक्रय विभागध्यक्ष-श्री सोमपाश जी शास्त्री, १०- संरक्षक-श्री फूलचन्द जी शर्मा 'विडर' ।

**समस्त गुरुकुलों के पाठ्यक्रम के**

**एकीकरण का प्रयास असफल**

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री सुभाष विद्यालंकार की धोर से समस्त गुरुकुलों को मूंचित किया गया कि गुरुकुल कांगड़ी के ६१वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर ८-२-१० अप्रैल १९६१ को एक बैठक का आयोजन किया जाये और उसमें यह निश्चित किया जाये कि समस्त गुरुकुल एक ही पाठ्यक्रिम से सम्बद्ध होकर एकवृत्त होकर रहें। तदनुसार इस बैठक में चार दिन लगाकर एक सर्वसम्मत् पाठ्यक्रम तैयार किया गया। यह पाठ्यक्रम स्वामी श्रीमानन्द जी सरस्वती आचार्य गुरुकुल शंज्वर की देख-रेख में तैयार हुआ।

इस बैठक में गुरुकुल शंज्वर, गुरुकुल मंसवाल, गुरुकुल घासेडा, कम्पा गुरुकुल नरेला, कम्पा गुरुकुल बाधिया (राज०), कम्पा गुरुकुल जसाव, गुरुकुल बंधनाथधाम विहार, गुरुकुल हरदुर्गागंज, गुरुकुल मौतमनगर (बिल्हो), गुरुकुल प्रभात आश्रम वेरद आदि १७ गुरुकुलों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

जब पाठ्यक्रम तैयार करने लगे तो कुलपति श्री सुभाष जी से निवेदन किया गया कि अनेक गुरुकुल महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बद्ध हैं। वे आपके साथ तभी सग सक्त हैं जब आप उनको विश्वविद्यालय अनुदान प्रायोग से वार्षिक सहायता दिखवायें। उन्होंने मायता देने तथा वार्षिक अनुदान का आश्वासन दिया। इसके पश्चात् पाठ्यक्रम तैयार करके उनको दिखाया गया तो उन्होंने कहा कि अनुदान विलाना धीर मायता देना मेरे वार्षिकार से बाहर है। आप लोग ऐसा करे कि इस पाठ्यक्रिम को हम गुरुकुल कांगड़ी विश्व-विद्यालय में वैकल्पिक स्थान दे देते हैं। आप धरने यहां आठवीं तक छात्रों को रखकर नवम कक्षा (विद्यापिकारी) से गुरुकुल कांगड़ी में भेज दिया करे। जो छात्र निश्चय होंगे उनको हम छात्रवृत्ति दे दिया करेंगे। हमारे यहां छात्रों को कमी भी रहती है।

यह सुनकर सभी आचार्य लोगों को ठेस पहुंची और कुलपति के इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया।

हमने इसका सोचा-या यह धर्मिप्राय निकाला कि जब तक महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय ने गुरुकुलों के पाठ्यक्रम को मायता नहीं दी थी, उस समय तक अनेक गुरुकुलों के छात्र गुरुकुल कांगड़ी से बर्लंकार एम.ए. आदि करते रहते थे। रोहतक से मायता मिलने पर गुरुकुल कांगड़ी में अन्य गुरुकुलों से जाने वाले छात्र नगण्य रह गये। उनको अपनी ओर आकृष्ट करने का कुलपति महोदय का यह कार्यक्रम था। इसे मानने पर सभी गुरुकुल गुरुकुल कांगड़ी की एक लघु शाला मात्र बनकर रह जाते। आज जहां शास्त्री, आचार्य और एम.ए. कक्षाएं चलती हैं उन सस्थाओं को अष्टम कक्षा तक ही सीमित करने रख देना किस को स्वीकार हो सकता था।


साथ ही वृंगलिस की अनिवायंता भी धोपी जा रही थी। यह भी किसी को स्वीकार नहीं हो पाई। अतः उक्त बैठक का कोई परिणाम नहीं निकला भी इतने लोगों के कई दिन व्यर्थ नष्ट हो गये।

—विरवानन्द गुरुकुल भज्जर


**आर्यसमाज कुञ्जपुरा का उत्सव**

२७, २८ अप्रैल १९६१ को बड़ी भूप-धाम से सम्पन्न हुआ जिसमें ५० ताराचन्द्र वैदिक तोप ने मूति-पूजा का सज्जन किया एक तीन नवयुवकों ने शाराव न पीने की प्रतिज्ञा की जिसमें श्री मनोराम यादव, श्री सुरेशकुमार एवं श्री बस्तीराम हैं। ७ नवयुवकों ने यज्ञोक्तीत धारण किए। अध्यक्ष पद से बोलेते हुए श्री छोटेलाल प्रधान आर्य समाज नारनौल ने बताया कि आर्यसमाज के काम को हमें ज्यादा से ज्यादा आगे बढ़ाने हेतु नवयुवकों का सहयोग लेना चाहिये। सभी को तरफ से ५० जयपालसिंह वेष्टक की भजन मण्डलों के बडे प्रभावकारी भजन हुए। बंध रोहतास ने भी उत्साह से काय सम्भारा। डा० विश्वभरद्वयल बाबोब ने मासक वस्तुओं से नचने के लिए सुन्दर भजन गाए। म० सुभाषाम ने भी वद्वेज से नचने के लिए मार्ग दर्शाना। सभा की ३०१ २० दान दिया गया।

**दांतों की हर बीमारी का धरतू इलाज**




**दंत मंजिन**  
लौहा युक्त




मसूदों की रूज्ज

23 जड़ी बूटियों से निर्मित  
आयुर्वेदिक औषधि




दातों का शक्कर



गुह की दुर्गति

अप नये-पेक्षित  
ने उदरकी




ठंडा अर्य पानी  
लज्जा

विशेषकर

**महाशिया की हट्टी (प्र०) लि०**

814, इण्डियन एजियं बीबी रोड - नई दिल्ली 15 फोन 836609, 57987, 57241



दात का दर्द

**हरयाणा के अधिकृत विक्रेता**

१. मेसर्ज परमानन्द साईबिलाम, भिवानी स्टेंड रोहतक।
२. मेसर्ज फूलचन्द सोताराम, गाँधी चौक, हिसार।
३. मेसर्ज सन-अप-ट्रेडर्स, सारंग रोड, सोनीपत।
४. मेसर्ज हरीश एजेंसीज, ४६६/१७ गुरुद्वारा रोड, पानीपत।
५. मेसर्ज भगवानदास देवकीनन्दन, सराफा बाजार, करनाल।
६. मेसर्ज बनश्यामदास सोताराम बाजार, भिवानी।
७. मेसर्ज कृपाराम गोयल, रड्डी बाजार, हिरसा।
८. मेसर्ज कुचबन्त पिक्ल स्टोर्स, शाप नं० ११५, मार्किट नं० १, एन०-आई०टी०, करीदाबाद।
९. मेसर्ज सिपला एजेंसीज, सडर बाजार, मुकाम्बा।

### हिन्दी से बैर-भाव राजनीतिक-डॉ. विमल

विद्या प्रकाश प्रकाशक ट्रिभून न्यूज सर्विस

चण्डीगढ़ : भारत के गैर हिंदी भाषी राज्यों में हिन्दी के प्रति बैर-भाव राजनीतिक है। मध्यमा इन राज्यों के लोग अपनी भाषा के माध्यम से हिन्दी पढ़ने की इच्छा रखते हैं। गैर-हिन्दी विद्वानों ने भी हिन्दी को राष्ट्रीय मुख्यभाषा की भाषा स्वीकार किया है।

ये विचार केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के निदेशक डॉ० गंगाप्रसाद विमल ने एक विशेष भेट में व्यक्त किए। डॉ० विमल किसी कार्य के सिलसिले में पंजाब विश्वविद्यालय में आये हुए थे। डॉ० विमल ने अपनी शोध उपाधि धारण करने वाली प्रवक्ता द्विवेदी के निर्देशन में प्राप्त की। दिल्ली के जाकिर हुसैन कालेज में २५ वर्ष तक अध्यापन करने के बाद गत तीन वर्षों से वे हिन्दी निदेशालय में कार्यरत हैं। उन्होंने कहा कि निदेशालय इस बात की संबंधितिक भारतो सुनिश्चित कराने के प्रयास कर रहा है कि सभी भारतीय भाषाओं को शब्दप्रसार-सम्पदा हिन्दी से सम्पूक्त हो। इससे न केवल हिन्दी समृद्ध होगी बल्कि भारतीय भाषाओं में भी परस्पर सामंजस पैदा होगा जिसकी आवश्यकता बहुत जरूरत है।

डॉ० विमल का विचार है कि उत्तर तथा दक्षिण के लोग सामाजिक या व्यापार में आसानी से अपना काम चला रहे हैं। उन्होंने कोई भाषा विकसित कर ली है और वह हिन्दी ही है। उन्होंने कहा कि भाषा से भी ज्यादा महत्वपूर्ण संस्कृति ही है। देश में 'भारतीयता' का विचार ही स्वामी रहेगा। उन्होंने कहा कि हिन्दी के कई उन्मायक

गैर-हिन्दी भाषी राज्यों से ही पैदा हुए हैं। इस सिलसिले में उन्होंने कृष्णचन्द्र सेन, स्वामी दयानन्द सरस्वती, सी. रामगीपालाचार्य, बास गंगाधर तिलक, मोहन राकेश, उपेन्द्रनाथ अक्षर आदि के नाम गिनाये।

भाषा की समस्या केवल १९५७ के बाद पैदा हुई। निदेशालय ने १५ भाषाओं का द्विभाषी तथा त्रिभाषी शब्दकोश तैयार किया है। निदेशालय ने 'शब्द' देशों का शब्दकोश तैयार करने का भी महत्वपूर्ण कार्य हाथ में लिया है। अन्य भाषाओं में शब्दकोश तैयार करने का काम भी निदेशालय कर रहा है। गैर-हिन्दी भाषी लेखकों को हिन्दी में लिखने के लिए उत्साहित करने के लिये भी निदेशालय ने पुरस्कार योजना शुरू की है।

### भूल सुधार

सर्वहितकारी के २५ अंश के अंक के पृ० ६ के समाचार में श्री रामचन्द्र आर्य के स्थान पर श्री रतनसिंह आर्य नाम भूलवश छप गया वास्तव में श्री रामचन्द्र आर्य पुण्ड्र श्री रतनसिंह ने अपनी स्वर्णीय माता जी की स्मृति में १०५२०० सभा की वेदप्रचारार्थ दान दिया था।  
—रतनसिंह आर्य

शराब पीने में जो बुराई है।  
उस से शक्ति तू मेरे भाई है॥

# गुरुकुल

## कांगड़ी फार्मसी की

### आयुर्वेदिक औषधियाँ सेवन कर स्वास्थ्य लाभ करें

#### गुरुकुल

##### च्यवनप्राश

यूरे परिवार के लिए शक्तिवर्धक एवं रसुनिशकक रसयन।  
भारत का वैद्यकीय एवं कुक्कुट की रसुनिशक में प्रथमोत्ती उत्तीर्ण आयुर्वेदिक औषधि।



##### गुरुकुल

##### पार्योक्तिल

दोषों का नाश करने वाला औषधि।  
मन में शांति प्रदान करने वाला औषधि।  
आयुर्वेदिक औषधि।



##### गुरुकुल

##### चाय

कुमार व इन्द्रप्रसाद पंडित जी ५, २३ मई १९५१ से बनी सभाकारी आयुर्वेदिक औषधि।



## हरिद्वार

### की औषधियाँ सेवन करें।

#### शाखा कार्यालय

#### ६३ गली राजा केदारनाथ,

#### चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

### गुरुकुलकांगड़ीफार्मसी हरिद्वार (ऊ प्र०)

शाखा कार्यालय: ६३, गली राजा केदारनाथ  
चावड़ी बाजार, दिल्ली-११०००६

स्थानीय विक्रेताओं एवं सुपर बाजार से खरीदें  
फोन नं० २६१८७१



# संस्कृत पत्रिका

ओ३म् ... त्तो विश्वमार्ग्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—सुरेसिंह सामाज्यी

सम्पादक—वेदवत शम्भो

सहसम्पादक—प्रकाशचौर विद्यानकाश एम० ए०

वर्ष १८

अंक २४

१८ मई, १९६१

वापिक शुल्क ३०)

(आजीवन शुल्क ३००)

विदेश में = वी०

एक प्रति ३५ पैसे

## संसद और विधानसभाओं में पहुँचने वाले राष्ट्र के प्रहरी सुनो !

विद्यम से सने नाम नरिष्ठा नाम वा अक्षि ।

ये ते के च सबासयः ते मे समु सबासयः ॥ अथर्ववेद ७/१२/३

तुम्हारी लोकसभा/विधानसभा (न+रिष्ठा) समय से पूर्व मंगल होने वाली होनी चाहिये तथा (नर+इष्ठा) राष्ट्र के लोगों का कल्याण करने वाली होनी चाहिये। लोकसभा/विधानसभा के सभी समासद चाहते थे किसी क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हों अथवा किसी भी विचारधारा के हों उन्हें आनुभूतिक प्रति परम्परागत रखते हुए सदा सत्यवादी होना चाहिये सभी राष्ट्र का कल्याण सम्भव है।

संसद और विधानसभाओं में पहुँचने वाले युव, चाहे हिन्दू ही या मुसलमान, सिख ही या पारसी, ईसाई ही या बौद्ध, तुम्हारे ऊपर राष्ट्र की रक्षा का भार है। तुम इस महात् देव के महात् प्रहरी हो। भारत तुम्हारा देस है, इसकी उन्नति तुम्हारा सव्य है, इस देस का हृद नागरिक तुम्हारा भाई है। ऐसे भारत का निर्माण करना—

यस्यां समुद्रः उत सिन्धुरापो वस्यामन्नं कृष्टयः सम्बभूतः ।

यस्यामिदं जिन्यति प्राणदेवत् स ता नो भूमिः पूर्वमेवे दधातु ॥

जहाँ समुद्र बीच नदियाँ देस की चरती को हुरामर रखने वाली

हों। जहाँ की चरती अन्न और फल-फूलों से सदी हुई हो। वहाँ के सभी नागरिक क्षेत्र तथा देव युवाकर प्रेम में आवद्ध होकर रहते वाले हों। वहाँ का प्रत्येक प्राणी अपने पूर्वजों से मिली हुई विरासत की रक्षा करने वाला हो।

आज वे बालों बर्ष पूर्व इस देस के सम्राट् अथपति ने संसद में ऐसी ही घोषणा की थी—

न मे स्तेनो वनपदे न कर्तव्यं न मघपः ।

मानाहितानिर्मानाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुतः ॥

मेरे देस (राज्य) में कोई चोर नहीं है, कोई कजूस नहीं है, कोई मघप नहीं है, कोई अवशयो नहीं है, कोई भ्रूल नहीं है, कोई ब्याधिचारी पुरुष नहीं है तो ब्याधिचारियों स्त्री कहां होगी।

आज भारत माता अपने सांसदों से, विचारकों से जन प्रतिनिधित्व करनेवाले सयुक्तों से ऐसे ही मंगलकारी व्याख्यान निर्माण चाहती है।

क्या मां की यह आकांक्षा पूर्ण नहीं करोगे ?

(आर्य मित्र)

## राजनीति का भी धर्म है

जो लोग यह कहते हैं कि राजनीति का धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं है या राजनीति में धर्म का कोई स्थान नहीं है, उनका यह कहना सर्वथा असंगतता के भरपूर है। इन लोगों को यह पता नहीं है कि धर्म क्या है। वे केवल हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई आदि होने को ही धर्म समझते हैं।

ऐसे लोगों को सोचने-सारेने संन से समझाना चाहिये कि धर्म क्या है ? धर्म उसे कहते हैं जो आरक्ष करने योग्य है, जैसे सब बोकला धम्मा काम है, इसे आरक्ष करो। मूठ बोकला बुरी बात है, इसे छोड़ो। ऐसे ही अन्य बहुत सी बातें हैं जिन पर ध्यान देना चाहिये।

धर्म यह नहीं कहता कि तू हिन्दू बन या मुसलमान बन जा। धर्म यह नहीं कहता कि तू सिक्ख बन या ईसाई बन जा। धर्म कहता है कि तू इष्टान की बोकलाई दे इष्टान बन जा।

हृद वस्तु कीर विषय का अवनान अपना धर्म है। जैसे सूर्य का धर्म है गर्मी देना, चन्द्रमा का धर्म है शीतलता देना, ऐसे आज हवा, पानी, वृक्ष, पशु पक्षी सब का अपना-अपना धर्म है। ऐसे ही मनुष्य का धर्म है मानवता (इन्सानियत) में रहना। जो मनुष्य ईश्वरों जैसे काम करता है उसे लोग जंगली अस्वय कहते हैं। उससे नफरत करते हैं।

अब आइये बरा राजनीति के धर्म पर विचार करें। राजनीति

क्या है ? इसे कौन बनाता है, किस लिए बनाई जाती है ? इन प्रश्नों के उत्तर में यह सर्वमग्य है कि राज्य व्यवस्था को युवाकर रूप से चखाने के लिए को नीति अपनाई जाती है वही राजनीति है। राज्य के सिंहासन पर विराजमान शासक राजनीति बनाते हैं ताकि उनके राज्य में या शासन काल में जनता सुख शान्ति से जीवन बसर कर सके। अब बताइये जो राजनीति मनुष्यों द्वारा मनुष्यों के लिए बनाई गई है उस राजनीति में मनुष्यता (इन्सानियत) का धर्म होना आवश्यक है या नहीं। जिस राजनीति में मानवता नहीं होगी वह कौन नहीं चलेगी। उस राज्य में संघे शासक पनपते रहेंगे। व्यापकिय पक्षधरहित राजनीति को चरित्रवान् शासक ही अपनाते हैं। जो ब्याधित चर्मात्या है वही चरित्रवान् है।

इसलिये राजनीति को धर्म से अलग नहीं किया जा सकता। धर्म के बिना राजनीति पशु (जंगली) है। राज्य में सुख शान्ति बनाये रखना ही राजनीति का धर्म है।

—देवराज आर्य, प्रचार मन्त्री आर्यसमाज, बल्लभगढ़

शराबियों को अगर बोट तुम ने देना है।

समझ लो मुफ्त में आफ़त को मोल लेना है ॥

—नफरत हृदयमन्त्री

## वैदिक वीरांगना नारी

डा० सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम.ए., प्रायसमाज गोरखपुर

(गतांक से आगे)

स्त्रियों को स्थिति और बीरता का पता भी वेदों से चलता है। जो लोग वेद में इतिहास की कल्पना करते हैं उन्होंने अथर्वस्य ध्यायि ऋषियों को ऐतिहासिक पुरुष माना है। परन्तु महर्षि दयानन्द ने अनित्य व्यक्तियों का वर्णन नहीं माना। प्रकृति प्रत्यक्ष के आधार पर चलने वाली यौगिक लंबी हो सार्यसमाज में वधार्थ करने की ठीक संज्ञा मानी जाती है। स्वामी जो वेदों में आए नामों को ऐतिहासिक और भौतिक न मानकर यौगिक अर्थों में लेते हैं। वे 'वसिष्ठ' को ऋषि नहीं मानते, 'वसिष्ठ' शब्द का अर्थ प्राण, भरद्वाज का मन और विश्वामित्र का अर्थ कान किया है। इस प्रकार वेदों में जितने भी ऐतिहासिक और भौतिक नाम आए हैं, अथर्वसमाज और स्वामी जो भी यौगिक अर्थ किया है। यास्क का भी विचार है कि यौगिक अर्थ ही करना चाहिये। परन्तु सम्मतः कहीं कहीं उनका झुकाव ऐतिहासिक भी हो जाना है। सायण, महोदय, उम्बट भाषि ने 'वेदों' को ईश्वरिय ज्ञान नो माना है, उन्हें ईश्वरीय गुणों की भांति नित्य भी माना है परन्तु उन्होंने इतिहास और भूगोल को भी माना है। स्वामी दयानन्द वेदों में इतिहास नहीं मानते। वैदिक सभ्यों को यौगिक और यौगिक मानते हैं। रुद्रि नहीं मानते। इन्द्र शब्द के अर्थ कहीं ईश्वर, कहीं सूर्य, कहीं बाधु, कहीं जीवात्मा और कहीं विद्वान् राजा करते हैं। योग्य अरविन्द ने भी स्वामी: जो की ज्ञेयो का समर्थन किया है।

नारी को वेदों में वीरांगना के रूप में माना गया परन्तु वीरांगना के साथ साथ स्त्री विहित होती थी, वे वेदाध्ययन करती थीं, कृषिताए बनाती थीं, वे मन्त्रों के अर्थ निकालती थीं। इसा या इष्टा को वृत्रहन्ता, अन्नरूपिणी और हृदिल्लंघना माना गया है, सरस्वती के लिए पतितपावनी, धनदात्री, सत्यमेरिका, शिक्षिका तथा ज्ञानदात्री के रूप में माना गया है। नारती, सरस्वती, सिन्धोवासी, राका, पृथिवि आदि देवियों की प्रवला नहीं प्रतीत होती। ऋग्वेद में 'गृह्णीषी गृहमुच्यते' नारी को ही घर मानते थे। अवला होने की बात कहां? ऋग्वेद के दशम मण्डल के २५वें सूक्त में सूर्या का उल्लेख है। इस सूक्त में ५३ मन्त्र हैं जो अनेकानेक जानकारियों से भरे हैं। इन सब वाकों के अतिरिक्त पतियों के साथ स्त्रियों की मुद्रा न जाती थीं। जो युवती पतितपावनी है, जो धनदात्री है, जो साक्षात् गृहरूपिणी है वह कैसे अवला मानी जा सकती है? सूर्या सूक्त में यह भी कहा गया है कि वृद्धावस्था तक पतिगृह में स्त्री स्वामित्व रखेगी की अधिकारिणी है। स्त्री जाती की शक्ति, स्वामित्व आदि पर प्रकाश डालने वाला सूक्त यही है। वृहस्पति की पत्नी जुहू ब्रह्मपत्नि थी। यह दशम मण्डल के १०६वें सूक्त का अष्टम वाक्य था। १५४वां सूक्त विश्वस्वान् की पुत्री यमी, दशम मण्डल का १५४वां सूक्त अथा द्वारा देखा गया है। मैं कहाँ तक गिनाऊँ स्त्रियों द्वारा वेद विषय में किए गए कार्य।

दशम मण्डल, १०२ सूक्त २ मन्त्र में मुद्रागतनी के विषय में कहा गया है वह योद्धा थी और उसने १००० गावों को जीता। इतर १७-१०-८ में स्त्री सेना के निर्माण की चर्चा है। इन्द्र और वृषासुर की माता 'दनु' पुत्र के साथ मुद्रा में गई। यह ठीक है कि वृषासुर श्रापि नामों के अर्थ दूसरे हैं पर स्त्रियों की बहादुरी का तो वर्णन है ही।

यजुर्वेद ४/१० मन्त्र है—

सिद्धसि सपलसाही देवेभ्यः कल्पस्व।

सिद्धसि सपलसाही देवेभ्यः शुम्भस्व।

सिद्धसि सपलसाही देवेभ्यः शुम्भस्व।

हे नारी, तू स्वयं को पशुपान अव्यक्त हो अपने को कमजोर मत समझ लूख में बहुत शक्ति है उस शक्तिकारिणी है, अपने को पहचानने की, तू यदि अपने को पहचान जाओगी तो तुझे पता चल जाएगा तू शेरनी है, तू शत्रु रूषो युगों का मर्दन करती वाली है, देव जनों के कल्याण के लिए तू अपने में सामर्थ्य उत्पन्न कर। हे नारी, तू अज्ञान अधिवा दोषों पर शेरनी को तरह टूटने वाली है, तू शुद्ध युगों के

प्रचारार्थ स्वयं को शुद्ध कर। हे नारी! तू पापकर्म एवं दुष्कर्मों का शेरनी के समान टूटकर शिथिल कर देती है, धार्मिक जनों के हितार्थ स्वयं को विष्ययुगों से अलंकृत कर।

सिद्धसि ब्रह्मपतिः स्वाहा, सिद्धसि सुप्रनावनी रायस्पोवनिः स्वाहा, सिद्धस्यावह देवान् यवमानाय स्वाहा, प्रोत्सम्स्वा। यजुः ४-१२

हे नारी तू अपने को पहचान कम शक्तिवालिनी नहीं, तू शेरनी है, तू आदित्य ब्रह्मचारियों की जन्मदात्री है, तू जगियों की, बहादुरी और शूरवीरों को जन्म देनेवाली है, तू शेरनी है और शेर के बच्चों से लेनेवाले भरत जैसे बहादुर बच्चों को जन्म देनेवाली है, तू धनदात्री है, हम तेरी अथर्वजकार करते हैं, तू शेरनी है अपने पति को सिंह के समान पराक्रमी संतानों को दे, प्राणियों के हित के लिए तू अपने को समर्पित कर दे।

यजुर्वेद ४-१३ मन्त्र :—

रायसि प्राचीवित्, विराडसि दक्षिणा दिक्, सप्रारुसि प्रतीको दिक्, स्वराडस्तुषीको दिक् आदित्यस्य पतिवृती दिक्।

हे स्त्री, तू रानी है, पूर्वदिशा जिस तरफ अपने तेज से अन्धकार को दूर कर तेज फैलाती है वैसे ही तू भी तेजोमयी है; तु विशाल शक्तिवाली है, दक्षिण दिशा के समान ऊँचवृती है, तू साक्षात्की है, पश्चिम दिशा के समान धामाययी है। तू ध्वपनी विशेष कर्मि से भासमान है, उत्तर दिशा के समान प्राणवती है। तू अधिपत्नी, तू असीम गरिमामयी है।

यजुर्वेद के १७-५४ मन्त्र में कहा गया :—

अयोधां चित्त प्रतिलोभयन्तो गृह्णाणाङ्गानि अत्वे परेहि।  
अभिप्रेहि निदं हस्तु शोकरम्भेनाग्निनास्तससा सचन्मात्।

अर्थात् बाणों की पंक्ति जिस प्रकार ध्वम्यहृत गति से तादस्त्य के साथ प्रहार करती है वैसे ही प्रहार करने वाली धीर क्षत्रिय वनी तू शत्रु सेनाओं के चित्तों को विभ्रूड करती हुई सेनाओं के चारों ओरों की (हाथों, षोडे, रथ एवं पैदल) अपने वश में करे। प्रथम से दूर रह, यन्त्रों पर (रानी झाँती की तरह) दूट पड़। यन्त्रों को अपनी शक्ति से वश में कर ले। शत्रु तेरी बीरता देखकर निराशा के पोर लम्बकार में पड़ जायें।

ऋग्वेद ८-५४-१५ मन्त्र में श्राया है :—

आलात्सा या हस्वीष्णा—अजेयस्या प्रामुशुस्य।  
इद पर्वन्परेतसे—इद्वे देव्यं वृहनामः।

अर्थात् जो विषय जुड़े बाणों की तरह शत्रु सैन्य विनाशिनो वीरांगना है जो आत्परसा के लिए युगधिरों से बने शिदस्ताण धारण करती है, जो लोह कवच पहनने वाली है, जो पर्वन्वयोर्वा—बादल जिस प्रकार पानी की बूँदों की वर्षा करता है, उसी प्रकार जो बाणों को बरसाने वाली है उस बहादुर, गतिशाल, वीरांगना को हम बार बार नमस्कार करते हैं।

ऋग्वेद ८-१०-१० में वीरांगना नारी के विशेषण देखने योग्य है। राष्ट्रमत्त ऐसी वीर नारी को पुकारता है :—

उपत्वामदिते यद्यह देव्युप्रमृ वे।  
मुपुकोकाम्याभिष्ट्ये।

अर्थात् शक्ति न होनेवाली, सदा उदासीन बनी रहने वाली, पूजायोग्य—मैं राष्ट्र एव परिवार को सुखी करने के लिए पुकारता हूँ, मैं तुझे अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए पुकारता हूँ। (कृष्मः)

### सार्वजनिक सूचना

आप सभी आर्यजनों को सूचित किया जाता है कि मेरा छोटा भाई रणवीरसिंह कई वर्षों से घर से अलग रहता है। मेरा उससे कोई सम्बन्ध नहीं है। कई वर्षों से ईसाई मत में धार्मिक होकर शादी करी की है और उसका अन्धकार करता है। काफी समयाने-सुझाने पर भी नहीं माना। इसलिए हमारे सारे परिवार ने उससे सम्बन्ध तोड़ दिया है। कई बार वह आर्यजनों, वैदिक आर्यों व आर्यसमाजों में भी मेरे नाम से चला करता है। अतः आप सभी को सूचित किया जाता है कि उसे वैदिक संस्थाओं में न खुले व न ही कोई सैन-वेन करें।

—सूर्यदेव आर्य, योग अध्यापक, ग्राम १०० रवाना (बीर)

# वोट देने से पहले सोच तो लें

(चमन लाल)

भारत जैसे प्रजातन्त्र के निर्वासियों के व्यक्तिगत तथा राष्ट्रीय जीवन में मत का बड़ा महत्त्व होता है। लोकसभा, विधान सभाओं आदि के लिए विधायकों के निर्वाचन हेतु मतदान का काम भारी दायित्व का काम है। अपना मत न देने बरखा किसी प्रयोग्य आचरण-हीन व्यक्ति या पार्टी के पक्ष में मत देने से किसी भी राष्ट्र का कलेवर ही बरखा जा सकता है। किसी प्रयोग्य प्रत्यासो या पार्टी को वोट देने से उनके बहुमत में आने से परिणामस्वरूप शक्तिशाली राष्ट्र भी बरखे हो जा सकते हैं। देश में भ्रष्टाचरता फैलने के कारण जनता का जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है और कोई कही सुरक्षित नहीं होता। दूसरी ओर योग्य आचारवाज लोकहित की भावना से भरे व्यक्तियों, पार्टी के पक्ष में वोट देकर भीतर उनको सफल बनाकर सब प्रकार से गिरे देश को भी सबल, समृद्ध, सम्पन्न एवं सुखहास बनाया जा सकता है।

वास्तव में योग्य, सदाचारी, निःस्वार्थी लोगों को वोट देने से ही योग्य देशरक्त शासकों का उपलब्ध होना सम्भव होता है जो लोक सेवा की भावना से युक्त राष्ट्र में बल (नैतिक शक्ति, देश निर्वाहियों का शारीरिक बल, पुलिस व सैन्य शक्ति, शासन चक्र का साम्यम्) और ओज (राष्ट्र के लोगों का मानसिक, नैतिक तथा आत्मिक बल, नैतिकता, ज्ञान-विज्ञान) को पैदा कर दिया करते हैं। ऐसे ही बसवासी और ओजस्वी राष्ट्र की नीतियों और राष्ट्र व्यवस्था को देखकर देश-विदेशों के शासकगण उनके सामने नत-मस्तक होते हैं और सराहना करने लगते हैं। यही तो वेद में कहा गया है—

“अदमिभ्यश्चत श्रेयसः स्वर्गवस्तुषो दीक्षामुपनिषेत्पुरे।

ततो राष्ट्रं बलमीवावच जातं तदस्मै देवा उपसंनमन्तु ॥”

अथर्व १६।४।११

## बुलेट और बॅलेट

भारत के बाह विषय के दूसरे बड़े लोकतन्त्र अमेरिका के स्वर्णय राष्ट्रपति अबाहोम लिंकन ने वोट का महत्त्व बताते हुए एक प्रसंग में कहा था—“एक मत-पत्र एक गोली से कहीं अधिक बलशाली होता है, क्योंकि पिछले (गोली) से तो कुछ ही की हत्या होयी है परन्तु पहले (मत) से तो समूचे राष्ट्र का सनबाध हो सकता है।—

(“A ballot is most powerful then a bullet. The latter kills one or two where as the former destroys the whole nation.”)

हमारे देश में भी प्रजातन्त्र प्रणाली है। सीमान्यवस यही शासक पद्धति प्राचीन वैदिक काल से माया रही है। लगभग एक सहस्र वर्षों (मन्व, भौर्य, युवत, युक्सिन्व और अंगेयों के शासनकाल) को छोड़कर प्राचीन काल वैदिक से लेकर चौबीसवीं शताब्दी तक इस देश में प्रचलित रही है। संभवतः इस तथ्य को धृष्टि में रखकर ही हमारे संविधान निर्माताओं ने इस प्रणाली को इस देश के लिए उपयोगी बनाया है। परन्तु यह कठु सत्य है कि वर्तमान में यह प्रजातन्त्र प्रणाली जनमत का मजबूत बनकर रह गई है। अष्टाचार, जात-पात, आई अतीयाचार, दल-बदल, बाया राम-नाय राम, सत्ता के लालच और ऐसे के दुस्वयोग ने इस पवित्र शासन पद्धति को सारहीन करके रख दिया है। मतदाताओं की प्रत्याशियों की योग्यता का कोई विशेष स्तर भी तो निश्चित नहीं है। ऐसे के प्रलोभन ने इसको बहुत दृष्टिकर दल दिया है। किन्हीं लोगों के लिए वह एक अच्छा साम-शासक व्यवस्था हो गया है। यद्यपि लगभग चार वर्ष पूर्व सरकार ने दल-बदल सम्बन्धी विधेयक पारित करके इस कुदृष्टि पर कुछ अंकुश तो अवश्य लगाया है, परन्तु कुछ राजनीतिक दलों के नेतागण इस विधेयक के विरोध में सुबे बाय बोल रहे हैं। उनका यह भी कहना है कि इसी विधेयक के कारण जनता दल की सरकारों का पतन हुआ, लोक सत्ता भंग हुई। अतः इसको हटा दिया जाए।

अबसर पिछले निर्वाचनों में वह देखने में आया है कि कुछ सत्ता के भूखे लोगों ने राजनीति की एक व्यावसायिक बन्धा बना लिया है। क्योंकि वे समझते हैं कि राजनीतिक सत्ता एक ऐसी कुञ्जी (मास्टर की) है जिसके द्वारा सब प्रकार की धामदानी के ताले खुल जाते हैं। इस स्वार्थपूर्ति के लिए जाति-विरादरी, मजहबी-मिल्लत, लोभ-लालच, भूटे काल्पनिक आकर्षक वायदे और कहीं-कहीं तो तरह-तरह की धमकियों से अधिकतर बेचारे प्रशिक्षित, अभावग्रस्त ग्रामीण तथा झुग्गी-झोंपड़ी वालों से वोट लेना एक साधारण सो बात बन गई है। पिछड़े वर्ग के मतदाताओं को मूक पशुओं की तरह वोट देने पर बाध्य किया जाता है। इस प्रकार तथाकथित जनता द्वारा चुने गए विधायक अपने-अपने और कुर्सी-परतों के लालच में अपनी स्वार्थसिद्धि के वास्ते राष्ट्र हितों को एक ओर रख देते हैं और कुछ भी अनुचित करने से लेशमात्र भी नहीं डरते। जनता के पास कोई ऐसा कारगर साधन भी नहीं है कि वह ऐसे आचारहीन विधायकों को अपना पद छोड़ने पर बाध्य कर सके। ऐसी दृष्टि परिदृष्टि में कोई भी विचारशील आत्मसम्मान रखने वाला व्यक्ति अपने आपको सुरक्षित अनुभव नहीं करता। बेचारा पक्ष कटे पक्षों की तरह जो अन्ध ही अन्ध घुटा रहा है। निस्सन्देह राजनीति को जन-उपयोगी, स्वस्थ बनाने के लिए इसमें सुधार लाने की निताम आवश्यकता है।

## कुछ तो जरूरी तो

सर्वप्रथम मतदाताओं और प्रत्याषी के लिए कुछ योग्यता का स्तर निश्चित होना चाहिए ताकि सही आचारवाज योग्य व्यक्ति ही चुने जा सकें। स्वधा-पेशा केन-देन वालों को दोषी घोषित करने वाले विधान को पूरी तरह लागू किया जाए। समाज जैसे लोगों की किसी प्रकार का सम्मान न दे; इनका सामाजिक बहिष्कार भी किया जावे, प्रचलित और सरकारी नियमों के अनुसार जब कोई व्यक्ति सरकारी नौकरी में नियुक्त किया जाता है तो उसकी स्वास्थ्य परीक्षा और आचरण सम्बन्धी पुलिस ऑफ रिपोर्ट आवश्यक होती है। इसके नियमानुसार सम्नोयजनक न होने पर कोई भी नियुक्ति सम्भव नहीं होती। परन्तु खेद का विषय है कि हमारे चुने जाने वाले विधायकों और मिनिस्टरों के लिए इस प्रकार की जांच को कोई व्यवस्था नहीं है। इसलिए इसके प्रभाव में अस्वस्थ और संदिग्ध आचार वाले व्यक्ति भी चुने जाते हैं जो हान में बड़े हानिकारक सिद्ध होते हैं। आज की राजनीति इसलिए एक तमाशा तो हो गई है। यू कह सकते हैं कि आज की राजनीति और अष्टाचार पर्याप्त बन गए हैं।

अष्टाचार ने अंगहवाई की ओर रूढ मानवी ग्रन्थ अवधि में जनता दल की दो सरकारें नाजा विधि उचित-अनुचित गठनबन्धन करके टूटी और पांच वर्ष को पूरे अवधि समाप्त होने से पूर्व ही लोकसभा भंग हुई। देश का शासन बलाने के निमित्त और कोई संवैधानिक विकल्प न होने के कारण बड़े सोच विचार के पश्चात् लोकसभा के चुनाव की घोषणा कर दी गई। इस मध्यावधि चुनाव में अर्दों अपने के खर्च का भार जनता पर इस विकट समय में पडा जबकि देश की धार्मिक स्थिति शंकाजाल है। कमरतोड़ महामाई ने साधारण मध्यम प्रयोग के लोगों के जीवन को अस्त-व्यस्त कर दिया, तो बेचारे अभाव-ग्रस्त लोगों की तो बात ही क्या? परन्तु तथाकथित देश के कर्णधारों के तो वही ठान-बाद और बँबस का जीवन चल रहा है। “कोई मरे कोई बिए, सुधारा घोल पताले पीए”

## लच्छू-लच्छू को राग

मई माह में होने वाले चुनाव में सभी राजनीतिक दल अपने-अपने तौर पर सत्ता को हस्तगत करने की दौड़ में लगे हैं। कोई स्वाधिरत्य का राग बजाने और देश को अक्षयता घोर एकजुटता का लोख पीटकर मानाधिकार लालच करके अपना लोक-वैक तैयार करने में लक्ष्मी है, तो कोई पद-व्यथित पिछड़े वर्गों के नवों को सामाजिक (शेष पृष्ठ ६ पर)



## कल्याण-मार्ग के पथिक बनें

हरिदत्त वि० प्र०

मानव जीवन के बहुत से मार्ग हैं। 'बहचः पन्था विततो देवयानाः।' वेद मन्त्र के इस प्रतीक से स्पष्ट है कि देवों अर्थात् विद्वानों के चलने के बहुत से मार्ग हैं। मनुष्यों के दो प्रकार मुख्य हैं— एक आर्य अर्थात् श्रेष्ठ यानी जो धर्म रास्ते पर चलते हैं, जो धर्मात्मा सदाचारी, परोपकारी आदि होते हैं और अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए किसी दूसरे को हानि, कष्ट-दुःख और न्येषा नहीं पहुंचाते हैं और परोपकार के लिए स्वयं हानि उठा लेते हैं और दुःख सहन कर लेते हैं। ऐसे व्यक्ति दूसरों के लिए ही जीते हैं 'परोपकाराय सर्वा विमुक्तयः' में नीतिकार ने उनके जीवन का सुन्दर चित्रण किया है। यही मर्यादाओं का पालन कर मर्यादा पुरुषोत्तम बन जाते हैं। वे 'अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्'। उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।' को शांकर करते वाले होते हैं। वे 'सद्य मर्यादाः कथयः सततः' में निर्धारित मर्यादाओं का उल्लंघन नहीं करते। यही कारण होता है कि इनकी वाणी बलवती होती है और जो कहते हैं बर्ती करते भी हैं चाहे उसे पूर्ण करने के लिए उन्हें प्राण भी त्यागना पड़े। इनका पढ़ें। इसलिए तुलसीदास ने लिखा है कि 'श्राग जाहि पर बचन न आहि। ऐसे महापुरुषों के उदाहरणों से हमारा इतिहास भरा पड़ा है। सत्यवादी हरीचन्द्र को गाथा सात्वती बयं श्योती होने पर भी घर-घर में गाया जाती है। वर्तमान समय में भी जो व्यक्ति अपने बचन पर हठ रहता है उसे सत्यवादी हरिचन्द्र कहा जाता है। इन्हीं राजा हरिचन्द्र के वस में मर्यादा-पालन में एक से एक बदकर राजा हुए यहाँ तक कि श्री रामचन्द्र जी महाराज के नाम के साथ तो मर्यादा पुरुषोत्तम विशेषण 'श्रावण्यप्रदिकाकरो' तक के लिए बुद्ध गया। कथ्य है श्रीराम, जिनके बारे में महर्षि वाल्मीकि को विस्मय हुए परम सुखद अनुभूति हुई कि 'रामो द्विजं मान्यते'। ऐसे आर्य पुरुष ही कल्याण मार्ग के पथिक बना करते हैं। कल्याण मार्ग को भी श्रेयोमार्ग कहा जाता है। यही श्रेय पन्था सत्य-भरम के बन्धन से छूटने का एकमात्र उपाय है दूसरा कोई और नहीं है। इसलिए वेद ने जबे औदार्य शब्दों में कहा कि 'अथेव विचिन्तितमनुद्युमति नायः पन्था विचिन्तेऽप्यनायः'। इस श्रेय मार्ग पर चलना आसान काम नहीं है। इसमें नाना प्रकार के प्रलोभन एवं विघ्न-बाधाएँ आती हैं जिनकी भी पुरुष परबाह नहीं करते क्योंकि 'आत्म्यात् पथः प्रविचलन्ति पदं न कीराः'। महाराज अर्ह हरि के ये शब्द बहुत ही उपयोगी विधान-निर्देश करते हैं।

आर्य पुरुषों के लिए वेद का आदेश है कि 'स्वस्ति पंथामनुचरेत् सूर्याचन्द्रमसोविवच'। पुरंदरशास्त्रता जानता सपमेरिहि॥ अर्थात् श्रेष्ठ पुरुष सर्वदा कल्याण के मार्ग पर सूर्य और चन्द्रमा के अनुगामी बनें और बार-बार सत्य वेदां, विद्या न करने वाले और ज्ञानी विद्वानों के साथ विसंकर बनें।

यही है वह श्रेय मार्ग जिस पर चलने के लिए आर्य परमात्मा से प्रतिदिन दोनों समय प्रार्थना करते हैं कि—'ओम्स्व जने नय पुष्या रायेऽन्तमा न विष्वामि देव वसुनिमि विद्वान्'। सुयोधमस्मज्जुहरारामेभो भूपितृभ्यो नमः उक्ति विषयम्।' पुरुष मन्त्र में श्रेय 'जानता' शब्द के अनुसार 'विष्वामि देव वसुनिमि विद्वान्' अर्थात् जो परमात्मा सम्पूर्ण विश्वामुक्त और सम्पूर्ण ज्ञाता है, वह हमें राज्यादि ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए सुपथ (आर्य पुरुषों—'जानता' के मार्ग) से ले चले और इस मार्ग में जानेवाले 'जुहराराय और एन्' अर्थात् मुक्तिवास्तुक्त पापरूप कर्म से पृथक् रहे। यही जुहराराय और एन् श्रेय मार्ग में सबसे बड़े बाधक हैं। इनसे बचने के लिए हो तो 'स्वस्ति पंथामनु चरेत्' मन्त्र में कहा गया था कि 'पुरंदरशास्त्रता' अर्थात् बार-बार देते रहने और विद्या न करने का स्वभाव बना में अन्धधारा राक्षस (जो हमेशा लेते ही लेते हैं और कभी देते नहीं) बन जायें और स्वस्ति के मार्ग से अग्रद्वी को भाग्ये। राक्षस वही तो होते हैं जो दूसरों को हानि, दुःख कष्ट और न्येषा पहुंचाकर 'केवलाय' बन जाते हैं। इसीलिए वेद ने मानव

को सावधान करते हुए कहा कि 'केवलायो भवति केवलायो' अर्थात् बंट कर न खाने वाला केवल पाप लाता है। अतएव ऋषियों ने 'अविश्वेवदेव महायज्ञ' प्रतिदिन करने का विधान कल्याण मार्ग के लिए किया है। जिसे सम्पन्न कर 'सर्वभूतेषु वात्सानां' की अनुभूति कर सकता है।

ये आर्य पुरुष 'आर्यः ईश्वरपुत्रः' के अनुसार अपने को ईश्वर का पुत्र मानते हैं और ईश्वर को पिता और माता मानकर उसकी कृपा का बरदान मांगते हैं कि 'स्व हि नः पितृ वसोः त्वं माता भित्तको वसुविष'। अथा ते सुनन्मीमहे॥' और उक्त उपस्थान पाकर मांगतों ही जाते हैं तथा अन्यायो वाकिशासो से भी नहीं डरते। क्योंकि इन्हें विश्वास होता है कि 'सद्ये ते इन्द्र वाजिनो मा भवे श्वसस्त्ये। स्वामिन् प्रणोनोऽनो जेतास्मपराजितस्तः'। और इसी विश्वास के कारण यह शोषणा करते हैं कि 'अहमिन्द्रो न पराजिये न अवतस्ये कदाचन।' अर्थात् मैं इन्द्र इन्द्रियों का स्वामी हूँ। मैं कभी पराजित नहीं होता और न कोई मुझे दबा सकता है क्योंकि परमात्मा इन्हें उपदेश देता है कि 'मा भेः मा स्वध्याः', 'कृष्णतो विश्वमार्यम्'। इसीलिए वे मतिशील पुरुष हमेशा इसी प्रयत्न में बने रहते हैं कि सारे संसार को धार्य बनायें और घर-घर में वेद का पठन-पाठन और अथन-आथन आरम्भ हो सके और इनको इच्छा 'सर्वं भवतु सुविनः सर्वं सन्तु निरामयाः। सर्वं मर्त्याणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखमागमयेत्॥' अर्थात् 'सुखो बसे संसार सब सुखिया रहे न कोय। यह अविद्याया हम् सब को भगवन् पुरी होत॥ दिव दया उदारता मन में प्रेम भ्रमर। दूष, पूत, धन धान्य से वंचित रहे न कोय॥ इस प्रकार पहली तरह के मनुष्य श्रेष्ठ होते हैं और इस प्रकार हम देखते हैं कि जो प्रकार के मनुष्यों में से पहली तरह के व्यक्ति ही श्रेष्ठ बनकर श्रेय मार्ग के पथिक बन जाते हैं। इस लिए हमें भी कल्याण मार्ग का पथिक बनने के लिए निरन्तर 'चरेतेति चरेतेति' को ध्यान में रखते हुए भाये ही भाये बढ़ते जाना चाहिये।

भाइये, जब दूसरी तरह के मनुष्यों—जिनकी संज्ञा 'वस्तु' होती है, क्योंकि वे हर समय हिंसक कार्यों में लगे रहते हैं, के सम्बन्ध में भी कुछ विचार कर लें। ये लोग प्रेम मार्ग को अपनाते हैं, क्योंकि यह भाग्य प्रिय और सत्य लगता है तथा इस पर चलने के लिए विशेष परिश्रम नहीं करना पड़ता। इसीलिए ये लोग अपने जीवन का उद्देश्य—'यावज्जीवनेवै सुखं बोधेत् कृष्णं कृत्वा पूर्तं पितृत्'। स्वस्तीमुत्पस्य देहस्य पुनरागमनं क्रुतेः।' अर्थात् जब तक जीवों सुख से जीवों और उच्चार लेकर भी पीवों। भस्म हुए अरीर का पुनः आना संभव नहीं होता है। ये लोग अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए दूसरों को हानि पहुंचाने में भी संकोच नहीं करते। शायद अतएव भद्र हरि भी इनको उपयुक्त संज्ञा देने में 'ये निष्पन्ति निरर्थकं परहिंस्यते तै के न जानीगन्ते' अवसर्य रहे हैं। ऐसे लोगों को चावकों की तरह रॉस देने की जानता वेद में परमात्मा ने 'विवाहाह्वार्यम्' से व दस्यो वहिंस्यते रंशवा साचस्वतान्।' आदि मन्त्र में राजा को दी है। मन्त्र में कहा गया है 'हे राजन्! तुम धार्यों और वस्तुओं को सही प्रकार जान लो। और जो अग्रती—'अर्थात् जो किसी प्रकार के नियम का पालन नहीं करते—ऐसे इत्युक्तों को रॉस दो। जब तक दस्युओं का बल बड़ा रहता है ये श्रेष्ठ मानवों को पीड़ा, दुःख और हानि पहुंचाते रहते हैं। इन्हीं को राक्षस भी कहा जाता है। ये दोनों श्रेणियों के मनुष्य हमेशा रहते हैं और इनमें देवातुर संशाम चलता रहता है। जब अतुरों का प्राबल्य बढ़ जाता है और जनता नाहि नाहि करने लगती है तब किसी नये व्यक्ति को, जिसको इच्छा इनको समाप्त करने 'परिधायाय साधनो विनाशाय च दुष्कृताः। धर्मसंस्थानार्थम्' की होती है, तो ऋषि मुनि उसे प्रोत्साहित करते हैं और उसे सब प्रकार का सहयोग देते हैं जंसा कि त्रेता युग में महर्षि विश्वामित्र ने श्री रामचन्द्र जी और उनके भ्राता श्री लक्ष्मण को दिया। परिणामस्वरूप दोनों भाइयों ने नृपाना आदि की सहायता से राक्षसराज रावण का बध कर पुनः राम-राज्य की स्थापना की। जिस के कारण बहुत समय तक यहाँ के राजा नर के साथ शोषणा करते रहे—य से स्तेनो बनपये न कथयों न मघपः। नागाहिताग्निनाधिद्वान् न स्वरी स्वर्गीयो वतः।' अर्थात् स्तेन रावण में (पृष्ठ लेख ५ पर)

## संसद् के निर्वाचन के लिए आर्थों का आह्वान

हे देव धर्म के अनुयायी हे राम-कृष्ण की सन्तानो । संसद् के इस निर्वाचन में क्या करना है उसकी ठानो ॥ भारत की अक्षयता, सत्यता के रत्नक हैं कौन उनको जानो । धर्म देश के भक्त कौन उसली नकली को पहचानो ॥ सत्यार्थ प्रकाश में दयानन्द ने आर्य राज्य था बतलाया । पर बेद है कि यह राज्य विशर्मा और अनार्यों ने पाया ॥ जिस वेद धर्म के लिए दयानन्द, स्वामी अज्ञानन्द, लेखराम । कर गए समर्पित प्रार्थों को स्वामे सुख सम्पत्ति और धाम ॥ 'कृष्णन्तो विश्वमार्यम्' का वेदों का मन्म था बतलाया । विश्व तो क्या यह आर्यवर्त भी आर्य नहीं बनने पाया ॥ संसार में मुस्लिम, ईसाई व कम्पनिश्यों के राज्य बहुत । है महा शोक यह आर्य राष्ट्र बन सका न अपना ही भारत ॥ जग जननी जन्मभूमि भारत माता को खुद ही काट दिया । सत्ता की मूल मिटाने को टुकड़े-टुकड़े कर बाट लिया ॥ यह आर्योंवर्त महान् देव भारत से हिन्दुस्तान बना । इण्डिया बना फिर अंग्लादेश इस्लामी पाकिस्तान बना ॥ फिर ऐसे बदयन्त्र हैं कि इस देश का पुनः विभाजन हो । धारण, जाति, सम्प्रदाय पर धर्म जाति का विघटन हो ॥ मुस्लिम राष्ट्र बनाने की मुस्लिम देशों से वन जाता । वो हिन्दू धर्म का परिवर्तन व देश में दगे करवाता ॥ पंजाब, असम, कश्मीर आन्त में नित हत्यायें होती हैं । बालक, बूढ़े, माता-बहने बिलब-बिलस कर रोती हैं ॥ कश्मीर के लाखों हिन्दू जन सार्वभौम बनकर भटक रहे । अपने ही देश में धर्म-देश भक्तों ने शारी कष्ट सहे ॥ नियम तीन सौ सत्तर ने यह सारा कष्ट बढा डाला । भारत के शीघ्र इस काश्मीर को पाकिस्तान बना डाला ॥ दोटों के लिए इन्हीं तरफों को बढा रहे हैं नेतागण ? धासन की मूल मिटे इनकी चाहे भारत का ही विघटन ॥ बनता दल के व काँग्रेस के पथ दर्शन साही इमाम । इनके शोषणा पर्णों में है इमाम का ही यह पंगाम । नावर की भक्तिवद हटे नहीं, अन्ध्वर न राम का बनवाना । पुषिस, फौज व धासन में मुस्लिम आरक्षण करवाना ॥ बनता दर्शन व काँग्रेस ने यह सुझाव सब मान लिए । इस भाति देश विभाजन के पद्वान्त्र पुनः यह ठान लिए ॥ इनके धासन के द्वारा ही जो काँड हुआ अयोध्या में । ऐसी निर्भय शोषण हत्या धारवद ही हुई हीं हुनियाँ में ॥ श्रीराम धन्म सुनि विचार इन सोंपों ने ही बड़ाया है । मुस्लिम दोटों के लिए बुन हिन्दू जनता का बहाया है । इसलिए अंग्ल जाओ चेतो यह अन्ध्याय मिटाने को । इस निर्वाचन में देश-धर्म भक्तों की जीत कराने को । पहले तो राज बदलते थे उसबार तीर व तोपों से । दिन युद्ध राज्य बदलते हैं अब ही केवल मतधर्मों से ॥ इस अवसर पर यदि नूक गये तो फिर शारी पछताओगे ॥ स्वधर्म-स्वदेश बचाने का 'भास्कर' अवसर नहीं पाओगे ॥

—भगवती प्रसाद सिद्धान्त भास्कर  
१४३०, पं० शिवदीन माय, कृष्णपोष, जयपुर ।

## यज्ञशाला के लिए दान

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रायश में पं० रघुवीरचंद जो शालीकी स्मृति में यज्ञशाला का निर्माण किया जा रहा है । श्री शोभपाल जी सदस्य राज्य सभा तथा रोहकक बासी श्रीमती सुरसादेवी आर्या इस पवित्र कार्य हेतु सभा को धनसहाय में सहयोग दे रहे हैं । उम्मीद है स्वयं दान देकर अर्थ सानिधियों से दान प्राप्त किया है । सभा की ओर से दान दाताओं का अभ्यवाव ।

—राधानन्द सिंहल,  
सभा कोषाध्यक्ष

## आदर्श देवी आर्या सीता

(विशेषदेशक ब्रह्मप्रकाश शास्त्री विद्यावाचस्पति  
शास्त्री सदन-११/१२४ पश्चिम आजादनगर दिल्ली-११००११)

जिम भाति गीता है हमारी सब जगत् की पाठिका ।  
उस भाति सीता भी वनो नारी जगत् ब्रह्मार्थिका ॥  
भारत की प्यारी देविबो ! सीता का क्या आदर्श था ।  
कौन सा वह धम था जिसमें छिपा उत्कथ था ॥  
मिथिलेश राजा की सुता मय कष्ट कुछ नहीं जानती ॥  
कटक भरे वन में फिरि कुछ भी न सकट मानती ॥  
रावण ने कारागार में जो त्रास तुझको था दिया ।  
तेरे अतुल वल तेज से कुछ ह्रास तेरा ना किया ॥  
हनुमान तुझको सोचते संक्रापुरी में जब गये ।  
तू पाटिका में नहीं मिली पपा सरोसर धागये ॥  
देखा वहा हनुमान ने संघ्या भजन में मान थी ।  
प्रसु जानने में जानकी ने भी लगाई लगन थी ॥  
वनवास भोगा राम ने पितृभ्रात के धादेशे ॥  
सीता चली वनवास को शोनारा पति धादेशे से ॥  
वनवास के इतिहास में सीता ही बाबी ले चली ।  
आदर्श पतिव्रत धर्म का इतिहास में लिखवा चली ॥  
ऐसा अजूदा नैस क्या इतिहास ने लेखा कही ॥  
जिसकी न सानी आज तक कोई बनी जग में कही ॥  
सीता समान न आज तक कोई उपमा है हुई ॥  
सीता की गाथा आज भी तिरमोर बनकर रह गई ॥  
पथ-प्रदर्शक मानकर सीता को तुम चलती चली ॥  
आर्य सभ्यता यही इस मान पर भरती चली ॥  
सन्तान के निर्माण से बढ़कर न कोई कार्य है ॥  
कर्मधर्म पथ पर बढ चलो वसना बनाना आर्य है ॥  
भगवान् भारतवर्ष की सीता सी देवी दीजिए ।  
इस राष्ट्र की सब नारियों में ध्यात्वधरम दीजिए ॥

(पृष्ठ ४ का शेष)

न तो कोई चोर है, न ही कजूस है और सखारी भी नहीं है । यज्ञ न करने वाला, बोट कर न साने वाला और कोई भूख नहीं है । कोई व्यभिचारी नहीं है तो व्यभिचारिणी कहाँ हो सकती है ।

आर्यों का यह उत्कर्ष स्वामी न रह सका और द्वापर युग के अन्त में पुनः जरासन्ध, कंस और दुष्येण जैसे पापियों का जोर हो गया । अन्ततः इन सब को समाप्त करने और पुनः धर्म की स्थापना के लिए योगिराज श्री कृष्णचन्द्र जी की आये आना पड़ा । जिसमें वे पूर्ण सफल हुए ।

दोनों आर्यों—धैर्य और प्रेम पर चलने वालों में अन्तर स्पष्ट हो गया है । अतः 'जीओ और जीने दो' की सान्धक वनाने के लिए एक ही रास्ता है धैर्य का । आधी हम सब कल्याण मार्ग के पथिक बनें और धन-सागर से पार हो जायें । जौम् शम् ।

**सत्य के प्रचारार्थ**

सजिल्द  
**₹६००**  
सैंकड

अजिल्द  
**₹१००**  
सैंकड

**सत्यार्थ प्रकाश**

घर घर पहुंचाएँ

सफेद कागज सुन्दर छपाई

सुदृढ़ संस्करण वितरण करने वालों के

आकर 23/36-16 पूछ ४२० की ट. लि. प्रचारार्थ

सजिल्द ₹/अजिल्द ३/-

**आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट**

४३५, खारी बागली, दिल्ली-६ ट्रा.भा. 238360/233112

## जिला महेन्द्रगढ़ में आर्यसमाज के प्रचार में जागृति

(सालचन्द्र विद्यावाचस्पति श्री मंगल जयकी आध्यात्मिक ज्ञान आश्रम वेडकी पत्रा-० बैरावास जि-० महेन्द्रगढ़)

आर्यसमाज ग्राम कुम्भपुरा जि-० महेन्द्रगढ़ में दिनांक २६ व २८ अप्रैल १९६१ को वायिक उत्सव श्री छोटेलाल जी प्रधान आर्यसमाज (पुराना) नारनौल की अध्यक्षता में बहुत ही वाक्येक धीर सुन्दर विधि से मनाया गया। दिनांक २६-४-६१ को प्रातः यज्ञ से उत्सव प्रारम्भ हुआ। प्रायः प्रतिनिधि सभा (हरयाणा) के ०० ईश्वरसिंह तूफान की भजन सङ्गली ने बहुत ही मनोहर कायक्रम प्रस्तुत किया। प्रद्युम्न जी 'आचार्य' गुरुकुल खानपुर (मठ गञ्ज) ने अपने पीयूष-प्रवचनों से श्रोताओं को मन्त्र-मुग्ध किया।

दिनांक २७-४-६१ को प्रातःकालीन कायक्रम के बाद मध्यकाल में शरावन्धवी धीर कुरीतियों का सख्खन विषय पर सम्मेलन में शरावन्धवी और कुरीतियों का सख्खन विषय पर सम्मेलन हुआ। आज के मंच-संयोगक डा० विद्वन्मन्मर दयाल जी सभी आर्यसमाज वाछोद दे। इस कार्यक्रम में मंच-संयोगक महोदय के आदेशानुसार 'योद्धे ही समय में श्री सालचन्द्र 'विद्यावाचस्पति' (मंगल जयकी आध्यात्मिक ज्ञान आश्रम वेडकी) ने शरावन्धवी और कुरीतियों के सख्खन विषय पर अपना गाना प्रस्तुत किया।

गाना

तर्ज—हरयाणवी (भाषा हरयाणा)

वेकार सचं सव बन्ध करो, कहुती तेरी नार तर्न।  
तेरी एक समझ में जावे कोन्या मैं समझासी हर बार तर्न ॥१७॥

दार हूके सुलफे गांथा बुरे-बुरे अब कमाने सें।  
म्हारी लून पसीने की कष्ट कमाई को मिट्टी बीच मिसावे सें।  
शादी और काजों में पीया पाणी भूय रकम बहावे सें।  
सङ्घाई भ्रमज कर भाव्यों से बन्धु दरम घर लुटवावे सें।  
शाकी उमर फंज बुरे ऐवों में कर दई सें वेकार तर्न ॥१८॥

तू मैं तो समझावण लागी तू के मेरे से घाट दिखे।  
कडी-नीबिए भ्रोकड़ पाती के जमा रहीं सें ठाठ दिखे।  
तगदी कर्मकूल बाजूबन्ध कितने ही घाटपार दिखे।  
तेरी नई दूधों का नाम न जाणै उठ रहा भरनार दिखे।  
मैंने तो समझावण लाकी अपनी कियान विचार तर्न ॥१९॥

यह रोसा करो बन्ध पीया मेरो एक समझ में जावे सें।  
आर्यसमाज शिक्षा दे अच्छी स्वीय बतावे सें।  
बचत योजना करो पति नित्य उपदेवों में समझावे सें।  
प्रायः घुटापे में काम ये देवे सबको यों फरमावे सें।  
इन बातों पर गौर किया ना बंठ कभी भरतार तर्न ॥२०॥

पीछे की सब जाणें दे प्यारी अब नहीं समय बतायेंगे।  
वेकार सचं धीर बुरे ऐवों से अपने दाने बचायेंगे।  
गुरुकुलों में भेज सन्तान को वैदिक शिक्षा दिसायेंगे।  
विद्या पुष्ट के मुन प्यारी अब घर की स्वर्ग बनायेंगे।  
ना सुना सालचन्द्र वेडकी वाले का, तर्न वैदिक प्रचार तर्न ॥२१॥

इस कार्यक्रम से श्रोताओं पर बहुत प्रभाव पडा तथा छः व्यक्तिओं ने मंच पर आकर प्रतिज्ञा की कि इस जीवन भर शराव नहीं पीयेंगे। इन छः व्यक्तिओं के नाम इस प्रकार हैं—श्री मनीराम, श्री बल्लीराम, श्री जगदीशप्रसाद, श्री सुरेशचन्द्र, श्री जगतसिंह तथा श्री रामीश्वर। दिनांक २६-४-६१ को इन छः व्यक्तिओं ने यज्ञ करवाया तथा यज्ञोपवीत लेकर पुनः प्रतिज्ञा की। यज्ञ के पुरोहित श्री महावीर आर्य तथा श्री जगन्नाथसिंह की वेदहृदय के। श्री छोटेलाल जी प्रधान ने अपने प्रवचनों में यज्ञ के महत्त्व पर प्रकाश डाला। श्री सालचन्द्र 'विद्यावाचस्पति' ने यज्ञोपवीत का महत्त्व समझाया तथा देवमूत्र, पितृदण्ड तथा ऋषि मूत्र के विषय में बताया।

श्री छोटेलाल जी प्रधान आर्यसमाज (पुराना) नारनौल ने बहुत उत्साहपूर्वक इस कार्यक्रम में भाग लिया तथा नारनौल से कुम्भपुरा

तक अपनी निजी बस में उत्सव में भाग लेने वाले सभी सज्जनों को निःशुल्क पहुँचाया तथा वापिस नारनौल लाया गया। वैदिक नारनों, ऋषि जयमान इत्यादि के सुचार से यह कार्यक्रम समुपलब्ध हुआ।

सकसनकर्ता—महात्मा सुजीलदेव श्री मंगलजयन, वेडकी पत्रावय-बैरावास जि-० महेन्द्रगढ़

## पियकड़ों की बीबियों को पेंशन

विभिन्न वर्गों के समर्थक इन दिनों घर-घर जाकर चुनाव प्रचार कर रहे हैं। पिछले दिनों जब प्रम्भासा छावनी में एक दल के समर्थक अपने प्रत्याशी की हियायत में घर-घर जा रहे थे तो एक महिला अपने शराबी पति का दुखड़ा ही रोते बैठ गयी। उसका कहना था, "मेरा आदमी शराबी है, मुझे मारता-पीटा है, पैसे भी नहीं देता। मैं कैसे गुजारा करूँ? जब सरकार बूढ़ों और विधवाओं को पेंशन दे सकती है तो उन औरतों को भी पेंशन मिलनी चाहिये जिनके आदमी पियकड़ हैं।"

उसकी बात सुनकर कार्यकर्ता सकते में आये, परन्तु महिला कहने लगी कि यदि आपको पार्टी ऐसा कुछ कर सके तो राम-कसम नोट-ही-नोट पद जायेंगे प्राप्त को।

## शोक समाचार

महासय जगन्नाथसिंह वेडक के पूजा जी श्री माइ राम जी डेरौली जाट निवासी का स्वर्गवास २२-४-६१ को ७५ वर्ष की आयु में हो गया। आर्यसमाज सिखारपुर तौलाहेडी शोक प्रकट करता है।

शोकचन्द्र आर्य नम्बरदार

(पृष्ठ ३ का शेष)

भ्याय दिवाने हेतु मन्थल प्रायोग की सिफारिशों के आधार पर धाररक्षण का इम्क बजाकर नोट बढोतने में लगा है; तो अग्र्य कोई प्रायोगी-किसानों के हितों की बफली बजाकर नोट घुटाने में व्यस्त है, तो प्रत्येक राजनीति में नैतिकता माने धीर धुइ राष्ट्रीयता के मधुर गीत गाते वाले राम नाम की बाँसुरी बजाकर मतदाताओं को मोह रहा है।

याद रहे ये सब राजनीतिक मवारी है, इन सब के बाव भर्नों की ध्वनि में कोई सार नहीं है। इन सभी के घोषणा-जन नते ही धारकर्षक हों परन्तु ये सब देश में विघटन की जाग धीर सत्यदाय का विष फँसा रहे हैं। देश की प्रबन्धता की दुहाई देने वाले ही देश को अपनी गलत नीतियों के लक्षित करने वाले मिन्न-मिन्न वर्ग के लोगों में बेमस्य की भावना और मतभेद प पृथा की साईं पैदा करते हैं जो पहले कभी देखने में नहीं आई थी। बहुरो और देहावी भावनी का पोली-दामन का सा सम्बन्ध रहा है। एक दूसरे के पूरक हैं। आज तक ये दोनों प्रकार के लोग अपने सद्भाव प प्रेम से रहते रहे परन्तु तथाकथित कुर्सी के सुखे नेताओं ने इन दोनों में भी ऐसी बाँट पेंशन कर दी है कि जिस कारण एक दूसरे से कटने लगे हैं।

यह सब देश की अलक्ष्यता प स्वतन्त्रता के भातक और विनाश-कारी चिह्न है। देश की ऐसी भयंकर विपत्ति में सब देशभक्तों, विचार-शील लोगों विधेयकर चुनाव का एक नारा उतरावित्य है कि इन सबके आक्षेप परन्तु विनाशकारी हृदयकों से सावधान होकर अपने मत का प्रयोग करें और देश को अराष्ट्रीय तत्वों के हाथों में जाने से बचाने का पूर्ण प्रयत्न करें।

अतः इस मास में लोक सभा तथा तथा कुछ विधान सभाओं के चुनावों में उम्मीदवारों को मत देते समय बड़े सतर्क और सावधान होने की निताप्त आवश्यकता है। उन्हें गम्भीरतापूर्वक प्रायोगी सूच्यों को ध्यान में रखते हुए किसी प्रकार के प्रयोगों में जाये विना स्वतन्त्रतापूर्वक अपने बहुमूल्य मत का सही उपयोग करना चाहिये। देश के गौरव को बढ़ाने वाली नीतियों और जनता के हितों के कार्यकर्ताओं की दृष्टि में रक्षकर काम करने वाले आचारवाज योः५ व्यक्ति को नोट देना ही सच्ची देशभक्ति है।

पत्रा—H-६४, मधोक विहार-I, दिल्ली-४२

## वेद में ईश्वर-विषयक प्रश्नोत्तर

(पं० धर्मदेव "मनीषी" वेदतीर्थ, गुरुकुल कालवा)

यजुर्वेद पद ३ अध्याय के ११-१२ वे इन दो मन्त्रों में ईश्वर विषय में प्रश्नोत्तर किये हैं। ११ में मन्त्र में प्रश्न किये हैं और १२ में मन्त्र में उत्तर उत्तर किये हैं। ईश्वर-विषय में तो प्रश्न—

केवलतः पुरुषऽथा विवेकः काव्यतः पुरुषऽपितानि ।

एतद् ब्रह्मण्युप ब्रह्मासि त्वा किं ऽसिन्मन्तः प्रति बोधास्य ॥

धर्म—हे (ब्रह्मन्) ब्रह्म के ज्ञाता विद्वान् । (किं) किनके (अन्तः) मध्य में (पुरुषः) सर्वत्र पूर्ण परमेश्वर (आ+विवेक) प्रविष्ट हो रहा है ? (तानि) कौन (पुरुषे) परमेश्वर के (अन्तः) मध्य में (अपितानि) स्थापित हैं ? जिससे हम (उपब्रह्मासि) प्रधान पुरुष बनें । (एतद्) यह (त्वा) तुमसे पूछते हैं, वह (असिन्मन्तः) क्या है ? (अथ) इस विषय में (नः, प्रति) हमें (बोधासि) बतलाइये ।

आचार्य—चारों वेदों के ज्ञाता विद्वान् (ब्रह्मा) से अन्व जन इस प्रकार पूर्ण—हे वेदों के ज्ञाता विद्वान् । पूर्ण परमेश्वर किनमें प्रविष्ट है ? और कौन उसके अन्तगत है ? यह बात आपसे प्रष्टी है, जो यथायथा से बतलाइये, जिससे हम प्रधान पुरुष बन ।

ऊपर कहे मन्त्र दो प्रश्नों के उत्तर—

पञ्चस्वन्तः पुरुषऽथा विवेकः तावन्तः पुरुषऽपितानि ।

एतन्वाच प्रणिमन्वानोऽस्मि न मायया भवस्तुतो मन् ॥

धर्म—हे जिज्ञासु ! (पञ्चन्तः) पांच भूतों या तन्मात्राओं के (अन्तः) मध्य में (पुरुषः) पूर्ण परमात्मा (आ+विवेक) अपनी व्याप्ति से प्रविष्ट हो रहा है, (तानि) वे पांच भूत या तन्मात्राये (पुरुषे) पूर्ण परमात्मा के (अन्तः) मध्य में (अपितानि) स्थापित हैं (एतद्) यह (अथ) इस विषय में (त्वा) तुझे (प्रतिमन्वानः) समझाने वाला मैं सहायता—सहायता का समाधान करनेवाला हूँ । यदि (मायया) प्रज्ञा—बुद्धि से युक्त तू है, तो (मन्) मुझसे (उत्तर) उत्कृष्ट समाधान करनेवाला कोई नहीं है, ऐसा जान ।

आचार्य—परमेश्वर उपदेश करता है—हे मनुष्यो ! मुझसे बड़कर कोई नहीं है । मैं सबका आधार हूँ और सबको व्याप्त करके धारण करता हूँ । मेरे व्याप्त होने से सब वस्तु अपने-अपने नियम में स्थित हैं । हे सर्वोत्तम योगी विद्वानो ! आप मेरे इस विज्ञान को सब मनुष्यों को बतलाओ ।

पूर्व मन्त्र में जिज्ञासु के विद्वान् से प्रश्न ये—

हे चतुर्वेदविद् विद्वान् हमें उपदेश कीजिये कि पूर्ण परमेश्वर किनमें प्रविष्ट है ? और उस पूर्ण पुरुष प्रभु में कौन-कौन स्थित हैं ? कृपया यह हमें यथाय रूप से बतलाइये । जिससे इसे जानकर हम समर्थ प्रधान पुरुष बनें ।

द्विसे मन्त्र में उत्तर प्रश्नों के उत्तर—

परमेश्वर उपदेश करता है कि हे मनुष्यो ! पांच भूतों एवं तन्मात्राओं में मैं अपनी व्याप्ति से प्रविष्ट हूँ । पांच भूत एवं तन्मात्राय भुजमें स्थापित हैं । शायद यह है कि मैं सबका आधार हूँ । मेरी व्याप्ति से ही सब वस्तु अपने-अपने नियम में स्थित हैं । इस लोक में तुम्हें प्रत्यक्ष समझाने वाला एवं ज्ञाता का समाधान करनेवाला मैं हूँ । यदि जिज्ञासु बुद्धि से युक्त होकर मुझसे समाधान चाहता है तो मुझसे उत्तम समाधान करनेवाला कोई नहीं । सब योगी विद्वान् लोग परमेश्वर के इस विज्ञान का सब मनुष्यों को उपदेश करे ।

महर्षि दयानन्द महाराज ने "आयौद्वेय रत्नमाला" ग्रन्थ में ईश्वर का सखण इस प्रकार किया है—

'जिसके गुण, कर्म, स्वभाव और स्वरूप सत्य ही हैं जो केवल वेदान्त मात्र वस्तु है तथा जो एक अद्वितीय संबंधितमान् निराकार, सर्वत्र व्यापक अनादि और अनन्त आदि सत्य सृष्टिकार हैं जो जिसका स्वभाव अधिनासी, ज्ञानी, अनादि, शुद्ध, व्यावहारिक दयानु जीव

अजन्मादि है । जिसका कर्म जगत् को उत्पत्ति पालन और विनाश करना तथा सर्वजीवों को पाप, पुण्य के फल जीव-जीक पहुँचाना है, उसको ईश्वर कहते हैं ।'

धर्मसमाज के दूसरे नियम में भी महर्षि दयानन्द जी ने कहा—

"ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वसत्त्वितमान्, न्याय-कारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, अनादि, अनुपम, सर्वाकार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वात्मिणी, अजर, अमर, अमय, निर्वय, पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी को उपासना करना योग्य है ।

## चण्डीगढ़ में पं० गुरुदत्त विद्यार्थी निर्वाण शताब्दी समारोह

धर्मसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य शिष्य, विख्यात वैदिक विद्वान् तथा ऋषि विद्या के विद्ये संपरिष्ठ युवा मनीषी पं० गुरुदत्त विद्यार्थी का निर्वाण शताब्दी समारोह दिनांक २६, ३० जून को चण्डीगढ़ की समस्त धर्मसमाजों एवं धार्मिक संस्थाओं की श्रद्धे से हो.ए.बी. कालेज, सेक्टर १०, के परिसर में विशाल स्तर पर केन्द्रीय धार्मिक समाज चण्डीगढ़ के सहायकान में आयोजित किया जा रहा है । इस अवसर पर देश के सर्वमान्य नेता, धर्मजगत् के मूर्ख्य संस्थाओं, विद्वान् ब्रह्मा तथा मायक पधारों श्रद्धे १० गुरुदत्त के जीवन एवं व्यक्तित्व को उजागर करने वाले अनेक कार्यक्रम रखे जायेंगे । इस अवसर पर विद्वानों के भाषण, विचार गोष्ठियाँ, कवि सम्मेलन, भाषण प्रतिष्ठिताय भी आयोजित की जायेंगी ।

निवेदक :

किशनलाल आयें

कार्यकारी अध्यक्ष, स्वागत समिति शताब्दी समारोह, चण्डीगढ़  
प्रधान केन्द्रीय धर्मसमाज, चण्डीगढ़

## एक शराबी पति से पत्नी का अनुरोध

(रचयिता—वेद भगवदेव जी)

मान जा हो पिया पोना छोड़ दे शराब,

नशा करे नाश यह तो होता है खराब ।

लेत में कमावो करो कार पर की ।

बैठकर कुसग में किस की भजा करकी ।

मारी और नर की हो से मोनो कैसी प्राब ॥१॥

करके ने बरबाद छोड़े बालक याजा ने ।

सब तरया से खो दे तेरे पीने खाने ने ।

मैं फिर दो दो दाणा ने तू बना फिरे नबाब ॥२॥

छोड़ दे शराब ना मैं खो हूँगी हूवां ।

कई बार कह लिया तने नये मैं तूवां ।

देखजती के सिबा इसमें कौन सं साभ ॥३॥

जोनीस धन्दे रखें तू तू बोलत प्राट में ।

पंसा घेला जो बा बोबा तेरी गाठ में ।

कई बार खाट में करे टट्टो नीरो पेसाब ॥४॥

आब तलक तो मैं बोसी कोन्या देख तेरी ध्याहमी ।

आब हो गई नीची तेरी सुनकर बदनानी ।

सह तरियां से जामो मेरो छातो कै मैं डाब ॥५॥

बसना बसना है तो अयोगत करो दूर ।

एक बार भगवा करके पडो तो जरूर ।

शिखा में भरपूर भगल की किताब ॥६॥

प्रस्तुतकर्ता—जयपालसिंह धर्म समाज भजनोपदेशक

## ग्राम पंचायत रानीला (भिवानी) का प्रेरणाप्रद एवं सराहनीय पग

ग्राम रानीला जिला भिवानी में कई वर्षों से शराब का ठेका था जो प्रसिद्ध लाखों रुपयों की बोली पर छुटता था। इसके गांव का भाईबारा एवं शास्त्र वातावरण बुराव होता था। सज्जन मनुष्य एवं न.हिलाएं विशेष रूप से शराबियों से तंग रहते थे। मजदूर किसान अपने गाड़े पसीने की कमाई की बुरी तरह छुटा रहे थे।

गांव के महादुब एवं म्यागकारी सरपंच चौ० बलनरसिंह पूर्व संसिद्ध ने सन् १९६० में समय पर सितम्बर मास से पहले पंचायत का रेकॉलेशन पास कर भेज दिया। ठेकेदार को चेतावनी दे दी कि अगले वर्ष गांव में शराब का ठेका नहीं खुलने दगे। चाहे हमें कुछ भी कुर्बानी करनी पड़े। दो तीन बार सरपंच साहब अपने सहयोगी पंचों को लेकर बम्बईगढ़ एम्साईब कमिश्नर के सामने पैग हुए। अन्त में सरकार की भी चेतावनी देनी पड़ी कि अगर जबरन इस बार गांव में ठेका खोला तो हथ धरता देने पर बाध्य होंगे।

पंचायत के संघर्ष के परिणाम स्वरूप १-४-६१ से ठेका बन्द हो गया। श्री देवशराम पंच, सत्यबीर पंच आदि एवं उत्साही नवयुवक महावीरसिंह एम. ए. का विशेष योगदान रहा। सारे गांव के नर-नारियों ने पंचायत का धन्यवाद किया। शास्त्र में रानीला गांव

की पंचायत का यह प्रेरणाप्रद एवं सराहनीय कार्य रहा। अन्य गांव की पंचायतों ने भी उपरोक्त कार्य से प्रेरणा लेकर जिस भी गांव में यह पाप का बंधन है उसे बन्द करवायें। शराब सब पानों की बड़ है। शराब से सर्वनाश हो रहा है। शराब से कर लो फिनारा बरला जीवन है धंधियारा।

—अतरसिंह धार्य क्रान्तिकारी समा उपवेशक

## आवश्यक सूचना

हमने १८ सत्याग्रहियों की ओर से जो दूसरा दावा सुप्रीम कोर्ट में किया था उसकी पैषी ६-५-६१ की। इस पैषी पर भारत सरकार ने जवाब दावा पैग कर दिया जो कि २८ फूट का है। भारत सरकार के जवाब दावे का जवाब हमारा बकील तैयार कर रहा है। १०-५-६१ से सुप्रीम कोर्ट के दो मास के गर्मी के अवकाश हो गये हैं। अब तो छुट्टियों के बाब ही एक पैषी जुलाई के अन्त में सनेगी। इस पैषी पर हमारे बकील और सरकारी बकील के बीच बहस होगी। दोनों तरफ को बहल सुनने के पश्चात् जो निर्णय होगा सुप्रीम कोर्ट बुना देगा। एक मोटे अनुमान के अनुसार अन्त से अन्तिम सत्याह या सितम्बर में निर्णय अवश्य हो जाएगा।

—म० भरतसिंह संयोगक, हैदराबाद सत्याह सम्मान वैम्बन समिति।

अरे ये आग है और शकल इसकी पानी है। शराब नाम की इस शं ने जान खानी है।

# गुरुकुल

**कांगड़ी फार्मसी की आयुर्वेदिक औषधियां सेवन कर स्वास्थ्य लाभ करें**

**गुरुकुल चर्यात्मनाश**  
सू रोगों के लिए शक्तिशालक एवं शक्तिशालक साधन। ६५ ई. ६५ व भारतीय एवं वैश्व की अर्चना से उपराली भारतीयिक औषधीय टॉनिक





**गुरुकुल पार्थकिल**  
दोनों व मजबूती के अत्यन्त शक्ति मेविकेन चारोकेक न निर उपयोगी आयुर्वेदिक औषधि



**गुरुकुल चाय**  
मुकाम व इन्कजुकेक, पबन आदि में अरु सुधियों से अरी मजबूती आयुर्वेदिक औषधि



**गुरुकुलकांगड़ीफार्मसी हरिद्वार (उ० प्र०)**

गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी

हरिद्वार

की औषधियां सेवन करें।

शाखा कार्यालय  
६३ गली राजा केदारनाथ,  
चाबड़ी बाजार, दिल्ली-६

स्थानीय विक्रेताओं एवं सुपर बाजार से खरीदें

फोन नं० २६१८७१

शाखा कार्यालय: ६३, गली राजा केदारनाथ  
चाबड़ी बाजार, दिल्ली-११०००६

प्रकाशक - श्रीमान् २०४५

धार्य प्रतिनिधि समा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वैदवत शास्त्री द्वारा आचार्य ब्रिटिश प्रेस के लिए सर्वहितकारी मुद्राणय रोहतक में कर्षाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदीशसिंह सिद्धान्ती चवन, बवानम्भूमठ, रोहतक से प्रकाशित।



# सर्वोहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाण का साप्ताहिक खप

प्रधान सम्पादक—सुबेसिंह समाजगोत्री

सम्पादक—वेदवत शाल्मी

सहसम्पादक—प्राकाशचौरी विद्यालंकार एम० ए०

बर्ष १८

अंक २१

२१ मई, १९६१

वार्षिक शुल्क ३०)

(साप्ताहिक शुल्क ३०१)

विदेश में ८ पौंड

एक प्रति ७५ पैसे

## आर्य बुद्धिजीवी सम्मेलन की अपील

आज (२०-५-६१) यहाँ आर्यसमाज बुद्धिजीवी सम्मेलन द्वारा आयोजित एक सभा स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती की अग्रगण्यता में आर्यसमाज, हनुमान रोड में सम्पन्न हुई। इस सभा में दिल्ली के सभी आर्यसमाजों के प्रतिनिधि बुलाये गये थे। सभा का विषय था "मई १९६१ के लोकसभा के चुनाव में आर्यसमाज की भूमिका।"

इस सभा में बुद्धिजीवी सम्मेलन के संयोजक डा० प्रशांत वेदालंकार ने प्रमुख बक्ता के रूप में देश की वर्तमान राजनीतिक स्थिति पर प्रकाश डाला और देश के समस्त आर्यसमाजों से अपील की कि वे मई १९६१ के लोकसभा चुनाव में अपने मत का अत्यन्त विवेकपूर्ण ढंग से उपयोग करें। डा० प्रशांत वेदालंकार ने उस दल को अपना मत देने के लिए कहा—

(१) जो भारत की एक ही संस्कृति मानता हो। सविधान में अतिरिक्त सामाजिक संस्कृति का विशेष करता हो।

(२) जो सम्प्रदाय, धर्म या जाति के आधार पर तुच्छीकरण को प्रोत्साहित न करे। अल्पसंख्यकों के व्यक्तिगत कानूनों तथा शिक्षा संस्थाओं में विशेषाधिकारों को समाप्त करने का वचन दे।

(३) जो अल्पसंख्यक आयोग के स्वान पर मानवाधिकार आयोग की स्थापना करे।

(४) जो राष्ट्र एवं समाज के निर्माण, विकास तथा कल्याण के लिए सब नागरिकों के लिए समान प्राचार संहिता का पक्षधर हो।

(५) जो जाति, सम्प्रदाय या पथ निरपेक्ष सहकर जातिक तथा धार्मिक दृष्टि से पिछड़े व्यक्तियों के विकास की घोषणा करे।

(६) जो कमरि और राष्ट्रों का विशेष बर्ना समाप्त कर उसे अन्य राष्ट्रों के समकक्ष समानता का बर्ना प्रदान करने का वचन दे।

(७) जो भारतीय संस्कृति तथा ऐतिहासिक महापुरुषों के गौरव को प्रसूषण रखने का प्रयत्न करे।

(८) जो हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं को शिक्षा, प्रतिबन्धी परीक्षा तथा प्रशासन-कार्य का माध्यम इत्यादि पर बल दे।

क- संस्कृत की शिक्षा को अनिवार्य घोषित करे।

(९) जो गोरखा हेतु गौरव पर वैधानिक प्रतिबन्ध लगाने पर बल दे।

(१०) जो जाति, सम्प्रदाय या पंथ के आधार पर किसी का मत न माने।

ख- जो धर्म और हिंसक शक्ति के बल पर चुनाव न लड़े।

(११) जिसके प्रत्यागो सम्भ्रन्त्रि, धार्मिक, समाजहितोपी व प्रचर राष्ट्रवादी हों।

सभा में आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के महात्मनी स्वामी सुभेदानन्द जी सरस्वती तथा आर्य गौर दल के भूतपूर्व अधिकारी श्री जगदेव तथा अन्य अनेक समाजसेवी ने भाग लिया। इस विषय में सभी का एक मत था कि उसी दल को विजयो बनाना चाहिए जिसने उक्त ११ सूचों को अपने घोषणा-पत्र में स्वान दिया हो।

स्वामी विद्यानन्द जी ने अपने अग्रणीय भाषण में अब तक आर्यसमाज की राजनीति के क्षेत्र न रही भूमिका पर विस्तार से प्रकाश डाला और ११ सूचों का समर्थन करते हुए आर्यसमाजों से अपील की कि वे उनका प्रचार और प्रसार करें।

डा० प्रशांत वेदालंकार संयोजक-आर्यसमाज बुद्धिजीवी सम्मेलन, ७२, रुहानगर, दिल्ली-११००७७

### भारत का गौरवपूर्ण आदर्श राजा

न मे स्तेनो जनपदे न कवयो न मधवः ।

नानाहितानिर्वादिद्वान् न स्वेरी स्वेरिणी कुतः ॥

(छा०-७ ५१११५)

वर्षान् 'राजा काश्यप कारण्य' इस उक्ति के अनुसार राजा अश्वे या बुरे समय का बनाने वाला होता है वंशो ही प्रजा होती है। वर्तमान काश में जो जनता में असन्तोष, प्रशांति व अराजकता दिखाई देती है, उस सब का मुख्य कारण देश का अहूरदर्शी प्रशासक वर्ग है। भारत के एक प्राचीन राजा अश्वपति की घोषणा पवित्रे, जिसने बड़े गौरव के साथ यह कहा था— "मेरे राज्य में एक भी चोर नहीं है, कोई कपूर कंजूस नहीं है, कोई भी सराव पीनेवाला नहीं है, एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं है कि जो प्रतिदिन न-करण्य जो कोई भी व्यक्ति अनपद नहीं है, राज्यभर में कोई व्यक्ति भी उलूख तथा एक भी व्यक्ति भी स्त्री नहीं है।"

### महर्षि की अनुपम देशभक्ति

(क) यह आर्यवर्त देश ऐसा है, जिसके सर्वस्य भूतल में दूसरा कोई देश नहीं है। इसलिए इस भूमि का नाम स्वर्णभूमि है।

(ख) जितने भूतल में देश हैं, वे सब इसी देश की प्रशंसा करते हैं। ... पारसमणि पत्थर तुला जाता है, बहु बात तो भूमी है, परन्तु आर्यवर्त देश ही सच्चा पारसमणि है कि जिसको सही रूप-रिद्र विदेशी छूने के साथ ही स्वर्ण बर्णात् बनाया हो जाते हैं।

(सत्यायप्रकाश)

जो अपने कुछ को उत्तमता, उत्तम समान, दीर्घायु, सुखीय, बुद्धि, वस-परराक्रमयुक्त विद्वान् और श्रोत्राय करना चाहे वे सोलहवें वर्ष से पूर्व कन्या और २५वें वर्ष से पूर्व पुत्र का विवाह करनी चाहिए। यही सब सुधार का सुधार सब सोभाग्यो का सोभाग्यो और सब उनमियों की उन्नति करने वाला कर्म है। (सं वि०)

वेद विषयक एक प्रारंभिक पुस्तक लेख का उत्तर—

## व्या धर्मग्रन्थ होना अपराध है ?

डा० भवाजीभाषा भारतीय

देहिना नवभारत टाइम्स के ६ मार्च १९६१ के वर्म्ड संस्करण में श्री सुयंकान्त वासी का एक लेख "व्यम ग्रन्थ हो जाने की सजा" शीर्षक प्रकाशित गया है। इनमें वेदों की हिन्दुओं का मान्य धर्म ग्रन्थ कहने या प्रतिपादित करने की प्रायतजिकक वताया गया है और इसी सर्वम में कुछ अनगल, अप्रासंगिक तथा तथ्यहीन बात लिखी गई हैं। वेदों के बारे में भ्रान्तिपूर्ण तथा झूठी बातें बहुत पहले से कही और लिखी जाती रही हैं। यास्क के उल्लेख किया है जो वेदों को धर्मग्रन्थ (निरयंक) मानना था। स्वयं आचार्य यास्क को उस प्राचाय कोस का एत-विषयक धारणाओं का निराकरण करने का श्रम करना पडा था। ऐसा ही प्रथम वेदों के पवित्र माध्यम आचार्य सायण ने स्वरचित ऋग्वेद भाष्य भूमिका में भी किया है जहां उन्होंने वेदों पर लगाये जानेवाले कतिपय प्रारंभिकों को प्रत्यक्ष में प्रस्तुत कर उनका समाधान किया है।

वेदों के बारे में निम्नार्थक प्रवाद व्युत्पत्तः उस समय प्रचलित हुए जब चार्वाक, जैन तथा बौद्ध आदि अर्थविक मतों का इस देश में बोलबाधा रहा। चार्वाक नाम से लोक में प्रसिद्ध गृहपति नामक एक आचार्य ने तो धर्मनिहीन, वेदत्रयी, दण्डधारण तथा भस्मसेवन को बुद्धि एवं लौकिकता लोगों के जीविकायापन का मार्ग बताया—

अग्निहोत्रस्त्रयोवेदाद्विषयव्यवस्थस्यमुपच्छयः।  
बुद्धिर्लौकिकतामनो जीविकेति ब्रूहस्त्वितिः॥

उत्तर बौद्ध दार्शनिक चन्द्रकीर्ति ने वेदों के प्रामाण्यवाद, किसी रचयिता (परमात्मा) द्वारा सृष्टि को रचित मानना, तीर्थ विशेष में जाकर स्नान करने से पुण्याजन तथा जाति के अभिमान तथा शरीर को तपाने से वाप्यो को दूर करने को बुद्धिहीन (ध्वस्तप्रज्ञ) तथा बड़ लोगों का चिन्हा बताया।

ये सब तो पुरानी बातें हैं, किन्तु जब से वेदों के अध्ययन को पाश्चात्य विद्वानों ने अपनाया, उसार के इन दार्शनिक प्राचीन धर्म ग्रन्थों के बारे में नाना प्रकार के मत, विचार एवं धारणाये विभिन्न लोगों के द्वारा व्यक्त की जाती रही हैं। किन्तु आलोच्य लेख कुछ निम्न प्रकार का है। लेखक का यह विचार है कि इस्लाम और ईसाइयत की तरह भारतीय धर्मों में भी किसी ग्रन्थ को धर्म ग्रन्थ मानने का चलन नगता है। बालीजी का भाव सायद यह है कि जिस प्रकार मुसलमान कुरान को अपना एक मात्र धर्म ग्रन्थ मानते हैं और ईसाइयों में धर्म ग्रन्थ के रूप में बाइबिल की मान्यता है उसी प्रकार हिन्दू धर्म में वेदों को धर्म ग्रन्थ की सजा दी गई है और हिन्दुओं में यह काय मुसलमानों तथा ईसाइयों के अनुकरण पर ही किया है। यहां हम प्रथम तो "धर्म ग्रन्थ" शब्द के मूल अभिप्राय को स्पष्ट करना चाहेगे और तब बालीजी से यह पूछेंगे कि उन्हें धर्मग्रन्थ की मान्यता, अवधारणा तथा किसी वन या समाज द्वारा विसो विविध पुस्तक को धर्मग्रन्थ के रूप में मान्यता देने पर धारणित क्यों है? अस्तु: धर्म शब्द को उसके वास्तविक अर्थपरिलक्ष्य अर्थ के आधार पर कभी समझने का प्रयास ही नहीं किया गया। इसी का परिणाम यह रहा कि उसे कभी मत, पन्थ, सम्प्रदाय, किन्तु या अर्थविक के Religion-Sect आदि शब्दों के पर्याय के रूप में मान लिया गया। किन्तु "धर्म" का भारतीय वाङ्मय में जो अर्थ उद्भूत किया गया है वह कितना उदात्त, सारगर्भित तथा तार्किक है, उन्हे यथा विस्तार से लिखना अनाभवक है। सांसारिक मनोधियों में कही वस्तु के स्वभाव को धर्म कहा तो अत्यन्त मानव के अत्युदय (सांसारिक उन्नति) तथा निश्चेस (सारलौकिक कल्याण) को सिद्धि को धर्म की सजा प्रदान की।

महाभारत ने धारण किये जाने से "धर्म" की व्युत्पत्ति की और धर्म को ही प्रजा का धारक-पालक कहा। स्मृतिकार मनु ने धारार को ही परम धर्म कहा और इस आधार को सिद्धा के विषे अर्थियों और स्मृतियों को प्रमाण मानने का संकेत दिया। अश्वत्थ उसी स्मृतिकार ने वेदों को अक्षिप्त धर्मों का मूल कहा और तब के द्वारा इस धर्म का अनुसंधान करने की प्रेरणा दी। इसी स्मृति में अर्थि, स्मृति, सदाचार (अनुष्ठानों का आचरण) और आत्मा को पिय लक्षणे को धर्म का साक्षा

लक्षण बणित किया और दश लक्षणात्मक धर्म को मनुष्य मान के लिये धारचरीय बताया। यदि हम "धर्म" को आर्य ग्रन्थों में निरूपित इस इस व्यापक परिप्रेक्ष्य में स्वीकार करें तो "धर्मग्रन्थ" सजा उन ग्रन्थों को दी जा सकती है जिनमें उपरि बणित धर्म का निष्पन्न, विवेचन तथा ऊहासही किया गया है। इस्लाम या ईसाइयत ने कुरान और बाइबिल को धर्मना धर्मग्रन्थ धर्मों और कंठे स्वीकार किया, यह बताया हमारा उद्देश्य नहीं है, हम तो यह कहना चाहते हैं कि भारतीय धर्म (जिसे व्यापक रूप में आर्य या हिन्दू धर्म कहा जा सकता है) में धर्म ग्रन्थ की धारधारणा सदा से रही और उसे इस्लाम या ईसाइयत से अनुप्राणित वताना दुःसाहस मान्य है। यह कोई नया चलन भी नहीं है।

केवल आर्य धर्म में ही नहीं, आर्यतर तथा वैदिकतर किन्तु भारत मूल के जैन, बौद्ध आदि धर्मों में भी धर्म ग्रन्थ की अवधारणा निताण स्पष्ट है। बौद्धों के पिपिटक और जनों के सूत्र ग्रन्थ क्या तत् तत् मतों के धर्म ग्रन्थ और उनके अनुयायियों को उसी प्रकार मान्य नहीं हैं, जैसे कुरान इस्लाम के अनुयायियों को और बाइबिल ईसाई मतवालों को मान्य है। किसी पुस्तक को मान्य धर्मग्रन्थ के रूप में स्वीकार करने का विचार तो शास्त्रीय परम्पराओं से प्रावद्ध हिन्दू समाज में ही नहीं अपितु निर्गुण धर्मो सन्तों के अनुयायियों में भी प्रचलित रहा। इसी कारण कबीर पयियों में "कबीर दीपक" की मान्यता रही तो बड़ा तथा देवास की कटि के अन्व सन्तों के भक्तगण अपने गुहकों के सबद और वाणी को बेसी ही मान्यता और आदर देते रहे जैसी मान्यता आम हिन्दू वेदों, उपनिषदों तथा गीता आदि शास्त्र ग्रन्थों को देता रहा है।

सूयंकान्त वासी के सामने एक दुःकिया है। ये वेदों, उपनिषदों, रामायण, महाभारत तथा गीता आदि को मजबूती में बार्मिक ग्रन्थ इसलिए कह देते हैं, क्योंकि उनके अधुनाइ इन्हीं कविता, नाटक, कहानी या उपन्यास जैसी विधाओं में नहीं रचना जा सकता। मैं उनसे विन्नप्रतापूर्वक पूछना चाहता हूँ कि क्या किसी साहित्यिक कृति को नाटक, कहानी, उपन्यास आदि बाह्यमय की आज स्वीकृत विधाओं से विन्न किसी धर्म ग्रंथ में नहीं रचना जा सकता? हमारे यहां तो शास्त्रीय साहित्य का एक निम्न वर्ग सदा से हो रहा है और यही शास्त्रीय साहित्य धर्मशास्त्र या धर्मग्रन्थों की संज्ञा से बर्णित किया जाता है। बाली की की धारणा तो यह है कि प्रारम्भ में वेद, उपनिषद्, गीता, रामायण आदि को भारतीय समाज में बाइबिल, कुरान तथा गृह ग्रन्थ साहच्य जैसा दर्जा प्राप्त नहीं रहा। किन्तु ये यह समानता या तुलना करते ही क्यों हैं? यह तो सत्य है कि सैनेटिक मतों में एक पंगम्बर और एक मान्य धर्मग्रन्थ की अवधारणा को स्थान मिला है, किन्तु धर्म, धर्म, उसका वास्तव सप्रदाय तथा बहो मान्य धर्मों की परम्परा सैनेटिक मतों के उत्पन्नकाल से भी सत्वाध्वियों पुरानी है। अतः यह मानना कि हिन्दुओं (या आर्यसमाधियों) ने इस्लाम या ईसाइयत के अनुकरण पर ही वेदों को एकमात्र मान्य व स्वीकार्य धर्मग्रन्थ का पद दे दिया, वेद और अनातर कालीन धर्मों आर्यों की मान्यता तथा प्रमाथ विषयक प्रचलित भारतीय धारणाओं से अपनी अनभिज्ञता दर्शाता है।

बाली को उन न्यायाधीशों तथा धर्मविशों को भोदू की संज्ञा देते हैं जो अज्ञातों में किसी हिन्दू गृहकार को गीता पर हाथ रखकर कसम खाने के लिए कहते हैं। उनकी शक्ति में ऐसा करना अनुचित है। उनका मत यह है कि जैसे एक मुसलमान के लिए कुरान पवित्र ग्रन्थ (Holy Book) है वैसे धर्म एक हिन्दू के लिए गीता नहीं है। बालीको सायद यह मूल जाते हैं कि कसम दिलवाने में न्यायाधीश का धर्मिणय तो इतना ही है कि इस साक्ष्य की शक्ति में गीता एक पवित्र ग्रन्थ है, वह आम हिन्दू के लिए भावदू शोक (अपमान कृष्ण के मुल से निकला) है - इसलिए उस पर हाथ रखकर कस से कम बड़ तो कदापि नहीं करेगा। लेखक इस बात को तब धराधर कर जाता है कि सैनेटिक मतों में मान्य धर्मग्रन्थ की अवधारणा और आर्यपरम्परा में मान्य धर्मग्रन्थों के पवित्र या प्रामाथ्य होने की धारणा में कुछ मौलिक अन्तर तो है ही। किन्तु लौकिक व्यवहार के लिए वेद न्यायालय ने उन्पुच्छ व्यवस्था कर ला है तो इसमें अनुचित क्या है ?

क्रमशः

## राजनैतिक नेता एवं राजनैतिक पार्टियों की समीक्षा

देश के लिए आजादी की लड़ाई प्रारंभमात्र और कांग्रेस द्वारा लड़ी गई थी। सन् ५२ में जब मन्मोहनबहाल बना उसमें अधिकांश मन्त्री प्रारंभमात्र रहे। अब तक ये रहे शासन जनहित में चमता रहे। तत्पश्चात् अवसरवादियों की सुस्पष्ट के कारण सेवा का स्थान स्वार्थ ने ले लिया। नेताओं का नैतिक पतन होने के कारण शासकीय मशीनरी भी कर्तव्यनिष्ठ नहीं रही। चारों ओर अराजकता व भ्रष्टाचार फैल गया। विदेशों से श्रेष्ठ शास्त्र योजना में लगाने के स्थान बने। मगर योजना में सब छान नहीं लगा। स्वयं प्रवृत्त गांधी ने कहा है कि १५ प्रतिशत योजना में लगते हैं और बाकी सब बिचौलिये का आते हैं। अब कांग्रेस का एक ही सत्य रहे खया है येन केन वोट प्राप्त करना और सत्ता में बने रहना। जातिवाद फंसाकर वर्ग संघर्ष की शक्ति पैदा कर दी है। अग्रराजवृत्ति वालों को कांग्रेस नेताओं की नीर से आरक्षण मिलता रहा। कहीं कहीं तो इन अग्रराधी प्रवृत्ति वालों एवं प्रशासनिक तत्त्वों के बल पर भय फैलाकर कांग्रेस जीती रही। आज भी बिहार, उत्तरप्रदेश, हरयाणा आदि इसके लिए अपवाह हैं। यही स्थिति है जनता वस्तु हो चुकी है जिन लोगों को कांग्रेस में कुर्सी नहीं मिली उन छूटनेवालों से बाहर निकल कर अनेक पार्टियां बना डालीं और जनता को किंकर्तव्यविभूत सा बना दिया है। कोई विकल्प सत्ता में नहीं होने से जनता ने कांग्रेस को ही सत्ताकब्जा देखा इससे इनको प्रथिमान हो गया कि हमको हराने वाला कोई नहीं। हमारी जड़ें बहुत गहरी हैं इस प्रथिमान से भ्रष्टाचार और भी प्रथिंक करने लगे। कांग्रेस नेताओं का नैतिक पतन अतिम पराकाष्ठा पर पहुंच गया तानाशाही कायम हो गई। शासन का मुख्य कर्तव्य जनता की जानमाल की सुरक्षा की गारंटी देना है। इस कर्तव्य को पूरा गये चारों तरफ हाहाकार मच गया। अग्रराजवृत्ति वाले स्वल्पव्यव विचरने लगे कोई भय नहीं रहा पक्षपातपूर्ण शासन बन गया। सन् ७७ में सब पार्टियों ने मिस कर सरकार बनाई, कांग्रेस शासन से जनता ध्वस्त हुई थी हार हो गई मगर वह नारंगी को तरह भी प्रतः आपस में घन ब कुर्सी के शगड़े होने लगे यह शासा सरकार और भी अर्थकर सिद्ध हुई। इससे ४४ विस्फोट सौता शासकीय सजाने का देव दिया। सरकार को आर्थिक संकट में फंसा दिया इनके आपसी शगड़ों से सरकार दो बर्ष में ही टूट गई फिर चुनाव हुए फिर भी विकल्प रूप से कोई पार्टी सामने नहीं थी जनता ने फिर कांग्रेस को ही सत्ताकब्जा बनाया। मगर ईर्ष्या व द्वेष वालों ने विस्थापित का प्रयोग कर इन्दिरा जी की हत्या करना ही फिर चुनाव हुए। कफिस के विकल्प के रूप में फिर भी कोई पार्टी नहीं थी व इन्दिरा जी के बलिदान के कारण उनके पुत्र को प्रधानमन्त्री बनाने की प्रक्रिया से भारी बहुमत से राजीव को प्रधानमन्त्री बना दिया मगर इसके साक्षी सत्य थे अतः प्रशासन नहीं सुचारु नहीं सका उल्टा और अधिक विवह गया। मगर एक ही पार्टी का केन्द्र में शासन होने से शासक में कोई संपन्ना नहीं हुआ। पांच बर्ष तक सरकार चलती रही फिर भी वे राजीव गांधी को सत्यनारी हरिकृष्ण इस युग का मानता हूँ उसने देश व जन हित में शासन की सही उत्तरीय जनता के सामने रख दी अब जनता को इस पर गहवाई से सोचना व देखना है सन् ७९ में चुनाव का समय आया।

बी०पी० सिंह व उनके साथी कांग्रेस से बाहर निकले राष्ट्रीय मोर्चा बनाया व भ्रष्टाचार मिटाने व स्वच्छ प्रशासन देने का घोषणा पत्र निकाला अनेक सुधार सुधारने आशासक देख कर चुनाव लड़े जनता कांग्रेस शासन से ध्वस्त हुई तो थी ही राष्ट्रीय मोर्चा की जीत हो गई बी० पी० सिंह प्रधानमन्त्री बन गये। बी० पी० सिंह भी कांग्रेस के छूटनेवाला तो ही ही फिर वही जातिवाद व वर्ग संघर्ष की प्रक्रिया अपनाई। अनौत्पुर्ण जातिवाद का सहारा लेकर स्वार्थी बनाने का प्रयत्न चालू कर दिया। राम अन्धभूमि के विषय में ही अनौत्पुर्ण व्यवहार अपनाया। इस प्रकार का अनौत्पुर्ण व्यवहार माजना को सत्य नहीं हुआ। अपना समर्थन वापिस ले लिया फिर भी बी० पी० सिंह जी ने कुर्सी पर बने रहने के लिए अनेक हथकण्डे अपनाये।

मगर प्राणिक अनौत्पुर्ण की हार हुई। बी० पी० सिंह अग्रदत्त हो गए मगर लोकसभा पक्ष नहीं की। दूसरे व्यक्तिकी लालायित हुई।

चन्द्रसेखर जो कई बर्षों से प्रधानमन्त्री बनने के लिए लालायित थे। इसीलिए उन्होंने कई बार दल बदले। इस चार भी जिस पार्टी का सारी उमर विरोध करते रहे उसी पार्टी से जा मिले और कांग्रेस का समर्थन लेकर प्रधानमन्त्री बन गये। मगर यह भी तो कांग्रेस के छूटनेवाला थे। वही जातिवाद पक्षपातपूर्ण आरक्षण व वर्गसंघर्ष की ओर बढ़ गये और जिनके बल पर प्रधानमन्त्री बने थे उन्हीं की निन्दा करना व विशेष चालू कर दिया। इनका तो कर्तव्य था कि राजीव के लिए प्रधानमन्त्री का प्रस्ताव करते और खुद समर्थक बनकर मिसजुलकर सरकार को चलने देते मगर इन्होंने तो त्याग पत्र देकर लोकसभा को पंग करवा दिया और मध्यमवर्ग युवाव की स्थिति सा दी। देश पर चुनाव का भार लाद दिया।

चन्द्रसेखर जी ने अपने काल में अत्यन्त नीति को अधिक धननाया फिर भी राजीव जी ने समर्थन वापिस नहीं लिया था। ऐसा प्रतीत होता है कि सरकार नहीं चला सके इस कारण त्याग पत्र दिया यह जनता को बोझा हुआ। अल्पमत वाले को पहले ही प्रधानमन्त्री बनने के लिए तैयार नहीं होना था जैसे राजीव जी को कई बार कहा मगर वे तैयार नहीं हुए। यह तो बच्चों जैसा बेल हो गया। ये समतावादी, समाजवादी सरकार की बात करते हैं लेकिन इनका स्वरूप अत्यन्त करारा जाहिये।

मेरे मत से तो समाजवाद का स्वरूप ऐसा होता है कि योग्यता के अनुसार काम देना व समाज व्यवस्था के अनुसार अनुमानान्तरक जीवन यात्रा चलाना और यही सही समाजवाद का अर्थ है। मगर, ये तो अन्य काम करना चाहते हैं प्रयोगों को आगे बढ़ाना, यह नीति देश व समाज के लिए फायदक सिद्ध होगी। जनता ऐसे अवसरवादी सिद्धान्तहीन व्यक्ति से सावधान रहे और लम्बेद्वार माजव व प्रतीक से बचकर रहे।

वर्तमान में राष्ट्रीय स्तर की चार पार्टियां चुनाव के संमान में हैं इनमें तीन पार्टियों के काम की जनता ने देख लिया है फिर भी समीक्षा निम्न प्रकार प्रस्तुत है।

१- कांग्रेस का नैतिक पतन हो गया है अतः इसको तो प्रत्येक मोर्चे पर हटा कर जान सिखाना है। पांच बर्ष के बाद फिर इनकी सेवा को जनता देखेगी।

२- जनता दल के नेता बी०पी० सिंह जी को व इनकी सरकार को देख लिया है। इन्होंने वर्षसर्वण की स्थिति पैदा कर दी थी। पक्षपातपूर्ण अनौत्पुर्ण चलने वाली सरकार थी। इनके समय में बहुत ही जन-घन की हानि हुई। जनता से श्रिया नहीं है।

३- साम्ना सरकार दो बार फेज हुई अब फिर कहीं ऐसा न हो कि साम्ना सरकार बने व फिर फेज होने बने। किसी एक पार्टी की सरकार बनानी है जो कि स्वायत्तिय हो और स्वायत्तिय शासन करे जिसमें अनुशासन हो दल बटे न ही दामानवार हों।

४- वामपंथी मोर्चा भी समाज स्वरूप ही है। इनमें अनेक घटक शामिल हैं और इनकी नीति राष्ट्रीयकरण की है जो बिरफला तक नहीं टिक सकती। रूप में फेज होने जा रही है। ये विदेशों की ओर देखते हैं और भारत भूमि पर चलते हैं। यह भी सत्य नहीं होगी।

५- आजकल घन कमराने व सम्मान पाने के लिए रावनेतिक नेता अनेक पार्टियां बनाकर जनता की सुभारह करते रहते हैं। बड़े-बड़े चुनावने व सुभार नाने लगाते रहते हैं। जैसे काशीराम जी ने बहुजन वातीय पार्टी बनाई है। टिकेत जी ने किसान युनियन बनाई है। ये लोग बर्ष संघर्ष की स्थिति पैदा करने में लगे हुए हैं। इनका देवहित से कोई सम्बन्ध नहीं है। ऐसे और भी दर्जनों लोगों से भी सावधान रहे। ये सभी लोग बर्ष संघर्ष करारक देश को बर्बाद कर देंगे। संघर्ष विनाश का कारण होता है और अर्थ शांति व उन्नति का प्रतीक होता है।



लोक सभा के लिए बोट उसी पार्टी को देना चाहिये जिसने वो तिहाई से अधिक सीटों पर अपने उम्मीदवार सङ्गे किये हों। क्षेत्रीय व स्वतंत्र को भी बोट नहीं देना चाहिये। नही तो लोकसभा में रंगबिरंगे लोग पहुँचेंगे फिर साम्रा सरकार बनेगी और फिर फेल होगी। इस प्रकार ये नेता लोग यदि प्रतिबन्ध चुनाव कराते रहेंगे तो देश की हालत कसी होगी जनता विचार करे।

७- भाजकल बन व कुर्सी के लिए नेता लोग दल बदल करके इधर-उधर जा रहे हैं। ऐसे सिद्धान्तहीन नेता लोगों से भी जनता सावधान रहे। ऐसे नेताओं को तो एक ने भी बोट नहीं देना चाहिए।

८- बहुत से नेताओं ने क्षेत्रीय पाटियां बनाई हैं। उन प्रांतीय पाटियों ने भी केन्द्र के लिए उम्मीदवार सङ्गे किये हैं। उन पाटियों के उम्मीदवारों को भी बोट नहीं देना चाहिये क्योंकि ऐसा होने से लोकसभा में रंगबिरंगे लोग पहुँचेंगे और स्थायी सरकार नहीं बन सकेगी। जिससे देश व समाज का भाङ्ग होना।

९- बहुत से व्यक्ति स्वतंत्रता का अनुचित लाभ उठाकर स्वतंत्र रूप से सङ्गे होते हैं इनको तो एक भी बोट नहीं देना चाहिये। ये न तो सरकार बना सकते हैं और न ही कोई काम कर सकते हैं। इन लोगों की लोकसभा में कौन चुनना ये ब्यर्थ की भीड़ खड़ी हो रही है। राष्ट्रपति सहोदय या शासन को (लोकसभा) में स्वतन्त्र व्यक्ति के सङ्गे होने पर रोक लगा देने की चाहिये। यदि ऐसे व्यक्ति देशभक्त हैं तो शासन को सुझाव देते रहना चाहिये। लोकसभा में आकर भी यही कर सकते हैं। सन् ५२ में चुनाव लडाया तत्पश्चात् सुझाव देने का कार्य निरन्तर कर रहा हूँ। ऐसा करते रहना चाहिये। मगर वह काम भी अनुभवशील व्यक्ति ही कर सकते हैं साधारण व्यक्ति का न सकोयें विचारधारा वाले का काम नहीं है।

**निर्णय**

इसवार लोकसभा के चुनाव के लिए चार पाटियां भंडान में हैं इनमे से जिनको जनता ने देल लिया है। एक पार्टी नई इस वर्ष लोकसभा के लिये विकल्प के रूप में उभर कर सामने है—इस भा.ज.पा. को जनता ने एकवार अवसर प्रदान करना चाहिये। इस पार्टी में बलवारी नहीं है। धन्यासानात्मक व्यक्ति का संगठन है बतंबान में सब पाटियों ने टिकटों के लिये भगडे हुए हैं इस पार्टी में नहीं हुए हैं। इसमें देशभक्त ईमानदार व्यक्ति ही को आगे बढ़ाने की प्रक्रिया चलती है। ईमानदारी की कसौटी भी है इसके विच्छ साम्प्रदायी होने का प्रचार किया जा रहा है अब यह ब्यर्थ है पहले यह जनसप के रूप में खड़ी थी उस वक्त मकोण विचारधारा थी। अब इसने भा.ज.पा. ने अपने दिमाग को महान् बना लिया है। हमारे देश की वैदिक संस्कृति को अपना लिया है जिसका नारा है "वसुधैव कुटुम्बकम्"। न्यायानुकूल पक्षपात रहित शासन करने का संकल्प लेकर सामने खड़ी है। सबकी धार्मिक मानसिक व आर्थिक उन्नति चाहती है इस पार्टी का मध्यप्रदेश में शासन चल रहा है। एक भावमें कायम किया है। आजादी के पूर्व महकागे वेंको में ६६० संकडा वापिक व्याज यह कापस के शासन मे दुगुना कर दिया है। किसानों की आर्थिक हालत नुबारी है। यती नहीं इममें असामाजिक तत्त्वों को दवाकर अपराधी व्यक्ति कम की है। इसका नमुना इन्दौर शहर देखा जा सकता है, शासकीय भवनों की या कर्मचरिण्ड बनाने के लिये प्रक्रिया जारी है। इस पार्टी के मध्यप्रदेश के नम्ने को देखते हुए यदि केन्द्र में आगई तो अजडा शासन करेगी ऐसी धासा है। श्रतः जनता जननिन्द के समुच्च यह मुझाव के रूप मे निवेदन है। कि इस भा.ज.पा. को भारी बहुमत से विजयी बनाकर केन्द्र में दत्तासुद करने की कृपा करे एकवार परीक्षण देविषे अवश्य अवसर प्रदान करे।

महापि भवानीसंकर 'भानप्रदम्'  
स्वतन्त्रता संग्राम मेनानी हासपुर-मनासा  
मदसीर, मध्यप्रदेश

**पंचकला में वेद-कथा**

इम श्रायंसमात्र मे ०३ अग्रसे से २८ अग्रसे तक ०३ उत्तमचन्द्र शारर द्वारा वेद कथा का आयोजन किया गया। सायंकाल के समय वेद कथा मे पहले भक्ति-गीत होते रहे और उसके पश्चात् वेद कथा।



इसमें प्रो० शारर ने जो कि कार्यजगत के जोषस्वी वक्ता हैं, वेद मन्नों के आधार पर प्रबचन दिये। इसी प्रकार दैनिक सस्त्रंग में भी अनेक श्रातःकाशीन प्रबचन हुए। इन प्रबचनों में उन्होंने सामयिक विषयों पर हृदय-स्पर्शी विचार दिये। इन प्रबचनों में पंचकला को जनता बडे उत्साह के साथ सम्मिलित हुई। २८ अग्रसे रविवार के साप्ताहिक सस्त्रंग में भी शारर साहज का बडा जोषस्वी प्रबचन हुआ जिसमें उन्होंने श्रायंसवनों का धाह्वान किया और उन्हें श्रायंस संगठन के लिये और सेवा के लिए पुट जाने की प्रेरणा दी।

**कु० रतनकौर आर्या का संस्कृत में प्रथम स्थान**

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय परीक्षा की एम. ए. संस्कृत की हरीक्षा में कु० रतनकौर आर्या सुगुनी श्री सुरेश्वर आर्य ग्राम करसिम्भु बेडा जि० जीण्ड निवासी ने ६०० में से ६६६ अंक प्राप्त करके सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया है। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह पर इन्हें स्वर्णपदक से सम्मानित किया गया।




**दांतों की हर बीमारी का धरखू इलाज**





**दंत मंजन**  
लोग युक्त


23 जरी बटियाँ लो निर्मित  
आयुर्वेदिक औषधि



दांतों का डाक्टर





अब नये पैकिंग में उपलब्ध



महामोक्ष की कुटी (सा०) लि०  
१११४, अजमेर रोड, मीरत, मध्य प्रदेश, भारत। फोन: ३३७०६, ३३७०७, ३३७०८, ३३७०९

**हरयाणा के अधिकृत विक्रोता**

१. मैसज परमानन्द साईंवितामल, सिवानी स्टेट रोडकत।
२. मैसज फूलचन्द सोताराम, गांधी चौक, हिसार।
३. मैसज सन-अप-टु-बक, सारा रोड, सोनीपत।
४. मैसज हरीश एजेंसीस, ४६६/१७ गुरुद्वारा रोड, पानीपत।
५. मैसज भगवानदास देबकीनन्दन, सरफा बाजार, करनाल।
६. मैसज धनन्यामदास सोताराम बाजार, मिशाना।
७. मैसज कृपाराम गोयल, रबी बाजार, सिता।
८. मैसज कुलवन्त पिकल स्टोर्स, शाप नं० ११५, माफिक नं० १, एन०आई०टी०, फरीदाबाद।
९. मैसज सिगला एजेंसीज, सहर बाजार, गुडगांव।

पताक ने प्रागे—

## वैदिक वीरांगना नारी

(डा० सुरेशचन्द्र वेदालकार, एम० ए०, आयसमाज गोरखपुर)

भूरसि भूमिरस्यवितिरसि विष्वक्वाया विष्वक्स्य भुवनस्य धर्मी ।  
पृथिवी यच्छ, पृथिवी हह, पृथिवी मा हिसीः ॥ यजु० १३/५  
हे नारी, तेरी शासन की सत्ता अपूर्व है, तू भूमि के समान बड़ है,  
तेरा आत्मा अच्छेद, अपेक्ष, अश्वजनीय है, तू सबको वीरता रूपी दूध  
का पान करातेवाली है, तू सपूर्ण संसार का धारण-पोषण करनेवाली  
है, तू ही राष्ट्रभूमि को अनाधार और अष्टाचार से बचाती है, तू इस  
राष्ट्र को शक्तिशाली वीर बड़ बनाती है ।

यजुर्वेद के १०/२६ मंत्र में कहा गया है—  
स्योनासि सुषवासि, सप्तस्य योनिरसि । स्योनामासीद सुषवागा-  
सीद अप्तस्य योनिमासीद ।

हे नारी तू सुखों की यानी हो, तेरा आहार बहुत यज्ञरूप और बड़  
है, तू आनन्द की भण्डार है, तू राष्ट्रभूमि में स्थित रह ।

ऋग्वेद १/१५/१५ मन्त्र बतलाता है—  
ते हि पुत्रासो धामितेरे विदुर्वैवासि पातये ।  
मंहोषिषुदुषक्रयोऽनेहसः ॥

अर्थात् तू (नारी) शत्रु से सम्पत्त होनेवासी नहीं है, तू किसी के  
शत्रुने वीर बनकर रहनेवासी नहीं है तेरे पुत्र भी अद्वितीय वीर हैं,  
तेरे पुत्र शत्रु का बीड़ा उठानेवाले हैं, वे कभी पाप का मन विचार में  
नहीं लाते, वे बड़े-बड़े शक्तिशाली देवी शत्रुओं के भी दृक्के छुटाने  
वाले हैं ।

बर्हकेतुरह भूषां अहम् उया विवाचनी ।  
ममेवन् क्रतु पतिः सेहानाय उपाचरेत् ॥ ऋ० १०/१५६/२  
मैं राष्ट्र की उदारी हुई पताका हूँ, मैं राष्ट्र के शरीर की शिरोमणि  
हूँ, मैं उन्नत और मैं राजनैतिक विषयों में निपुण तथा वाक्शक्ति  
सम्पन्न हूँ । मैं शत्रु सेना के दृक्के छुटानेवाली वीरांगना हूँ । मेरी  
बहादुरी के कारण ही मेरा पति मुझसे प्रसन्न रहता है । असी यहूदियों  
के राष्ट्र इजरायल की वीर युवतियों और महिलाओं के विषय में आन-  
कारी मिनी उल्लेख पता लगता है कि वे प्रत्येक क्षण राष्ट्र के बिए  
मरने भिदने की तैयार रहती हैं, वेत में काम करते हुए खाना बनाते  
समय कहा जो यहाँ तक जाता है कि प्रसवकाल और उसके बाद भी वे  
शत्रुओं को नष्ट करने के लिए उद्यत रहती हैं । वेद की वीरांगना  
ऋग्वेद के १०/१५६/४ मंत्र में कहती है—  
असपत्ना सपत्नोष्नी अयस्यमिभूवरी ।  
आश्रममप्यासां चर्चो रापो अत्येसायिव ॥

मैंने शत्रुओं का नाश कर दिया है अतः मैं शत्रु रहित होगई हूँ ।  
मैंने उन शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर ली है और शत्रुओं को परास्त  
कर दिया है । मैंने अस्त्रिय लोगों की संपत्ति की तरह शत्रुओं को  
विनष्ट भी कर दिया है ।

ऋग्वेद के २०/१५६/४ मंत्र में वह वीरांगना कहती है—  
देनेन्द्रो हविषा कृवी अमघत् वृष्णुत्तमः ।  
इत् तद् अकि देवा असपत्ना किंसाशुवम् ॥

अर्थात् मेरे वीर पति की प्रसिद्धि का कारण राष्ट्र के लिए अपने  
को स्वीछात्र करने का विचार है, अपने को विसृज्य करने के कारण  
ही वह यशस्वी और सर्वोत्तम सिद्ध हुआ है । उसकी छवि का कारण  
मैं हूँ । अब मैं शत्रु रहित होगई हूँ ।

यजुर्वेद के २१५/५ मंत्र में बतलाया गया है कि नारी शक्तिमती,  
राष्ट्र का अत धारण करनेवाले पुत्रों की माता है, वीर जननी है, वीर  
पत्नी है, आनन्द परिपूर्ण है, अतिशय कर्मयुगी और अपनी सारी शक्ति  
जन्म के हिल के लिए लगातेवाली है और राष्ट्रवासी रक्षा के लिए  
उसे पुकारते हैं ।

ऋग्वेद १०/६६/१० में कहा है—

स होत्रस्य पुरा नारी समन वाक्वच्छति ।  
वेधा ऋतस्य वीरणीः इन्द्रपत्नी महोयते ।  
विष्वत्समादिन्द्र उत्तरः ।

यहा स्पष्ट रूप से कहा गया है कि आवश्यकता पड़ने पर स्त्रियों  
को युद्ध से विमुक्त न होकर सबवाई में जुतना चाहिए । जो नारी सत्य की  
अधिष्ठात्री, वीर की पत्नी और वीरांगना है वह युद्ध से अवश्य महिमा  
प्राप्त करेगी । उस स्त्री के कारण उसका पति भी कीर्ति प्राप्त करेगा ।

यजुर्वेद १०/४५ मंत्र में नारी को शत्रुओं का सामना करने और  
उन पर दृष्ट पड़ने का विधान किया गया है ।

यजुर्वेद के १३/१६ मंत्र में कहा गया है कि नारी शूत्र है, अटल  
है और उसे कहा गया है कि ध्यान रख विष्वक्कर्मा परमेस्वर ने तुझे  
विद्या, वीरता धारित मुण दिए हैं अतः तू अपने को ज्ञान में शक्ति में कम  
न समझ, समुद्र की पथवली लहरों के समान फेला हुआ शत्रु, दल तुझे  
किसी तरह की हानि न पहुंचा सके, गन्ध के समान आसक्त करने  
वाला शत्रु, दल तुझे पराजित न कर सके । इस प्रकार स्त्रियों को  
असला के रूप में वेद नहीं स्वीकार करता है ।

उत स्वा त्पो शशीयोसी पुंसो भवति वस्यसी ।  
अवेवत्रारोपसः ॥

ऋ० ५/६१६ में कहा गया है कि बहुत सी पतिव्रता स्त्रियां उस  
पुरुष से अधिक धर्म में बड़तर और प्रशंसनीया होती हैं जो पुरुष देवा-  
चन यादि सुकर्म से रहित है और ईश्वर की आराधना, पूजा पाठ, आदि  
क्रिया से हीन है, उस पुरुष से स्त्रियां ही अच्छी हैं जो पतिव्रता और  
धर्म कर्म निष्ठा हैं ।

ऋ० ५/६१७ मंत्र में कहा गया है—  
वि या आनाति अगुरिं वितृष्यन्तं विकामिनम् ।  
देवना कृणुते यनः ॥

अर्थात् जो स्त्री दरिद्रता पीड़ित की आवश्यकता को समझकर  
उसके मनोरथ को पूर्ण करती है, जो तुपात की व्यास मिटाती है, जो  
यज्ञादि करने में मन लगाती है, जो माता-पिता आचार्यों की सेवा  
करती है वह स्त्री श्रेष्ठ है । उत्तम है । यह स्त्रियों का माहात्म्य है ।  
अतः स्त्रियों को भी वीरांगना बनना चाहिए ।

## आवश्यक सूचना

समस्त आवश्य बुधुओं, आयसंस्थाओं तथा परिचित मित्रों को  
सूचना दे रहा हूँ कि ३० अप्रैल, १९६१ को प्रजापद विश्वविद्यालय से  
मेरे प्रकाशक ग्रहण कर लेने के पश्चात् मेरा पत्राचार निवास एवं आंक  
का पता निम्न रहेगा । सभी से निवेदन है कि मई १९६१ के आरम्भ से  
ही वे निम्न पते पर मुझे पत्र ब्यवहार करें ।

निवेदक—

प्रो० भवानीलाल भारतीय  
रत्नाकर, ८-४२३, नन्दन बन,  
चौधरीमठ प्राजासन मण्डल,  
जोधपुर (राजस्थान)

## आर्थलेखक कोश तैयार-मई में भेजा जायेगा—

सब सज्जनों को सूचित किया जाता है कि आर्थ लेखक कोश का  
मुद्रण कार्य समाप्त हो चुका है । वह अग्रिम माह को रजिस्टर्ड डाक  
द्वारा मई मास में भेजा जायेगा ।

भवानीलाल भारतीय

## बैंक कार्मियों को अपना काम हिन्दी में करने का आग्रह

नारनील, ६ मई (शोला)। न्यू बैंक आफ इन्डिया रोहतक के प्रादेशिक प्रबन्धक श्री एम. एल. शर्मा ने मत दिवस नारनील स्थित अग्रणी बैंक कार्यालय परिसर में आयोजित रेवाड़ी और महेन्द्रगढ़ जिले की ११ बैंक शाखाओं तथा दो अग्रणी बैंक कार्यालय में कार्यरत बैंक अधिकारियों व प्रबन्धकों की "हिन्दी कार्यशाला का उद्घाटन किया।

इस अवसर पर श्री शर्मा ने बैंक के अधिकारियों से आग्रह किया कि वे १ जनवरी ६१ से हिन्दी जिला पोपित इन जिलों में वे अपना वास्तविक कार्य हिन्दी में करें क्योंकि जनता की सेवा जनता की भाषा में करना ही हमारे बैंक का ध्येय है।

उन्होंने बताया कि प्रादेशिक कार्यालय रोहतक के अन्तर्गत कार्यरत ५५ शाखाओं, दो विस्तार काउंटर्स, दो अग्रणी बैंक कार्यालयों तथा प्रादेशिक कार्यालयों में अधिकोश कार्य हिन्दी में किया जा रहा है। इसके अलावा बैंक द्वारा पत्राचार में भी हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है।

प्रधान कार्यालय द्वारा मत १ जनवरी ६१ से हिन्दी जिला पोपित होने के बाद महेन्द्रगढ़ और रेवाड़ी जिले में हिन्दी कार्य को मिन्नरी की भावना से लिया जा रहा है। इसी क्रम से प्रादेशिक कार्यालय रोहतक द्वारा अग्रणी बैंक कार्यालय नारनील व रेवाड़ी के सौजन्य से मई मास के प्रथम पलवाड़े में अधिकारियों और लिपिकवर्ग की हिन्दी कार्यशालाएँ रखी गई हैं।

इस अवसर पर अग्रणी बैंक अधिकारी श्री बी. के. मेहता ने प्रादेशिक प्रबन्धक श्री शर्मा एवं अन्य सम्भाषियों का स्वागत करते हुए आशंका व्यक्त की कि महेन्द्रगढ़ व रेवाड़ी जिलों में राजभाषा के क्षेत्र में भी वेदप्रचार अग्रणी सुविधा रहेगी। जन संस्थेय

**जिला वेदप्रचार मण्डल पानीपत की गतिविधियाँ**  
आय प्रतिनिधि सभा हरियाणा द्वारा गठित जिला वेदप्रचार मण्डल पानीपत के संयोजक एवं सभा के कोषाध्यक्ष ला० रामानन्द सिंहल के निर्देशन में पं० रामकुमार शर्मा की भजन मण्डली ने २१ दिसम्बर से ३० अप्रैल ६१ तक निम्नलिखित शायरों में वेदप्रचार किया है तथा कुछ लिपिक आयसमाजों में जागृति उत्पन्न की है एवं कुछ शायरों में नवीन आयसमाज की स्थापना भी की है—

बादल, सुहारी, काखरवा, जोषन, जोषनकरवा, इतराना, परदागा, सलीला रोशन, पावरी, खिछडाना, गगरीना, पुष्कल बोधपावत, सीक, भद्र, कुराना, शाहपुर, कौट, बली कुनुपुरा, छिदेहरा, चमराठा, आहलाना, डेर, मुरखल (सोनीपत) ब्राह्मणमाजरा, शिडवाड़ी, साखन, पलड़ी, बसाना।

## अप्रैल में प्रचार कार्य

१ से ३ अप्रैल तक श्री नेतराम जी के सहयोग से ग्राम बाण्ड लुई में वेदप्रचार किया। ४, ५ अप्रैल को बाण्डकरवा में श्री बलबार्जिह जी के सहयोग से प्रचार द्वारा अबैदिक शर्तों का खण्डन किया। प्रचार को शान्तिपूर्वक बनाया। ६ से १० अप्रैल को ग्राम गूठर में आयसमाज की अनुवीर्ति किया और आयसमाज का नया चुनाव कराया गया। ११ से १३ अप्रैल तक ग्राम बुजाना साखू में प्रचार किया। १४ से १८ अप्रैल तक ग्राम बिजाना में वेदप्रचार द्वारा आयसमाज का संस्थेय बनकों द्वारा दिया। श्री जोतसिंह तथा श्री सूर्यसिंह ने प्रचार को सफल करने में सहयोग दिया। १९, २० अप्रैल को ग्राम इतराना की हरिजननों की चोपाल में छुसायावत प्राप्त जात पात के विरुद्ध प्रचार किया। २१ से २४ अप्रैल तक ग्राम कारद में श्री हरसेन तथा श्री प्रभुदयाल जी के सहयोग से ग्राम में समाज की बुद्धियों के विरुद्ध प्रचार किया। २६, २७ अप्रैल को ग्राम बुद्धवाय में श्री साखनजी के सहयोग से आयसमाज का प्रचार किया। २८, २९ अप्रैल को ग्राम नोलाय में श्री कमसिंह जी सरणज के सहयोग से प्रचार किया। हरिजन भाइयों ने भी प्रचार में सहयोग दिया।

—केदारसिंह आर्य

## दर्द

बर्बे-गम अब सहा नहीं जाता।  
और देखा-मुना नहीं जाता।

बन बसोंगे तो दर्द जाएगा।  
दर्द ऐसे बसा नहीं जाता।

भौत जालिम है और जालिम भी।  
तीर जिसका सहा नहीं जाता।

बैठ जाए अगर यह मिल अपना।  
बैठकर फिर उठा नहीं जाता।

मुंह को आता है सुख बनेजा भी।  
मुंह से कुछ भी कहा नहीं जाता।

साथ पथों में हम कुपों, केकिन।  
भौत से तो बसा नहीं जाता।

जिम्हणी भर है 'नाच' दुनिया में।  
सँस मुक्त का लिया नहीं जाता।

—'नाच' सोनोपती

## तीन का ध्यान रखो

(ले० स्वामी स्वकृपानन्द सरस्वती, दिल्ली)

१—माता पिता और गुरु की सेवा कष्ट विना लाभ।  
पण्डित, ज्ञानी, सत्त्व को, मत्सक रहो ननाय।

२—तीन कार्य करते रहो, सुबह सैर, स्नान।  
नित्य नियम में करो तुम, जगदीश्वर का ध्यान।

३—जीवन में ब्रह्माइये, स्या, दया, उपकार।  
साज, विनम्रता, शीलता, धारुणवण उर बाज।

४—पर निम्ना निज प्रबंध, दो हिंसा को छोड़।  
मक्ष मांस वृषपात्र से, रहो सदा मुक्त भोड़।

५—कामी, प्यारी, चोर के नहीं बैठिये पास।  
वेद, शास्त्र, सत्य वचन पर, पूर्ण करो विश्वास।

६—राग द्वेष और ईर्ष्या, ईर्ष्ये त्याग दो बाज।  
रोषो, पागल, बैध से, कबो न हो नाराज।

७—नीयत, शायी, जीभ को, बस में रखिये क्षीच।  
मूढ़, नोच, अविमान का, मला पकड़ कर क्षीच।

८—निष्ठा रखिये तीन पर, देश धर्म कर्मब।  
रहो निम्नाते प्रेम से, ठीक बने भवितव्य।

९—तीन चीज न त्यागिये, सत्संग और स्वाध्याय।  
ओप नाम सुखन करो, जीवन सफल बनाय।

## शोक समाचार

वानप्रस्थी श्री लोलावर वार्य का दिनांक २१-४-६१ को अकस्मात् निधन हो गया। वे कन्या गुरुकुल जसात से ट्रेन द्वारा दि० २८-४-६१ को सौट रहे थे। मार्य में हृदय गति रुक जाने से उनका प्राणात्त हो गया। देवते स्टेशन रेवाड़ी से उनका शव आयसमाज मन्दिरे में लाया गया जहाँ से वानप्रस्थी श्री के पारिवारिक सदस्य शव को ग्राम गीरपुर में ले गए।

दि० २२-४-६१ को आयसमाज रेवाड़ी के सदस्यों ने ग्राम गीरपुर में वानप्रस्थी श्री का श्रान्ति संस्कार वैदिक रीति से सम्पन्न कराया। उक्त समय पर ग्राम के बहुत से सम्प्रान्त व्यक्ति एवं कन्या गुरुकुल जसात की भावार्थी जी व कन्यायें उपस्थित थीं।

दिनांक २८-४-६१ को प्रातःकाल आयसमाज रेवाड़ी के बचन में स्व० वानप्रस्थी श्री के सम्मान में एक शोक सभा हुई। सभा में कई सदस्यों ने स्व० वानप्रस्थी श्री के जीवन एवं कार्य पर प्रकाश डालते हुए अपनी-अपनी सद्भावलिपियाँ प्रस्तुत कीं। अन्त में शोक प्रस्ताव पारित किया गया।

## स्वामी दयानन्द की राजनैतिक विचारधारा

अरविन्द कुमार 'कमल', धार्यसमाज मन्दिर, टोहाना (हरयाणा)

एतद्देशप्रभुत्वस्य सकाशादध्वजस्तम्भः न।

एव स्वं चरित्त्वं शिक्षित्त्वं युष्मिन् सर्वमन्वाः ॥

घर्षात् इस देश में उत्पन्न ब्राह्मण से पृथ्वी के सम्पूर्ण मानव धरने-अपने कर्मों की शिक्षा पावे। यह धोषणा श्रादि ऋषि तथा मनुस्मृति के रचयिता मनु महाराज को है। उन्होंने ऐसी धोषणा भारत के लिए ही क्यों की? स्पष्ट है कि विश्व के सम्पूर्ण देशों में भारत की विशिष्टता रही है। इसी देश में प्रभु का वेदरूपी ज्ञान धरतीतल हुआ। इस भारत भूमि में अनेक ऋषि, ऋषि, मुनि, परम-योगी, मार्गदर्शक साधु, सन्त, महारमाओं व अनेक सुधारकों का प्रसव किया। सोम्य, मर्यादित राम, कमधोल कृष्ण, अर्जुन भीम जैसे वीर, राजा हृदयचन्द्र से सत्यवादी, कर्म से दानी तथा अनेक लक्ष्मों के पुत्र व्यापारी, उद्योगपति आदि ने सत्सारा के इतिहास नयी पटल पृष्ठों में न मिटने वाली अमिट छाप छोड़ी है। लोग भारत ना के चरणों में बैठ कर उत्तम शिक्षा व विद्या ग्रहण करते थे और यह विश्व गुरु कहलाती थी।

किन्तु सब दिन जात न एक समान के अनुसार काल चक्र ने भारत की स्थिति को बदला और महाभारत के युद्ध के पश्चात् भारत का पतन शुरू हो गया। अतस्त्य, यमादिक के साथ साथ आन्तरिक झगड़ों व कुपट्यराज्यों का जन्म हुआ। भारत पर बाहरी आक्रमण होने लगे तथा भारत की सम्पत्ति नष्ट होने लगी। जन्म ने भारत को पराधीन होना पड़ा। भारत की स्थिति डायाडोल चोर उड़े चतुर् व कुत्सल बंध की ज़रूरत थी। ऐसे में ऋषि दयानन्द का जन्म हुआ जिन्होंने देश, धर्म व जाति के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया तथा विष पीकर अमृत पान कराया।

स्वामी दयानन्द जी ने अनेक ग्रन्थों का निर्माण किया। ऋग्वेदादि शास्त्र भूमिका, वैदिक संस्कार विधि, गोकुष्माण्डिनि, असत्य से हटा कर सत्य की ओर ले जाने वाला तथा वेदमार्ग बतलाने वाला अजर ग्रन्थ 'सत्याग्रह प्रकाश'। इस ग्रन्थ में सभी संकाश का समाधान है तथा जीवन जीने की नई प्रेरणा देता है। इस ग्रन्थ को पढ़कर कितनों का हृदय परिवर्तन हो गया। इसी अजर ग्रन्थ के विषय में मुद्रवर्ध जी ने कहा है 'यदि मुझे इस पुस्तक के लखौदने के लिए सारी सम्पत्ति बेचना पड़े तो मैं इसी ग्रन्थ तैयार हूँ। महर्षि दयानन्द जी ने अपने पवित्र भाव को अपनी कृति सत्याग्रह प्रकाश के एकादश समुल्लास में स्पष्ट लिखा है कि 'मेरा तात्पर्य किसी को हानि पहुंचाने का अथवा विरोध करने का नहीं है। किन्तु सत्यासत्य का निषेध करने कराने का है। ऋषि ने ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि पर्यन्त ऋषियों का जो मन्तव्य था उसी का प्रचार प्रसार किया है। वे बार-बार बहते हैं कि मेरा मन्तव्य सत्यासत्य का निर्णय है। ऋषि ने अपने अजर ग्रन्थ 'सत्याग्रह प्रकाश' के छठे समुल्लास के अन्तर राजधर्म का वर्णन किया है। इस समुल्लास का भाव यह है कि—

१. राजा और प्रजा के पुरुष मिल के तीन सभा घर्षात् विचार्यं सभा, धर्मसंभामा तथा राजार्थसभा नियत करं। जिससे समग्र प्रजा सन्तुष्टी मनुष्यादि प्राणियों को सब और से विद्या, स्वातन्त्र्य, धर्म सुविधा और धनादि से अलंकृत करे।

२. किसी एक को स्वतन्त्र अधिकार न देना चाहिये किन्तु सभापति के आधीन सभा, सभापति राजा, राजा और सभा प्रजा के प्राधीन और प्रजा राजसभा के आधीन रहे। यदि ऐसा न करोगे तो जो प्रजा से स्वतन्त्र स्वधीन राजवर्ग रहे तो राज्य में प्रवेश करके प्रजा का नाश किया करे। अकेला राजा स्वधीन वा उम्मत होके प्रजा का नाशक होता है इसलिये किसी एक को राज्य में स्वधीन न करना चाहिये। इससे स्पष्ट है कि ऋषि दयानन्द प्रजातन्त्र के पोषक हैं।

३. जो इस मनुष्य के समुदाय में परम ऐश्वर्य का कर्ता, सन्तुष्टी को वीत सके, जो सन्तुष्टी से पराजित न हो। राजाओं में सर्वाधिक विराजमान प्रकाशमान हो, सभापति होने के योग्य प्रशंसनीय गुण कम

स्वमान युक्त, सत्करणीय, समीप जाने योग्य और शरण लेने योग्य सबका माननीय होवे उसी को सभापति राजा करे।

४. महर्षिद्वानों को विश्वासभाषिकारी, धार्मिक विद्वानों को धर्मसभाधिकारी, प्रशंसनीय धार्मिक पुरुषों को राजसभा के सभासद और जो उन सब में सर्वोत्तम गुण, कम स्वभाषयुक्त महान् पुरुष ही उसकी सभा का पति मानकर सब प्रकार से उन्नति करे। तीनों सभाओं की मम्मति से राजनैतिक के उत्तम नियम और नियमों के आधीन सब लोग बतें। सबके हितकारो कामों में मम्मति करे। मर्हतिन करने के लिए पगन्ध और जो-जो निज काम है उन-उन में स्वतन्त्र रहे।

५. जो दण्ड अच्युत प्रकार विचार से धारण किया जाय तो वह सब प्रजा को आनन्दित कर देता है और जो विना विचार चलाया जाये तो सब ओर से राजा का विनाश कर देता है।

६. तीनों सभाओं में मुखों की मरती कर्मों न करे किन्तु सदा विद्वान् और धार्मिक पुरुषों का स्थापन करे।

७. स्वराज्य स्वदेश में उत्पन्न हुए, वेदादि शास्त्रों को जानने वाले, शूरवीर जिनका लक्षण निष्कल न हो और अच्युत, कुनीन, सुपरीक्षित मन्त्री नियुक्त करे।

८. न्यायाधीश कर्मों किसी का पक्षपान न करे। सभा में हुंसेसा सत्य बोले।

९. प्रजा को उचित है कि राष्ट्र की उन्नति के लिए कर देवे। कर्मों कर को चोरी न करे।

१०. जिस राजा के राज में न चोर, न परस्त्रीगामी, न दुष्ट वचन बोलने वाला, न डाकू और न राजा को आत्मा भग करने वाला है वह राजा श्रेष्ठ है।

११. महर्षि दयानन्द जी ने अष्टम समुल्लास में लिखा है कि 'विदेशी राज्य अच्छा नहीं मत मतान्तर के आग्रह से रहित अपने और पराये के पक्षपात शून्य प्रजा पर पिता और माता के सदृश्य भाव्य और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।

समग्र सभों बुद्धिजीवी व्यक्तियों के द्वारा ऊपर लिखी महर्षि दयानन्द की बात स्वीकारणीय होंगी। किन्तु वेद है कि कुछ सतिरफिरे लोगों को धार्यसमाज एक सम्प्रदाय तथा सत्याग्रहप्रकाश धर्म्य पुस्तक नजर आती है। २० फरवरी को मेठ नगर में पत्रकारों से बात करते हुए विश्व हिन्दू परिषद् के महामन्त्रों श्री प्रशोक सिन्घल ने कहा कि "अगर कोई कहे कि कुरान बाइबिल और दयानन्द की पुस्तक के आधार पर सरकार चलाये तो यह गृही हो सकता।" मैं श्री अशोक जी को बतलाना चाहता हूँ कि यदि कुरान और बाइबिल के आधार पर सरकार चली तो भारत का सर्वनाश होगा किन्तु कुन्दन की तपह सत्य बात यह भी है कि दयानन्द की पुस्तक (सत्याग्रह प्रकाश) के आधार पर सरकार न चली तो आनेवाले वर्षों में भारत का नामोनिशान संसार के नक्शे से मिट जायेगा। क्योंकि उसके अन्तर सारी वेदोक्त बात हैं। मैं श्री अशोक जी से पूछना चाहता हूँ कि—

● क्या के राजतन्त्र चाहते हैं? क्या वे राष्ट्र को एक के आधीन करना चाहते हैं?

● क्या वे दुराचारी, धर्मिचारी, धर्म्याचारी, पंसें के लिए देव बेचने वाले, सत्ता के लोभपु, सुखलमानों का पक्षपाती व्यक्ति को राष्ट्र का शासन सम्भालना चाहते हैं?

● क्या वे सभा के अन्तर भ्रूल संसाधत् चाहते हैं?

● क्या वे जनता का खून बूझने वाले मन्त्री चाहते हैं?

● क्या वे पक्षपाती न्यायाधीश और कर चुकाने वाली जनता चाहते हैं?

● क्या वे राष्ट्र में चोर, डाकू, वलात्कारी व दुष्ट व्यक्ति चाहते हैं?

यदि नहीं तो उन्हें महर्षि दयानन्द की बात स्वीकार होंगी। क्योंकि महर्षि की सारी बातें ईश्वरराजा वेदानुसार हैं। श्री अशोक जी

(चाहू)

को सांख्यिक रूप से माफी मांगनी होगी कि उन्होंने कुरान और बाइबिल के साथ दयानन्द की पुस्तक ऐसा कथन गलत कहा है। कुरान और बाइबिल की तरह दयानन्द की पुस्तक (सत्यार्थ प्रकाश) साम्प्रदायिक पुस्तक नहीं है। यदि उन्हें अपना कथन उचित न अच्छा लगना है तो उन्हें शास्त्रान्त के लिए नुकी चुनौती है। वे भूल कर रहे हैं उन्हें नहीं मायूम हसकर फांसी का फन्दा नूमने वाले भगतसिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, अपने लहू से आजादी का इतिहास लिखने वाले लाखों वीर आर्यसमाजी थे। स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लेने वाले धरती प्रतिशत आर्यसमाजी थे। आर्यसमाज रामजन्म भूमि धाम्दोसन में सहयोग दे रहा है और देना भी चाहिये। क्योंकि श्रीराम हमारी संस्कृति के उज्ज्वल रत्न हैं।

श्यामी प्रधानमन्त्री का स्वप्न लेने वाले सासकृष्ण अडवानी जोकि भाजता के नेता हैं वे कहते हैं कि "राम कृष्ण मांस खाते थे मैं शास्त्रों से सिद्ध कर सकता हूँ।" लगता है उन्होंने कबी रामायण तथा महाभारत नहीं पढ़ी। सुनो अडवानी जी —

पसुनों को मार यदि राम कृष्ण खाते मांस,  
तो फिर क्यों मन्दिर-मन्दिर चित्ताते हो।  
राज्य और राम कंस बान ध्याम में सुनो,  
क्या अन्तर रहा चाहे मांस कंसा भी खाते हों।  
सुनो अडवानी पदो रामायण महाभारत तुम,  
जो मांस भक्षियों को घरा से निघाते हो।

कैसे सायेंगे वो मांस जरा तो विचार करो,  
जीवन जो 'कमल' अपना वेद से चलाते हों।

दयानन्द की पुस्तक अर्थात् एक आर्य की पुस्तक को भी जो वेदानुसार हो अशोक जी को कुरान और बाइबिल के समान साम्प्रदायिक लगती है तो वे क्यों लड़ते हैं आर्य राम की जन्म भूमि के लिए? क्यों खून बहाते हैं आर्य कृष्ण के लिए? क्यों आर्यों के सेनापति शंकर के लिये जान देते हों। कहीं वह कथन सत्य न हो जाये कि भाजपा यदि सत्ता में आयी तो सत्यार्थप्रकाश पर प्रतिबन्ध भंग जाएगा। अशोक जी को जरा अपने दोषों पर पहले नजर डालनी चाहिये, अपने बिल को टटोलना चाहिये कि कौन सही है आर्य (ब्रेष्ठ, उत्तम) जैसे शब्दों के प्रयोग करने वाले या सिन्धु (काफिर, गुटेरा, बदमाश) जैसे शब्दों के प्रयोग करने वाले। अन्त में मैं यही कहूँगा—  
गाहे बगाहे खुद को परख लीजिए।  
यदि अपने दिल में शांका कीजिये ॥

रहबरों में हुई लड़ाई है।

रहजनों ने निजात पाई है ॥

सब ने डाला है तेल जलती पर।

आग किसने भला बुझाई है ॥

—नाथ सोनपती

# गुरुकुल


कांगड़ी फार्मसी की

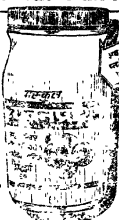
आयुर्वेदिक औषधियां सेवन कर स्वास्थ्य लाभ करें

**गुरुकुल**

च्यवनप्राश्न

यूरे वॉल्व के लिए निराला चिकित्सा  
एक अमूर्तितमाल लक्षण।  
रोगी ठहर व शांति उपर  
केन्द्रों की दुर्लभा में  
उपयोगी आयुर्वेदिक  
औषधीय औषधि






अपनी की  
कमिनी  
किस है

**गुरुकुल**

एच.ए.के.एल


बायो व मन्त्र के मन्त्र तम  
मरिचिकाय च्यवनिक  
के लिए उपयोगी  
औषधिक औषधि



**गुरुकुल**

चाय

कुपन व कुपकुल चयन  
और में ली बुद्धि  
ही दली मन्त्रकारी  
आयुर्वेदिक औषधि



**गुरुकुलकांगड़ीफार्मसी हरिद्वार (उ० प्र०)**

गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी

हरिद्वार

की औषधियां सेवन करें।

शाखा कार्यालय  
६३ गली राजा केदारनाथ,  
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

स्थानीय विक्रेताओं एवं सुपर बाजार  
से खरीवें

फोन नं० २६१८७१

शाखा कार्यालय: ६३, गली राजा केदारनाथ  
चावड़ी बाजार, दिल्ली-११०००६

'प्रवर' — बीमाब' २०४५

धार्म प्रतिनिधि समा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य विदित्य, प्रेष के लिए संबंधितकारी मुद्रणालय रोहतक में छपवाकर संबंधितकारी कार्यालय पं० अणुदेवसिंह सिद्धान्ती प्रबन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।



ओ३म्

# सर्वे हिताय

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—सूबेसिंह सन्तानमी

सम्पादक—देवदत्त शास्त्री

महसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालकार एम० ए०

वर्ष १८

बंका २६

२८ मई, १९६१

वार्षिक शुल्क ३०)

(आजीवन शुल्क ३००)

विदेश में ८ रु०

एक प्रति ५१ पैसे

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है ।

वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है । (महर्षि व्यासजी)

## वेदोपदेश

कैसे राजा प्रजा की रक्षा कर सकता है ?

भारद्वाजः ऋषिः । महावीरः (सेनानि) देवता । विष्टुः छन्दः ।  
श्वेत-स्वर । पुनस्तमेव विषयमाह ।

किं उच्यते राजधर्मं का उपदेशं करोते ॥

ओ३म्—बहिरिष भोगः पर्यंति बाहुं ज्याया हेति परिव्राजमानः ।

हस्ताभ्यो विस्वा बभ्रुनानि विद्वान् पुमान् पुमास परिपातु विवतः ॥  
(यजु० २६।११)

पदार्थ—(बहिः, इव) मेघ इव गजन् । बहिरिति मेघमान ।  
निष्. १।१०। (भोगे) (परि) सर्वतः (एति) प्राप्नोति (बाहुम्) बाधक  
बभ्रुम् (ज्यायाः) प्रत्यञ्चायाः (हेतिम्) शपम् (परिष्वाचमानः) सर्वतो  
निवारयन् (हस्ताभ्यां) यो हस्ताभ्यां हस्ति सः (विस्वा) सर्वाणि  
(बभ्रुनानि) विज्ञानानि (विद्वान्) (पुमान्) पुरुषार्थी (पुमांसम्) पुरुषार्थ-  
विनम् (परि) सर्वथा (पातु) रक्षतु (विष्वतः) ससारे भवाद् विष्वात् ॥

अन्वयः—हे मनुष्य ! यो हस्तभ्यो विद्वान् (पुमान्) भवान् ज्याया  
हेति प्रसिध्य बाहुं परिष्वाचमानः पुमास विवत परिपातु सर्वाहिरिष  
भोगविस्वा बभ्रुनानि पर्यंति ॥

सवार्थान्वयः—हे मनुष्य ! यः (हस्तभ्यं) यो हस्ताभ्यां हस्ति  
सः (विद्वान्) पुमान् पुरुषार्थी भवान् (ज्यायाः) प्रत्यञ्चायाः (हेतिम्)  
बाधकं प्रसिध्य (बाहुम्) बाधकं बभ्रुम् (परिष्वाचमानः) सर्वतो निवारयन्  
(पुमांसम्) पुरुषार्थिनम् (विष्वतः) ससारे भवाद् विष्वात् (परिपातु),  
सर्वथा रक्षतु, सः (बहिः, इव) मेघ इव गजन् (भोगे.) (विस्वा)  
सर्वाणि (बभ्रुनानि) विज्ञानानि (परि+एति) सर्वतः प्राप्नोति ॥

भावार्थः—हे मनुष्य ! जो (हस्तभ्यं) हाथों से भारतेवाले  
(विद्वान्) विद्वान् (पुमान्) पुरुषार्थी आप (ज्यायाः) प्रत्यञ्चा—घनुष  
की बोरी से : हेतिम्) बाधकं फेंककर (बाहुम्) बाधक इव  
(परिष्वाचमानः) सब ओर से निवारण करते हुए (पुमांसम्) पुरुषार्थी  
मनुष्य की (विष्वतः) सांसारिक विषय से (परि+पातु) रक्षण रक्षा  
करते हों, सो (बहिः, इव) मेघ के समान गजंते हुए (भोगे.) सुख  
भोगों से (विस्वा) सर्वाण (बभ्रुनानि) विज्ञानों की (परि+एति) सब  
ओर से प्राप्त करते हों ।

भावार्थ—अजीवनालक्षार । यो विद्वान् बाहुवतः सत्वात्प्रसं-  
पन्नवित् सन्नूत् निवारयन् पुरुषार्थेन सर्वान् सर्वस्माद् रक्षन् मेघवत्  
सुबभ्रुवर्षकः स्यात्, स सर्वान् विद्याः प्राप्नुवित् समानो भवेत् ।

भावार्थ—इस मन्त्र में उपमा धनक्षार है । जो विद्वान् बाहुवत  
वाला, सत्त्व-मत्त्वों को बताने वाला, सन्नूत्नों का निवारण करता हुआ  
पुरुषार्थ से सब को सब से रक्षा करता हुआ, मेघ के समान सुख  
भोगों को पढ़ाने वाला होता है, वह सब मनुष्यों को विद्या प्राप्त कराने  
में समर्थ होता है ।

साध्याहार—राजधर्म का उपदेश—राजा कैसे होना चाहिये ?

पुमान्—परम पुरुषार्थी, विद्वान्—राजनीति में निष्णात, हस्तभ्यं—  
वीर योद्धा, सत्वात्प्रसं विद्या को जानने वाला और राज्य के आन्तरिक  
तथा बाह्य सन्नूत्नों को बर्ण में करनेवाला होना चाहिये । जैसे मेघ  
वर्षा करके मत्तार के भांग पदार्थों को उत्पन्न करता है, वैसे अपनी  
प्रजा के सुखों व भोगों को बढ़ानेवाला हो और ज्ञान-विज्ञान को  
उन्नति में सतत जायबक होकर समस्त प्रजा को सुविधित कराने का  
सदा प्रयत्न किया करे ।

[‘व्यासमन्त्र-यजुर्वेद-भाष्य-भास्कर’ से उद्धृत, व्याख्याता—प्राचार्य  
सुब्रह्मदेव]

### आर्यवीर दत्त हरयाणा के तत्वावधान में विशाल आर्य वीर निर्माण शिविरों का आयोजन

प्रति वर्षों की भांति इस वर्ष भी आर्य वीर दत्त हरयाणा ने शीघ्र  
अवकाश में कई शिविरों की योजना बनाई है । इन शिविरों के माध्यम  
से युवकों में चरित्र निर्माण, राष्ट्र निर्माण तथा वैदिक सिद्धान्तों का  
ज्ञान दिया जाता है । इसके अतिरिक्त युवकों को योग साधना के साथ-  
साथ आसन, प्राणायाम, शार्दे, भाला, बुजो कराटे, कुंगफू, तलवार,  
छुरो, स्टूड तथा मलखम आदि का परिचय दिया जायेगा । आप भी  
अपने युवकों को इन शिविरों में भेजकर लाभ प्राप्त कर सकते हैं ।  
६४ वर्षे निम्नलिखित शिविर लगाए जा रहे हैं ।

२४ मई से २ जून—आर्यसमाज मकदोलो (रोहतक), संयोजक  
श्री सत्यवत शास्त्री ।

२६ मई से २ जून—द्वयानन्द महिला विद्यालय, सेक्टर-१,  
फरीदाबाद, संयोजक श्री कन्हैयालाल जो महता व हीतीराम जी ।

२६ मई से २ जून—२० वीं जूल बननाल, संयोजक  
जगदीश मधोक ।

२ जून से ६ जून—आर्यसमाज वाखीद (नारनोल), संयोजक  
श्री श्रीराजचन्द्र जी व रामलाल आर्य ।

२ जून से ६ जून—आर्यसमाज नरवाना, संयोजक राधाकृष्ण जी ।

२ जून से ६ जून—आर्यसमाज नीमडीसावी (मिवावी), संयोजक  
श्रीरामधर धार्य ।

६ जून से १० जून—आर्यसमाज सांघी जि० रोहतक, संयोजक  
विमलेश जी ।

६ जून से २३ जून तक (साप्ताहिक शिविर)—ज्ञानप्रसन्न धायम  
ज्वालापुर (हरिद्वार), संयोजक डा० आचार्य देवदत्त ।

२४ जून से ३० जून—कैथल, संयोजक श्री जगदीशचन्द्र ।

२३ जून से ४ जुलाई—जीन्द, संयोजक कर्णसिंह ।  
अपील—आप जानते ही हैं कि इन शिविरों पर प्रातराज,  
भोजन प्रदत्त तथा अन्य व्यवस्थाओं पर हमारा खर्च सब होता है ।  
(शिष्ट पृष्ठ ६ पर)

बैदिकविषयक एक प्रायोगिक लेख का उत्तर—

## त्रया धर्मग्रन्थ होना अपराध है ?

डा० भवानीलाल भारतीय

गतांक से प्रागे

धर्म में लेखक द्वारा प्रस्तुत किये गये मुख्य विचार पर जाता हूँ। यह आर्यसमाज पर यह आरोप लगाता है कि उसने आधुनिक समय के वेदों को बाइबिल और कुरान के समकक्ष धर्मग्रन्थ मानने का लासा अभियान चलाया। उसका सीधासा आरोप है कि आर्यसमाज के प्रवर्तक दयानन्द सरस्वती ने ईसाई और मुसलमानों की मकल पर ही वेदों को भारतवासी हिन्दुओं का एकमेव धर्म ग्रन्थ घोषित कर दिया। यह आरोप लगाकर वे दयानन्द के वैदाध्ययन, वैदिकविषयक उनके विचार और उसकी पृष्ठभूमि, भारतीय परम्परा (धर्मों की शास्त्रीय परम्परा) में वेदों की सर्वमान्य स्थिति, प्रत्येक धर्मग्रन्थ अथवा आचार्य द्वारा वेद प्रामाण्य को स्वीकार करने, उसके आगे नतमस्तक होने, वेद विरुद्ध बात को नकारने अथवा स्वयं के मन और सिद्धान्त को भी युक्ति अथवा तर्क का आश्रय लेकर वेदानुसृत सिद्ध करने के प्रयास से अपनी अनभिज्ञता प्रकट करते हैं। स्वामी दयानन्द द्वारा वेदों को धर्म ग्रन्थ घोषित करने का विचार यथैव ईसाइयत या इस्लाम के धर्मप्राप्ति माना जायगा तब तो यह भी मानना पड़ेगा कि उन्होंने ऋग्वेदविश्वामुक्तिका तथा वेदमाध्यम आदि ग्रन्थों को लिखने के पहले बाइबिल और कुरान का गम्भीर अध्ययन किया था और कुरान के इस्लामी सिद्धान्त होने को मुस्लिम अवधारणा को भी मानीयता सिद्ध किया था। तथ्य इसके सर्वथा विपरीत है। दयानन्द या आर्यसमाज ने यदि वेदों को धर्मग्रन्थ कहा है तो उसके पीछे भारत के प्रायः सभी धर्मग्रन्थों, शास्त्रिकों, धर्मविद्वानों तथा धर्मशास्त्रियों की ही वह परम्परा रही है जिसमें वेदों की सर्वमान्यता प्रामाणिक ग्रन्थ के रूप में मान्यता प्राप्त रही है। दयानन्द ने तो वेदों को धर्मग्रन्थ के रूप में प्रामाणिकता तथा मान्यता के लिए पतञ्जलि, व्यास, जमिनि, कणाद, कपिल, गोमन्त यज्ञात्मक कि शकाराचार्य रचित वेदान्त आश्रय तक के प्रमाण दिये हैं। दयानन्द को शक्ति में वेद न केवल हिन्दुओं का अपितु मानवजात का धर्म ग्रन्थ है क्योंकि वह अनेक विचारों का उद्गम स्थान तथा परम आद्य परमात्मा का वचन है।

दयानन्द ने नकर के शारीरक भाष्य को उद्धृत करते हुए लिखा है कि "ऋग्वेदादि जो चारों वेद हैं वे अनेक विचारों से युक्त हैं, सूर्य के समान सब सत्य अर्थों के प्रकाश करने वाले हैं। उनका वानसे वासा सर्वज्ञादि गुणों से युक्त परब्रह्म है।" यदि वे वेदों को प्रामाणिक धर्म ग्रन्थ घोषित करने में सैमित्तिक युक्तियों का आश्रय लेते तो शायद इस प्रकार कहते—"वेद परमात्मा की पवित्र वाणी इसलिए हैं क्योंकि वे हमें उसके किसी पंगम्बर या सदैवबाहक के माध्यम से प्राप्त हुए हैं। वेद पंगम्बर या सदैवबाहक को वेदों की वे ऋचायें किसी फरिश्ते या देवदूत के माध्यम से प्राप्त हुई थीं आदि।" किन्तु स्वामी दयानन्द का तर्क तो इस प्रकार—"नदीधारात् शालग्रामस्यैर्वादि-सदानस्य सर्वगुणान्वितस्य सर्वज्ञात्प्रकृतः संभवोऽस्ति।" सर्वज्ञ और सर्वगुणान्वित परमात्मा से किन्तु कोई अन्य देव ऋग्वेदादि शास्त्रों का कर्ता नहीं हो सकता। जब वाली जी को यह ज्ञान समझावे कि आर्य समाजों और भारतीय बौद्ध धर्म में वेदों की प्राणायिकता (इसोसिमे उन्हें धर्मशास्त्र का धर्म ग्रन्थ की संज्ञा दी गई है) को लेकर जो ऊँचापेह हुआ है उसका तो काल ही इतना पुराना है कि जिसके समक्ष सैमित्तिक मतों को तो बिल्कुल आधुनिक ही मानना होगा। रामदास्य और जमिनि, मनु और याज्ञवल्क्य, पराशर और बसिष्ठ यज्ञात्मक कि रामभद्रान् राय विश्वकान्दन् और अरविण्ड की वेदों को धर्म ग्रन्थ ही कहते हैं और उनका एतद् विषयक बुद्धिकोण दयानन्द से कमभिन्न मिन्न नहीं है। सूर्यकान्त वाली ने एक और मनघडन्त बात लिखी है। वे कहते हैं कि आर्यसमाज ने ईसाइयों और मुसलमानों के समकक्ष आर्य नायक नसल जाति, या समुदाय को कल्पना और बाइबिल, कुरान के समकक्ष आर्यों के धर्मग्रन्थ के रूप में वेदों को प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया। उनको ये दोनों ही उपरपत्तियाँ निगलाने सलीक और भिररा हैं। स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज ने "आर्य को जिस अवधारण को प्रस्तुत किया है वह रिश्वी नसल

जाति या समुदाय की वाचक नहीं है। इस सम्बन्ध में स्वामी दयानन्द का मतभ्रम ही प्रमाण माना जायेगा कि बालीजी का कथन। स्वामी दयानन्द स्वार्थप्रकाश में लिखते हैं—"भेदों का नाम आर्य, विद्वान् देव और दुष्टों का दस्यु अर्थात् बाहु, भूख नाम होने से आर्य और दस्यु दो नाम हुए। आर्य नाम धार्मिक, विद्वान् आद्य पुत्रयो का।" पुनः स्वभक्त्यात्मलक्ष्यप्रकाश में वे लिखते हैं—"आर्य श्रेष्ठ स्वभाव, धर्मत्या, परोपकारी, सत्य विद्यादि गुण युक्त हैं उनको आर्य कहते हैं।" अतः बालीजी का यह धारोप नितास्त मिथ्या और आपत्तिजनक है कि आर्यसमाज ने आर्य नाम से किसी नसल या सम्प्रदाय की कल्पना की। यदि स्वामी दयानन्द किसी समुदाय विशेष को ही "आर्य" नाम से पुकारते तो आर्यतर वर्गों को धर्मग्रन्थ में प्रतिष्ठित होने की स्वीकृति ही क्यों देते और क्यों वे आर्यसमाज के द्वारा मनुष्य मात्र के लिये जूने रहते।

वासी जी के विचार में आर्यसमाज ने बाइबिल और कुरान के समकक्ष आर्यों के धर्म ग्रन्थ के रूप में वेदों को प्रतिष्ठित करने का काय किया। इसके वे कुछ कारण भी बताते हैं। किन्तु इन कारणों को समीक्षा करने के पहले लेखक की इस शक्ति को दूर किया जाना आवश्यक है कि आर्यसमाज ने ही वेदों को धर्म ग्रन्थ के रूप में प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया। वे यह जूल वाते हैं कि वेद तो भारतवर्षीय आय (हिन्दू) समाज के अनादि काल से ही धर्मग्रन्थ के रूप में प्रतिष्ठित चले आये हैं। वेदों को सर्वोपरि धर्मग्रन्थ मानने में हिन्दुओं के किसी भी मन सम्प्रदाय आचार्य, सम्प्रदाय प्रवर्तक के मन में कभी कोई विग्रहपरिचर रही नहीं। समस्त उपनिषद्, स्मृति इतिहास ग्रन्थ, पुराण, उपपुराण यज्ञात्मक कि तत्र ग्रन्थों ने भी वेदों को आर्यों की एक मात्र तथा सर्वप्रधान धर्म ग्रन्थ स्वीकार किया। यदि इन ग्रन्थों के वेद को प्रामाणिक धर्म ग्रन्थ मानने विषयक उद्धारण ही दिये जायें तो लेखक का आकार बहुत बड़ जायेगा। वेदों को धर्मग्रन्थ के रूप में मान्यता और स्वीकृति तो तब से घटाविक प्रचलित है, जब इस धरती पर न तो बाइबिल और कुरान का ही अस्तित्व था और न कोई सैमित्तिक मत ही उत्पन्न हुआ था।

धर्म की सूर्यकान्त वाली द्वारा निवृत्त उन कारणों की समीक्षा कर जो वे वेदों को धर्म ग्रन्थ बताये जाने के हेतु रूप में प्रस्तुत करते हैं। उनके अनुसार आर्यसमाज ने वेदों को बाइबिले स्वीकार किया क्योंकि उसने पुराणों को गण्य कहकर ठुकरा दिया था। बाली जी की यह दलील सर्वथा लचर और हास्यास्पद है। आर्यसमाज ने पुराणों को गण्य कहा, यह दूसरी बात है, किन्तु वेदों को सर्वमान्य धर्म ग्रन्थ कहना और मानना तो हिन्दू मात्र को ही अनोख है। जो पुराणों को मान्यता देते हैं वे भी वेदों की सर्वाधिक शक्तिशाली और प्रमाण भूत धर्म ग्रन्थ स्वीकार करते हैं। धर्म विचार के प्रसंग में यह एक श्लोकात् मान्यता है कि जब वेदों का धर्म किसी धर्म ग्रन्थ के कथन से विरोध होता हो तो वहाँ वेद के कथन को ही मान्यता दी जायेगी, किसी अन्य धर्म स्मृति या पुराण आदि का कथन उसके सामने मान्य नहीं होगा। मानवत पुत्राण में यही बात इस प्रकार कही गई है।

वेदप्रतिष्ठितो धर्मो ऋषभस्तद्विपरिणतः।

वेद प्रतिपादित धर्म ही धर्म है, उसके विपरीत अधर्म है।

२. बाली जी पुनः कहते हैं—

आर्यसमाज ने रामायण और महाभारत को उनके संघोषित रूप में ही स्वीकार किया था, इससे देख के सामने कहीं पहचान का संकेत सड़ा न हो जाये, इसलिए वेदों को प्रकाशस्तम्भ के रूप में सड़ा किया गया और उन्हें ईश्वरीय बचन कहकर धर्म ग्रन्थ का रत्ना दे दिया गया। बाली जी का यह कथन तो और भी आपत्तिजनक है। इन श्रीमान्त्रों को यह बता देना आवश्यक है कि वेदोत्तर धर्म ग्रन्थों में समय समय पर विभिन्न लोगों द्वारा पुनः पुनः उद्घेयों से किन्तों ही बार निभावट होनी रही हैं। अतः किसी ग्रन्थ को संघोषित (मिश्रित अर्थों को जोड़कर अथवा उन्हें अमान्य कर) रूप में मानना ही कोई अपराध नहीं है।

## गुस्सा न कीजिए

(मुकेसाकुमार, ग्राम हाटा, पञ्जाब नदीको देवरिया)

क्रोध मनुष्य के मन का ऐसा भाव है, जिसके हृदय में धारने पर उसके चेहरे पर उसको छाया, उसका स्वरूप अलग करने लगता है। वह अपनी मनुष्यता को खोता है, अपना सोमनस्य नष्ट कर देता है और उसकी शान्ति और सुख नष्ट हो जाते हैं। वह दुःख की स्थिति में आ जाता है और उसका सम्पूर्ण वातावरण उसके शरीर, उसके मन और उसकी आत्मा को विचलित कर देता है। इसलिए कहा गया है :—

मा क्रुधः । (अथर्व ११-२-२०) क्रोध मत करो ।

जब हमें क्रोध आता है उस समय हमारे मन के भाव ऐसे हो जाते हैं कि हम उस समय दूसरे के अनिष्ट की कामना करने लगते हैं, दूसरे को बुझी देखना और उसको हानि पहुंचाना हमारा उद्देश्य हो जाता है। क्रोध दूसरे को धो हानि पहुंचाने की चेष्टा करता ही है वह जिसमें उत्पन्न होता है उसे भी जलाता रहता है, इसको हम इस प्रकार समझ सकते हैं कि यह आत्मपीडाजनक भाव है।

मनुष्य क्यों क्रोध करता है ? क्यों उसमें क्रोध उत्पन्न होता है ?

मनुष्य के हृदय में कुछ स्वाधीनभाव हमेशा विद्यमान रहते हैं इन स्वाधीन भावों में क्रोध भी एक स्वाधीन भाव है। इससे उत्पन्न होनेवाला रस रोद्र रस कहलाता है। रोद्र का अर्थ है भयंकर। अतः क्रोध में मनुष्य की आकृति भयंकर, मन भयंकर और धारणा भी विकृत हो जाता है। अतिरिक्त कामना से क्रोध उत्पन्न होता है, अर्थात् काम से क्रोध उत्पन्न होता है। क्रोध के कारण ही मनुष्य एक-दूसरे से लड़ते रहते हैं, झगड़ते हैं, कठोर वाणी से एक-दूसरे को बोलते हैं, और कामना के कारण ही वर्ग संघर्ष होता है। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र से लड़ता है। एक देश दूसरे देश से संघर्ष करता है। इन सब बातों से मनुष्य न केवल दूसरे का नाश करता है, अपितु उसको भी हानि पहुंचाती है।

क्रोध को दूर करने के लिए हमें अपने अन्दर शान्ति की भावना लानी होगी, हमें अपने अन्दर के विचारों को समुचित करना होगा अर्थात् के शब्दों में अपने अन्दर सम की भावना लानी होगी तभी हम क्रोध से बच सकते हैं।

एक बार की बात है कि भगवान् बुद्ध का एक शिष्य जिसका नाम तिष्य था वह बुद्ध भगवान् के पास गया। उसका चेहरा उतरा हुआ था। वह अत्यन्त उदास दिखायो दे रहा था। बेसन भाव से बैठ गया। उसे उदास और चिन्तित देखकर बुद्ध भगवान् ने पूछा "वत्स तिष्य ! तूम इतने उदास चिन्तित और बेसन क्यों हो ?" तिष्य ने कहा "भान्ने मेरे साथी म्रिगुक मेरे साथ कड़ी वाणी का प्रयोग करते हैं। मेरे साथ ठीक व्यवहार नहीं करते हैं ?"

भगवान् बुद्ध मुस्कुराये वे जानते थे कि तिष्य की बा ी भी बहुत ही क्रोध है। वह दूसरों से मरुत व्यवहार करना नहीं जानता है। उसमें भी विष है। बुद्ध ने कहा "तेरे साथी म्रिगुक तुझे पीठित करते हैं इसका कारण यह जोष है, और तू दूसरों की जोष को सहन नहीं कर सकता है। जब तेरी जवान तेज है तो तेरे लिए यह उचित है कि दूसरों की जवान को न सहन करे। जिस किसी की तेरे समान जोष है उसे दूसरे की जोष को सहन करने को तैयार रहना चाहिए। तेरे लिए नम्र होना ही उत्तम है। क्रोध रोकना ठीक है इस के लिए तुम्हें साधना का जीवन बिताना पड़ेगा।"

स्वामी श्रद्धानन्द कहा करते थे साधना के लिए हमें प्रयत्न पूर्वक विचार करना होगा। कड़ी से कड़ी परिस्थिति में अपने को रोकना पड़ेगा। वे कहते थे "सौम्य हृम पर हूठ अथवाद लगा सकते हैं जो हृम पर मिथ्या बहिष्कार चला सकते हैं, हमारी कूटी मिथ्या कर सकते हैं" हमारी साधना होगी कि दूसरे के प्रति अपने मन में विकार न आने द्या। मैं दूसरे के प्रति कभी दुर्बन्धन अपने मूह से नहीं निकालूंगा मुझे सबके साथ आसीमता विषय के प्रति मित्रता वीर दुर्बियों के प्रति करुणा और नाशमन्त्री के प्रति उपेक्षा का भाव रखना होगा। मैं सम्पूर्ण विषय को मित्रता से देखूंगा। सबको मित्रता की दृष्टि से देखूंगा इस प्रकार हम क्रोध को शांत कर सकते हैं।

क्रोध हमारा शत्रु है क्रोध रूपी जो आम आपने शत्रु के वि। अपने हृदय में जलाते हैं वह शत्रु से अधिक आपको जलाती है। हमारा मन से जब क्रोध धारने तो हमें यह करना चाहिए कि हम एक से वा तक गिनती गिनें और तब भी यदि क्रोध दूर नहीं होता है तो एक १ं ही तक गिनती तक गिनते चले जायें। क्रोध बस में आने पर जेने कठिनाइया धीर परेशानिया पंदा कर देता है। यह दुःख और दरिद्रत को जन्म देता है। क्रोध मनुष्य में घृणा का भाव उत्पन्न कर देता है जो कभी-कभी मनुष्य को नेस्त नाबंद कर देता है। इसलिए क्रोध आने पर हमको उसके विषय में नकं करना चाहिए और उसे चक्का देकर निकाल देना चाहिए। शत्रुता, बुरा वतवि, जलज, धवराहट, भाव बैठना, घृणा, कठोरता, परेशानी, उद्देश्य वे क्रोध ये पथवि या साईबन्ध हैं, क्रोध इनके साथ आता है।

एकवारोएक व्यापारी बड़ा क्रोधी था और इस क्रोध ने उसने व्यापार को नष्ट होने की सोमा तक पहुंचा दिया। उसने क्रोध पर विजय प्राप्त करने की काशानो इस प्रकार लिखी थी—

"मैं अपनी इच्छा से अधिक ईश्वर के धारिदो से प्रीति करने लग और अपने-कार्यों को अग्नि पूर्वक धर्य पूर्वक करने लगा, बुरे विचार धारोचना, घृणा, स्वार्थ नदले की भावना धमण्ड बीन करोरता क दूर भगा दिया। मैं क्रोध को नटठी से निकाल कर शान्ति के धरने १ निकाल कर आ गया।"

अब वह आदमी मानवता का नमूना है उसके रोग दूर हो गये और वह सखत और बलवान् हो गया है। आइए हम भी क्रोध से दूर करने का निश्चय करें अपने जीवन को शान्त और सुसुखर बना हुए धार्य बढें। वेद के क्रोध न करो इस आदेश के पारबन से ही ह, जीवन में आगे बढ सकते हैं।

## आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का चुनाव

दिनांक १४-४-६१ को आर्य प्रतिनिधि सभा भवन, राजावाण जयपुर में चुनाव अधिकारी श्री सत्यवत सामवेदी को देखरेख में श्री प्रतिनिधि सभा, राजस्थान के चुनाव सम्पन्न हुए जिसमें श्री अधिकारी चुने गये।

प्रधान : श्री विद्यासागर शास्त्री, मन्त्री : श्री स्वामी सुमेधा ' वेदप्रचार अधिष्ठाता : श्री डॉ० सुभाष देवालकार, कोषाध्यक्ष : सत्यनारायण शाह, कार्यालयमन्त्री : श्री ओमप्रकाश, पुस्तकालयाध्यक्ष श्री धर्मवीरसिंह, प्रार्यवीर अधिष्ठाता : श्री सुसुदेव गोयल।

## शोक सन्देश एवं श्रद्धांजलि

२५ अप्रैल को ग्राम खेवा (मिर्जापुर) में आर्य सज्जनोपदेशक महाशय दीपचन्द आर्य की मता जो भी मनमरो देवी का देहागत हो गय उनको वासु २५ वर्ष की थी। उनमें अतिथि सेवा एवं प्रार्यसमाज श्रद्धा थी। श्रद्धांजलि के अवसर पर स्वामी सर्वबानन्द जी आध्यात्मिक संबन्धन दिया। उन्होंने बताया शरीर नश्वर है, आत्मा अ है। इसके अतिरिक्त श्री हनुमान प्रार्य, डॉ० सरजोति धार्य, ३ उमरावसिंह आर्य आदि की श्री पुण्य आत्मा को श्रद्धांजलि दी साध भगवान् से प्रार्थना की उसकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे। १ अवसर पर महाशय प्रेमी श्री, इन्द्राज आर्य, दीपचन्द आर्य १ गुरुकुल धीरमवास के दो छात्र महावीर आर्य, रत्नेश आर्य एवं क गुरुकुल पचगवाा की दो छात्रा सुनीति व निर्मला आर्या द्वारा आध्यात्मि एव ईश्वर भक्ति के भवन हुवे। प्रातःकाल शान्ति यज्ञ क्रिया ग की दीपचन्द आर्य ने ५१ १० आर्य प्रतिनिधि सभा हत्याणा, ५१ गुरुकुल धीरमवास, ५१ १० गुरुकुल पचगवाा को दान दिया।

अतरसिंह प्रार्य क्रांतिकारी सभा उपदेश:



## सोचो, समझो और निंदियारी आंखें खोलो

पांच हजार वर्षों से सोने बानो अब निंदियारी घ्रांस खोलो और अपने स्वाभिमान, स्वावलम्बन, प्रतिष्ठा एवं आवर की बचाओ। पांच हजार वर्षों के बाद अज्ञान अंधकार की छाया संघेरी घटाओं से चिरे लोगों के बीच ऐसे सूर्य का उदय हुआ जिसने आज सभी हुई इन नाना प्रकार की समस्याओं को दूर करने का प्रयास करते-करते अपने आपको स्वीछावर कर दिया था। परन्तु ऐ लोभो ! तुमने बवं सुछा देव धर्म के हितंभो स्वामी दयानन्द जी को नहीं मानी। जिसका परिणाम यह हुआ कि आज दर-दर की ठोकरें खानी पड़ रही हैं, पिटना पड़ रहा है।

याद रलो ! हम हिन्दू नहीं हैं सच्चे अर्थों में देसा जाप तो हम आर्य ही हैं। एक बार स्वामी जी के मुखारविन्द से हिन्दू शब्द छोड़े से निकल गया था तो स्वामी जी महाराज ने तुरन्त उस गलती को महसूस कर कहा, ऐ लोभो ! मीने यह शब्द "हिन्दू" गलती से कह दिया है, हम हिन्दू नहीं ! आर्य हैं और राम भी आर्य थे जिस महा-पुरुष की जन्मभूमि में मन्दिर बनाने में होनेवाले ध्वजघण्टों के कारण आज देशव्यापी संघर्ष दिखा हुआ है। जन्ही राम धीर कृष्ण की मान्य-ताओं को कायम रखने के लिए ही तो स्वराज्य का नारा लगाया था। वह उस तरह का स्वराज्य जैसा राम राज्य था—

दैनिक दैविक भौतिक तापा। रामराज्य नहिं काहुँहि ध्याया।।  
सब नर कराहि परस्पर प्रीति। चचाहि स्वधर्म वेद श्रुति नीति।।

जिस रामराज्य में किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होता था। क्योंकि सभी लोग ऊच-नीच का भेदभाव हटाकर आपस में परस्पर प्रेम से रहकर स्वयंमं अर्थात् दैविक धर्म जो मानव धर्म है, मानव मात्र को एक समान सिखा देता है उस वैदिक मार्ग पर लोग चलते थे।

इस देश का दुर्भाग्य कहां तक बलाजं, बाबू जगजीवनराम एक बार मन्दिर पर श्रवित् होयें तो उस मन्दिर को अपवित्र समझकर गानो से बोया गया था और उनको तो मन्दिर में जाने भी न दिया जाता, किन्तु उनको इसलिए नहीं रोका गया कि वे उस समय केन्द्र शासित राज्य के रक्षा मन्त्री पद पर थे। अब तो कुछ लोगों में नेताना आई है जब भीषण नर संहार होना शुरू हुआ है, जब भारे बड़े-बड़े धीर गेडे खाने लगे हैं।

साध्वी श्रुतम्भरा ने अपने भाषण में १९६० को तमलोला भंडान (कटरा) विहार में कहा था कि जो हिन्दुओ ! न पूं जावो न कर्मभीरी, धीर न ब्राह्मण, क्षत्रिय, बनिया, यादव हो, तुम सब एक हो। केवल मनुष्य में दो मस्ते हैं एक साम्राज्य और दूसरे रामबादे और वैदिक धर्म भी इसी बात को मानता है कि मनुष्य के १ बर्म है एक आर्य और दूसरे वस्त्रु। ये सब बातें कहाँ से मिलीं ? ये वातें वेद की ही तो हैं। इन्हीं सब बातों के लिए ही तो स्वामी 'यानन्द जी ने अपना जीवन खपाया था। किन्तु ऐ अभाग्य लोभो ! हार्थि की वार्ताओं को ठुकराया तो क्या पाया ? बाद रलो जब हम राम ति संतान हैं तो आर्य ही हैं। राम आर्य थे, देसा एक ही प्रमाण नहीं ! कि राम हिन्दू थे। यदि हम अपने को हिन्दू कहेंगे तो सिद्ध कए जा सकते हैं कि राम की सन्तान नहीं हैं। क्योंकि पुर्णों की पिता ति बसीयत मिलती है। इसलिए राम आर्य थे और हम भी आर्य हैं। १ विश्व हिन्दू परिषद् से निवेदन करना चाहूंगा कि वे निन्दियारी शंखें लोहें और अपने को हिन्दू न समझकर आर्य समझें तथा अपने को सार्य विश्व परिषद् के नाम से परिचय देने में गौरवान्वित समझें।

याद रहे जिस दिन हिन्दू आर्य विचारों से जोतप्रोत होकर आप हिन्दू न रहकर आर्य मान्यताओं से सुशोभित हो जायेंगे उस दिन निन्दिया की कोई शक्ति हम आर्यों को नुका नहीं सकेगी। हमें अपने स्वाभिमान और पूर्ण आजादी के महाराणा प्रताप और बोर शिवाजी जैसे स्वाभिमानो वीरों के पदचिह्नो पर चलना होगा और कहुना योगा कि—

वाच न परतन्त्रता की स्वर्ण को इन थालियों में,  
भते हैं स्वतन्त्रता के दीने टाक पात के।

मुझे पें लंगोटी फटी रानी पे हो कोतो फटी,  
और बच्चे मांने रोटी-रोटी शोध न भुकाऊंगा।।

लेकिन यह सब कब होगा जब हम कमर कसकर तैयार हो जायेंगे और राम की ही भाति राखसों का संहार करने के लिए संदान में जायेंगे तथा स्वाभिमान से तिर उठाकर प्रत्येक भारत मां का सपुत कहेगा कि—  
हाथ में कटार भेरे रक्षा के वास्ते होगी,

वर्मान परलम्भ हो, जियेंगे स्वाभिमान से।  
बाहे सो बार मुझे जीवन को सपाना पड़े,  
फिर भी रण में जाके कभी पीठ न दिखाऊंगा।।

ते० जीवनार्थ पुरोहित आर्यसमाज हाजी

## दुःखी करो मत जन-जन को

नम की ऊचाई में चढकर, मत भूलो गहराई को।  
जिस सागर से मोती मिलते, मत भूलो उस खाई को।।

वनकर नेता चढ जाते हो, तुम नम के तारों जंसे।  
हुए उतावले इतने मे हो, ध्यान नहीं बरपाई को।।

बोट मांगते समय बड़े, निमल पवित्र तुम लगते हो।  
जीते चुनाव मिलो जब कुर्सी, विचारोंसे तरफाई को।।

भारजए से जाति-पाति को, मत फंसाओ नेताधो।

हिन्दू को तुम बलण करो मत, ना तोहो खाई-खाई को।।

राजनीति की रणनीति से दुःखी करो मत जन-जन को।  
बजती रहते हो तुम लोगो, प्रेम मरी सहजाई को।।

—'जीवनार्थ' आर्यसमाज हाजी

## जग से तिमिर हटायें

वैदिक धर्म महात् हमाचा कभी नहीं बिसराओ।  
देश धर्म जाति के हित में धमर सपुतो धावो।।

दानव बने हुए हैं मातव भ्रष्टाचार बढ़ाया,  
काम क्रोध भद लोभ मोह ने, अपने लोक फंसाया।

देवर ने प्राणी के सुख पर रंग की छाप सजाई,

नहीं है सोता नहीं सुखम, नहीं धरत-सा भाई।

मर्याद कंसे बिसराई, श्री राम बन जाओ।। देश धर्म.....

महाराणा प्रताप मूल गये, उषमसिंह अब कीन कहे,  
मोहनवाच, गोपाल शिवाजी, राममूर्ति नहीं रहे।  
वीरों के हुए बन्ध बखारें, शक्ति निर्य बढ़ाते,  
पुरुकुल से सन्तान पड़ावो, बस बुद्धि बा आते।

जीवन में नहीं बोला जाते, जट्टी प्रवेश दिलावो।। देश धर्म

नेता जो की वार्तां को हम जीवन में दोहराये,  
रहे सगठन एक हमारा जो चाहे सो पायें।

विस्मिल भयत चन्द्रोदर हमें जाते-जाते बोल गये,  
सच्चे पय पर कथम बढ़ाना, मार्ग दयानन्द खोल गये।

भू मण्डल पर डोब गये तुम, जीवन को पड जाओ।। देश धर्म

सच्चे पथिक बनें जीवन में पास पड़ीस बनार्यें,  
पांच शहर तहसीब जिले में, देश के सम्मुख जायें।

भूले बिछड़े दीन जनो की सेवा में जुट जावो,  
मईश धार्य मर्यादा का सबको पाठ पड़ावो।।

धर-धर दयानन्द बन जावो जग से तिमिर हटावो।। देश धर्म

## श्री राजीव गांधी की जघन्य हत्या पर सर्वत्र शोक

भारत के पूर्व प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी का मद्रास के निकट २१ मई की रात्रि को एक भयंकर बम विस्फोट में निधन हो गया। उनकी आयु ४० वर्ष की थी। इस दुःखद समाचार को सुनकर सारा राष्ट्र स्तब्ध रह गया। आतंकवादियों की गतिविधियों से प्रत्येक नरनारी चिंतित है। बड़े से बड़े नेता भी जव सुरक्षित नहीं है तो साधारण व्यक्ति अपनी रक्षा कैसे कर सकता है।



२५ मई को दिल्ली में वैदिक रीति के अनुसार उनका दाह संस्कार किया गया। इस अवसर पर देश तथा विदेश के भारी संख्या में नरनारी उपस्थित थे। उनकी जघन्य हत्या की सर्वत्र निन्दा की गई।

भायं प्रतिनिधि सभा हत्याकाण्ड के प्रधान भो० वेरसिंह ने श्री राजीव गांधी की निर्मम हत्या पर गहरा दुःख प्रकट किया और शोक सतप्त परिचार से सहानुभूति प्रकट की है। —केदारसिंह आण

## धर्म बनाम राजनीति

आचार्य प्रेममिश्र एम.ए.०

हमारे देश के कुछ राजनेता उंचे स्तर से चिल्ला रहे हैं—'धर्म को राजनीति में न लाओ'। इनसे मुझे कि तब क्या 'धर्म' को राजनीति में लावे ?

महात्मा गांधी भारत में जब राम राज्य लाने की बात कहते थे तो क्या वे 'धर्मराज्य' की ही बात नहीं करते थे ? सत्य तुलसीदास ने राम राज्य का वर्णन करते हुए लिखा है—

वरनाश्रम निज-निज धरम, निरत वेद-पय लोग।

चलाहि सवा पाबहि सुखहि, नहि भय-भोक न रोग।

महर्षि वाल्मीकि के शब्दों में श्री राम स्वयं (रामो विग्रहवान् धर्मः) धर्म या मानवता की आक्षात् प्रतिमूर्ति हैं और ऐसा है श्रीराम का 'धर्मराज्य' जिसमें सभी प्रजाजन (विदोऽक्षितो धर्ममूलसु) धर्म या मानवता के मूल स्रोत वेदों के भाग्य पर चलकर सर्वत्र सुल-शांति एवं निर्भयता प्राप्त करते हैं। श्रीराम के धर्म राज्य में—

देहि क देविक भौतिक तापा, राम राज्य काहुहि नहि व्यापा।

स नर कराहि परस्पर प्रीति, चलाहि स्वधर्म निरतश्चि नीति॥

आध्यात्मिक आधिभौतिक आधिदेविक कष्ट न था, जिसमें सभी धर्म स्वधर्म पालन करते हुए भी सर्वथा समाज के (व्योक्ति वस्तु-व्यवस्था जन्म मूलक न थी) सभी को उन्नति का सामान अवसर था। प्रकृत है कि धर्म राज्य का आधार धर्म—वैदिक (मानव) धर्म है।

कैसी विदग्धना है कि गांधी जी का सारा पुत्रधर्म इस धर्म-मूलक 'राम राज्य' को लाने के लिए था, जबकि गांधी का नाम लेकर अपनी राजनैतिक नीति से बचने का प्रयास करने वाले, गांधी जी के तथाकथित बेटे 'धर्म-विहीन' राज्य का डोल पीटते हैं, और तुरा यह कि इस भयंकर पाप को भी वे (आत्महत्या करत हुए) सबसे बड़ी विशेषता बताते हैं। गांधी जी 'धर्म-विहीन' राजनीति को बेध्या बताते हैं और उनके बेटे इसी बेध्या पर फिदा हैं। सच्चाई यह है कि राजनीति के ये पक्षे न धर्म का धर्म जानते हैं, न राजनीति का। किमार्थचर्यमत्: परम्: वस्तुत: धर्म धीर राजनीति एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यान-प्रकाश के छठे समुल्लास को 'राज धर्म' की सज्ञा दी है। महर्षि कृपाद के अनुसार (यतोऽयुधनिःश्रेयसुसृष्टिः स धर्मः) धर्म भौतिक (भौतिक) और पारलौकिक (आध्यात्मिक) उन्नति के समन्वय का नाम है। मानव धर्म शास्त्र प्रणेत मनु द्वारा प्रस्तुत धर्म के धर्म क्षय (वृत्ति क्षया... ) सार्वभौम धर्म के दस स्वयंभू सूत्र हैं। धर्म की

परिभाषा ही है—'धर्मो धारयते प्रजा' प्रजा को धारण करने वाले नियमों का नाम ही 'धर्म' है। अतः धर्म ही राष्ट्रियता है और राष्ट्रियता ही धर्म है। दूसरे शब्दों में धर्म का द्रोही राष्ट्र धीर राष्ट्रियता का शत्रु है। और वृत्ति धीराम धर्म के वृत्तिमान् स्वल्प वे, अतः धर्म का द्रोही राम का द्रोही धीर राष्ट्र का द्रोही है।

हम भूबे नदी कि जैसे धर्म और विज्ञान परस्पर विरोधी नहीं, एक-दूसरे के पूरक हैं, वैसे ही धर्म और राजनीति (राष्ट्रियता) भी एक-दूसरे के पूरक हैं। धर्म बिना राजनीति या राष्ट्र चिंतन के अंधूरा, पशु धीर लंगड़ा है तथा राजनीति बिना धर्म के शयो है। भारत को राम राज्य (धर्म सांख्य राज्य) चाहिये।

हा, यदि धर्म को कोई सञ्चित धर्मों में विभिन्न सम्प्रदायों के रूप में लेता है तो प्रथम तो यह अनुचित है, फिर जो अपनी शासन-नीति के मूल में इसी साम्प्रदायिक भेद-भाव के चिंतन के आधार पर अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक जैसा वर्गीकरण करते हैं और उसी के आधार पर चुनाव, शिक्षा, नौकरों आदि का बंटवारा करते और इसी प्रकार मानव-मानव के बीच भेदक देखा शीघ्र जन्म के आधार पर जातिवाद को स्वीकार कर शासन की नीतियां चलाता चाहते हैं, वही सबसे बड़े साम्प्रदायिक हैं वही सबसे बड़े धर्म द्रोही एवं राष्ट्र-द्रोही हैं। भारतीय प्रजा को इन धर्म द्रोही अथवा राष्ट्र द्रोहियों को मई में होने वाले निर्वाचनों में सबक सिखाना है कि भारत को राजनीति धर्ममूलक ही रहनी है, और रहेगी तथा धर्म की भावना है—सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखमाप्नु भवेद् ॥

## ग्राम सांघी मे वेद प्रचार

सांघी जि० रोहक में श्री सुवेदार श्री रणवीरसिंह के सुपुत्र हर्षवीर के जन्म-दिवस के उपलक्ष में दिनांक ११, १२ मई १९६१ को सभा की ओर से वेद-प्रचार का कार्यक्रम रखा गया। इस अवसर पर ए० ईश्वरसिंह की भजन मण्डली तथा जयवीरसिंह जी के ११ मई रात्रि को भजन तथा सुरजनदेव आचार्य का उपदेश हुआ। दिनांक १२ मई को प्रातःकाल महापूजा तथा स्वा० योगानन्द तथा मेजर आर्यवीर का भाषण तथा ए० ईश्वरसिंह के अंकित एवं भजन हुए। अक्त प्यारिताल जी ने गृह प्रवेश के लिए मालावर्ण पुष्पक सुबे० रणवीरसिंह जी को प्रातोऽर्चन दिया। आर्यसमाज सांघी को २१) स्वा० योगाध्वर सिंहजी को ११) ३० तथा २०) ३० एवं प्रतिनिधि सभा को दान दिया गया। यह कार्यक्रम बहुत अच्छा एवं प्रभावशाली रहा। १ से १० जून तक ब्रह्मचर्य विद्यया सिद्धि का आयोजन किया जा रहा है। ओम्प्रकाश आर्य, मन्त्री-आर्यसमाज सांघी (रोहक)

## वेद प्रचार मंडल जिला जोध के निर्णय

वेद प्रचार मण्डल जिला जोध की मई मास की बैठक आर्य समाज मन्दिर जोध सहर में हुई जिसमें ११ सदस्य उपस्थित थे। बैठक की अध्यक्षता मण्डल के संयोजक स्वामी जी रत्नदेव जी ने की। सर्वसम्मति से निर्णय किया गया कि—

१—जुनाबी माहिली को देखते हुए १६ मई से जून १, १९६१ तक प्रचार कार्य स्थगित किया जाये तथा भजन मण्डली को उक्त अवधि के लिये धार्मिक अवकाश दे दिया जाये।

२—जुनाव प्रचार हेतु मण्डली किसी भी राजनैतिक पार्टी या किसी भी प्रत्याशी के लिए प्रचार हेतु न जाये, क्योंकि वेद प्रचार मण्डल सब का ही धीर इस गते हूय नहीं चाहते कि किसी दल या व्यक्ति विशेष का प्रचार करें। हमारी व्यक्तिगत शक्ति चाहे जिसमें हो पर मण्डल के नाते हूय सबको समान मानकर चलते हैं।

३—जून के प्रथम सप्ताह से प्रचार कार्य पुन आरम्भ कर दिया जायेगा।

बैठक के अध्यक्ष स्वामी रत्नदेव जी ने मण्डल की ओर से आर्य समाज जोध सहर के सुयोग्य प्रचारक श्री अर्धकिसान जी आर्य धीर उरसाही युवा मन्त्री श्री रणवीर जी धीर्य और समस्त समाज का धन्यवाद किया कि उन्होंने बैठक के लिए सारी व्यवस्था अत्यन्त सुचारु एवं उत्तम प्रकार से की। श्री ओम्प्रकाश आर्य

# वेद में प्रकृति विषयक प्रश्नोत्तर

(पं० धर्मदेव 'मनोचौ' वैवर्तिय, गुरुकुल कालवा)

विज्ञानु मनुष्य विद्वानों से इस प्रकार प्रश्न करे:—  
का स्विबासोत्व्यं चितिः किं? स्विबासोत्व्यद्रुद्रयः।  
का स्विबासोत्व्यिष्यिष्यत्वा का स्विबासोत्व्यिष्यिष्यत्वा ॥

(यजु० २३।५३)

धर्म—हे विद्वान् ! इस जगत् में (का स्वित्) कौन (पूर्वचितिः) अनादि समय में संचित होने वाली (आसोत्) है? (किं स्वित्) कौन (वृहत्) महान् (व्य.) प्रजनन रूप वस्तु (आसोत्) है? (का स्वित्) कौन वस्तु (पिष्यिष्यत्वा) आद्रं—पिष्यिष्यो (आसोत्) है? (का स्वित्) कौन (पिष्यिष्यत्वा) अवयवों को अन्दर करनेवाली वस्तु (आसोत्) है? यह आप से पूछता है।

भावायं—वहाँ चार प्रश्न हैं, उनके समाधान—उत्तर अगले मन्त्र में देंगे।

पूवं मन्त्र के प्रश्नों के उत्तर—

यो सौदर्योत्पित्तस्वः आसोत् वृहद्रय ।

अत्रासोत्पित्तस्वः रात्रिरासोत्पिष्यिष्यत्वा ॥ (यजु० २३।५४)

अर्थ—हे विज्ञानु (यो) विद्युत् (पूर्वचिति) प्रथम संचित वस्तु है (श्रव) महत् तत्त्व (वृहत्) महान् (व्य.) प्रजनन प्रात्यक (आसोत्) है, (अत्रिः) रत्नक प्रकृति (पिष्यिष्यत्वा) आद्रंभूत वस्तु (आसोत्) है, (रात्रिः) रात्रि के समान प्रथम (पिष्यिष्यत्वा) सब अवयवों को निगलने वाली (आसोत्) है, ऐसा तू जान ।

भावायं—हे मनुष्यो ! जो अति सूक्ष्म विद्युत् है वह प्रथम परिणाम है। महत् नामक द्वितीय परिणाम है। प्रकृति मूल कारण रूप परिणाम है, और प्रलय सब स्थूल पदार्थों का विनाशक है, ऐसा समझो।

चार प्रश्न इस प्रकार थे—हे विद्वान् इस जगत् में प्रथम—अनादि संचित वस्तु क्या है? महान् प्रजननात्मक वस्तु क्या है? आद्रं अर्थात् पिष्यिष्यो वस्तु क्या है? प्रथमों को अन्दर करने वाली अर्थात् निगलने वाली वस्तु क्या है? इनका समाधान इस प्रकार किया है—

विद्वान् उत्तर देता है कि हे विज्ञानु ! विद्युत् प्रथम संचित वस्तु है, अर्थात् अति सूक्ष्म विद्युत् प्रकृति का पहला परिणाम है। महत्-तत्त्व महान् प्रजनन आत्मक वस्तु है जो प्रकृति का दूसरा परिणाम है। रत्नक—प्रकृति आद्रंभूत—पिष्यिष्यो वस्तु है जो मूल कारण रूप परिणाम है। रात्रि के समान प्रलय सबके ध्रुवयवों को निगलने वाला है अर्थात् सब स्थूल पदार्थों का विनाशक है।

धायो मन्त्र में पुनः प्रश्न किये हैं—

काऽर्धमरे पिष्यिष्यत्वा काऽर्धं कुं पिष्यिष्यत्वा ।

काऽर्धमास्करुम्यर्धं चितिः काऽर्धं पन्था वि संपत्ति ॥ यजु० २३।५४)

धर्म—(अरे) धरे रिश ! (ईयं) (का) कौन (पिष्यिष्यत्वा) रूप को आवृत्त करने वाली है? (ईयं) और (का) कौन (कुपिष्यिष्यत्वा) कृषि प्रादि के अवयवों को नष्ट करने वाली है? (ईयं) और (कः) कौन (आस्करुम्यं) शीघ्र (अर्धं) पहुँचता है? (कः) कौन (ईयं) जब के (पन्था) मार्ग में (वि संपत्ति) गति करता है? इन प्रश्नों का समाधान कर।

भावायं—कौन रूप को आवृत्त करता है? कौन कृषि प्रादि को नष्ट करता है? कौन शीघ्र दौड़ता है? कौन मार्ग में चलता है? ये चार प्रश्न हैं। इनके उत्तर अगले मन्त्र में—

अत्रादे पिष्यिष्यत्वा इवाचित्कुपिष्यिष्यत्वा ।

सा आस्करुम्यर्धं पन्थां वि संपत्ति ॥ (यजु० २३।५५)

अर्थ—(अरे) धरे मनुष्यो ! (अत्रा) जन्मरहित प्रकृति

(पिष्यिष्यत्वा) रूप को आवृत्त करनेवाली है एवं (इवाचित्) सेंह (पशु विशेष) के समान कृषि प्रादि के धर्मों को नष्ट करने वाली है। (सा.) सरगोश के समान वायु (आस्करुम्यं) सब शीघ्र उड़लकर (अर्धं) पहुँचता है। (अहिः) मेघ—बादल (पन्थाय) मार्ग में (वि + संपत्ति) विविध गति करता है, ऐसा जानो।

भावायं—हे मनुष्यो ! जो अत्र—अत्रजन्मा प्रकृति है वह सब कार्य जगत् का प्रलय करनेवाली, कार्य कारण रूप धारण करने वाली अर्थात् जगत् में लीन कर लेती है, जो सेंह कृषि प्रादि का विनाश करती है, जो वायु शव—सरगोश के समान चलता हुआ सबको सुखाता है, जो बादल संप के समान गति करता है, उम्हें जानो।

विज्ञानु प्रश्न करे धरे विद्युपो स्त्री रूप को आवृत्त करनेवाली क्या वस्तु है? कृषि प्रादि का विनाश करने वाली क्या वस्तु है? शीघ्र कौन दौड़ता है? जब के मार्ग में कौन-कौन गति करता है? इस प्रकार चार प्रश्न थे उनके उत्तर भी प्रस्तुत किये हैं।

विद्वान् उत्तर देता है कि हे मनुष्यो ! जो अत्र—अत्रजन्मा प्रकृति है वह सब कार्य जगत् का प्रलय करने वाली कार्य-कारण आत्मक, और अपने कार्य को धारण में लीन करने वाली है। जो सेषा—सेंह (पशु विशेष) है वह कृषि प्रादि का विनाश करने वाली है। जो वायु है वह शवक—सरगोश के समान सब शीघ्र उड़लकर पहुँचता है एवं शव को सुखाता है। जो मेघ—बादल है वह जब मार्ग में विविध गति करता है एवं संप के समान चलता है। तुम लोग इन प्रकृति प्रादि पदार्थों को जानो।

## आर्यसमाज नारग का वार्षिकोत्सव

२६, २७, २८ मई को आर्यसमाज के प्राण में बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। जिसमें स्वामी महानन्द जी राजगढ़ व स्वामी बर्मानन्द जी पानीपत वालों के ओजस्वी प्रवचन हुए और पं० चिरंजीवाल जी आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के ओजस्वी भजन हुए और पं० हरिकृष्ण जी प्रतिनिधि सभा हिमाचल, जोधपुर जी तिरमोरी सभी के सुन्दर कार्यक्रम हुए। श्री देवेन्द्र जी शास्त्री द्वारा मंच संचालन हुआ। उत्सव में रत्नियों की संख्या लगभग ५०० एवं एक हजार पुरुष कुल लगभग डेढ़ हजार लोग उत्सव में प्रतिदिन भाग लेते रहे। उत्सव सफल रहा।

—म्यादरसिंह, मंत्री नारग (हि.पं.)

(पृष्ठ ६ का वेध)

यह सभी आपके प्रेम और सहयोग से ही पूरा करना है। हमारी हादिक इच्छा है कि आप अपने बच्चों को अवश्य इन धारिणों में भेजें तथा आप स्वयं भी कार्यक्रम देखें। अतः आप अपनी बीर से अपनी प्रिय आर्यसमाज/संस्था की ओर से अधिक धार्मिक सहयोग दें। कम से कम १०१ रुपये का सहयोग आप अवश्य ही विचारें। समस्त कास चैक, ड्राफ्ट, मनी ऑर्डर मन्त्री आर्य बीर दल हरयाणा, आर्यसमाज शिक्षाओं कालोनी रोहतक के पते पर भेजें। आप धारिण के लिए शुद्ध धी, आटा, दाल, दलिया, चाबच, चीनी प्रादि सामान भिजवाकर भी सहयोग कर सकते हैं।

हमें विश्वास है कि आप इसे अपनी अनपेक्षित सभा में रत्नक धार्मिक से अधिक सहयोग भिजवाने की कृपा करेंगे।

आपके सहयोग के आकांक्षी :

उमेदसिंह धर्मा	वेदप्रकाश आर्य	स्वामी दलदेव
संचालक	प्राचीनी मन्त्री	पथिष्याता
	संरक्षक :	
स्वामी भोमानन्द,	प्रो० उत्तमचन्द्र धार	शा० लक्ष्मणदास
	आदि बीर दल हरयाणा	

## पुलिस की घाघरियों से शराबियों के हाँसले पस्त

बहादुरखण्ड—यहाँ अपराधों में कमी काने के लिए बहर धाना प्रचारी चौ० इन्द्रसिंह कुंठ तथा उप-मुलिस अधीक्षक सरदार दत्तसिंह महले पर कठना सिद्ध होते जा रहे हैं। हात्सिक बहर धाना प्रचारी चौ० इन्द्रसिंह जोर उप-मुलिस अधीक्षक श्री दत्तसिंह को यहाँ कार्यभार सम्भाले अभी एक माह भी नहीं हुआ है कि बहर में बर्षों का विषय बने हुए हैं।

यहाँ होटलों में बैठकर जो लोग तुले बहले में शराब पीते थे अब उनके शान्त आगई है। महुर धाना प्रचारी को किसी होटल में कोई स्थिति शराब पीता हुआ मिल जाए या शराब पीकर किसी चौशटे व सार्वजनिक स्थान पर मटरगस्ती करता मिल जाए तो बहर धाना प्रचारी महोदय वाक्यादा उसको घाघरी पहनाकर और मुह कासा करके जुल्स निकालते हैं।

बहर धाना प्रचारी चौ० इन्द्रसिंह का कहना है कि उन्हे जिला पुलिस अधीक्षक श्री एस० एस० देखावाल व उपपुलिस अधीक्षक श्री दर्शनसिंह के नेतृत्व व मार्गदर्शन में अपना कर्तव्य पूरा करने में किसी प्रकार की हिचकिचाहट नहीं हो रही है।

चौ० इन्द्रसिंह ने दावा किया है कि उन्हे यहाँ आए धर्मो एक माह भी नहीं हुआ है कि चोरी हुई एक कार, एक स्कूटर व एक रिक्सा बरामद की है। उन्होंने बताया कि इसी एक माह के दौरान इस लोग होटलों में शराब पीते हुए पाए गए जिनका खाना किया गया है। कुछ युवराजों पकड़े गए हैं जिनके पास से ६०२ रुपए नकद बरामद किये हैं। उन्होंने बताया कि इनो दौरान आठ अप्रेमी शराब की १६ देसी शराब की बीर २४ बीर का अर्बेस बोलने बरामद की है। उन्होंने यह भी बताया कि एक कल केस में सम्बन्धित दो अपराधी जयदीप व आनादसिंह को भी गिरफ्तार किया गया है।

(संकेत बीर धरुंन से साभार)

## यमुनानगर में चतुर्थ वेदप्रचार समारोह

१० से १२ ज्येष्ठ २०४८ (२४ से २६ मई, १९६१) तक

वैदिक बृद्ध मन्थास आश्रम, अमोक नगर, रेलवे बर्कसाप रोड, यमुनानगर में केन्द्रीय प्रायं सभा यमुनानगर के तत्वावधान में १० से १२ ज्येष्ठ, २०४८ (२४ से २६ मई, १९६१) तक चतुर्थ वेदप्रचार समारोह प्रथमाम से मनाया जा रहा है जिनमें उच्चकोटि के विद्वान् स्वामी सदानन्द जी, प्राचाय वागीश्वर जी, आचार्य रामकेशोर जो धर्मो श्री सतीश जी मिलल, मा० लक्ष्मणसिंह जी बीमोल, श्री स्वेत सिंह जी, प० जयदेव जी जतीईवाले, श्रीमती स्वर्ण जी भाटिया, श्रीमती सुन्दर रानी जी, श्रीमती बाबी जी, श्रीमती उर्मिला जी, सुश्री सुधीसा जी इत्यादि पधारे रहे हैं।

अध्यक्ष : स्वामी सच्चिदानन्द

## मतदान अब १२ और १५ जून को होमा : शेखन

नई दिल्ली—भूपूव प्रधानमन्त्री श्रीर कांसरे (इ) के अध्यक्ष श्री राजीव गांधी की हत्या के कारण उत्पन्न स्थिति को देखते हुए लोक-सभा तथा कुछ शाखाओं की विधानसभाओं के लिए १३ और २६ मई को होनेवाला मतदान स्थगित कर दिया गया है। दूसरे और तीसरे चरण का मतदान अब क्रमशः १२ और १५ जून को होगा। पहले चरण का मतदान २० मई को हो चुका है।

मतदान स्थगित करने के फैसले की घोषणा मुख्य चुनाव आयुक्त श्री टी० एन० वेपन ने की। इस बारे में उन्होंने राष्ट्रपति श्री आर० वेंकटरामन और प्रधानमन्त्री श्री चन्द्रशेखर से परामर्श किया। लोक-सभा और विधानसभाओं के चुनाव की अंतिमा पूरी होने की तिथि भी अब ३१ मई को बढ़ाकर १८ जून करदी गई है। इस प्रकार दसवी

धोकधमा बीर नई सरकार का गठन अब जून के पहले सप्ताह को बचाए जून के चौथे सप्ताह तक हो पाएगा।

श्री वेपन ने बताया कि २० मई को मतदान में बाधको के कारण जिन मतदान केन्द्रो पर २२ मई को दोबारा चुनाव कराने की घोषणा की गई थी उनमें पुनर्मतदान भी अब स्थगित कर दिया गया है। इन क्षेत्रों में अब मतदान १२ जून को होगा। २० मई को पड़े मती की गणना भी १५ जून के बाद होगी।

श्री वेपन ने कहा कि जहाँ तक प्रमेठी संसदीय निर्वाचन क्षेत्र का सवाल है जहाँ से श्री राजीव गांधी उम्मीदवार थे, वहाँ प्रचुर वहु (स्व० गांधी) जीत जाते हैं तो उपन्यास कराया जाएगा।

नये कार्यक्रम के अनुसार, जून में अब लगभग ३३० निर्वाचन क्षेत्रों में मतदान होगा। पहले दौर में २० मई को २०४ नसवीय निर्वाचन क्षेत्रों में मतदान हो चुका है।

(दैनिक हिंदुस्तान से साभार)

## आर्यवीर दल, रोहतक के वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में भाषण प्रतियोगिता

प्रत्येक राष्ट्र एक जाति का उत्थान, उसके बर्षों एव युवक-युवतियों के नैतिक, नैतिक एव वारंरिक निर्माण पर निर्भर करता है। इसी भावना के दृष्टिगत एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन रविशार टिमाक २ जून १९६१ को साय ४-०० बजे में वैदिक भवन साधनाश्रम, आर्यनगर रोहतक में किया जा रहा है जिसमें प्राय, अपने विद्यालय/महाविद्यालय के छात्र, छात्राओं एव परिवार सहित सावर आमन्त्रित हैं।

### विद्यार्थ्य स्तर के विषय

- १—मानव मानि का स्थाई अोन—अध्यात्मवाद।
- २—विद्यालयों में नैतिक शिक्षा का अभाव क्यों ?
- ३—वेद में ईश्वरीय ज्ञान है।
- ४—प० गुरुदत्त जी विद्यार्थी का सखित जीवन-चरित्र
- ५—सधा राता तथा प्रजा।
- ६—धर्मनिरपेक्ष का अर्थ में पनपता उग्रवाद।
- ७—आरक्षण नीति पर आयसमाज का दृष्टिकोण।

### महाविद्यालय स्तर के विषय

- १—मानव अवाति का मुख्य कारण—भौतिकवाद।
- २—महाविद्यालयों में मानव पदार्थों के प्रयोग में वृद्धि क्यों ?
- ३—वेद में विज्ञान एव गणित।
- ४—प० लेखराम जी का बलिदान किस लिए ?
- ५—प्रजातन्त्र में जनमत का दुस्रयोग क्यों ?
- ६—देश की वर्तमान राजनतिक परिस्थिति।
- ७—भारत के नव-निर्माण में प्रायसमाज की भूमिका।

**अभ्य के प्रचारार्थ**

अजिल्द **₹००** सैंकड़ा

**अभ्यार्थ प्रकाश**

अजिल्द **9००** सैंकड़ा

**घर घर पहुंचाएँ**

**सफेद कागज मुद्रण छपाई**

**शुद्ध संस्करण वितरण करने वालों के**

आकार: 23x36-16 पृष्ठ 820 की दर लिप्य प्रचारार्थ

सजिल्द ६/प्रचारार्थ ७/

**आपसाहित्य प्रचारार्थ**

६६, तमिः बाननी, दिल्ली-६६, दरया, दिल्ली-६६

**“भारत माता”**

प्रथम करें करते धाये भारत मां सोच सुकाले हैं  
 देशक छोटे बालक हैं मां सच्चा प्रण उठाते हैं  
 नीर हकीकत की भाँति धर्म पर मर मिट जायेंगे  
 जोरावर और फ्लेसिड हैं अपना धर्म बचायेंगे  
 इतिहास हमारा गौरवशाली भारत-वार दोहरायेंगे  
 सच्चे नीर भगतसिंह हैं हँसते-हँसते मर जायेंगे  
 प्रथम ही हम शमा करे आज नहीं जो आते हैं  
 ऐसे अघर्म के राहों का बड़ से नाम मिटाते हैं  
 बुद्ध पूतना मारेंगे कृष्ण की भाँति बनकर आज  
 कंस माघ विष्वंस करे यहाँ उषसन का होगा राज  
 राम कसम अपने हृदय में बरा न दहसत सायेंगे  
 नेता के हनुमान हैं हम रावण की लंक जलायेंगे  
 अश्वत्थामा बनकर मां जो तेरा बस मिटायेंगा  
 कृष्ण धायक करे उसे तेरी रसा में आवेगा  
 वीरों के हैं साल अनोखे कभी नहीं होती है हार  
 शत्रु को दहखाने वाले भारत मां से सच्चा प्यार  
 सिंह नाद कर 'महेश धार्य' धर्म ध्वज फहरायेंगे  
 भारत माता अमर रहे हम वैदिक धर्म नवायेंगे

—महेश आर्य, ग्राम—पन्हीडा बुढ़  
 जिला—फरीदाबाद (हरयाणा)

**गायत्री महामंत्र महिमा**

लेखक—स्वामी स्वस्थानन्द सरस्वती

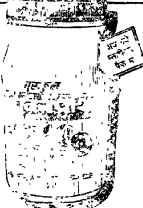
गायत्री महामन्त्र यह, चारों वेदों का सार है।  
 जिसने सुमन किया, उसी का भव से देहा पार है ॥  
 अचिमुनि ज्ञानी बन ध्याते होती है बुद्धि निर्मल।  
 हृदय दृश विरवास अगे, मिट जाते संशय शूल सकल  
 सत्य ज्ञान की ज्योति जाने होते दूर विकार है।  
 गायत्री महामंत्र यह चारों वेदों का सार है।  
 जेमिनि कपिल कणाव पतञ्जलि सुमन इसका करते के।  
 राम कृष्ण शिवा ब्रह्मा विष्णु ध्यान इती का करते के।  
 जीवन रूपी नैया का गायत्री ही पतवार है।  
 गायत्री महामन्त्र यह चारों वेदों का सार है ॥  
 होकर अतिसय श्रद्धाविभोर जो प्रतिबिन् ध्यान लगाये।  
 लोक धीर परलोक सुभार मन इच्छा प्राप्त पाये।  
 अनुकूल आचरण करने से बन पाते शुद्ध विचार हैं।  
 गायत्री महामन्त्र यह चारों वेदों का सार है ॥  
 पावन गुरुमन्त्र गायत्री निज जीवन में करिये बारण।  
 कहे स्वस्थानन्द उसी के हो जाते सब कष्ट निवारण ॥  
 साधु मोक्षनी सत्य ज्ञान की ज्योति का अम्भार है।  
 गायत्री महामन्त्र यह चारों वेदों का सार है ॥

**गुरुकुल काँगड़ी फार्मसी**

आयुर्वेदिक चिकित्सा के लिए प्रसिद्ध स्वास्थ्य लाभ करें


**गुरुकुल चाय**

दुग्धमय व हनुमन्तुला आदि से बनी बर्तियों में बनी सामग्री आयुर्वेदिक औषधि



**गुरुकुल चाय**

दुग्धमय व हनुमन्तुला आदि से बनी बर्तियों में बनी सामग्री आयुर्वेदिक औषधि



**गुरुकुल काँगड़ी फार्मसी हरिद्वार (उ० प्र०)**

**गुरुकुल काँगड़ी फार्मसी**

हरिद्वार

की औषधियां सेवन करें।

शाखा कार्यालय

६३ गली राजा केदारनाथ,  
 चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

स्थानीय विक्रेताओं एवं सुपर बाजार  
 से खरीदें

फोन नं० २६१८७१

शाखा कार्यालय : ६३, गली राजा केदारनाथ  
 चावड़ी बाजार, दिल्ली-११०००६

‘अमर’—वैशाख २०४३

धर्म प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदवत धारणी द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस के लिए संस्कृतकारी मुद्रमालय रोहतक में छपवाकर संस्कृतकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धांती भवन, बयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।



प्रधान सम्पादक—सूर्यसिंह सभामनी

सम्पादक—वेदवत शास्त्री

सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यानन्द एम० ए०

वर्ष १८

अंक २०

७ जून, १९६१

वार्षिक शुल्क ३०

(आजीवन शुल्क ३०१)

विदेश में ८ पौड

एक प्रति ७५ पैसे

## वेद में यज्ञ और ब्रह्म विषयक प्रश्नोत्तर

(१० वमंवेद "मनीषी" वेदनीय, गुरुकुल कामवा)

विद्वानों से इस प्रकार प्रश्न करें—

कल्पस्य विष्ठाः कल्पसराणि कति होमासः कतिषा समिद्धः ।  
यज्ञस्य त्वा विदधा पृच्छमन कति होतारः ऋतुसो यजन्ति ॥

यजु० २३१५०

अर्थः—हे विद्वान् ! इस (यज्ञस्य) संयोग से उत्पन्न यज्ञ के (कति) कितने (विष्ठाः) निश्चित स्थिति के आधार हैं ? (कति) कितने (समिद्धः) जल आदि निर्माण के साधन हैं ? (कति) कितने (होमासः) दिन-दिन अर्थात् व्यापार हैं ? (कति) कितने प्रकार के (समिद्धः) क्षमिषा के मुख्य ज्ञान आदि के प्रकाशक हैं ? (कति) कितने (होतारः) व्यवहार करनेवाले (ऋतुसो) प्रत्येक ऋतु में (यजन्ति) संघ करते हैं ? वह (यज्ञ) इस विषय में (विदधा) विज्ञान को (त्वा) तुम से मैं (पृच्छम) पृच्छता हूँ ।

भाषार्थः—यह यज्ञ कितने स्थित है ? कितने इसके निर्माण के साधन हैं ? कितने व्यापार के योग्य वस्तु हैं ? कितने ज्ञान आदि के प्रकाशक हैं ? और कितने व्यवहार करनेवाले हैं ? ये पांच प्रश्न हैं इनके उत्तर अगले अर्थ में समझें ।

यज्ञस्य विष्ठाः सप्तमवार्यामोतिहोमाः समिद्धो होतारः ।  
यज्ञस्य ते विदधा प्रब्रवीमि सन्तहोतारः ऋतुसो यजन्ति ॥

यजु० २३१५८

अर्थः—हे विज्ञासु लोगो ! (यज्ञ) इस (यज्ञस्य) यज्ञ को (षट्) छः ऋतुयं (विष्ठाः) स्थिति का आधार हैं, (सप्तम्) असंख्य (समिद्धः) जल आदि वस्तुयं हैं, (ब्रवीतिः) अस्सी अर्थात् जपसंख्या से असंख्य (होमाः) दिन-दिन के व्यवहार हैं, (तिस्रः) तीन विद्यायं (हे) निषेध से (समिद्धः) ज्ञान आदि की प्रकाशक हैं (सप्त) पांच प्राण, मन और आत्मा; ये सात (होतारः) देने-लेने वाले होता लोग (ऋतुसु) प्रत्येक ऋतु में (यजन्ते) संघ करते हैं, उस यज्ञ—यज्ञ के (विषया) विद्वानों का (ते) तेरे लिए मैं (प्र+ब्रवीमि) उपदेश करता हूँ ।

भाषार्थः—हे विज्ञासु लोगो ! जिस यज्ञ में छः ऋतुयं स्थिति की साधक हैं असंख्य जल आदि वस्तुयं व्यवहार की साधक हैं, ऋतु से व्यवहार के योग्य वस्तुयं हैं, सप्त प्राणी और क्षमिषी एवं होता आदि लोग संघ करते हैं और जहाँ ज्ञान आदि की प्रकाशक तीन प्रकार की विद्यायं हैं, उस यज्ञ को तुम जानो ।

आपे भी वेद में चार प्रश्न किये हैं—

कोज्य वेद युवनस्य नामिषि को चावागुषिकोऽन्तरिक्षम् ।

कः सूर्यस्य वेद वृहतो जनिष्य को वेद चन्द्रमसं यतोवा ॥

यजु० २३१६६

अर्थः—हे विद्वान् ! (अस्य) इस (युवनस्य) सबके आधार सप्तरा की (नामिषु) नामि अर्थात् मध्यम अंग एवं बन्धन-स्थान को (कः) कौन (चावागुषिकी) सूर्य, भूमि और (अन्तरिक्षम्) आकाश को (वेद) जानता है ? (कः) कौन (वृहत्) महान् (सूर्यस्य) सूर्यं मण्डल के

(अनिष्य) कारण वा जनक को (वेद) जानता है ? और (यतोवा) जिससे उत्पन्न होनेवाले उस (चन्द्रमस्य) चन्द्रलोक को (कः) कौन (वेद) जानता है ? इसका समाधान कर ।

भाषार्थः—इस यज्ञ का धारण करनेवाले बन्धन, भूमि, सूर्य, अन्तरिक्ष, महान् सूर्य के कारण और उससे उत्पन्न चन्द्र को कौन जानता है ? इन चार प्रश्नों के उत्तर अगले मन्त्र में हैं, ऐसा समझें ।

वेदाहमस्य युवनस्य नामिषि वेद चावागुषिकोऽन्तरिक्षम् ।  
वेदसूर्यस्य वृहतो जनिष्यो वेद चन्द्रमसं यतोवा ॥

यजु० २३१६०

अर्थः—हे विज्ञासु ! (अस्य) इस (युवनस्य) सप्तरा की (नामिषु) नामि अर्थात् बन्धन को (अहम्) मैं (वेद) जानता हूँ, (चावागुषिकी) प्रकाश और धराका रूप दोनों तथा (अन्तरिक्षम्) आकाश को और (वृहत्) महान् परिमाण वाले (सूर्यस्य) सूर्य के (अनिष्य) कारण वा जनक को (वेद) जानता हूँ (अपी) और (यतोवा) जिस सूर्य से उत्पन्न होनेवाले उस (चन्द्रमस्य) चन्द्र को (अहम्) मैं (वेद) जानता हूँ ।

भाषार्थः—विद्वान् उत्तर देवें—हे विज्ञासु ! इस यज्ञ के बन्धन एवं स्थिति के कारण, दोनों लोकों के कारण, सूर्य और चन्द्रमा के उत्पादन कारण, इन सबको मैं जानता हूँ ।

ब्रह्म ही इस ऋग्विद्विषय कारण है और प्रकृति उत्पादन कारण है, ऐसा समझें ।

वेद ने विज्ञासु मनुष्यों को प्रेरणा दी है कि तुम्हें ऋषि भूमि और विद्वानों से सबके ज्ञान बढ़ाकर आगे बढ़ने का प्रयत्न करना चाहिये । हमें वेदादि सद्गुणों के स्वाध्याय से सभी विद्वान् नहीं होना चाहिये । इस प्रकार इन मन्त्रों से शिक्षा-अध्यय-होती है ।

### जन्म—उत्सव

दिनांक २५-५-६१ को मा० नवलक्षिणोर जी बोडिया (मज्जर) के सुपुत्र प्रवीन्द्रकुमार का जन्म उत्सव उत्साहपूर्वक मनाया गया । जिसमें १० प्रभूतदेव धनिहोयी ने प्रतः-काल यज्ञ कराया तथा अनेक नर-नारियों को यज्ञोपवीत दिए । डा० सुदर्शनदेव आचार्य का प्रभाष-वाली प्रवचन हुआ । तत्पश्चात् प्रीतिमोक्ष का आयोजन किया गया । समा को १०१) १० रात दिया ।

यह आयोजन भी सूर्यप्रकाश वाय तथा औंकुमार आर्यं सज्जन को सत्प्रेरणा से किया गया ।

वरिचार्यसिंह प्रायं सज्जन (रोहक)

वेदविषयक एक प्रागेव्युक्त लेख का उत्तर—

## क्या धर्मग्रन्थ होना अपराध है ?

डा० मरानीसाह भारतीय

गतांक से आगे

धर्म ग्रन्थों का एक सतर्क प्रश्नोत्तर यह सभी प्रकार जानता है कि आज उपलब्ध अनुस्यूति में और वर्तमान प्रचलित महाभारत में संकटों हजारों हलोक ऐसे हैं जो काशास्त्र में प्रक्षिप्त किये गये हैं। ये न तो अनुप्राप्त हैं और न कृष्ण द्वैपायन व्यास की लेखनी से ही लिखे गये हैं। यदि रामायण, महाभारत को कोई बर्ण संशोधित रूप में स्वीकार करता है तो उसके लिये पहचान का संकट तो उस ब्रह्मसमाज के लिये उत्पन्न हुआ था। जिसने वेद प्रमाण की संस्था उभार दिया और हिन्दुओं की माध्य शास्त्रप्रमाणवाद की धारणा के मूल पर ही कुठाराघात करते हुए यह कहा कि इसके लिये वेद, कुरान बाइबिल आदि सभी ग्रन्थ समान हैं।

भारत का जो समाज या वर्ण वेदों से अपने को जोड़े रहेगा उसके लिये तो पहचान के संकट का कोई सवाल ही नहीं उठता और आर्यसमाज के यदि वेदों को बिना या ज्ञान के प्रकाश स्तम्भ के रूप में स्थापित किया और उन्हें ईश्वरीय रचना कहा तो इसमें उसने कोई नई बात नहीं कही। भारतीय मनीषा और चिन्तनधारा तो महत्त्वदियों से वेदों को ज्ञान का भादि उत्सव, सब विचारों का मण्डार तथा परमात्मा की कृति मानती आई है। यदि यह धारणा वस्तुतः दोषपूर्ण या अशुद्ध है तो इसके लिये आर्यसमाज को दोषी न ठहरा कर भारत के पुरातन आर्य धार्मिक चिन्तकों, वर्णियों तथा सम्प्रदाय प्रवर्तकों को ही दोष देना होगा। अर्थात् प्रमाण न देकर मैं एक दो कथन ही अपनी बात के समर्थन में देना चाहता हूँ। जैसा कि प्रमाण उपलब्ध है। ध्यानस्थ से संकटों एवं पूर्व संकराचार्य ने वेदों को अनेक विचारों का आकार, प्रदीपत्वं सर्वान् धोतक कहा था। बंगालीक सूत्रों के माध्य में संकर के इस कथन को 'शास्त्र योनिवत्त्वं' इस सूत्र को व्याख्या में देना जा सकता है। अतः वेदों को प्रकाशस्तम्भ कहना ही यदि दोषावह है तो संकराचार्य को इसके लिये पहले दोष देना होगा, आर्यसमाज या दयानन्द को बाद में। वेदों को ईश्वरीय रचना कहने के लिये यदि आर्यसमाज दोषी है, तो उसके पहले महर्षि कृपाय दोषी हैं—क्योंकि उन्होंने तत्कालीनमाध्यस्थ प्रमाणव्युत्पन्न यह वैज्ञानिक सूत्र बनाकर वेदों को ईश्वर का सचन कहा। महर्षि गौतम भी दोषी हैं क्योंकि उन्होंने म्यायवर्धन में वेदों को ईश्वर प्रणीत घोषित किया। बासीबी महर्षि पतञ्जलि को दोषी क्यों नहीं ठहराते जिन्होंने वेदों के रचयिता परमात्मा को पूर्वोपनिषद् गुह्य (पूर्व सूत्र ऋषियों का आदि गुह्य और वेद ज्ञान का प्रदाता) कहा वेदों को ईश्वर के उत्पन्न मानने वाले वेदान्त सूत्रों के रचयिता समवाय बादरायण भी इस म्याय से दोषी ठहराये जायेंगे क्योंकि इन्होंने ऋग्वेदादि शास्त्रों का रचयिता योनि कारण ब्रह्म (ईश्वर) को ही बताया है। प्रासंगिक सूत्र है—

शास्त्र योनिवत्त्वं वेदान्त अ०। पाद। सूत्र ३

इस सूत्र को व्याख्या में संकर, रामानुज, निम्बार्क मन्त्र, और बल्लभ आदि सभी आचार्य एक एकर से परमात्मा को ही वेदों का रचयिता कह रहे हैं। किन्तु बासीबी की दृष्टि में इस विचार का जन्मदाता आर्यसमाज ही है।

यह सब मिलकर सायद बासीबी को अपनी भ्रूष का अहसास हो हुआ और उन्होंने यहाँ वेदों के प्रसिद्ध भाष्यकार सायण को भी इस विवाद में संघट्ट लिया। सायण बेचारे को दोष देना तो ब्यर्थ ही है क्योंकि उसका भी वेद विषयक दृष्टिकोण बंसा ही जो पूर्व से ही भारतीय समाज में शास्त्रद्वियों से मान्य रहा है। अब सायण वेदों को ईश्वर से निःसृजित कहना है तो यह एक प्राचीन शास्त्रकार के निम्न अग्रिमशय को ही भ्रूषक करता है जिसमें चारों वेदों का उस महत्त्व ब्रह्म का प्रकलनास या निःसृष्ट कहा गया है—“अथ महतो भूतस्थ निःसृजितस्य एतद् यद् ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदाजर्वाङ्गिरसः” (बृहदारण्यकोपनिषद् ४. व. १०)

बासीबी को इस बात पर आपत्ति है कि सायण अपने पारम्परिक परम्परा प्राप्त भीमांशा मत के अनुसार वेदों को ईश्वरीय ज्ञान मानता है जिसमें यज्ञादि कर्मों को स्वयं प्राप्ति का साधन माना गया है तथा ये यज्ञादि कर्म वेदों पर आधारित बताये गये हैं। बासीबी के इस कथन में एक भुक्ति तो यह है कि ये भीमांशकों द्वारा वेदों को ईश्वरीय ज्ञान कहने की बात सिलते हैं जब कि कुमार्गिक मट्ट आदि भीमांशक वेदों को अपौरुषेय तो कहते हैं किन्तु नैयामिकों या वेदान्तियों की भाँति उन्हें ईश्वर प्रणीत नहीं मानते। इस बात को यदि हम छोड़ भी दें तो हम उनसे पूछना चाहते हैं कि क्या सायण या किसी भी वेदान्तवाक्यकार के लिये भीमांशा के मत को स्वीकार करना दोषावह या प्रपराध है। अत्येक धर्म ग्रन्थ या शास्त्र ग्रन्थ के अध्ययन तथा व्याख्या करने की कोई न कोई लोक या शास्त्र स्वीकृत परिपाटी होती है भारतीय परम्परा में भी भीमांशकों, नैयामिकों, वेदान्तवादियों भाँति नैयामी-अपनी भुक्ति से वेदों का अध्ययन एवं अर्थ निवेदन किया है। यदि पाश्चात्य वैश्व ज्ञान, विज्ञान, पुस्तकालय, वेदशास्त्राचार तथा विकासवाद जैसी माधुनिक विचार विचारों का माध्य लेखक वेदान्त्ययन तथा वेदार्थ चिन्तन में प्रसूत होते हैं, और उनमें एतावत अध्ययन पर कोई टीका या भाष्य नहीं किया जाता तो सायण या दयानन्द के वेदान्त्ययन तथा वेदार्थ ज्ञानों पर अपना आक्रोश प्रकट करना मात्र बुद्धि का दिवालियापन ही है। यदि धर्मशास्त्रमाय या दयानन्द वेदों को ईश्वरीय ज्ञान मान लेने के लिये दोषी हैं, तो उनसे पहले ही गौतम, कपिल कृपाय व्यास, जैमिनि याज्ञवल्क्य तथा मनु आदि को दोषा मानना पड़ेगा जो चिरन्तन काल से वेदों को ईश्वरीय ग्रन्थ मानते आये हैं।

बासीबी, यह तो ठीक है कि भारतीय मानस धर्म और सम्प्रदाय में वेद करता है, किन्तु आपको यह किन्तु कह दिया कि वेद धर्म ग्रन्थ नहीं है। तथ्य तो यह है कि प्रायः के दिग्गमों में धर्म ग्रन्थ की प्रति बचपारणा है तो संश्लेषिक मतानुयायी कुरान और बाइबिल के अति रखते हैं। वेदों को धर्म ग्रन्थ, ईश्वर वाक्य, अपौरुषेय ज्ञान किस अर्थ में और किन युक्ति प्रमाणों तथा परम्परा स्वीकृत संवी में कहा जाता है, यदि आपको इसका ज्ञान होता तो आप न तो वेदों को संश्लेषिक मजहबों की इस्लामी कितारों की पंक्ति में रखते और न वेदों को ईश्वरीय ज्ञान या अपौरुषेय धर्म ग्रन्थ घोषित करने के लिये आर्यसमाज या स्वामी दयानन्द को दोषितें।

अब बासीबी वेदों के कथ्य को और बताते हैं। वेद संहितायें तो हैं वे सूक्तों के संकलन भी हैं परन्तु यह संकलन तो शाण्डक, वाचक, बाजसनेय शौनभ तिलिदि आदि ऋषियों द्वारा किये गये हैं। बासीबी वेदों के कतिपय सूक्तों का नामोल्लेख भी करते हैं और कहते हैं कि इन सूक्तों का किसी साम्प्रदायिक धर्म से क्या वाताह है और एक कथम धर्म बढ़कर यह भी कहते हैं कि इन वैदिक सूक्तों का विषय भी धर्म नहीं है। हम उनकी प्रथम धारणा से तो सहमत हैं कि वेदों में जिस धर्म का प्रतिपादन किया गया है वह कोई साम्प्रदायिक मत या धर्म नहीं है। वह विद्युद मानव धर्म है। दूसरे शब्दों में कहें तो यह कहना चाहिये कि कि वेदों में जिन बातों का उल्लेख किया गया है वे अनुस्यूत धर्म के लिये कर्तव्य के रूप में मानने योग्य जन साम्राज्य के लिये आश्वरभ्य ही है। इसलिये स्वामी दयानन्द ने वेद की सिखाओं को सार्वजनिक धर्म कहा है। साम्प्रदायिक मतों का माधुनिक तो बहुत बिक में हुआ है किन्तु बासीबी का यह कहना तो दुर्लसहस मात्र ही है कि वैदिक सूक्तों का विषय धर्म भी नहीं है। बासीबी अत्र बतायें—धर्म किते मानते हैं ? सामाम्यतया मनुष्य के लिये आश्वरच योग्य कर्तव्य बोध को ही धर्म कहा जाता है। किसी धर्म लौकिक या अदृश्य परास्वर सत्ता की पूजा उपासना भी धर्म के अन्तर्गत आती है। धर्म का सचकनस्वीकृत तो यही धर्म है और इतो का उपदेश वेदों में भी है। क्रमशः

## गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ

‘उपहृते गिरिणां संघे च नदीनाम्’ ऋग्वेद (८.६.२८) के वाद्यों को समझ रखकर धमर हठात्मा स्वामी ऋषदानन्द जी ने अरावली पर्वतश्रृंखला को उपत्यका में गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ को स्थापना की थी उनके जीवनकाल में यह गुरुकुल बहुत ही ऋषीय अवस्था में चलता रहा। एक हजार एक सौ बीघा भूमि के मध्य ऊँचे पर्वत पर बनी विद्यालय भवन श्रृंखला आज भी इसके प्रतीक को गौरव-गाथा सुना रही है।

देशभक्त क्रांतिकारियों और तपस्वी ब्रह्मचारियों की यह तपोभूमि काव्यान्तर के स्वर्णीय लोगों की गिरस्त में जागई और जिसको भी अवसर मिला उसने इस संस्था को प्राकृतिक सम्पदा के बोहने में किसी प्रकार की कमी नहीं छोड़ी।

१९७४ में धार्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का त्रिघासन होकर पंजाब देहली और हरयाणा की पृथक्-पृथक् तीन धार्य प्रतिनिधि सभाय बन गई। धर्मशास्त्रा में हुए सर्वसम्मत निर्णयानुसार हरयाणा राजकीय सीमा में होने के कारण गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ धार्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अधिकार में आया किन्तु इस अपार सम्पदा के रसास्वादक स्वर्णीय लोगों ने इस संस्था तक धार्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को नहीं पहुंचाने दिया।

विगत ११ वर्षों से सभा अधिकारी अपनी इस संस्था को प्राप्त करने के लिए निरन्तर वैधानिक उपाय करते रहे और विभिन्न अबासतों में सभा के बाजों रुपये व्यय होते रहे।

अध्याय अन्तःकार की सम्मो अवधि के पश्चात् २ जून १९६१ ई० रविवार का वह शुभ दिन भी आया जब धार्य प्रतिनिधि सभा के प्रमुख सदस्य और अधिकारी गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के प्रांगण में पहुँचे। वहाँ पर इंडिस्ट्रियल मंत्रिस्ट्रेट फरीदाबाद के आदेश क्रमांक-२६/ST dt १-८-६१ के अनुसार हरयाणा पुलिस भी सब जग अम्बाला सिटी की डिवाय को क्रियान्वित करवाने के लिए तैयार मिली। गुरुकुल भवन-प्रांगण एवं भवन-अन्तर्क सम्पत्ति का कार्यभार सभा ने एकदम शान्त आत्मव्यवस्था में सम्भाल लिया और जो भी सामान एवं रिक्काई बाज लेते समय मिला उसकी सूची बनाकर उपस्थित सज्जनों के हस्ताक्षर करवाए गए।

हरयाणा प्रशासन के सभी बड़े छोटे अधिकारी तथा कर्मचारी धन्यवाद के पात्र हैं जिनके आदेश और उपस्थिति में यह शुभ कार्य शान्तिपूर्वक सम्पन्न हुआ।

सुबेसिंह सभामन्त्री

## मातृ वन्दना

श्री बार जन्म लेकर, हर बार फना होगी।  
ऐ मां तेरे एहसान, फिर भी न अदा होगी।।

तू ने जन्म दिया हमको, और पास पोषली है।  
सुख हमको देती है, स्वयं कष्ट उठाती है।  
जो झूठ जाये तुमको, जो बुद्धिहीन होंगें।।  
ऐ मां तेरे... ..

तुम अपने बच्चों को रक्षा करती हरदम  
चाहे कितने ही संकट हों तुम उन्हें बचाती हो  
हम दास तेरे माता सुखसे न जुदा होंगे  
ऐ मां तेरे... ..

अपराध यदि कोई हमसे हो जाता है।  
तू इतनी कोमल है, नाराज नहीं होती।  
हम वचन देते हैं मां कभी पाप नहीं होंगे।।  
ऐ मां तेरे... ..

हम समा चाहते हैं और बीघा मुकारते हैं।  
बरदान हूँ वो मां, आत्मा मे रहूँ तेरी  
हम दास तेरे माता आत्माकारी होंगे।  
ऐ मां तेरे एहसान... ..

देवराज धार्य  
प्रचार मन्त्री  
आर्यसमाज वल्लभगढ़

## विवाह संस्कार सम्पन्न



आचार्य प्रिटिंग प्रेस, रोहतक के मालिक श्री वेदवत शास्त्री के ज्येष्ठ पुत्र बिरंजोब (निर्गोबकुमार का सुभविवाह संस्कार) को रघुवीर सिंह जो बरौरीखेड़ी (जिला रोहतक) निवासी को सुपुत्री आरुणमती सुनील देवी के साथ २८ मई १९६१ ई०, वेवाख गुणिया २०४८ बि० मंगलवार के दिन वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। पुरोहित बा० राजकुमार आचार्य ने विवाह को विभिन्न विधियों पर प्रकाश डाला जिससे उपस्थित जनसमूह बहुत प्रभावित हुआ। इस अवसर पर बर तथा गधू पक्ष की शोर से गोशाला दोषध (रोहतक) को दो सौ दो रुपये दान दिया गया और बर पक्ष की शोर से १०१ रु० गुरुकुल कञ्जर, १०१ रु० दयानन्दमठ रोहतक तथा १०१ रु० धार्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को दान दिया गया।

केदारसिंह धार्य

## आर्यसमाज रेवाड़ी का चुनाव

प्रधान : म० रामचन्द्र धार्य, उप-प्रधान : मा० शोराम सैनी, श्री श्रीप्रकाश शोबन, मन्त्री : श्री रामकुमार धार्य, सहमन्त्री : श्री मातुराम धार्य, उप-मन्त्री श्री लक्ष्मीनारायण, प्रचारमन्त्री : श्री सुखदेव सैनी, कोषाध्यक्ष : श्री सुलाराम धार्य, पुस्तकाध्यक्ष : श्री जसवन्त सिंह यादव।

## गऊ माता का करुण क्रन्दन

रचयिता—मा० रामचन्द्र धार्य, धार्य निवास नलवा (हिंसार)

बिकी कसाई हाथ मेरी कोन्या पार बसाई।  
करके में परोपकार धर्मो दुल पाई।।टेका।।

मां कंसा बजा मेरा वेद साधन वदाने सं।  
धो दुध खा लोभ शरीर पुष्ट बनावे सं।

मेरे बछड़े का कनाया सारा जब खावे सं।  
हरे की के धास मन सुखा ना पावे सं।।

यागे बछड़े की मने देखणी पड़े खुशाई।।१।।

जुवा बछड़े तें कर मेने गाड़ी में बेंटावे।  
मेरी धारया न्यू रोटो म्यू पापी मैंने सतावे।

कं पावेये तुल जो मैंने हत्ये में बघावे।  
देस के हाल जाने का गाथ चणा बरवे।

आर्यावर्त में हत्ये सगा बैठे कणों कसाई।।२।।

दिवोप दधीपि कृष्ण राज में सुख पाया।  
आर्य वीरों ने मेरे सातिर कष्ट उठाया।

गौदान या जिक्र ऋषि प्रथ्यों में आया।  
गऊशाला खोल मेरा आश्रय स्वध बनाया।

म्यूकर होंगा भवा देस का होती रोज तवाही।।३।।

‘रामचन्द्र’ कह गऊ रोटो सुना। आजाब नहीं।  
हत्ये लणम का भारत मे तोड़ें रिदाज नहीं।

ऋषि दयानन्द सा भीमक पंथा हो जाज नहीं।  
कितनी सो दुहाई पर धाता कोई बाज नहीं।

घर-घर में पहुँचावे कीन मेरी करुण कविताई।।४।।



## देवयज्ञ

पं० बर्मप्रकाश विद्यानाथस्वपित, धार्यसमाज (टीहाना)

वैदिक धर्म और आय संस्कृति में यज्ञ का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यज्ञ समस्त उत्तम कर्मों का प्रतीक है। शास्त्रों के अन्तर्ग यज्ञ को अष्टमम कर्म कहा गया है—यज्ञो वै अष्टममं कर्म। मनुष्य द्वारा जो कर्म निःस्वाद्य भाव से समर्पित भावना से सबके हित एवं कल्याण के लिए किया जाये उसे यज्ञ कहते हैं।

यज्ञ शब्द यज्ञ धातु से—“यद्यथाचयतविष्णुप्रच्छन्नसो नद्” इस पारिणि के सूत्र से मद्—न को अ प्रत्यय प्रसार यज्ञ+अ=यज्ञ शब्द बनता है। इसके तीन अर्थ हैं—

१) देवपूजा २) संगतिकरण ३) दान

वेदों में प्रबन्ततर के रूप में मन्त्र आये हैं, उनमें कहा गया है—“यज्ञो युवनस्य नामिः”। सारे ससार का केन्द्र यह यज्ञ ही है। यज्ञ यिष्णु का स्वरूप है। परमात्मा भी यज्ञरूप है। सारे संसार में परमात्मा की देखरेख में यज्ञ चल रहा है। यज्ञ का बहुत व्यापक अर्थ है। हमें यहाँ केवल देवयज्ञ पर विचार करना है।

देवता दो प्रकार के होते हैं—

एक जड़ देवता दूसरा चेतन्य देवता। “विद्वांसो हि देवाः” शतपथ। अर्थात् विद्वान् लोग देव कहलाते हैं। ये चेतन्य देव हैं।

“देवो दानाद्वा, दीपनाद्वा, धीपनाद्वा, वृन्दनान्तो भवतीति वा।”

निरुक्त अ०-७, खण्ड-१५

दान से, दीपन से और धीपन धमनि से देव कहलाते हैं। यजु०—१४-२० में देवताओं का वर्णन है—

अग्निर्देवता वातो देवता, सूर्यो देवता  
अध्मा देवता वरुणो देवता शक्रो देवता।

इस प्रकार से बहुत सारे देवताओं के नाम विनाये गये हैं। ये सब जड़ देवता हैं।

देवता का मोटा अर्थ है—जो ‘दे’ सो देवता और जो ‘ते’ सो देवता कहलाता है। यह लक्षण जड़ और चेतन दोनों में घटता है। ऐसे तो यज्ञ शब्द का निरृत अर्थ है। वेदादि शास्त्रों में विस्तार से वर्णन है।

गीता में कृष्ण भगवान् ने एक पूरा प्रकरण ही यज्ञ के विषय में लिख दिया। महर्षि दयानन्द आर्योद्देश्यरत्नमाला में लिखते हैं—

“जो अग्निहोम से लेकर अष्टमेधपर्यन्त वा जो शिल्प व्यवहार और जो पार्ष्णिभोजन है, जो कि अग्नत् के उपकार के लिए किया जाता है उसको यज्ञ कहते हैं। देवयज्ञ के तीन नाम हैं—अग्निहोम, होम तथा हवन। महर्षि ने यज्ञ के विषय में कहा है—

“धनये परमेस्वराय, जलवायुशुद्धिकरणाय च होम,  
हवनं दान यस्मिन् कर्मणि क्रियते तदग्निहोमम्”।

हिसमें वेदमन्त्रों द्वारा ईश्वरापना तथा जलवायु शुद्धि हो उसे अग्निहोम कहते हैं।

यज्ञोपवीत में तीन सूत्र होते हैं। ये तीनों सूत्र तीन ऋण के प्रतीक हैं। इसमें से प्रथम सूत्र देवच्छाण का प्रतीक है। देवच्छाण यज्ञ से उत्तरता है।

ऋण—कर्जा, जो हमने देवताओं से लिया है। यदि अग्नि, वायु, जल, अन्न आदि देवता न हो तो हम एकपस भी जो नहीं सकते। इन सबको हम ग्रहण करते हैं और पुनः त्याग देते हैं। परन्तु हम मलिन भग्ना, बदबूदार करके त्यागते हैं। अतः हमारा बर्ण होता है कि हम इसको पुनः शुद्ध कर दें। इसका उपाय वेद ने बताया है कि—

साय साय गृहपतिर्नां अग्निः,  
प्रातः प्रातः सौमनस्यस्य दाता।

अर्थात् गृहस्थक प्रतिदिन प्रातः सायं यज्ञ करे। ये यज्ञ आरोग्य-दाता होते, निवास स्थान को शुद्धि करनेवाला होते।

यजु महांराज कहते हैं—

धर्मो प्रास्तोऽस्तिः सम्भ्यादास्तिमुपतिष्ठते।

धादित्वाज्जायते वृष्टिः वृष्टेरन्नं ततः प्रजा ॥

अर्थात् अग्नि में डाली हुई वाहृति सूर्य रश्मियों में रहती है, वहाँ से वृष्टि होती है। वृष्टि से अन्न होता है, अन्न से प्रजा। सूर्य, विद्युत् और अग्नि इन तीन से वृष्टि होती है और इन तीनों को यज्ञ द्वारा शुद्ध किया जाता है।

शतपथ ब्राह्मण में कहा है—

सर्वेषां वै एष भूतानां सर्वेषां देवानां धारमा यद् यज्ञः  
तस्य समृद्धिर्नयजमानः प्रजया ययुमिः श्रद्धयेत् ॥

निश्चय करके यह यज्ञ सब प्राणियों का सब देवताओं का जीवन है, इसकी समृद्धि से यजमान प्रजा और पशुओं से समृद्धि की प्राप्ति होता है। एक जगह और कहा है—

‘नो हि एषा वा स्वर्ग्या यदग्निहोमम्’। शतपथ २/३/३

यह अग्निहोम निश्चय करके स्वर्ग की प्राप्ति करनेवालों की एक है। श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है—

अग्नाद् भवन्ति भूतानि पर्जन्यादम्बुजम्बवः।  
यज्ञाद् भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुत्पन्नवः ॥

अन्न से सब प्राणी उत्पन्न होते हैं। अन्न भेष से बनता है। भेष यज्ञ से बनता है। यज्ञ कर्म से पैदा होता है। क्रौंच के विज्ञानवेत्ता प्रो० गिलवर्ट कहते हैं कि जलती हुई ईंधक के सुयों में वायु शुद्ध करने की बड़ी शक्ति है। इससे हैजा, तपेदिक, श्वेत इत्यादि का विष खींच मट्ट हो जाता है। क्रौंच के ही ड्रा० हेरफिन जिन्होंने वैद्यक के टीके का आविष्कार किया, कहते हैं धी जलाने से रोगकृमि मर जाते हैं।

आज वैज्ञानिक एक-एक वस्तु का परीक्षण करते बताते हैं कि इससे अनेक रोग अच्छे होते हैं। हमारे ऋषि महर्षि ने सबका परीक्षण करके “सर्व सामग्री एक जगह इकट्ठी करके जड़-छान की है। जो रोग विशेष हुआ उसके औषध विशेष जाल दिये। यह भी सिद्ध होता है कि वैदिक वाङ्मय के नेता ‘विभान’ की अन्तिम बीमा तक पहुँचे हुए थे। सूर्यास्त एव सूर्योदय के समय अग्नि को प्रवर्धित करके उसमें घृत और सुगन्धित मधुर पौष्टिक पदार्थों को स्वाहा उच्चारण के साथ हविर्भयंय करने से वायु तो शुद्ध होती ही है तथा ईश्वर में जाँचवा बदती है और वैदिक मन्त्रों की रसा होती है और उनमें श्रद्धा नहीं रहती है। मनुष्यों को चाहिए कि वेदों के ऋषि से उद्घृण होने के लिए इस यज्ञ को प्रातः सायं करे। यज्ञ के द्वारा मनुष्य भोगक्षेम संवर्धता हुआ अपने अमृत्युदय को प्राप्ति करके निःश्वस प्राप्ति की ओर अग्रसर होकर जीवन सायंक करता है।

## निःशुल्क संस्कृत प्रशिक्षण शिविर

राष्ट्र, धर्म व मानवता के सबस रसक आत्मशुद्धि आशय महादुराण्ड के सत्पाठनान में २० जून से ३० जून १९६१ तक निःशुल्क संस्कृत प्रशिक्षण शिविर का आयोजन श्री आचार्य सूर्य नारायण श्री की अध्यक्षता में किया जा रहा है। शिविर मध्य संस्कृत में पाठशाला करना एवं संस्कृत अध्ययन की सरल विधियां समझाने के साथ मन्त्रों का शुद्ध उच्चारण करना सिखाया जायेगा। अतः इस सुवचसर से आप स्वयं साथ उठाएँ तथा संस्कृतमेरी विद्यार्थियों एवं सज्जनों को सूचना देकर प्रुष्य के भागी बनें।

भोजन-निवास की व्यवस्था आशय में रहेगी, ऋतु अनुकूल विस्तर साय साय।

स्वामी भर्ममूर्ति (सरस्वती)  
मुष्पाधिष्ठोता

डा० शिवकुमार शारकी  
संघीष्क (शिविर)

आत्मशुद्धि आशय महादुराण्ड  
विना—रोहक (हरवापा)—१२४०७

# संसार से आतंकवाद, अलगाववाद का अंत—सम्भव उपाय

( कुलभूषण श्रार्य, एम.कान. बंकिम प्रवक्ता )

आज संसार में आतंकवाद और अलगाववाद को बड़ा बल मिल रहा है। परन्तु क्या अलगाववाद और आतंकवाद मानव जाति की समस्या हल कर सकता है? क्या मनुष्य जाति को मारने और अपने को छोटी-छोटी इकाइयों में बांट कर रहने से मनुष्य अपने को समुचित और पर विकसित कर पायेगा। धर्म के नाम पर अलगाव पैदा करना और भिन्न धर्म के मानने वालों का नामोनिशान मिटा देना, संसार की समस्या का कोई उचित समाधान नहीं है। धर्म में कट्टरताविता और अपने धर्म पर जो उचित समझना मानव की मूल है और इसके फलस्वरूप संसार में मानव जाति की पहचान समाप्त हो रही है। मनुष्य धर्म के स्वरूप को ठीक प्रकार से नहीं समझ पा रहा है। संसार में आतंकवाद और अलगाववाद के मूल में भिन्न-भिन्न धार्मिक विचार, विश्वास के नाम पर कट्टरताविता और भिन्न-भिन्न देशों की मानव जाति को धर्म के नाम पर लड़ाना, हथियारों का व्यापार या फिर धाज की राजनीति इसके लिए दोषी है।

मानव जाति को सुरक्षा के लिए जरूरी है कि आतंकवाद और अलगाववाद समाप्त हो। जिन कार्यों से यह वाद बनप रहे हैं उनके कारण को समझने की जरूरत है। यह मानव जाति का निजी मामला है और यह मामला टकराव, हथियार या आसकों के कुचलने से समाप्त नहीं हो सकता।

मानव जाति मूलतः एक ही धर्म का कारण जाने बिना भाषा, स्थान और पहचान, रंग रूप हमें भाग्य एक दूसरे से अलग करता है। आज संसार में इस बात को समझने की जरूरत है कि मनुष्य का संसार में मुख्य उद्देश्य क्या है, मनुष्य आतंकवादी क्यों बनता है क्या यह मनुष्य को जरूरत है या फिर मनुष्य को अपने से भिन्न समझने की कोशिश करना ही मनुष्य में भिन्न भाव पैदा करता है।

आज संसार में मनुष्य को धर्म और राजनीति संबालित कर रही है। आज धर्म के अर्थ मत मतान्तर, सम्प्रदाय से लिये जाते हैं, परन्तु यह धर्म का सच्चा स्वरूप नहीं है। यदि मानव से लेकर आज तक जो बातें मनुष्य में समाप्त रूप से रही हैं वही धर्म है। धर्म के पीछे दो सत्यों का मकदूर रही है। शरीर और आत्मा। शरीर प्रकृति के कारण आत्मा को काय विकास के लिए मिलता है। जिस काम से आत्मविकास हो वही धर्म है। शरीर में एक बेतान सत्ता है जिसे हम आत्मा कहते हैं और आत्मा को विद्या ज्ञान द्वारा जाना जाता है। जिनान जानी गई आत्मा आतंकवादी और अलगाववादी बनती है और जानी गई आत्मा मनुष्य में मानव पूर्णता का विकास करती है और मनुष्य खुल शान्ति समृद्धि और प्रेम को प्राप्त करता है यही आत्मा का निजी स्वरूप है।

आत्मा का स्वरूप और आत्मा के कर्तव्य—आज संसार में जितने भी मनुष्य हैं वह हर शरीर में एक आत्मा होने के कारण हैं। आत्मा और शरीर का सम्बन्ध अकारण नहीं है। संसार में एक संघातक आत्मा है जो शरीर का आत्मा से संयोग करता है न कि आत्मा एव शरीर में प्रवेश करता है। यह एक भिन्न विषय है परन्तु आज संसार में आतंकवाद और अलगाववाद के परिणाम में आत्मा को समझना जरूरी है और यही मानव धर्म विचार की बुनियाद है। आज मनुष्य को समझना चाहिये कि हम सब प्रेम बन्धन में बन्ने हैं। जैसे हम अपने बच्चों, भाइयों बहिनों और माता पिता को प्यार करते हैं उसी प्रकार का व्यवहार हमें दूसरों के साथ भी करना चाहिये, जिससे आतंकवाद समाप्त हो जाए या आतंकवाद को जड़ पैदा ही न होंगी। मनुष्य स्वयं में अनेकता में एकता का स्वरूप है और संसार की व्यवस्था में हमें अपने कारण कुछ नहीं करना है। शरीर प्रकृति है और मैं पिछने में पैसी के समान हूँ। प्रकृति ने मेरे लिए कुछ सामर्थ्य को सृजन किया है मुझे संसार में खुल शान्ति का सृजन करना है।

आज परिवारों में भी अलगाववाद आया है और यह अलगाववाद मौन रूप से आतंकवाद, दुःख को जन्म दे रहा है। परिवार में पारिवारिक अलगाववाद सब के लिए दुःख का कारण है और

मानव दुःख हो संसार का बन्धन है, जिससे हमें बचना चाहिये अंत अपनी आत्मा के समान सबको आत्मा की समझना चाहिये। सभ में अध्यात्म का मुख कारण हम स्वयं हैं। शान्ति धन दौलत का मकान होने से नहीं आती, शान्ति आत्मा के कारण आती है।

उपसंहार—मनुष्यों को यह समझ लेना चाहिये कि धातक और अलगाववाद मानव जाति के लिए हितकर नहीं है क्योंकि इन्हीं पीछे निहित स्वार्थ का मकदूर रहा है। यह संसार प्रभु द्वारा नियमित—यह संसार एक इकाई है जिसको बांटा नहीं जा सकता। प्रेम व सद्भाव से देखें तो संसार ही हमारी उन्नति का कारण है। प्र संसार को देखने से पता चलता है कि बनी व्यक्ति संसार को। इकाई मान कर ही धन क्या पाए हैं। प्रत्येक व्यक्ति इस संसार बराबर का हकदार है। प्राणी मान की उन्नति इस संसार रूपी इस से सम्भव है। अलगाववाद कभी संसार में टिक नहीं गयी पाव क्योंकि मनुष्य को मिलजुल कर संसार का संचालन करना है। संसार के कारणों पर नजर डालें तो अलगाववाद का प्रश्न ही पैदा नहीं होत मानव जाति एक है और जाति को जाति से अलग करना यह मनुष्य का अधिकार से बाहर की चीज है। आतंकवाद और अलगाव घृणा पैदा करता है और मानव जाति की उन्नति में बाधक बनता संसार का बहुमूल्य समय और समृद्धि मष्ट होती है। आतंकवाद अ अलगाववाद का परिणाम निराशाजनक है और संसार में सत्य-न्याय का मार्ग मानव को कल्याणकर है। संसार से अलगाव और आतंकवाद समाप्त होना मनुष्य के अलग कारण समाज राष्ट्र उन्नति के मार्ग पर ले जाया जा सके। प्रत्येक मनुष्य को धर्म अनित्य जीवन में नित्य आत्मा उन्नत करना चाहिये ताकि संसार निज की उन्नति में सबकी उन्नति सम्भव सके।

## शोक प्रस्ताव

श्री वामदेवसमाज मौह० डोगरान हिसार पूर्ण प्रधान मन्त्री . कांसिल धार्मिक प्रधान स्व० श्री राजीव गांधी की मृत्यु का समाज सुनकर सबका मन रो उठा इस प्रसामयिक मृत्यु ने विश्व को हि दिया है। अतः राष्ट्र ने एक बुद्धिमान नेता एवं भारत मां ने मह महिषा के महात्त सगुत देश ने एक युवा चाणक्य को दिया है जिस क्षति पूति कर पाना असम्भव है।

श्री वामदेवसमाज की बहनें उन कावितियों के इस जघन्य अपर करने की शौर निन्दा करती हैं, जिन्होंने रासल वृत्ति को अपनाया। देश को महात्त हीरे से वंचित कर दिया। हम दिवंगत आत्मा सद्गति और परिवार की शान्ति की ईश्वर से प्रार्थना करती हैं।

(राजकुमारी आर  
प्रधान, श्री वामदेवसमाज प्रधानमन्त्री  
मौह० डोगरान हिसार

## श्री धर्मचन्द्र जी गांधी का निधन

आर्यसमाज प्रधाना मुहूर्त्ता रोहतक के मन्त्री तथा डा० कि सागर स्मारक समिति के कोषाध्यक्ष श्री नन्दलाल जी आर्य के पि की धर्मचन्द्र गांधी का १६ वर्ष की आयु में २५-४-११ को देहान्त गया। स्वामी अमरनाथ जी (रोहतक) और स्वामी धर्ममुनि (बहादुरगढ़) का प्रयासशाली प्रबन्ध हुआ और श्री वीरमान . और (दिल्ली) श्री सुभाष जी बरवा, श्री सुन्दरनाथ जी, सेठ . किशनदास जी, मुहंजि सुबेष्ट जी ने उस दिवंगत आर्य मनुष्य . अद्वाञ्जलियां अर्पित कीं। परिवार की शौर से ५१०/- रुपये की रां भिन्न-भिन्न संस्थाओं को दान में दी गई।

मुहंजि आर्य  
प्रधान वामदेवसमाज प्रधाना मुहूर्त्ता रोहत



## कहाँ हमारा भारतवर्ष

राजेवमान 'धार्य' विद्यावाचस्पति

क्यापि मुनियों की भरती वास्ता,  
कहाँ गया बहु अपना देश ?  
सत्य-अहिंसा-मुक्त-समुद्रि से—  
या धार्यरहित जो परिवेष्ट ।  
रहसा रहा जहाँ मनुष्यों में,  
सदा मनुजता का उत्कर्ष ।  
देवों की वह पुण्य भूमि सा,  
कहाँ हमारा भारतवर्ष ?

कहाँ गया आदर्श राम का,  
कहाँ गयी कर्णाजुन शक्ति ?  
कहाँ गयी सम्पत्ता सुपावन,  
कहाँ गयी भारत को भक्ति ?  
मैत्रिकता का पतन हुआ क्यों—  
फैला दानवता सात्कारण ?  
काम-क्रोध-मह-मत्सर बढ़ते—  
बनते नहीं आज है त्यागण ।

बढ़ती है सुखमरी-मरीची,  
प्रतिपल बढ़ती है संहराई ।  
नाज रही है भूमण्डल पर,  
बनुज वृत्तियों की साहनाई ।  
शाकिहोन, प्रजिभ्रमित प्रशासन,  
गद्दी कही कुछ कर पाता ।  
पूर्वीपतियों की पूजी का,  
वन प्रतिपल बढ़ता जाना ।

वेद विमण्डित संस्कृति पावन,  
क्योंकर ध्राज विनष्ट हुई ?  
प्रेम-बया की विषय भावना,  
जग में कैसे नष्ट हुई ?  
कब तक जाने अभी रहेगी—  
भरती पर यह निमग्न परिस्थि ?  
कैसे, किस सण परिवर्तत होगी—  
ध्राज हमारी विषम परिस्थिति ?

## शोक समाचार

श्री साधुराम धार्य स्वतन्त्रता सेनानी जमालपुर कालोनी  
सुधियाणा (पंजाब) का स्वर्णवास २४-५-६१ को एक लम्बी बीमारी  
के बाद हो गया है । वे अपने पीछे भरा परिवार जिसमें तीन लड़के  
और तीन लड़कियाँ तथा पत्नी छोड़ गये हैं । श्री साधुराम जी का  
जन्म १४ अक्टूबर सन् १९१६ में ग्राम बनोरी जि० जी० (हरयाणा) में  
हुआ था । इनके पिता जी का नाम श्री सुखराम था । इनके अन्तर  
धार्यसमाज की-विद्या भुक्त से ही फूट-फूट कर भरी हुई थी क्योंकि  
व्यपन से ही इन्हें स्व० श्री महात्म्य कृष्ण जी की संपत्ति मिल गई  
थी । १९३८ में कैपल (हरयाणा) से काकराम के जल्ये में शामिल हुए  
तथा बाद में महात्म्य कृष्ण के बड़े जल्ये में शामिल हुए । वहीं पर  
इनको भूसा रक्ता गया तथा तख्त-खरह की बातनाएं दी गईं, फिर  
भी टस से मस नहीं हुए । हैदराबाद जेल में इन्हें वेद साल की सजा  
हुई तथा अड़ाई महीने जेल के अन्तर रहे ।

## शोक सन्देश

२३ मई सन् १९६१ को धाम सुनारी कलां (रोहतक) में श्री  
राजेन्द्र कुमार शाल्की व डा० राज कुमार एम०ए० के बाबा श्री  
अतरसिंह धार्य का हृदयघाति घट जाने के कारण देहान्त हो गया ।  
उनकी आयु ६८ वर्ष की थी । वे बड़े समाज सेवक तथा क्यापि ध्यानमय  
के परम अरुण थे । इस आकस्मिक निधन पर सभा शोक संतप्त  
परिवार के प्रति संवेदना प्रकट करती है ।

—कैदारसिंह धार्य  
सभा कार्यवाह्याम्बल

## स्वर्गीय पं० तालेराम आर्य का दसवा



स्मृति दिवस सम्पन्न

धार्यसमाज कंचारी (हिसार) की ओर से गत वर्ष की शक्ति  
दिनांक २८-२६ मई १९६१ को पवित्र जी का स्मृति दिवस बड़ी श्रद्धा  
से मनाया गया । प्रतिदिन प्रातः चौगाऊ में यज्ञ तथा रात्रि को वेद  
प्रचार हुआ । इस अवसर पर प्रधान श्री अतरसिंह धार्य शक्तिकारी  
जी ने पं० तालेराम आर्य के कार्यो एवं गुणों की विस्तार से बर्चा की ।  
सोनों को उनके बताए हुए रास्ते पर चलने का आह्वान किया ।  
स्वामी जयतमुनि जी, स्वामी सर्वबान्धव जी, बानप्रस्थ महाश्वरी जी  
तथा महात्मा साराचन्द जी ने पं० जी को श्रद्धाञ्जलि के अतिरिक्त  
धार्यसमाज का संघटन, बुद्ध भूमिना का महत्त्व, ईश्वर की सत्ता,  
मनुष्य के कर्त्तव्य, पत्थर पूजा ध्वज तथा शराब से होने वाले मुक्तान  
पर विस्तार से विचार रहे ।

पं० ईश्वरसिंह तुफान ने शराबबन्दी, देहज नष्ठी एवं समाज  
में फले मत मतान्तरों बारे समाज सुधार के शिक्षाप्रद भजन हुए ।  
सोनों ने बड़ी श्रद्धा से प्रचार को सुना । सभा को २३२ रुपये दान  
दिया गया ।


सूवेदार राजेश्वरदास आर्य, मन्त्री धार्यसमाज कंचारी

### दांतों की हर बीमारी का घरेलू इलाज



**दंत मंजन**  
लौह युक्त

23 जर्डी ब्रिटिश रोड निमित्त  
आयुर्वेदिक औषधी






दाँवों का छान्दर

उठ की दुर्लभ

उठा गईं दाँती  
सजामा

दाँत का दर्द

महाशियां वी हट्टी (प्रा०) लि०

8/84 हरियाणा राज्या, रोहताक नगर, जर्डी ब्रिटिश रोड, 6/10/61, 337982, 532241

## हरयाणा के अधिकृत विक्रेता

1. मेरज परमानन्द साईवित्तामख, बिबानी स्टैंड रोहतक ।
2. मेरज फूलचन्द सीताराम, गांधी चौक, हिसार ।
3. मेरज सन-अप-डेवें, सारंग रोड, सोनीपत ।
4. मेरज हरीश एवेंसीस, ४६६/१० गुडहारा रोड, पानीपत ।
5. मेरज भगवानदास देवकीनन्दन, सराई बाजार, करनाल ।
6. मेरज धनरामदास सीताराम बाजार, जिलाजी ।
7. मेरज कृष्णराम गोखल, लड़ी बाजार, हिसार ।
8. मेरज कुलचन्द पिक्कल स्टोर्स, शाप नं० ११५, माफिक नं० १,  
एन०आई०टी०, फरीदाबाद ।
9. मेरज सिंगला एवेंसीस, सबर बाजार, गुडगांव ।

**आर्यसमाजों के चुनाव**

**आर्यसमाज कुन्जपुरा जि० महेश्वरगढ़**

प्रधान—बैच रोहितारा भार्य, उपप्रधान—राजबौर भार्य, मन्त्री—राधेश्याम भार्य, उपमन्त्री—उदयसिंह भार्य, कोषाध्यक्ष—पिचकुमार भार्य, पुस्तकाध्यक्ष—बेदप्रकाश भार्य, प्रचारमन्त्री—शबरजसिंह भार्य, संयोजक—तुरेककुमार भार्य, सहसंयोजक—ब० मुषारीवाल भार्य।

**आर्यसमाज सैंक्टर १४ सोनीपत**

प्रधान—श्रीमती दमयन्ती तनेजा, उपप्रधान—१. देवप्रिय भार्य २. डा० जगदीशचमिन खवन, मन्त्री—ईश्वरदयाल भार्य, उपमन्त्री—श्रीमती कौसल्या जी, कोषाध्यक्ष—मा० छाजूराम मलिक, पुस्तकाध्यक्ष—१. श्रीमती ब्या जी २. श्रीमती सप्तोष मयाग, लेखा निरीक्षक—सुभाष गिरबर।

**आर्यसमाज सालवन जि० पानीपत**

प्रधान—लक्ष्मणसिंह, उपप्रधान—धर्मसिंह, मन्त्री—साजबौरसिंह, उपमन्त्री—मोहनचाल, पुस्तकाध्यक्ष—विरेन्द्रकुमार।

**आर्यसमाज नीलोखेड़ी जि० करनाल**

प्रधान—श्री एच. बी. मुली, उपप्रधान—१. ईश्वरसिंह, २. भोमप्रकाश, मन्त्री—सुभाषचन्द्र सिंह, उपमन्त्री—देवेन्द्रकुमार, कोषाध्यक्ष—प्रतापचन्द्र, पुस्तकाध्यक्ष—तीर्थदास, लेखा निरीक्षक—कुम्भलात धर्मा।

**आर्यसमाज नारलील जि० महेश्वरगढ़**

प्रधान—श्री झोटैलाय भार्य, उपप्रधान—प्रभुपाल, मन्त्री—बैच भोमप्रकाश, उपमन्त्री—महासय टैकचन्द्र, कोषाध्यक्ष—महावीर प्रसाय, पुस्तकाध्यक्ष—इरिकाप्रसाद।

**आर्यसमाज बाघडूकलां जि० जोन्ड**

प्रधान—मा० बारासिंह, उपप्रधान—बलसजसिंह, मन्त्री—तुरेक कुमार, उपमन्त्री एवं पुस्तकाध्यक्ष—अचमेरसिंह, कोषाध्यक्ष—फतेसिंह प्रचारमन्त्री—सामधिया।

**आर्यसमाज सरफाबाद जि० जोन्ड**

प्रधान—श्री० विवेसिंह, मन्त्री—श्री० प्रेमसिंह, कोषाध्यक्ष—श्री० गणेशसिंह।

**आर्यसमाज आबडशनगर जयपुर**

प्रधान—श्री रामलाल मुषाटी, उपप्रधान—१. बाबूबाबू शर्मा २. हरीचन्द्र जांगोड़, मन्त्री—सुनीलकुमार झाड़ू, उपमन्त्री—१. तेजप्रकाश कल्हा २. चक्रकीर्ति सामवेदी, पुस्तकाध्यक्ष—श्रीमती मृदुला सामवेदी, कोषाध्यक्ष—नाथूताल शर्मा।

**वेदप्रचार मण्डल उत्तरी-पश्चिमी दिल्ली**

कार्यालय—आर्यसमाज मन्दिर पुष्पाञ्जलि इम्फेबल हिल्सी-३४  
 प्रधान—श्री प्रभुदयाल भाटिया, उपप्रधान—१. भास्त ब्रूषण २. गिरधरलाल धर्मा, मन्त्री—साजपतवार झाड़ूबा, उपमन्त्री—जयपाल सिंह भार्य, कोषाध्यक्ष—नरेश भार्य, लेखा निरीक्षक—रामलाल भार्य।

**गुरुकुल**

**कांगड़ी फार्मसी की आयुर्वेदिक औषधियां सेवन कर स्वास्थ्य लाभ करें**

**गुरुकुल च्यवनप्राश**

पुरे पौराणिक के लिए शक्तिवर्धक एवं स्फूर्तिदायक राशयन।  
 दाही, शंभू व पारोसिक एवं केकड़ी की दुर्लभा से उपपत्नी आयुर्वेदिक औषधीय टानिक



**गुरुकुल पायोकिन्ड**

दोनों व मनुष्यों के मजबूत शरीरों में विशेषतः पारोसिका के लिए उपयोगी आयुर्वेदिक औषधि



**गुरुकुल चाय**

सुखान्त व इन्द्रजन्मक, मजबूत और मँजरी कृशियों से बने साधनकारी आयुर्वेदिक औषधि

**गुरुकुलकांगड़ी फार्मसी हरिद्वार (उ० प्र०)**

शाखा कार्यालय : ६३, गली राजा केदारनाथ, चावड़ी बाजार, दिल्ली-११०००६

**गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी**

**हरिद्वार**

की औषधियां सेवन करें।

शाखा कार्यालय  
 ६३ गली राजा केदारनाथ,  
 चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

स्थानीय विक्रेताओं एवं सुपर बाजार से छरीयें  
 फोन नं० २६१८७१

'अमर'—दिसम्बर २०४३

धर्म प्रतिनिधि सभा दरयाबा के लिए गुरुकुल और प्रकाशक वेदवत धारणी द्वारा आचार्य प्रिदिग प्रेश के लिए सर्बहितकारी मुद्रणालय रोहतक व कणारकर सर्बहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती खवन, दवानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।



ओ३म्

# सर्वेहितकारी

सोहन क

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—सुबेसिंह सभासन्धी

सम्पादक—वेदवत शास्त्री

सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यानकार एम० ए०

वच १८

बक २८

१४ जून, १९६१

वार्षिक मुल्क ३०

(आजीवन मुल्क ३०१)

विदेश में ८ पौड

एक प्रति ७१ पैसे

## गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के नियन्त्रण में

हरयाणा प्रदेश में स्थित गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने २ जून को अपने नियन्त्रण में ले लिया है। यह ऐतिहासिक गुरुकुल दिल्ली सोमा के साथ अरावली पर्वत पर जिहा फरीदाबाद में आर्यसमाज के विख्यात संस्थापनी स्वामी श्यामसुन्द ने १९०६ में स्थापित किया था। उन दिनों आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का कार्य क्षेत्र पंजाब के अतिरिक्त हरयाणा तथा दिल्ली तक था। इसी कारण गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ को समस्त सम्पत्ति की रजिस्ट्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जिहाका कार्यालय उन दिनों साहौर में था, उसी के नाम कचवाई गई थी।

पंजाब का विभाजन होने के पश्चात् आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का राजकीय सीमाओं के अनुसार विभाजन हो गया और पंजाब सभा ने प्रस्ताव पास करके निर्णय किया कि पंजाब सभा के नाम को जो सम्पत्ति जिस भी राज्य में स्थित है वह उसी प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा की सम्पत्ति बन गई है। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ जि० फरीदाबाद में स्थित होने के कारण आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अधिकार में आ गया परन्तु कुछ स्वामी श्यामसुन्द ने पंजाब सभा के नाम पर इस पर अपना अवेककम्बा इतने ही रखा। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से स्वीयालय में अपनी सम्पत्ति को सुरक्षा तथा अपने नियन्त्रण

में लेने की कानूनी कार्यवाही की। कई वर्षों के प्रयत्न से स्थायालय ने निर्णय दिया कि जो सम्पत्ति पंजाब सभा के नाम को हरयाणा राज्य में स्थित है, अब उसकी स्वामी आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा बन गई है। इस अवसलती निर्णय के अनुसार हरयाणा सभा ने सराय कयाजा ग्राम में स्थित गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ को समस्त सम्पत्ति का इत्काल पंजाब सभा से अपने नाम कराया गया और जिहा फरीदाबाद के उपायुक्त महोदय को अवसलतो निर्णय तथा इत्काल आदि के प्रमाण प्रस्तुत कर दिये। उन्होंने यत्नी-यत्नी सभी तथ्यों की जांच करके २ जून १९६१ को गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ का कब्जा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को पुलिस की सहायता देकर दे दिया। श्री महेश शास्त्री जोकि पंजाब सभा का नाम लेकर अवेक रूप में गुरुकुल में बैठे था, उसे निकाल दिया परन्तु वह हरयाणा सभा को आर्य व्यय का हिसाब आदि देकर नहीं गया। हिसाब देखने पर ज्ञात हुआ कि वह गुरुकुल के छात्रों से भोजनादि के मुल्क की राशि का गवन कर गया है। हरयाणा सभा ने गुरुकुल का नियन्त्रण अपने हाथ में ले लिया है और स्थायी आर्य कार्यकर्तियों के सहयोग से गुरुकुल को सुचारु रूप से चलाने का प्रयत्न कर रहा है।

—केदारसिंह आर्य

### प्रार्थना

मुझे मनुष्य की जिम्मेगी देनेवाले,  
कभी गन न देना खुशी देनेवाले।

मुझे धारणें यूँ ही सबकुछ दिया है।

हवा और पानी मोहिया किया है।

केवल जिन्हें हर समय कर रहा हूँ।

मुझे मनुष्य की.....॥१॥

बनस्पतियों मेरा भोजन बनाया।

रहने को मेरे जमीं आसर्वां बनाया ॥

मुझे एक दफा देखना चाहता हूँ।

मुझे मनुष्य की.....॥२॥

अच्छ काम करने की मुझे प्रेरणा दो।

नेकी के रस्ते पर चलना सिखा दो।

यही नील मैं धारणें मांगता हूँ।

मुझे मनुष्य की.....॥३॥

किसी की खुशी देखकर न जलूँ मैं।

स्वस्ति के पथ पर चलूँ मैं ॥

तेरे प्यार के गीत गाता रहूँ मैं ॥

मुझे मनुष्य की.....॥

देवराज आर्य प्रचार मन्त्री आर्यसमाज  
(सत्यभगवत)

### आर्य पति का सुख

रचयिता—मा० रामचन्द्र आर्य, आर्य विवाह मन्त्रा (हिंसा)

मित्या आर्य परिवार, पाया सुख वेतुना।

जीवन सफल होया मेरा मित्या ऐसा भरतार ॥६॥

पंच महायज्ञ का प्रतिनिध हो करना।

वेद ज्ञान की जोत से उजाहा करना ॥

करते सच्य से प्यार, उठे यज्ञ महकार ॥

सुधियों से निर भरा रहे मेरा परिवार ॥१॥

आर्य श्रम्य का घर में होता है पक्षमा।

सत्य सात्विक वास का होता है मखना ॥

करते धर्म विचार, श्रुधियों से प्यार।

भव का भूत है ना होता कभी सवार ॥२॥

मझे विषय का काम नहीं सात्विक सामा।

अश्लील साहित्य दूर करे धर्म का माना ॥

पढ़े आर्य संस्कार, दिया पाछण्ड मार ॥

सत्संग नित करके हम करते शुध विचार ॥३॥

गो ब्रूध और पत से शरीर बससाओ है।

ब्रह्मचर्य का तेज बुद्धि की प्रतिभासाओ है ॥

आर्य कविता वाद, करते सोच विचार।

'रामचन्द्र' मान श्रुधि की करता धर्म प्रचार ॥४॥

वेदविषयक एक प्रारम्भिक लेख का उत्तर—

## क्या धर्मग्रन्थ होना अपराध है ?

डा० मकानीसात भारतीय

गतांक से आये

वहो मर्शेष चेतन सत्ता को ही इन्द्र, अग्नि, वायु, मित्र, वरुण आदि माना नामों से पुकारा गया है और उसी सत्ता के आगे अपनी भद्रा एवं भक्ति को प्रस्तुत करने की बात कही गई है। वेदों में विभिन्न देवताओं की स्तुति (गुण कथन), प्रार्थना (सहायता की याचना) उस शक्ति के निकट स्वयं से जाने तथा उसका साम्प्रिय प्राप्त करने का जो यथेन मिलता है क्या वह समाचरण की शिला नहीं है ? और क्या ये देवता एक ही परमात्मा के विभिन्न नाम नहीं हैं ?

वेदों में ही लौकिक धर्म का उपदेश भी सर्वसाधारणिक सूक्तों में उल्लिखित हुआ है। यहाँ पारिवारिक जनों में परस्पर सहृदयता, सौमनस्य, द्वेष रहित आचरण आदि की विचारों का वर्णन है तो भूत मात्र में आत्मभाव को देखने तथा समस्त प्राणियों की मित्र की दृष्टि से देखने के उदात्त विचार भी उपलब्ध होते हैं। वेदों में वह संशानसूक्त भी है जिसमें मनुष्य मात्र को साय-साय चलने, एक ही बात बोलने तथा अपने विचारों, प्रार्थना तथा संकल्पों में एकता रखने की बात कही गई है। वेद में परमात्मा से उस भेदा की याचना की गई है जो हमारे पूज्य पुरुषाओं देवताओं, ऋषियों तथा पितरों को प्राप्त भी तथा दिव्य गुण युक्त, 'देवता' शब्द से अतिरिक्त लोगों के सख्य को प्राप्त करने की कामना की गई है। यदि इस प्रकार की सब जनोपयोगी तथा मानव समाज में प्रेम, भ्रातृत्व तथा सार्वजन्य के भाव को विकसित करने वाली शिक्षा को धर्म नहीं कहा जायेगा तो क्या इससे विपरित बातों को धर्म की संज्ञा भी जायेगी।

बालीजी वेदों को "श्रेष्ठ कविता" तो मानते हैं किन्तु उन्हें धर्मग्रन्थ कहे जाने पर आपत्ति करते हैं। वे भूल जाते हैं कि रामायण और महाभारत श्रेष्ठ महाकाव्य हैं तो वे हमारे धर्मग्रन्थ भी हैं। यदि गोस्वामी तुलसीदास के रामचरितमानस को हिन्दी का श्रेष्ठ काव्य ग्रन्थ माना जाता है तो क्या करोड़ों हिन्दू उसे अपना धर्म ग्रन्थ नहीं मानते। यदि सगवद्गोता के विश्वप्रथम दर्शन जैसे अध्यायों में उत्कृष्ट काव्य तत्व के दर्शन होते हैं तो क्या इसी तर्क के आधार पर उसे धर्म ग्रन्थ कहना अपराध हो जायेगा ? वेद भी अपनी रचना शैली अविभक्तना कौशल तथा धर्म काव्य तत्वों को विद्यमानता के कारण श्रेष्ठ काव्य हैं, स्वयं वेद उन्हें "देवस्य काव्य" देवी कविता कहा है किन्तु कविता होने से ही उसे धर्म ग्रन्थ के गौरवास्पद स्थान से कटे च्युत किया जा सकता है।

धायक बालीजी वैदिक सूक्तों के कथ्य को श्रेष्ठ काव्य का विषय या उपादान भी नहीं मानते। इसके लिये वे कभी नासदीय सूक्त का उल्लेख करते हैं और कहते हैं कि इस सूक्त के रचयिता को लुद को ही यह सूक्त नहीं कि मृष्टिके आरम्भ में क्या था, किस तत्व की प्रशानता थी, इस दृष्टात्मक जगत् की उपादान सामग्री क्या थी, यह संसार क्यों, कब कैसे और किसके द्वारा बनाया गया, आदि। धर्मग्रन्थ में लिखते हैं कि वेदों में ह्युप विवाह का सूक्त है जो आगे चलकर विवाह संस्कार में प्रयुक्त होने लगा। इसी प्रकार वे वेदों में आये असूक्त, दुग्नि सूक्त, मण्डूक सूक्त आदि में कथित बातों का उल्लेख कर वेदों के विषय विवेचन को निताप्त है, उल्लेख तथा अपराध सिद्ध करते हैं। यद्यपि इन सूक्तों के कथ्य का भी उन्होंने गम्भीरता से से विचार नहीं किया, किन्तु हमारी मुख्य शिक्षाएत तो यह है कि वेदों में ध्याये संकटों अथवा आध्यात्मिक भाव पत्र मनुष्य के जीवन को उन्नत बनाने वाली शिक्षाओं से भरपूर तथा मानवी विभिन को उदात्तता एवं प्रखरता को धोर उन्मुख करने वाले भावों से युक्त सूक्तों की धोर उनकी दृष्टि क्या नहीं गई। उनके विचार में कितन सूक्त एक जुबानी को इसके परिचयों द्वारा दम्बित करने जाने को कहा है। ऐसा कहते समय ये वह भूल जाते हैं कि जुबानी के पक्षपाताप को प्रायः कथात्मक त्व से व्यक्त करना तो वेद की एक

शैली मात्र है। उसका हावों तो उस मंत्र में निहित है जिसमें मनुष्य को अक्ष होना से दूर रहने (अश्वेः मा दीम्बः) तथा हृदि जेसे धम युक्त किन्तु बहुपरिणामदायी कार्य को करने की प्रेरणा दी गई है।

बालीजी ने एक सांस में ही वेदों के उन विभिन्न सूक्तों की विषय वस्तु का व्यापक दृग से संकेत तो किया और यह कहते से भी नहीं भूके कि नगाडे की आवाज का वर्णन करते वाले दुग्नि सूक्त, धाराय पीकर मतवाले हुए इन्द्र के सूक्त, मैडकों की तरह टर-टर करनेवाले देवपाठी ब्राह्मणों के उल्लेख वाले मण्डूक सूक्त को किस पंमाने से धर्म ग्रन्थ माना जायेगा ? किन्तु उन्हीं के कथनानुसार वेदों में भूमि और राष्ट्र को बंदना वाले सूक्त भी हैं, समाज के विभिन्न वर्गों के कर्तव्यों का निर्देश करने वाले मंत्र समूह भी हैं, इन्हीं वेदों में विराट् (महत् मानव समुदाय तथा उसके सामाजिक विकास) के द्वारा सृष्टि रचना प्रक्रिया का दार्शनिक उल्लेख वाला पुरुष सूक्त भी है, वहीं ससद (जनता की प्रतिनिधि सभा) के कर्तव्यसूचक सूत्र भी मिलते हैं और सत्य की महिमा का उद्घोष करने वाले सूक्त भी हैं। मैं बालीजी से पूछना चाहता हूँ कि क्या उक्त विषयों का वर्णन करने वाले सूक्तों का समूह धर्म ग्रन्थ कहलाने का अधिकारी नहीं है ? क्या मनुष्यों के वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक तथा सार्वजनिक कर्तव्यों के विषयक उपदेशों को धर्म से भिन्न कोई अन्य सभा में दी जा सकती है। यह तो ही सकता है कि बालीजी को धर्म या धर्मग्रन्थ शब्द से ही चिड हो, किन्तु उनकी प्रारणों कोई पूर्वनिश्चित धारणा या कोई पूर्व निर्धारित विचार सभी विचारशील लोगों के लिये भी स्वीकार्य हैं, यह कैसे सम्भव है ?

रही बात धाराय पीकर उन्नत हुए इन्द्र के वर्णन की या मैडकों की भांति टर टर कर वेवपाठ करने वाले ब्रह्मचारियों की। तो यह सारा विषय तो उसी व्यक्ति को स्पष्ट और सुबोध हो सकता है जो विना किसी पूर्वनिश्चित वेद प्रतिपादित "इन्द्र" तत्व को समझने का प्रयास करे। तभी वह जान सकेगा कि इन्द्र का सोपान और तत्रजय शान्दानुभूति क्या है ? जो लोग सोम को सुरा या धाराय का बाबक मानते हैं उन्हें तो वैदिक सोम के मौलिक अविश्राय को समझने के लिये एक धर्म ग्रन्थ ही लेना पड़ेगा। सोम को जलोक्तिक धीर दिव्य प्राध्यात्मिक धनुमुति बताते हुए वेद ने स्वयं कहा—अपाम सोमं धमूनाऽभूमं मेने सोमिया धीर मे अवर हो गया, मेने देवताओं को जान लिया।

सत्य बात तो यह है कि वैदिक सूक्तों में कथित अनेकानेक रक्ष्यात्मक धनुमुतियों तथा उनके गूढ अविश्राय को समझने के लिये पुरातन धर्म, धर्म ग्रन्थवसाय धीर संकल्प को धाराव्यक्ता है। ऐसे ही रस्ते चलते, वैदिक सूक्तों तथा उनके कथ्य पर विकिराजकी करने में न तो वेदों का ही कुछ बनता विवक्षता है और न उन सतवः पौरस्त्य व पार्श्वस्थ वेदाध्यासियों के वर्णों के धम पर ही कोई पानी फेर सकता है जिन्होंने निरन्तर, शीर्षकाल तक वेदों के अविश्रायों को समझने में ही अपने जीवन को लगाया तथा इसे ही अपनी सारस्वत साधना का चरम लक्ष्य माना। रही बात मण्डूक सूक्त का मजाक लगाने की। तो बात सीधी सादी है। भ्रलकारों को एक साधारण विचार्यों भी जानता है कि कहीं कहीं हीनोपमा भी दी जाती है, वहाँ उपमेय के लिये किसी हीन उपमान को भी प्रयुक्त किया जाता है। तुलसीदास ने जब

दावुड भुवि चहुं और सुहाई।

वेद पढ़ाई मनु बटु सुहाई ॥

की चोपाई लिखो थी तो उसने वेद के उस मण्डूक सूक्त के अविश्राय को ही अपने दृग से कहा था। अतः देवपाठी ब्राह्मणों के मन्त्रोच्चारण को यदि मण्डूक ध्वनि से उपमित किया गया है तो यह

(शेष पृष्ठ ६ पर)

## स्वाध्यायान्मा प्रमद

(साधिनी शास्त्री, एम०ए०, जनता कानोनी, रोहतक)

उपनिषद् आध्यात्मिक विद्या के जगद्गुरु हैं। ईश, केन, कटाधि म्याह् उपनिषदों में सर्वप्रथम ईशोपनिषद् तो यजुर्वेद का ४०वाँ अध्याय ही है। इन उपनिषदों में तैत्तिरीयोपनिषद् में स्वाध्याय के लिए विधेय निर्देश देखने को मिलता है। क्योंकि इस कथन में कोई परिश्रयोक्ति नहीं कि स्वाध्याय ही प्राथमिक उन्नति का प्रथम सोपान एवं रहस्य है। तैत्तिरीयोपनिषद् के प्रपा० ७/अनु० १ में स्वाध्याय का निर्देश इन शब्दों में मिलता है—

श्रद्धं च स्वाध्यायप्रवचने च । सत्यं च स्वाध्यायप्रवचने च । तपश्च स्वाध्यायप्रवचने च । दमश्च स्वाध्यायप्रवचने च । समश्च स्वाध्यायप्रवचने च । अमनश्च स्वाध्यायप्रवचने च । अग्निहोमश्च स्वाध्यायप्रवचने च । अतिथयश्च स्वाध्यायप्रवचने च । मातुषं च स्वाध्यायप्रवचने च । प्रजा च स्वाध्यायप्रवचने च । प्रजातिश्च स्वाध्यायप्रवचने च ॥

इस सत्यपूर्ण प्रकरण में पहले वाले शिष्य तथा पढ़ाने वाले आचार्य के लिए निर्देश किया गया है। श्रद्धा अर्थात् यथार्थ आचरण, सत्य अर्थात् सत्याचरण, तप, दम आदि अत्येक नियम का पालन करते हुए स्वाध्याय एवं प्रवचन को आवश्यक एवं अत्यावश्यक बतलाया है। क्योंकि "स्वाध्यायप्रवचने" पद में आचरण की दृष्टि से श्रद्धा समाप्त है। स्वाध्यायप्रवचन प्रवचन च ते। अतः संक्षेप से मनुष्यमान के प्रति श्रद्धियों का यह संदेश है कि सत्कार में रहते हुए, सांसारिक नियमों एवं मानसयथाओं का पालन करते हुए अपनी उन्नति करने की सद्भावना से सब प्रकार की विद्याओं को पढ़ते-पढ़ाते रहते जायें।

स्वाध्याय मनुष्य के लिए आचार्यवश्यक है इसका निर्देश पहले ही नहीं मिलता बल्कि इसी उपनिषद् के इसी प्रपाठक के अनुवाक ११ में आचार्य अपने शिष्य को इस भांति उपदेश देता है—

"वेदमनुच्यार्याजोऽन्तेवासिमनुषास्ति । सत्यं वद । धर्मं चर । स्वाध्यायं वा प्रमद । आचार्यं धियं वनमाश्रय प्रजातस्तु मा भ्यवच्छेदोः । सत्यान् प्रमदितव्यम् । धर्मान् प्रमदितव्यम् । कुशलान् प्रमदितव्यम् । श्रुत्यं न प्रमदितव्यम् —"। स्वाध्यायप्रवचनान्मां न प्रमदितव्यम् ॥

अर्थात् हे शिष्य, तू सदा सत्य बोल, धर्मचरण कर, प्रमादरहित होके पढ़ पढ़ा तथा प्रमाद के दोषोपहृ होकर पढ़ने एवं पढ़ाने के कार्य को कभी मत छोड़ आदि ।

उपनिषद् के धर्तिरिक्त धर्मशास्त्र मनुस्मृति में भी ब्राह्मण शरीर के लिए स्वाध्याय की आवश्यक बतलाया है—

"स्वाध्यायेन ब्रह्मैर्होमैर्नैविषेनेत्यया सुते ।

महायज्ञेषु यज्ञेषु ब्राह्मिणं क्रियते तनु ॥

मनु० अ० २/२८

स्वाध्याय अर्थात् सकल विद्या पढ़ने पढ़ाने, ब्रह्मचर्य सत्य-आचर्यादि व्रत पालने, अग्निहोत्रादि तथा सत्य का पालनादि, नृपिण्डने-वेदस्य ज्ञान, कर्म, उपासनादि के द्वारा तथा पशुव्याधि एवं पंचमहाभयों के पालन से इस शरीर को ब्राह्मी अर्थात् वेद और परमेश्वर की अस्ति का आचरण ब्राह्मण का शरीर किया जाता है। इस प्रकार से मनुस्मृति का भी यह प्रमाण है कि स्वाध्याय के बिना यह शरीर ब्राह्मण शरीर नहीं बन सकता ।

मानव जीवन का परम सत्य परमेश्वर प्राणित है। इस परम सत्य की प्राप्ति के लिए भी स्वाध्याय की परम आवश्यकता है। योगदर्शन में उपासना के स्वरूप का प्रतिपादक सूत्र है—तैजस्यस्तदय-भावव्यं" (सं० पा० २८)

इस सूत्र की व्याख्या में व्यास भाष्य में स्वाध्याय का महत्त्व इन शब्दों में दिग्दर्शित किया गया है—

"स्वाध्यायाद्योगमासीत् योगात् स्वाध्यायमासते ।

स्वाध्याययोगसम्बन्धा परमात्मा प्रकाशते ॥

इसका भाव है कि स्वाध्याय से योग में और योग से स्वाध्याय में स्थिर भाव को प्राप्त करे। स्वाध्याय और योग इन दो सम्प्रतियों से परमात्मा प्रकाशित होता है ।

महर्षि पतञ्जलि जी ने योग के लिए आवश्यक जिन क्रियाओं का उल्लेख किया है उनमें भी स्वाध्याय का प्रवचन किया है—

तपस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि क्रियायोगः ।

(सां० पा० १)

अर्थात् तपः, स्वाध्याय और ईश्वरप्रणिधान—ईश्वर के प्रति विधेय भक्तिपूर्वक अनुष्ठान योग को क्रिया है। स्वाध्याययोगी मनुष्य पुरुष को स्वाध्याय से फल प्राप्ति का वर्णन इस प्रकार किया है—

स्वाध्यायदिष्टदेवतासम्प्रयोगः । (साधना पा० ४४)

स्वाध्याय के सिद्ध हो जाने पर इष्टदेव परमात्मा के साथ योग होता है। इस प्रकार से योगदर्शन भी स्वाध्याय की परमावश्यकता मनुष्यमात्र के लिए दर्शाते हैं एवं परम करुण्यता स्वाध्याय की बताता है ।

योगांगानुष्ठानाद्युद्धिष्ये ज्ञानदीपितारिविक्रम्यातेः ।

(सां० पा० २८)

महर्षि पतञ्जलि ने विवेकव्यति प्राप्त होने तक योग के अर्थों का अनुष्ठान आवश्यक बतलाया है। योग का दूसरा अर्थ है नियम । इस नियम रूप योग में भी स्वाध्याय के पालन का वर्णन है—

शौचसन्तोषतपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः ॥

(सां० पा० ३२)

शौच से अग्निप्राय है वाग्यन्तर एवं शास्त्र पवित्रता, सन्तोष, तपः, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान ये पांच नियम हैं। अब तक विवेक अर्थात् ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो जाती तब तक इन नियमों का पालन करना चाहिए ।

इस प्रकार से स्वाध्याय जहाँ परम सत्य परमविता परमात्मा की प्राप्ति के लिए आवश्यक है। इस शरीर को ब्राह्मण शरीर बनाने के लिए आवश्यक है। सच्चे अर्थों में मनुष्यता प्राप्ति के लिए जरूरी है। वहाँ इतिहास में ऐसे भी अनेक उदाहरण मिलते हैं जिन्होंने स्वाध्याय से प्रेरणा पाकर ही अपने जीवन को पतनोन्मुख होने से बचाया। धर्मोपनिषत् की प्राप्ति होने से अपनी रक्षा का। इसके साथ ही स्वाध्याय किसी एक विषय का गम्भीरता से अध्ययन करने पर तद् विषय में पराजयिता एवं सम्मत्ता प्राप्ति में भी सहायक होता है ।

महर्षि पाणिनि प्रणीत अष्टाध्यायी व्याकरण शास्त्र का मूलग्रन्थ है। उसकी व्याख्या आज काशिका नाम से उपलब्ध है। परन्तु उस काशिका पर भी जितेश्वर बुद्धि ने न्यास नाम की व्याख्या लिखी है। न्यासकार ने स्वाध्याय द्वारा कितना ज्ञान प्राप्त किया वा इस प्रत्यय में एक किंवदन्ती इस प्रकार है ।

अष्टाध्यायी के सूत्र—"वेत्सो यत्कर्म णो वेत् स कर्तान्नाभ्याने"

की व्याख्या करते हुए सूत्र के भाव को अटिजता को देखते हुए पद शब्दों में वर्णन करते हैं—

वेरत्ताविति सूत्रस्यायं जानाति पाणिनिः ।

अह वा मायकारो वा चतुर्षो नैव विद्यते ॥

अर्थात् "वेत्सो यत्कर्म णो" इस सूत्र का अर्थ वा तो सूत्र रचयिता पाणिनि मुनि जानते हैं अथवा महाभाष्यकार पतञ्जलि मुनि जानते हैं और तोसरा में न्यासकार जितेश्वर बुद्धि इस सूत्र के गहन अर्थ को जानता हूँ। हम से अतिरिक्त चौथा व्यक्ति इस सूत्र के वास्तविक अर्थ को भ्रमोपनिषत् सम्यक् रूपेण नहीं जानता, यह है स्वाध्याय की महिमा। स्वाध्याय के द्वारा न्यासकार को अपने ज्ञान पर किञ्चन विस्वास है यह उनके शब्दों से ज्ञात होता है ।

इस प्रकार से उपनिषद्, सर्वप्रथम, मनुस्मृति तथा योगदर्शन के आधार पर स्वाध्याय मानव की उन्नति एवं चतुर्मुखी विकास के लिए परम आवश्यक है तथा परम सहायक है। अतः श्रद्धियों के आदेश एवं उपदेश के अनुसार हमें भी इस दुर्लभ मानव देह को पाकर स्वाध्याय में प्रमाद नहीं करना चाहिए। अतितु स्वाध्याय अवश्य करना चाहिए ।



# विज्ञान बनाम धर्म

श्री इन्द्रजित् 'देव' पुरानी सन्धी मन्थी मार्ग, यमुनानगर-१३१००१

'दैनिक ट्रिब्यून' के दिनांक २५ जुलाई, १९३० के अंक में "विज्ञान सोमार्थ पार करेगा तो विज्ञान होना" शीर्षक के अन्तर्गत जिना प्रमुखतर में उल्लिखित शाखा काशीपीठाधीश्वर के अमृतदुग्ध संकराचार्य स्वामी श्रीप्रकाशानन्द परबस्ती के द्वारा एक भाषण के कुछ अंश प्रकाशित हैं। परन्तु ऐसा तथा कि इनके लिए तक व बुद्धि से बहुत परे की बातें मानना, मनवाना ही धर्म की परिधि है। मयाशापुत्रघोषित भी रामचन्द्र जी को ईश्वर मानना ही धर्म है तो प्रबन्ध उत्पन्न होता है कि उनसे पूर्वकाल में धर्म कहाँ था ? दशरथ वसिष्ठ व रघु जैसे रामचन्द्र जी के पूर्व किसकी पूजा करते थे ? रामजी व सिन्धवी स्वयं किस ईश्वर मानते थे ? किसी पुरुष-महापुरुष को ईश्वर मानना ही धर्म क्या है तो यह धर्म के साथ घोर अन्वय है। कोई भी पुरुष सिद्धांतों को उच्चता, तप, त्याग, सबम, इन्द्रियनिग्रह, अपरिग्रह, ब्रह्मिदान, अमा, दया शीरता स्वाभाविकता, निष्पक्षता, धर्म, संपर्क व परीक्षणान्तर्गत गुणों को अपने जीवन में क्रियात्मक रूप देने से महापुरुष बनता है। यही धर्म के मूल तत्त्व हैं। धर्म क्या है, यह समझ में आ जाये तो संसार के बहुत से विषय अपने वास्तविक स्वरूप में समझ आ जाते हैं। धर्म शब्द "धृ" धारण" धातु से बना है जिसके अर्थ है "धारण करना" या "धामना।" वे सत्य व अदल सिद्धान्त या ईश्वरीय नियम जिनके धारण करने से यह सम्पूर्ण जगत् यथा हुआ है तथा ईश्वर को रची सृष्टि के कार्य में जो सत्य रूपी नियम पूर्ण रूपेण प्रत्येक वस्तु में रचा हुआ है, यही धर्म है। जैसे ईश्वर ने अग्नि में प्रकाश व गर्मी का गुण स्वाभाविक बनाया है तथा इसका स्वाभाविक गुण एक सत्य नियम था धर्म ठहराया है, चाहे धार्यावर्त हो या पाकिस्तान हो, चीन हो या जापान, अमरीका हो या फिर रूस हो, अग्नि में यह गुण सत्य स्थायी है। यह गुण अर्थात् विशेषता अग्नि में है तभी यह अग्नि कहती है। इसी प्रकार मनुष्य में यदि सद्गुण विद्यमान हैं, तभी वह मनुष्य है। मनुष्य दो हाथों व दो पैरों वाला एक निश्चित रूप व आकृति वाला एक प्राणी है। श्री रामचन्द्र से बहुत पहले मनु महाराज ने मनुस्मृति में धर्म के इस अर्थण बर्णित करते हुए कहा है :-

धृतिः धर्मा धनोऽज्जैतं धीचभिमित्यनिग्रहः।

धीविद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मसंशयम् ॥

धर्म एक पुरुष-महापुरुष को ईश्वर मानना नहीं है, अपितु उसके गुणों को अपने जीवन में उतारना है। धर्म व्यक्ति नहीं, कुछ सिद्धांतों का नाम है।

विज्ञान की भी जानकारी न होने के कारण हमने इसके साथ घोर अज्ञान्यता किया है। बिना एक उपसर्ग को किसी शब्द के पूर्व जोड़ने पर वह विहीन, अनेकपदता, निषेध, विपरीतता व निषेध जैसे अर्थ धर्म में समाहित करता है। "ज्ञान" शब्द से पूर्व "वि" जोड़ने का अर्थ होता-किसी विषय को अनुभवनायुक्त पूर्व व अन्धी-अन्धी जानकारी, विचारवात्मक ज्ञान। जैसे है, मर्दान ब्रह्मना, यन्मों का निर्माण व अनु-परमाणु पर आधारित पदार्थों की रचना कल्पना भी यदि विज्ञान मान लिया जाय तो भी कुछ सीमा तक सही है। अमृतदुग्ध बोधप्रकाशानन्द के भाषण से ऐसा साहस होता है कि वे विज्ञान के बढ़ने को हासिकारक मानते हैं। यह विचार ही हासिकारक है कि विज्ञान मनुष्य का विरोधी है, इसके उन्मत्ति में बाधक है या कम का बाधक है। अमृतदुग्ध को ने कहा है कि रावण के समय में विज्ञान अपनी सीमाएं पार कर चुका था पर यह स्पष्ट नहीं किया कि विज्ञान की सीमा क्या है ? विज्ञान का सोच क्या है ? प्रकृति के रहस्यों को जोलना विज्ञान का काम है व मनुष्य के सुख के लिए साधन तैयार करने की अन्तिम क्रिया ही विज्ञान की सीमा है। यदि वैज्ञानिक यन्त्रों व उपकरणों से मनुष्य दुःखी होता है तो यह उसके ज्ञान, कर्म व धर्मपूर्वक ज्ञानचरण न करने के कारणवश होता है। उदाहरणतः ब्रह्मचर्य पर अस्वीकृत, असत्य व अविवेकपूर्ण कार्यक्रम खिलाए जाते हैं तो हस्तमें ब्रह्मचर्यी यन्त्र का क्या सोच है ? क्या वैज्ञानिक यन्त्रों व उपकरणों के प्रयोग करने वालों को सोच में है। इसी सोच को स्वस्थ व सन्तुलित

विद्या प्रदान करना बर्ना के कार्य है। आवश्यकता धर्म व विज्ञान के पारस्परिक सम्बन्धित रहे तो स्वाभिन्न करते की है।

उपरोक्त कार्य अर्थविचारों पर टिकी भाष्यताओं व तर्क रहित भाष्यताओं के द्वारा निष्पादित नहीं किया जा सकता। अमृतदुग्ध बोधप्रकाशानन्द के भाषण से ऐसा ही हुआ, इसका वेद है। यदि सजा में विज्ञान था तो अयोध्या में भी कम न था। "उच्छाट्टालम्बनवर्ती पातम्नीसतसंजुताम्"-बाल्मीकि रामायण, बालकाण्ड (५/११ श्लोक) में बर्णित है कि अयोध्या में अंभी-अंभी अट्टालिकाएँ थीं जिन पर स्वयं कहरा रहे वे तथा वे बहुत ही तोपों से ब्याप्त थीं। अर्थात् अयोध्या के परकोटे पर स्वान-स्वान पर तोपें लूठी हुई थी। अयोध्यावासियों का चरित्र व आचरण की उच्छता को समझना ही तो बाल्मीकि रामायण के बालकाण्ड के ६/६-१०, १२, १५ व १८ श्लोकों की देखा जा सकता है। राम की विजय उनकी धर्मप्रायण शक्ति के कारण हुई थी जो राम के पास अनुत्तमीय थी, रावण के पास कम थी। रामियवर्ष में विजय की मूर्ति स्थापित करना, बहुत पर रावण द्वारा सीता की को राम की पूजा पूर्ण करने के लिए सजा से लेकर जाना, रावण द्वारा राम से दक्षिणा मानना आदि किरसे मुनाकर ऐसे कथित अमृतदुग्ध वंशमान में किसी का भी कल्याण नहीं करते। बाल्मीकि रामायण उस काक की रचना है। यही प्रमाण मानो जा सकता है। उस घटना वास्तविक रामायण में कहाँ बर्णित है, यह बोधप्रकाशानन्द जी को सिद्ध करना चाहिए। पर नारी का अग्रहरण करने उसे अपनी राज-धानी में बन्धी बनाकर रखनेवाले रावण की भी मुक्ति मिली, यह माना जायगा तो सचरिचिता का पाठ कौन पढ़ेगा ? "परबन्धक मातृवत्" के वैदिक सिद्धान्त की क्यों यही मानिया ? श्रीराम को ईश्वर मानकर "राम-राम" रटना धर्म है या राम के वेदान्तगत आदर्शों पर अमल करना धर्म है ? विज्ञानसम्मत व तर्क-प्रमाण पर आधारित सत्य को शोचकता अनुत्तमीय पीठो इन कथित अमृतदुग्धवर्षों से यह पृथक्ती है।

## ठेके बंद लेकिन शराब की बिक्री जारी है

सोनीपत-बिला प्रशासन ने विगत १८ तारीख से शराब के ठेके बंद कर रहे हैं, परन्तु शराबियों को मायूस होने की जरूरत नहीं। शराब बिक्री, क्योंकि प्रतिवन्द के बावजूद बिक्री बढ़ने से जारी है, चाहे ठेकों के शोच दरवाजों से ही सही। इसप्रति आगामी २८ तारीख तक ठेके बंद रखने के आदेश देना पड़ेगा।

शराब हो तो ही बंद ठेकों के बावजूद शराबियों का बचपद शुरू हो जाता है। बन्द रखने के बादियों के इतिहास कई ठेका मिलकों ने शहर में बिक्री की सीमा का ही ही कर कई अपने पीछे के दरवाजे से शराब बेच रहे हैं। ठेकों के बाहर बड़े-एक-एक पैसा एक-एक उप-मोटा की बारी-बारी से शराब बेचने दे रहे हैं।

मन्वेदार बात तो यह है कि बिना पुलिसकर्मियों पर बिना प्रशासन के आदेश लागू करने की जिम्मेदारी नहीं उम्मीद की इस संवादाता ने ठेकों से शराब लेते देखा। भाव्य ठेकों से बिक्री जारी रखकर कानून की प्रतिबन्ध उल्लंघन का इनाम, शराब के रूप में बिलगत है पुलिस कर्मियों को।

ठेकों के सामिक कई दिन दुकानें बंद रहने से होनेवाला घाटा बंद उपभोक्ताओं से पूरा करने में जुटे हैं, इसलिए आम बिरों से महुँदी बेची जा रही है और वह भी मिलावटी लगती है। बिना प्रशासन का काम केवल बंद रखने के आदेश जारी करने से ही पूरा होगा, बादियों पर अमल शराब बनने तक के बाहर है।

## पति ने कमेटी को शरारत न पीने का आश्वासन दिया

अम्बाला, (निज) जिला अम्बाला में मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा० अनुर सिंगल की अध्यक्षता में गठित बिवाह विवाद निपटान समिति द्वारा सिविज अस्पताल अम्बाला छात्रागो में बुलाई गयी एक सभा में १३ मामलों का निपटारा किया गया।

श्रीमती अचला देवी के पति को रजिस्टर्ड नोटिस भेजे जाने के बावजूद वे शौटिंग में नहीं आये। कमेटी द्वारा अचला देवी को उसके पति के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही करने व सचों दिखाने हेतु कार्यवाही करने का आश्वासन दिया गया।

विकास कुमार ने कमेटी के सामने पेश होकर अपने विरुद्ध सन तथा मुख्य दण्डाधिकारी के न्यायालय में पत्नी द्वारा दायर मुकदमे की परबी हेतु कानूनी सहायता उपलब्ध करवाने की मांग की। उसकी पत्नी कमेटी द्वारा रजिस्टर्ड नोटिस देने के बावजूद कमेटी के सामने पेश नहीं हुई।

श्रीमती उमिला तथा उसके पति अपने माता-पिता के साथ कमेटी के सामने उपस्थित हुए। उमिला के पति व साह-ससुर इस बात पर जोर दे रहे थे कि वह नौकरी छोड़कर आये और साथ रहे जबकि उमिला द्वारा ऐसा न करने पर कमेटी के सदस्यों ने उन्हें न्यायालय द्वारा मामला निपटाने को कहा।

कमेटी में श्रीमती बलदेवी और ने बताया कि उसका पति धारा १४६ के तहत मारपीट करता था, जिसके विरुद्ध न्यायालय में केस चल रहा है। पति द्वारा यह आश्वासन देने पर कि वह मरिच्य में कभी माराब नहीं पियेगा, कमेटी के सदस्यों ने एक मास तक उसका बाल-बचन देखने के बाद उन्हें दुबारा आने को कहा।

कमेटी के उप बिवाहा अटार्नी श्री कृष्णपाल दुजा व डाक्टर साधना गुप्ता ने भी भाग लिया। डा० सिंगल के अनुसार कमेटी में काफी लोग रजिस्टर्ड नोटिस देने के बावजूद आते, इसलिए ऐसे लोगों के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही के अलावा कोई चारा नहीं रह जाता।

दैनिक बीर अर्जुन से साभार

## शोक समाचार

आर्यसमाज अजायबी के कर्मचारी कर्मियों की अथवाक बहदा जोकि श्रीमती साम देवी बर्माई टुस्ट के कोषाध्यक्ष थी वे, का २२-४-६१ को निधुत हो गया। अत्येति संस्कार पूर्ण वैकि रीति से श्री इन्द्रवि देव, व समी आर्यसमाज ने कराया। उनको आस्था की शान्ति और यज्ञांजलि सभा बिनाक ४-४-६१ को सम्पन्न हुई जिसमें सेप्टीमेंट श्री कर्मचिह्ति, डा० कर्माजी बर्मा, युवावर्ष विद्यालय यमुनानगर श्री राजेश शर्मा ने भी भागबीनी यज्ञांजलि अर्पित की। आर्यसमाज के सदस्यों, बांकि उत्सव में बहु स्वयं और उनका सारा परिवार तन, मन और धन से सेवा किया करते हैं। उनके निधन से जो आर्यसमाज और टुस्ट को हानि हुई है, उसकी क्षति प्रति होना असम्भव है।

—केशवदास आर्य

## शोक समाचार

श्री मोहनसिंह की आर्य, आर्य नगर (बाढ़वा) जिला मिथानी जिशाही की बर्मापत्नी का स्वर्णवास १६ मई १९६१ की हो गया। आप बड़ी बर्मापत्नी महिला थी। श्री मोहनसिंह की आर्य को आर्यसमाज के कार्य के लिये पूर्ण अथवाक देती थी। नूह का सब कार्य स्वयं देवती थी। आयाका अत्येति संस्कार पूर्ण वैकि रीति से मरतसिंह शास्त्री ने कराया। पुनः गृह पर यज्ञ किया। प्रतिदिन गृह पर १० दिन यज्ञ होता देखा तथा यज्ञांजलि अर्पित की जायेगी।

भूमे से प्रार्थना है कि विष्णुजन्त आत्म को शान्ति सदाति प्रदान करे तथा परिवार को विषयों दुःख सहन करने को शक्ति प्रदान करे।

—मरतसिंह शास्त्री

## आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

नव-युवक आर्यसमाज की बागडोर संभालें  
संसद में आर्यसमाज की दुंबुभि बजे

नई दिल्ली २६ मई को आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के पूव कार्यकारी अध्यक्ष बालू दरवारो साल ने सभा के वार्षिक अधिवेशन में देशभर से समागत प्रतिनिधियों का स्वागत एवं अभिनन्दन करते हुए कहा कि उनके सतत सहयोग से सभा का कार्य निरन्तर प्रगति कर रहा है और इस प्रकार समस्त विषय में आर्यसमाजों की स्थापना के साय-साय स्वामी ध्यानम् के मन्त्रियों का भी प्रचार प्रसार हो रहा है। संसार भर परिवर्तनशील है, समय की गति के साथ न चलनेवाला समाज एवं जाति कभी उन्नति नहीं कर सकती, किन्तु आर्यसमाज सदा ही जागरूक समाज के रूप में कार्य करता रहा है। यही कारण है कि अपने आरम्भ काल से आरम्भ कर आज तक वह निरन्तर प्रगति कर रहा है।

सभा में समुपस्थित देशभर के प्रतिनिधियों ने अपनी-अपनी समस्याएं प्रस्तुत की और परस्पर के विचार विनिमय से उनका समाधान भी प्रस्तुत होता गया। कुछ सदस्यों का कहना था कि हमें युवा वर्ग को आर्यसमाज की ओर आकृष्ट करने के लिये विशेष प्रयत्न करना चाहिये। आर्यसमाज को संस्था के रूप में भारत की संमद में अपने प्रतिनिधियों को भेजना चाहिये। अब तक जो आर्यसमाजो संसद सदस्य के रूप में संसद में रहे हैं, वे आर्यसमाज के अर्थ के रूप में नहीं प्रपितु उस राजनीतिक दल के सदस्य के रूप में वहां कार्य करते हैं जिस दल के प्रत्याशी के रूप में वे निर्वाचित होकर संसद में पहुंचते हैं। अतः वे संसद में पहुंचकर अपने दल का दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं, आर्य-समाज का नहीं।

अधिवेशन में लगभग ३०० प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सभा मन्त्री ने सभा की मत बंधों की रिपोर्ट सुनाई, प्रायः अर्थ का विवरण पेश किया और आगामी वर्ष के लिये बजट पेश हुआ।

प्रतिनिधि सभा ने सर्वसम्मति से प्रो० वेदव्यास जो की सभा का संरक्षक तथा श्री हरचारीवाल जो की अध्यक्ष मनोनित किया तथा उन्हें कार्यकारिणी के पठन का अधिकार दिया।

## आर्य बीरवल रोहतक नगर का ३८वां वार्षिकोत्सव सोत्साह सम्पन्न

आर्य बीरवल रोहतक नगर का ३८वां वार्षिकोत्सव २ जून ६१ से ६ जून तक वैकि अति साधन आश्रय में सम्पन्न हुआ। इस उत्सव का आँगण २ जून को छात्र-छात्रागो की मायक प्रतिपोगिता से प्रारम्भ हुआ।

प्रातःकाल यज्ञ का कार्यक्रम महत्त्वा सम्भवति थी ने बहुत ही सुन्दर एवं प्रभावशाली ढंग से सम्पन्न कराया।

३ जून से ६ जून तक रात्रि की वेदस्था का आयोजन किया गया जिसमें प्रो० रतनसिंह ने वेद मन्त्रों के आचार पर बहुत ही प्रभावशाली ढंग से वेद मन्त्रों की व्याख्या की तथा पं० बीरपाल तथा पं० स्वामीवीर दासक ने प्रेरणादायक गीतों द्वारा जनता को आनन्दित किया। ७, ८ व ९ जून को वार्षिकोत्सव का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ जिसमें आर्य बीरवल सम्मेलन, महिषा सम्मेलन, राधु-रक्षा सम्मेलन तथा धम्मार्थसम्मेलनों का आयोजन किया गया जिसमें प. जयदेव अतोई बाते एवं पं० प्रेमप्रकाश तथा पं० बीरपाल, स्वामीवीर दासक के मनोहर भजन हुए तथा प्रो० उत्सवधर्म सारत तथा बहिन आशा देवी के जोषस्थी व्याख्यान हुए। प्रतिदिन दिन पं० जयदेव अतोई बाते ने भाग्य प्रार्थना अथवात्सा गांभी नगर जोकि आर्य बीरवल के सहयोग से चल रहा है इस अस्पताल की सहायार्थ सहाय रूपों की अर्पण की। इस अर्पण पर जनता ने तुरन्त ही इसको पूरा कर दिया तथा श्रद्धा लार का भी आयोजन किया गया था जिसकी श्रद्धा अर्पण लोगों ने भूति-भूति प्रसन्न की। इसके साथ उत्सव सम्पन्न हुआ।

—मेवराज आर्य

## वेद में तीन सभाओं का वर्णन

(पं० बमदेव "बनीषी" वैदतीयं बुधकुल काव्य)

सत्र जगत् का राजा एक परमेश्वर ही है और सब संसार उसकी प्रज्ञा है। दुनयें यह यजुर्वेद के षोडशवेदों अर्थात् वेदों के २६वें मन्त्र के बचन का प्रमाण है—“ययं प्रजापतेः प्रजा अब्रून्” अर्थात् सब मनुष्य लोगों को नियंत्रण करने जानना चाहिये कि हम लोग परमेश्वर की प्रज्ञा हैं, और वही एक हमारा राजा है।

वेद में तीन सभाओं का वर्णन—

भीषि राक्षाना विन्दे पुरुषि परिविश्वानि भूषयः सर्वाणि ।  
अपश्यमत्र मनसा जगन्वात् प्रते गन्धर्वो ऋषि बायुकेभाम् ॥

(ऋग्वेद अ० ३। अ० २। मं० २५। मं० ६)

(भीषि राक्षाना) तीन प्रकार की सभा ही को राजा मानना चाहिये एक मनुष्य को कभी नहीं। वे तीनों वे हैं—प्रथम राज्य प्रबन्ध के लिये एक ‘भार्यराज सभा’ कि जिससे विशेष करके सब राजकार्य की ही निगरानि के लिये, दूसरी ‘भार्य विद्यासभा’ कि जिससे सब प्रकार की विद्याओं का प्रचार होता जाये, तीसरी ‘भार्य धर्म सभा’ कि जिससे धर्म का प्रचार और अर्थ का हानि होता रहे। इन तीन सभाओं से (जिन्हे) अर्थात् बुद्ध में (पुरुषि परिविश्वानि भूषयः) सब धनुष्यों को जीत के नाना प्रकार के सुखों से विन्दे को परिपूर्ण करना चाहिये।

सत्रस्य योनिरसि सत्रस्य नाभिरसि ।

मा त्वा हिं सीमा मा हिं सोः ॥ (यजु० २०। मं० १)

(सत्रस्य योनिरसि) हे राज्य के देविशिवे परमेश्वर ! आप ही राज्य सुल के परम कारण हैं। (सत्रस्य नाभिरसि) आप ही राज्य के जीवन हेतु हैं तथा सत्रियकरण के राज्य का कारण और जीवन सभा ही हैं। (मा त्वा हिं सीमा मा हिं सोः) हे जगदीश्वर ! सब प्रजा आपको छोड़के किसी दूसरे को अपना राजा कभी न माने, और आप भी हम लोगों को कभी मत छोड़िये। किन्तु आप और हम लोग परस्पर सदा अनुकूल रहें।

यत्र ब्रह्म स धर्मं च सम्यञ्चो चरतः सह ।

तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेयं यत्र देवाः सहामिना ॥

(यजु० २०। २५)

(यत्र ब्रह्म च) जिस देश में उत्तम विद्वान् ब्राह्मण, विद्या सभा विद्वान् दूरवीर क्षत्रिय लोग वे सब मिलके राजकार्य को निरूढ़ करते हैं, वही धर्म और सुख क्रियाओं से संयुक्त होने सुल को प्राप्त होता है। (यत्र देवाः सहामिना) जिस देश में परमेश्वर की आज्ञा पालन और अनिहोत्रादि सत्क्रियाओं से वर्तमान विद्वान् होते हैं, वही देश सब उपद्रवों से रहित होने अथवा राज को निरपेक्ष होता है।

तं सभा च समितिवश् सेना च ॥

(अथर्व० का० १५। अनु० २। सू० ६। मं० २)

(त सभा च) प्रजा तथा सब सभासद सब राजाओं के राजा परमेश्वर को जानके, सब सभाओं में समावेश का अभिषेक करें। (समितिवश्) सब मनुष्यों को उचित है कि परमेश्वर और सर्वोपकारक धर्म का ही आश्रय करके बुद्ध करें। तथा (सेना च) जो सेना, सेनापति और सभासद हैं, वे सभा के आश्रय से विचारपूर्वक उत्तम सेना को बनाके सदैव प्रजापालन और बुद्ध करें ॥

सत्र्य सभा वे पाहिं वे च सभ्याः सभासदाः ।

त्वयेदाः। पुरुहूत विश्वामाणुं जस्रवम् ॥

(अथर्व० का० १५। अनु० ३। सू० ५। मं० ६)

(सत्र्य सभा वे पाहिं) हे सभा के योग परमेश्वर ! आप हम लोगों की राजसभा की रक्षा कीजिये। वे च सभ्याः सभासदाः। हम लोग जो सभा के सभासद हैं, जो आपकी कृपा से सम्यक्सुख होकर अन्धे प्रकार से सत्त्व श्याय की रक्षा करें। (त्वयेदाः पुरुहूत) हे सबके उपरान्तदेव ! (विश्वामाणुं जस्रवम्) हम लोग आप ही के सहज से आपकी आज्ञा पालन करते रहें, जिससे सम्पूर्ण बायु को सुख से मोयें।

इसी प्रकार सभा करने के राज्य का प्रबन्ध धार्यों में श्रियम्बहाराज युधिष्ठिर पर्यन्त चला आया है कि जिसकी वाली महाभारत के राजवर्षे जाति प्रथम तथा मनुस्मृत्यादि धर्मशास्त्रों में यथावत् लिखी है। इस प्रकार महति धयानम्ब जी महाराज ने अपने धर्मों में लिखा है।

### बालू का महल

ने० स्वामी स्वकथानम् सरस्वती (दिल्ली)

बालू का यह महल है, जिसमें तेरा निवास।

बेठा मस्त निशं क तू कर पूरा विवास ॥

कर पूरा विवास, उठे धोषी बनदेवी।

पक्क मारते काया की, उह जाय हुबेबी।

बिद दिन फेरा मये, काब कले बाबुका।

हो बायेगा नष्ट महल, सब मैं बाबुका।

डाई पल

डाई पल की चिन्वी, तुल्लो हुई प्राण।

धुना धुनी में कर दिया, जीवन सकल समाप्त ॥

जीवन सकल समाप्त, हुई पूरा माता।

सम में होगा कल, ज्यों पानी बीच नलाथा ॥

सो धोषी की सोया, सबर नहीं है कल की।

विजली की सो पक्क, चिन्दो डाई पल की ॥

### पुरोहित की आवश्यकता

भार्यसमाज, महति धयानम् बाजार (दास बाजार) सुविधाना को पूरे समय के लिए एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है। निवास सुविधा के साथ येतन योग्यता अनुसार। संगीतज्ञ या हारमोनियम जानने वाले की प्राथमिकता दी जायेगी। सम्पर्क करें या स्वयं मिलें।

महेश्व प्रसाद धार्य  
महामन्त्री

(पृष्ठ २ का शेष)

वेध की अलंकार योजना ही है, इसे उपहास की कोटि में लाना प्रणय है।

प्रथम बात, वालीषी को इस बात का बड़ा पिना है कि वेधों जैसी स्फूर्त, जीवित और मय चरनाओं को ईश्वरीयवाणी क्यों कहा जाता है ? बनीमत है कि उन्होंने वैदिक युक्तों को स्फूर्त, जीवित और मय तो कहा और वहाँ तक उन्हें ईश्वरीयवाणी कहने का सदाश है, इसे समझने के लिये वैदिक चिन्तन द्वारा के सतत्य, धार्य धर्म में स्वीकार सम्ब प्रमाणवाद वेधों के स्वतः प्रमाणत्व और धर्म धर्मों के परतः प्रमाणत्व जैसे शास्त्रीय सिद्धांतों को समझना होगा। हमारा वालीषी से यह साधु हो कृपा नहीं है कि वे भारत के शास्त्रीय विचारों की इस सुविचारित परम्परा को यथावत् मान ही लें, किन्तु जब वे वेधों को धर्म प्रथम कहने पर कोई आपत्ति प्रकट करें अथवा शैथिलिक मर्तों में माय्य धर्म धर्मों की कृति के अनुकरण पर ही वेधों के प्रामाण्य के सिद्धांत को धार्यसमाज द्वारा गठा हुआ मानें तो कम से कम एतद्विषयक प्राचीन मर्तों का उद्घोषण अवश्य करें और यह सस्ता फँसला देकर धार्यसमाज तथा महति धयानम् के प्रति अन्याय न करे कि उन्होंने इस्लाम या ईसाइयत की नकल पर वेधों को ईश्वरीय ज्ञान या धर्म प्रथम घोषित किया। स्वामी धयानम् का एतद्विषयक समस्त लेखन और चिन्तन भारत के शास्त्रीय वैचारिक पक्ष का ही आधार लेकर चलता है। कोई उससे सहमत हो या न हो यह निम्न बात है।

## ब्योम ने है गीत गाया

बब बरा प पूंजता है,  
बोम का जय गाए।  
बनूज तस्वों का विटोला,  
धरणि पर उन्माद।  
अपति बेंदिक धर्म, जय,  
जय हो रहा ऋषिराज।  
ऋषिराज दयानन्द के सुनहले  
स्वप्न सजना आज।

दिग्घ करने जन मनो को,  
हूँ लिलानी रविमया।  
सत्यकर्मों की बनानी,  
स्वर्ण सी शुधि मस्तिमया।

ऋषि चरण पथ पर चलो,  
साना तुम्हें है जागरण।  
हट रहा भयभीत होकर,  
दनुजता का आवरण।

तुम जगो हे जग्य पुनो।  
मरुतत्र उद्धार होना।  
बिकल हूँ जो, जन दुःखी हूँ,  
उनका तुम्हें उपकार करना।

जस रही है आज धरती,  
हेध-दृष्ट्या की धनस में।  
भुलमरी बढ रही बडबानि जल में  
बढ रही बडबानि जल में।

जस रहा मानव हृदय है,  
जल रहा आकाश जल-पथ।  
बढ रहा उन्माद कुलित,  
बढ रहा क्षमिषाय प्रतिपथ।

भोगवादी फैलती है—  
दुर्बिचारों की कुसंस्कृति।  
धरती है मनुष्य डर को,  
आज दानवता प्रवृत्ति।

नस्त है जनपथ यहाँ का,  
नस्त है कण-कण यहाँ।  
नस्त हैं। सब भयस्वस्थाए,  
नस्त है प्रतिकण यहाँ।

प्रति चरण पर कर रहा,  
संनस्त हमको यह कुशासन।  
देखकर सब दुग्भवस्थाए,  
धब यही सतता—न शासन।

सब भटकते हैं स्वपथ पर,  
पा न पाते आर्ष हैं।  
विरभ्रमित से, ओर तम में,  
दूँडते सम्पान हैं।

बाँधे हर्मै सत्यपथ अपेक्षित,  
केट-पथ पर ही चले।  
दुर्बिकारों को स्वभय है,  
डर कर, उसको दले।

रो रहा मनुजत्व देखो।  
हो रहा नैतिक पतन।  
सत्य भावों का हवा है,  
भूमि पर क्षतिवध हवन।

पर, तुम्हें उठना पड़ेगा,  
यह जपस धमिधर्म है।  
सत्य पथ के सुध गुणो को,  
देख लो। धवसाय हैं।

ऋषि दयानन्द ने सुपथ जो—  
बबनि-जन को है दिलाया।  
हम बड उस पर धमप हो—  
ब्योम ने है गीत गाया।

—राजेश्वराम 'धार्य' धारस्वति

## गुरुकुल करतारपुर में प्रवेश आरम्भ

कोई मासिक शुल्क नहीं

श्री गुरु विद्वानन्द गुरुकुल करतारपुर, बिशा जालन्धर पंजाब में नए छात्रों का प्रवेश १४ जून—६१ से ३० जून-६१ तक होगा।  
आधुनिक विषयों के साथ-साथ संस्कृत तथा बर्माविद्या की पढ़ाई समुचित व्यवस्था। नि.शुल्क शिक्षा, हिन्दी माध्यम, योग्य परिश्रमी शिक्षक, स्वच्छ वातावरण। सांख्यिक भोजन, दूध तथा छात्रावास आदि की संध्या निःशुल्क सुविधा। छात्रों की प्रवेश योग्यता कम से कम कक्षा ६ उत्तीर्ण हो। प्रवेश हेतु शोध मिले अवकाश पत्राचार करें।

धारायें—

श्री गुरु विद्वानन्द गुरुकुल,  
करतारपुर—१४४८०१ (बिशा जालंधर)

## वेद प्रचार

दिनांक ५-६-६१ को डाणो (आर्यनिवास नलवा) में स्वामी परमानन्द जी छोटे बाजे वाले द्वारा भजनों के माध्यम से वेद प्रचार किया गया। प्रातः हवन किया गया। प्रचार में डाणो के नर-नारियों के अतिरिक्त स्कूली बच्चों ने भाग लिया। क्रांतिकारी जी ने स्वामी जी का धन्यवाद किया।

—राजवीर आर्य,  
डाणो निवासी

## शोक सभा

आर्यसमाज साम्बाक्राज की यह महती शोकसभा भारत के मूलपूर्व प्रधानमन्त्री एवं कांग्रेस अध्यक्ष स्वर्गीय श्री राजीव गांधी जी को जयस्य हत्या पर हार्दिक शोक प्रकट करती है। इस अवसर पर आर्यसमाज साम्बाक्राज ने अपने साप्ताहिक सत्रसंग के समस्त कार्यक्रम स्थगित कर स्वर्गीय श्री राजीव गांधी जी को अर्धांजलि दी। आर्य-समाज साम्बाक्राज के उपप्रधान कॅप्टन देवदत्त आर्य, महासमन्त्री श्री नरेश कुमार पटेल ने भावमयी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा—श्री राजीव गांधी भारत देश के ही नहीं अपितु विश्व के माननीय नेताओं में से एक थे। देश को उनसे बड़ी आशाएं थी। उनके नेतृत्व में भारत की जो चहुँमुखी उन्नति हुई वह सदा स्मरणयोग्य रहेगी। उनके देहावसान के समाचार से सारा देश स्तब्ध रह गया, ऐसा लगा जैसे सब कुछ रुक गया है। उनका अभाव सदा अनुभव किया जाएगा।

शोकसभा में इस हत्या की कड़े शब्दों में निन्दा की गई और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की गई कि उनकी आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें। समा में प्रसिद्ध गायिका श्रीमती साप्ता मणिक द्वारा गीत संगीत का कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

—नरेश कुमार पटेल, महासमन्त्री

**अत्यंत प्रचारार्थ**

अजिल्द **₹००** सेंकडा

**मृत्यार्थ प्रकाश**

अजिल्द **७००** सेंकडा

**घर घर पहुंचाएँ**

**सफेद कागज मुन्दर छपाई**

**सुदृढ़ संरक्षण वितरण करनेवालों के**

आकार 23x36-16 पृष्ठ ४20 की दर लिख प्रचारार्थ

अजिल्द ४/अजिल्द ७/-

**आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट**

455, राठी बावली, दिल्ली-6 दूरभाष: 238360/233112

**गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार में प्रवेश आरम्भ**

निम्नांकित पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु, निर्धारित काम पर प्राथम-पत्र धारणित किये जाते हैं—

- १- विद्याचिन्ता (इष्टर), २- अक्षर/विद्यालंकार/विद्यालंकार (बी० ए०), ३- मी० एस्० सी० (गणित), बायो तथा कम्प्यूटर ग्रुप, ४- एम०ए० (वेद, संस्कृत, दर्शन, हिन्दी, अंग्रेजी, मनोविज्ञान, प्रा०भा० इति०), संस्कृति एवं पुरातत्त्व, ५- एम०ए०/एम०एस्०सी० (गणित, साइकोलॉजी/बी०, मनोविज्ञान), ६- पी०एच०डी (वेद, संस्कृत, दर्शन, हिन्दी, अंग्रेजी, मनोविज्ञान, प्रा०भा० इति०), संस्कृति एवं पुरातत्त्व, गणित, वनस्पति तथा जीवविज्ञान), ७- स्नातकोत्तर डिप्लोमा एक वर्षीय (कमन्सिल मेम्बरस प्राक् कॅम्पिजल बनारस/इतिहस तथा कम्प्यूटर साईंस एण्ड एप्लीकेसन्स), ८- योग डिप्लोमा (एक वर्षीय), ९- वैदिक यज्ञ विधान (एक वर्षीय डिप्लोमा), १०- संस्कृत प्रवेश तथा संस्कृत 'प्रबोध' एक वर्षीय डिप्लोमा, ११- अंग्रेजी दसता प्रमाण-पत्र ३ मास।

नोट :—इस सत्र में निम्नांकित पाठ्यक्रम भी आरम्भ किये जाने की व्यवधान है—

एम०एस्०सी० (रसायन, भौतिक), हिन्दी पत्रकारिता डिप्लोमा (एक वर्षीय)। कन्या महाविद्यालय, देहरादून (द्वितीय परिसर) में चित्रकला, सगीत, हिन्दी, अंग्रेजी तथा संस्कृत में स्नातकोत्तर कक्षाएं।

**सामान्य सूचना**

१- अक्षर पाठ्यक्रम में प्रवेशार्थी छात्राएं प्रिंसिपल, कन्या गुरुकुल महाविद्यालय ६० राजपुर रोड देहरादून (द्वितीय परिसर) गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से सम्पर्क करें।

२- अनुसूचित जाति/जनजाति के छात्रों के लिये भारत सरकार के नियमानुसार आरक्षण।

३- अध्ययन व्यवस्था, अध्ययनपत्रों की सुविधाएं, छात्रकृतियां प्रवेश प्रक्रिया, संक्षिप्त पाठ्यक्रम तथा शुल्क प्रादि की जानकारी के लिये विवरण पत्रिका (प्रस्पेक्टस) तथा आवेदन-पत्र १०/- २० मकड़ मूल्य पर मासिक, विद्यान-महाविद्यालय (विज्ञान विषयों के लिए) तथा आचार्य एवं गुरुकुलपरिषद् वेद/मानसिकी महाविद्यालय (कला विषयों के लिये) के कार्यालय से उपलब्ध होंगे। डाक से भगवाने पर कुलसचिव गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के पत्र में शेष १५/- २० का बैंक ड्राफ्ट भेजें।

४- महिलाओं के लिये नियमित प्रवेश की सुविधा नहीं है। व्यक्तिगत परीक्षाओं के रूप में महिलाएं एम०ए० (मनोविज्ञान की छोड़कर सभी-विषय) एम० एस्० सी० (गणित) तथा पी०एच०डी० (मनोविज्ञान, कनस्पति तथा शोधविज्ञान के अतिरिक्त सभी विषयों) के लिए आवेदन-पत्र दे सकती हैं।

५- जो छात्र बी०ए०/बी०एस्०सी० अंतिम वर्ष की परीक्षा दे रहे हैं वे भी आवेदन-पत्र भेज सकते हैं। ऐसे छात्रों को निम्नलिखित प्रवेश उनके परीक्षा परिणाम जाने पर दिया जायेगा।

आवेदन प्राप्त होने की अंतिम तिथि—२० जुलाई १९६६  
पी०एच०डी०—१ जुलाई से ३० सितम्बर तक  
व्यक्तिगत परीक्षाओं—१ सितम्बर से ३१ अक्तूबर

—डा० वीरेन्द्र अरोड़ा, कुलसचिव


## गुरुकुल


**कांगड़ी फार्मसी की**  
**आयुर्वेदिक औषधियां सेवन कर स्वास्थ्य लाभ करें**

**गुरुकुल**

**रक्तपत्राण**

रक्त परिवार के लिए शक्तिशालक एवं शक्तिशालक रासायन।  
शक्ति, श्रम व शारीरिक तब केन्द्रों की दुर्बलता में उपचारी आयुर्वेदिक औषधीय टॉनिक






अपनी शक्ति को बढ़ाएं

**गुरुकुल**

**पार्वकिल**


शरीर व शक्ति के लिये शक्तिशालक औषधीय टॉनिक।  
शक्तिशालक औषधीय टॉनिक।  
शक्तिशालक औषधीय टॉनिक।



**गुरुकुल**

**चाय**

उष्ण व शुष्कप्रकृत, शरीर व शक्ति के लिये शक्तिशालक औषधीय टॉनिक।  
शक्तिशालक औषधीय टॉनिक।  
शक्तिशालक औषधीय टॉनिक।



**गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी हरिद्वार (उ० प्र०)**

**गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी**

**हरिद्वार**

**की औषधियां सेवन करें।**

**शाखा कार्यालय**  
**६३ गली राजा केदारनाथ,**  
**चावड़ी बाजार, दिल्ली-६**

**स्थानीय विक्रेताओं एवं सुपर बाजार**  
**से खरीदें**  
**फोन नं० २६१८७१**

**शाखा कार्यालय : ६३, गली राजा केदारनाथ**  
**चावड़ी बाजार, दिल्ली-११०००६**

‘अमर’—दिल्ली-२०५३



प्रधान सम्पादक—सुबेसिंह सभासामी

सम्पादक—नेदरथ शारंगी

सहसम्पादक—प्रभासबीर बिजालकार एम० ए०

वर्ष १८

सं० २६

२१ जून, १९६१

वार्षिक शुल्क ३०

(आजीवन शुल्क ३०१)

विदेश में ८ पौड

एक प्रति ७५ पैसे

# सत्यार्थप्रकाश में ईश्वर के सौ नाम

(श्रीवास्तव जी के नेल का उत्तर)

आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट दिल्ली की मासिक पत्रिका दयानन्द सन्देश में 'महावि का ईश्वर-संज्ञक' नामक मेरा लेख प्रकाशित हुआ था। जिसमें सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम सम्पत्काल में महावि दयानन्द द्वारा व्याख्या ईश्वर के सौ नामों का भी उल्लेख किया गया था। मेरे उसी लेख को आधार मानकर माननीय श्री जी. श्री श्रीवास्तव सम्प्रदायी शिक्षाधिकारी, २२ स्टेट बैंक कालोनी, सुन्दरगढ़, प्रयाग-पठार रोड रायपुर (स०प्र०) का लेख महासंगठ (सोमप्रिय) में प्रकाशित वेद-वाणी तथा ५५५ सारोवाबली दिल्ली के प्रकाशित दयानन्द-सन्देश नामक पत्रिका में प्रकाशित हुआ है। श्री श्रीवास्तव जी ने प्रकृत लेख को पढ़ा और का प्रयास किया है, तबसे उनकी संज्ञा का वैश्याव है, परन्तु उनके इस लेख से मैं नहीं प्रभावित उत्पन्न हो रहा है कि महावि ने सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम संस्करण में ईश्वर के सौ नाम लिखे थे और प्रकाशित द्वितीय संस्करण में कुछ नाम बढ़ा दिए गए हैं। किन्तु 'ये सौ नाम परमेश्वर के लिये हैं' यह प्रथम संस्करण का मूल वाक्य बिना किसी परिवर्तन के उसी प्रकार पूर्व की भांति छपता चला आ रहा है।

इस कथन का अर्थ यह हुआ कि द्वितीय संस्करण में उपलब्ध 'ये सौ नाम परमेश्वर के लिये हैं' इस वाक्यांश का संशोधन किया जाए और इसके स्थान पर भी वास्तव जी के अनुसार जितने नाम जुनते हैं, उनकी ठीक संख्या लिखी जाए। ऐसा करना कदापि उचित नहीं क्योंकि इससे महावि के प्रश्नों में संशोधन करने की दुष्प्रवृत्ति चान्द्र हो जाएगी।

वहाँ कृपि-नाम्नों में सन्देश हो वहाँ कृपिओं ने एक ही मांय मतकाया है कि "व्याख्यानतो विवेच-प्रतिपत्तिर्नहि सन्देशावसंगमम्" अर्थात् कृपिपुस्तक के सन्देश स्वयं की व्याख्यान से विवेच जानकारी प्राप्त करने की चाहिए, सन्देश करके उसे अवलम्बन अर्थात् अनुद गहीं मानना चाहिए, इसी मांय पर चबले हुए भी अपने पूर्व प्रकाशित लेख में ईश्वर के सौ नामों का विवरण प्रस्तुत किया था जिससे धार्यवर्गत् में चला आ रहा पुराना सन्देश निरस्त हो जाए। पाठकजनों के सामांय सत्यार्थप्रकाश के प्रथम सम्पत्काल में लिखे ईश्वर के सौ नामों की सूची यहाँ भी वा रही है।

१. ब्रह्म २. सन् ३. ब्रह्म ४. अग्नि ५. मनु ६. प्रजापति ७. इन्द्र ८. प्राण ९. शक्र १०. विष्णु ११. इन्द्र १२. शिव १३. अक्षर १४. स्वराट् १५. कार्तिक १६. विष्णु १७. सुषम् १८. परमात्मा १९. मातरिषया २०. भूमि २१. विराट् २२. विष्व २३. हिरण्यगर्भ २४. वायु २५. तेजस २६. ईश्वर २७. आदित्य २८. प्राण २९. सौम ३०. बचस ३१. धर्मया ३२. बृहस्पति ३३. उरुकम ३४. सूर्य ३५. धारत्या ३६. परमात्मा ३७. परमेश्वर ३८. सविता ३९. शिव ४०. कुजेर ४१. पृथिवी ४२. जल ४३. वाकाशब्द ४४. अन्न ४५. वसु ४६. नारायण ४७. अक्षर ४८. मयल ४९. बुध ५०. सुक ५१. सतिश्वर ५२. राहु ५३. केतु ५४. यम ५५. होता ५६. वन्दु

५७. पिता ५८. पितामह ५९. प्रपितामह ६०. माता ६१. आचार्य ६२. गुरु ६३. धन ६४. सत्य ६५. ज्ञान ६६. अनन्त ६७. प्रजावि ६८. सच्चिदानन्द ६९. नित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वभाव, ७०. निराकार ७१. निरञ्जन ७२. गणेश ७३. गणपति ७४. विश्वेश्वर ७५. कृत्स्न ७६. देवी ७७. शक्ति ७८. श्री ७९. सत्वमी ८०. सत्यतो ८१. सर्वशक्तिमान् ८२. पर. बहालु ८३. अक्षर ८४. निष्क ८५. शशुण ८६. अक्षर्यामी ८७. धर्मराज ८८. यम ८९. भगवान् ९०. पुत्र ९१. पुत्र ९२. विश्वम्भर ९३. काश ९४. शेष ९५. बाल ९६. शंकर ९७. महादेव ९८. प्रिय ९९. स्वयम्भू १०० कवि।

सत्यार्थप्रकाश के द्वितीय संस्करण में ईश्वर के संख्या में १२० नाम उपलब्ध होते हैं निम्नलिखित १२ नामों की पुनरावृत्ति हुई है— ब्रह्म (२) अग्नि (१) मनु (१) इन्द्र (२) प्राण (१) ब्रह्मा (१) विष्णु (१) अक्षर (१) शिव (१) बृहस्पति (१) यतः १२०-१२ अर्थात् १०८ नाम शेष रहते हैं। विवादास्पद ८ नामों पर यहाँ धरणा मत प्रकट किया जाता है—

(१) प्राण (अक्षर)—इस नाम की व्याख्या में महावि लिखते हैं कि 'आ ध्रुवोन्ने' प्र पूर्वक इत वातु से प्रज्ञ और इससे उद्विग्न प्रत्यय करने से प्राण शब्द सिद्ध होता है यः प्रकृष्टतया चराचरस्य जगतो व्यवहारं जगति सः प्राणः, प्राण एव प्राणः। जो निज्जित ज्ञानयुक्त चराचर जगत् के व्यवहार को जानता है, इससे ईश्वर का नाम प्राण है (स० प्र० प्रथम समु०) महावि की इस व्याख्या से स्पष्ट है कि वे ईश्वर के 'प्राण' नाम को ही सिद्ध कर रहे हैं। 'प्राण' शब्द तो प्राण नाम की सिद्धि में लिखा गया है। अतः 'प्राण' नाम का ही ग्रहण करना चाहिए। प्रश्न नहीं (१०८=१-१०८)।

(२) सच्चिदानन्दस्वरूप—सत्, चित् और आनन्द शब्दों की व्याख्या करते महावि ने स्वयं लिख दिया है कि "इत तीनों शब्दों के विवेचन होने से परमेश्वर को सच्चिदानन्दस्वरूप कहते हैं (स० प्र० प्रथम समु०) अतः वहाँ तीन नामों का ग्रहण न करके एक सच्चिदानन्द-स्वरूप नाम का ही ग्रहण करना चाहिए। महावि ने इस नाम का धार्यसमाज के द्वितीय नियम में तथा अन्यत्र भी अनेक बार प्रयोग किया है। (१०७=२-१०७)।

(३) नित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वभाव—नित्य, शुद्ध, बुद्ध, मुक्त इन चार शब्दों की व्याख्या करते महावि ने स्वयं लिखा है अत एव नित्यशुद्ध-बुद्धमुक्तस्वभाव को अनवीकरः। इसी कारण से परमेश्वर का स्वभाव नित्य शुद्ध बुध मुक्त है (स० प्र० प्रथम समु०) महावि ने अपने आपा-नित्यय आदि शब्दों में इस नाम का अनेक बार प्रयोग किया है। अतः यहाँ चार नामों के स्थान पर एक नाम का ही ग्रहण करना चाहिए। (१०६=१-१०६)

(शेष पृष्ठ ६ पर)



# उद्योग एवं उद्यमर में हिन्दी का सहस्र

लेखक : श्री जगन्नाथ

संयोजक राजभाषा कार्य,

केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद्,  
सरोजनी नगर, ईई दिल्ली-११००२३

यह बर्तक हिन्दी भाषी राज्यों और केन्द्रीय सरकार के कामकाज में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाए जाने के लिए यन्त्रोपर प्रयत्न किए जा रहे हैं, यह वास्तविक है कि साथ ही साथ निजी क्षेत्र के उद्योगपतियों और व्यापारियों द्वारा भी हिन्दी का प्रयोग बढ़ाया जाय। इस विषय में राजभाषी दिल्ली के गांधी नगर के.डि.ले सिंघाए वरुण विक्रेताओं के संघ ने सदस्यों को एक परिपत्र भेजकर प्रेरित किया है कि वे अपने कामकाज में हिन्दी का प्रयोग करें। यह संघ भारत में थोक वस्त्र निर्यातियों और विक्रेताओं का कर्षाचिप संघ है वहा सच है। सघ ने सदस्यों से कहा है कि—

“.....प्रत्येक राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक अपने राष्ट्रभाषा का प्रयोग कर अपने को गौरवान्वित अनुभव करता है। अपनी मातृभाषा को अपनायना एवं अपनायन किसी भी अवस्था में सहन नहीं कर सकता और अपने राष्ट्र के प्रतिस्व के लिए निरन्तर समर्थन रहता है।

जबो की अत्यन्त प्रयोग का अर्थ है अर्थव्यवस्था के संस्कारों को संशोधन करना। दूसरे शब्दों में भारतीयता का उपहास और अपने कर्मों के द्वारा अपनी राष्ट्रभाषा और संस्कृति को नष्ट करना।

आप आज से ही अपने हस्ताक्षर हिन्दी में करना प्रारम्भ कर दें। अपने व्यवसाय के नाम-पट्ट और अभिलेख, पत्र व्यवहार, निमन्त्रण पत्र, शुभकामना संदेश, संबन्धनों (लिफाफों और पैकेट) पर हिन्दी का ही यथा-सम्भव प्रयोग करें। यथासम्भव उच्चारण/जबड़ पत्रियों और दूरभाष पर बातचीत में हिन्दी का ही प्रयोग करें। केवल अंग्रेजी में छपी प्रकाशितक सामग्री जैसे कलेक्टर, डायरी आदि को कदापि स्वीकार न करें और न ही छपवाकर वितरण करें”।

२. इसी प्रकार गांधीबाबा (उ०अ०) के लोहा व्यापारियों की समिति ने भी अपने सदस्यों को हिन्दी में काम करने के लिए प्रेरणा देने के लिए एक परिपत्र प्रसारित किया। परिपत्र का आधातौत प्रभाव हुआ। अधिकांश व्यापारियों ने अपने नामपट्ट हिन्दी में बदल दिए। लेखा-जोबा, बिट्टी-पत्री, नकद-उच्चार की पत्रियां, बैंक में हस्ताक्षर आदि ऐसे दैनंदिन कार्य हिन्दी में करने प्रारम्भ कर दिए। Telephone की जगह दूरभाष, Unloading की जगह उतराई, Loading लदान और ऐसे ही Average की जगह औसत, Confirm पुष्टि, Cancel निरस्त, Amount राशि, Signature हस्ताक्षर, Sheet चादर, Tax paid कर-प्रदत्त, Shortage घटत, Payment शुभदान, बढायगी आदि हिन्दी शब्दों को लुप्तकर, पहले से प्रयोग करने लगे। हिन्दी का एक अच्छा वातावरण बना। लोगों ने अनुभव किया कि अपनी मातृभाषा और राष्ट्रभाषा का प्रयोग करने हम विश्वीयता एवं अर्थव्यवस्था का बहिष्कार करने में अक्षय होते।

इस हिन्दीय वातावरण से उत्साहित होकर, “लोहा व्यापारी समिति” ने अपनी एक बँक में सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया कि व्यापारियों को हिन्दी धरनाने के लिए प्रोत्साहनरूपक प्रतिपत्र एक “राष्ट्रभाषा हिन्दी-पुरस्कार योजना” प्रारम्भ की जाए।

हिन्दी में नामपट्ट, हिन्दी में उच्चारण-नकद पत्रियों बहियों/बही श्रावों, हिन्दी में ही प्रभावार् एवं परस्पर वातावरण में अंग्रेजी शब्दों का-अधिकार आदि के आधार पर, एक निष्पक्षक मण्डल द्वारा १९६० में प्रथम-द्वितीय श्रेणी एवं तैनेक प्रोत्साहन पुरस्कार एक अन्य समारोह में प्रदान किये गए। पुरस्कार आक्यंके एवं स्थायी महत्त्व के है।

३. केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद् ने, श्री उद्योगपतियों और व्यापारियों को पत्र-पत्रे हैं और उन्हें हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिए कुछ व्यापारिक-व्यावहारिक प्रकाश दिए हैं—

(क) सामान्य वस्तुएं हिन्दी को शब्दीयानि-समझती है। अधिक और पूर्व के राज्यों में भी अब काफी अधिक संख्या अंग्रेजी भाषने वालों की अपेक्षा हिन्दी भाषने वालों की है। जतः अपने भाषा को

सोचिय बनाने के लिए यह जरूरी है कि आप अपने विज्ञापन हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं और हिन्दी स्मारिकाओं आदि में भी और हिन्दी में ही दिए जाएं। हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं आदि में अंग्रेजी में विज्ञापन छपवाने से उसका पूरा लाभ नहीं हो पाता, क्योंकि हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं आदि के पाठकों में ऐसे कम ही व्यक्ति होते हैं जो अंग्रेजी के माध्यम से विज्ञापन को पूरा समझ सकें।

(ख) आप यह भी चाहेंगे कि आपकी फर्म/कम्पनी का नाम तथा आपके उत्पाद (प्रोडक्ट) अधिक से अधिक लोकप्रिय हों। इस दृष्टि से यह भी उचित होगा कि आप अपने समस्त उत्पादों पर और उनके पैकेटों बंदलों पर उनका नाम, प्रयोग करने का तरीका, कम्पनी/फर्म का नाम आदि हिन्दी में भी छपवाए। इसी सच्चाई को मानते हुए जब भारत सरकार ने अपने सभी उत्पादों के विवरण उन पर हिन्दी में भी दिए जाने अनिवार्य कर दिए हैं। अपने नाम के बोर्ड, अपनी लेखन सामग्री तथा प्रचार सामग्री को हिन्दी में भी बनवाए क्योंकि अक्षरों को समझ सकते हैं मात्र दो-तीन प्रतिशत ही लोग हैं। चाहे तो साथ में अंग्रेजी अक्षरों अक्षरों का भी प्रयोग कर सकते हैं।

(ग) सम्भवतः आपको विदित होगा कि हिन्दी में भेजे जानेवाले तार अंग्रेजी के मुकाबले सस्ते पड़ते हैं और लिखने में आसानी भी है। ततः निवेदन है कि अपने तार भी हिन्दी में ही भेजें। इससे पैसों की भी बचत होगी।

(घ) अपने बैंक हिन्दी में बनाए। बैंक खाते हिन्दी में खोलें इत्यादि

४. कई प्रसिद्ध कम्पनियों और फर्म अपने कामकाज में हिन्दी का प्रयोग कर भी रहते हैं। आप नियंत्रण यंत्र बनानेवालों प्रसिद्ध सभी कम्पनी न केवल अपना सारा कामकाज हिन्दी में करती है अपितु भारत सरकार को अपने टेम्बर भी हिन्दी में ही भेजती हैं। इस कम्पनी के मासिक को नैत्रास सूरन (जो विज्ञान-स्तारक है) से बताया है कि उनके उपकरण सशिन ध्रुव में अपने परीक्षण के लिए रक्षा सचिवालय काफी संख्या में खरीदे हैं और उसके लिए उन्होंने अपना टेम्बर केक हिन्दी में भरा था। स्टाइलक इंजिन, नोस्ट्रॉक के साक्षीदार भी राजें नारायण मोशल का अपना अधिकांश कामकाज पहले केवल अंग्रेजी होता था। वे विद्युत विषय में इन्जीनियर हैं और इन्स्ट्रुमेशन का इन्जीनियर के फेलो भी हैं। पहले वे डी सी एम लिमिटेड में बड़े ऊं पद पर अधिकांश को अपने उनका अंग्रेजी में ही काम करने का इच्छा था। किन्तु मेरी प्रेरणा पर उन्होंने अपना काम हिन्दी में कर प्रारम्भ कर दिया। श्री मोशल को और भी कई कम्पनियों में साक्षीद हैं। अब उनका कहना है कि उनकी कम्पनियों का लगभग 80 प्रतिशत कार्य हिन्दी में होने लगा है और इससे उनके शाहूकों और उत्पादन विक्रेताओं को काफी सुविधा हुई है। इसी प्रकार दिल्ली की शिव नामक फर्म काफे मशीनों और रिजिस्टरों का उत्पादन करती हैं उन्होंने भी अपने अनुभव के आधार पर बताया कि भारतीय भाषा के प्रयोग से, विशेष रूप से हिन्दी के प्रयोग से व्यापारियों के उत्पाद की बिक्री अधिक होती है। और भी बहुत से उदाहरण दिए जा सकते हैं। पुराने दग को थोक मंडियों में तो अधिकांश व्यापारों अपना सा कामकाज हिन्दी में ही करते हैं।

५. गांधीबाबा के लोहा व्यापारियों और दिल्ली की ब विक्रेता समिति के सदस्यों से हिन्दी अपनाते के लिए निरन्तर सघ बनाकर प्रेरित करने वाले गांधीबाबा के श्री मोक्षप्रकाश जयप रक्षा सचालय में प्रथम अंग्रेजी के राजपति अधिकारी रह चुके अक्षय नगर में भी और अन्य वस्तुओं के विक्रेताओं/निर्माताओं भी वे इन्त्यर बनाए हुए हैं। विशेष हिन्दी का व्यवहार एक सबल सके। कांगपुर में केन्द्रीय तार पर की भी अंग्रेजीयन सराफ ने री बल्लों के माध्यम से हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिए अपनी से स अनिधान किया हुआ है। बाराणसी के श्री अमरीय नारायण रा-जीयक श्रीमत् निगम आदि के अधिकारियों और कर्मचारियों से स बढाकर हिन्दी का व्यवहार बढ़ाया है। हैदराबाद में श्री गव (विष पृष्ठ ४ पर)



## प्रवेश सूचना

“कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून” गुरुकुल कांगड़ी विश्व-विद्यालय से सम्बन्धित अनिवार्य आश्रम पद्धति पर चलने वाली अखिल भारतीय संस्था है। प्रथम कक्षा से लेकर विद्यालयकार (बी० ए०) तक शिक्षा देने का प्रयत्न है। विद्यालयकार में प्रवेश के लिये रेजिस्ट्रार गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से सम्पर्क स्थापित करे तथा सेवा १२वीं कक्षा तक आचार्यी कन्या गुरुकुल देहरादून।

उच्च प्रशिक्षण गिनिका वर्ग, पुस्तकालय, नैतिक शिक्षा, सार्ईस संगीत गुरुविज्ञान, सांस्कृतिक गतिविधि नन्धा की आचारभूत विशेषताय हैं। विस्तृत खेल के मैदान आधुनिक सुविधाओं सहित बड़े छात्रावास तीसरी कक्षा से संस्कृत एवं बच्ची प्रारम्भ। निर्धन तथा सुयोग्य छात्राओं के लिये छात्रवृत्ति देने की भी सुविधा है। मैट्रिक एवं इन्टर उत्तीर्ण कन्यायें भी प्रथम तथा तृतीय वर्ष में दाखिला ले सकती हैं। शिक्षा नि-मुक्त ही जाती है। १५ जुलाई से मई तक कन्याओं का दाखिला। प्रवेश के इच्छुक महानुभाव १०/- भेजकर नियमावली भगा सकते हैं।

दमयन्ती कपूर  
आचार्यी

## आर्ययुवक चरित्र निर्माण प्रशिक्षण शिविर

आर्यसमाज रेवाड़ी ने वेद एवं वैदिक धर्म के प्रचार और प्रसार हेतु विनांक २१ जून १९६१ से विनांक ३० जून १९६१ तक आर्य युवक चरित्र निर्माण प्रशिक्षण शिविर के आयोजन का निश्चय किया है। शिविर के अन्तिम तीन दिनों में आर्यसमाज का उत्सव भूषणम से आर्यसमाज रेवाड़ी के परिसर में मनाया जाएगा।

इस अवसर पर आयजगत् के प्रसिद्ध एवं विद्वान् उपदेशकों सप्तासियों एंव भवनोपदेशकों और व्यायाम आचार्यों को आमन्त्रित किया गया है।

इन सभी कार्यक्रमों में युवकों को विशेष रूप से चरित्र निर्माण, देश भक्ति की भावना, वैदिक सभ्यता एवं संस्कृति की रक्षा, ब्रह्मचर्य, श्रमशा, हवन, प्राणायाम आदि की यथावत् विधि, योगासन, दण्ड, व्रतक, साठी, कराटे, जूडो आदि का प्रशिक्षण दिया जाएगा। आठनों और उसके ऊपर की कक्षाओं के योग्य एवं स्वच्छ छात्र शिविर में प्रवेश पा सकते हैं। शिविर में भोजन, आवास, अन्वेषण आदि सभी नि-मुक्त होंगे।

शिविर में विद्यार्थियों को अधिक से अधिक भाग लेकर और सभी धर्मप्रेमी श्रायें जनों को तन, मन, धन से सहयोग कर आयोजन को सफल बनाना उचित है।

मन्त्री  
आर्यसमाज रेवाड़ी

## प्रवेश सूचना गुरुकुल कुरुक्षेत्र

१२वीं तथा १०-११ (कामर्ष एंव आर्ट्स) कक्षा हेतु—

श्रेणी	रिक्त स्थान	प्रवेश की अन्तिम तिथि
नवम	१५	२४-६-१९६१
१०+१	३०	२६-६-१९६१

अष्टम तथा दसम श्रेणी का हरियाणा शिक्षा बोर्ड का परियायाम क्षत-प्रतिक्षत रहा है। अष्टम में कुल ३२ छात्रों में से २० प्रथम, १० द्वितीय तथा एक तृतीय श्रेणी में पाठ हुआ है। बहुराजारी सुरेन्द्रकुमार ने ८३.३% अंक प्राप्त किये हैं। दसम श्रेणी में कुल १३ छात्रों में से ३ प्रथम तथा १० द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुये हैं।

आचार्य,  
गुरुकुल कुरुक्षेत्र

## गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में स्वाध्याय शिविर

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ का नियंत्रण सम्भालने पर २ जून से गुरुकुल परिसर में स्वाध्याय शिविर का आयोजन किया गया है। प्रतिदिन यज्ञ होता है और उसके परवत् स्वाध्याय तथा शंका समाधान आरम्भ हो जाता है। इस शिविर में आचार्य सत्यसिंह जी वैदिक प्राथम विज्ञान, सभा के उपदेशक पं० चन्द्रपाल शास्त्री, पं० हरिचन्द्र शास्त्री, सभा उपमन्त्री श्री सत्यवीर शास्त्री, वेद विद्यालय गुरुकुल के आचार्य हरिदेव जादि विद्वानों के प्रवचन तथा सभा के भवनोपदेशकों श्री वेमसिंह, स्वामी देवानन्द, पं० मुरारीलाल बेचन के भजन होते हैं। म० वरयोगसिंह आर्य, म० सुरचमल आर्यसमाज रोहता (सोनीपत), मा० ह्येराय आर्यसमाज मानपुर (फरीदाबाद) आदि स्वाध्यायशील आर्य भाई वैदिक सिद्धान्तों पर चर्चा तथा शंका समाधान करते हैं। गुरुकुल अरावली पब्लिस पर स्थित है और अब दो तीन बार यहाँ चर्चा हो चुकी है। अतः स्वाध्याय करने के लिए अनुकूल शान्त वातावरण बन गया है। चारों ओर हरियाली दृष्टिगोचर ही रहती है। भोजन तथा आवास की व्यवस्था है। स्वाध्याय के लिए गुरुकुल के पुस्तकालय में बहुमूल्य प्राचीन तथा नवीन पुस्तकें विद्यमान हैं। दैनिक समाचार पत्र भी वाचनालय में मंगवाये जाते हैं।

सभा की भजन मण्डलियां पं० मुरारीलाल बेचन, स्वामी देवानन्द तथा पं० केमचन्द गुरुकुल के चारों ओर के धर्मों में रात्रि को आर्यसमाज का प्रचार कर रहे हैं। स्थानीय आर्य कार्यकर्ता भी इस पुनः कार्य में तन, मन तथा धन से सहयोग कर रहे हैं। इन दिनों में जो आर्य भाई स्वाध्याय करने के इच्छुक हों वे गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में पहुँचकर स्वाध्याय शिविर में भाग लें। समय समय पर वैदिक विद्वान् भी पधारते रहते हैं।

—सभा मन्त्री

## आर्यसमाज प्रेमनगर करनाल

प्रधान—श्री ओमप्रकाश बच्चू एडवोकेट

उप प्रधान—र. जीत कुमार सोनी

मन्त्री— प्रेमकुमार दुग्गल

उप मन्त्री—प्रतापचन्द आर्य

कोषाध्यक्ष—दोषराज काठवासिया

सेवा निरीक्षक—विद्युत कुमार

पुस्तकालय—हरीश बुराना

(शेष पृष्ठ ४ पर)

युनू भी इसी प्रकार से प्रयत्न कर रहे हैं। जानर में श्री जगदीश प्रभाइ बंसल भी धरपने डंग से श्यापारियों से हिन्दी में काम करने के लिए सम्पर्क बनाए हुए हैं। उषर भारत सरकार ने भी धरपने सभी कागजातों को आदेश दिए हैं कि वे धरपने उत्पादनों पर माल के विवरण हिन्दी में भी अनिवार्य रूप से लिखाए और हिन्दी भाषी राज्यों की सरकारों तथा जनता के साथ धरपना पत्राचार हिन्दी में ही करे। भारत को राजधानी दिल्ली में स्थित मरकारी सुपर बाजार (जिसकी १०० से अधिक बालाएँ हैं) को सामान से जानेवाली बसियां अब केवल हिन्दी में धरपने लगी हैं। इसी प्रकार दिल्ली उपकोषता सहकारी बोर्ड बण्डारा (जो दिल्ली प्रशासन के धरपन्त है) की बसियां भी हिन्दी में ही छाप रही हैं। दिल्ली में सरकारी दूध की दुकानों पर जिन टोकनों की सहायता से दूध बिकता है वे भी केवल हिन्दी में बने हुए हैं। इस प्रकार कुछ चर्चा में जहाँ सरकारों कार्यालयों में हिन्दी का प्रयोग बढ़ा है वहाँ उद्योगपरियों और श्यापारियों द्वारा भी इसका अधिकाधिक प्रयोग होने लगा है।

९. अतः पाठकों से अनुरोध है कि वे भी धरपना अधिकाधिक कार्य हिन्दी में करना आरम्भ कर दें तथा अपने-अपने क्षेत्र में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिए धरपनायन चलाए जिससे कि जनता और शासक के आपसी सहयोग से हिन्दी का व्यवहार बढ़ सके।

## वैदिक साम्यवाद

—अरविन्द कुमार कमल, टोहाना (हिसार)

वेद हमारी संस्कृति के आधार स्तम्भ हैं। ये ज्ञान विज्ञान के मूल स्रोत हैं। इनमें विषय तथा आदर्शों विचार पाये जाते हैं। इनमें सारी सत्य विचारों का वर्णन है। इसलिये तो युगद्रष्टा महर्षि दयानन्द जी सरस्वती ने कहा "वेद सब सत्य विचारों का पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।" धर्म ही नहीं अपितु परम-धर्म है। गृही, बैकार की बात सारी मानव की स्वयं को कल्पना है। वेद उच्च चोषणा के साथ साम्यवाद का प्रतिपादन करता है। वेद में अनेकों मन्त्र हैं जो साम्यवाद का पाठ सिलसलाते हैं। कार्यात्मक ने अपने साम्यवाद की विचारधारा प्राचीन ग्रन्थ वेद से ली थी, किन्तु जब उसने स्वयं की बातें उसमें मिला दी तो उस विचारधारा का स्वरूप रूपित हो गया। आइये देखते हैं कि वेद के साम्यवाद का स्वरूप क्या है ?

सं गच्छन्मं सं वदन्मं स नो मर्नाति जानताम् ।।

देवा भाग यथा पूर्वं सजानाना उपासते ॥

—ऋग्वेद १०-१११-२

अर्थात् हे मनुष्यो ! तुम लोग मिलकर चलो। प्रेम प्रकृष प्राप्त में बात करो। तुम्हारे मन मिलकर सत्यासत्य निर्णय के लिये सदा विचार करे जैसे प्राचीनकाल के लोग, विद्वान् परस्पर विचार करते सत्यासत्य का निर्णय करते धर्म-अर्थ-उपभोग के भाग को प्राप्त करते आये हैं। उसी प्रकार तुम लोग भी प्राप्त करो।

व्यायस्वन्वचितितिनो वा वि शोष्ट संशायस्यः सधुराश्चरन्तः ।।

अन्योऽन्यस्यै वल्लु वदन्त एव सतीचीनान् वः समनसस्क्रुभोमि ॥

—अथर्व० ३।३०।४

अर्थात् हे मनुष्यो ! तुम लोग एक-दूसरे से बड़े और उत्तम गृण कुष्ठ होकर भी समान चित्त बाने होकर भी, समान कार्य के साधन को करते हुये, कभी एक-दूसरे से अलग मत होओ। आपस में मीठा तथा मधुर बोलते हुये परस्पर मिलो। समान रूप से एक ही स्थान पर इकट्ठे तुम लोगों को मैं (ईश्वर) समान मन वाला करता हूँ।

नमो वेष्टाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्वाजा चापरजाय च नमः ।।

मध्यमाय चापगल्भाय च नमो जयत्याय च वृक्ष्याय च ॥

—यजु० १६।३२

अपने से बड़े, अपने से आग्रु व पद में छोटे, पूर्व उत्पन्न तथा पीछे उत्पन्न, मध्यम, शूद्रता रहित, नीचे कम में लगे अर्थात् छोटे पर पर स्थित और सबके आश्रित पुत्र्य को दान सबको यथायोग्य सत्कार तथा पद प्राप्त हो। यह वैदिक साम्यवाद की उदात्त भावना है।

साम्यवाद का मूल मन्त्र—

समानो प्रथा सह बोधनमागः समाने योषन्ते महो नो युनक्ति ।।

सम्यक्चोर्जित सचर्याता नामिमिमाजितः ॥ अथर्व० ३।३०।६

अर्थात् तुम लोगों के जब पीने का स्थान एक हो, तुम्हारी भोजन-शाला एक हो। मैं तुम्हें एक स्नेह वस्त्र में बाँधता हूँ। तुम सब मिलकर उसी प्रकार परमात्मा की उपासना करो जैसे रथ के पहिये के धारों और धारे लगे होते हैं। मन्त्र में निम्न उपदेश है—'समानो प्रथा' हे मनुष्यो ! तुम्हारे अनासय, प्याऊ, कुण्ड आदि सब पीने के स्थान एक ही। अहाँ से समान रूप से प्रत्येक मनुष्य जब पी सके। हमने कुआरूत और हीमल की भावना दूर होगी।

'सह बोधनमागः' तुम सबकी भोजनशाला एक ही अर्थात् तुम लोग मिलकर भोजन का सेवन करो। क्योंकि प्रकैला खानेवाला पाप कमपाया है। परब्रह्मपिता परमात्मा का आदेश है कि मिल बैठकर खाना खाइये।

मोचमन्मं विन्दते धर्मपतिः सत्यं ब्रवीमि वच इत्य तस्य ।।

नार्यमण पुष्यति नो सत्याय केवलाधो भवति केवलादी ।।

—ऋ० १०।११।७६

अर्थात् जो व्यक्ति बिना कमाया हुआ भोजन प्राप्त करना चाहता है, जो अपने किसी मित्रियों का पीपण नहीं करता और न अपने साथी का पालन करता है। उसका ऐसा भ्रष्टार उसका नामा का कारण होता है। मैं सत्य कहता हूँ जो अकेला खानेवाला है वह केवल पाप का मागी है।

"इष्टं च वा एय पूर्वं च गृह्याममनाति य पूर्वोऽतिवेरमनाति ।।"

—अथर्व १-६-१

अर्थात् जो गृहस्थ बलिधि को बिना खिलाये स्वयं खा लेता है वह धरों की भी को ना जाता है अर्थात् नष्ट कर देता है।

यावद् अभियेत् जटार तावत् स्वत्व हि देहिनाम् ।।

अधिकं योऽभिमुख्येत स स्तेनो दण्डमर्हति ॥

—श्रीमद् भागवत ७।१।४

जितने से मनुष्य का पेट भर जाय उतने पर उसका अधिकार है। जो अधिक की इच्छा करता है वह चोर है, दण्ड के योग्य है। महर्षि दयानन्द जी लिखते हैं—

'सबको तुल्य भोजन, वस्त्र तथा आसन दिये जाय चाहे वह राजकुमार व राजकुमारी हो चाहे हरिद्र की सनतान हों ।।'

—सत्यायं प्रकाश ३ समु०

'समाने योषन्ते सह नो युनक्ति'—तुम्हें एक ही प्रेम-वस्त्रन में बाँधता हूँ। तुम लोग द्वेष रहित होकर 'अन्यो अन्यमभि ह्यत वत्स जानमिवाभ्या' वाला आचरण करो तथा सदा प्रेम पूर्वक प्रार्थन्यत रहो। 'मा धर्मिद्वदः' किसी से ईर्ष्या, द्रोह और वैर मत करो क्योंकि 'मिदो विद्वाना उप यन्तु मृत्यु' परस्पर वैर विरोध करनेवाले आपस में लड़ने बाने मृत्यु के शर बन जाते हैं। प्रतिज्ञा करे 'अव प्रिया अपूपत' हम प्रेममय होकर सबके दुःख दूर करें। विषटर हूँ नो ने लिखा है—Life is a flower of which love is the honey अर्थात् जीवन एक पुष्प है और त्यार उसका मधु है।

रुस आदि देशों में धर्म प्रचार नहीं हो सकता क्योंकि वे धर्म और ईश्वर को नहीं मानते। उन्हे की स्वतन्त्रता बराबर होने १५ क्य मन्त्री किसी पदो के बराबर उड़ सकती है ? लाने की स्वतन्त्रता हीं पर क्या बकरी हांमी के बराबर छा सकती है ? नहीं तो फिर ससां के लोग बराबर कंते हो सकते हैं जंसा कि रुस आदि साम्यवादी चाहते हैं। वेद कहता है—

अज्ञध्वन्तः कर्णवन्तः सत्यायो मनोजवेधसमा बभूवुः ।।

आदध्नास उपकसास उ त्वे ह्वा इव स्नात्वा उ त्वे ददधु ॥

ऋ० १०।७।७

अर्थात् सब मनुष्य एक सो इन्द्रियों से पूर्ण, एक ही समान शिष को लेते हुये भी विचारों व बद्धि की विविधता से एक जैसे नहीं हान इस कारण बुद्धि भेद को नहीं मिटाया जा सकता।

वैश व विश्व का कल्याण तभी होगा जब लोग वैदिक साम्यवा को ग्रहण करेये तथा स्वेच्छया से अधिक सामग्री का वितरण जबर मन्धो में करेये। मेरे से छीनकर कोई वस्तु दूसरे को दे दी जाये त मुझे दुःख होता किन्तु मैं उसी वस्तु को स्वेच्छया से दे दू तो मुझे दुःखी अनुभूति नहीं होगी। वेद जंसी उदार भावनायें कही और न मित्रियों। अन्त मे—

आवमो-अवमो भी जो बन जाए ।।

कष्ट सारे जहा का मिट जाए ॥

## योगिराज श्री कृष्ण की इच्छा

(रचयिता—श्री रामचन्द्र धर्म, आर्य निवास नलवा (हिसार)

जब जब होगा नाश धर्म मैं जन्म धारके पाऊँगा ॥

इच्छा से बास मेरी जन्म मुझ का कष्ट मिटाऊंगा ॥६६॥

बच कोए जल्मी और जबर से अकर्म को फलपावेगा ।

धर्म छोड़ कर अधर्म पर कोए पापों नीत बियावेगा ।

यज्ञ हवन तप दान छुड़ा कोए पाषण्ड घणा फंलावेगा ।

कोए भिराकार ईश्वर छोड़ भेंट बलि जीव चढावेगा ।

आके धर्म कायम कर दूँ जन पाप को परे हटाऊंगा ॥११॥

कोई बलशाली राजा बनके जो प्रजा पर जुल्म ड़ावेगा ।

पड़े अकाल भूलबरी में अपनी प्रजा को घणी सतावेगा ।

अध्याय का पल लेके धम ध्याय को नीचे दबावेगा ।

चोरी डाके लूटपाट पाप बच घणा बढता बाबेगा ।

मैं देखे राजा को अपने बल से नाब विराऊंगा ॥१२॥

नसे विषय में फंस प्राणी जीव को घणा सतावेगा ।

दूध वही को मयलन छोड़ मांस पे नीत बियावेगा ।

अगपासक गऊ माता को हुल्ये में नीच चढावेगा ।

गऊशाला बन्द करवा मधुशाला घणी सुलावेगा ।

मैं ऐसे नीच कुकर्मी को तड़फा तड़फा मरवाऊंगा ॥१३॥

मात पिता श्रीव शुद्धों के जो फज नही निभावेगा ।

ढेठा और बेसा बनके जो बड़ो से दवा कमावेगा ।

विद्या जिन जो मूख पाषण्डों पढित लूब कढावेगा ।

जात पात का अहर फंला जो धर्म कर्म मिटावेगा ।

प्राके दूँ पटकनी ऐसी पापों को सबक सिखाऊंगा ॥१४॥

ये आर्य मर्यादा से कदे जुल्म सहन करे कोण्या ।

फर्ज निभाते धरिदर बल्लम हो धारणा कदे भरे कोण्या ।

महापुरुषा जिन इस दुनिया का दुल कोए हरे कोण्या ।

सहानु बिना धर्म की रक्षा कोए धारमी करे कोण्या ।

लेऊँ जन्म ही वार मरके मैं अपना फर्ज निभाऊंगा ॥१५॥

'रामचन्द्र' कह इच्छा से ये पुरी करे भगवान् मेरी ।

पाप मिटावय धर्म बचावण हाजिर करदूँ जान मेरी ।

इसी मिवासा कायम करदूँ याद करे जहान मेरी ।

धर्म की खातिर हाजिर करदूँ उज बड़ो जवान मेरी ।

नलबे बासे मास्टर को धर्म का मान सिखाऊंगा ।

(पृष्ठ १ का अन्त)

(य) जन्म (अन्नाद, अन्त) —महर्षि इन शब्दों की व्याख्या में लिखते हैं—“अद् भस्ये” इस धातु से अन्न शब्द सिद्ध होता है ।

अद्यतेजित् को भूतानि तस्मादन्न तदुच्यते ।

अहमन्ममहमन्ममहमन्मन् । अहमन्नाहोऽहमन्मन्नाहोऽहमन्नाहः ।

(तैत्ति उपनिषद्) प्रजात बराचरप्रहवात्

यह व्याससंस्कृत शारीरिक सूत्र है । जो सबको भीतर रखने सबको बह्वन करने योग्य, बराचर अन्त का रहण करने वाला है ।

इससे ईश्वर के अन्न, अन्नाद और अन्ता नाम हैं । जैसे सूखर के फल में कृमि उत्पन्न हो के उसी में रहते हैं और नष्ट हो जाते हैं वैसे परमेश्वर के बीच में सब जगत् की अन्नस्था है ।

(सं प्र० प्रथम समुत्थास)

यहाँ महर्षि ने प्रधान रूप से अन्न नाम की व्याख्या की है, अन्नाद और अन्ता तो कल्प शब्द की व्याख्या में प्रस्तुत किए गए हैं ।

अतः यहाँ एक अन्न श्रावण का ही प्रश्न करण (१०-२=१००)

प्राणित निवारण (१) श्रीवास्तव जी का मत है कि ईश्वर के १०० नामों की गणना में केवल ईश्वर के गौणिक नामों का ही प्रह्वण करना चाहिए । ईश्वर के मुख्य निच नाम 'ओम्' का नहीं ।

यद् अहर्षि के तात्पर्य के विषय है । 'महर्षि ने संतर्षाप्रकाश' के 'प्रथम समुत्थास में ईश्वर के मुख्य नाम ओम्' को तथा अन्य गौणिक मुख्य नामों की भी व्याख्या की है । अतः ईश्वर के दो नामों की गणना में मुख्य श्री गौणिक दोनों प्रकार के मनोकोषी गणना करना उचित है ।

मुख्य को छोड़कर गौणिक को प्रह्वण करना, अर्थात् उचित नहीं—

“गौणनुस्ययामु” के तात्पर्यभावतः । महर्षि के विद्वान् के अनुसार 'ओम्' नाम ईश्वरके ही गौणिक नामों का प्रह्वण नहीं है । इसमें ईश्वर के सभी नामों का अन्तर्भाव ही जाता है । फिर ईश्वर के नामों की गणना में सबसे महत्वपूर्ण 'ओम्' नाम को छोड़ना अर्थात् गौणिक ही नहीं हो सकता ।

(२) श्रीवास्तव जी ने 'प्रश्न श्रीर प्राज्ञ' के अनुसार अपने में कोई अन्तर न होने के आधार पर धारणा-परमात्मा ईश्वर-परमेश्वर क्रमशः पिता-पितामह-प्रपितामह नामों में एक-एक तथा दो नामों को कम करने की बात कही है, जो ठीक नहीं है । क्योंकि महर्षि ने इन शब्दों के पृथक्-पृथक् अर्थ लिखे हैं, जो निम्नलिखित हैं—

धात्वा—जो सब जोष धारि जगत् में ध्यायक हो रहा है ।

परमात्मा—जो सब जीव आदि से उत्कृष्ट श्रीर जीव प्रकृति तथा धारणा से भी प्रतिबुद्धम और सब जीवों का अन्तर्गामी धात्वा है । जिससे ईश्वर का नाम परमात्मा है ।

ईश्वर—जिसका सत्य, विचार, योग, ज्ञान श्रीर अन्तर्ग एश्वर्य है, इस उस परमात्मा का नाम ईश्वर है ।

परमेश्वर—जो ईश्वर अर्थात् समर्थों में समर्थ जिसके तुल्य कोई भी न हो उसका नाम परमेश्वर है ।

पिता—जो सबका रक्षक जैसे पिता अपनी सन्तानों पर सदा कृपातु होकर उनको उन्नति चाहता है वैसे परमेश्वर सब जीवों की उन्नति चाहता है इससे उसका नाम पिता है ।

पितामह—जो पिताओं का भी पिता है, इससे उस परमेश्वर का नाम पितामह है ।

प्रपितामह—जो पिताओं के पिताओं का पिता है, इससे उस परमेश्वर का नाम प्रपितामह है । अतः स्पष्ट है कि श्रीवास्तव जी का धात्वा परमात्मा ईश्वर-परमेश्वर, पिता-पितामह-प्रपितामह, इन नामों में से अर्थ के आधार पर क्रमशः एक-एक तथा दो नामों को कम करने की बात कहना असामुचित ही है । पुनः कृपाया महर्षिप्रश्न प्राज्ञ (प्रश्न) शब्द का अर्थ पंडित 'शास्त्रबोधने' प्रयुक्त इस धातु से प्रज्ञ और इससे तद्विदित प्रत्यय करने से प्राज्ञ शब्द सिद्ध होता है । यः प्रकृष्टतया प्राचरत्य जगतो व्यवहारं जानाति सः प्रज्ञः । प्रज्ञ एव प्राज्ञः । जो निरान्त ज्ञानयुक्त बराचर सब व्यवहार को जानता है, इससे ईश्वर का नाम 'प्राज्ञ' है । (सं प्र० प्रथम समु०)

महर्षि ने यहाँ प्राज्ञ तथा प्रज्ञ शब्दों के पृथक्-पृथक् अर्थ नहीं किए हैं । उन्होंने यहाँ प्राज्ञ शब्द की सिद्धि में प्रज्ञ शब्द का उल्लेख किया है धात्वा परमात्मा आदि शब्दों की प्राज्ञ-प्रज्ञ शब्द की तुलना करके ईश्वर नामों को कम करने का सुझाव देना सुसाहज भाव ही कहा जा सकता ।

सारो—इस लेख का सार यह है कि सत्याप्रकाश के प्रथम समुत्थास में ईश्वर के गणना में १२० नामों का वर्णन किया है । उनमें १२ नामों की पुनरावृत्ति की गई है । अतः १२०-१२=१०८ नाम शेष रहते हैं । आठ नामों का उल्लिखित विधि से समाधान करने पर १०० नाम ही शेष रहते हैं ।

मुझे आशा है कि माननीय श्रीवास्तव जी अपने मन्तव्य पर पुनर्विचार करेंगे । ईश्वर के १०० नामों पर पुनः पुनः लेख लिखने के लिए मैं श्रीवास्तव जी का हार्दिक धन्यवाद करता हूँ ।

सुब्रह्मण्येय धारणा

हरिद्विह काकोनी, रोहतक

### विज्ञापन

२८ वर्षीय उद्योगपुरुष—दृष्ट-दुष्ट कार्य—दुष्ट एच. ए., बी. एच. सेवा में कार्यरत धारणा का प्रेस-धारणा लौकिक रूप १९११ 'श्रीर मुनिया, श्रीर लखनऊ, श्रीर का.प्राचीनार के लिए सुयोग्य कर्मा काकोनी पढ़ी हुई, यद्यपि का कोई सम्बंध नहीं । आर्य पत्रिका को ज्ञानविज्ञान । सफल करे—

श्रीर रामचन्द्र धर्म  
श्रीर योगिराज श्रीर  
श्रीर विज्ञान विज्ञान

# सुख, शान्ति और आनन्द

सुख, शान्ति और आनन्द इन तीनों में से सबसे महत्वपूर्ण तो आनन्द है जो मनुष्य जीवन का उद्देश्य होता है। परन्तु इसके पूर्ण शारीरिक सुख व मानसिक शान्ति भी साधन रूप में प्राथमिक है। इन तीनों में से सर्वप्रथम है सुख।

सुख—सुख शरीर के लिए होता है और बिना अर्थ के शारीरिक सुख ही नहीं सकता। क्योंकि शरीर के लिए बिना-जिन उपभोग पदार्थों की आवश्यकता होती है उनके बिना सुख नहीं मिल सकता तभी कहा गया है—

यत्कामास्ते जुहुवस्तानो वस्तु वयं स्याम पतवो रथोगाम् ।  
॥८०१०१२११०॥

(यत्कामाः) जिस-जिस पदार्थ की कामना बाते होकर हम लोग धर्मिक करने (हे) आपका (जुहुमः) आश्रय लेते और ब्राम्हण्य कर (तत्) उस-उस की कामना (नः) हमारी (वस्तु) सिद्ध होने, जिससे (वयम्) हम लोग (रथोगाम्) अन्वेषकों के (पतवः) स्वामी होंगे। विवाह संस्कार को सत्यपदी विधि में भी कहा गया है कि—रायसोचाय विपयो बभ। सुख सारणों से हम खूब बनोपार्जन करें। हम बिना धन के निर्धन, धीम होकर कभी सुखी रह ही नहीं सकते। इसीलिए तो हम परमपिता परमात्मा से नित्य प्रति संध्या के माध्यम से प्रार्थना किया करते हैं कि हे प्रभो! भवोनाः स्वाम वरुणः वरुण—हम अदीन होकर ही क्यों लक्ष जीवें। वेद में अगह-अगह पर धन को मांग की गयी है। क्योंकि भौतिक शरीर के लिए भौतिक साधन अनिवार्य हैं। अतः बिना अर्थ के सुख नहीं मिलता लेकिन यह खड़े कि—

धन खूब कमा, सुख धन मान, पर पैसा कोई अपराध न कर ।  
प्रपत्ता घरदार बनाने को बीरों का धर बरवाद न कर ॥

धन है शान्ति—शान्ति मन के लिए होती है मन की इच्छाओं (कामनाओं) की पूर्ति न होने से व्यक्तिक के मन में अशांति हो जाती है, वैचैनी हो जाती है। मनवान् धी कृष्ण ने पीता में कहा है कि—

काम एव क्रोध एव रजोगुणसमुत्पन्नः—रजोगुण से उत्पन्न हुआ यह काम ही क्रोध है और क्रोध का ही दूसरा नाम अशांति है। कहते का शान्ति यह है कि काम की पूर्ति न होने से क्रोध उत्पन्न होता है। इसलिए "सन्तोषामृतवृत्तानाम्" जब हम सन्तोष रूपी अमृत से तृप्त होकर अपनी प्राकृतिकाओं, कामनाओं पर (सन्तुष्टि) सन्तोष कर लेते हैं तब सब धन, शान्ति रूपी धन के सामने प्रसिद्ध हो जाते हैं। कहा गया है कि—

गोचन, बबचन, वाचिचन, और रत्नचन लान ।  
जब आवे सन्तोष धन सब धन पूँछ समान ॥


धन अर्थिक है आनन्द—आनन्द आत्मा के लिए होता है, और आनन्द केवल परमात्मा ही है तथा परमात्मा केवल आत्मा का विषय है कि इन्द्रियों का। अतः हम परमात्मा के सान्निध्य में जाकर ही आनन्द प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि जो जिस वस्तु को देने में समर्थ हो और उससे वह वस्तु अपनी भाव तो सभी मिल सकती है। वह परमपिता परमात्मा ही एक आनन्दस्वरूप है जिसके पास आनन्द का स्रष्टार है। अतः हम उस अमृत के चरणों में समाहित होकर उस प्रभु के श्रुतों को अपने में धारण करें। आनन्द धार्मिक है जो अर्थपूर्ण है, किन्तु किन्हीं भी समझने के लिए कहना पड़ता है। वास्तव में आनन्द एक वह अंश विद्यते है जिसको प्राप्त करने के बाद सांसारिक वस्तुओं की विनाशा समाप्त हो जाती है इसलिए तो हम परमात्मा से प्राथना किया करते हैं कि हे प्रभो! मृत्योर्मां धमृतं गमयेति—मृत्यु रूपी सुख से हटाकर अमृत रूपी मोक्ष को और ले चलिसे। हम नित्य प्रति योगाभ्यास के माध्यम से परमात्मा की प्राप्ति करें। परम-आनन्द जिससे बहकर आने आनन्द की सीमा न हो, अर्थात् जिसको प्राप्त कर बोधना की प्राकृतिकाओं समाप्त हो जाती है उसे परमानन्द कहते हैं। इसलिए यह कहते हुए कि—

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुपुत्र सखा त्वमेव ।  
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मन देव-देव ॥

धर्मात् आप ही हमारे माता, पिता, बन्धु, सखा, विद्या, धन तथा सर्वस्व उपास्य देव हैं अपने आपको वर्णन कर दें। तभी हम सुख शान्ति से जीवन व्यतीत कर सकते हैं। प्रभु हमें शक्ति व सामर्थ्य दें जिससे कि सबके शरीर के लिए सुख, मन के लिए शान्ति और आत्मा के लिए आनन्द की प्राप्ति हो सके।


लेखक—जीवनार्थ वाचस्पति पुरोहित आर्यसमाज हौसे  
स्नातक—दयानन्द ब्राह्मणमहाविद्यालय दिल्ली

## दंतों की हर बीमारी का धरुवू इलाज




### दंत मर्जिन

दोषा युक्त




महो की सुजन


23 जड़ी बूटियों से निर्मित आयुर्वेदिक औषधि




सुह की सुजन



उमा मां पात्री लखना



आज तबो पैकिंग में उपलब्ध



जात का सर्व

महाशियां वी हट्टी (प्रा०) लि०

B/44, इन्दिराप्रस्थ (पुनः) नवीन अरव १०० दिल्ली 15 फोन 53860 537961, 537341

## हरयाणा के अधिकृत विक्रेता

१. मेरठ परमानन्द साह्यदितामध, पिनारो स्टैंड रोहतक ।
२. मेरठ फूलचन्द शीताराम, पांथी चौक, हिसार ।
३. मेरठ सन-अप-एजेंट्स, सारंग रोड, सोनीपत ।
४. मेरठ हरीश एजेंसी, ४६१/१ गुडगावा रोड, पानोपत ।
५. मेरठ बनवानदास देवकीलम्बर, शरीफ बाजार, करनाल ।
६. मेरठ बनरामदास शीताराम बाजार, चिबानो ।
७. मेरठ कृपाराम गोयक, एडो बाजार, सिरसा ।
८. मेरठ कुचवत्त पिकल स्टोर्स, शाप नं० ११४, पार्किट नं० १, एन-आई-टी-०, फरोवाबाद ।
९. मेरठ सिमला एजेंट्स, सारंग बाजार, मुझवा ।

(पृष्ठ २ का अन्त)

दिल्ली में विदेशी सरकार के शौट एक्ट के विरोध में जलूस निकल रहा था। लोगों ने नर नारी उसमें सम्मिलित थे। शालक शरत् से सम्बन्धित लोगों को बागे जाने से रोक दिया। दिल्ली के निहत्थे जनता सन्त सम्बन्धित लोगों की सेवा के सामने खड़ी हो गयी पर यह क्या? एक ऊँचे कद का संग्रामो जलूस के सामने कहीं से आकर खड़ा हो गया। दूसरों की पीछे धकेला और अपनी छातों साक करते हुए कहा "इन लोगों को बाद में पहले मुझे गोली से उड़ाको। यह क्या? संगीन मुक गयीं। दिल्ली में स्वामी अष्टानन्द के जय जयकार के साथ जलूस शाक के साथ निकला।

आप भी अपने मन को निरसकल्यताला तथा दुःख निरचय बनाइए और धन विद्या अर्थ पद तथा सद्गुण प्राप्त करने में ही संकल्पवर्तिता का उपभोग करें तथा अपने संकल्प को पूरा करते ही नो से भी न हटें।

### उनको कोटिक नमन हमारा

भावभूमि की रसा के हित,  
करते प्राणों का उत्कर्ष।  
स्वतंत्रता की वेदी पर जो,  
करते दलियों का संघर्ष।  
सारी भरती के सम्मुख जो,  
रखते देश-धर्म का मान।  
भावभूमि का, कृष्ण-कृष्ण चिन्मय,  
करता रहता है धर्मियान।  
जिनके सम्मुख नतमस्तक हो जाता महिमन्धक सारा।  
उनको कोटिक नमन हमारा ॥

निज प्राणों का मोह छोड़कर,  
रथ में कदम बढ़ाते जो।  
कर खर्वस्व निष्ठावर अपना,  
मां हित शीघ्र बढ़ाते जो।  
जिनको देश प्रकम्पित होते,  
बुद्ध-बांध सितारे हैं।  
जिनकी शरिमा के सम्मुख,  
नत होते मस्तक सारे हैं।  
निज मोरत्य प्रदक्षित करके, तीव्र डालते बन्धन कारा।  
उनको कोटिक नमन हमारा ॥

सिंह-बर्षा करते भोग्य,  
रथ-कौशल दिखवाते हैं।  
सीमाओं से भावभूमि की,  
हुमन मार बघाते हैं।

जो धरिय हा जुड़ किया,  
करते रहते दूकानों में।  
गोद सजाते भावभूमि की,  
श्यानों से, बलिदानों में।  
मोड़ दिया करते हैं निर्मम, प्रबल प्रवाहित बच-भारा।  
उनको कोटिक नमन हमारा ॥  
राधेश्याम शार्य विद्यानाथस्ति  
मुबारकखाना, सुल्तानपुर (उ० प्र०)

### भजन

तयं—बस हर कदम सम्मल कर.....।  
एतदानमन्त्र बन्धे दे प्रभु गुण न नाया।  
दिये उससे सकल पदार्थ तेरे सम्मल न जाया।  
बच में लयी है विचयी इस पौज बन्ध बचते।  
पुन-पुन का विश है बनकर सरकार से है जाया ॥१॥  
पर देखो परमपिता ने दिया बन्ध हूयं जैसा।  
नेसगिक जीबमात्र ने है यूही साध उठाया ॥२॥  
भावभु न जब भी देखर कितनी कृपा करी है।  
कस अन्न धारि देकर कुछ टैफस न सगाया ॥३॥  
बन भाग्य बाम धरती प्रकृति ने जब नितरासी।  
तनिक मन में जरा विचारो ने किसके लिए बनाया ॥४॥  
अम्माय भोर है अजर उसको याद किया ना।  
“जीवन” गुनहरा देकर जीना जो हूयें सिखाया ॥५॥  
वे—जीवनार्थ पुरोहित ज्ञानसमाज हासी

# गुरुकुल

## कांगड़ी फार्मसी की

### आयुर्वेदिक औषधियां सेवन कर स्वास्थ्य लाभ करें

**गुरुकुल च्यवनप्राश**

पूरे सौरभ के लिए शक्तिवर्धक एवं शक्तिवर्धक रसायन।  
उत्तम, उच्च व शारीरिक एवं शैक्षणिक को सुदृढता में उपयोगी आयुर्वेदिक औषधीय द्रव्य।



**गुरुकुल पायकिल**

हॉर्मोन व शरीर के संतुलन में वैदिक शक्तिवर्धक के लिए उपयोगी आयुर्वेदिक औषधीय द्रव्य।



**गुरुकुल चाय**

उत्तम व शक्तिवर्धक, उत्तम आरि में बड़ी सुदृढता से बनी नाथकारी आयुर्वेदिक औषधीय द्रव्य।



**गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी हरिद्वार (उ० प्र०)**

शाखा कार्यालय: ६३, गली राजा केदारनाथ  
चावड़ी बाजार, दिल्ली-११०००६

### गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी

### हरिद्वार

की औषधियां सेवन करें।

शाखा कार्यालय  
६३ गली राजा केदारनाथ,  
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

स्थानीय विक्रेताओं एवं सुपर बाजार से खरीदें  
फोन नं० २६१८७१

\*अकर-ईसाक-२०५३

धार्म्य प्रतिनिधि सभा हरपाथा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदवत धारणी द्वारा धार्यार्थ/प्रतिदिन मेल के लिए सर्वहिलकारी मुख्यालय रोहतक से



# सर्वोच्च न्यायालय

## आर्थिक प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—सुबोधिन महाप्रभारी

सम्पादक—वेदवत शास्त्री

सहसम्पादक—प्रभाशिवी जिज्ञासकार ए००६०

वर्ष १८

अंक ३०

२८ जन. १९६९

वार्षिक शुल्क २००

(त्राजीवन शुल्क ३०९)

विदेश में ८ पौड

एक प्रति ५५ पैसे

## महापुरुषों की विशेषता

(१० बमदेव 'मनोमो' जेठनाथ मुन्कूल कानवार)

१-युगप्रवर्तक महापि दयानन्द जी महाराज इस आचार्यवंत देव में पैदा हुये। ऐतिहासिक ब्रह्मचर्यवन लेकर, गुजरात से गंगोत्री जलसन्धना तक, जेहलम से कलकत्ता तक पैदल घूम-घूमकर सत्य समाज आर्य संस्कृति का पुनरुद्धार किया। वेदों के भाष्य करने के धार्यों के हाथों में दिये। उन्हीं की उज्ज्वल बुद्धि ने देश की कुुरीतियों पर कुठाराघात किया और स्वदेश प्रेम व स्वराज्य का सुन्दर सन्देश आर्यों को देकर मुर्दा ही बात में जान डायरी। अपने कार्य को चलाने के लिए एक क्रांतिकारी पवित्र संस्था आर्यसमाज बनायी। आधुनिक भारत के पंच-अवसंकेत बने और सबसे पहले स्वदेशी राज्य का बोध उन्हीं किया जबकि यह कांग्रेस पैदा भी नहीं हुई थी। महापि दयानन्द जी महाराज आत्मकाय परमविरसत श्रुति थे, परन्तु धार्यों के लिये चक्रवर्ती राज्य की जगह-जगह पर धार्यना की है। स्वदेशी आन्दोलन के प्रथम प्रवर्तक थे। वेदान्त अनुपपन्नान को पटुर्चनना चाहते थे। इस सब में उनके व्यक्तिगत जीवन की कोई चार्इ नहीं थी। वेदों के महापि आत्मकाय थे। प्रयुक्त राष्ट्रवक्त थे।

२-इस राष्ट्र में अनेक बार दुर्दिन आये। इसने कंस का राज्य देखा। विद्वान् विद्वान् बंधु, बहुगौरी और ३० राजाओं की कंस कर रखा था। दुर्बलिक का राज्य भी देखा, जो बिना युद्ध के भाइयों की सुई की नोक भर स्वागत नहीं देना चाहता था। उसने कृष्ण को कहा— "वानामि धर्मं न च वे प्रकृतिः। वानामि धर्मं न च वे निवृत्तिः।" धर्म को जानता हूँ, परन्तु उसमें सचि नहीं, अधर्म को जानता हूँ उसे छोड़ने की इच्छा नहीं। आर्यों वाक राष्ट्र को भीम अर्जुन की धपेसा कृष्ण की बहुत अधिक आवश्यकता है। जो केवल शक्ति ही नहीं परन्तु नीतिनिपुण हों और बुद्धियुक्त रणकीशल से रणसंघ कुचलेन में विजय प्राप्त करें।

३-मर्यादा पुरुषोत्तम राम चौदह वर्ष वनवास में रहे तो भरत ने वनवासी बनकर अयोध्या में १४ वर्ष गुजारे। १४ वर्षों के उपरान्त जब श्रीराम अयोध्या धार्ये तो बड़ा उत्साह था। भरत ने पूछा राज्य ही वर्षा होती रही, अन्न की कमी तो नहीं हुई और फिर दूसरों से बड़े प्रेम से धूल-सिसकर दातें करते रहे। भरत जी को रंज हुआ कि मैंने चौदह वर्ष गद्दी पर खडाऊँ रहे, बनीन पर नीचे सीधा फिर भी मुझसे कोई बात ही नहीं की। जब सब चले गये तो भरत ने चरण छुये पूछा कि मुझसे आज नाराज क्यों हैं, राज्य की कोई बात ही नहीं पूछी। श्रीराम जो ने उत्तर दिया भरत संसार में तुम जैसा अनुज भाई मिलाना कठिन है। तेरे प्रति कितना स्नेह मेरे हृदय में है वह धवलंगीनय है। मैंने सबसे पहले आपसे पूछा कि समय पर वर्षा होती रही। राज्य में अन्न की कमी नहीं हुई। इसमें तुम्हारी सारी कार्य-कुशलता निहित थी। बोझों कंसे तुमसे कुछ नहीं पूछा, भरत जो शास्त्र हीमये।

४-समर्थगुरु रामदास जी के उपदेशों ने सिवाजी के अन्दर वह सामर्थ्य भरदी कि जिसने फ्रांसकजाहिर्यों की जड़ें हिलादी। औरंगजेब के आतंककाल के शासन में एक कार्यराष्ट्र की स्थापना करवा दी। मुसलमान आततायी आर्यदेवियों पर धरत्ताचार करते थे परन्तु मरहटा सम्राट सिवाजी ने मुसलमान धोरतों को सम्मान के साथ उनके घरों को वापिस किया, बुराई की नकल नहीं की, बुरों के सामने एक थोठ चरित्र की उपमा रही।

५-बलियाँवाले बाग भद्रतसर के जनसंहर का काण्ड होयुका था। चाखनी चौक दिल्ली में बरूस का नेत्रुत्व कर रहे स्वामी यद्वानन्द जी ने सब गौरी फौज की संगीने लगी देखी तो धपनी छाती बाये तानरी। वह हिम्मत केवल वीरमक्त में ही होती है। आत्मवृत्त, आत्मबलिवानी ही इस प्रकार की ज्ञानिता ला राबेये। स्वामी यद्वानन्द जी वे आत्मवृत्त वाहुति देकर राष्ट्र को कितने बहुभुष्य रत्न दिये। ऐसे ही वे होये जिनके अन्दर स्वार्थ नहीं, जिन्हें किसी के साथ व्यक्तिगत द्वेष नहीं, वही महाराष्ट्र विपुलियों ही राष्ट्र को जगा सकेंगे।

६-राजर्षि चाणक्य के साक्षा जीवन ऊँचे विचार के राष्ट्र को सम्मानयुक्त बना दिया। परचित देख को विषयी बना दिया। किस तरह चन्द्रयुक्त को चक्रवर्ती सम्राट बनाया। जबकि स्वयं कीपीन-वारी कृटिया में निवास करते थे।

७-हकीकराय छोट्टे से बालक के सामने अल्ताद तलवार लेकर खड़ा है। काजी निर्णय देता है कि या तो इस्लाम कबूल करो वरना मृत्युदण्ड भोगना होगा। माता परनी सामने खड़ी हैं बाहुती हैं कि किसी तरह हकीकत का जीवन बचाया जाये। वीर आर्य पर न आर्यों के, न परिवार के मोह ने प्रभाव डाला, वह विद्वान्त श्रीर धर्म पर अडिग रहा। संसार को संस्कृति की बक्ति का पाठ पढ़ा अपने यश को अमर कर गया।

८-सहीद-ए-आजम भगतसिंह जो लाहौर पुलिस हेडक्वार्टर पुलिस अधिकाारी साइंस को गोली मारकर भाग सका था, वही भगतसिंह दिल्ली के एसेम्बली हाल में बम्ब फेंकर भाग सकता था। उसने स्वयं अपने धापको पकडवाया। हाईकोर्ट के जब ने अपना फंसला बहुत चाद में सुनाया। सहीद-ए-आजम ने तो उल्टी समय अपने जीवन का फंसल कर लिया होगा जब बम्ब फेंकते की योजना स्वीकार की होगी। कितनी निर्ममता, निर्भीकता है। यह है राष्ट्रभक्ति जो कि इतना महा व अदम्य बल प्रदान करती है। इन्ही राष्ट्रवीरों का फाँसी की सजा सुनकर खून बढता है, चेहरा चमक उठता है। गाते-गाते फाँसी के तल्ले की ओर कदम बढाते हैं। वे प्रसन्न होते हैं कि जीवन की जो योजना बनाई थी वह सफलता के अन्तिम चरण में

(षिप पृष्ठ ७ पर)

# जीवन संगीत

(चमत्कार एम. ए. H-६४ अशोक विहार दिल्ली-२२)

परमात्मा ने सृष्टि की कुछ ऐसी अद्भुत रचना की है कि बरबों बचें बीते पर आज भी बड़े-बड़े वैज्ञानिक, विचारक, भाषार्थ (साधारण लोगों की तो बात ही क्या) इस रचना को देखकर पकित हैं और इसको अपनी समझ के बाहर की बात कहकर घबरेले में पड़े हैं। वेब में ठीक छोड़ें कहा है :-

“पश्य देवस्य काव्यं न ममार न जीयति”

यह संसार अपनी निरासी छवि लिए उस महान् सिल्पी की सत्ता और कार्यकुशलता की याद दिला रहा है। यह सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र और पृथ्वी तथा अनेक ग्रह-उपग्रह उस जगत् नियन्ता के विधि-विधान में बने हुए परस्परोपकारिता से कार्य करते हुए अपनी-अपनी नैसर्गिक पति से एक दूसरे के पीछे प्रेम करते हुए दिन-रात और पर्व-वस्तुओं की भाँति जैसी अद्भुत चमत्कारी वस्तुओं का मानस प्रकाश के निर्माण करते हुए सचमुच उस महान् नियन्ता की कारिणी की दर्शा रहे हैं। किसी कवि ने इस सुन्दर विचित्रता को देखकर इन दो पंक्तियों में अपने मान इस प्रकार मायिक शब्दों में व्यक्त किए हैं :-

“रचना इस संसार की, तेरी याद दिला रही,  
जिस वस्तु को देखिए, तेरे ही गुण गा रही।”

## अद्भुतता में अद्भुतता

परन्तु इस अद्भुतता में ओ एक और अद्भुतता यह है कि इस अद्भुत रचना (सृष्टि) में मानवदेह को ही उस महान् कर्ता की सर्व-श्रेष्ठ, आश्चर्यजनक कृति कहा गया है।

वेदों, शास्त्रों, उपनिषदों और तथा प्रश्नोत्तरों में इस मानव काष्ठा की सम्बन्धिता के सम्बन्ध में बड़े काव्यपूर्ण ढंग से वर्णन किया गया है :-

- (क) एवं वपु निर्वचय्य जनावचरितम् — ऋग्वेद ५।४५।४
- (ख) एवं लोकाः प्रियदातो देवानास्यदातः (अथर्ववेद ५।३।१।१७)
- (ग) प्राणस्यः पुरुषस्यानुसोत् सं-संभुवत्,  
सुवृत्तं इदंविभुं सुभुवो ज्ञानं सुभुवत् — ऋग्वेदोपनिषद्
- (घ) नहि अनुसक्तं शोषिताय च्छित्तित्त्वं  
प्रमत्तं शोभितः प्रब्रज — शान्तिपर्व-महाभारत

परन्तु प्रभु की महान् कृति यह मानवदेह सर्वश्रेष्ठ होते हुए भी परिपूर्णता, ज्ञानदान, अज्ञान पराजय की न्याय प्रकाशक है। इसकी विरचना का कोई निदास नहीं है। वेब में ठीक ही तो आया है :-

- (क) अमलत्वे को निषकनम् पशुं तो वसतिष्ठता — ऋग्वेद-१०।६७।४, यजुर्वेद-३५।४
- (ख) तव शरीरं पतयिष्यन्ते तव पिता तव प्रभुर्वात् यजुर्वेद-२६।२२

- (ग) यह तन है कपल यज्ञ, लिए फिरे है साथ  
कम्हा लागी पुटिया, कुछ न आये हाथ — सन्त कवीर
- (घ) कर्मात्पुं शरीरम् यजुर्वेद-४।१५

ऐसी अस्वादि और अस्वगुण होने के बावजूद भी यह कृति एक चमत्कारी वस्तु बनकर रह गई है। जिसका परायण और कोई नहीं शेष पड़ता। जन्म से लेकर मरण पर्यन्त इस शरीर में स्वतः ही तीन चार प्रकार के परिवर्तन होते हैं। यथात् यह चार प्रकार की अवस्थाओं को प्राप्त होता है। इस अद्भुतता को देखकर बड़े-बड़े वैज्ञानिक पकित हैं। योगिराज कृष्ण महाराज ने इन अवस्थाओं का भीता में धर्मेन्द्र की इसको नवचरता का उपदेश देते हुए इस प्रकार वर्णन किया है :-

देहिनी प्रसिम्भ यथा देहे कोमार योवन जरा ।  
तथा देहान्तरप्राप्तिर्वीरस्तत्र न मुद्यति ॥ — गीता २।१३

इस बात को वेब में बड़े काव्यपूर्ण ढंग से बड़े मायिक शब्दों में बूँ वर्णन किया है :-

विष्णु दशाष्ट समने बहूनां युवानं सन्तं पतितो जवार,  
देवस्य पश्य माहित्वा अथा ममार स ह्यः समान  
— ऋग्वेद १०।१५।४, सामवेद २२।१।१०२

सच जानिए कि जीवन की ये चार अवस्थाएँ विद्युत्, कुमार, योवन और जरा ही जीवन-संगीत है। इसी को उर्दू भाषा में “शरानाए जिन्दगी” और आरविल में “Psalm of Life” नामों से पुकारा गया है। सारा संसार ही इन चार अवस्थाओं और घमट में मृत्यु का ही खेल है।

परन्तु इस विस्मय संसार में एक विचित्र ही बात यह है कि बहुत शीघ्र वृष्टिगत करने से पता चलता है कि साधारणतः इन संगीतमय चार अवस्थाओं वाली मानवदेह से मिलती-जुलती और कोई अन्य वस्तु दिखाई नहीं देती अर्थात् ऐसी और कोई वस्तु नहीं है जो अपनी पेशाव से लेकर प्रसूत तक इन चार अवस्थाओं की शोचक हो। परन्तु निराशा की कोई बात नहीं, यहाँ क्या कुछ नहीं मिलता है। जैसे महाकाव्य महाभारत इन्द्र के शारंग में ही इसके निम्नता स्वयं देवव्यास जी ने लिखा है कि इसमें बर्बादावन, अर्बशावन और प्रोक्ष सम्बन्धी सब कुछ भागया है और यहाँ तक लिल दिया है कि जो कुछ इसमें है वह शीघ्र किसी भी स्थान में नहीं है :-

मथिहासित तदव्यय, यमोहासित न तत् वचचित्

जैसे ही शोक करने पर मानवदेह से मिलती-जुलती चार अवस्थाओं वाली आशिरस मिले ही गई—“दरिया” के रूप में। लगभग ८० वर्ष हुए (जब मैं दूसरी कला का विद्यार्थी था) मुझे एक नवम (कविता) एक उर्दू की छोटी-सी पुस्तिका में “दरिया रीज्यो” पढ़ने को मिली, वह कविता यूसुफ़ प्यारी लगी, उसके सम्बन्ध में उस समय मेरे मित्रान् कुछ-और-से, परन्तु कालान्तर में उसे सचय-सचय पर धुननुवाते रत्नक उसके रहस्य का चिन्तन कर-प्रौर ऊपर लिखे देवमन्त्र (विष्णु दशाष्ट-.....) में मानवदेह की चार अवस्थाओं से इस दरिद्र की रजकपौ से उल्लस कर अवस्थाओं का विधान करने पर जग में अज्ञान गुराणी-कविता को “जीवन-संगीत” के रूप में प्रस्तुत कर रहा है। यह नम (कविता) एक प्राकृतिक सोचवर्ष के प्रसंगक और दरिद्र-के-श्रीय ज्ञानविज्ञान को प्रेरित किया गई है। दरिया की मन्त्री मरी दशास्त्री की देखकर, ज्ञानक बरिया के कुछ पूछ ही वेता, परन्तु (दरिद्र, अज्ञान-ज्ञान-ज्ञान के कारण-शोभने में प्रबल) कवि ने दरिद्र के ज्ञानर की कल्पना की, उस-नाम को अपने शब्दों में व्यक्त किया, वह दरिया के शब्दों को प्रेरित करने के समय से ज्ञान-जग में उद्भूत में खय होने तक भी मन्त्री अथो जीवन-माया है जो मातवहे की सोचान्त, कीमार्ग योवन, जरा और तथा से मृत्यु तक की यन्मा उसका सही परायण है। यही वह जीवन-संगीत है, जिसमें सारा ज्ञान समाया है।

अतः पाठकगण इसको पढ़ें, इसके गूढ रहस्य को समझें, विचार-मग्न हो जीवन की शेष-माया में इन पंक्तियों की धुननुवाते हुए बड़े नरें :-

तुसही जब मैं आया जगत् में, लोग हूँ मैं रोया,  
ऐसी करनी कर चल्, मैं हूँ जग रोए ।  
वह काम कई विष्णुपी आराम से-रुटे यह मेरो,  
वो चाब चल् कि लोग याद मुझे किया कर ।  
गर कहूँ फिर-ही मेरा, तो विकरे सं-रुटो हूँ,  
और नाम सं लोग, तो अज्ञ-से लिया कर ।

## दरिया की कल्पना

सुना प्यारे दरिया कुछ अपनी कल्पना,  
कहा से तेरा बहता आता है पानी ।  
(विष पृष्ठ ७ पर)

## आर्यवीर दल : एक संक्षिप्त परिचय

—हरिचन्द्र स्नेही, एम. ए., बी. एड.

भारतवर्ष ऋषियों, मुनियों सन्तों, महात्माओं की पुण्य भूमि है। उन्नीसवीं शताब्दी में इसी पुण्य भूमि पर जब अन्धविश्वास, रुढ़ि-बादिता, सामाजिक बुराईयों और अत्याचारों का बोलबाला या उस समय टंकार में एक बालक का जन्म १८२५ ई० में हुआ जिसका नाम भूषणकर रखा गया। सन्धे शिव की सोच में अटक रहे इस बालक भूषणकर को ब्रह्महत्या स्वामी विरजानन्द ने वैदिक ज्ञान देकर सच्चा महर्षि स्वामी दयानन्द बनाया और आदेश दिया कि जगत् से अज्ञानरूपी भ्रमकार दूर करके देववाणी के प्रकाश से ही प्रकाशित करे। गुप्त आज्ञा निरोधार्थ करके देववाणी के प्रचार प्रसार तथा प्राणी मान के कल्याणार्थ महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने १८७५ ई० में बम्बई में प्रथम धर्मसमाज की स्थापना की थी और संसार में फैले पाखण्डों का विरोध करना आरम्भ कर दिया। इससे साम्प्रदायिकता से परिपूर्ण विचित्रियों के पांव उखड़ने लगे। जब स्वामी जी के समुल्ल पाण्डित्यों की शाल नहीं गली तो उन्होंने स्वामी जी को मरवाने के लिए अनेक बहसएण किए। उन्हीं के बहसएणों का स्वामी जी शिकार हुए। स्वामी जी का १८८३ ई० में दीपावली के दिन निर्वाण हुआ। इस प्रकार वेद निधि का एक प्रकाश स्तम्भ गिचने से एक सूर्य का अस्त हुआ। स्वामी जी के निर्वाण प्राप्त के पश्चात् विचित्रियों ने पुनः अपने पांव फैलाने का अवसर प्रयास किया जिसका दयानन्द के भक्तों ने मूढ़ तोड़ जबाब दिया। इस समय साम्प्रदायिकतावादी तत्त्वों एवम् धर्म्य विचित्रियों ने जब धर्मसमाज के संगठन को नष्ट करना चाहा तो भारतीय संस्कृति, धर्मसमाज एवम् वैचरिणिकों को रक्षा के लिए एक ऐसे संगठन को आवश्यकता अनुभव की गई। उसाही धर्मसमाजों के प्रयत्नों से चरित्रवान् एवम् बलशाली युवकों को एक सेना तैयार की गई जिसका नाम 'आर्यवीर दल' रखा गया।

इसमें कोई सन्देह नहीं धर्मसमाज रूपी इस पीढे को सीचकर बट बूझ बनाने के लिए कुछ आर्यवीरों को अपना बलिदान देने का अर्थ प्रस्ताव हुआ। इनमें अमर शहीद पं० लखाराम, स्वामी श्रद्धानन्द एवम् महाशय राजपाल जी का नाम सर्वोपरि है। जब तक सूर्य और चाँद रहेंगे तब तक ये दिव्य सिंहाते ही अपनी शक्ति के फलस्वरूप चमकते रहेंगे और हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे।

### आर्यवीर दल :-

- धर्म—आर्य शब्द का सीधा सादा अर्थ श्रेष्ठ व्यक्ति है। महाभारत एवम् गीता के आचार पर वह व्यक्ति जिसमें आत्मिकता, ज्ञान, सत्यता, धन पर निरभ्रण, सत्य भाषण, उत्साह, कर्तव्यनिष्ठा, चिद्व्रता, दया, नम्रता और चित्तिन्द्रियता आदि गुण हों धर्म्य कहलाता है।
- वीर—जिस व्यक्ति में उत्साह का संचार हो, शारीरिक दृष्टि से बलिष्ठ और पराक्रमी हो, जिसे देखने से शत्रु के होवा उड़ जायें वह शास्त्र में वीर कहलाता है।
- दल—ऐसे युवकों के संगठन को जिनमें श्रेष्ठ बुद्धि, श्रेष्ठ चरित्र, ताकिक शक्ति, पराक्रम, प्राणिमान के कल्याण की भावना, शारीरिक, आत्मिक, सामाजिक एवम् अर्थ गुणों का समावेश हो दल कहलाता है।

### आर्यवीर दल के उद्देश्य :-

- १ वैदिक धर्म, सभ्यता एवम् संस्कृति को रक्षा तथा इसके प्रचार और प्रसार में सहयोग प्रदान करना।
- २ धर्मसमाज एवम् महर्षि स्वामी दयानन्द के सिद्धांतों का प्रचार तथा प्रसार करना।
- ३ मानव जाति का शारीरिक, आत्मिक एवम् सामाजिक दृष्टि से उत्थान करके उनमें वैचारिक क्रांति लाना।
- ४ प्राणिमान को सेवा करना।

५ देश की एकता, प्रगल्भता तथा इसकी रक्षा के लिए संघर्ष तत्पर रहना।

६ स्वयं आर्यवीर बनकर विश्व को आर्यवीर बनाना।

### आर्यवीर दल की स्थापना :-

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के क्रांतिकारी अभियान तथा उनके निर्वाण के पश्चात् उनके अमर वीर शैलियों ने धर्मसमाज के मुक्क को ध्वस्त करना आरम्भ किया तो स्वामी तत्त्वों ने बहसएण रचाकर कई महापुरुषों के प्राण ले लिए। बहसएणकारियों के अपवित्र इरादों को विफल करने के लिए त्यागभूति महात्मा हंसराज जी की अध्यक्षता में १९२७ ई० में दिल्ली में एक विराट् सम्मेलन आयोजित किया गया और इसके परिणामस्वरूप २६ जनवरी १९२६ को 'आर्यवीर दल' की स्थापना की गई। महात्मा नारायण स्वामी जी को इसका अध्यक्ष बनाया गया। आर्यवीर दल के निर्गमित सचालन हेतु महात्मा नारायण स्वामी जी की अध्यक्षता में सन् १९३१ ई० में द्वितीय महासम्मेलन का आयोजन किया गया और इसमें यह निर्णय लिया गया कि आर्यवीर दल की शाखा अत्येक धर्मसमाज, नगर एवम् प्रांत में स्थापित जाएगी जिसमें अधिकांश धार्मिक नवयुवकों को प्रशिक्षित किया जावेगा आर्यवीर दल के नवयुवकों के प्रशिक्षण से विद्यार्थी एवम् साम्प्रदायिक लोगों में खलवही मच गई। उनके ह्वलन चूर-चूर होने से उनके आक्रमण रुक गये। सांबंदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने सन् १९३६ ई० में आर्यवीर दल के नियमों में संशोधन किया। आर्यवीर दल की वागडोर उत्साही, कर्तव्यनिष्ठ, पराक्रमी, विवेकी, शूरवीर, ईमानदार एवम् कुशल युवक श्री भोमप्रकाश त्यागी को सौंपी गई। उनके निदेशानुसार एवम् कुशल नेतृत्व में सन् १९४२ ई० में पहली बार ४०० आर्यवीरों का शिविर दिल्ली में बदरपुर नामक स्थान पर आयोजित किया गया।

इतिहास बात का साक्षी है कि आर्यवीर दल नामक इस संगठन ने समय पर अपने साहसिक एवम् धीर्यपूर्ण कार्यों द्वारा विश्व में अपना विशिष्ट स्थान बना लिया है।

### आर्यवीर आर्यवीर -

एक आर्यवीर आर्यवीर ने उपरोक्त वणित गुणों के अतिरिक्त निम्न लिखित गुणों का समावेश होना भी धर्यन्त आवश्यक है :-

- १ स्वयं सेवा आत्मापालक एवम् मर्यादा पुरुष।
- २ श्रमण जैसी वीरता और तप।
- ३ हनुमान जैसी स्वामी भक्ति।
- ४ श्री कृष्ण जैसी निर्भीमानता, नीति एवम् योग विज्ञान।
- ५ बालक भरत के समान निर्भीकता।
- ६ वीर शिवाजी जैसी नीतिमियुक्तता एवम् साहस।
- ७ महाराणा प्रताप जैसा स्वामिभान।
- ८ मामासाहू जैसी उदारता।
- ९ कर्ण जैसा दानवीर।
- १० हरिचन्द्र जैसा सत्यवादी।
- ११ चाणक्य के समान राजनीति का ज्ञान।
- १२ जयमल फता जैसा युद्ध प्रयाण।
- १३ वीर बालक हकीकत जैसा धर्म प्रेम।
- १४ अश्वकुमार जैसी पितृभक्ति।
- १५ बन्धा वंरगी और तेजबहादुर जैसा बलिदान।
- १६ गुरु गोविन्दसिंह के बच्चों जैसी वीरता व धर्मनिष्ठा।
- १७ स्वामी दयानन्द जैसा अखण्ड बहुधर्म्य और वेदज्ञान।
- १८ रानी शाही जैसा सश्रम और पन्माधाय सा बलिदान।
- १९ एकलव्य के समान गुरुभक्ति।
- २० विश्वमाश्रित्य के समान व्यापारप्रियता।

(विषय पृष्ठ ६ पर)



## केन्द्रीय मंत्रिमंडल किसको क्या मिला

नई दिल्ली, २२ जून (भा.वि.) मंत्रिमण्डल के सदस्यों की विचारणीय सहायता के लिए इस प्रकार है—  
 श्री पी. वी. नरसिंह राव

—कार्यिक लोकशिक्षा, पंचायत विज्ञान और टेक्नालाजी, समुद्र विकास, इलेक्ट्रानिक्स बरखापू, ऊर्जा, अंतरिक्ष, रक्षाबन और उर्वरक, ग्रामीण विकास भाषिक पुर्वि और सांस्कृतिक विवरण, रक्षा और उद्योग विज्ञान क्रि-हस्त प्रदानचर्मी के अपने पास रहे हैं।

श्री अजुनासिंह  
 श्री बलराम आसङ्ग  
 श्री संकरराम चम्पास  
 श्री माखनलाख फोतेवार  
 श्री युनाय नबी आजाद  
 श्री सी.के. जाकर बरीफ  
 श्रीमती सीसा कौल  
 श्री सीताराम केसरी  
 श्री के. विजय भास्कर रेड्डी  
 श्री माधवराव सिधिया  
 श्री बी. अकरानंद  
 श्री विद्याचरण शुक्ल  
 श्री मनमोहन सिंह  
 श्री भावसिंह सोलंकी  
 राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार  
 श्री गिरधर बोभांगी  
 श्री हंसराज बाददाव  
 श्री पी. विदम्बरय  
 श्री संतोष मोहन देव  
 श्री बशोक गहलोत  
 श्री तरुण गोगोई  
 श्री कमल नाथ  
 श्री अजीत कुमार पांजा  
 श्री राजेश पायवट  
 श्री कल्पनाथ राय  
 श्री के. राममूर्ति  
 श्री पी.ए. संगमा  
 श्री जगदीश टाईलर  
 श्री बलरामसिंह माधव  
 राज्यमंत्री  
 श्री कमालुद्दीन ब्रह्मद

—मानव संसाधन विकास  
 —कृषि  
 —गृह  
 —स्वास्थ्य व परिवार कल्याण  
 —संसद कार्य  
 —रेल  
 —राष्ट्रीय विकास  
 —कल्याण  
 —कानून न्याय और कंपनी मामले  
 —नागरिक उद्भवयन और पर्यटन  
 —पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस  
 —जल संसाधन  
 —वित्त  
 —विदेश

—आय प्रसंस्करण उद्योग  
 —योजना एवं कार्यक्रम क्रियात्मक  
 —वाणिज्य  
 —हस्तात  
 —कपड़ा  
 —साध  
 —वन एवं पर्यावरण  
 —सूचना एवं प्रसारण  
 —संचार  
 —ऊर्जा और गैर परम्परागत ऊर्जा स्रोत  
 —विदेशी  
 —कौशल  
 —मूलत परिवहन  
 —साध

श्री एम. अण्णाचम  
 कुमारी भगता बनर्जी  
 श्री एडुआर्डो फलेरियो  
 श्री एम. वा. एच. फारुक  
 श्री एम.एम. जंरुव  
 श्री रायराज कुमारमल्ल  
 श्री एस. कृष्णकुमार  
 श्री पी.के. कुरियन  
 श्री कान्हुबरग नेका  
 श्री एम. मलिनकाजुन

—नागरिक आशुति एवं सांस्कृतिक विवरण  
 —राष्ट्रीय विकास  
 —मानव संसाधन विकास मंत्रालय में युवा मामले और खेल  
 —विदेशी  
 —नागरिक उद्भवयन और पर्यटन  
 —संसदीय कार्य और गृह  
 —संसदीय कार्य और कानून, न्याय एवं कंपनी मामले  
 —पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस  
 —उद्योग  
 —कृषि  
 —रेल

श्री पितामोहन  
 श्री उत्तम शर्मा एच. पटेल  
 श्रीमती मारिदेव अन्ना  
 श्री शंताराम बोदुदेव  
 श्री मुन्नापल्ली रामचंद्रन  
 श्री दलवीरसिंह  
 श्री बी. बेंकटदवामी  
 श्री पी. के. वृणन  
 श्री पवनसिंह बटोवार  
 श्रीमती के. कमलाकुमारी  
 श्री सखान सुधीर  
 श्री पी. वी. रंजना मायडु  
 श्री रामनाथ शही  
 कुमारी विरिजा श्याम

—सायन और उर्वरक  
 —ग्रामीण विकास  
 —कार्यिक लोक शिक्षा और पंचायत  
 —वित्त  
 —कृषि  
 —वित्त  
 —ग्रामीण विकास  
 —उद्योग  
 —धन  
 —कल्याण  
 —वाणिज्य  
 —संचार  
 —गृह  
 —सूचना और प्रसारण

### आर्य और बल नरवाना को और से

#### विशाल शिविर का आयोजन

नरवाना में २-६-६१ से ६-६-६१ तक आर्यों व बल नरवाना ने एक शीष्मकाशीन शिविर लगाया। जिसमें हरयाणा, पंजाब व उत्तर-प्रदेश से ६० आर्य वीरों ने तथा केवल नरवाना शहर से ४८ आर्य वीरों ने भाग लिया।

जिसका उद्घाटन श्री धर्मपाल जी आर्य पूर्व प्रदान आर्यसमाज नरवाना में शिविर २-६-६१ को किया तथा पुष्पपाद स्वामी रत्नदेव जी, अविष्ठाता आर्य श्रीरत्न हरयाणा, कुष्पति गुरुकुल कुम्मावेड़ा व कन्या गुरुकुल लखन में जोड़े का कन्या श्रद्धा कर सुनारम्भ किया।

इसमें ६ दिन तक आर्यों वीरों को शारीरिक, सामाजिक व आर्थिक उन्नति के मार्ग का उपदेश दिया गया, तथा श्री चन्द्रपाल जी मजनीपदेशक (जीम्ह) ने अपने विद्याप्रद बचनों के द्वारा बच्चों को शास्त्रा उन्नति का मार्ग बताया।

इसी के सम्मर्भ में ८-६-६१ को नरवाना में एक विशाल शोभा यात्रा का आयोजन किया, जिसकी अध्यक्षता श्री राससिंह जी आर्य ८४ वर्ष ने अपने हाथ में जोड़े का शम्भा उठाकर की, उनके पीछे सभी आर्य वीर वेष्ट बाजे समेत श्रद्धि दशानम्ह की बज रहे, आर्यसमाज बमर रहे, के नारे लगाते तथा श्री नैप्रकाश जी आर्य मन्त्री शार्यवीर वल हरयाणा की अध्यक्षता में प्रबंधन दिखाते हुए जोरोंसे गीत गाते हुए शोभायात्रा की शोभा बढ़ाते रहे। इस शोभा यात्रा के समय श्री राजवीर जी (जीम्ह) श्यावाम शिखर ने सुभा की इत्युपारी बसवीत जी कावला ने शांती के अनेक करण दिखाए।

इस शिविर के मध्य-मध्य में श्री जोधकुमार जी आर्य (जीम्ह) भाकर के मानव को अपने जीवन को उन्नत बनाने का उपदेश देते रहे। तथा श्री उमेदसिंह जी संचालक आय वीर वल हरयाणा ने आर्य वीरों को आर्य वीर वल का महत्व बताया।

अन्त में ६-६-६१ को मुख्य अतिथि श्री बाबू राम जी वनरीरोषले नगरपालिका प्रधान नरवाना ने समापन करते हुए आर्यों वीरों के उत्साह के लिए ५१०० रुपये का दान देते हुए भागे श्री इसी प्रकार से सहायता देने का बचन दिया, सभी ने तालियां बजाकर शम्भवाद किया।

श्री नरेशकुमार आर्य प्रधान आर्यसमाज नरवाना ने आर्यों वीरों का उत्साह बढ़ाते हुए हृष सम्भव सहायता करने का आश्वासन दिया। अन्त में श्री राधाकृष्ण जी धर्म प्रधान आर्य वीरवल नरवाना ने सभी का शम्भवाद करते हुए, सभी आर्य वीरों को सम्भार्य पर चलने की प्रेरणा की, आर्य राष्ट्र का निर्माण करने के लिए इस प्रकार के शिविरों के आयोजन की आवश्यकता बताई।

अध्वनीकुमार आर्य  
 मन्त्री  
 आर्य वीरवल नरवाना (जीम्ह)

## बहुभाषी राव एक तपे तपाये नेता हैं

(द्वितीय वार अर्जुन से साभार)

नई दिल्ली, २० जून (बारा), कांग्रेस (इ) संघदीय दल के नेता चुने जानेवाले पी. वी. नरसिम्हा राव पांच बहक के राजनीतिक उतार चढ़ाव से तपकर निकले हुए एक कुशल और अनुभवी प्रशासक हैं।

वह देश के नौवें प्रधानमंत्री हैं और इस पद पर पहुंचने वाले दक्षिण भारत के पहले नेता थे। पश्चिम बंगालस्थान नेहरू से लेकर श्री चन्द्रशेखर तक, केबल श्री मोरारजी देसाई को छोड़कर सभी प्रधानमन्त्री उत्तरप्रदेश के रहे हैं।

२८ जून, १९२१ में आंध्र प्रदेश के करीमनगर में जन्मे श्री राव के लिए यह पद अल्पदिन का उपहार भी माना जा सकता है। सत्तर वर्षीय श्री राव की आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री के केन्द्रीय राजनीति के क्षेत्र की यात्रा में अनेक पड़ाव धार्ये। वह राज्य के मन्त्री से लेकर केन्द्र में अनेक महत्वपूर्ण विभागों के मन्त्री रह चुके हैं।

श्री राव ने शत भाह बहुत ही कुशल परिस्थितियों में पार्टी का अध्यक्ष एवं सम्माला जब पूर्व प्रधानमंत्री और कांग्रेस (इ) अध्यक्ष राजीव गांधी की हत्या के बाद पार्टी के साथ देश के सामने भी संकट धारणा। अपने साधियों में पीपी के नाम से लोकप्रिय श्री राव केन्द्र में रखा, विदेश, मानव संसाधन, विद्युत, स्वास्थ्य एवं शिक्षा विभाग के मन्त्री रहे। वह पहली बार १९६२ में आंध्र में मन्त्री और बाद में मुख्यमंत्री बने।

वह स्वभाव से कवि हैं। उनकी शिक्षा-बीसा उत्सामानिया, बम्बई और नागपुर विश्वविद्यालयों में हुई। वह हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत, तेलगू, कन्नड़, मराठी, फारसी, अरबी, स्पेनिश और फ्रेंच भाषाओं के ज्ञाता हैं। बहुभाषी होने के नते उन्हें देश का सबसे सफल विदेश मन्त्री माना गया। उनकी साहित्यिक उपलब्धियों में साहित्य अकादमी का सम्मान भी है जो उन्हें विश्वनाथ सत्यनारायण की कृति ‘बेई पडाराजू’ के हिन्दी अनुवाद पर मिला।

श्री राव छः वर्ष तक ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रवर समिति के अध्यक्ष रहे। उनके राजनीतिक जीवन की शुरुआत आंध्र जीवन में हुई जब निबाम सरकार ने ‘बदे मातरुय’ गाने पर प्रतिबन्ध लगा दिया। १९३८ में शुरू हुआ वह आन्दोलन लम्बे समय तक चला जिससे उनका अध्यक्षत्व भी प्रभावित हुआ। राज्य में ब्रिटिश दमनचक्र के समय उन्होंने बकासत छोड़ दी और १९४७ के ‘भारत छोड़ो’ आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया, बाबादो के बाद श्री राव १९५७ से २० वर्ष तक आंध्र प्रदेश विधान सभा के सदस्य रहे और मन्त्री से मुख्यमंत्री तक का पथ सम्माला। वह पहली बार करोड़मनवर जिले के मयानी विधानसभा से चुने गए। बाद में भी वही से चुनाव जीतते रहे।

श्री राव पहली बार १९६२ में संजोव रेडडी मन्त्रिमण्डल में मन्त्री बने और के बहानन्द रेडडी तक के मन्त्रिमण्डल में रहे। वह तीन वर्ष तक राज्य के मुख्यमंत्री रहे।

उन्होंने राज्य में अनेक महत्वपूर्ण काम किए जिनमें तेलगू की सरकारी भाषा बनाना प्रमुख है। श्रीमती इन्दिरा गांधी उन्हें राजनीति में लाई और १९७५ में पार्टी के महासचिव बनाये गये। वह १९८० में विदेशमन्त्री बने। चार वर्ष तक इस पद पर रहे और १९८८ में पुनः वही सम्मालय सम्माला। इस दौरान वह गृह, रक्षा, मानव संसाधन विभाग के मन्त्री रहे।

श्री राजीव गांधी ने श्री राव को सरपुत्र सम्मान दिया और १९८५ में पार्टी की शानदार जीत के बाद उन्हें रत्नामन्त्री बनाया। बाद में वह मानव संसाधन विकास मन्त्री बने।

उनके पिछले माह पार्टी अध्यक्ष चुने जाने पर किसी को हैरानो नहीं हुई क्योंकि पार्टी में श्री राजीव गांधी के बाद उनका स्थान था। श्री राव को उनके पुर्ण और सार्वजनिक जीवन में उनकी भूमिका के कारण सभी लोगों ने सम्मान दिया। उनके पार्टी अध्यक्ष चुने जाने पर विपक्षी दलों की प्रतिक्रिया भी बहुत अनुकूल रही। श्री राव विद्युत हैं। उनके तीन पुत्र और पांच पुत्रियां हैं।

## छात्रवृत्तियां

(नव सत्र : जुलाई १९६१ से अप्रैल १९६२)

श्री बजीरचन्द बर्मसि टुट्ट की ओर से नये सत्र के लिए पुस्तकें, स्कूल्स, महाविद्यालयों, व्यावसायिक प्रशिक्षणालयों और अनुसन्धान संस्थानों के सुयोग्य और सुगम छात्र/छात्राओं और स्वस्थानिक परीक्षाओं के परीक्षाधियों और परीक्षाविधियों की छात्रवृत्तियां देने का कार्यक्रम शुभ हो गया है।

इन छात्रवृत्तियों से लाभ उठाने के इच्छुकों को चाहिए कि टुट्ट द्वारा नियत आवेदन पत्र भंगवाकर सीधे ही टुट्ट के आवरी सचिव के नाम पर निम्नलिखित पत्र भेजें—

गत सत्र में इस कार्यक्रम पर २६००० व्यय किये गये हैं। इस सत्र के धिये यह राशि बढ़ाकर रुपये ३५००० कर दी गई है।

सत्यदेव दादरी सचिव

श्री बजीरचन्द बर्मसि टुट्ट सी-३२ धमप कालोनी, साबजत नगर नई दिल्ली-११०२४

## हरयाणा आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

आर्यसमाज बरोडा जिला रोहतक	२४ से ३० जून
आर्यसमाज साम्बा जिला भिवानो	२८ से २९ जून
आर्यसमाज प्रेमनगर करनाल	= से १४ जुलाई
आर्यसमाज नागरो रोहड़िसार	= से १४ जुलाई

—डा० सुदर्शनदेव आचार्य, वेदप्रचारविष्णुदाता

## आर्य महिला का देहान्त

औरंगाबाद मितरोल जिला फरीदाबाद के प्रमुख आर्यसमाजो महाशय किशोरिहृ धाम सरपच की धर्मपत्नी का देहान्त १६ जून १९६१ ई० को होगया। ईश्वर दिवगत आत्मा की शान्ति तथा परिवार-जनो को श्रेय प्रदान करे।

—सया मन्त्री

## आर्यसमाजों के चुनाव

### बैदिक प्रचार मण्डल अम्बाला छावनी

सरसक—पं० देवदत्त, प्रधान—बागवोर वेशप्रकाश शर्मा, उप-प्रधान—१. सोमदत्त आर्य, २. खंरातीसाह, मन्त्री—वेदविद्य हापुडवाले, उपमन्त्री—१. सुदेश गुप्ता, २. पी. सिंगला, कोषाध्यक्ष—कृष्ण-कुमार, पुस्तकाध्यक्ष—देशराज।

### आर्यसमाज चरखी दादरी जि० भिवानो

प्रधान—श्री सत्यनारायण शर्मा, उप-प्रधान—मनुदेव शास्त्री, मन्त्री—हृकमचन्द आर्य, प्रचार मन्त्री—राजेशकुमार, उपमन्त्री—हरिश्चन्द्र साम्बा, कोषाध्यक्ष—रिंकुमार, सह-कोषाध्यक्ष—महावीर शास्त्री, विज्ञानरीसक—हरिश्चन्द्र गौड, संरक्षक—डा० रामनारायण बाबला।

**अर्य के प्रचारार्थ**

सजिले  
**₹ 300**  
सेंकिडा

अजिले  
**₹ 900**  
सेंकिडा

## मर्याद प्रकाश

घर पर पहुंचाये

सफेद कागज सुन्दर छपाई

शुद्ध संश्लेषण वितरण करनेवालों के

आकार: 23x36-16 पृष्ठ ४२० की दर लिए प्रचारार्थ

सजिले ₹/अजिले ७/

**आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट**

455, तारी बाबली, दिल्ली-6 दूरभाष: 238360-233112

## आर्यसमाज के अधिकारी ध्यान दें

मैं अपने कटु अनुभव के आधार पर यह लिख रहा हूँ। मैंने अनेक आर्यसमाजों में जाकर देखा है, उनके साप्ताहिक सत्संग में भी गया हूँ। मैं निराशावादी तो नहीं हूँ परन्तु आर्यसमाजों में मैंने जो निम्न त्रुटियाँ देखी हैं उनसे ऐसा लगता है कि आर्यसमाज में नीरसता जाग्रद है। यही कारण है कि उपस्थिति कम रहती है। मेरी प्रार्थना है कि आर्यसमाज की उन्नति के लिए अधिकारी ध्यान दें। यदि उनके यहाँ कोई त्रुटि है तो शीघ्र दूर करने की चेष्टा करें—

१ आर्यसमाज में एक सेवक और पुरोहित अवश्य होना चाहिए। यदि योग्य पुरोहित न मिले या रहने में समाज समर्थ न हो, सेवक तो होना चाहिए ताकि आर्यसमाज में आनेवाला प्रतिष्ठि परेशान न हो। सेवक सदाकारी व व्यवहारकुशल होना चाहिये। प्रायः देखने में आया है कई सेवक आर्यसमाज में आनेवाले अतिथि से बुध्बन्धन करते हैं और पूज्यपान करते हैं। यदि आर्यसमाज सेवक भी नहीं रख सकता तो आर्यसमाज मन्दिर के द्वार पर गम्भी या प्रधान का नाम और पता लिखा होना चाहिये।

२ आर्यसमाज के सत्संग में आनेवाले हरे नये आवदी से उसका परिचय पत्र होना चाहिये और स्वागत सहित मन्विष्य में आने रहने का निवेदन करना चाहिये। मैंने यह त्रुटि कई आर्यसमाजों में देखी है। मैं उनके सत्संग में समाजित तक बैठता रहा, किसी ने मुझसे कुछ नहीं पूछा।

३ अत्येक आर्यसमाज में साप्ताहिक सत्संग की उपस्थिति का एक रजिस्टर होना चाहिए जिसमें उपस्थिति के हस्ताक्षर होने चाहिये। अधिकारियों का कर्तव्य है कि रजिस्टर को देखकर मालूम करते रहना चाहिये कि कौनसा सदस्य लगातार ४० तीन सप्ताहों से सत्संग में नहीं आ रहा है। उसके घर जाकर न जाने का कारण मालूम करना चाहिये। यदि वह किसी संकट में है उसकी सहायता करना परमावश्यक है।

४ आर्यसमाज के छठे नियम के अनुसार अत्येक आर्यसमाज को जनता की भावार्थ के लिये कोई प्रयोक्ता का कार्य करना चाहिये। जैसे प्रीपचारण, पुस्तकालय, विद्यालय प्रादि खोलने चाहिये।

५ आर्यसमाज के पर्व सभी समाजों को एकजुट होकर मनाने चाहिये और उनमें कभी-कभी सहभाज भी बनना चाहिये।

देवराज आर्य  
प्रचार मन्त्री, आर्यसमाज  
वल्समगढ़, जि. फरीदाबाद

## चतुर्वेद शतकम् यज्ञ सम्पन्न

जालस मण्डी (हिवार) दिनांक ८ व ९ जून को श्री प्रकाशचन्द्र जी गुप्ता प्रधान आर्यसमाज जालस मण्डी के घर चतुर्वेद शतकम् यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसका ब्रह्मस्थ श्री पं० कर्मवीर जी शास्त्री (हिलारा) ने किया। इन दो दिनों में वेदप्रचार भी हुआ। जिसमें श्री पं० वसु प्रकाश जी विद्यावाचस्पति (टोहाना) ने भवनों के माध्यम से विभिन्न विषयों पर प्रकाश डाला, साथ ही पं० कर्मवीर जी के मौलिक तथा सुमधुर भाषण हुये। इस यज्ञ में परिवार के सदस्यों के प्रतिरिक्त अन्य लोगों ने धन लाभ उठाया।

अरविन्दकुमार 'कमल'  
आर्यसमाज टोहाना

## बालको !

बालको तुम देश की तकदीर हो।

भारत मां के सपनों की तसवीर हो ॥

(१) विद्या पढ़कर सबके सब विद्वान् हो।  
ब्रह्मर्षय का पालन कर बलवान हो।  
धर्म के अनुसार चलो धर्मवीर हो।

बालको तुम.....

(२) मानव हो मानवता से तुम्हें प्यार हो।  
जीवन का उद्देश्य पर उपकार हो।  
संकट में पड़कर कभी न अशोर हो।

बालको तुम.....

(३) भगतसिंह, सुखदेव, दस तुम्हें तो हो।  
विस्मिल, ऊषम, शींगड़ा तुम हो तो हो।  
शिवाजी, प्रताप की शमशिर हो।

बालको तुम.....

(४) भीम बभुंन जैसे योद्धा तुम बनो।  
भीष्म से बहादुरी तरीके तुम बनो।  
अभिमन्यु हज़ीफ़त जैसे वीर हो।

बालको तुम.....

(५) देश अपने पर श्योछावर बन करो।  
धीन दुःखियों के दुःखों को तुम हरो।  
प्रमादर तुम देश के रणधीर हो।

बालको तुम.....

सू० मेजर मातुराम शर्मा

## वेदप्रचार कार्यों

वेद कथा, संस्कार, सका समाधान यज्ञ, विचार गोष्ठियाँ, संगठनात्मक रूप सेवा प्रादि के लिए सम्पूर्ण भारत में वेदप्रचार का नूतनी दौरा करनेवाले उत्साही क्रांतिकारी, अज्ञेय, हृदयवाही विचार सुनने के लिए अविलम्ब सम्पर्क करें।

पं० ब्रह्मप्रकाश शर्मा राष्ट्रीय  
क्रांतिकारी वैदिक प्रवक्ता  
आर्यसमाज, करोलबाग,  
दिल्ली ११०००५

(पृष्ठ ३ का पेष)

भगतसिंह, राजपूत सुखदेव, चन्द्रसेखर, रामप्रसाद विस्मिल, बरफ़ाक उल्हास, रोजानसिंह, राजेन्द्र साहिबी, ऊषमसिंह, सुधाचन्द्र बोध, ना० सायपतराय, गंगल पाण्डे, वीर सावरकर एवम् अन्य क्रांतिकारी वीरों जैसा स्वदेश प्रेम एवम् स्वतन्त्रता अभियान।

स्मरण रखो ! आर्यसमाज एवं आर्यवीर दल के संघटन से ही

ज्ञान, अत्याय, अमान, जातिपाति, प्रसूयता, नारी उत्पीड़न, मादक द्रव्यों का सेवन, निम्न वर्ग का शोषण एवं अन्य दुःखार्थों को दूर किया जा सकता है। आर्यवीर दल के संघटन से ही राष्ट्रीयता, सम्यता और संस्कृति की रक्षा, शक्ति संघर्ष और प्राणिमान की सेवा हो सकती है। आर्यवीर दल से ही चरित्रबान्ध, उत्साही, बलिष्ठ, सुसंस्कृत और अनुशासित युवकों का निर्माण हो सकता है। इन्हीं के कर्णों पर ही आर्यसमाज का उज्ज्वल भविष्य निर्भर करता है।

हमारा कर्तव्य है कि हम अपने अपने स्वाधों को तिलाग्निज्वलि देकर भाबी पीछी का निर्माण करने का संकल्प लें। क्षुधि दयालु तथा वेदवाणी के अनुसार कार्य करें। इन कार्यों को करके ही "कृष्णन्तो विष्वमार्याम्" "अस्माकम् वीरा उतरे भवन्तु" जैसे उद्गोषों को पूरा कर सकेंगे और तभी वास्तव में आर्यराष्ट्र का निर्माण किया जा सकता है।

# हरयाणा में आठ सदस्यीय भजन सरकार पदारूढ

बंसीगढ़, २३ जून (एनएसिया) हरयाणा में कांग्रेस (भाई) के मुख्यमंत्री भजनलाल के नेतृत्व में आठ सदस्यीय भजनसदर पदारूढ हो गया। भूरी के प्रथम ही राज्य में पिछले द्वादश वर्षों में सफ़र राष्ट्रपति शासन समाप्त हो गया। मंत्रियों के विचारों का बहुराशय कल होगा।

राज्यपाल बनिकलास बंसन ने राजभवन में आयोजित एक भव्य समारोह में श्री भजनलाल और उनके मंत्रिमंडल सदस्यों को पत्र और पोपुलैरिटी का शपथ दिखाई। श्री भजनलाल ने मुख्यमंत्री पद की शपथ ली जबकि आठ अन्य को कॅंजिनेट ग्रंथों के रूप में शपथ दिखावाई गई। भजनलाल मंत्रीमंडल के सदस्य हैं। अमरी अमबेरसिंह सुखेवाला, बीरेन्द्रसिंह, मांयाराम, एस. चौधरी कृतरिखेवी, राम बंसिसिंह और महेन्द्रप्रसासिंह। श्री भजनलाल पांच वर्ष के अवतराल के बाद तीसरी बार राज्य के मुख्यमंत्री बने हैं।

श्री भजनलाल १९७६ में पहली बार मुख्यमंत्री बने थे। १९८२ में विधानसभा चुनाव के बाद वह फिर मुख्यमंत्री बने और १९८६ तक इस पद पर बने रहे। अप्रैल १९६८ की उम्मीदों की बंसीलास की खातिर इस्तीफा दे दिया। इस घटनाक्रम को पंजाब समझौते के शीघ्र क्रियमन्वयन के लिए उठाया गया कदम बताया गया था।

भयप ग्रहण के बाद में श्री भजनलाल ने सहायदाताओं को बताया कि सातों मंत्रियों के विभागों की घोषणा कल कर दी जायेगी। उन्होंने बताया कि विधानसभा का सत्र समाप्त हो जाने के बाद वे मंत्रिमंडल का विस्तर करेंगे। यह सत्र दस जुलाई से होगा। उन्होंने यह भी बताया कि श्री धर्मन कुमार उनके मुख्य सचिव होंगे। श्री कुमार पिछले द्वादश वर्षों में प्रधान हैं। उन्हें बायस राज्य में चुनाव का अनुरोध किया जा रहा है। नये मुख्यमंत्री ने राज्य प्रशासन और सुधीस में भी फेरबदल के संकेत दिये हैं।

जब उनके कॅंज्रीय मंत्रिमंडल में हरयाणा के प्रतिनिधित्व न दिये जाने के बारे में पूछा गया तो उन्होंने बताया कि यह प्रश्नमन्त्री का विशेषाधिकार है। फिर भी वह प्रश्नमन्त्री से राज्य के किसी व्यक्ति को मन्त्रीमंडल में प्रतिनिधित्व देने का अनुरोध करेंगे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि श्री देवीलाल सरकार के कार्यकाल में देश दिशासिवापन के कगार पर पहुंचे गए। इसकी वजाए वह फिकायत पर जोर देंगे।

श्री भजनलाल ने कहा कि उन्होंने सरकार के कार्यकाल में देश दिशासिवापन के कगार पर पहुंचे गए। इसकी वजाए वह फिकायत पर जोर देंगे।

(पृष्ठ १ का शेष)

बारही है।

“इस दुनिया में जो जाता है उद्वेग साथ कुछ लाता है।

‘ जो पूर्ण उसे कर जाता है, वही सफल जन्म कहलाता है।”

है-साहिब श्री इन्फासादी पार्सी के अध्यक्ष श्री चन्द्रसेखर जाजाव दे, वे अपने साधियों को प्रत्येक दिन दो आने जीवन के लिए भेजते थे, परन्तु स्वर्ण प्रोद्गार पर प्रोद्गार एक धाम्य अन्व करते कभी-कभी तो सूली रोटी युद्ध के साथ चबा-चबाकर खा लेते, पानी पी जाते। यह है तप त्याग की पराकाष्ठा।

१०-श्री नेताजी सुभाषचन्द्र से एक मित्र ने पूछा बाबूजी आप विवाह क्यों नहीं करते हो? बोधा विचारकर नेताजी ने उत्तर दिया कि राष्ट्र देवा में स्वतन्त्र स्वस्थ है कि विवाह के सम्बन्ध में विचारने का समय ही भरे पास नहीं है। अकेले सुभाष बाबू ने एक विशाल जाजाव हिनत जीव इकट्ठी करती थी।

मगवान् से प्रश्नान है राष्ट्र में फिर हकीकरतार, रामप्रसाद बिस्मिल, भगतसिंह, पं० लेखाराम पेंडा ही, सिवाजी सुभाष अतीने साहसी धावे। राष्ट्र में कभी भी तस्फी बोरों का समापन न हो, राष्ट्र कमजोर न पड़े। राष्ट्रजन राष्ट्रभूमि को उपजाऊ, सोया को सुखीक, आधुनिक सुखवस्तु, मातृभूमि को निष्कंठक बनायें। बाहर भीतर से कोई राष्ट्र को भूमि का अपमान करे न सके। देश को सुन्दर निरापद बनाकर वे बदन, बीर्य, पराक्रम, पुण्यार्थ, चरित्र, शक्तिशाली, समृद्ध बनाकर आदर्श सुरायक बनायें। राष्ट्र की भूमि का सम्मान बढाने के लिये इस भूमि की मातृभूमि कहें।

कहा कि सरकार सुतलुज यमुना तिक नहर के पत्राब के हितसे भी शीघ्र पूरा करवाने और हरयाणा को राबो ब्याड पाती का हितसा दिलाने की कोशिस करेगी।

उन्होंने कहा कि उनकी सरकार केन्द्र से वायव्य करेगी कि वह पंजाब सरकार से नहर निर्माण का काम अपने हाथ में ले ले और अगर जरूरत पड़े तो सेना तैनात करके नहर निर्माण का काम पूरा करवाये। पंजाब में उपभ्राधियों द्वारा नहर परियोजना के अधिकारियों की हत्या के बाद निर्माण कार्य रुक गया था।

श्री भजनलाल ने कहा कि राज्य के विजली पिड में अबके तीन महीने के बंदर २५ प्रतिशत क्षमता और जोड़ने की कोशिस की जायेगी।

इस सवाल पर कि क्या वह पूर्व उपप्रधानमंत्री देवीलाल और उनके पुत्र योगप्रकाश चौटाला द्वारा अपने शासनकाल के दौरान कथित भ्रष्टाचार और अनियमितताओं की जांच के लिए आयोग का गठन करेगे। श्री भजनलाल ने कहा कि वह पूरे मामले पर बारीकी से धौर करने के बाद फैसला करेगे।

श्री भजनलाल ने आरोग्य सहाया कि श्री देवीलाल और उनके परिवार ने हरयाणा को बर्बाद कर दिया। उन्होंने कहा कि जिन लोगों ने अनियमितताएँ की उन्हे बर्बाद नहीं जायेगा। लेकिन सरकार बचले की भावना से कोई काम नहीं करेगी और सब कुछ कानून के तहत किया जायेगा।

डिजनीलेंड परियोजना का विरोध करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि इस परियोजना को लागू नहीं किया जायेगा तथा सरकार द्वारा अहित भूमि लौटा दी जायेगी। उन्होंने कहा कि देवीलाल और चौटाला शासन के दौरान पत्रकारों के खिलाफ बचले की भावना से शायद सभी मामलों का वापस ले लिया जायेगा।

(पृष्ठ २ का शेष)

किधर जारहा है टहलता-टहलता,  
कलम तौल-तौल और बन-बन है चकता।

पहाड़ी है अपनी जन्मभूमि प्यारी,  
भड़ी पं थी बलों की हस्ती हमारी।

या अँधे पं सूत के इक प्रपना फूला,  
चमन बार सू जितके था एक फूला।

निकल आया एक दिन में दीवाना बनकर,  
मचाता चला शोर खा-खाकर चककर।

कहीं फूल वे मुझ पं फुक-फुक के धाते,  
लजाकर के होठों पं कुछ मुच्छुचाते।

पहाड़ी के नीचे मैं बहुत उछला-फूला,  
किनारों के समुद्र चला मैं मटकता।

मगर धन गया वह खुशी का जमाना,  
जो जाता रहा भोजों का सब तराना।

जब तो धाता है कानों में धोरे समुन्दर,  
गढा कोई दम में पिटारों के अन्दर।

यह जीवन-संगीत बडा हो विधाप्रद है। वास्तव में जिस किताबें देव दयानन्द जी जैसे सहानु भात्या ने इस जीवन के रहस्य को समझा, सचमुच वहाँ सफल मनोरथ हुए और भवसागर से तर गए, अन्य तो जन्म-मरण की दलदल में नही ही बँसते जाते हैं :-

ईश्वर ने पृथिवीपाल केपत्रः।

—श्रुवेद १०।४।१६

अतः मनुष्य को चाहिए कि जैसे दरिया (नदी) किनारों के समुद्र बहता हुआ, आसपास की भूमि को उपजाऊ और हरी-भरी करता हुआ सहलों के जीवन का आधार बनाता है, परन्तु यही दरिया जब मस्ती में आकर फ़ोड़ो किनारों से बाहर बहने लगता है तो सबके विनाश का कारण बन जाता है, वैसे ही मानव को चाहिए कि वह मस्ती हर्षोल्लास का जीवन तो वितार् परन्तु सावधान होकर वैदिक मर्यादाओं का पावन तट बनाए। लोकहित-समाग्रहित की भावना से अशुद्ध सरल हित से चले और इतके परिशामवत्सल्य विदाओं और परमात्मा के प्रेम का पात्र बनकर जीवनसौला समाप्त करें। इति।

**“आर्यवीर प्रशिक्षण एवं स्वास्थ्य शिविर”**

आर्य वीर प्रशिक्षण एवं स्वास्थ्य शिविर का आयोजन आर्य वीर दल, भिवानी द्वारा ३ जून से ६ जून तक गांव नीमझीवाली में युवकों का एक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें जिला भिवानी के लगभग ८० युवकों ने भाग लिया। युवकों को इस शिविर में चरित्र, अनुशासन एवं वैदिक विचारधारा के साथ-साथ योगसन, व्यायाम इत्यादि का प्रशिक्षण दिया गया।

इस अवसर पर ८ व ६ जून को महर्षि दयानन्द विद्यालय नीमझीवाली में संस्था द्वारा स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें डा० के.एस. सोहो सिविल सर्जन भिवानी के निदेशन में विभिन्न रोगविशेषकों के द्वारा अनेकों विमारियों का उपचार किया गया एवं गर्भवती महिलाओं व शिशुओं को रोगनिरोधक टीके लगाए गए। इस अवसर पर एक सद्यु प्रदर्शनी लगाई गई व स्वास्थ्य अपि-कारी ने गांव के लोगों एवं युवकों को सम्बोधित करते हुए बताया कि शिशु व गर्भवती महिलाओं को रोग वचाव के टीके समय पर अवश्य लगवाने चाहिए व स्वास्थ्य शिक्षा तथा चरित्र निर्माण पर अधिक बल दिया। शिविर के समापन समारोह के अवसर पर संस्था की ओर से चिकित्सकों को आर्य साहित्य भेंट किया गया।

इस शिविर से करीब ६० लोगों ने लाभ उठाया।

भवदीय

विमलेश आर्य मण्डल प्रति आर्य वीरदल, भिवानी

**तुम हिला सकते हिमालय**

तुम मनुष्य हो, शक्ति तुममें है अपरिमित, काश ! तुम होते धन्य भवने के परिचित, पतझरों में तुम बगा मधुमास देते, कोटि दलितों के अटल विश्वास बनते, संक्षमनि कर निज युवाओं से किया करते प्रलय। वीरता की शक्ति बनकर, तुम हिला सकते हिमालय ॥ चाह होयी यदि हृदय में, राह बन जाती स्वयं। कर रही शृंगार वीरों का सवा अक्षय जय, पत्थरों को तोड़कर, सरिता बहाने, विजय सारे पन्थ के तुम हो हटाते, शक्ति संचित कर बढ़ो, तुम नष्ट कर दो बापदाएं। देखकर बढ़ते चरण को, कांप जायेंगी विशाएं ॥ बख सा उर है तुम्हारा, तुम बढ़ो, लक्ष्य पर अपने सुपावन, तुम चढ़ो, सूय बनकर रथिम पावन तुम उपाओ, प्रश्न करिषों ते तिमिर जग का मगानो,

सूर्य-शक्ति के जो सितारों के बने तुम अब प्रणेता। चक्रवर्ती सम्राट हो तुम, निरख के अनुपम विजेता ॥

—रघुनाथस्य 'आर्य' विद्याशास्त्रस्यति

## गुरुकुल

**कांगड़ी फार्मसी की**  
**आयुर्वेदिक औषधियां सेवन कर स्वास्थ्य लाभ करें**

**व्ययनप्राथ**  
दूरे परितः के लिए शक्तिवर्धक एवं स्फूर्तिदायक रसायन।  
इसी, डब व शारीरिक एवं फेफड़ों की दुर्बलता में उन्मत्ती आयुर्वेदिक औषधीय द्रव्यिक





**गुरुकुल आयुर्वेदिक औषधियां**  
दोनों व मनुष्यों के महत्त्व लोच्ये  
महामोक्ष पापघोषिका के लिए उपयोगी आयुर्वेदिक औषधि



**गुरुकुल आयुर्वेदिक औषधियां**  
मुद्रास व इन्द्रकण्डला बलन  
आदि व जड़ी बूटियों से बने सामगरी आयुर्वेदिक औषधि



**गुरुकुलकांगड़ी फार्मसी हरिद्वार (उ० प्र०)**

**गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी**

**हरिद्वार**

**की औषधियां सेवन करें।**

**शाखा कार्यालय**  
**६३ गली राजा केदारनाथ,**  
**चावड़ी बाजार, दिल्ली-६**

**स्वामीय विक्रेताओं एवं सुपर बाजार से खरीदें**  
**फोन नं० २६१८७१**

शाखा कार्यालय : ६३, गली राजा केदारनाथ  
चावड़ी बाजार, दिल्ली-११०००६

‘प्रकर’—दोसाब’२०४३

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य ब्रिटिश प्रेस के लिए संस्कृतकारी मुद्रालय रोहतक से छपवाकर संस्कृतकारी कार्यालय पं० बगदेवसिंह सिद्धान्ती बनन, इयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।



ओ३म्

विश्वमार्गम्

# सर्वे हितकारिण्ये

काम्यम्

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—सूक्ष्मिष्ठ मन्नामर्षी

सम्पादक—वेदव्रत शारदा

सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालका एम०ए०

वर्ष १८

अंक ३१

जुलाई, १९६१

वार्षिक मूल्य ३०)

(आजीवन मूल्य ३०१)

विदेश में ८ पौड

एक प्रति ७२ पैसे

## प्राकृतिक पर्व परिचय

(१० घमदेव 'मनो') वेदलोचं गुरुकुल कालवा)

### १. नवसंवत्सरोत्सवः (संवत्सरेष्टिः)

समय—चैत्र शुक्ला प्रतिपदा अथवा मेघ संक्रान्ति।  
परिचय—कृष्णाकर अथवा नू मुष्टि रचना को पूर्ण कर उसको वसन्त का रूप दे दिया था। वसन्त का अर्थ है वसुधैव। मुष्टि को वसुधैव बनाने के लिए उसके समस्त औषधिवनस्पत्यादि वस्तुओं का पूर्ण विकास होना आवश्यक था। अतः मुष्टि का आरम्भ पूर्ण विक्षिप्त रूप में हुआ। अतः निश्चित है कि मुष्टि का आरम्भ वसन्त में हुआ। चैत्र और वैशाख वसन्त के दो मास हैं। अतः मुष्टि का आरम्भ चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को हुआ। इस पर्व को मनाते रहने के कारण ही श्राव्य ऋषि मुष्टि संवत् को स्मरण रख सके हैं, तथा इसी वर्ष से ब्रह्मदिन, वैवस्वतादि, मन्वन्तर, सतयुगादि युग, ऋषि संवत्, ब्रह्म संवत् आरम्भ होते हैं। आज मुष्टि उत्पन्न हुये १,६६,०६३,०६१ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। आर्यों के वैदिक काल में अन्वय का विवश यही है।

### २. हरि तुषीया (हरियाणी तीर्थो)

समय—आषाढ शुक्ला तुषीया।  
परिचय—वर्षा की मङ्गी लय जाती है। चाड़ों और हरियाणियों ही हरियाणी छिट्टियोंचर होने लगती हैं। ऐसे समय भारत के कृषक ज्ञानी जन व महिषासुरों ने नाना रूपों में प्रकृति के मनुष्य मानव को स्वीकार करने के लिये इस पर्व की घोषणा की। इसमें सब भिन्नकर धान, जंगीत, कविता, कथा वा मूला मूकने में भाग लेकर आनन्द उठाते हैं। आर्यों को भी प्रकृति के मानवमय स्वर में स्वर मिलाकर प्रकृत ज्ञान, कविताओं व अन्य आनन्दमय सात्विक वस्तुओं से अपने को आनन्दित करना चाहिए।

### ३. आषाढी उपार्कर्म (ऋषि संपन्न)

समय—आषाढ शुक्ला प्रणिमा।  
परिचय—यह पर्व ऋषि ऋषय के जन्म होने के लिये समस्त आर्यों को स्वाध्याय की प्रेरणा देनेवाला पर्व है। यहाँ की रत्ना प्राचीन ऋषि मुनियों के समान वेद व वैदिक शिक्षाओं के स्वाध्याय व उनके क्रियात्मक प्रचार से ही सम्पन्न है। यह बहुत प्राचीनकाल से उपार्कर्म (स्वाध्याय आरम्भ) के दिन के रूप में मनाया जाता आ रहा है। ऋषियों की मुक्ति स्वाध्याय से ही संभव है। अतः वनस्पत आर्य इस दिन अपने जीवन में स्वाध्याय करने का दृढ़ संकल्प करें। इस पर्व की शुरुआत में बाद में जाकर राई और बहिन की पवित्र स्नेह छवि का भी संनिधय होना था। अतः इसका परिचय भी परमात्मिक है।

### ४. विजयादशमी

समय—आषाढ शुक्ला दशमी।  
परिचय—वर्षा के समाप्त होने से समाज के सभी वर्ग अपने अपने जीवन में नूतन विजय के नाम के लिये फिर से तैयार होकर निकल पड़ते हैं। प्राचीन वैदिक युग में व्यापारी अपने व्यापार साध

के लिये, जिन व्यक्तियों विविजय के लिये तथा ब्राह्मण साधना व सद्-धर्म विस्तार के लिए आज ही के दिन दीर्घयात्रा पर निकलते थे। श्री रामचन्द्र जी ने भी इसी दिन लंका विजय व राक्षसराज रावण को उसके कर्मों का छविद दण्ड देने के लिये पद्मपुर से अजितान किया था। वस्तुतः रामचन्द्र जी ने चैत्र कृष्णा अयावस्या को रावण वध किया था, परन्तु अब आन्ति से विजयादशमी को ही रावण वध का दिन मान लिया गया है और उस दिन रावण वध भी किया जाता है जो इतिहास के विरुद्ध है।

### ५. शारदीय नवसंवत्सरेष्टि (श्रीपारवती)

समय—शारद कृष्णा अयावस्या।  
परिचय—शारद ऋतु की समाप्ति में केवल १३ दिन शेष रहते हैं। हेमन्त का शीघ्र ही आरम्भ हो जाएगा। किसान का धर अन्न धान, माष, मूंग, बाजरा, तिल और कपास से भरपूर होने को है। किसान उत्कृष्ट हैं, परन्तु ऋषियों की बात का वह अनुमन करेगा। वेत में नवीन अन्न का स्वयं भोग करने से पूर्व परमात्मा का कर्मपात्र व दिव्य शक्तियों की तुलना भी यथासाम्य्य करना श्रेयिक योग्यता कीरुण्य की यह आज्ञा है—  
"देवान्भावयतानेन से देवा भावयन्तु यः।"

संसार की दिव्य शक्तियाँ हवेँ सहारा देती हैं। हथ इस उपोर्ण में पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश की क्षीण हुई छवि को फिर पूर्ण करेंगे। इत निस्वार्थ मानना को निवार रखने व कृतज्ञ बने रहने के लिए इस दिन यज्ञ किया जाता है। वैदिक ऋषियों ने भी यही विधान किया है। इस मानव संस्कृति एक और भी इस पर्व का महत्त्व है और वह है अयावस्या की अन्न तपस्वी व वर्षा के-कारण भूषित साक्षात्कार को दूर करने के लिए जन्मपाते दीव। इस दिन प्रत्येक व्यक्ति चाहे निधन हो या धनिक, अपने घर सरतों के तेल के दीपक जलाता है। इसके साथ ही यही धना भी जिसमें एक और नानाधोष जसाये चारुते हैं और दूसरी ओर एक अशोकिक व्योति युक्त पत्नी भी। प्रत्येक आर्य को सोन होकर महत्त्व दयानन्द के इस निर्वाण दिवस के अवसर पर उनके उपचारों को स्मरण कर कार्यसमाज के उत्थान में अपने सहयोग व सेवाओं का मूल्यांकन करना चाहिये तथा महत्त्व का कृतज्ञ बनेना का दृढ़ संकल्प करना चाहिये।

### ६. मकर तीर संक्रान्ति

समय—पूर्व मकर राशि में जाने का दिन।  
परिचय—इस दिन सूर्यदेव दक्षिणायन की गति छोड़ उत्तरायण पथ का आरम्भ ले लेते हैं। यह अनुष्ठेय का आरम्भ व अन्न का परिवर्तन समय है अतः बहुत प्राचीनकाल से इस दिन महायज्ञ होता चला आता है।

(शेष पृष्ठ २ पर)

## आर्य संस्कृत के विद्वान् नवयुवक नेता- पं० गृहदत्त विद्यार्थी

जो महर्षि दयानन्द सरस्वती को मृत्यु के छय को देखकर नास्तिक से आस्तिक होगये, जिनका निर्वाण सताब्दी समारोह सारे देश में मनाया जा रहा है।

डा० शास्त्रिबन्धु शर्मा, प्रकाशक, कुल्शेठ

युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के जनय शिष्य विद्यालय बैदिक विद्वान् तथा ऋषि मिशन के लिए समर्पित बुधा मनोवीर पं० गृहदत्त विद्यार्थी पहले नास्तिक थे।

वह अक्टूबर ३० नवम्बर सन् १८८३ को महर्षि दयानन्द की मृत्यु का खय देखने गए। लाहौर में इस नवयुवक ने महर्षि से भगवान् क्या कोई नास्तिक है के बारे में वातावरण को भी उस पर गृहदत्त ने उत्तर दिया था कि "स्वामी जो आपने जो मेरे प्रश्नों का उत्तर दिया उसका मेरे पास उत्तर नहीं परन्तु मेरी आत्मा नहीं मान रही है कि ईश्वर कोई नास्तिक है।

गृहदत्त उस समय १६ वर्ष के थे। उस पर स्वामी दयानन्द सरस्वती का बड़ा प्रभाव था इसीलिए वह धर्मप्रेर पढ़क गया वह देखने के लिए कि वह कैसा महापुरुष है जिसने अपने सारी छोटने की तारीख और समय को १५ दिन पहले घोषणा कर दी थी।

गृहदत्त बड़े गौर से महर्षि को सहनसक्ति को देखकर चकित था कि महर्षि का सारा सरोर फूट रहा है और वह बड़े प्रसन्न दिखाई पड़ रहे थे। उनके सारी में से विश फूटकर निकल रहा था परन्तु वह प्रसन्न थे। उन्होंने हजारीं नर-नारीयों जो सारे देश से पहुँचे थे को सम्बोधित करते हुए कहा कि "प्रभु तुने बड़ी बौद्धि की है भगवान् ने जितना काम मेरे से लेना था वह मैंने किया। जब आप उचित समझे तो उसे आगे बढ़ाना यह कहकर वह बैठकर समाधि में चले गए और तीन मार कड़ा प्रभु ठेरी दिग्घ्ना पूर्ण हो। यह कहकर उन्होंने प्राण त्याग दिए।

नास्तिक गृहदत्त ने महर्षि के निर्वाण होने पर बिस्वाकर कहा, मैं आस्तिक बन गया हूँ। उसने कहा कि अक्टूबर आने से पहले मैं नास्तिक था नास्तिकता और आस्तिकता के विचारों में डूबा हुआ था। मैं एक भटका हुआ राहो था। महर्षि दयानन्द सरस्वती की बल्युने मे मुझे आस्तिक बना दिया। मेरी आत्मा में प्रकाश आ गया प्रकट हो गया और मैं आस्तिक बन गया। पं० गृहदत्त विद्यार्थी का जीवन ही बदल गया।

एम. ए. की परीक्षा फस्ट क्लास नम्बरों में पास की। १८६६ में आपको राबकीय महाविद्यालय में नौकरी मिल गई परन्तु कुछ समय के पश्चात् कालेज को नौकरी छोड़ दी और महर्षि के लिखे हुए सत्यापनकाष्ठ और ऋग्वेदाविद्यालयमुम्बिका और दूसरे धार्मिक ग्रन्थ पढ़े। उसने भारतवर्ष के कोने-कोने में जाकर अक्षरकार में फले लोगों को वेदों के ज्ञान का प्रकाश दिया। आप सारे देश में प्रसिद्ध होगए। इस तनयुवक ने १७ पुस्तकें तीन वर्ष के पोढ़े समय में इतना काम किया कि उसका स्वास्थ्य विगड्ढा चला गया। उसने सन् १८८७ से १८९० तक कार्य किया। आर्य संस्कृति के प्रचार के लिए इतना काम किया कि शोध हेरान होगए।

महापुरुष गृहदत्त विद्यार्थी का स्वास्थ्य बरबाद होता चला गया और उसे टी. बी. (तपेदिक) होगया। आपके दोस्तों और रिस्तेदारों ने विद्यार्थी की को पहचानें में इज्जान के लिए ले जाने का प्रोसास बनाया था। परन्तु पहचानें में भी जाकर ठीक न हो सके। १० मार्च, सन् १९०० को मृत्यु होगई। सारे देश में इस नवयुवक का शोक मनाया गया। २६ वर्ष के इस आर्य संस्कृति के विद्वान् नेता को केवल तीन वर्ष ही काम करने का अवसर मिला। हम इस आर्यनेता को अष्टात्रिंशत् मंड करते हैं। इस बारे में उत्तर भारतीय सम्मेलन चंडीगड में डी. ए. बी. कालेज में २६-३० जन को हो रहा है।

## आर्य गल्जं हाई स्कूल सोनोपत १९६१ का परीक्षा परिणाम

आर्य गल्जं हाई स्कूल सोनोपत का मिडल तथा मेट्रिक का परीक्षा परिणाम पिछले वर्षों की भाँति इस वर्ष भी उत्तम रहा।

मिडल परीक्षा परिणाम—

कु० शक्ति ६५३ अंक (हरयाणा में प्रथम स्थान सबकियों में)  
कु० पुनम ६३६ अंक (हरयाणा में चतुर्थ स्थान)  
कु० रवनी ६३५ अंक (हरयाणा में पंचम स्थान)

मेट्रिक परीक्षा परिणाम—

कु० गोता ५३१ अंक लेकर विद्यालय में प्रथम  
कु० शीतल ५३० अंक लेकर विद्यालय में द्वितीय  
कु० अम्बु लखवैवाला ५२७ अंक लेकर विद्यालय में तृतीय  
कु० प्रभा गोपाल ५२६ अंक लेकर विद्यालय में चतुर्थ  
एस० प्रभाकर, मुख्यध्यापिका

## पुराणों के देवता और उनके वाहन

लेखक स्वामी स्वर्णयानन्द सरस्वती

भोले बाबा बल दिव्ये, वेंड बेल की पीठ।  
न्या इनके मन में धसी, ऐसी उत्तम शोठ ॥१॥

वाबा तो पीछे रहे, भी गणेश सरताज।  
मुषक पर वेंड किर, समझ हवाई जहाज ॥२॥

दुर्गा वेंडो शेर पर, बायें पर पसा।  
इतने भूरे शेर को, समझ मोटर कार ॥३॥

सरस्वती जो मोर पर, वेंडो लख हुमेय।  
समझ रहा है मोर को, गाड़ी एक्सप्रेस ॥४॥

सुनो शनीकर बनाया, काला रंग कनूट।  
भैसा ही को मानता, राजस्वामी ऊठ ॥५॥

भरो ने कुत्ता विद्या, मन में धरी उमंग।  
कुत्ते पर वेंड किर, समझ इसे तुरंग ॥६॥

चढ़ी शीतला गधा पर, लेकर नर्म भिजाब।  
ऐसा प्रिय वाहन चुना, समझ रही गबरज ॥७॥

सहमी को उल्लू भिसा, ऊपर हुई सबा।  
समझ स्कूटर उसी पर, करती प्यार कुत्तार ॥८॥

ब्रह्मा जी ने हंस पर, आसन रखा अजय।  
देल राजधानी समझ, मन में रहे सिंहाय ॥९॥

विष्णु वेंडो गडक पर, ईश्वरजी की बल।  
मोटरसाइकिल जानकर, चम रहे दिन रात ॥१०॥

(पृष्ठ १ का শেষ)

७. वसन्त पञ्चमी।

समय—माघ शुक्ला पञ्चमी।

परिचय—शिविर के गर्म में वसन्त का विकास हो चला है। बालीस दिन के बाद वसन्त अपने पूर्ण यौवन में होगा। उसका स्वागत धावस्यक है। प्रकृति ऊपर से निरास विद्यार्थी देती हुई भी अपने अन्तः परमें भविष्य की मयुरता व स्वर्णिम आशा लिये हुये है। प्रकृति का अनुकरण करने के लिये हमें भी अपने मानस में मयुरता का संचार करना चाहिए।

८. वासन्ती नवस्येष्टिका (होलिका)

समय—फाल्गुन शुक्ला पूजिया।

परिचय—यह बड़ा सामान्य जन के लिये वसन्त के यौवन का जानम्वोरस है बहा किशानों के लिए अधिक हर्ष इसलिये है कि उनके चेहों में जन परिपक्व होचका है। शारदीय नवस्येष्टिका के समान ही इसमें भी ऋषियों के द्वारा नवान् नर्तन में जाड़ि देते हुये विशेष एषं वृद्ध यज्ञ करने का विचार विहित है। प्रत्येक आर्य शुवाक फेकना, कोषद उछालना, गाली गलांव देना आदि कुप्रयायों का त्याग करें। पूर्वकाष्ठ के अनुसार केवल गले मिलना, श्व खिड़कना जोष बड़े लोगों के जीवन को स्वस्थ करना इतने तक ही सीमित रहना चाहिये। इन प्राकृतिक पर्वों पर पहले दिन ही बर की बुद्धि कर लेनी चाहिये। जगत्त दिन प्रातः स्नान संभारित से निवृत्त होकर वृद्ध यज्ञ पर्व को आहुतियों देनी चाहियें। पर्वों की विधि के लिए "आर्य पर्व नद्विती" पुस्तक अवश्य आर्य परिवारों में होनी चाहिए। सांव-द्वैतिक आर्य प्रतिनिधि समा विस्वी द्वारा यह पुस्तक प्रकाशित होती है।

## चुनौतियां और नई सरकार

—प्रथम चुनाव के जन

भारत के प्रथम प्रशासनिकी और जवाहरलाल नेहरू कहा करते थे कि भारत की चित्तनी जयसंस्था है, उनको ही समस्यार्थ है, जिनका समाधान समय-समय पर वनेवासी सकारों को करना पडेगा। उनका यह वाक्य आज तक सत्य सिद्ध हो रहा है।

सबसे प्रमुख और मोहक समस्या को नई सरकार के सामने है वह है देश की वित्तीय क्षीर आर्थिक स्थिति की विपत्ती हुई देखा।

पिछली कामचलाऊ सरकार को देश में पहलो बार कोष से सोना निकालना पडा जो कि विदेशी देनधारी पूरी करने के लिए बनाया गया है। उसके सिवाय कोई उपाय नहीं था कि रिजर्व बैंक से विदेशी मुद्रा खर्चन के लिए बीस टन सोना गिरवी रखने को कहा जाये। यह ठोक है कि यह सोना वह है जो समय-समय पर तस्करों के रूप में बजा किया गया था वर इसे राष्ट्र के सजाने में से उठाना पडा है। अभी विदेशी मुद्रा को स्थिति बहुत अनुकूल नहीं है। इसलिए सरकार को सभी दलों का सहयोग इस सम्बन्ध में प्राप्त करना होगा। अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रादीय तथा बैंक से उधार लेना उठना सरल नहीं होता।

कमी-कमी यह देखा गया है कि उनको शर्तें बहुत अनुकूल नहीं होतीं। यह समस्या देख के लिए जोवन मरण का प्रश्न लेकर सामने बनी है। देखा यह है कि प्रमुख और कुशल प्रवासक के रूप में विस्थात श्रमजन्मों नरसिंह राय इसका समाधान कितनी योग्यता से निकालते हैं। जन मानस को पेट पर पट्टी कसने के लिए तयार किए विना काम बलता नहीं दिखता। इस प्रलोभनिय काम को राष्ट्रीय क्षीर राजनैतिक सम्बन्ध विना पूरा नहीं किया जा सकेगा। हिंसा और आसंभवाय

इस बार चुनाव में हिंसा को खय उपस्थित हुए ने कीकानेवाते और चुनौतीपूर्ण है। बिहार, उत्तरप्रदेश, आंध्रप्रदेश तथा कुछ अन्य प्रायों में स्वतंत्र और शांतिपूर्ण चुनाव करना ही बडा भारी काम होगा या। देश में हिंसा का जो सावधारण बना है वह नई सरकार के लिए कम बंधीर चुनौती नहीं है। कम्पनी, पंजाब, असम और आंध्रप्रदेश में आतंकवादी सतिविधियां बहुत बढ़ गई हैं।

प्रथम में चुनाव सम्बन्ध होयेंगे, वहां पर क्षीर ही लोकतंत्रीय सरकार की गठित हो जायेगी। फिर उसका काम होगा कि वह वहां विदेशी कर्षकों और आतंकवादी अस्तित्थियों से निपटे और पुराने सम्बन्धों के समापन वहां के सभी सत्तकों को मुक्तप्राप्त में लाये। केन्द्रीय सरकार का सीधा सम्बन्ध न होते हुए भी उसे राज्य की मातृन और व्यवस्था की स्थिति ठोक से चलाते की व्यवस्था सुनिश्चित करनी होगी। तेल, चाय और लकड़ी के उद्योगों को जाने बढ़ाना होगा क्योंकि इन्हें पहले ही बहुत हानि हो चुकी है।

नई सरकार के सामने महंगाई एक बड़ी भारी समस्या है। पिछले एक वर्ष में रोयाना काम आनेवासी वस्तुओं के दामों में अनुत्पन्न बढ़ी हुई है। गेहूँ, चना, चावल तथा अन्य अनाजों के मूल्यों में २५ से ३० प्रतिशत वृद्धि हो चुकी है, लाने के तेल को पचास प्रतिशत से भी अधिक बढ़ी होयेंगे है। बेसी को के भाव तो घासमान छू रहे हैं। बहु रक ही रुपया किसी तक निष्ठा है और इसकी यह अरोसा नहीं कि वह मुद्र कितना है। दूध, दलसरोटी, मिर्च मसाले जो उली अनुपात में महये होयेंगे है। शाकाहारियों का मुख्य आहार दालें और सब्जियां हैं पर उनके भाव भी बहुत अधिक होयेंगे है। पिछले जोर अधिक रूप से कमजोर लोगों के लिए पेट भरना कठिन हो रहा है। खाने पीने की वस्तुओं के दामों पर सरकार को कुशल क्रमेर नियन्त्रण करना पडेगा।

महंगाई ने बेरोजगारी की समस्या को और भी विकराल बना दिया है। धावादी में वृद्धि के साथ यह समस्या देखा रूप भारत कर रही है कि युवा वर्ग निराशा में कुछ भी करने को सक्षम होजाता है। इसलिए हिंसक वृत्तियों को रोकने के लिए बेकारी और बेरोजगारी पर काबू पाना ही होगा।

इन समस्याओं के प्रत्यावा साम्प्रदायिकता, आदिवाद की अस्तित्थि निरन्तर बढ़ रही है। इस पर भी प्रभावों संकुच सधाना होगा। विदेशों में भारत को छवि को भी फिर सुधारना होगा।

## गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के समाचार

१-आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने जब से गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ का नियन्त्रण अपने हाथ में लिया है, तब से यह गुरुकुल आर्यसभा का प्रचार केन्द्र बन गया है। सभा उपमन्त्री श्री सरवर्षसिंह शास्त्री, गुरुकुल अध्यक्ष सनदील स्नातक श्री एनवीर शास्त्री, श्री चन्द्रपाल सिंह राणा, आचार्य हरिदेव श्री आचार्य देवपाल जी, श्री ओमप्रकाश श्री यजुर्वेदी, श्री ओमप्रकाश श्री विद्यालक्षितोयसि तथा सभा के उपदेसक श्री चन्द्रपाल शास्त्री, श्री हरिचन्द्र शास्त्री, श्री मजन्साय आर्य, श्री सरवर्षसिंह आर्य एवं सभा के अजयोपदेसक श्री वेमसिंह जी, श्री मुण्डीलाल वेचैन, स्वामी देवानन्द, स्वामी जोमानन्द आदि विद्यार्थी का यहा प्रचार केन्द्र बन गया है। यहां बैंकिंग यज्ञ, स्वाध्याय तथा रात्रि को प्रचार कार्यक्रम चल रहा है। गुरुकुल के वार्डों तरफ के धर्मों में भी यहां से सभा के प्रचार प्रचारार्थ जा रहे हैं।

२-श्री चम्पन्द जी मुख अविच्छाता के निर्वाचन में गुरुकुल में छात्रों का नया प्रवेश तथा शिक्षण कार्य आरम्भ होयेंगे है। आचार्य हरिदेव जी गुरुकुल गीतन नगर नई दिल्ली को भक्ति इस गुरुकुल को एक आदर्श गुरुकुल बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं।

३-गुरुकुल में एक वार्थी औद्योगिक यज्ञाने के लिए डा० सुरेश जी को कायभार सौंपा गया है जिससे छात्रों तथा गुरुकुलवासियों की चिकित्सा समय पर की जा सके। बादशाह शां हस्तलाल फरीदाबाद के डा० अरविन्द लोहान जी समय-समय पर इस युवा कार्य में सहयोग देते रहते हैं।

४. सभा के अधिकारी तथा स्वामीय प्रबन्ध समिति के सदस्य गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ को सुचारु रूप से चलाते तथा इसकी सम्पत्ति को सुरक्षा के लिए यत्नशील हैं। सभा है सभी महानुभावों तथा आर्य बलता के सहयोग से गुरुकुल की सर्वमान सम्पत्तियों का क्षीर समाधान हो जायेगा।

## ग्राम जुगलान (हिंसा) में शावक का ठेका बन्द

ग्राम जुगलान को पंचायत ने भी वनीपसिंह सरयप के नेतृत्व में समय से पहले पंचायत का रेजुलेशन पास करके गांव से इस वर्ष शावक का ठेका बन्द करवाकर बहुत ही सहायनी कार्य किया है। अन्य धर्मों की पंचायतों ने जहां ठेका है, उपरोक्त पंचायत से प्रेरणा लेकर ३० सितम्बर १९१९ से पहले पंचायत का रेजुलेशन जेकर यह पाप के प्रशङ्कितों से बन्द करवाने चाहिए। जिससे गांवों में तीव्र सुख का जीवन भी सके।

वरसिंह आर्य क्रांतिकारी सभा उपदेसक

## अपील

जैसे किसी की बंध पर बोट आते ही साबा शरीर हड़प उठता है वैसे ही जुगलान से आसाम और कम्बोरी के कम्पाउन्डारी लकड़वा एक राष्ट्र है। इसमें हमारे शरीर भाइयों को सेवा और लोक की भाव में जो हमसे बिलदे, चिन्ने और पिछड़े हुए हैं उनको साथ मिलाने के लिए इस वर्ष से कम से कम ७०-८० हजार रुपया सम्बन्ध प्रवेश में नगी पोरतों, बच्चों व बड़ों को दिया जा रहा है। यह सभी रूपसे दान-दाताओं की भावनाओं से एकत्रित करने के लिए का कार्य चल रहा है। सीतापुर जिंसा सरगुवा और पत्यल गांव जिंसा रामेश्वर आदि क्षेत्र कुछ का प्रचार चल रहा है और गुरुकुलों में बच्चों को पढ़ाना जा रहा है। जिन बच्चुओं को बुद्धि बल पर विद्याया जाता है उनको नया कपडा दिया जाता है।

नोट—श्री क्विंक एक सूती साड़ी, एक रत्नाकर धीर एक बोटी एक कुतरे सिस्कुल मई देने जो कि दोनों नग २२० रुपये के होते हैं मानो कि ये एक अनुस्य को वैदिक धर्म में प्रवेश करायेंगे।

निवेदक—

श्री वैराप्रकाश मुन्डा  
ग्रामान  
भारतीय हिन्दू बुद्धि संरक्षिणी सभा  
आर्यसभाय मन्थिर समालसा (पानीपत)

सेवानन्द सरस्वत  
महामन्त्री



## आर्यजगत् के नक्षत्र थे गुरुदत्त विद्यार्थी

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी का जन्म सुविख्यात सरदावा बस के राजा तारोश के कुल में २६ अगस्त, १८६४ ई० में मुसतान नामक स्थान जाय (आधुनिक पाकिस्तान) में हुआ था। इनके पिता का नाम शम्भा रामकृष्ण था। इनकी माता जो यद्यपि अनपढ़ थी, परन्तु 'यासु एवं परम साध्वी थी। 'होमिहार विरचन के होत थीकने पात' ही इस उक्ति को गुरुदत्त बचपन से ही पुरातया सत्य साबित करते हुए तितामायाको एवं इद-प्रतिष्ठ थे। इनका बचपन का नाम मुधा था।



परन्तु बाद में इनका नाम बदल कर गुरुदत्त रखा गया, क्योंकि बहुत समय बाद गुरु की इया से लाला रामकृष्ण के घर पुत्र-रत्न की प्राप्ति हुई थी। भारत में उन दिनों ईसाई धर्म का प्रचार जोरों पर था। अनौपचारिकता की खूब आशियां बस रही थी। नडे-नडे विद्वान् एव धार्मिक व्यक्ति भी नास्तिकता की लोपट में आगये थे। अतः गुरुदत्त विद्यार्थी भी नास्तिक बन गये। उन्हें ईश्वर की सत्ता में शक होने लगा। उस समय हिन्दू लोग ईसाई धर्म मुसलमानों के आगे हाथ फेलाकर अपनी मुक्ति की भील मांग रहे थे। तभी 'धार्मिकमाज कृपी चट्टी' में एक प्रचंड भ्रमिण बघक उठी। यह भ्रमिण को ज्वाला भारत में ईश्वर के प्रतिष्ठ पुत्र स्वामी दयानन्द के हृदय में उत्पन्न होकर प्रज्वलित हुई थी। स्वामी दयानन्द के विचार पूरे पंजाब भर में फैलने लगे। उन्होंने लुध हो रहे हिन्दू धर्म की रक्षा की और लोगों में धर्म के प्रति पुनः नव-जीवन का संचार किया और भारत में निरंतर बढ रही ईसाइयत एव अनीध्वरता की बाढ़ को रोक दिया। गुरुदत्त विद्यार्थी भी स्वामी जी के इन तर्कपूर्ण वेदानुसूल विचारों से प्रभावित हुए। तब तक वे पञ्जाबी, फारसी, संस्कृत, उर्दू, अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त कहींना कहीं गणित का ज्ञान अजित कर चुके थे। दसवीं की परीक्षा में राज्यभर में पांचवें स्थान पर धाकर पास करने तक वेदों के बारे में भी वे काफी पढ़ ब सुन चुके थे। नूँ कि विज्ञान में उनकी बचपन से ही काफी रुचि थी इसीलिए उन्होंने विषयव्यतिरिक्त धर्म विज्ञान के कई ग्रंथ पढ़ डाले थे।

उन्होंने २० जून, १८८० को मुसतान में आर्यसमाज की संस्थापना का आयोजन करा और सदस्य बन गए। अब वे आर्यसमाज के कार्यों में सबसेअधिक काम लेने लगे थे। जब अक्टूबर, १८८३ में अजमेर (राजस्थान) में स्वामी दयानन्द जी की भयानक बीमारी का समाचार जगल में आया तो प्राप्ति सारे देख में फँल गया तो धार्मिकमाज साहोदर की तरफ से स्वामी जी की रक्षाबन्धना में सेवा करने के लिए गुरुदत्त जी तथा धार्मिकमाज के तत्कालीन उपप्रधान लाला जीवनदास जी को नियुक्त किया गया। स्वामी जी के जीवन की अन्तिम चट्टी में गुरुदत्त जी ने पुत्र की तरह प्रेषपूर्वक, निस्वार्थ भाव से सेवा की। जब स्वामी जी का अन्तिम समय आया तो वे बोले, 'हे प्रभो! तुम्हारी इच्छा पूण हो, कंठो वःअसुल लीला हे तुम्हारी। इस प्रकार परमात्मा के प्रति अपनी चढ़ आस्था प्रकट करते हुए नामची भन का उच्चारण करने लगे और उच्चारण करते-करते धीरे-धीरे त्याग दिया। इस अन्तिम क्षण ने

गुरुदत्त जी के जीवन में एक नया संचार कर दिया। यहीं पर वे आत्मा और परमात्मा के रहस्य को जान गए।

स्वामी जी की अग्रपुत्र के पश्चात् साहोदर में धार्मिकमाज के प्रमुख व्यक्तियों की एक विचाल बैठक बुलायी गया थी। इस बैठक से यह निर्णय किया गया कि स्वामी दयानन्द जी की पवित्र स्मृति को चिरस्मार्दी बनाने के लिए उनके नाम पर एक ऐसी विश्वस्य सभ्या की स्थापना की जाए जिसके द्वारा सचार्चित स्कूलों व कारखानों में वैदिक ढंग के पठन-पाठन के साथ-साथ अंग्रेजी व विज्ञान के विषय पठाने की सुविधा हो। इस प्रकार 'दयानन्द एण्डोमेंटिक' (डी. ए. बी.) स्कूल् की स्थापना हुई। इसके बाद डी. ए. बी. स्कूल् व कारखाने साहोदर के लिए बन्दा एकत्रित किया जाने लगा। इस युव कार्य के लिए सबसे पहले गुरुदत्त विद्यार्थी जी ने अपनी मासिक आयवृत्ति से २५ रु० दान दिया। इसी दिन गुरुदत्त विद्यार्थी जी ने एक भारी जनसभा में डी. ए. बी. कारखाने की उपवीणिता पर भोजनपूण भाषण दिया। लोग उनके इस भाषण से अधिक प्रभावित हुए और उन्होंने कुछ होकर यथाशक्ति कारखाने के लिए चम्पा दिया। उनके प्रचार कार्यों से पहली जून, १८८६ को डी. ए. बी. स्कूल साहोदर की स्थापना हुई। डी०ए०बी० के इस मासोलन को उन्होंने अब और भी अधिक व्यापक बना दिया। १ अक्टूबर, १८८६ को उन्होंने धार्मिकमाज धर्मोत्तर के बाबिकोत्सव पर एक प्रभावशाली भाषण दिया। इस भाषण ने लोगों के हृदयों को हिलाकर रख दिया। उनके भाषण में श्लोकिक ओजसिचता थी। उनके इस प्रभावोत्पूण भाषण को सुनकर बीताओं ने उन्हें पंडित कहना शुरू कर दिया। तब से उनके नाम के आगे पंडित मान्य जुड़ गया। आज जो डी०ए०बी० संस्थाओं का जाल पूरे भारत एव विदेशों में फेला हुआ है, यह सब पं० गुरुदत्त विद्यार्थी के अथक परिश्रम एव त्याग का फल है। इसलिए तत्कालीन पब्लिकाओं एवं समाचार पत्रों ने पं० गुरुदत्त विद्यार्थी को डी०ए०बी० मासोलनों का जन्मदाता, डी०ए०बी० स्कूलों व कारखानों का संस्थापक एवं इस बांडोसन का सर्वोच्च वक्ता बताया।

बाद में सरकारी नौकरी छोड़कर वह डी०ए०बी० कारखाने में वाकर जी-जान से कारखाने को आगे बढाने में लग गये। अत्यधिक व्यस्त रहने के कारण उनका स्वास्थ्य खराब होता गया, क्षय रोग ने उन्हें बा घेरा और विश्वि के क्रूर हाथों में केबलमात्र २५-२६ साल को आयु में १६ मार्च, १८८० को वह अथक सेवानी परलोक सिंचार गया। उनकी मृत्यु का समाचार सुनकर सारा देश शोकनिबन्धन होया।

उनकी निम्नलिखित रचनाएँ हैं : (१) वैदिक संज्ञा विज्ञान (२) ईशोपनिषद् की अंग्रेजी व्याख्या (३) वैदिक विचारस्थ माण १, २, ३, (४) जीवात्मा के अस्तित्व के प्रमाण।

—प्राकाश चन्द्र शर्मा

### 'हरी अंधेरा'

राधेधाम धार्मिक विद्यानास्पति

हे दीपक !

स्वयं प्रकाशकर

सुख हरा करते अंधेरा

दे रहे हो तुम अगत को

प्रकाश-प्रभा

अपनी टिमटिमाती श्वांति से

मण्ट करते सुख अगतो के

तिमिर का घनचोर घेरा।

ध्यान की दाती जलाते

बन, जलाकर

इस जगल के

कुच कर आते स्वयं ही।

तब तुम्हारा-भन तुम्हारा

है सदा संघन रहता

हृदयों के शिखर सहित,

है मनुज।

तुम भी बनो, पावन सुरोपक

और अपने को जलाकर

ज्ञान का नम पुत्र अनुपम

हरी धर्मात्मि का

तुम अंधेरा।

## सरकार की शराब नीति पर बसे उपायुक्त

पानीपत, २८ जून (संसे)। यहाँ 'नशा मुक्ति दिवस' पर जिला उपायुक्त सरकार की शराब नीति पर बयान कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार एक ओर तो महावग्दी का प्रचार कर रही है, दूसरी ओर शराब व शहर में शराब के ठेकों के साथ 'महादे' बोल रही है। शराब के ठेकों के साथ महादों का होना किसी भी सरकार की नीतियों में विरोधाभास की प्रकट करता है।

'नशा मुक्ति दिवस' यहाँ रेडक्रास सोसाइटी द्वारा आयोजित किया गया था। इस अवसर पर जिला पानीपत के गर्मों के सरपंच, पंच व अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। नशा मुक्ति केन्द्र द्वारा जिले के उन गर्मों के लोगों को विशेषरूप से धारमनित किया गया था, जहाँ अबैध रूप से देसी शराब बनाई व पिसाई जाती है। पानीपत जिले में गांव बोहली, रामसहेबा, महम्मदपुर व सरफली आदि गांव अबैध शराब के लिए विख्यात हैं। नशा मुक्ति दिवस के अवसर पर पिछड़ी बस्तियों के लोगों को भी शराब के अवयुक्तों के बारे में बताया गया।

गर्मों से प्राप्त लोगों को संबोधित करते हुए जिला उपायुक्त विजयकुमार ने कहा कि ठेकों पर बेची जानेवाली शराब को जाम कर देना और लोगों द्वारा लुट बनाई जानेवाली शराब को अबैध शराब की संज्ञा देना कर्तव्य है। उन्होंने कहा कि हमारे आस-पास का वातावरण ही ऐसा हो, तो भोले-भाले लोगों का क्या करूँगे। उपायुक्त ने कहा कि संविधान में भी मद्य-नियंत्रण का उल्लेख किया गया है। परन्तु केन्द्र में बननेवाली सरकारों ने धर्मो तक इस ओर ठोस कथन नहीं उठाया है।

नशा मुक्ति दिवस के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि वास्तव में इस दिन का अर्थ यह होना चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति यह आत्मनिश्चय करे कि उसने अभी तक जीवन में क्या पाया है। उन्होंने कहा कि मानवता अपार इसी प्रकार नये में डूबी रही, तो उम्मीद अस्तित्व ही बचने में पड़ जायगा।

उन्होंने बताया कि नशा मुक्ति केन्द्र से मिलनेवाली दवाइया व परामर्श तो सहारा मान है। असली इलाज तो शिव व दिमाग से किया जानेवाला है। उन्होंने लोगों से प्रतीक की कि वह इस केन्द्र का साथ उठाएँ। नशा मुक्ति दिवस के अवसर पर उपायुक्त द्वारा १२ विक्रयार्थों को तिपटिया साइकिल तथा स्टील-बैचर भी दो गई। नशा मुक्ति पर एक प्रबन्धी भी सगाई गई। इस अवसर पर लोगों को महावग्दी पर विशेष तौर से टीका किया गया नाटक 'जहर की बूँट' दिखाया गया।

जहरीली मंत्र - जिला प्रशासन ने मानसून शुरू होने से पहले ही नसकूपों को जहरीली मंत्र से सावधानी बरतने का अभियान शुरू करने के निर्देश दिए हैं। स्मरण रहे कि पिछले दो-तीन वर्षों से पानीपत व करनाल जिले में मानसून सप्ताह होते ही नसकूपों के कुओं में बननेवाली जहरीली मंत्र से अनेक किसान मौत का शिकार हो चुके हैं।

जिला प्रशासन ने सभी संबंधित विकास एवं पंचायत अधिकारियों को आदेश दिए हैं कि वह सरपंचों व पंचों के माध्यम से लोगों को इस सम्बन्ध में जरूरी दिशा-निर्देश दें। नसकूपों के कुओं में उतरने से पहले बक जलती हुई साफने कुत्ते में सटाकर देखें कि वहाँ जहरीली मंत्र तो नहीं है। यह आदेश प्रशासन की तरफ से यहाँ कष्ट निवारण समिति की बैठक में दिए गए। कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला उपायुक्त ने की।

(नवभारत टाइम्स)

## गर्मियों में लू से बचाव

मूम के बिना शरती की कल्पना भी नहीं की जा सकती क्योंकि सूर्य जीवनदायी ऊर्जा का सबसे बड़ा स्रोत है लेकिन गर्मियों में यह सूर्य जामनेवा बन जाता है। हमारे देश में हर साल गर्मी में संकड़ों कोष कान के तहत में समा जाते हैं, जिनमें से अधिकांश को मृत्यु पत्र लगने को बजह से होती है।

लू लगने का पहला लक्षण यह है कि शरीर में जलन शुरू होजाती है। गला और मुँह सूखने लगते हैं। सिर में मयंकण पोड़ा होती है। कभी-कभी रोगी का जो मिचलाता है और वह उल्टियाँ करता है। उल्टियों से शरीर में जल का संतुलन और भी बिगड़ जाता है। रोगी बेहोश भी हो सकता है। यदि समय पर इलाज न किया जाए तो रोगी की मौत भी हो सकती है।

प्रकृति हर मौसम में उस मौसम की व्यापियों से बचने के लिए ढेर सारे साधन जुटाती है। इसलिए गर्मी में अपना आन-पान संतुलित करने हम लू से बच सकते हैं। आरामक अवधि दैनिक आन-पान में मौसम के फलों और हरी सब्जियों पर ध्यान देना चाहिए। खट्टा, तरबूज, फालसा खाइए। भोजन के साथ हरी सब्जियाँ लीजिए चांस कर लीरा, ककड़ी और प्याज। घुड़ने की घटने और इमली भी आनदायक है। नींबू का प्रयोग विशेषकर फायदेमंद है। नींबू आप किसी भी रूप में ले सकते हैं शिकंजी बनाकर अथवा भोजन के साथ खाए जानेवाले सलाद में मिश्रीकृत। यदि वही को लस्ती में काला नमक, जरासी काठो मिर्च और गुना पीसा और डालकर पिया जाए तो वह आपका पेट साफ रहेगा। यार्नि कनज नहीं होगी।

गर्मों के मौसम में गर्म चीजों का सेवन या तो न करें या फिर बहुत कम करें। मिर्च-मसाले, चाय, काफी, शराब, अण्डा, मांस-मछली, उड़क को दाल, सभी शरीर की गर्मी को बढ़ाते हैं। चिकनाई का सेवन भी कम कीजिए।

हल्के-फुल्के कपड़े पहनिए। गहरे रंग के कपड़े जिल्जुल नहीं। सबसे अच्छे रंग हैं—सफेद, पीला, हरा और नीला। महानगरों में गर्मी में रात को मुले में सोने का रिवाज लज्ज होरहा है। लुके में सोने से शरीर में रोगों से लड़ने को सभ्यता बढ़ती है। सूरज निकलने से पहले तीन से पांच किंलोमीटर पैदल सवना चाहिए। इससे दिन घर खुलती और घुर्गी बनी रहेगी। बूप में जाना बड़े कोर बूप बहुत ज्यादा ठेक ही और पैदल चलना पड़े तो रुमास को पानी में विरोधक खर्चन के पोछे रख लीजिए।

घूप में बाहर निकलने से पहले पानी पीकर निकलें। पानी कई बीमारियों को दूर करता है। गर्मों के दिनों में पानी की मात्रा बढ़ा देनी चाहिए, दिन में कम से कम १२ पितास पानी पीजिए। भोजन के साथ बहुत कम पानी पीना चाहिए। बेहतर रहेगा कि भोजन के एकाध घण्टे पहले एक पितास पानी पीजिए। इसके बिनावा सुबह उठकर कुल्हा आदि करने के बाद 'कंस से कम दो पितास पानी पीजिए। यदि नींबू पानी में मिश्रीकृत पिया जाए तो ज्यादा फायदेमंद रहेगा है। गर्मों में नमक की मात्रा कुछ बढ़ा देनी चाहिए लेकिन जिन लोगों को उच्च रक्तचाप हो, उन्हें नमक से परहेज करना चाहिए।

यदि फिर भी किसी को लू लग जाए तो क्या करें? पहला काम यह कीजिए उसके लुके, चपल उतारकर ठंडी जगह में लिटा दीजिए। पक्का-ठहर हो तो बीर की प्रच्छा होगा। उसके कपड़ होते कर दीजिए। एक पितास पानी में चौथाई घम्मच नमक, तीन बार घम्मच ब्लूकोज, चुटकी मीठा सोडा मिलावे और आधा नींबू निचोड़ दें। रोगी को -यह दोष पितासे रहिए। चुनाव ठेक हो तो चादर को पानी में मिश्रीकृत रोगी के शरीर पर लपेट दें। सिर और गर्दन के पोछे बर्फ के पानी की मट्टी रखते जाइए। फिर जबर रोगी को आराम नही मिले तो फीटन किसी डाक्टर की मताह कीजिए।

दैनिक पंचाच केसरी

## यह कैसी विडम्बना है

शराब सब पापों की जन्मनी है, इतिहास साक्षी है कि शराब के कितने राख नष्ट हुए कितने खानदान बर्बाद हुए और अब जो शराबी परिवार वृी तरह तबाह हो रहे हैं। सभी वेद-शास्त्र तथा महापुराणों एवं धर्माचार्यों ने इसका सेवन सभी रूिष्ट से वर्जित माना है। मनु महाराज ने तो शराब को अन्न का मल कहा है, मल (दूधो) की कहते हैं। मल-मूत्र मनुष्य की आत्मा-पीने को वस्तु नहीं फिर भी अज्ञानी व स्वार्थी लोग शराब पीए जा रहे हैं।

भारतवर्ष ऋषि-मुनियों की भूमि थी। बीच में यहां विदेशियों का शासन रहा, उन्होंने सन प्रकार से नष्ट करने की सोची लेकिन हमारी संस्कृति को नहीं मिटा सके। लेकिन अब भारतवर्ष प्राजाय है, तो भी एक मुंबरात प्राप्त को छोड़कर सारे देश में शराब की नदियां बहाई जा रही हैं। हरयाणा प्रांत इस शराब वडावा नीति में सबसे जागे है। कहां ती यह कहावत प्रसिद्ध थी कि देशों में बेह हरयाणा जहां दूध-बेही का खाना। अब स्वार्थी एवं पटिया राजनेताओं ने इसकी तुरी तरह कर्त्तकित कर दिया।

ज्यादातर नरनारी विवाह शादी में ज्यादा बराती ने जाना, कपड़े पहनकर बाजे में नारनार, हिकजे बनकर नवयुवकों का नाचना, शराब पीना, शराब बेचना, गावों में शराब का ठेका मोलना, कल्याणक बर्ष का शराब पीना, पुरोहाओं में नकल करना करबाना, पंचमत्त किसन संस्थाओं के पास ठेका खोलना, शराब पीकर प्राए दिन कतल श्रमज् करना, किसी वहन-बेटी को बुरा साकना या मोलना, पंचायत, विधानसभा एवं लोकसभा में बुरे शराबी ब्याक्तियों का जाना प्रादि बातों को बहुत ही बुरा समझते हैं।

लेकिन यह कैसी विडम्बना है कि सबब पर ज्वादातर नरनारी उपरोक्त बुराईयों का विरोध करने वा कृम करने की बजाय स्वयं भी ज्वादा बडावा दे रहे हैं। इसी में अपनी शान समभते हैं, सारे परिवार सहित इन कुकर्मों को देखते एवं करते हैं। बड़े दुःख के साथ मिलना पड रहा है कि कई गांवों में तो शराब नाम से प्रायं कहते हैं, गले में जनेक है और अपनी कृमय से रेजुलेसन पास करके गांव में शराब का ठेका गुलवाते हैं। कई जगह गांव में प्रायंसमाज एवं प्रायंसमिति सभा हरयाणा की प्रेरणा से महिसार एवं प्रायं कार्यकर्ता गांव में शराब के ठेके बरने देकर बन्द करवाते हैं तथा गांव में जनेक शराब की विक्री को रोकते हैं, शराबियों को शराब न पीने के लिए समझाते एवं बाध्य करते हैं लोग फिर भी जाज नहीं आते।

सातम्य है कि चार मास से प्रायंसमाज कंबारी के अधिकांरियों एवं सदस्यों द्वारा विरोध करने, ठेकेदार को जीप में मोलन पीकने तथा नेतावनी देने पर जीप गांव में नहीं जाती फिर भी बूचं एवं गन्धे लोग गांव से बाहर नेताओं में सहक पर जीप रुकवाकर शराब साकर बेचते हैं। इसी तरह प्रायं वासावास में दो महिनों से शीक जाति की महिलाओं ने संघठि होकर विरोध करने तथा सभयं के नाद नेतावनी देने पर न गांव में शीक जाती है, न कोई शराब बेचता है, लेकिन फिर भी शराबी बडाे बेधर्मी के साथ एक किफोमोट प्रंस जाकर नलवा गांव के ठेके पर साहिन में सके तथा नधे में डकर उबर पड़े देखे जा सकते हैं। नलवा में भी पंचायत ने रेजुलेसन देकर मिलन संस्थाओं के साथ बस अडाक पर मिनी ठेका गुलवा रसा है।

कई लोग दुःखी होकर हमसे सवाल पूछते हैं कि शराबियों से छुटकारा कर मिलेगा, महिलाओं की इज्जत कैसे बनेगी, कई अडकियां शराबियों से संग जाकर अपने बच्चों को लेकर अपने माता-पिता के बर वाली जाती हैं उनका क्या होगा। शराब कैसे बन्द होगी। हमें निराश नहीं होना चाहिए। मेरा सुझाव है हम स्वयं शराब छोड़ें अन्य की बुझावें, प्रायंसमाज के सदस्य बनें, संघठि होकर शराबियों का मुकाबला करें, शराबियों से रिस्ता न करें, महिलायें अपने जापको कणवोर न समझे हिम्मत से सभयं करें, ज्यादा बाराती न ले आरें, विवाह में बाबा की जगह प्रायं अमनी बुलायें, वैदिक संस्था करवायें, गुनाब में शराबी को मोट न दें। तोही हम इन बुराईयों से बच सकते हैं। संघयं ही जीवण है।

अतरसिंह प्रायं क्रांतिकारी  
समा उपबेधक

## गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में प्रवेश

संसाधारण प्रायंसजता की यह जानकर प्रसन्नता होगी कि गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ पूर्णरूपेण प्रायंसमिति तथा हरयाणा के अधिकांर में है। यहां पर हरयाणा विद्यालय विज्ञान बोर्ड की ८-वीं कक्षा तक तथा श्रीमद्वाचानम्य प्रायं विचारणीय गुरुकुल मञ्जर की पाठसिधि (श्री महर्षि दयानम्य विषयविद्यालय रोहताक से सम्बद्ध) के अनुप्राय मध्यमा (१०+२) और शास्त्री (बी.ए.) कक्षा तक के ज्ञापन का प्रबन्ध है। ३१ जुलाई तक प्रवेश प्रार्थना रहेगा। अतः प्रवेशार्थी अचरर का साभ उठाएं। योग्य प्राचार्य एवं अध्यापकों का समुचित प्रबन्ध है। पूर्ण जानकारी के लिए गुरुकुल कांयसिय में पंचाकर अथवा फोन नं० २०५२३८ से सम्पर्क करें।

धर्मचम्य  
गुरुकुल विद्यालया  
गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ डा० नई दिल्ली-५५  
जिला फरिदाबाद

## गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के मुख्याधिष्ठाता

जायंसजता को यह जानकर प्रसन्नता होगी की गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के मुख्याधिष्ठाता पर पर चौ० अमचम्य जी पूर्ण प्रबन्धकनियेक सहकारी नेक एवं अतिरिक्त प्रा. सी. एच. हरयाणा को जावरी रूप में नियुक्त किया गया है। जाप एक अनुप्राय, ईमानदार तथा स्वच्छ छत्रि के अधिकांर रहे हैं। प्रायंसमाज के कायों में रचि रखते रहे हैं तथा प्रायं मिलन संस्थाओं को सहायता करते रहे हैं।

एक जुलाई को जापने श्री० बेरसिंह जी तथा प्रचान के बाइसागुवार मुख्याधिष्ठाता का कायंबार सम्भाल लिया है। इस अचरर पर समाजमणी श्री सुवेसिंह जी, पूर्ण समाजमणी श्री वेदवत शास्त्री तथा प्रबन्ध सचिपि के सदस्य महाशय श्रीचम्य जी प्राधि उपस्थित थे।

प्राथा है इनके कायंकाल में गुरुकुल निरन्तर उल्लति करता रहेगा।  
समानमणी

## सदाचार

सदाचार से ही मानव दुनिया में इज्जत पाता है। सदाचार से हीन मनुष्य दुनिया में ठोकर खाता है। माता-पिता की सेवा करना सज्जनों का जावर सुधार। दीन दुःखी को गले समाकर छोटी से करना तथा प्यार। दुष्ट जनों से रहो परे ना उनसे कोई नाता है। सदाचार से ही मानव दुनिया में इज्जत पाता है।

मातृवत् परवोर, परबन मिट्टी सम तू जान। अपने जंता दुःख-सुख सवका बी जागे तो ही बिदाय। निज स्वार्थ हित किसी जीव को भी कर्मी नहीं सताता है। सदाचार से ही मानव दुनिया में इज्जत पाता है।

कीन हूं मैं कहां से प्यारा और मुझे कहा जाता है। इन बातों का कर्के मिलन तत्प्राय को जाना है। मन को बस में करके निरन्तर जागे बडाता जाता है। सदाचार से ही मानव दुनिया में इज्जत पाता है।

ऐसे सदाचारी मानव दुनियां को स्वयं बनाते हैं। मुक्ति प्रायु करके जीवण में दिव्य लोक में जाते हैं। प्रजाक सदाचारी का जीवण सज्ज हो जाता है। सदाचार से ही मानव दुनियां में इज्जत पाता है।

श्री० मेघच (धर्म सिलक)  
पंडित मातृदाम सन्य प्राजाकर

## सत्यार्थप्रकाश प्रेमी चले गये

श्री० सुभांराम निम्नोवे वेदप्रचार ट्रस्ट के संस्थापक सन्नी नीबारी के पचत्त २५ जून को शरीर त्याग कर गये। हजारों सत्यार्थ प्रकाश अपने जीवण में उन्होंने गुप्त नाते और छात्रमुक्तियां रहे। गुरुकुल शरीरा और गुरुकुल विकासता के प्रचान रहे। एक नाभ बचने का ट्रस्ट छोकर गये हैं जिसके ब्याज से वेदप्रचार का कायंक निरन्तर चलाता रहेगा।

श्री० नीमस्वरूप, ट्रस्ट अध्यक्ष  
गुरुकुल विकासता (पानीपठ)

## धर्महीन राजनीति ने क्या-क्या अपराध किए ?

यह राजनीति इस भारत में क्या-क्या विपदा लाई है।  
 क्या धर्म नैतिकता की सब मर्यादा विचरवाई है।।  
 शासन सत्ता व स्वयंसेवक हेतु जो विधि प्रणयनाई जाती है।।  
 छत्र कपट पाप अभ्याय भरी वह राजनीति कहलानी है।।  
 इस राजनीति के रूप अनेको नही समझ में आते हैं।।  
 विस्वास नही होता उन पर जो भी इसको प्रयनाते हैं।।  
 राज्य हेतु इस कुटिल राजनीति ने क्या-क्या करवाया।।  
 फेकेई ने वर भाग राम को बोधक बंध वन निर्रखाया।।  
 बाको सुप्रोच भाई-भाई को इसी नीति ने लखवाया।।  
 सीता हृदय लंका दहन रावण का मरण भी करवाया।।  
 राम के हाथों राजतिलक लंका का विभीषण ने पाया।।  
 अपनी बहन की सत्यागो को कस के हाथो मरवाया।।

कोरन-नागवध महायुद्ध इस नीति ने फंसाया था।।  
 गुप्त-सिन्धु भाई-भाई ने लड़कर प्राण गवाया था।।  
 पृथ्वीराज चौहान को जयचन्द ने ही बन्धी बनवाया।।  
 राणा प्रताप को मानसिंह ने ही रथ में था हरकाया।।  
 इस नीति के कारण ही भारत मुसलम हो पाया था।।  
 मुस्लिम व ईसाई राज इसके कारण ही आया था।।  
 देशद्रोहियों ने इनसे मिस प्रयनाई को ही मरवाया।।  
 राजनीति ने भारत मा का उकड़ा-उकड़ा करवाया।।  
 बोटों के लिए विघटनकारी तरकों को फिर पनपाया है।।  
 राजनीति ने धर्म हिंसा का भोग्य चक्र चलाया है।।

पंजाब में भिखराबाबा को ही काँचने ने उरसाया।।  
 धर्मतत्सर के मुद्दारे को मुद्दसल बन बनाया।।  
 भारत को सेना पर उसने गोली-गोला बरसाया।।  
 खालिस्तानी मांग ने नरसंहार प्रयंकर करवाया।।  
 हत्याकांड इन्धरा गांधी का इस कारण ही हो पाया।।  
 काश्मीर में इस नीति ने सहज अनेको मरवाया।।  
 शरणाधीन लाखों हिन्दू को दर-दर पर भटकाया।।  
 लंका में तमिलों का वध भारत द्वारा करवाया।।  
 रामजन्म भूमि विवाद इस नीति ने ही उरसाया।।  
 नगर अयोध्या में इसने ही रामप्रकट को मरवाये।।  
 इसके कारण निर्वाचन की दुल्लद धरमस्था आई है।।  
 राजीव सहित निर्वाचन में संकड़ों ने जान गंवाई है।।  
 धर्महीन इस राजनीति को जब से देश ने प्रणयनाया।।  
 तब से भ्रष्टाचार अनीति, हिंसाचार यह बढ़ पाया।।

धर्महीन राजनेतारों के यह धर्म समझ नहीं आया।।  
 भगवान् मनु ने मनुस्मृति में मनुष्य धर्म जो बतलाया।।  
 वृति: क्षमा: दमो अस्तेय, सींचम, इन्द्रिय का विग्रह।।  
 भीविद्या सत्यम् अक्रोध दस सखण का यह संग्रह।।  
 सत्यायंश्रमकास में स्वामी दयानन्द ने भी यही है बतलाया।।  
 सत्य सनातन सुख शांतिमय वेद धर्म ही बतलाया।।  
 सखस विषय का हितकारी यह धर्म परम सुखवाई है।।  
 इसके त्याग से ही भारत में यह हिंसा बढ पाई है।।

होको समझो इस भारत का यह दुल्लद हाल क्यों हो पाया।।  
 पिन्ध्यासी प्रतिघत यह हिन्दू क्यों स्वामीभान को लो पाया।।  
 इस्लामी राष्ट्र बन गये बहुत क्यों आयेराष्ट्र न बन पाया।।  
 क्योंकि धार्य व हिन्दू ने संगठन बल को न पनपाया।।  
 पोर धर्मविपनास, धारि सन्ध्याय ने इसको विर्रलाराया।।  
 एक धर्म वैदिक व ईश्वर एक ने इसने प्रणयनाया।।  
 ध्यानन्द के वैदिक पथ पर जब तक वेस न आवेगो।।  
 तब तक जन का यह मानव सुख शांति न पावेगा।।  
 धर्म, देश व राजनीति की दुल्लद दशा जो हो पाई।।  
 सरदार जोर हिन्दू ही नहीं आयमदाम भी है उत्तरवाई।।  
 ऋषि दयानन्द का सन्ध्या उसने जग में फंसाया नहीं।।  
 उसने वैदिक राजनीति का संगठन कोई बनाया नहीं।।  
 धर्मिक, शात्र पिछडो बनता में यह प्रचार न कर पाया।।  
 दोन-दुबी भारत की जनता का संघटन न हर पाया।।

इस कारण जन शक्ति समर्थन बाबा धायमदाज नहीं।।  
 इस ही कारण देश में इसकी शक्तिसाली आधाज नहीं।।  
 इस कारण मुस्लिम-ईसाई की शक्ति बढती जाती है।।  
 आर्य हिन्दुओं की सख्या व शक्ति घटती जाती है।।  
 यह झल रहा तो भारत में फिर भारी सन्ध आयेगा।।  
 यह धरमधर व स्वभन्न फिर किस भांति रज पावेगा।।  
 इसलिए उठो निज देश धर्म की रक्षा का धरसर धारा।।  
 मानव कलेश्वर निगाने को ही यह मानव का तन पाया।।  
 'भास्कर' ऋषिब ब बलनाया ही वेद मायं सुखवाई है।।  
 धर्महीन यह राजनीति भारत के लिए दुखदाई है।।  
 हे राजनीति के नेनामी यह नीति क्यों अपनाई है।।  
 मना को रोटी सेकने क्यों त्रिया की श्राप जलाई है।।  
 पर दाय रहे जिनने जनघातक यह हिंसा फंसाई है।।  
 यह उनको भी न छोड़ेगी जिनने इसको पनपाई है।।  
 दो त्याग इसे निज जीवन में जो सुख चाहो निज जीवन का  
 यह राजनीति सुखदाई वने दुख भिटे 'भास्कर' जन-जन का

दि० १५-६-१९६१

भगवतोप्रसाद सिद्धांत भास्कर  
 प्रधान नगर धार्यसमाज,  
 १५३०, प० सिवदोन माय, कृष्णपोल, जयपुर।

### दांतों की हर बीमारी का घरेलू इलाज



**दंत मंजन**  
लोहा युक्त



मन्तु की सुखन

23 जड़ी बूटियों से निर्मित  
आयुर्वेदिक औषधि



दांतों का डॉक्टर  
**दंत मंजन**  
लोहा युक्त



मुंह की दुर्गंध

अब नये दैकिय  
में उपलब्ध



ठंडा गर्म पानी  
सजमा

महाशियां वी हीट्टी (प्रा०) लि०

8/84 इण्डिया स्ट्रीट पुरी नोवा १६ मीन ६३१५२ ३7982 537348



बात का कई

## हरयाणा के अधिकृत विक्रेता

१. मेसज परदामान्ध साईरिसामल, विमानो स्टेंड रोहतक।
२. मेसज कुलबन्ध सोताराम, गांधी बाजार, हिसार।
३. मेसज सन-अप-डुब्ल, सारंग रोड, सोनीपत।
४. मेसज हरीय एनसोस, ४६६/१७ मुहाराज रोड, पानोपत।
५. मेसज भगवानदास देवकीनन्ध, शरणा का बाजार, हरयाणा।
६. मेसज धनश्यामदास सोताराम बाजार, विमानो।
७. मेसज कृपाराम गोयल, चको बाजार, सिरसा।
८. मेसज कुलबन्ध पिचक स्टोड, साप न० ११५, मार्फट न० १।  
एन-धार्ड-टी०, फरीदाबाद।
९. मेसज सिधका एनसोस, सबर बाजार, मुकामा।

### वार्षिक उत्सव सम्पन्न

श्री कुमार समा रावीर का वार्षिक उत्सव दिनांक १ व २ जुल को बड़ी वृत्तधाम के साथ सम्पन्न हुआ। इस उत्सव में स्वामी सरणी जी, महाशय गुरुदेव मुनि जी व पं० अजुंनदेव जी, श्री अखिलेश कुमार भास्ती दिल्ली, महाशय रामकिशन, श्री० सहरोसिंह पुरे मित्र एक ने भाग लिया। पं० विद्याभूषण शाय, पं० शेरसिंह शाय, महाशय हरलाल जी व स्वामी चंद्रवेश जी के मधुर भजन हुए। प्रायः प्रतिनिधि समा हरयाणा को १०० रु० दान दिये गए।

स्वामी सेवकानन्द सरस्वती  
शायसमाज रावीर

### शास्त्री + आर्योपदेशक पाठ्यक्रम में प्रवेश आरम्भ

श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति ट्रस्ट करतारपुर विद्या वासस्थान में शास्त्री आर्योपदेशक उपाधि हेतु पंचवर्षीय पाठ्यक्रम जो कि सभी विस्वविद्यालयों द्वारा श्री. ए. के समकक्ष मान्य है, के लिये १ जुलाई ६१ से २४ जुलाई ६१ तक प्रवेश होगा।

प्रवेश योग्यता मान्यता प्राप्त किसी शिक्षा बोर्ड या विस्व-विद्यालय से बैचुलर उपाधि। शिक्षा, भोजन, दूध, वातावरण, बिजली, पानी आदि की सबंधीय निःशुल्क व्यवस्था तथा पुस्तकालय की सुविधा। योग्य छात्रों को (५० रुपये से १०० रुपये मासिक) की विधेय छात्रवृत्ति। प्रमाण-पत्रों सहित मिलें व्यवस्था पत्राचार करें।

भाषाएं

श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय  
करतारपुर-१५४०१ (जिला-जालंधर) पंजाब

### शास्त्री पत्नी का देहान्त

पुत्र साहब श्री कपिलदेव जी शास्त्री की धर्मपत्नी का देहान्त २५ जून १९६१ को दोपहर परचाट मैडिकल कालेज रोहतक में हुआ। निधन कुछ महिनों से उसके मुटों को विकसिता चल रही थी। २६ जून को ग्राम चडवाल (गोहाना) में वैदिक ीति से अग्नेयैष्टि संस्कार किया गया और शोषसमा ६ जुलाई को प्रातःकाल ८ बजे गोहाना में शास्त्री जी के निवास पर होगी।

—सम्पादक

### शोक समाचार

शायसमाज सासन जि० पानीपत के कमंड-कार्यकर्ता श्री ब्रह्मदेव जी सुमुन स्व० श्री शृंगारसिंह जी का १५-६-६१ को निधन हो गया। प्रभु से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति सद्गति प्रदान करे तथा परिवारजनों को शोक प्रदान करे।

—समाप्त

# गुरुकुल

कांगड़ी फार्मसी की  
आयुर्वेदिक औषधियां सेवन कर स्वास्थ्य लाभ करें

### गुरुकुल

#### स्वयनप्राश

दूर परिहार के लिए शक्तिशालक  
एक स्फूर्तिदायक राशन।  
शारी, ठंड व शारीरिक एवं  
केन्द्रीय की दुर्बलता में  
उपयोगी आयुर्वेदिक  
औषधीय टॉनिक



गुरुकुल  
पारोक्जिल  
कोले व मरुती के समान गुणों  
में विरकिर, पायोविक  
के लिए उपयुक्त  
आयुर्वेदिक औषधि



गुरुकुल  
चाय  
सुखय व शक्तिकुलक  
आदि में नई मंडियों  
से बनी शास्त्री  
आयुर्वेदिक औषधि

### गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी

हरिद्वार

की औषधियां सेवन करें।

शास्त्रा कार्यालय  
६३ गली राजा केदारनाथ,  
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६



गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी हरिद्वार (उ० प्र०)

शास्त्रा कार्यालय : ६३, गली राजा केदारनाथ  
चावड़ी बाजार, दिल्ली-११०००६

स्थानीय विक्रेताओं एवं सुपर बाजार  
से खरीयें

फोन नं० २६१८७१

\*अकर - ईशाव'२०५५

शायं प्रतिनिधि समा हरयाणा के लिए गुरुक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा भाषायें इटिंग गेस के लिए सर्वाधिकारी गुरुकुल रोहतक में  
संपादक सर्वाधिकारी कार्यालय पं० बगदेवसिंह सिद्धापी चवन, इयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।



# औ ३ म् कृपवन्तो विश्वमार्याम् सर्वे हितकारिणः

सामाजिक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—सुनेसिंह सामान्यी

सम्पादक—वेदव्रत शाल्मी

सहसम्पादक—प्रकाशचौर विद्यालकार एम० ए०

वर्ष १८

अंक ३२

१४ जुलाई, १९६१

वार्षिक मूल्य ३०)

(आजीवन मूल्य ३०१)

विदेश में ८ पौंड

एक प्रति ३५ पैसे

## वेद में पांच अग्नियां

(पंच धर्मवेद 'मनोयो' वेदनोंयं गुरुकुल कालवा)

वेद में अग्नि-विद्या का वर्णन है। ऋग्वेद ११६ में पांच अग्नियां बतलाई है। पहली-विष्णु, दूसरी-वाटर अग्नि, तीसरी यज्ञिय, अग्नि, चौथी-अग्नि अग्नि अग्नि पांचवीं-सूर्य अग्नि। मन्त्र है—  
तृप्यायनी मेडिस वितायनी मेड्यवतामना नाशिताववतामना व्यथितात् ।  
शिवेदेवनिर्नो नामानेऽजङ्गिऽजनुवा नाम्निहै बोध्या पृथिव्यामसि यतोऽजाभूत् नाम यज्ञियं तेन त्वा वसे शिवेदेवनिर्नो नामानेऽजङ्गिऽजनुवा नाम्निहै यो द्वितीयव्यां पृथिव्यामसि यतोऽजाभूत् नाम यज्ञियं तेन त्वा वसे शिवेदेवनिर्नो नामानेऽजङ्गिऽजनुवा नाम्निहै यस्तृतीयव्यां पृथिव्यामसि यतोऽजाभूत् नाम यज्ञियं तेन त्वा वसे। अनु त्वा देवकीतेभे ।।यजु० १२१।।

धर्म—हे विद्या को ग्रहण करने के चकुकुं । जैसे मैं जो (तृतीयानी) स्थापन करने योग्य वस्तुओं का स्थान विष्णु (अग्नि) है और जो (चिदायनी) अग्नि और अग्नि प्रसिद्धि पदार्थों को प्राप्त करनेवासी विष्णु (अग्नि) है (त्वा) उसे जानना हूँ, वेदे तु वृक्षतिये इस विद्या को (मे) मुझसे (एहि) प्राप्त कर । जैसे यह अग्नि प्रकाश से तेवना किया हुआ अग्नि) सूर्य वा प्रसिद्धि अग्नि (ममः) अग्नि और प्रकाश को देता हुआ (मा) मेरी (व्यथितात्) अग्नि और विचलित होने से (अवदात्) रसा करती है और (नाशितात्) देखव्यं प्रदान से (प्रवतारो) रसा करती है वेदे तु मुझसे तेवना किया हुआ अग्नि तेरी भी रखा करे ।

वाटर अग्नि—जैसे मैं, जो (अग्नि) वाटराग्नि (अग्निः) धर्मों को रस पहुँचाने वाला (अग्निः) है वह (आयुना) जीवन का सुख-प्रापक (नाम्ना) नाम की प्रसिद्धि से (अव्याम्) इस (पृथिव्याम्) भूमि पर (नाम्) प्रसिद्ध है, (त्वा) उस अग्नि को (देवकीतेभ्ये) विष्णुयुगो वा विष्णु भोगों की प्राप्ति के लिये मैं जानता हूँ, वेदे इसीलिये इस अग्नि को तु भी (मे) मुझसे (एहि) जान एवं प्राप्त करे ।

यज्ञिय अग्नि—जैसे मैं, उस (नाम्ना) प्रसिद्धि से (यत्) जिस (अनापृच्छत्) किसी धर्म से न कबाबे जाने वाले (यज्ञियम्) यज्ञार्थों के सङ्कल (ममः) उक्त-प्रसिद्धि तेज को (धर्मवः) सब ओर से धारण करता हूँ जैसे (त्वा) उसे तु इसको हवाये भी (अग्निहै) प्राण्य कर और सब लोग उसकी (अनुविदेत्) अग्निं ।

प्रसिद्ध अग्नि—जैसे मैं, (तेम्) उस अग्नि को जो अग्नि (द्वितीयव्याम्) इससे अग्नि (पृथिव्याम्) विद्याय भूमि पर (अग्ने) प्रसिद्ध अग्नि है और जो (अग्निः) बङ्गासिध (आयुना) जीवन वा सुख प्रापक (नाम्ना) प्रसिद्धि से (नाम्) प्रसिद्ध (अग्निः) है । और (मः) जो अग्नि (ममः) सुख एवं अवकाश प्रदान करती है अग्निः (त्वा) उसे अयोग्य मैं जाता हूँ जैसे इसलिये (त्वा) इस अग्नि को तु (एहि) प्राण्य कर और जो सब लोग (अनुविदेत्) अनुसूचवा से प्राण्य करे । जैसे मैं जो (अनापृच्छत्) बड़ा (यज्ञियम्) यज्ञ विद्या सम्बन्धी (नाम्) प्रसिद्ध तेज है (त्वा) उसे (अग्निः) सब ओर से स्वीकार करता हूँ, जैसे तृतीय (नाम्ना) प्रसिद्धि से (एहि) उसे प्राण्य कर और सब लोग उसे (अनुविदेत्) प्राण्य करे ।

सूर्य अग्नि—जैसे मैं जो (अग्निः) सूर्य में स्थित अग्नि है, वह (आयुना) जीवन वा सुख-प्रापक (नाम्ना) नाम से (तृतीयव्याम्)

तृतीय कक्षा में विद्यायान (पृथिव्याम्) भूमि पर (अग्ने) सूर्य अग्नि (अग्निः) यजनवील्य सूर्य रूप से (नाम्) प्रसिद्ध (अग्निः) है और (मः) जो अग्नि (ममः) अग्नि कक्षे चक्रकरोती है (त्वा) उसे अग्नि कक्ष हूँ, जैसे इसको इसलिये तु (एहि) प्राण्य कर और सब लोग अग्नि (अग्निः) प्राण्य करे ।

मन्त्र में पांच अग्निवां—  
१- विष्णुत्—अग्नि अर्थात् विष्णु सत्र वस्तुओं का नाशक है, सब भोगों और पदार्थों का प्रापक है, इसका विष्णुसूत्र सेवन जब और प्रकाश प्रदान करता है, यह सब भय से रसा करती है, देखव्यं प्रदान करके रसा करती है। अतः विष्णु-विद्या के पठन-पाठन रूप यज्ञ का अनुष्ठान अवश्य करते रहें ।

२- वाटर अग्नि—अग्नि अर्थात् वाटर-अग्नि धरती के बर्बाद का रस है, धर्मों में रस पहुँचाने है, रसों का परिचाय करता है, धामु और सुखों का प्रापक है। विष्णु सुखों और विष्णु भोगों की प्राप्ति का साधन है। अतः इस वाटर-अग्नि का शिष्य रूप यज्ञ का अनुष्ठान अवश्य करते रहें ।

३- यज्ञिय अग्नि—अग्नि अर्थात् यज्ञिय अग्नि अत्यन्त तेजस्वी है। इसके तेज को कोई दबा नहीं सकता। यह दुर्गन्ध को दूर करने वाला और सुगन्धि रूप तेज को फैलाने वाला है। इस अनापृच्छ यज्ञिय तेज स्वरूप अग्नि का यज्ञ वेद में आधान करें। सब मनुष्य यज्ञ विद्या को सीखे ।

४- प्रसिद्ध अग्नि—अग्नि अर्थात् भौतिक स्वरूप सब प्रसिद्ध अग्नि धर्मों में स्थित है। जीवन तथा अन्य भौतिक सुखों का साधक प्रापक है। इसका विष्णुसूत्र प्रयोग करें। इस स्वरूप प्रसिद्ध अग्नि के प्रयोग शिल्प विद्या को भी सीखें ।

५- सूर्य अग्नि—अग्नि अर्थात् सूर्य आयु का हेतु है। धामु का परिमाण यही है। स्वयं मतिषोक्त-तथा सब अगव्य को गति देने वाला है। सम्पूर्ण आकाश को-अग्निागित करता है। सब मनुष्य सूर्य-विद्या को सीखें ।

इस मन्त्र में प्रतिपादित अग्नि को विद्या को सीखना यज्ञानुष्ठान है। इस यज्ञानुष्ठान से मनुष्य सब कार्यों की सिद्धि करें ।

मावायं—इस मन्त्र में अग्नि कुलोपमा अलङ्कार है। जो प्रसिद्ध, सूर्य धरि विष्णु रूप में तीन प्रकार का अग्नि सब लोकों में बाहर और अन्तर विद्यमान है उसे जानकर सब मनुष्य सब कार्यों की सिद्धि करे ।

समीक्षा—इस पृथिवी पर स्वरूप रूप प्रसिद्ध अग्नि है, अन्तरिक्ष में विष्णु रूप अग्नि है और सुखोक्त में सूर्य रूप अग्नि है। मन्त्र में प्रतिपादित वाटराग्नि का विष्णु रूप अग्नि में तथा यज्ञिय अग्नि का स्वरूप प्रसिद्ध अग्नि में प्रकटमान है। मन्त्र में उपमावाचक शब्द युक्त अग्नि सूर्य आकाश कुलोपमा अलङ्कार है। उपमा यह है कि विद्वानों के समान अग्नि जन भी अग्नि-विद्या को सीखे ।

# कितनी जागरूक है आज की नारी

डा० सरोज धरपाल

आज हमारे देश में नारी उत्थान, नारी की स्वतन्त्रता आदि को लेकर जो आन्दोलन चल रहे हैं, उनसे नारी के जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन आये हैं। प्रारम्भ से ही पुरुष अपने अहम की तुष्टि के लिए अपने को नारी से श्रेष्ठ मानता आया है। नारी पुरुष की अम्बानी होती हुए भी पुरुषों से तुल्य समझी जाती रही है।

महाकवि कबीर ने नारी को "महाविचार" कहा। तुलसी ने उसे भूष, पशु तथा डोर की बेथी में रखकर ताड़ना का अधिकारी बतलाया। ऐसी स्थिति में प्राथमिक पीढ़ी के राष्ट्रकवि मधुसूदनरथ नृप को कल्याण माई और उनकी सेवनी से पूट पड़ा।

अबला जीवन हाथ, पुष्टारी यही क्लामी,  
पांचल में है दूध और धाँसों में पानी।

उस समय नारी दुःकार सहते हुए मात्र पुरुष की यौन पूर्ति का साधन बनकर रह गईं। प्रारम्भ से पति नारी की स्थिति पर दुष्टिपात करते तो उसकी स्थिति श्रेष्ठ थी। किन्तु जहाँ एक ओर उसे सम्मान प्राप्त था, वहीं दूसरी ओर वह त्याग की पूर्ति बनी हुई थी। यवनों के आगमन के पश्चात् उनकी काम कोलुप निगाहों से बचाने के लिए ही भारतीय नारी को पर्दे में रखा जाने लगा और उसे हेय दृष्टि से देखा जाने लगा। आज भारतीय नारी स्वतन्त्रता के वातावरण में अपने उत्थान हेतु संघर्षरत है। वह पुराने सभी ऋषिवादी बन्धन तोड़कर पुरुष के समान जीना चाहती है। स्वास्थ्य, बौद्धिक, सामाजिक तथा राजनीतिक आभूति के प्रकाश से युवाँ-युवाँ की पीठि नारी को प्रकाश मिला है।

वह सास-नबसुर, पति तथा सन्तान की सेवा करने के साथ-साथ पुरुष के समान चलकर बिहाना चाहती है कि वह प्रबला नहीं सबल है। वह ऋषिवादी नारी की विचारधारा को त्याग प्रथिक और प्रथिकार कुछ भी नहीं, का विरोध करती है। सौभाग्य की बात है कि अब नवयुवक भी नारियों के अधिकार की मांग करते हैं तथा कुछ सोमा तक नारी का साथ दे रहे हैं।

आज नारी को सविधान के अन्तर्गत पुरुष के समान अधिकार प्राप्त हैं। वर्तमान पीढ़ी की नारी सभी ऋषिवादी बन्धनों को तोड़कर घर की चारदीवारी से बाहर आने की इच्छुक है तथा अपने अधिकारों के प्रति सजग है।

वह सास-ससुर, पति तथा सन्तान की सेवा करने के साथ-साथ पुरुष के समान चलकर बिहाना चाहती है कि वह अबला नहीं सबल है। वह ऋषिवादी नारी की विचारधारा को त्याग अधिक और अधिकार कुछ भी नहीं, का विरोध करती है। सौभाग्य की बात है कि अब नवयुवक भी नारियों के अधिकार की मांग करते हैं तथा कुछ सोमा तक नारी का साथ दे रहे हैं। यद्यपि यह देखा जाता है कि बड़े-बड़े समाजसेवी, समाजसुधारक, महापुरुष होने का दावा करने वाले, यहाँ पर नारी को प्रगति की बात कर रहे। नारी जागरण हेतु उन्हीं के घरों में जाकर देखा जाये तो ज्ञात होया कि कथनी और करने में कितना अन्तर है। वे कभी इन सामाजिक गोष्ठियों में अपने परिवार की महिलाओं को नहीं ले जाते। यदि पुरुष ऐसा न करे तो महात्मा समाज सुधारक का ताज, बड़े-बड़े विद्वान् पुरकार इन्हीं कंसे प्राप्त होगे। यहाँ तक कि महिला संगठनों को भी पुरुष ही बचाना चाहते हैं। यदि नारी साहस जुटाकर इन कामों को करना चाहे तो उसे न्यासाहित करते हैं। प्रायः देखा जाता है कि पुरुष अपने नाम से महिला संगठन चला नहीं सकते। अतः घर को पति, बहन, बड़े-बेटी आदि की अध्यक्ष या सची बनाकर, पर्दे के पीछे बही बही करते हैं जो

वे चाहते हैं। उन महिलाओं को तो केवल मंच पर बोलने के लिए कागज के पुर्जे पकड़ा लिये जाते हैं। वह नारी देखने में तो बहुत भाग्यशाली लगती है कि उसका पति उसे सहयोग करता है, यह वह भी किसी से नहीं कह सकती कि उसके घर में उसे मानसिक रूप से कैद रखा जाता है। हाथी के दांत खाने के और बिसाने के कुछ और। अतः यही कहा जा सकता है कि यदि स्वतन्त्र भारत की नारी का सही रूप देखना चाहें तो बड़े-बड़े महिला संगठनों को बचाने वाले समाज सुधारकों की महिलाओं से मूल रूप से साक्षात्कार लिये जायें। उन्हीं महापुरुषों को यदि किसी माई या पुत्र का बिबाह करना हो तो कभी भी स्वतन्त्र विचारक, समाजसेवी महिला से नहीं करेंगे। कहेगे कि हमें तो ऐसी सड़की चाहिए जो घर में ही रहे। इसी से ऐसे लोगों की मानसिकता का पता चलता है। अतः देश के कल्याण हेतु नारी उत्थान का हमें सही प्रयास करना आवश्यक है। वरना सही चित्रण तो नारी का सही है और इससे पता लगता है कि आज की नारी कितनी जागरूक हो पाई है।

(दैनिक जनसम्बन्ध से सामार)

## नशा परोपकार का

दुनिया में ऐसे बहुत लोग हैं जो अपने स्वार्थों की खातिर किसी की भी जिवन्ती छीनने में पल की भी देती नहीं करते लेकिन ऐसे लोगों की भी इस दुनिया में कोई कमी नहीं है जो निस्वार्थ रूप से किसी की टूटती साँसों को जीवन्तमान देने की हर पल तैयार रहते हैं। ध्यय में खून बहाने वाले भी बहुत हैं और अपना खून दान करके किसी को नये सिर से जीने का सहारा देने वाले भी बहुतों हैं।

ऐसा ही एक व्यक्ति है गवर्हदीन। सोनीपत के गांव कबीरपुर में रहने वाला 45 वर्षीय गवर्हदीन 105 बार रक्तदान कर चुका है। जबकि उसका संकल्प 101 बार रक्तदान करने का था। वह अपनी माँसों की दान कर चुका है। मुँदों भी देने के फ़िराक में है।

हालांकि गवर्हदीन निश्चय है और अपने परिवार का मरण पोषण भेला-बुयी चलाकर करता है। मगर दूसरों के काम आने का ही उसने जीवन का सक्षय साथ रखा है। वह अनेक बार सम्मानित भी किया जा चुका है। राजनेताओं से भी उसे सम्मानित किया है।

गवर्हदीन के अनुसार उसने पहली बार रक्तदान लाख वहादुर शास्त्री के आह्वान पर किया। भी शास्त्री ने १९६५ में भारत-पाक युद्ध के दौरान प्रधानमन्त्री के नाते शास्य सेनिकों की धारा रक्षा के लिये रक्तदान की रेषासिधियों से ग्रहीत की थी। इस ग्रहीत से गवर्हदीन काफी प्रभावित हुआ और उसने बिना देती किये दूसरे ही दिन देहमी के दरबिन अस्पताल में जाकर रक्तदान किया।

और गवर्हदीन का रक्तदान का सिद्धसाध तब से लगातार जारी है। उत्साह और हिम्मत बरकरार है। उसने एक दिन में दो-दो बार और सप्ताह में कई-कई बार रक्तदान किया है।

गवर्हदीन को बस इस बात का गव है कि उसके बितना भी बन सका, रक्तदान किया और कइयों का जीवन बचाया। वास्तव में ही परोपकार का नशा भी ग्रहीत होता है।

## चौ० नत्थासिंह का देहान्त

वहें दुःख के साथ लिखा जाता है कि हमारे पूज्य पिताजी भी नत्थासिंह प्रायं अजयनदेसक का स्वयंवास विनांक ३-७-६१ को ही गया। रम्य पगड़ी विनांक १६-७-६१ बार सुकवार को है।

हरपाल प्रायं सुपुत्र स्व० नत्थासिंह प्रायं अजयनदेसक पो० ब्याना, गांव बंदपुर, जिला करनास

## विदेश में प्रचार

सेवा में,

श्री वेदव्रत श्री शास्त्री,

सादर नमस्ते !

बासा करता हूँ कि आप सब अच्छी प्रकार से होंगे। मैं भी यहाँ पर अच्छी प्रकार से पहुँच गया हूँ। यहाँ पर एमएलटीएम के एयरपोर्ट पर प्रचारक आर्यसमाज रोटरम के सभापति पं० जीवन गणेश, मन्त्री पं० विश्वेश्वर, डा० आनन्द कुमार विरजा, पं० प्रेईसन स्वयंवर, श्री विश्वानि, वैदिक ज्योति संगठन आर्यसमाज रोटरम के उप-सभापति श्री नारायणचत बोधाह इत्यादि अनेक भाई-बहन स्वागत के लिए आये थे। श्री पं० विश्वेश्वर जी ने अपने जीवन के पचास वर्ष भूरे होने पर निदिबसीय सामवेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया, ३०, ३१ जून प्रचारक आर्यसमाज रोटरम के सहयोग सम्पन्न किया। इस यज्ञ को डा० आनन्दकुमार विरजा, श्री पं० ओमप्रकाश शास्त्री सामवेदी व मेरे (रामपाल शास्त्री योगाचार्य) द्वारा सम्पादित किया गया। होलैंड में इस प्रकार के यज्ञ का आयोजन करना एक उत्कृष्ट एवं प्रथम प्रयास था, जो कि अत्यन्त सफल रहा है। तीन दिवसीय इस महायज्ञ में वहाँ जनता को प्रतिदिन एक विद्वान् द्वारा वेद प्रबचन सुनने को मिला, वहाँ पर अनेक सभाओं के अधिकारियों ने भी इस यज्ञ के लिए पं० विश्वेश्वर व प्रचारक आर्यसमाज का बन्धुवाद किया। इस यज्ञ की सफलता के पश्चात् अन्य सभाओं भी इस प्रकार के वेद पाठायण यज्ञ के आयोजन का कार्यक्रम बना रही हैं। प्रचार का कार्य अच्छी प्रकार से चल रहा है। योग सिधिर व शक्ति-प्रदर्शन के कार्यक्रम भी हो रहे हैं। यद्यपि यहाँ का मौसम भारत की अपेक्षा अच्छा नहीं है, फिर भी किसी प्रकार को कठिनाई नहीं है। सभी भाई-बहनों व समस्त सभाओं का भरपूर सहयोग मिल रहा है। शेष सभाकार अच्छे हैं। सभी को मेरा सादर नमस्ते कहना न भूलें।

भवदीय—रामपाल शास्त्री

हाँफा बेल नं० 81 भी, होऊल रिक्ट, रोटरडेम, हॉलैंड।

## शास्त्रियों के लिए गुंम अवसर

बहिनो और भाइयो! यदि आपने पंजाब विश्वविद्यालय चम्पौर में या कुल्लेश विश्वविद्यालय से अपना धर्मद्वयानन्धार्थ विद्यापीठ गुरुकुल सञ्चर से शास्त्री की है और आप चाहते हैं कि महोदय दशमन्द विश्वविद्यालय रोहतक की शास्त्री के समकक्ष हमको सुनिश्चित प्राप्त हों तो आप धीमे ही शास्त्री प्रथम और द्वितीय सख्त के अर्थों को एक प्रतिरिक्त विषय के फार्म भर दीजिये सितम्बर में परीक्षा होगी। विशेष जानकारी हेतु तुरन्त लिखिए—

—जीवानन्द

कुल सचिव, धर्मद्वयानन्धार्थ विद्यापीठ, गुरुकुल सञ्चर, रोहतक (हरयाणा)

## गुरुकुल आर्यनगर (हिसार) में

### दो अध्यापक तथा एक ड्राईवर की आवश्यकता

गुरुकुल आर्यनगर हिसार (हरयाणा) में एक प्राचार्य जयवा शास्त्री उत्तर में ऐसे अध्यापक की आवश्यकता है जो गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की नवमी तथा दशमी कक्षाओं को सख्त साहित्य तथा व्याकरण पढ़ाने में समर्थ हो। तथा एक ऐसे विद्वान अध्यापक की आवश्यकता है जो इन कक्षाओं को सामान्य विज्ञान तथा गणित पढ़ा सके। इसके प्रतिरिक्त एक ड्राईवर की भी आवश्यकता है। आर्य विचार धारा के व्यक्ति को प्राथमिकता दी जाएगी। वेतन आदि कि निर्णय साक्षात्कार के समय किया जाएगा। गुरुकुल हिसार से ५ कि०मी० की दूरी पर बालसमय रोड के निकट स्थित है। गुरुकुल में जाने के लिए लोकल बस द्वारा बड़ी नहर के पुल पर उतरें। प्राची महापुत्राव निम्न पते पर पत्र व्यवहार करे अथवा मिलें—

आचार्य, गुरुकुल आर्यनगर, पो० आर्यनगर, जिला हिसार-१२५००१ (हरयाणा)

## गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

### प्रवेश सूचना

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार में ६ वर्ष से १० वर्ष की आयु के बालक १ जुलाई से ३१ जुलाई तक विभिन्न श्रेणियों में योग्यतानुसार प्रविष्ट किए जाएंगे।

शहर के मातावरण से दूर गंगा तट पर स्थित विश्वविद्यालय के विद्यालय प्रांगणों में बालकों के खेलकूद आदि की आवश्यक सुविधाएँ हैं। केन्द्रीय विद्यालय के पाठ्यक्रम के साथ साथ सख्त, बर्मासिला का अध्ययन अनिवार्य है। भोजन, निवास, गुरुकुल तथा अन्य सम्बन्ध सूचनाओं के लिए १००० का मनीआर्डर लघोहस्तासारी को भेजकर नियमावली प्राप्त करें।

पंजाब, कश्मीर तथा देश के अन्य भागों में उग्रवादियों को हिंसा के कारण जो बालक निराश्रित हो गए हैं उन्हें गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में निःशुल्क शिक्षा, निवास और भोजन देने की व्यवस्था की गई है।

—सहायक मुख्याध्यापिका

## बालिगड़ा 'कुलवाणी' में ६१ परिवारों के

### २५० से अधिक ईसाई वैदिक धर्म में

गत ११, १२ जून को श्याम बालिगड़ा 'कुलवाणी' में एक विशेष समारोह में श्री स्वामी धर्मनन्द जी की अध्यक्षता में २५० से अधिक ईसाइयों ने यथा एव उत्साहपूर्वक वैदिक धर्म में प्रवेश किया।

यह श्याम चारों ओर पर्वत जगलों से घिरा हुआ है वहाँ जीप लो म्या सार्सिकल भी नहीं जाती, ८ कि०मी० पैदल पहाड़ चढ़कर पहुँचा जा सकता है। यद्यपि श्याम के उत्साही नवयुवक श्री स्वामी जी एवं श्री शास्त्री जी को काँवर में से जाना चाहते थे परन्तु उन्होंने पैदल जाना ही स्वीकार किया। २ कि०मी० इस्तर से ही श्यामवासी स्वागत के लिए उपस्थित थे उन्हें देखकर सारी वक्रावट दूर हो गई।

सभा मन्त्री श्री विक्रमेश्वर शास्त्री ने कार्यक्रम का संचालन किया। पूज्य स्वामी जी ने जनता के विदेशी पदार्थों से सावधान रहने की सलाह दी। दिन भर का कार्यक्रम अत्यन्त आकर्षक रहा। इस समारोह को देखने लोगों की भीड़ लगी हुई थी। इस आयोजन में श्री नारायण शास्त्री एवं श्री देवेन्द्र जी नायक का विशेष योगदान रहा।

—विक्रमेश्वर शास्त्री

मन्त्री, उत्कल प्रायं प्रतिनिधि सभा

## गांव खाचरोली जिला रोहतक में

### आर्यसमाज की स्थापना

दिनांक २६, २७ जून को गांव खाचरोली जिला रोहतक में सभा के अजयपदेशक श्री पं० जयपालसिंह आर्य ने वेदप्रचार किया। जिसमें शराव, पहेज, पाखण्ड और गांव में बढती हुई सामाजिक क्रूरियों का पुरजोर खण्डन किया। श्री ताराचन्द नारायणजी ने भी अपने विचार रखे। श्री बंशपाल शास्त्री, मानपाल व हवासिंह आर्य ने प्रचार काम में पूरा सहयोग दिया। सभा को २०४ नं० दान दिया गया। २७ जून को सुबह यज्ञ हुआ जिसमें श्री जगदीश आर्य के ईश्वर भक्ति के अजय हुए। गांव के नर गारी प्रचार से बहुत प्रभावित हुए।

## शराव का ठेका उठवा दिया गया

मई मास से श्याम हलदवा जिला पानीपत में गांव बासियों की तरफ से शराव का ठेका उठवाने के लिए निरन्तर शराव चल रहा था। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की तरफ से पं० सीताराम आर्य अजयपदेशक श्री रामकुमार आर्य, पं० चिरजीलाल आर्य अजयपदेशक ईश्वरसिंह तूजान की अजयपदेशियों ने शराव के विरुद्ध प्रचार किया। २७ जून को जिलाधीश महादय ने शराव का ठेका उठवा दिया।



# भारत में नये गुरुओं तथा भगवानों का अप्रत्याशित आविर्भाव

( डॉ० भवानीलाल भारतीय )

भारत भूमि सन्तों, महात्माओं तथा कमवद्योय तत्त्व से समन्वित महापुरुषों की भरती रही है। यहाँ बसिष्ठ, विष्णुसामिन्, गीतब, कपिल, कणाद, व्यास, बंमिनि की परम्परा के हवाओं तत्त्वद्रष्टा ऋषि युति हुए। चाणक्य, अकर, रामानुज, वाचस्पतिमिश्र, उदयन जैसे विचक्षण शास्त्रज्ञ पण्डित तथा आचार्य भी हुए। दधानन्द, रामकृष्ण, विवेकानन्द तथा अरविह जैसे आध्यात्मिक धर्मियों के पूज्य महात्मागण भी हुए किन्तु किसी ने स्वयं को शास्त्रात् परमात्मा या अवतारपुरुष कभी घोषित नहीं किया। अर्थात् वे अवश्य अंकराचार्य को शास्त्रात् सिद्ध का अवतार कहा तथा परमहंस रामकृष्ण के प्रमुख शिष्य स्वामी विवेकानन्द ने स्वयंपुरुष का राम तथा कृष्ण दोनों का ही इस युग में हुआ अवतार घोषित किया।

अब बीसवीं सदी में कुछ ऐसे तथाकथित गुरुओं तथा तांत्रिक साधकों का आविर्भाव हुआ है जिनमें सरलपुरुष का अर्थ तो अल्प ही है, किन्तु जो अपनी प्रखर राजसी तथा तामसी श्रुतियों के कारण जनमानस को धान्दोलित, प्रभावित तथा धारणित करते रहते हैं। हम यहाँ कुछ ऐसे ही तथाकथित गुरुओं तथा स्वयंपुरु भगवानों का कृपा चिह्न पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हैं।

## सत्य साईं बाबा

साईं बाबा के नाम से जाने गये व्यक्ति का वास्तविक नाम सत्यनाथयण पेठ्टी बंकरपा राजू है। यह आंध्रप्रदेश के धनस्तपुर जिले के पुष्टुपारसी ग्राम में २३ नवम्बर १९२६ को जन्मा। इसकी शिक्षा न किसी इङ्गल में हुई थीर न कालेज में। यह अपने द्वारा प्रदक्षित चमत्कारों के कारण ही प्रसिद्ध हो गया। बेंगलोर विश्वविद्यालय के विज्ञान के एक प्रोफेसर ने इसे अपने चमत्कारों को विज्ञान से सिद्ध करने की चुनौती दी किन्तु इस अहंकारी व्यक्ति ने उत्तर दिया चीटी की क्या मजाल जो वह हाथों की मुद्रा की पाहू पाना चाहती है। हवाओं शिथिल थीर अविश्वित जोग जटादृष्ट धारी साईं बाबा की थीर आकर्षित हुए। वे इसे ईश्वर का साक्षात् प्रतिरूप ही मानते हैं। स्वयं अविश्वित होते हुए भी यह पड़े-लिखे मत्तों को अपनी ही साडी से हाँकता है। इसके अनुयायियों ने शिक्षण सहाय्य चला रखी है तथा अपन सेबाकाय भी करते हैं। देश के अनेक नगरों में साईं बाबा के भक्तों के समूह हैं जो साप्ताहिक पूजा पाठ करते हैं। इनमें इसी व्यक्ति का मुभागन होता है। इसके भक्त इसे शीरवी (महराष्ट्र) के एक मुस्लिम फकीर का अवतार मानते हैं।

## स्वामी चिन्मयानन्द

इनका मूल नाम बालकृष्ण मेनन है। वे एम.ए., एल-एल.बी. तक शिक्षित हैं तथा इनकी आयु ७४ वर्ष की है। स्वामी की हिन्दू धर्म के उदार रूप के प्रचारक हैं। वे स्वयं को कोई चमत्कारी पुरुष नहीं मानते। वे अविष्वाहित हैं और १९५२ से मारवाड़गीता तथा वेदान्त का प्रचार कर रहे हैं। इनके आश्रम का मुख्यालय बम्बई में है। वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तथा विश्व हिन्दू परिषद् के कट्टर समर्थक हैं तथा राम जन्मभूमि विवाद में परिषद् के पक्ष का समर्थन करते रहे हैं।

## चन्द्रा स्वामी

राजनीति और कूटनीति की अर्थी गणियों में लघातार चक्कर लगाने वाले स्वयं में विवादास्पद किन्तु हृषियारों के बनी व्यापारी बहनाम सचोगी से निकट का सम्पर्क रखने वाले थीर न जाने किन किन विदेशी राष्ट्रनेशाओं को अपनी जेब में रखने का अहंकार वाले तांत्रिक साधु चन्द्रा स्वामी का वास्तविक नाम नेमीचन्द्र गांधी है। यह अजमेर (राजस्थान) का निवासी है। एकल की शिक्षा को अष्टरी ओडकर तांत्रिक यावा का हारा पहन लेने वाला चन्द्रा स्वामी भारत का शासुदिन तथा जमाने राष्ट्रीय शिक्षण पर उदय होने वाला अयुध धूमकेतु है। यह यदि भारत के पूर्व प्रधानमन्त्री चन्द्रशेखर

का गार होने का दम बरता है तो कुष्णात वेण्या पामेला नोबेल से भी अपनी निकटता बताने में इसे सच्चा नहीं बाती।

१९६० में जन्मा चन्द्रा स्वामी कुछ वर्ष पहले तक नई दिल्ली के राजनीतिक गणियों में चक्कर काटता रहा। उसका सितारा मुतपूने केन्द्रीय रेलमन्त्री खलित नारायण मिश्र के निकट धाने पर बुलन्द हुआ। मिश्र को तांत्रिक साधना में पूर्ण विष्वास रखते थे। श्री मिश्र के माध्यम से ही यह व्यक्ति स्व० राजनारायण के सम्पर्क में आया। दिल्ली की राजनीति में उसका दखल और प्रभाव उस समय बढ़ गया जब संजय गांधी ने उसे अपनी कूटनीति का मोहरा बनाकर उसे चरन्सिंह और राजनारायण का विश्वासभाजन बनाया और इनके द्वारा मोरारजी देसाई की सरकार की पदखनी बिकवाई। अब उसने अपने रानैतिक सम्पर्कों का प्रयोग उन बनी प्रजीपतियों की हितरक्षा के लिए करना प्रारम्भ किया जो अपने व्यावसायिक लाभ के कि; राजनीतिज्ञों से सम्पर्क साधना चाहते हैं।

स्वदेश में किने जाने वाले अपने बच्चे कुरे नारनामों से ही सतुष्ट न रहकर यह अन्तर्राष्ट्रीय रंभंच पर आया। उसने हासिउठ की फिलिम अविनेनी एलिजाबेथ टेलर से सम्पर्क साधा। कहते हैं कि उसने उक्त सिनेमा तारिका को अपनी तांत्रिक धर्मित के द्वारा एक गम्भीर रोग से मुक्त कर दिया। यह कितने ही प्रमत्तराष्ट्रीय विचारों और मोटालों में आकृष्ट मन है तथापि हैरानी की बात है कि भारत के कुछ राजनीतिज्ञ उससे प्रत्यक्ष सम्पर्क ही नहीं रखते, भंष पर उसके निकट बैठने में भी और न अयुध कर रहे हैं। बाश्चर्य है कि हिन्दू धर्म, पंशन, शास्त्र और परम्पराओं का क-भी न जानने वाला यह तांत्रिक आज हिन्दू धर्म के आचार्यों, मठाधीशों और महागण्डेसवरों की नाकों में नकेस डालने में संचोच नहीं करता।

## महर्षि महेश योगी

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ध्यान योग की शिक्षाओं का प्रसार करने वाला महेश योगी (मूल नाम महेशप्रसाद बर्मा) ७८ वर्ष की आयु का है। साठ के दशक के शीटल पायकों ने महेश योगी को अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति दिलावाई। उसके भावताती ध्यान का विश्वव्यापी प्रचार हुआ और देश विदेश में उसके भक्त और अनुयायी असाधारण रूप से बढ़ने लगे। इसका जन्म जबलपुर (मध्यप्रदेश) के एक दरिद्र कायस्थ परिवार में हुआ। स्कूला सिला तो नाम मात्र की ही हुई किन्तु आज महेश योगी द्वारा सञ्चित सहस्रों वेव विचारालयों में वेवाभ्यासी बटुगण लाखों की संख्या में वेद, सस्कृत तथा पुरातन शास्त्रों का अध्ययन करते हैं। संसार भर में फैले इसके आध्यात्मिक साम्राज्य का वित्तीय मूल्य ४०० करोड़ आका गया है। इसका उदा है कि संसार को अटिल राजनीतिक समस्याओं का समाधान देने पास है किन्तु कोई भी बुद्ध, गीतबोच, जानमेयर अथवा सितारों जंसा शासक उसे पास नहीं डालता। इसके व्यभिचारिक का एक सुपुत्र पक्ष भी है। यह वेवादि शास्त्रों के प्रचार प्रसार में पर्याप्त द्रव्य व्यय करता है। इसके तथाकथिक अतीतिक योगिक चमत्कारों की कर्षा सुल चुकी है। इसने एक बार पानी पर चक्के का वाबा किया, किन्तु अक्षफ रहा।

## स्वामी नित्यानन्द

महाराष्ट्र के भापे जिले के गणेशपुरी नामक स्थान पर पुरुषेव सिद्ध पीठ के संस्थापक स्वामी मुस्तानन्द का शिष्य स्वामी नित्यानन्द २८ वर्षीय युवक है। इसका वास्तविक नाम सुभाष डेट्टी है और यह एफ.एस.सी. तक शिक्षित है। इसने अपनी वहिन (भाबटी डेट्टी) के साथ स्वामी मुस्तानन्द का शिष्यत्व ग्रहण किया। परिष्कारसंरूप उक्त स्वामी के मरने पर वे दोनों वाई वहिन मुक्तानन्द की सम्पत्ति और ईश्वर के सम्मिलित वारिस बाने गये। स्वामी मुक्तानन्द का स्वर्णबास अक्टूबर १९५२ में हुआ और इसके तीन वर्ष पन्चात् ही

सिद्ध पीठ की गद्दी धीरे धीरे कारकों की नेकर भाई बहिन के बीच विवाह उठ चढ़ा हुआ। जगत-ये दोनों अलग हो गए। अब स्वामी नित्यानन्द प्रायः पूरुष और अमेरिका में रहकर वहाँ के गौरीगण शिष्यों की ही अनुग्रहीत करते हैं। भारत की पवित्र बरती उनकी उपस्थिति से प्रायः पवित्र ही रहती है।

#### गुरु माई चिद्विलासलाल

स्वामी नित्यानन्द की बड़ी बहिन मालती शेठ्ठी (आयु ३५ वर्ष) ने अपने भाई सुभाष के साथ ही स्वामी मुक्तानन्द का शिष्यत्व ग्रहण किया था। सिद्ध पीठ की सम्पत्ति और स्वामित्व को नेकर उठका अपने भाई स्वामी नित्यानन्द से हाथवा हो गया और गणेशपुरी की सिद्ध पीठ पर उसने अपनी चतुराई और धर्मसंघ्य शिष्य वर्ग की सहायता से कब्जा बना लिया। इस महिला संस्थासिनी का प्रमुख परामर्शदाता तथा दाहिना हाथ आज एपिच नाम का एक सेवानापी है। इसी विदेशी की सहायता और साहस से गुरु माई सिद्ध पीठ पर अपना अधिकार रस गई। गुरु माई के अनेक घनाह्य अमरीकी पूजोपति हैं और वहीँ संस्था की यह संस्थासिनी विदेशों के नियमित दौरे करती रहती है।

#### मुरारी बापू

मुरारी बापू के नाम से प्रसिद्ध ८८ वर्षीय मुरारीदास प्रमुदास हरियामी माननगर (गुजरात) का निवासी है। इसको शिक्षा एम.एस.सी. तक की है और यह प्रारम्भ की अवस्था के रूप में बौद्धिकपार्वन करता था। धीरे धीरे इसकी तुलसीदास रचित रामचरितमानस की कथाओं से लीग बढ़ी संस्था में उसकी ओर आकृष्ट होने लगे। प्रारम्भ में उसके श्रोता मात्र १०-२० ही होते थे किन्तु आज मुरारी बापू के मानस प्रवचनों में ९ लाख तक की भीड़ होती है। इसके अनुयायियों का विस्तार संसार भर के देशों में है और उनकी बराबरी है कि मुरारी बापू के प्रवचनों से ही उनका काया पलट हुआ है। यह किसी चमत्कार या अलौकिक शक्ति सम्पन्न होने का दावा नहीं करता, किन्तु बोधे ही समय में इतनी स्वाति धीरे प्रसिद्धि अर्जित कर लेना भी चमत्कार से कम नहीं है।

#### माता प्रमुदानन्दमयी

केरल के त्रिचोन्न जिले में संतीस वर्ष पूर्व एक मञ्जुवारे के घर में सुधामणि का जन्म हुआ। इसकी तिसा मात्र चौबे बच्चे तक हुई किन्तु प्रारम्भ से ही इसने आध्यात्मिक विषयों में रुचि दिखाई। अपनी कियी अन्तःप्रेरणा से ही उसने एक धार्मिक अन्वेषण चलाया जिसका केन्द्र विन्तु मणित था। आज यह महिला माता अनुदानन्दमयी के नाम से जानी जाती है। उसकी साहाय्य और अनुयायी संयुक्त राज्य अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन, स्विट्जरलैंड तथा मारिशस में फले हैं। इसके शिष्यों का दावा है कि यह अपनी अलौकिक शक्तियों से लोगों के धारितिक और मानसिक कष्टों को दूर कर देती है। लोग इसे प्यार से प्रम्मा कहते हैं।

#### ब्रह्माकुमारी प्रकाशमणि

दादी के नाम से पचित प्रकाशमणि ब्रह्माकुमारी मत के प्रवर्तक दादा लेखराज (लेखराज खूबन्द रूपानापी) की शिष्या है। दादा लेखराज और उसकी तीर्थभ्रमणों के विवाजान के पूर्व सिध में पचित तथा विवाहास्पद रही। साधु टो. एल. नादानापी ने उसके शिक्षापक आवाच उठाई। जनवरी १९६१ में दादा लेखराज की मृत्यु के पश्चात् प्रकाशमणि इस सम्प्रदाय की प्रमुख बनी। हैदराबाद (सिध) में १९३७ में स्थापित ब्रह्माकुमारी संस्था की २००० शाखायें संसार के ६५ देशों में स्थापित हैं। सेंट्रिकल लक्षित प्रकाशमणि का प्रधान कार्यालय जानू पर्वत पर है जहाँ से यह विश्वभर में फले अपने धर्म-साधनाय का संचालन करती है।

हैरानी की बात है कि अपनी सनाओं और सम्पत्तियों में देशी विदेशी राजनीतियों, शासकों, न्यायाधीशों, पत्रकारों, शिक्षाविदों तक को आमंत्रित करनेवाली ब्रह्माकुमारी संस्था के मूलसिद्धांतों, कार्यकलाप तथा दर्शन को ये धर्मयागत लोग भी नहीं जानते। आज

तक कोई यह भी नहीं बता सका कि इस घटना के करोड़ों अरबों के बजट की पूर्ति कैसे होती है और यह अवार चनराजि कहा से आती है। कुछ स्वकल्पित चिन्तों और चाटों तथा रटोटाई संस्थासिनी में अपने मन्तव्यों का परिचय देने वाली ये ब्रह्माकुमारियाँ और ब्रह्माकुमारी राजयोग, सिध, ब्रह्मा, कृष्ण, गीता आदि की बातें तो करते हैं किन्तु महिष संतजि प्रोक्त राजयोग तथा व्यासरचित एवं कृष्ण प्रोक्त ब्रह्मदर्शीता का कथ भी इन्हें नहीं आता। ये विश्वव्यापित धीरे धीरे निर्माण के लिए आरम्भपूर्वकों आभोजन करते हैं, सिधिर चखाते हैं, कार्यवालायें संचालित करते हैं किन्तु विश्व के किसी भी कोने में न तो धार्मिक स्थापित होती दिखाई देती है और न धेवानसियों का पचित निर्माण ही हो रहा है।

#### सरदार गुरित्स्वरसिंह ठिल्लो

अमृतसर जिले के डेरा नावा जयमलसिंह (व्यास) को राधास्वामी सम्प्रदाय की गद्दी के बरमाना गुरु ३६ वर्षीय गुरित्स्वरसिंह पंचाव विश्वविद्यालय के स्नातक हैं। ये सरदार चरमसिंह (पूज्यपूर्व गुरु) के निधन पर जून १९६० में उक्त सम्प्रदाय के आचार्य बने। व्यास का राधास्वामी सम्प्रदाय आगरा में १६वीं शताब्दी में शिवदाससिंह सनी द्वारा प्रवर्तित इसी मत की एक शाखा है। व्यास की इस गद्दी के शाकों अनुयायी देश-विदेश में फले हैं। व्यास में राधास्वामी मत का यह सम्प्रदाय एक बड़े अस्पताल का संचालन करता है। इस मत के अनुयायी पूर्ण अनुशासन रूप में सम्प्रदाय के धार्मिक सत्संग में उपस्थित होते हैं और अपने गुरु के उपदेशों को सुनते हैं।

#### प्राचार्य श्रद्धानन्द प्रध्वत

आनन्दमार्ग के संस्थापक प्राणन्दमूर्ति (मूल नाम प्रभातरंजन सरकार नामक पूर्वी देखे का एक कर्मचारी) के निधन के पश्चात् इस मार्ग का नेतृत्व ७२ वर्षीय श्रद्धानन्द प्रध्वत को मिला। एम. ए. तक शिक्षित प्रध्वत महाशय का वास्तविक नाम एच. राय है। इसका जन्म उत्तरप्रदेश के बलिया नगर में हुआ था। यह मार्ग के संस्थापक आनन्दमार्ग की मति चमत्कार दिखाने का दावा नहीं करता, जबकि प्रभात रंजन सरकार के कल्पित कारनामों ने आनन्दमार्ग को विश्व दो दशकों में विवाहास्पद बना दिया है। बंगाल की मानसवादी सरकार से आनन्द मार्ग की टक्कर का राजनैतिक चरित्र स्पष्ट उजागर हो चुका है। इसके अनेक प्रध्वत अनुयायियों को आनन्दमूर्ति द्वारा गुप्त रूप से मृत्यु दण्ड दिये जाने तथा मानव मुष्कों को हाथ में लेकर प्रध्वतों के नृत्य करने कृत्यों की कठोर प्रासोचना हुई है। भारत के विगत प्रधानमन्त्री श्री मोरारजी देसाई पर आस्ट्रेलिया में एक विदेशी आनन्दमार्गी ने प्राणघाती प्रहार किया था। इसके ४४ लाख अनुयायी अनेक देशों में फले हुए हैं। आनन्दमूर्ति की पत्नी ने उसके जीवनकाल में अनेक आरोप लगाये थे तथा विहार सरकार ने अनेक अपराधों में आनन्दमूर्ति की प्रामिका को देखते हुए उन्हें वर्षों तक नजरबन्द रखकर उस पर मुकद्दमा भी चलाया था।

#### स्वामी श्रीम सदाचारी

नाम के सदाचारी किन्तु यह दर्जे के लम्पट और दुराचारी इस दादा का वास्तविक नाम विनोदानन्द भाऊ है। इसने समय-समय पर सदाचारी साईं दादा, भोगजी तथा राजभारु शर्मा नाम भी प्रवर्तित किये हैं। बिहार के मधुबनी क्षेत्र का चौतिस वर्षीय विनोदानन्द झा १९८०-८५ के शोचनी शिक्षा शास्त्री के वास्तविकाल में अनेक राज-नोतिशों के सम्पर्क में आया। उसके बाद प्रध्वतसिनी लोगों, नोकरदारों तथा राजनीति के हृदकण्ठेवाकों के साथ विचित्रों का एक मोटा एलवम साथ में रखने वाला यह दादा अकरतमर्षों को इन चिन्तों से प्रवर्तित करता रहा। कई शोध इसको बोलाओं के सिकार हुए। बम्बई में इसने आध्यात्मिक साधना का एक केन्द्र स्थापित किया किन्तु पुलिस ने इसे लोगों को बोला देने और चारसोबोसों के प्रघराच में गिरफ्तार कर लिया। दुराचारी दादा ने अपने निवास के शोचनों में विजयार के तारों की फिटिंग करा रखा है। यह अपने मकनों को इन पर बिठाकर उन्हें विजयों के भटके लावाता और इस प्रकार उनको यह कहकर प्रभावित करता कि यह उसकी देव शक्ति का

चमत्कार है। उस पर बनेक अनेक सुविधियों से बलात्कार करने के आरोप भी लगाये गये। वह पुलिस को गिरफ्त में अनेक बार आया। अभी कुछ मास पूर्व ही नगी फिल्मों तथा शस्त्रीय चित्रों के एलबम उसने लि। इस की नलाशी लेने पर बरामद हुए थे।

### बालीश्वर और उसका भाई सतपाल महाराज

हमा मत के प्रबलक देहरादून निवासी किसी राबत का पुत्र अपनी विधवायस्था में ही बालीश्वर के नाम से लार्कों बिदेसी अनुयायियों का गुरु बन गे। चारठें बायुवान में संकटों बिदेसी भक्तों के साथ यदा-कदा भारत आकर अपने बेले चांटों की अध्यात्म की पट्टी पहनने वाला प्रेमपाल राबत उर्फ बालीश्वर अन्ततः बायु में अपने से बडी अपनी अमेरिकन सचिव के प्रेमजास में फस गया और ईसाई पदति से उससे विवाह तो किया ही उसने हस्ताभत के गुरु का बोधा भी उतार के। ध्रुव उसका बड़ा भाई सतपाल महाराज सासायु भगवायु रूप में अपने अनुयायियों की श्रद्धा और विश्वास का भाजन बना हुआ है। साथ ही उसकी माता जगज्जनी बनी हुई भक्तजनों को प्रासीवायि प्रदान करती है। लगभग दस वर्ष पूर्व ये संसारी भगवायु विवाह बन्धन में बंटे तो इनके निम्न और मध्यम वर्ग के लार्ों अनुयायी हरिद्वार स्थित प्रेमनगर (हस्ता मत का प्रधान कार्यालय) में एकत्र हुए और उन्होंने इस देवीदात्मयद बन्धन के श्रवण पर बायुचित महामहामुहूर्त्त का आयोजन किया। ध्रुव तो सतपाल महाराज कायेंस (आई०) के सदस्य हैं और मई के चुनावों में इसी दल के प्रत्याशी भी थे। चुनाव तो उन्होंने १९६६ में भी लडाया था और पराजित हुए थे।

इन और ऐसे स्वयंभू भवधानों और गुरुकों की कथा को आगे बढ़ाने से कोई विशेष लाभ नहीं है। अतः इस गुरु-कथा को यहीं समाप्त करने से पूर्व यह लिख देना आवश्यक है कि उपर्युक्त बर्णित गुरुकों में स्वामी चिन्मयात्म, महेश योगी और मुरारी बायु ऐसे धर्माचार्य हैं जिनकी गतिविधियाँ आयः निर्वाण तथा विवाह से परे हैं। चारत्तमायी मत के गुरु हरिप्रसिंह सप्त मत के सिद्धांतों के व्याख्याता रहे जा सकते हैं। इन गुरुकों में से प्रथिकाश का भारतीय ज्ञान तो बहुत सीमित है, किन्तु इनमें से कुछ की लोकप्रियता तथा अनुयायियों को बहुत प्रथिक संस्था का एक कारण उनके द्वारा प्रचारित सिद्धांतों का प्रायः निर्विवाद तथा सर्वजन स्वीकृत होना भी है। ये गुरु विवादास्पद विषयों से दूर रहकर जन-सामाज्य की नैतिक शक्ति से उन्नत होने की विज्ञा देते हैं। इनके प्रथिकाश अनुयायी भी दार्शनिक और धार्मिक गुरु सिद्धांतों को समझने की क्षमता नहीं रखते और स्वगुरुओं के प्रति प्रानय निष्ठावान रहकर उनके उपदेशों की श्रद्धापूर्वक सुनते हैं। किन्तु साईं बाबा, चन्द्रास्वामी, ब्रह्माकुमारी, आनन्दमार्गी, गुरुवत्स सदाचारी तथा तथा बाल योगेश्वर जैसे गुरु तो देश और धरती के लिए भाररूप ही हैं। इन्होंने धर्म, समाज और देश में गुरुत्व, पाषण्ड, आडम्बर और श्रुतता को ही बढ़ाया है।

### उठो सायियो आँखें खोलो

इस समाज पर चित्रहार ने सीधा किया प्रहार।  
क्या अनपढ़ क्या पढ़े लिखे हुये सभी बेकार।

बदभाव हुआ है मनुष्य व्यर्थ में लुटा रहा दाम।  
सर्बिले और दिसाष्टी फँसना का बना मुझाम।

बीच कुटेवों में फसकर होगी तेरी अवनति।  
हे मूख मनुष्य ब्रह्मचारी बन निश्चय तेरी उन्नति।

ब्रह्मचर्य के पासन से बन जाते हूट-पूट।  
भोग विलासी शीघ्र ही होते नष्ट-पूट।

से—ब्रह्मचारी राजू व नन्दकिशोर शर्मा  
श्री० पो०—पन्दीरा सुंद०, बल्लभगढ़  
जि० फरीदाबाद (हरयाणा)

## जिला वेदप्रचार मण्डल पानीपत की गतिविधियाँ

आयं प्रतिनिधि समा हरयाणा द्वारा गठित जिला वेद प्रचार मण्डल पानीपत के संयोजक एवं सभा के कोषाध्यक्ष श्री० रामानन्द जी सिंगला के निर्वहन में पं० रामकुमार जी आयं अजयोपदेशक की भजन मण्डली ने दिनांक १६ मई, १९६१ से ३० जून ६१ तक निम्नलिखित धार्मों में वेदप्रचार किया तथा कुछ स्थित धार्यसमाजों में जायुति उत्पन्न की है एवं कुछ धार्मों में नवीन धार्यसमाजों को स्थापना भी की है।

धाम बागडू सुदं (बीध) के त्रिय भ्राता सुन्दरसिंह जी के सुपुत्र के जन्मदिन के उपलक्ष्य में वैदिक प्रचार किया। नारी शिक्षा पर विशेष बल दिया गया।

धाम बागडू कुला में नवीन धार्यसमाज की स्थापना करके लज्जत दर्जनों युवकों को धार्यसमाज में दीक्षित किया। सामाजिक सुराध्यों के सिक्का प्रचार करके धार्यसमाज का संश्लेष धर-धर भक्तों द्वारा पहुंचाया गया।

धाम सरकाबाद (जीध) में वैदिक प्रचार करके पुरानी धार्यसमाज को पुनर्जाति किया और धार्यसमाज का नया चुनाव कराया गया।

धाम पाटवरी (पानीपत) में दो दिन प्रचार करके स्थित धार्यसमाज पाटवरी में नई जान डाली गई, लोग बड़े प्रभावित हुए। वैदिक प्रचार को शांतिपूर्वक सुना।

धाम हलवाणा (पानीपत) में साराब के ठेके को हटाने हेतु वैदिक प्रचार करके लोग उत्साहित किये। नवीन धार्यसमाज की स्थापना की। भक्तों के माध्यम से धार्यसमाज का संश्लेष धर-धर पहुंचाया। कई नवयुवकों ने स्रष्ट पर जनेक विधि।

धाम पट्टी कसियाणा में दो दिन वैदिकप्रचार किया। शांतिपूर्वक लोगों ने प्रचार सुना, बुधाध्यों से दूर रहने का व्रत लिया और प्रधान मुखत्यारसिंह जी ने प्रचार में विशेष सहयोग दिया।

धाम विवावा में वैदिक प्रचार से प्रभावित करके नवीन धार्यसमाज की स्थापना की गई। राजवीरसिंह जी आयं एवं जयवीरसिंह जी आयं ने प्रचार को सफल करने में विशेष सहयोग दिया।

धाम लखौला रोडान में छह दिन तक वैदिक प्रचार किया। नवयुवकों ने प्रभावित होकर सामाजिक सुराध्यों से दूर रहने का व्रत लिया। प्रचार शांतिचित होकर सुना। पुरानी स्थित धार्यसमाज में चेतना पैदा करके नया धार्यसमाज लखौला रोडान का चुनाव कराया गया। प्रधान चौ० दर्यासिंह जी आयं ने विशेष सहयोग दिया।

धाम भाकपुर में तीन दिन तक भक्तों द्वारा धार्यसमाज का प्रचार किया गया। नवीन धार्यसमाज की स्थापना की गई। श्री बभेशकुमार जी सुपुत्र श्री हरिसिंह जी ने प्रचार को सफल बनाने में विशेष सहयोग दिया। सर्वसम्पति से धार्यसमाज भाकपुर का चुनाव किया गया।

### नामकरण संस्कार

दिनांक १६ जून, १९६१ बार रविवार को चौ० हकीकतयाय जी (उपप्रधान धार्यसमाज टोहाना, हिसार) के बीध का नामकरण संस्कार वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। बालक का नाम प्रतीक रखा गया। इस अवसर पर पं० विश्वाभिन्त जी (हिसार) ने नामकरण संस्कार के महत्त्व पर प्रकाश डाला तथा पं० धमप्रकाश जी (पुरोहित धार्यसमाज टोहाना) के सुमधुर भजन हुये। उपस्थित जन-समूह ने बालक के दीर्घायु की कामना की तथा आशीर्वाद दिया। अन्त में चौ० हकीकतयाय जी ने स्रष्ट का वचनवाद किया। इस अवसर पर स्त्री धार्यसमाज को १४० रुपये दान दिया गया।

वरविष्णुकुमार 'कनक' (टोहाना)

## श्री मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार से प्रोफेसर राजेन्द्र जिज्ञासु जी का सम्मान

आर्यसमाज साप्ताहिक बन्दर्हि ने अपनी पुरस्कारों की शृंखला में एक नया पुरस्कार आरम्भ करके धार्यजगत के लेखकों का सम्मान करने का जो निश्चय किया गया है उस सम्बन्ध में रविवार ३० जून १९६१ को एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया। इससे पूर्व आर्यसमाज साप्ताहिक आजीवन वेद वेदियों का अनुसंधान करने वाले तथा धार्मिक आर्यसमाज के प्रचार प्रसार के कार्यों में सतत वेदोपदेशकों को वेद वेदों एवं वेदोपदेशक पुरस्कार से सम्मानित करता रहा है। इस शृंखला को आगे बढ़ाते हुए इस वर्ष १९६१ में श्री मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार समारोह का आयोजन किया गया है। यह प्रथम पुरस्कार आर्यजगत के जाने-माने लेखक श्री प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु जी के लिए सम्मानित किया गया। पुरस्कार स्वरूप ११००/- प्यारह हजार की बँचो, रजत टाकी, घाल तथा अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया। महात्मनों श्री नरेन्द्र कुमार पटेल ने अभिनन्दन पत्र पढ़ा। सांबंदेशिक धार्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पञ्चमी स्वामी धामन्धबोष जी सरस्वती ने ११०००/- की रंगीली मॅट की तथा बुधसिद्ध १' छार तथा लेखक श्री धर्मवीर जी भारतीय ने अभिनन्दन पत्र भेंट किया।

इस अवसर पर बोले हुए प्रोफेसर राजेन्द्र जिज्ञासु ने कहा आपने जो मेरा सत्कार किया है यह मेरा सत्कार ही नहीं अपितु आर्यजगत के उन सूर्यय त्वाणी तपस्वी प्रचारकों लेखकों का है जिन्होंने अपना सर्वस्व आर्यसमाज के लिए समर्पण कर दिया है। यह सम्मान पं० रामचन्द्र जी देहबली, पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय, पं० शान्तिप्रकाश जी, पं० लेखराम जी, महाराम हरराज जी, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, स्वामी सर्वानन्द जी आदि का सम्मान है। जिनकी प्रेरणा से मैंने यह सव लेखन कार्य किया है। आपने जो सम्मान मुझे दिया उसके लिए मैं आजका आभारी हूँ।

इस अवसर पर बोले हुए पूर्व सम्पादक श्री धर्मवीर जी भारतीय ने कहा मेरे जीवन का स्रोत महर्षि कामन्दक सरस्वती का जीवन चरित्र है। आपने कहा पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय मेरे गुरु के गीने बचपन में उनके चरनों में बैठकर शिक्षा प्राप्त की है। मैं स्वय आर्यसमाजो परिवार से हूँ। स्वामी दयानन्द ने जिस समय पाण्डव ऋषनी ताताका हरिद्वार में फहराई थी उस समय उनका उद्देश्य सुरीतियों का नाश करना था। आर्यसमाज साप्ताहिक ने विद्वानों का सम्मान करने की शृंखला को आरम्भ करके भादय के सम्मान स्थापित किया है। श्री राजेन्द्र जिज्ञासु जी जैसे लेखक के सम्मान समारोह में उपस्थित होकर मुझे प्रसन्नता ही रही है।

आर्यसमाज साप्ताहिक के वरिष्ठ उपप्रधान कॅप्टन देवरल धार्य ने धार्यसमाज द्वारा आरम्भ किये गये समस्त पुरस्कारों का परिचय देते हुए कहा कि श्री मेघजी भाई के सुपुत्र श्री कनकसिंह जी २० हृदयोग से हमने यह पुरस्कार आरम्भ किया है आपने प्रतिवर्ष २० हजार रुपये आर्यसमाज को इस पुरस्कार के लिए देने का निश्चय किया है। इस धार्मिक सहयोग से धार्यसमाज श्री मेघजी भाई धार्य साहित्य पुरस्कार को सदा चलाता रहेगा। श्री मेघजी भाई की इच्छा थी कि १००० आर्यसमाजों की स्थापना की जाए। उनके जीवन काल में यह कार्य पूरा नहीं हो सका तो भी हमने उनकी इच्छासुसार आर्यसमाज फाट्टे में एक नयी एन्डोलेस लेने का निश्चय किया है। जैसी श्री मेघजी भाई की इच्छा थी कि यदि मैं एक हजार आर्यसमाजों की स्थापना नहीं कर सका तो कम से कम एक हजार घरों में वैदिक साहित्य अवश्य पहुँचाया जाए। उनकी भावनाओं के अनुरूप हम एन्डोलेस में अधिक से अधिक वैदिक साहित्य रलकर स्थान-स्थान पर विक्री करते। ताकि उनकी इच्छा को हम पूरा कर सकें। कॅप्टन धार्य ने मेघजी भाई के छोटे भ्राता का जो वचनवाक किया।

आज बन्दर्हि को समस्त धार्यसमाजों ने अपने साप्ताहिक सत्सगों को स्थापित करके धार्यसमाज साप्ताहिक में सम्मिलित रूप से प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु जी का स्वागत किया। श्री जिज्ञासु जी को बन्दर्हि की सत्सगों की मालाओं से सादर दिया गया। इसवे समारोह का वातावरण और भी सुहृदय हो गया था।

समारोह में बोले हुए सांबंदेशिक धार्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी आनन्दबोष जी सरस्वती ने कहा श्री जिज्ञासु जी का धार्य आर्यजगत के लिए अनुकरणीय है। इन्होंने जो साहित्य सृजन में परिश्रम किया है वह षड्वितीय आर्य है। यह मनस्वी लेखक ही नहीं अपितु निर्भीक वक्ता भी है। धार्यने कहा श्री राजेन्द्र जी ने अपने साहित्य के द्वारा जो प्रेरणा दी है बहुत ही प्रसन्नोय है।

धार्यसमाज अपने धार्य की सदा आगे बढ़ाता रहा है और बढ़ाता रहेगा। स्वामी जी ने कहा हम महर्षि दयानन्द के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए जीवन भर संघर्ष करते रहे हैं और करते रहेगे। धार्य समाज की शिरोमणि सभा जब एक विशाल गऊनाया दिल्ली में आरम्भ करने जा रही है, जिसका लक्ष्य श्वेतक्रान्ति है। स्वामी जी ने श्री जिज्ञासु जी को उत्साही कार्यकर्ता बताते हुए कहा हमें ऐसे व्यक्तियों का सम्मान सदा करना चाहिये ताकि आने वाली पीढी इनका अनुकरण करती रहे। मैं धार्यसमाज का वचनवाक करता हूँ कि इसने यह सराहनीय धार्य किया।

इस समारोह में श्री पण्डित राजगुरु धार्य, डॉ० सोधबद जी सास्वी भादि के भी भाषण हुए। डॉ० सोधबद सास्वी ने प्रो० जिज्ञासु जी का परिचय कराया। श्री संदीपबल धार्य ने धार्यसमाज की गतिविधियों का उल्लेख किया तथा धार्यसमाज के प्रधान महाशय चमनलाल जी ने समस्त उपस्थित जनसङ्घ का वचनवाक किया।

इस संवत् में रविवार २३ से ३० जून तक यजुर्वेद महायज्ञ का आयोजन किया गया। इस महायज्ञ का संघालन पण्डित राजगुरु जी धार्यने किया। दिनांक २७, २८, २९ जून की नित्य रात्रि ३-३० से १-३० बजे तक श्री राजेन्द्र जिज्ञासु जी के तथा पण्डित राजगुरु जी के मधुर प्रबचनों का भी जनसाधारण ने लाभ प्राप्त किया। समारोह का समूर्ण वातावरण बहुत ही सौहार्दपूर्ण है।

यह समारोह कॅप्टन देवरल धार्य के कुशल संयोगन तथा धरक परिश्रम के फलस्वरूप पूर्णरूपेण सफल रहा। धार्य साहित्य पुरस्कार समारोह की समाप्ति पर प्रीतिभोज का धार्योजन हुआ।

श्रवदीप—नरेन्द्र ध० पटेल  
कृते महात्मनों

### डॉ० भवानीलाल भारतीय

#### श्री धूमिल धार्य साहित्य पुरस्कार से सम्मानित

आर्यजगत की यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्यसमाज के जाने-माने लेखक और विद्वान् डॉ० भवानीलाल भारतीय की हिष्णोनि में आगामी २ सितम्बर को श्री धूमिल धार्य साहित्य पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा। यह पुरस्कार उनकी विख्यात कृति नव-जागरण के पुरोधा: दयानन्द सरस्वती तथा उनके द्वारा सम्पादित श्रद्धानन्द षष्ठावली के ६ खण्डों पर दिया जा रहा है। इस अवसर पर धार्यसमाज हिष्णोनि में भारतीय जी की श्रुति जीवन वर कथा भी होगी।

**अभ्य के प्रचारार्थ**

अजिल्हा

**₹००**

सेकंडा

अजिल्हा

**900**

सेकंडा

**मृत्यार्थ प्रकाश**

घर पर पंहुकारे

भोफेद कागज सुन्दर छपाई

शुद्ध संस्करण वितरण करने वालों के

आकार: 23x36-16 पृष्ठ ४20 की दर। तिर्य प्रचारार्थ

सजिल्हा ₹/अजिल्हा ७/-

**आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट**

455, वारी बादली, दिल्ली-6 दूरभाष: 238360-233112

### आर्यसमाजों के चुनौतियाँ

**आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली**

प्रधान—श्री सरदारो लाल वर्मा, उपप्रधान—श्री रामभूति केशा, श्री रत्नलाल सहदेव, प्रह्लादराय गुप्त, डा० बमरजीवन, मन्त्री—श्री विश्वकीनारायण मिश्र, उपमन्त्री—श्री ए०० हत्यनारायण धार्य; श्री श्रीरामकुमार बुग्गा, श्रीमती सुमेधा वर्मा, कोषाध्यक्ष—श्रीमत्प्रकाश झाहूबा, पुस्तकाध्यक्ष—श्रीमती प्रकाशवती शास्त्री, अविष्ठाता आर्य श्रीरत्न—ब्रह्म प्रकाश वर्मा।

**आर्यसमाज माऊजुर, जिला पानीपत**

प्रधान—श्री सुरेशकुमार, उपप्रधान—श्री सुरेशकुमार, मन्त्री—श्री गोमप्रकाश, उपमन्त्री—श्री रोशनलाल, प्रचारमन्त्री—श्री दिलबाग, कोषाध्यक्ष—श्री रमेशकुमार, पुस्तकाध्यक्ष—श्री सुखनोरसिंह।

**आर्यसमाज बिजावा जिला पानीपत**

प्रधान—श्री दिलबाग सिंह आर्य, मन्त्री—राजेंद्रोद सिंह आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री हनुसिंह आर्य।

**आर्यसमाज खलीला रोडान, जिला करनाल**

प्रधान—श्री दयासिंह आर्य, मन्त्री—श्री चन्द्रपाल धार्य, कोषाध्यक्ष—जयदेव शास्त्री।

**आर्यसमाज श्रीलोकेश्वर मिर्जोल, जिला करीबाकेश्वर**

प्रधान—श्री ब्रह्मसिंह भारद्वाज, उपप्रधान—श्री लेखराम आर्य, महासन्धी—श्री डालेंचेंद्रे आर्य प्रकाशें, उर्वमन्त्री—श्री श्रीरामसिंह आर्य, प्रचारमन्त्री—श्री सहेलेश्वर आर्य, कोषाध्यक्ष—मा० नत्वीराम, व्यवस्थापक—श्री किशोरसिंह हरंभें।

**आर्यसमाज बलबगढ़, जिला फरीदाबाद**

प्रधान—श्री राधेश्याम गुप्ता, उपप्रधान—श्री महेशसिंह बोहरा, श्री सुरेशकुमार भड्डामा, मन्त्री—श्री योगेशप्रसाद, उपमन्त्री—श्री रामकिशन मित्तल; श्री सुभाषचन्द्र गुप्ता, कोषाध्यक्ष—श्री सुरेशकुमार गुप्ता, पुस्तकाध्यक्ष—ब्रजसूय मित्तल।

### वार्षिक उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज बरोडा जिला रोहतक का वार्षिक उत्सव २२ से ३० जून तक बड़ी वृत्तमार्ग से मनाया गया। जिसमें १० विद्वानोंवाले आर्य मजलिसोंके द्वारा क्रांतिकारी प्रचार हीता रहा। श्री चन्द्रपाल शास्त्री के प्रबन्धन तथा १० बनेलुराम की के श्री ब्रजन हूए न आलसी दिन स्वामी ब्रह्मानन्द द्वारा योग आसन प्रदर्शन किया गया। गांव की जनता प्रचार से बहुत प्रभावित हुई। तथा की 1200 रु धान दिया गया।

# गुरुकुल

## कांगड़ी फार्मसी की

### आयुर्वेदिक औषधियां सेवन कर स्वास्थ्य लाभ करें

**गुरुकुल**

**उपयोगप्रामाण्य**

सूरे पोषण के लिए शक्तिशालक एवं "पौष्टिक" खाद्य।

शारी, उच्च व शारीरिक एवं केन्द्रों की दुर्बलता से उपयोगी आयुर्वेदिक औषधीय द्रव्य।





जब भी स्वास्थ्य कम है

**गुरुकुल पायकिल**

शरीर व मस्तिष्क के मजबूत करने के लिए उपयोगी आयुर्वेदिक औषधी





**गुरुकुल चाय**

उत्कृष्ट व इन्कम्यूक, पक्कन आदि में उन्ही बट्टियों से बनी माधवरी आयुर्वेदिक औषधी

**गुरुकुलकांगड़ी फार्मसी हरिद्वार (३० प्र०)**

### गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी

हरिद्वार

की औषधियां सेवन करें।

शाखा कार्यालय  
६३ गली राजा केदारनाथ,  
चावडी बाजार, दिल्ली-६

स्थानीय विक्रेताओं एवं सुपर बाजार से खरीदें  
फोन नं० २६१८७१

शाखा कार्यालय : ६३, गली राजा केदारनाथ  
चावडी बाजार, दिल्ली-११०००६

'प्रकर' - वैशाख २०१६

आर्य प्रतिनिधि समाज हरयाणा के लिए शुद्ध और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य ब्रिदिग प्रेस के लिए संस्कृतिकारी मुद्रालय रोहतक से छपवाकर संस्कृतिकारी कार्यालय १० जयदेवसिंह सिद्धांती बवन, हयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।



ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

# सर्वहितकारी

सहितक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—सुबोधित सामान्यी

सम्पादक—वेदवत शस्त्री

सहसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यानाथ एम० ए०

वर्ष १८

बक ३३

२१ जुलाई, १९६१

वापिक मूल्य ३०)

(आजीवन मूल्य ३०१)

विदेश में ८ पौड

एक प्रति ७५ पैसे

## वेद में अग्नि और सूर्य

(पं० धर्मदेव 'मनोगो' वेदवीथं मुद्रकुल काठवा)

'अग्नि' शब्द निघण्टु ५४ में पद नामों में पड़ा गया है। इस लिए अग्नि शब्द गत्यायक होने से ज्ञानस्वरूप ईश्वर और प्राण्ययक भौतिक अग्नि का ग्रहण होता है "सूर्य" शब्द निघण्टु ५६ में पद नामों में पड़ा है। यजुर्वेद ३।६ में अग्नि और सूर्य कैसे हैं यह उपदेश किया है :—

अग्निपञ्चोत्थिष्योतिरग्निः स्वाहा, सूर्योत्थोतिष्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्बर्चोऽप्योतिर्वचनः स्वाहा, सूर्यो वचनोऽप्योतिर्वचनः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।

अर्थ—(अग्नि) जगत् का स्वामी परमेश्वर (स्वाहा) सत्य भाषण करनेवाली वाणी रूप (ज्योतिः) सर्वप्रकाशक ज्योति सबको प्रदान करता है। इसी प्रकार [अग्निः] भौतिक अग्नि भी [ज्योतिः] सर्व-प्रकाशक ज्योति प्रदान करता है। (सूर्यः) बराबर का आत्मा एवं बराबर को जाननेवाला जगदीश्वर (स्वाहा) हृदयस्थ सत्य वाणी द्वारा (ज्योतिः) सब आत्माओं को प्रकाश देनेवाला, सकल विद्याओं का उपदेश करनेवाला जगदीश्वर सबकी आत्माओं में ज्ञान प्रदान करता है। [सूर्यः] अपने प्रकाश से सबको प्रेरणा देनेवाला सूर्य [ज्योतिः] ज्योति प्रदान एवं पृथिवी प्रादि मूल द्रव्यों को प्रकाशित करता है। [अग्निः] सब विद्याओं का उपदेशक एवं प्रकाशक जगदीश्वर मनुष्यों के लिए सब विद्याओं का आचार (वचन) सब विद्याओं के प्राप्ति साधन चारों वेदों को ऋषियों के हृदय में प्रकाशित करता है। इसी प्रकार (ज्योति) शरीर और ब्रह्माण्ड में स्थित सकल पदार्थों को प्रकाशित करनेवाला विशुद्ध नामक यह अग्नि (वचन) विद्या और वृष्टि का निमित्त एवं विद्या और व्यवहार का साधक है। (सूर्यः) सकल विद्या प्रकाशक, सर्वव्यापक जगदीश्वर ने सब मनुष्यों के लिए (स्वाहा) यह उपदेश किया है कि हे मनुष्यो! तुम अपने पदार्थों को ही 'पितृ' कहो अर्थात् पदार्थों को नहीं (ज्योतिः) सत्य प्रकाशक परमेश्वर (वचन) प्रकाश करनेवाले विशुद्ध, सूर्य और प्रसिद्ध अग्नि नामक तेज को नानाश है। तथा (ज्योतिः) सब व्यवहारों का प्रकाशक सूर्यलोक भी (वचन) शरीर और आत्मा के सब को प्रकाशित करता है। (सूर्यः) सकल विद्या विध्यवहारों का प्रापक आराध्य समूह (ज्योतिः) सकल विद्याओं के प्रकाशक ज्ञान के साधक हैं। तथा यह ज्योतिर्भय (सूर्यः) जगदीश्वर (स्वाहा) वेदवाणी एवं यज्ञादि सुभ कर्मों का उपदेश करता है तथा (ज्योतिः) उत्तम वीथि से आहुत की हुई हवि को अपने चचे पदार्थों में अग्नी वाक् से संचन करता है।

महर्षि दयानन्द जी ने इस मन्त्र का उल्लेख पञ्च महायज्ञ विधि (देवयज्ञविधि) में सायंकाल तथा प्रातःकाल के होम मन्त्रों में किया है और इस प्रकार व्याख्या की है :—

(अग्निज्यो) अग्नि जो परमेश्वर ज्योतिः स्वरूप है उसकी आज्ञा से हम परोपकार के लिए होम करते हैं और उसका रचा हुआ जो यह भौतिकज्ञान है, जिसमें द्रव्य डालते हैं वो इसीलिए है कि उन

द्रव्यों के परमाणु करके जल और वायु, वृष्टि के साथ मिला के उनको शुद्ध करते। जिससे सब ससार सुखी होके पुत्रपार्थी हो।।

(अग्निर्बर्चोऽ) अग्नि जो परमेश्वर वचन अर्थात् सब विद्याओं का देनेवाला तथा अग्नि आरोग्य और बुद्धि बढ़ाने का हेतु है। इसलिए हम लोग होम करके परमेश्वर की प्रार्थना करते हैं। यह दूसरी आहुति है।। तीसरी आहुति प्रथम [अग्निज्योऽ] मन्त्र से भौन करके करनी चाहिए।।

(सूर्यो ज्योऽ) जो बराबर का आत्मा प्रकाशस्वरूप और सूर्यविधि प्रकाशक लोगों का भी प्रकाशक है, उसकी प्रसन्नता के लिए हमें लोग होम करते हैं।।

(सूर्यो वचोऽ) जो सूर्य परमेश्वर हमको सब विद्याओं का देनेवाला, और हम लोगों से उनका प्रचार करानेवाला है, उसी के अनुग्रह के लिए हम लोग अग्निहोत्र करते हैं।।

(ज्योतिः सूर्योऽ) जो आप प्रकाशमान और जगत् का प्रकाश करने वाला, सूर्य अर्थात् सब संसार का ईश्वर है उसकी प्रसन्नता के अर्थ हम लोग होम करते हैं।।

महर्षि ने इस मन्त्र की व्याख्या ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका (पञ्च-महायज्ञ विषय) में इस प्रकार की है :—

(सूर्यो ज्योऽ) जो बराबर का आत्मा प्रकाश स्वरूप और सूर्यविधि प्रकाशक लोगों का भी प्रकाश करनेवाला है उसकी प्रसन्नता के लिए हमें लोग होम करते हैं।।

(सूर्यो वचोऽ) सूर्य जो परमेश्वर है वह हम लोगों को सब विद्याओं का देनेवाला और हमसे उनका प्रचार करानेवाला उसी के अनुग्रह से हम लोग अग्निहोत्र करते हैं।।

(ज्योतिः सूर्योऽ) जो आप प्रकाशमान और जगत् का प्रकाश करने वाला सूर्य अर्थात् संसार का ईश्वर है उसकी प्रसन्नता के अर्थ हमें लोग होम करते हैं।।

(अग्निज्योऽ) अग्नि जो ज्योति परमेश्वर है उसकी आज्ञा से हमें लोग परोपकार के लिए होम करते हैं और उसका रचा हुआ यह भौतिक अग्नि इसलिए है कि वह उन द्रव्यों को परमाणु रूप करके वायु और वर्षा जल के साथ मिलानेके शुद्ध करते। जिससे सब ससार को शुद्ध और आरोग्यता की वृद्धि हो।।

(अग्निर्बर्चोऽ) अग्नि परमेश्वर वचन अर्थात् सब विद्याओं का देने वाला और भौतिक अग्नि आरोग्यता और वृद्धि का बढ़ानेवाला है इसलिए हमें लोग होम से परमेश्वर की प्रार्थना करते हैं। यह दूसरी आहुति है।। तीसरी भौन होके (अग्निज्योऽ) मन्त्र से करनी।।

महर्षि ने इस मन्त्र का विनियोग संस्कारविधि (गृहार्थम प्रकरण) अग्निहोत्र में सायं तथा प्रातःकाल की आहुतियों में किया है।।

(शेष पृष्ठ २ पर)

## राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रयोग और प्रसार में महिलाओं का मौलिक योगदान

डा० सरोज अग्रवाल

अपने देश के लोग कहा सबसे ज्यादा एकत्र होते हैं और उनकी सम्पर्क की भाषा क्या है ? तो उत्तर एक ही मिलता है कि हिन्दुस्तान में एकत्र होते हैं और हिन्दी ही उनकी सम्पर्क भाषा है। साक्षरों को तो सिखा नौतिन ये यह कूट-कूटकर भर दिया था कि अंग्रेजों के बिना ऊँको सिखाओ ऊँके ओहदे तक नहीं पहुँच सकते। लेकिन आज भी हिन्दुस्तान में हिन्दी ही सर्वाधिक प्रयोग की भाषा है उसका स्पष्ट उदाहरण आज भी गाँव के बिना पढ़े-लिखे लोग चारों बाम की यात्रा बिना अंग्रेजी के इस्तेमाल के कर आते हैं। बड़े-बड़े शिक्षाविद् शांति क व अन्य विद्वान् बिना अंग्रेजी के विदेशों यात्रा कर आते हैं। हिन्दी केवल भारत ही राष्ट्रभाषा नहीं है बल्कि विदेशों में भी इसका चलन है बल्कि माइसस फिजो, सूरिनाम तथा अनेकों देश हिन्दी को समुचित राष्ट्रसघ की भाषाओं में सम्मिलित करने के इच्छुक हैं। श्री विमान चन्द्र सेठ ने नेहरू जी को समझ जून सन् बासठ की लिखे पत्र में कहा था कि हिन्दी को अन्तर्राष्ट्रीय भाषाओं में शामिल कराये जाने का प्रयास क्यों नहीं किया जा रहा है।

भाषा मानव की अभिव्यक्त का प्रमुख साधन है। मानवमन का अकेलापन भाषा और साहित्य के द्वारा ही दूर किया जा सकता है। प्रत्येक देशभक्त को राष्ट्रभाषा भक्त भी होना चाहिए। क्योंकि हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है अतः अंग्रेजी का प्रयोग हमारी जीभ कटने के समान है। हिन्दी के प्रयोग से हिन्दुस्तान के बाहर भी विद्वानों को खूब प्रसिद्धि मिली है। जैसे—डा० विवेकानन्द शर्मा (फिजी), डा० दयानन्दनाथ, बसन्तराय, (भारोघस), श्रीमती इन्द्रा देवस नायके (लका)।

राष्ट्रभाषा का प्रयोग न करने से सबसे बड़ा प्रत्यक्ष प्रमाण शास्त्रीयों के नाम नजर आता है। प्रायः सभी शास्त्रीय और सभी स्वानों पर मरीज का नाम, बीमारी का नाम, दवा का नाम व दवा खाने की सुराक कि कौन-सी दवा कब और कितनी बार लेनी है अंग्रेजी में ही लिखते हैं। कभी-कभी एक ही परिवार के कई मरीज होते हैं साथ दवा खाते पर किसी की कोई खा जाता है और उसका परिचय आप स्वयं समझ सकते हैं। मान लिया जाये कि दवाओं के नाम अंग्रेजी में ही होते हैं पर मरीज का नाम व अन्य बातें तो हिन्दी में लिखी ही जा सकती हैं।

सौभाग्य से जहाँ बड़े-बड़े राजनेता सांसद अपना भाषण अंग्रेजी में देना पसन्द करते हैं वही अधिकतर महिला नेत्रियाँ हिन्दी में भाषण देना अधिक पसन्द करती हैं। राष्ट्रभाषा का प्रयोग करके सर्वाधिक प्रसार एवं प्रसार नारियों के द्वारा ही हुआ है। किसी भी भाषा के प्रचार एवं प्रसार के लिए सशक्त माध्यम लेखनी ही होती है। महान् लेखिकाओं ने हिन्दी भाषा का ही प्रयोग किया है। भारत कोकिला सरोजिनी नायडू, श्रीमती महादेवी वर्मा, सुमद्रा कुमारी चौहान, मंगलाक्ष, सरोजिनी प्रीतम, सिवाजी श्रीमती धामसौ (हरवाणा) आदि। तथा कवयित्रियों में सुमित्रा कुमारी सिन्हा, सस्नेहलता स्नेह पुष्पाभारती, आननती सन्नेना, चन्द्रवती बोझा, प्रभा टाकुर एवं मयता खरे आदि। हमारे देश में तो आदिवासल से ही नारी प्रेरणा व शक्ति का प्रतीक मानो जातो रहो है। यदि शिव (मयवान् शकर) जो लय, ताल और जीवन की लय के प्रतीक हैं, उनके नाम से स्नायिक 'इ' भाषा हटा दी जाए तो शिव का शव हो जायेगा। परन्तु आधिक सत्ता पुत्रों के हक में होने के कारण प्रथमसत्ता पुत्रों की ही रही है। और इस पुत्रप्रधान समाज में स्त्रियों की प्रतिभा सदैव से ही कृष्टित होती आई है। अब आपके समझ कुछ ऐसे तथ्य पेश हैं जिनके आभाव पर कह सकते हैं कि हिन्दी के प्रयोग और प्रसार में महिलाओं का ही मौलिक योगदान रहा है।

जिन महान् लेखिकाओं के नाम ऊपर दिए हैं, यह बात नहीं कि उनमें अंग्रेजी किसी को न घाती हो। भारत कोकिला सरोजिनी नायडू का अंग्रेजी पर भी उनका ही अधिकार था जितना हिन्दी पर भी अंग्रेजी की भी बहुत अच्छी लेखिका रही है, लेकिन प्राथमिकता उन्होंने हिन्दी को ही दी व दैनिक जीवन में हिन्दी का ही सर्वाधिक प्रयोग किया।

श्रीमती महादेवी वर्मा ने लिखा है "सबसे उल्लेखनीय बातें अर्थात् भर घाती हैं जब मेरे पास लोगों के पत्र अंग्रेजी में आते हैं।"

विदेशी महिला इन्द्रा देवस नायके (लका) ने हिन्दी का प्रचार एवं प्रसार अपनी लेखनी के माध्यम से किया।

राष्ट्र की प्रमुख हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में ही महिलाओं के लेख अधिक आते हैं अंग्रेजी पत्र-पत्रिकाओं में नहीं। कारण यह नहीं कि उन्हें अंग्रेजी लिखनी ही नहीं घाती।

कई स्थानों पर अंग्रेजी प्रवक्ता दैनिक कामकाज जैसे बैंक या अन्य सरकारी कार्यालय के हिन्दी में ही करते हैं। उनका कहना है कि राष्ट्रभाषा का प्रथमस ही कुछ और है।

प्रायः देखा गया है कि बैंक या सरकारी कार्यालयों में महिलायें हिन्दी में काम करती हैं तो पुरुष सिलती उठाते हैं।

साधारण मिशन के अन्तर्गत ४५ करोड़ की निरक्षर जनता में से महिलाओं का ही प्रतिशत अधिक है और यह कार्य हिन्दी में ही हो रहा है। अर्थात् महिलाओं को अहिन्दी व हिन्दी क्षेत्रों दोनों में हिन्दी में ही हस्ताक्षर करना व लिखना-पढ़ना सिखाया जा रहा है।

सर्वसाध के दौरान मैंने पाया कि अंग्रेजी की अध्यापिकाओं व प्रवक्त्याँ हिन्दी के प्रयोग से उपहास की पात्र बनती हैं, मेरा अपना भी अनुभव है क्योंकि विगत समझ वर्षों से मैं जानकी बाई बालिका इन्टर कालिज में अंग्रेजी की उच्च कक्षाओं को पढ़ाने वाली अध्यापिका के रूप में कार्यरत हूँ परन्तु दैनिक जीवन के सभी कार्य मुझे हिन्दी में करने में जो सुख का आत्मसंतोष का अनुभव होता है वह अन्य भाषाओं में नहीं। अतः उपरोक्त तथ्यों के प्राधार पर मैं कह सकती हूँ कि राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रयोग और प्रसार में महिलाओं का मौलिक योगदान सराहनीय रहा है।

(पृष्ठ १ का शेष)

मन्त्र में ज्योति शब्द के अर्थ—१. सर्व प्रकाशक जगदीश्वर, २. सब धात्वाभ्यां का प्रकाशक एवं वेद द्वारा सकल विद्या का उपदेसक ईश्वर, ३. पृथिवी आदि सृष्टि द्रव्यों का प्रकाशक सूर्य, ४. धरती और ब्रह्माण्ड में स्थित विद्युत् नामक अग्नि, ५. सत्य का प्रकाशक ईश्वर, ६. सब व्यथहारो का प्रकाशक सूर्य, ७. सकल विद्याओं का प्रकाशक ज्ञान, ८. अर्थात् प्रकार बाहुल्य की हुई हृदि।

मन्त्र में श्वः शब्द के अर्थ—वेद चतुष्टय (चारों वेद) विद्या को प्राप्त करने के साधन, शिल्प विद्या और वर्णों का निमित्त, विद्युत्, सूर्य और पौष्टिक अग्नि का तेज, शारीरिक और आध्यात्मिक, विद्युत्, मन्त्र में स्वाहा शब्द के अर्थ—सत्य भाषणयुक्त वाणी, अपने पदार्थों को ही अपना कहना, दूसरों के पदार्थों को नहीं, वेदवाणी के द्वारा यज्ञ क्रिया का उपदेस।

भाषाभ्यं—यहाँ 'स्वाहा' शब्द का अर्थ निश्चयकार को रोति से ग्रहण किया गया है। ईश्वर कारण रूप अग्नि से स्पृह अग्नि जगत को प्रकाशित करता है, जगत में अग्नि अपने प्रकाश से स्वयं को जोर अपने से भिन्न बिम्ब को प्रकाशित करता है। परमेश्वर वेदों के द्वारा सब विद्याओं को प्रकाशित करता है। इसी प्रकार अग्नि और सूर्य भी शिल्प विद्याओं को प्रकाशित करते हैं।

## रोगों की जड़—धूम्रपान (तम्बाकू)

डॉ० स्वामी स्वल्पानम् सरस्वती (दिल्ली)

आज भारत देश में तम्बाकू (धूम्रपान) के कारण अनेकों रोगों का बर बढता भार रहा है। लाखों प्रकार की नई-नई बीमारियों का अद्भुत बन चुका है। जब तक धूम्रपान का धोर बहिष्कार नहीं होगा एवं वहाँ देश के अन्धर यज्ञ-हवन की धूम मची रहती थी वीर युगस्थित हुए से मुक्त वायु रहती थी वातावरण सार्विक पवित्र होता था धोर लाखों बीमारियों आप से आप दूर भग जाती थी, आज इस तम्बाकू के कारण देश में सुषुप्तावन, सुष्वापन फेस रहा है वायु दूषित हो रही है। इस अंधकार अहरीसे युव के कारण हजारों बीमारियों में डेरा धा बनाया है। तम्बाकू कटने के समय बनाने के कारण साँसों तँपाया, मक्की, शीशय लिपटकर मर जाते हैं। वहाँ लाखों मक्की, तँपाया को तम्बाकू में कूटकर पीने से हमारा धोर नर्क का मार्ग भी खुल जाता है। तम्बाकू के विषैले जहरीले युवों को हम स्वयं उशा-उडाकर अपने पैरों पर धाए कुल्हाड़ा मार रहे हैं।

आज अत्येक शक्ति क्या बच्चा क्या दुड़ा, क्या स्त्री क्या पुत्रव, क्या नरीय क्या अमीर, क्या सुहृदी क्या साधु, क्या पुजारी क्या पाषा, क्या मूखं क्या विद्वान् सभी तम्बाकू आकर, पीकर, सुषुकर पचका बन रहे हैं और अपना स्वास्थय विनाश रहे हैं। अपने घरों को देश को विषैले बबदूवार युव से सराबन कर रहे हैं। इस प्रकार देश को रसातल में ले जा रहे हैं। करोड़ों रुपया बीड़ी सिगरेट की आग से हुआन मरणा को आग लगाकर जिन को मेट कर रहे हैं और लाँसी, दमा आदि बीमारियों को अपने पीछे लगा रहे। सबको जूठो बीड़ी, सिगरेट, चिसम पीकर धर्म-कर्म को भी समाप्त कर रहे हैं।

गुरु गोविन्दसिंह ने लिखा है कि—

हे अनुष्य ! तू यदि जंगल में है और तेरे सामने से तुझे खेर खाने को धार रहा है और तेरे पीछे तम्बाकू का खेत है तू खड़े ही खेर से मारा जाए पर तू सुलकर भी तम्बाकू के खेत में पंर न रखना।

हाय, येरी श्रुतियों को प्रत्यान को क्या पागलपन सवार हो गया है। ध्राव कंसे निरंजत होते जा रहे हैं। जो कि रामनरमी, जग्माश्टमी, एकवीर का व्रत करने पर भी तम्बाकू नहीं छोड़ते हैं। साथ ही ट्टी जैसी गन्धी गन्ध में भी बीड़ों पीने से बाज नहीं आते हैं। राम, कृष्ण, शंकर, हनुमान के पवित्र मन्त्रों में पीने से नहीं चूकते हैं। विवाह जैसे पवित्र यज्ञ में धूम्राधार कर देते हैं। मुदां फुक रहा है धोर सब छातो पीठ-पीठकर रो रहे हैं फिर भी यह बीड़ी सिगरेट पीने से बाज नहीं आते हैं। धरे जो ट्टी जाते भी बीड़ों पी रहा है वह नारकीय जोड़ा नहीं तो क्या है। इस धोर पतन का भी कोई टिकाना है।

साधु सत्तों के हाथ में सम्बी-सम्बी चिसम और सुलका गांवे के बम खगाते देखते हैं और उटपटांग शब्द बोलेते सुनते हैं जैसे कि— 'चिसम चबेची-सुक दे लासा को हवेची'। हाय हमने इस पापी हुक्का सिगरेट धूम्रपान के पीछे धन, धर्म, नियम, मान, मर्यादा, वेद, शास्त्र समझे ठुकरा दिया और सोचा नर्क का मार्ग मोक्ष ले लिया। यदि ध्राव सभी महारमा स्वयं तम्बाकू सुलका छोड़कर गाँव-गाँव में जाकर सबसे तम्बाकू नवीची चीज छुड़वायें तो देश का कल्याण ही हो जाये। पर देश का दुर्भाग्य है कि साधु महारमा अब स्वयं इसके विकार हो रहे हैं, फिर क्या यह इधर व्यापन क्यों बँसे।

## हैदराबाद सत्याग्रहियों को सूचना

हैदराबाद के उन १५ सत्याग्रहियों को सूचित किया जाता है जो दूसरे केस में शामिल थे कि सुभीम कोट में इस केस की पैची १८-१९६१ बनी है और ऐसी उम्मीद की जाती है कि जो भी फेसला होना है वह इसी पैची पर बहस के बाद सुना दिया जायेगा।

इसके साथ-साथ ही ये उम्मीद भी है कि जो २६ सत्याग्रही तीसरे केस में शामिल हुए थे चायय उनका फेसला भी इसी तारीख यात्रि १८-६१ को बहस सुनकर सुना दिया जाए। १८-६१ को जो भी फेसला होना वह पुनः सर्वहितकारी के १४-६-६१ के धक में प्रकाशित कर दिया जायेगा।

—महाशय भरतसिंह, संयोजक

## आर्यवीर भी शेरसिंह एम.ए. का अथक परिश्रम रंग लाया

ग्राम निमड़ीवासी वि० शिवानो में महर्षि दयानन्द जी के सच्चे शिष्य आर्यवीर जी के परिश्रम को एम०ए० ने अपने गांव को धारा बहित गांव बनाने का श्रेयदान वसाया हुआ है। अत्येक सरकार की धारा बढाया नीति के कारण गांव में कृषि शक्ति अर्थक तरीके से धारा बचेते थे, तथा धारा पीकर पशियों में हुस्वदुवाची करते थे। गत १४ जनवरी १९६१ मकर संक्राति एवं धरातः अपना निजी मारिक लेकर बच्चों के साथ मुनादी दी तथा धारा बन्धी गारे एवं मजबु थाए। इसपरवात् ८ बजे महर्षि दयानन्द विद्यालय नीमडोवाची में यज्ञ किया। उसके उपरत बाद सारे गांव की पंचायत हुई। आर्य जी ने बुझाव रखा कि धाराब सब पाणों की जड़ है। अतः गांव में धारा बन्धी होनी चाहिए। सभी ने सर्वसम्मति से धाराब बन्धी प्रस्ताव पास किया, तथा सम्बन्धित अधिकारियों, उपायुक्त महोदय, पुलिस धनी-सक, ज्वाक अधिकार, माना इत्यायं आदि को प्रस्ताव की एक प्रति भेज दी गई।

पंचायत के नियम अनुसार धाराब बेचनेवाले को १००) ६० रुपय, धाराब पीकर हुस्वदुवाची पशियों में करनेवाले को १००) ६० रुपय तथा केवल बेचनेवाले को सूचना देनेवाले को १००) ६० इनाम। धारम्भ में दो-चार को चुपना सया। लेकिन आज तक गांव में धारा बन्धी कार्यक्रम सुष्ठु अच्छे ढंग से चल रहा है। श्री शेरसिंह जी के प्रयत्न से ३५ पशुओं में अपने कांठों की धाराब सानी बन्द कर दी है।

आत्म्य है कि आर्य भी गांव में प्रतिवर्ष नवयुवकों का शिविर एवं समय-समय पर वेद-अचार करवाते रहते हैं। गत छः महीनों से गांव में साप्ताहिक पारिवारिक यज्ञ करते हैं। जिससे गांव में वैश्वको एवं सामाजिक शक्ति बढ़ी है। सुनह समय धर पर मारिक द्वारा सन्ध्या के मन्त्र तथा ईश्वर भक्ति के अजन गाए जाते हैं। उपरोक्त कार्यों में उनकी विद्वो धर्मपत्नी श्रीमती शकुन्तला आर्यां एम०ए० का भी विशेष योगदान रहा है। इसके अतिरिक्त स्कूची बच्चों, माता, बहिनों तथा बुजुर्गों का विशेष सहयोग मिल रहा है।

इस प्रकार अथक गांव को पंचायत एवं नवयुवक भी इस गांव से प्रेरणा लेकर अपने-अपने गांव में धाराब बन्धी लागू कर सकते हैं।

अतसिंह आर्य क्रान्तिकारी  
समा उपदेशक

## प्रगति के पांच मन्त्र

वेधा के विना—विधा बेकार।

परद्वेष के विना—औषधि बेकार।

वाचरत्न के विना—सत्यं बेकार।

सात्विक भोजन के विना—योग साधना बेकार।

प्रचण्ड सुधारक के विना—प्रभु शक्ति बेकार।

आर्यों। सुधाचन्द्र, दामा जी, कृष्ण वर्मा, मदनसात ठींगड़ा, पं० रामप्रसाद विरिभल, चन्द्रसेखर धाजाब, साहा साधुपतराय, सर-धर सुगतसिंह, स्वा० भद्रानन्द, नरक अमीरबन्ध, योगेश्वर कृष्ण, बन्धा नंरामी, स्वयं बुध रामबाध, गुरु गोविन्दसिंह, शिवानी, महाराणा प्रताप, धाराब एवं महर्षि दयानन्द के पद-चिह्नों पर संगठित होकर राष्ट्र को बचावो।

आर्ये ह्य चिन्तन कर अपना वाचरत्न सुधारो।

(आर्य सन्धेय सापार)



## देश का सच्चा रक्षक : आर्यसमाज

आर्यसमाज के छठे नियम में युग-प्रवर्धक, अतिथि शक्तिपुंज, पुण्य महर्षि दयानन्द जी सरस्वती महाराज ने बताया कि संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। अर्थात् आर्यिक और सामाजिक उन्नति करना। इसी नियमानुसार दिनांक २४ जून से ३० जून १९११ तक आर्यसमाज ग्राम दोंगड़ा अहीर जि० महेश्वरगढ़ (हरयाणा) में सार्वभौमिक कार्य और बल हरयाणा के तत्त्वज्ञान में आर्य और बल प्रसिद्ध विधिर लगाया गया। यह विधिर श्री छोटेलास जी मुक्तियाजी द्वारा वाले (प्रधान आर्यसमाज नारनौल) के संचालन में विधिवत् प्रारम्भ हुआ। दि० २६-६-२१ को प्रातः गांव की चौपाल (परस) में यज्ञ किया गया। यज्ञ के महावीर आर्य (पुरोहित) थे। ग्रामवासियों व विद्यापियों ने यज्ञोपवीत धारण कर दुग्धसेन त्वागने का संकल्प लिया। सार्यकाल इसी स्थान पर अज्ञानोपदेश एवं व्याख्यान हुए। श्री छोटेलास जी प्रधान के आदेशानुसार बाज की सभा के अध्यक्ष श्री देवकरण पहलवान (ब्रू.प्र. सरपंच) को बनाया गया। इस सभा में म० जगमालसिंह, म० लेखचन्द व अन्य क्षेत्रीय अज्ञानोपदेशकों ने बहुत मधुर अर्थ सुनाए। श्री रामबाल जी आर्य बौद्धिक अध्यक्ष आर्य और बल ने अपने व्याख्यान में बौद्धिक ज्ञान पर सुन्दर, प्रभावशाली प्रकाश डाला। श्री लालचन्द जी विद्यावाचस्पति (श्री मंगलजयकोर प्राथमिक ज्ञान वाच्य सेवक) ने अपने व्याख्यान व अज्ञानों में बताया कि आर्यसमाज देश का सच्चा रक्षक है। संकट के समय सर्वत्र हमारे महापुरुषों ने त्याग, बलिदान किया है। समय की समस्यया देखते हुए आर्यसमाज को नौजवानों की ऐसी सेना तैयार करनी चाहिए जो संकट के समय देश के काम आ सके। हमारे आर्य वीरों को आधुनिक अस्त्र-अस्त्र विद्या में निपुण होना चाहिए। श्री लालचन्द जी ने ग्रामवासियों से कहा कि आपका यह कार्यक्रम हरयाणा के मुख पत्र "सर्वहितकारी" में प्रकाशित होगा। "सर्वहितकारी" जो कि वास्तव में ही सभी की अर्थात् करने वाला है। यह प्रसिद्ध पत्र देश-विदेश में वेदों का, आर्य साहित्य का प्रचार करता है। अतः इस आर्यसमाज को तथा आप सभी सज्जनों को इस पत्र का ग्राहक बनना चाहिए। यह "सर्वहितकारी" पत्र हमारी संस्कृति, सभ्यता और साहित्य का ज्ञान माग्नर में सागर की भांति तेकर आता है। इन्होंने अपने नाम में बताया कि देश में नौजवान कैसे ही और उनके गीत, गान और राग कैसे हों।

॥ गाना ॥

गाये स्वर तास मस्ती में, उसे मैं राग कहता हूँ।।टेक॥  
 करे न्योछावर सब कुछ देशचर्कों की भांति।  
 हो रक्त गुलाल मस्ती में, उसे मैं फाग कहता हूँ।।१॥  
 फंसे नहीं मोह सोख में, भिजे चाहे राख्य विश्व का।  
 तजे बन-नाल मस्ती में, उसे मैं त्याग कहता हूँ।।२॥  
 छिन्दे चाहे बन पहाड़ों में, अपनी जाल-जाल के कारण।  
 सुके नहीं भांजे काष्ठ मस्ती में, उसे छिंदी की पाग कहता हूँ।।३॥  
 न्याय के पय को झल सजके, अपना ना पसना हो।  
 करे ना ब्याज मस्ती में, उसे मैं-बाज कहता हूँ।।४॥  
 हो देशद्रोही, घातक, सोपण बनता का करता हो।  
 बने चाण्डाल मस्ती में, उसे मैं दास कहता हूँ।।५॥  
 किया बदाभा पिना जो का बाकर लम्पन में डैको।  
 करी ना टास मस्ती में, उसे मैं काजा कहता हूँ।।६॥  
 बुद्ध के अन्न का करे त्यागन, देखा चिन्तन कर्तुं हो।  
 बदीब की भांजे दास मस्ती में, उसे बुद्ध डास कहता हूँ।।७॥  
 जुगल जुगली से चूके ना देखो वह फुलन होखा है।  
 भात की मारे भास मस्ती में, उसे काबा नास कहता हूँ।।८॥  
 "साक्षचन्द" कवन तेरा कर्म, करते बढ़ो धामे।  
 कतम्य प्रतिपाल मस्ती में, उसे मैं नाथ कहता हूँ।।९॥

इस विधिर का कार्यक्रम प्रतिदिन विधिवत् होता रहा। दि० ३०-६-२१ को समाधि समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में राध बंधीसिंह जी विकास व पंचायत मन्त्री हरयाणा सरकार को आमन्त्रित किया गया। सर्वसम्मति से प्राज की सभा के अध्यक्ष म० ताराचन्द जी आर्य (सू.पु. प्रधान आर्यसमाज नारनौल) को चुना गया तथा पंच संयोजक श्री दुलीचन्द जी सर्वो सरपंच ग्राम मुखियां वेडा को बनाया गया। मुख्य अतिथि महोदय के प्रागमन पर ग्रामवासियों व आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं ने यध्य स्वागत किया। आर्य और बल के शिल्लापियों ने ध्यायान, आसन का प्रदर्शन किया।

यह प्रबंधन देलकर मन्त्री महोदय एवं सभी दयंक बड़े प्रभावित हुए। मन्त्री महोदय को ने अपने भाषण में बताया कि ऐसे विधिर प्रत्येक ग्राम में लगने चाहियें। महर्षि दयानन्द जी बताया कि आर्य बनें और संसार को बनायें। आर्य पवित्र व श्रेष्ठ होते हैं। सत्याय-प्रकाश में कहर है कि श्रेष्ठ व इच्छु दो ही प्रकार के मानव होते हैं। इसीलिए हमें श्रेष्ठ बनना चाहिए जैसे कि इस क्षेत्र के महान् योगी, समाज सुधारक तथा सेतानाथ जी हुए। हमें उनके पद-चिह्नों से शिल्ला लेनी चाहिए तथा सच्चे आर्य बनना चाहिए। तत्पश्चात् मन्त्री महोदय राध बंधीसिंह जी ने "यज्ञ-शाखा" का शिल्लाग्रास किया तथा ग्रामवासियों को अर्थ योगों को भी स्वीकार किया। इस अव्य-वीथ्य समारोह में दोपहर की कड़कती धूप में जन-समूह प्रचार वा तथा महर्षि दयानन्द जी, योगिराज श्रीकृष्ण जी तथा बाबा सेतानाथ के जव-जवकार से वातावरण गुंजायमान हो रहा था। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि जितना महेश्वरगढ़ में आर्यसमाज की जागृति चरम सीमा पर है। इस विधिर में ग्रामवासियों का बड़ा सहयोग रहा। भारत श्रीराम जी इत्यादि सज्जनों ने प्राति से अन्त तक बहुत सहयोग दिया। म० ताराचन्द जी पूर्ण प्रधान तथा श्री छोटेलास जी प्रधान ने मन्त्री महोदय जी हादिक कथनाद प्रकट किया। शान्तिपाठ से यह धारोवन सुसम्पन्न हुआ।

सम्प्रेषक—मा० सुशील (डेहकी)

डा०—देरावास, जि० महेश्वरगढ़ (हरयाणा)

## पं० हरिशरण सिद्धान्तालंकार नहीं रहे

आर्यसमाज के जाने-माने विद्वान् श्रीराम चारों वेदों का भाष्य करने वेदों के प्रति अपनी अनन्य निष्ठा प्रकट करनेवाले श्री पं० हरिहरण सिद्धान्तालंकार का ३ जुलाई की रात को व बने ६२ वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। वे संस्कृतरण अर्थ अनेक विषयों के भी सम्बन्ध में और कुशल अर्थात्क वे। वो भी विषय छात्रों को पढ़ाना होता, वे इतनी उत्तरदा और सज्जन से पढ़ाते थे कि छात्रों को वह विषय हृदयंगम हो जाता। वेद वर्णों की व्याख्या करने और शास्त्रीय श्रुति से इच्छुको संशुति करने में उनको अविश्व-कर्म ही। अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में केवल वेदों का अध्ययन ही उनका एकमात्र व्यसज था। उनके द्वारा शिल्ला सामवेद भाष्य कई वर्ष पहले छप चुका है। इसीमे अन्तीवस्रानन्द भी उनके श्रुतेय भाष्य को छाप रहे हैं। शिल्लके बनीं एक केवल दो ही लच्छ लपे हैं। सबमय १५ हजार पृष्ठों में शिल्ला यह चारों वेदों का भाष्य इनका असाय कीति-मान सिद्ध होगा।

अभी तक स्व० श्री पं० जयदेव विद्यालंकार ही एकमात्र पदुर्बल भाष्यकार आर्य विद्वान् थे। श्री पं० हरिहरण सिद्धान्तालंकार की अब नहीं रहे।

# तो सिर्फ ३४ वर्षों में एक और भारत तैयार हो जाऊँगा

(नई दिल्ली १० जुलाई १९६१) यदि जनसंख्या वृद्धि की मौजूदा दर पर अंकुश नहीं लग पाया तो भारत की जनसंख्या अगले ३४ वर्षों में लगभग दोगुनी हो जाएगी और यह विश्व का सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश बन जायेगा। यह योजनावर्ती योजना आयोग के एक कार्ययोजना के अन्तर्गत रिपोर्ट में दी है। इस समय देश की जनसंख्या ८४ करोड़ से ऊपर है। १९५१-६१ के दशक में जिसमें २३५ प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

विशेषज्ञों का मानना है कि शिक्षा का जनसंख्या की वृद्धि को रोकने से सीधा आलस्य है। इस सम्बन्ध में विशेषज्ञ केरल का उदाहरण देते हैं। जो साक्षरता में सबसे आगे है और जनसंख्या वृद्धि की दर में सबसे पीछे।

अधिकृत आनकारी के अनुसार भारत के हिस्से में विश्व के कुल मूल्य का केवल २.४ प्रतिशत श्रम जाता है जबकि इसकी जनसंख्या विश्व की कुल जनसंख्या का १५ प्रतिशत से अधिक है। इसकी ८४ करोड़ की जनसंख्या में से लगभग ३२ करोड़ व्यक्ति गरीबी रेखा से नीचे रहकर जीवन यापन कर रहे हैं।

जनसंख्या वृद्धि की वर्तमान वार्षिक दर २.०६ प्रतिशत है अर्थात् एक करोड़ ६० लाख व्यक्ति प्रतिवर्ष बढ़ जाते हैं। इस हिसाब से सन् २००० तक ही भारत की धरावीदी एक अरब की पार कर जाएगी।

योजना आयोग के विशेषज्ञ इस बात पर एकमत हैं कि जनसंख्या में इतनी तेजी से वृद्धि देश की अर्थव्यवस्था और योजना कार्यक्रमों पर पानी फेर रही है और अनेक तरह की सामाजिक, आर्थिक, पर्यावरणीय तथा पर्यावरणीय समस्याएँ उत्पन्न होती जा रही हैं।

शिक्षा के अलावा रोजगार, चिकित्सा सुविधाएँ, महिलाओं की स्थिति, कम आय में शारी, बेस-रूट और मनोरंजन के साधनों तथा बुढ़ापे का सुरक्षा आदि से भी जनसंख्या वृद्धि की दर सीधे जुड़ी हुई

## “म्हानं प्यारो लागं जी म्हारो गांव”

हर गांव में एक आर्य ऐसा होना चाहिए जो अपने गांव को हथेली पर रखे। ऐसे एक-एक से अनेक हो जायेंगे। वह सब मिलकर हर बस्ती से शराब के ठेकों तथा फुटकर विक्रेताओं को बरता देकर जल कषा देंगे। यह अच्छे पुरुषों की मजबूती जिस गांव में जायेगी वही शराब के विक्रेता गांव छोड़ जायेंगे।

गांव में ऐसे चमक भव पैदा हो जायेंगे, उन्में वो भगवान् की ही भाँसा शिरोधार्य होगी। वे तो गांव की पूजा करेंगे। उनके हृदय में प्राण ऐसे बस जायेगा, जैसे माता के हृदय में नवजात शिशु बस जाता है। धीरे-धीरे वह अन्धकार युवा रूप धारण कर लेगी। इनकी एकता का रूप शराब के विक्रेताओं की मत्त-मत्त में समा जायेगा। वह ऋण रूप छोड़ उनके हाथ अपने शीशु को उछारने में लग जायेंगे। उनको शमी देव पुत्र दिखाई देने लगेंगे। पशुओं को भी वह देव मानेंगे।

आयों क्या वह लय भव नहीं प्राया है, धन शराब के कारण हृदय दुःख जीवन की युवा है। ६) धान्यपत्र शराब पीसा है, पटवारी, सुखित शक्ति, आकाश शक्ति, हस्तगत शक्ति सभी राजकीय कर्मचारी शराब चाहते हैं। गांव में अब एक धारणी किन्ती ऋण दावामी को रोकनेवाला नहीं रहा। शम्भूजी श्याम सुन्दर सरेप्राण शराब पीकर बहो-भट्टियों की इच्छत उतारने पर तुले रहते हैं। विधायक मन्त्री कहने को चाहे कुछ भी कहें, पर शराब की फेडिगुमई इनकी ही बदीलत सोची गई है। जसः भेरी प्राणन सभी श्रेष्ठ पुरुषों से है कि वे युव श्रमिण २६-२१ को कावनी ठेका बन्द कराने हेतु बरता देने में अपनी स्वीकृत शक्तिपत्र भेज दें।

—दीपचन्द्र श्याम पो० कावनी, वि० रोहतक

मानी जाती है। केरल के साथ एक बात यह भी है कि वहाँ प्रति हजार पुरुषों पर १०० महिलाएँ हैं। इस आचार पर अन्य बातों के अलावा यह भी कहा जा सकता है कि सर्वाधिक शिक्षित राज्य होने के नाते केरल में सड़के की दर सड़की में राजस्थान, उत्तर प्रदेश, असम, प० बंगाल, हरयाणा, पंजाब और केन्द्र शासित क्षेत्रों पच्छीम और दिल्ली जितना भेदभाव नहीं बरता जाता वहाँ प्रति हजार पुरुषों पर महिलाओं की संख्या राष्ट्रीय औसत से भी कम है। राष्ट्रीय औसत १६६१ की जनगणना के अन्तर्गत शकड़ों के अनुसार प्रति हजार पुरुष पर ६२६ महिलाओं का है।

भारतीय सदर्न में प्रति हजार पुरुषों पर ६५० अथवा इससे अधिक महिलाओं का होना एक सकारात्मक पहलू माना जाता है।

इस अर्थों में केरल और हिमाचल प्रदेश के अलावा आन्ध्र प्रदेश, गोवा, कर्नाटक, मणिपुर, उड़ीसा, तमिलनाडु, पाण्डिचेरी, यादवा और नगर हवेली तथा दमन दीव आते हैं। जनसंख्या के प्रति परम किमी. घनत्व की दृष्टि से केन्द्र शासित प्रदेशों में दिल्ली सबसे ऊपर है। राज्यों में पहले स्थान पर पश्चिम बंगाल और दूसरे स्थान पर केरल आता है।

महर्षि दयानन्द गोसंवर्द्धन तुग्ध केन्द्र गाजीपुर दिल्ली में १००० दूध देनेवाली गऊओं के संरक्षण का प्रावधान

महर्षि दयानन्द द्वारा गो-कल्याणिक के गोरक्षा सिद्धान्त को मूर्त रूप देने का सप्रयास सांख्यिक आर्य प्रतिनिधि सभा की शानदार उपलब्धि ५ करोड़ रुपये की निधि के लिए आर्य जनता से सहयोग की आर्षिक अपील

आर्य जनता तथा गोपक्षों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि सांख्यिक आर्य प्रतिनिधि सभा में दिल्ली के गायीपुर नामक स्थान में कुछ वर्ष पूर्व जो १२.५ एकड़ भूमि महर्षि दयानन्द गो-संवर्द्धन दूध केन्द्र के लिए दिल्ली विकास प्राधिकरण से ली थी, उसमें निर्माणा कार्य प्रारम्भ हो चुका है। उक्त भूमि को समतल करने, शारदीयारी, सिंच-द्वार, जल व्यवस्था के लिए बोरिंग एवं १०० गायों के लिए वृद्ध बनवाने में अग्री तक समा द्वारा कई लाख रुपये व्यय हो चुके हैं।

गऊओं के ६ वृद्ध और बनवाने तथा प्राण्य जायवृक्ष व्यवस्थाओं पर कम से कम ५ करोड़ रुपये के व्यय का अनुमान है। अतः धनीमानी गोपक्ष जनता मुक्तहस्त से दाव देकर श्रद्धि श्रद्धे से अनुग्रह होने का प्रयास करे। आप गोक्षा के इस पुनीत कार्य में सहयोग देकर गोवि-राज श्रीकृष्ण जी महाराज को सच्चे षक्त और अनुयायी कहना सकते हैं।

कृपा श्रपनी सहयोग राशि सांख्यिक आर्य प्रतिनिधि सभा, के नाम महर्षि दयानन्द शम्भू, संभूषीजी मंदिर, नई दिल्ली-११००२ को बैंक ड्राफ्ट/चैक अथवा मनीऑर्डर से भिजवायें।

निवेदन संघाहृत समिति :  
 रामसिंह राठौर स्वामी आनन्दशेखर सरस्वती प० रायचन्द्रराव शम्भूमातरम्  
 अग्रज प्रधान सांख्यिक सभा वरिष्ठ उप-प्रधान सांख्यिक सभा  
 संतोषानन्द शम्भूजी कृष्ण देवरेल आर्य जनसंघासदास गोयब  
 श्रीमतीशय शरबाहा एमकेके गजानन्द प्रायं जेठसिंह एमकेके  
 श्री० वैरासिंह महानाय शम्भूपाण  
 (डा० सम्पिवाण शारणी) सभा समी

**गुरुकुल होशंगाबाद (म.प्र.) में प्रवेश प्रारम्भ**

यहाँ पर महर्षि दयानन्द द्वारा निदिष्ट आर्य पद्धति से शिक्षण के लिये की व्यवस्था है। उन्नीस कक्षा उत्तीर्ण छात्रों को गुरुशृणिमा (२६ जुलाई ६१) तक प्रवेश दिया जाएगा। यहाँ आर्य विद्यापीठ गुरुकुल अजमेर एवं महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक (हरयाणा) की माध्यता प्राप्त परीक्षार्थ भी दिवाराई जातो है। विद्यया सधेया निःशुल्क है। किन्तु भोजन, वृत्, दुग्ध का मासिक व्यय २००) दो सौ रुपये प्रतिमासकी को देना होगा। आजीवन वैदिक धर्म के प्रचार करने के दृष्टिकोण योग्य युवक बह्यचारियों को शुल्क में छूट एवं प्रवेश में प्राथमिकता दी जायेगी। शीघ्र सम्पर्क करे।

अगद्वेव नैष्ठिक आचार्य

प्रायं गुरुकुल होशंगाबाद (म०प्र०) ४६१००१

**‘शाम अलांकुपा ‘फलवाणी’ में आर्यसमाज मन्दिर का उद्घाटन”**

१२ जून को प्रति समारोह के साथ शाम अलांकुपा में आर्यसमाज मन्दिर का उद्घाटन श्री स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती ने किया। इस मन्दिर का निर्माण उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से प्राचीण आर्य ष्टी ने किया है, ये सभी लोग ईसाइयत छोड़कर वैदिक धर्म में आये हैं, इस अवसर पर इस क्षेत्र के अनेक प्रायंवाण्डु भी उपस्थित थे। सारे कार्यक्रम का संचालन श्री ५० विधिकेशन शास्त्री ने इस दिन से करवाया कि वातावरण उत्साह से भर गया। मन्त्री

विधिकेशन शास्त्री

**\* कवि के प्रति \***

कवि गीत सुनाता आज मुझे, धपने भावों का वह सुन्दर।

माधुर्य-भरा, चातुर्य-भरा, उत्कृष्ट चेतना का मनहर।

जिसमें प्रातः की अरुआई, स्वामल सन्ध्या-सी नीरवता।

निश्छल गंगा-सी पावनता, मादक फूलों-सी कीमलता।

मदमाती पिक-सी मधुमयता, सुरभित चन्दन-सी शीतलता।

अगम्य दीपक-सी उज्ज्वलता, कल-कल निर्झर-सी निर्मलता।

छू ले गन्तव्य अजीप्सा का, निता नूतन छन्दों से बढकर।

कवि गीत सुनाता आज मुझे, धपने भावों का वह सुन्दर।

कितनी ही बार न जाने तब, गूढतर अन्तर में आया हूँ।

संगीत श्रमी प्रांचल तेरा, हे कविवर ! कम सुन पाया हूँ।

नव-गीत सुनाओ वह अज को, जो मिट्टी को चन्दन करदे।

श्रिय ! प्रीत दिखाओ वह सबको, जो मरघल को नवधन करदे।

स्वर-सहरी अनुपम तुना नव्य, मुझे जिससे वसुधा, अम्बर।

हिय-गान तुना ऐसा बिहसे, सवेदन छलक उठे सत्वर।

रचयिता—

महेन्द्रसिंह ‘उत्साही’

**गुरुकुल**

कांगड़ी फार्मसी की

आयुर्वेदिक औषधियाँ सेवन कर स्वास्थ्य लाभ करें

**गुरुकुल**

**च्यवनप्राश**

पुरे पीरवार के लिए सर्वसम्पर्क एवं स्मृतिविकार रक्षक।  
दाँडी, डर व शारीरिक एवं केन्द्रीय शक्ति में उपयोगी आयुर्वेदिक औषधीय टांगिक



**गुरुकुल पायकिल**  
कैंसर व मधुमेह के रोकथाम के लिये विशेषतः पायकिल का उपयोग आयुर्वेदिक औषधि



**गुरुकुल चाय**  
पुष्करा व इन्कनारक चयन औरि में अती मृदुवी से अती लाभकारी आयुर्वेदिक औषधि

**गुरुकुलकांगड़ी फार्मसी हरिद्वार (उ० प्र०)**

शाखा कार्यालय : ६३, गली राजा केदारनाथ  
चावड़ी बाजार, दिल्ली-११०००६

**गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी**

हरिद्वार

की औषधियाँ सेवन करें।

शाखा कार्यालय

६३ गली राजा केदारनाथ,  
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

स्थानीय विक्रेताओं एवं सुपर बाजार से खरीदें

फोन नं० २६१८७१

‘अमर’—‘सेवा’ १०५५

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए गुरुकुल और प्रकाशक वेदवत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिदिग प्रेस के लिए सर्वहितकारी मुख्यालय रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय ५० जगदेषसिंह सिद्धान्ती फवन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।



# अपवन्तो विश्वमार्यम् अपर्वे हितकारिणी हितात्मक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—भूवेशिंह सभामार्थी      सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री      सहसम्पादक—प्रकाशवीर बिद्यानकार एम० ए०

वर्ष १८    अंक ३४    २८ जुलाई, १९६१    आर्थिक शुल्क ३०)    (आजीवन शुल्क ३०१)    विदेश में ८ पौंड    एक प्रति ७५ पैसे

## शरीर और जीवात्मा

(डा० सुरेशचन्द्र बेवालकार एम. ए. एम. आई. जी., ४९ राष्ट्रीयनगर कालोनी, आरोग्य मन्दिर, गोरखपुर-२०३००३)

“आत्मा अमर है, वेद नखर यह अटल सिद्धांत है” यह वाक्य आत्मा की प्रमत्ता और शरीर की नम्रता का प्रतिपादन करता है। इस वाक्य के सिद्धांत को समझने के लिए हमें पहले अविद्या शब्द को समझना होगा। सत्यार्थप्रकाश में स्वामी जी ने अविद्या की परिभाषा करते हुए लिखा है—“अनित्याधुनिकानाम् नित्यबुधिसुखात्म-स्वातिरविद्या” अर्थात् अनित्य में नित्य की, अधुनिक (अधुनिकता) में बुधि (अधुनिकता) की, बुद्ध में सुख की और अनात्मा में आत्मा की कल्पना करना और उसके अनुसार व्यवहार करना ही अविद्या है। यदि मनुष्य शरीर और आत्मा के वास्तविक स्वरूप को समझ ले तो वह बुद्धि या मोक्ष का अविधारी हो सकता है। मोक्ष का मतलब है बन्धन से मुक्तपारा। बन्धन क्या है और हम बन्धन में क्यों पड़ते हैं? क्या हम बन्धन में पड़ने से ही कर्त्तव्यविमुख होते हैं? कर्त्तव्य-विमुख होने का मतलब क्या है? कर्त्तव्यविमुख होने का भूल कारण बन्धन है और बन्धन में पड़ने का मतलब है कि हम अधार्मिक कार्य करने लगते हैं। अधार्मिक कार्य क्या है?

दूसरे के धन का अपहरण करने का मतलब है अनुचित साधन या हिंसा द्वारा धन का हरण। इस अविद्या के वश में होकर हम भ्रष्ट बोलते हैं। दूसरों की हिंसा करते हैं। इन सब दुरादियों का कारण है अनात्मा में आत्मा की बुद्धि या संशुचित और चिह्नकी देहबुद्धि। मेरा विचार है कि मैं और तुमसे सम्बन्ध रखनेवाले सोमधाम वस इतनी ही मेरी ध्याति है, वे सब मेरे लिए नर अथवा नरक हैं। ऐसे भ्रम की दीवार यह देहबुद्धि बनो कर देती है और तारोक यह है कि जिन्हें ‘मैंने’ ‘मैं’ अथवा ‘मेरे’ हैं उनके भी केवल शरीर पर हजारी इष्टि रहती है। शरीर पर इष्टि रखने का तात्पर्य है कि हम इस अनात्मा शरीर को ही आत्मा समझ लेते हैं। हृष भव इस शरीर को आत्मा मान लेते हैं जो इस शरीर की अनित्यता, अधुनिकता, दुःख और अधुनिकता में क्रमशः नित्यता, शुद्धता, सुख और आत्मा की कल्पना कर अज्ञान में फँस जाते हैं। यह अज्ञान हमें हमारे मार्ग से विमुख कर देता है। अरे मनुष्य! याद रख यह देह आत्मा नहीं। यह आत्मा के विकास का साधन है। यह अमर नहीं। यह तो बबलता की रहता है। बचपन, जवानों और बुढ़ापा इस चक्र को समी देख रहे हैं। यह देह अधुनिकता का घर है। रात-दिन मधुमूत्र की मालियाँ इधम बहती हैं और मग सदा इसे पीने में लगे रहते हैं, पर वह मधुमी फहाँ हूँर होती है। मोना है तो शरीर की स्क्लर रस अमर पर धार्या की भी स्क्लरता की बात सोच। आत्मा की पवित्रता ही मानवता का धर्म उद्घाटित करती है।

शरीर पांच भूतों से बना एक अनित्य पदार्थ है। इसे कहीं न-हानर नाया माना गया है और कठोपनिषद् में इसे ग्यारह द्वार भासा बताया गया है। वहाँ लिखा है—

पुरमेकादशाद्द्वारमवरह्वावरकचेतसः। अनुष्टाप न शोचति विमुक्तश्च विमुक्ततः। एतद्वैतम्।

अर्थात् सरल चित्तवाले अनुत्पन्न जीवात्मा के ग्यारह द्वार वाले इस नगर शरीर को अनुत्पन्न करने के मनुष्य नहीं सोचता है और मुक्त हुमा छूट जाता है। यही वह जीव है। शायद आप मानना चाहेंगे कि ग्यारह दरवाजे कौन-कौन से हैं? १ शिर, २ आंश, ३ कान, ४ नासिका-च्छिद्र, ५ मुख, ६ नासि, ७ मूत्र और ८ मूत्रस्थान यह ग्यारह दरवाजे हैं। जिस समय मनुष्य इस शरीर का सदुपयोग करता है, वह कल्पे मन को खल, बुद्धि को पवित्र और चित्त को धाम्प्येव वह शरीर मनुष्य के लिए सुख का साधन हो जाता है, और इसके लिए अत्यन्तक है कि हम अपनी इष्टियों पर अधिकार करें, अपनी कीर्ति, धन, धन्याय बनायें। जितेन्द्रियता के लिए आवश्यक है कि हम अत्यन्तक के आत्मिक रूप को समझें। यह सोचें कि देह अनित्य है। पर हम अपने को निर्मम और अमर मानते हैं। परिणाम यह होता है कि इसे अमर समझकर उचित या अनुचित का ध्यान बिना किए संसार के सम्पूर्ण सुखों और सुख-साधनों को अपने वश में करने लगते हैं। तभी हम मरीचों को उतारते हैं, एक दूसरे से ईर्ष्या करते हैं और इस अमर शरीर के लिए सुख की और ऐसे सुख की खोज में निकल पड़ते हैं जो कभी मरत न ही, और उस समय वास्तविक सुख को छोड़कर दुःख रूप को विषय हो उठतीं में सुख की कल्पना कर उन्हें प्राप्त करने के प्रयत्न में नरूट हो जाते हैं। स्मरण रखिए विषयों में सुख नहीं। “आपातरम्याः विषयाः” विषय जब भोगे जाते हैं, तब तक उनमें सुख है बाव में तो “अविज्ञ परितापिनः” दुःखदायक होते हैं। अतः जब हम शरीर को धर्मित्य समझें तभी हम शरीर को साधन समझें और उस से अत्यन्त नित्य आत्मा के सुख के लिए निकल पड़ें और उस समय स्वभावतः हमें आत्मा की सुल देनेवाले, बानन्द देनेवाले ब्रह्म के समीप पहुँचने का प्रयत्न करना होगा। बानन्दस्वरूप ब्रह्म को समीपता प्राप्त करने होगी। मनु की सच्ची उपासना क्या है? ब्रह्म के प्रभु के गुणों को अपने में धारण करना। तभी हमें सच्चे सुख और आत्मिक आनन्द की प्राप्ति होगी।

जिस जीव के सुख को प्राप्ति करनी है वह सोचा है? कठोपनिषद् में इसके रूप का वर्णन करते हुए लिखा है—हृषः बुधियद्भुसुत्तरिख-सद् होता वैदित्यं अतिथिर्लौकसद् नृषद्वरससतसद्व्योमसद् अन्वा मोना श्लतवा अहिजा श्चूर्तं बुद्धेः।

ऊर्ध्वप्राग्भ्रमुर्ध्मत्वात्नं प्ररयगंस्यति। मध्ये वामनमासीन विरयेदेहा उपासते।

अथ विषं समानस्य शरीरस्यस्य देखिनः। देहादिमुष्यमानस्य किमन परिशिष्यते। एतद्वैतम्।।। (शेष पृष्ठ ७ पर)



एक अध्ययन—

## कुरान, भारतीय संविधान और अन्य धर्मावलम्बी

—श्री श्यामी बेहमुनि परित्राजक, प्रमथ-वैदिक संस्थान, नजीबाबाद (३०४०)

६ फरवरी को उत्तरप्रदेश के सहारनपुर नगर में बाबा-१४४ को सोझकर मुसलमानों ने नगर को लक्ष्मी पर प्रवेश किया और जिला-धिकारी श्री हरिकिशन पालीवान को ज्ञापन दिया। प्रवेशन में डा० आनन्द सुभन के विरुद्ध नारे लगाये जा रहे थे। डाक्टर की पुस्तक "मैंने इस्लाम क्यों छोड़ा" पर प्रतिवन्ध लगाने की मांग को लेकर यह प्रवेशन किया गया और ज्ञापन दिया गया। ग्यारह वर्ष पूष डाक्टर आनन्द सुभन ने वैदिक धर्म की दीक्षा ली थी। तभी उन्होंने अपने इस्लाम छोड़ने के कारणों पर प्रकाश डाला था।

जब कोई व्यक्ति किसी विचारधारा को छोड़कर किसी अन्य विचारधारा को ग्रहण करता है तो उसके सामने अपनी पूर्व विचारधारा को छोड़ने के जो कारण उपस्थित हो रहे हों, उन कारणों को उसका व्यक्त करना स्वाभाविक ही है। अनुभव कर्षोंक सामाजिक प्राप्ति है। अतएव समाज के समक्ष अपनी परिस्थिति को रख देना अनूचित नहीं है। ऐसा करके वह किसी के साथ प्रमाथ्य नहीं करता और न कोई नैतिक अवधा काठुने प्रपराय हो करता है। किसी धर्म को शक्ति में यह ठीक और उचित हो सकती है। है, तो ही, वह तो उन्हें बेमुकी तथा अनूचित समझता है और यह ईमानदारी है कि जैसा समझे वैसा ही व्यक्त करदे। यही डा० आनन्द सुभन जी ने किया है। उन लोगों की बात इससे पूर्वक है, जो लोग, बय तथा वातंकवय अपना मत परिवर्तित कर लेते हैं।

डा० सुभन किसी लोभ, बय प्रथवा आतंक के यभीतु होकर वैदिक धर्म में दीक्षित नहीं हुए हैं। वह तो अपने अध्ययन के परिणाम-स्वरूप सिद्धांतों से प्रभावित होकर इस्लाम त्यागकर वैदिक धर्म बने हैं।

उनको उक्त पुस्तक पर प्रतिवन्ध की मांग करना संविधान प्रवत् मूल अधिकार "विचारों की प्रथिव्यकिक" का सरासर हनन है। उस प्रवत् से किसी के अधिकारों का हनन नहीं होता और न उसका उद्भव किसी का अपमान करना है।

प्रतिवन्ध तो कुरान पर लगाया जाना चाहिए, क्योंकि वह न केवल भारतीय संविधान द्वारा प्रवत् मूल अधिकारों का ही हनन करता है अपितु भारतीय संविधान ने जो मानव के सर्वप्रथम मूल अधिकार नागरिक के जीवन की सुरक्षा का दाहिस्व अपने ऊपर लिया है, उसका भी हनन करता है। यह भारतीय संविधान और मानवता का भीर प्रथमान है। अतएव भारत सरकार से कुरान पर प्रतिवन्ध लगाने की मांग करना न्याय और नैतिक शक्ति से उर्बधा उचित और सर्वथाविक है।

यहां हम अपनी ओर से कोई टिप्पणी किये बिना कुरान को कुछ ही वायतों के द्विष्पी अनुवाद प्रस्तुत कर रहे हैं, जिनमें मुस्लिमवेतनों के प्रति प्रथमा करते वधा उन्हें मार डालने के स्पष्ट निर्देश दिए हैं, यद्यपि ऐसे वाक्य कुरान में भरे पड़े हैं। धर्म में भारत के प्रवृद्ध नागरिकों से न्याय और नैतिकता के नाम पर यह कहना चाहते हैं कि यह भारत सरकार से भारतीय संविधान की गरिमा की रक्षाय मांग करे और भारत सरकार के धार्मिक विषयों के परामर्शदाता विधि विधेयकों से यह मांग करते हैं कि वह भारत सरकार को संविधान की अस्मिता और गरिमा की रक्षाय प्रेरित करे।

कुरान की धायतों का अनुवाद—

- (१) और यहाँ तक उनसे लकी फसाद वाकी न रहे, और एक अल्लाह का दीन हो बाये। (बा०-१६३, सू०-२, म०-१)
- (२) मुसलमानों को उचित है कि काफिरों को मित्र न बनाये सिवाय मुसलमानों के और जो वैसा करेगा तो उससे और प्रव्हाह ले कुछ (सरकार) नहीं। (बा०-२५, सू०-३, म०-१)

(३) ऐ ईमानवालों! अपने लोगों को छोड़कर (किसी गैर को) अपना भेदो मत बनाओ कि यह लोग तुम्हारे साथ बुराई करने में कुछ उठा नहीं रखेंगे। (बा०-११८, सू०-३, म०-१)

(४) और जिस वक्त तुम अल्लाह के हुक्म से काफिरों को कत्ल कर रहे थे (उस वक्त) अल्लाह ने तुमको अपना (फतह) का बाधा सच्चा कर दियाया। (बा०-१५२, सू०-३, म०-१)

(५) ऐ ईमानवालों! समीप करो, परस्पर भाये रहो और लड़ाई में लगे रहो। (बा०-२००, सू०-३, म०-१)

(६) उनको पकडो और जहां पाओ कत्ल करो। मुसलमानों को मुसलमान का भारना योग्य नहीं और यही लोग हैं जिन पर हमने तुम्हें खुला अधिकार दे रखा है। जो कोई अनवाने मार डाले, बस एक गर्दन मुसलमान का छोडना है और खून बहा उन लोगों को और सीपी हूँ, जो उस कौम से होवे और तुम्हारे लिए दान कर देवे, जो हुमन की कौम से। (बा०-६१, ६२, ६३, सू०-४, म०-१)

(७) ऐ ईमानवालों! मुसलमानों को छोड काफिरों को मित्र मत बनाओ। क्या तुम अल्लाह के प्रति खुला प्रपराय अपने ऊपर लेना चाहते हो। (बा०-१४४, सू०-४, म०-१)

(८) प्रथन करते हैं तुमको लूटो से, बह लूटे वास्ते अल्लाह के और रसूल के और डरो प्रव्हाह से। (बा०-१, सू०-५, म०-१)

(९) और काटे बड काफिरों को। मैं तुमको सहाय दूंगा साथ सहस फरिश्तों के पीछे-पीछे आनेवाले। अवश्य मैं काफिरों के शिर्षों में बस डालूंगा। बस मारो ऊपर गर्दनों के और काटो पोरों-पोरी। (बा०-५, ६, १२, सू०-५, म०-१)

(१०) अल्लाह और उसके पंगम्बर के समीप इन मुखरिक्तों अहद क्यों कर हो सकती है? तुम कुछ के प्रव्हाहों से युद्ध करो, क्योंकि उनकी कर्मों का कोई विपदाय नहीं है। ये तलवारों के बीरों से ही बाज बायेगे। (बा०-६, सू०-६, म०-१)

(११) ऐ पंगम्बर! ईमानवालों को जिहाद का शौक दिलाओ, अगर तुममें से जमे-जमे रहनेवाले बीस व्यक्ति भी होंगे तो वे ही पर भारी बैठेंगे और अगर तुममें से सौ होंगे तो सहस काफिरों पर भारी बैठेंगे, क्योंकि यह ऐसे लोग हैं जो समझ नहीं रखते। प्रव अल्लाह ने तुम पर बोझ हल्का कर दिया और उसने देखा कि तुममें कमजोरी है तो अगर तुममें से सहस होंगे तो अल्लाह के हुक्म से वह तो सहस और भारी बैठेंगे और अल्लाह उन लोगों का साथ देता है जो जमे रहते हैं। जब तक अच्छी तरह खंरीजी न करले पंगम्बर को मुनासिब नहीं कि उसके पास खंरीयों का जमाव हो, तुम तो संसार के माल-असबाब चाहते बाओ और अल्लाह (तुम्हारे हाथों से) का हाथ बडवाकर तुम्हारे लिए (प्राखरित) की चीजें देना चाहता है। (बा०-६५, ६६, ६७, सू०-६, म०-२)

(१२) फिर जब अदम के महीने (जीकाद, जिहिज, मुहरेज, रबज) बीत जाये तो उन मुखरिक्तों को जहां पाओ, कत्ल करो और उनको गिरफ्तार करो, उनको खेरलो और हर बात की बगह उनकी ताक में बैठो। फिर अगर वह खोग तोबा कर और नमाज कायम करे और जकात दे, तो उनका रास्ता छोड दो। (बा०-५, सू०-६, म०-२)

(१३) और लडो उनसे यहां तक कि न रहे फसाद यानि शिर्ष बाकी और सब अल्लाह का दीन हो जाय, बस प्रथम यह बाज बाजाए तो जो कुछ यह लोग करेगे अल्लाह देखनेवाला है और जान रखे (लेख पृष्ठ ४ पर)

## आम मात्र स्वादिष्ट फल ही नहीं

### औषधि भी है

हमारे देश में आम को सुदूर दक्षिण में कर्णाकुमारी से लेकर उत्तर में हिमालय की तराई तथा पश्चिम में पंजाब से लेकर पूरब में असम तक सफलतापूर्वक इसे लगाया जाता है। पल्लव, पुष्प मंजरियों कलश फल और क्रांति की उपयोगिता के कारण किसी धर्म्य वृक्ष ने भारतीय मानस को इतना प्रभावित नहीं किया है जितना आम ने किया है। इसीलिए इसे कलों के राजा को उपाधि से विभूषित किया गया है।

प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद के ग्रन्थों में आम के विषय और उपयोगिता पर बहुत विस्तृत वर्णन मिलता है। आम की छाल के गुणों के वर्णन में इसे लघु कषय रस कषाय, शीतवायु और विषाक कटु बताया गया है। जबकि पका फल मधुर शुद्ध सिन्धु, और कच्चा फल अम्ल होता है। पका फल वात पित्त शामक तथा कच्चा फल शिथिल कारक होता है।

आम के कच्चे फल में जल २१ प्रतिशत, जलीय सत्व ६१.५ प्रतिशत, सेल्यूलोज ५ प्रतिशत अविलेय महम १५ प्रतिशत, विलेय भस्म ०.६ प्रतिशत होता है। इसमें पोटैश, आर्सेनिक अम्ल तथा साइट्रिक अम्ल भी होता है। पक्के आम में भोज्य रसक ड्रव्य, पर्युहरित ड्रव्य कार्बन डाई सल्फाईट, बेंजोज, गलिक एसिड, ससाइट्रिक एसिड तथा गोंड गोंड होता है। इसमें विटामिन ए और सी प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। इसलिए आम का प्रयोग विभिन्न व्याधियों से लुटकारा दिवाने में सहायक होता है।

भोजन में अग्रजन भूख का कम लगना है अरुचि होने पर कच्चे फल का प्रयोग करना चाहिए। हृदय रोग, रक्ताल्पता (एनीमिया), रक्तपित्त में पका फल प्रयोग करते हैं। पका फल सुक्रोडीवलय को दूर करता है। शारीरिक दुर्बलता वय विकार तथा कमजोरी में आम के फल का प्रयोग बहुत लाभप्रद सिद्ध होता है। भोज्य आम का रस ५ तीखा, शीत २ मासा पीसकर सुबह के समय पीने से अरुचि और भूख न लगने की समस्या हल होकर शरीर को शक्ति मिलती है।

बू लगने पर कच्चे फल को धाग में पकाकर पानक बनाकर पिनाते हैं। उसके लिए कच्चे धाम शाल में भूनकर उसका गुट्टा निचोड़ धाम पानो में चीनी मिलाकर दिन में दो बार पीने से बू लगी हो तो प्रच्छा लाभ करता है। पका फल बलवर्धक होता है। विटामिन ए होने के कारण यह विभिन्न रोगों के सङ्कामय के खिलाफ शरीर में शक्ति उत्पन्न करता हुआ बाजों के लिए सामर्थ्यक होता है। त्वचा एवं धातुओं की वृद्धि के लिए और अस्थियों के लिए विटामिन सी होने के कारण आम अत्याधिक उपयोगी होता है।

फल के प्रतिरिक्त आम के पल्लव पुष्प, छाल और बीज (मञ्जा) का प्रयोग चिकित्सा के लिए किया जाता है। छाल में टैनिन १६-२० प्रतिशत होता है।

आम के पत्ते को मधुमेह (शुगर) पर बहुत प्रभावी बताया गया है। आम के पत्ते जो पेड़ से भड़ गए हों उन्हें शारीरिक पीसकर सुबह शाम १५ दिन तक २ मासा लाने से बहुत लाभ होता देखा गया है। परदेहे तो आवश्यक है। निकला जाता है। बीज मञ्जा में सैलिक, टैनिन, एसिड, बसा, अर्करा, गोंड, अम्ल तथा प्रचुर स्टार्च ७२.८ प्रतिशत होता है। अत्यधिक रक्तस्राव, ब्रम में छासे पड़ने पर पुष्प, पल्लव तथा बीज मञ्जा का सुर्ण लगाकर लाभ मिलता है। प्रमेह (डायबिटीज) तथा मधुमेह (ग्लोसिया) में बीज मञ्जा का प्रयोग करना हितकारी होता है। पत्ते का रस वयन रोकने के लिए प्रयोग किया जाए तो शोथ लाभ देता है। पुष्प त्वक तथा बीज मञ्जा का प्रयोग अस्तिमार और प्रवाहिना में लाभकारी होता है। रक्तप्रद रक्तेप्रदर (ल्यूकोरिया) में भी बीज (मञ्जा) का प्रयोग बहुत प्रभावी बताया गया है।

—अचना भद्रा

## हिन्दुओं की कट्टरता

(सि०-पं० गंगाप्रसाद बिहारी एम. ए. एम. फिल जबलपुर, विदो) थाक, चिथिनन, हूख, शोक भी भारत में आए, ब्राह्मण किए किए कुछ अद्वेष भी जीत लिए। बहुत से भारत में रहे गए, यहीं पर बस गए, आपस में रस-मिल गए, साथी बिबाह हुए। सब हिन्दुओं में मिल गए, रच पच गए, धर्म कही कोई नहीं दिल्ता, दूढ़ने पर भी नहीं मिलता। जब पारसी मुसलमान ईसाई आए, तब हिन्दुओं में दुर्बुद्धि जागी, इनसे दूर रहने की डानो। हिन्दू से तो मुस्लिम ईसाई होता था, पर मुस्लिम ईसाई हिन्दू नहीं होता था। बोधे पर धूल डालने से गधा बन जाता था, पर गंगा नहाने से भी गधा न बोधा बन पाता था। इसी में अपना बख्खन समझते थे, हिन्दू अपने ताल नित्य प्रति खोते थे। सुदों अशुतों का भी निरादर किया, विधवाओं को तिरस्कृत ब अपमानित किया। स्वार्थ के जागे न अनाथों को परवाह हुई, भी भक्तों को भट्टो और गी पाठकों की बाह दूई। प्रभु की अनन्य दया से दयानन्द भारत में आया, जिसने इस उल्टी गंगा को फिर से सोधा बहाया। विच्छेद हुए लोगों की फिर से अपने में मिलाया, बुद्धि का नाम दे अहिन्दू को हिन्दू बनाया। बुद्धि चक्र यदि तेजी से चल जाता, तो क्या भारत में कभी भी पाकिस्तान बन पाता। अब भी हिन्दुओं सम्मल जाओ, बुद्धि को ध्यापक रूप से अपनाओ। केवल भारत को ही नहीं, समस्त विश्व को तुम अपने बनाओ ॥

(पृष्ठ ३ का शेष)

कि जो चीज बूट (गनीमत) में लानो, उसका पांचवां भाग प्रत्याह के लिए। (शा०-३६, ४१, सू०-८, मं०-२)

(१४) ऐ ईमानवालो! अगर तुम्हारे वाप भाई ईमान (इस्लाम) के मुकाबले में कुफ को प्यारा समझे तो उनको अपना समझकर पकड़ो अर्थात् अपना साथी न बनाओ और जो तुममें ऐसी के साथ मिश्रता रखते तो यही भी साथी जानिये होंगे। (शा०-२३, सू०-६, मं०-२)

(१५) ऐसे किताबवाले जो न अल्लाह पर ईमान लाते हैं और न उसके पंगम्बर की हुराय को हुई चीजों को हुराय समझते हैं और न सच्चे दोन को मानते हैं, उनसे लड़ो और यहाँ तक कि अपने हाथों से जियाय (धार्मिक कर) दे और जखील होने। (शा०-२६, सू०-६, मं०-२)

(१६) ऐ ईमानवालो! तुमको क्या हो गया है कि जब तुमसे कहा जाता है कि अल्लाह की राह में (जियाय के लिए) निकलो तो तुम जमीन पर डेर हूए जाते हो, क्या आश्चित को छोड़कर दुनिया की जिम्मेदारी पर रीके हो तो आश्चित के मुकाबले में दुनिया के साथ-सामान बिखलू नानीज हैं। अगर तुम न निष्कामे तो (अल्लाह) तुम्हें बड़ी दुःसहायी मार देगा और तुम्हारे सिवाय दूसरे लोगों को लाकर मोजूब करेगा और तुम उसका कुछ नहीं निगाड सकोगे और अल्लाह हर चीज पर ताकतवर है। (शा०-३८, ३९, सू०-६, मं०-२)

(१७) निष्चय प्रत्याह ने बस भोग को ही मुसलमानों से जाने उनकी और साथ उनके बन्दे कि बास्ते उनके बहिहै। लड़ते हैं, बीच मांग अल्लाह के, बस मारते हैं और मर जाते हैं। (शा०-१११, सू०-६, मं०-२)

(१८) ऐ लोगो! जो ईमान आये हो, अपने आस-पास के कारिदों से सखे जाओ और चाहिये कि वह तुमसे सखी महसूस करे। (शा०-१-२३, सू०-६, मं०-२)

## बेदप्रचार मण्डल जिला जीन्द का जून मास १९६१ का प्रचार कार्य

श्रेक—श्री० बीमकुमार आर्य (सह-संयोजक-बेदप्रचार मण्डल, जीन्द)  
गत मास में २ जून रविवार के एक दिन मण्डल की मासिक बैठक कार्यसमाज जीन्द शहर में हुई जो जिसमें जून मास के कार्यक्रम का निश्चय किया गया था और उसके अनुसार निम्नलिखित स्थानों पर प्रचार कार्य किया :-

आर्य बीर दल नरवाना की ओर से आर्य वं० मा० विद्यालय नरवाना में आर्य बीर दल का विविध २ जून से ६ जून तक रत्ना श्याम और मण्डल की भजन मण्डली ने सिविल के दौरान वहां प्रचार कार्य किया जिससे सिविलवासी आर्य बीरों पर अच्छा प्रभाव पड़ा। तत्पश्चात् जीन्द के धास-नास देहात में मण्डल के सज्जनोपदेशक श्री चन्द्रभान जो धार्य अपनी मण्डली के साथ प्रचार्य घूमते रहे तथा इन गावों में प्रचार किया :-—झमरदेही, बंकेदेही, रूपगड रामचन्द्रवाला, नरसाना, भिगाना, खोखी, सीसर, निर्जन, खरक, खेडा, मोरखी।

रामचन्द्रवाला शीर नरसाना गांव में यज्ञ के अवसर पर धनेक युवकों ने यज्ञोपवीत धारण किए तथा दुष्प्रवृत्त त्यागने का सक्तप किया। गांव भिगाना में नन्दरवार साहू की कोठी पर यज्ञ का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर दस नौजवानों ने यज्ञोपवीत धारण किए तथा तीन व्यक्तिओं ने मछपान छोड देने की शपथ ली और मछपान सदा के लिए छोड दिया तथा एक राधास्वामी सज्जन ने काफ़ी देर की बर्षा शीर यज्ञा-समाधान के पश्चात् राधास्वामी मत छोडकर वैदिक धर्म में अपनी पूरी आस्था प्रकट की तथा आर्यसमाज के प्रचार में सक्रिय सहयोग देने का व्रत लिया।

इस प्रकार बेदप्रचार मण्डल जिन्दा जीन्द यथासामय प्रचार कार्य में जुटा हुआ है। इसलिये की जनता शीर मण्डल के प्रत्येक सदस्य का पूरा सहयोग हमें मिल रहा है तथा पृथक् स्वामी रस्तदेव जो सस्वती की नेतृत्व में मण्डल सफलतापूर्वक कार्यक्षेत्र में लगा हुआ है।

जुलाई मास के लिए शीर १० गांव प्रचार हेतु जुन लिए गए हैं शीर सज्जनोपदेशक महोदय अपनी मण्डली लेकर प्रचार क्षेत्र में चले गये हैं।

### आर्य सीनियर सैकण्ड्री स्कूल सिरसा का उत्तम परीक्षा परिणाम

वर्ष १९६०-६१ का हमारे स्कूल का परीक्षा परिणाम अत्यन्त ही उत्साहवर्धक एवं प्रेरणादायी रहा।

१०+२ कक्षा	६५%
X	६०%
VIII	७०%
दसवीं कक्षा में निम्न छात्रों ने ७०% से अधिक अंक प्राप्त किए	
१. प्रभुदयाल पुत्र श्री बीरबलराम	७७%
२. संवीपसिंह पुत्र श्री बलौरासिंह	७१.५%
३. जगदीशकुमार पुत्र श्री कृष्णकुमार	७१%

बेलों में सफलताएँ—

- गत वर्ष १९६०-६१ में हमारा स्कूल हाकी, बाथीवाल व एथलेटिक्स में स्कूलों के तुलनात्मक में जिले भर में प्रथम रहा।
- गत वर्ष १९६०-६१ में स्कूल ने केन्द्रीय सरकार द्वारा बोधित १०,००० रु० पुरस्कार हाकी, बाथीवाल व एथलेटिक्स में जिले भर में प्रथम सहकर प्राप्त किया। सगातार पिछले दो वर्षों से स्कूल बालीवाल में १०,००० रु० का पुरस्कार प्राप्त करता आ रहा है।

विद्यालय प्रबन्ध समिति सिरसा के प्रयास से ५ साल रुपये की सहायत से स्कूल भवन के ऊपर पहली मंजिल का निर्माण करवाया गया है। इसका प्रयोग १०+२ के लिए किया जाएगा।

स्कूल में विद्यार्थियों की संख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है। सिरसा जिले में इस संस्था का विशेष स्थान बन गया है।

प्रिंसिपल  
आर्य सीनियर सैकण्ड्री स्कूल, सिरसा

## रेल बजट एक नजर में

—माल भाड़े में १० फीसदी बढ़ोतरी का प्रस्ताव। लेकिन कुछ जरूरी वस्तुओं जैसे लाने का नमक, खाद्य तेल, खाद्यान्न, दालें, चीनी, पुष्ट, मिट्टी का तेल, जीवज और फल सब्जियों के माल भाड़े में कोई बढ़ोतरी नहीं।

—पारसल और सामान की दरों में १० फीसदी बढ़ोतरी।

—६०० किलोमीटर तक की दूरी के लिए ऊंचे दर्जे के यात्री भाड़े में २० फीसदी और ज्यादा दूरी के लिए १५ फीसदी बढ़ोतरी।

—राजधानी एक्सप्रेस, नई दिल्ली-बम्बई एक्सप्रेस और शताब्दी एक्सप्रेस का भी भाड़ा बढ़ा।

—साधारण ट्रेनों के दूसरे दर्जे के किराए में कम से कम एक रुपये की बढ़ोतरी। ४०० किलोमीटर तक की दूरी के लिए पांच रुपये की बढ़ोतरी।

—मेल/एक्सप्रेस के यात्री भाड़े में कम से कम एक रुपये की बढ़ोतरी और १३०० किलोमीटर से ज्यादा की दूरी के लिए अधिकतम २० रुपये की बढ़ोतरी।

—दूसरे दर्जे के स्कोपर, प्रभार, सुपरफास्ट प्रभार, आरक्षण शुल्क और प्लेटफार्म टिकट की कीमत में कोई बढ़ोतरी नहीं।

—दूसरे दर्जे के मासिक सौजन टिकट के किराए में चार से १६ रुपये और पहले दर्जे के किराए में १६ से ६४ रुपये की बढ़ोतरी।

—यात्रियों की सेवा में सुधार।

—यात्री सेवाओं की रूपरेखा और पांच से सात वर्ष के लिए निवेश योजना तैयार करने के मकसद से एक कार्य दल बनाया जाएगा।

—छहठी रेल परिवहन में सुधार और उनका विस्तार किया जाएगा।

—बाराणसी, बड़ोदरा, जोधपुर धागरा, सिधचिरायस्थी, कोयंबटूर, सूरत और नागपुर रेलवे स्टेशनों पर और आरक्षण के काम का कम्प्यूटीकरण।

—रेल साइनों के बदलने का बकाया काम छाठवीं योजना के अन्त तक पूरा करने का प्रयास किया जाएगा।

—१९६१-६२ के दौरान ३३२५ किलोमीटर लम्बी रेल लाइनों को बदलने का लक्ष्य रखा गया है। इसके लिए एक हजार करोड़ रुपये मुहैया कराए जाएंगे।

—१९६१-६२ में देश के १२ हिस्सों में ३४५ किलोमीटर लम्बी रेल परिवहन योजना शुरु की जाएगी।

—आठवीं योजना के दौरान तीन हजार किलोमीटर लम्बी रेल लाइनों का विद्युतीकरण किया जाएगा।

—इस वर्ष के दौरान ६७५ किलोमीटर लम्बे मार्ग का विद्युतीकरण पूरा करने का लक्ष्य है।

### गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में प्रवेश

सर्वसाधारण आर्यजनता की यह जानकर प्रसन्नता होगी कि गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ पर्यटकेएल आर्य प्रतिनिधि समा हृदयाणा के अधिकार में है। यहाँ पर हृदयाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड की बनी कक्षा तक तथा श्रीमद्भागवत धर्म विद्यापीठ गुरुकुल शत्रुघ्न की पाठशाला (श्री महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बद्ध है) के अनुसार सधमा (१०+२) कीर शास्त्री (बी.ए.) कक्षा तक के अध्यापन का प्रबन्ध है। ३१ जुलाई तक प्रवेश चालू रहेगा। अतः प्रवेशार्थी अवसर का लाभ उठावें। योग्य आचार्य एवं अध्यापकों का समुचित प्रबन्ध है। पूर्ण जानकारी के लिए गुरुकुल कार्यालय में पधारकर प्रथमा फोन नं० २०४३६८ से सम्पर्क करें।

धर्मनन्द

मुख्य अधिकारता

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ डा० नई दिल्ली-४४

जिला फरोदाबाद



## समा के ऋषि-संगर के लिए दानदाताओं की सूचि द्वारा श्री जयपालसिंह आर्य

### भजनोपदेशक

नं०	नाम आर्यसमाज	दान देनेवाले सदस्यों के नाम	चिं०	कि०
१.	बगानी चि० रोहतक	श्री महावीरसिंह मन्थी	१	
२.	बचाणी "	श्री प्रतापसिंह प्रधान	१	
३.	जहाजगढ "	श्री मा० चन्द्रमान	१	
४.	विगीबा भिवानी	श्री ईश्वरसिंह मगिराम जितिसिंह जोमप्रकाश	१	
५.	" "	श्री कल्मीरोहाल सरपंच	१	
६.	दूबलचन रोहतक	श्री हराराम व श्री मंवरलाल	१	
७.	नामपुर "	श्री बलचन्द्रसिंह प्रधान	१	
८.	बोहर "	श्री देवप्रत द्वारा	१	
९.	साठौत "	श्री बा० बलवीरसिंह द्वारा	१	
१०.	" "	श्री मा० रामप्रकाश	१	
११.	आसन "	श्री सुलदेव शास्त्री व रामरुप द्वारा	१	
१२.	" "	श्री सरूपलाल हरिचन्द्र राजपाल रामचन्द्र कवलसिंह	१	
१३.	पाकस्या "	श्री जियमसाह देवप्रत जी प्रधान	१	
१४.	नयाबास "	श्री प्रतापसिंह प्रचार मन्थी द्वारा	६	२५
१५.	गोच्छी "	श्री धर्मपाल शास्त्री	१	२५
१६.	कनहावड "	श्री दयाचन्द्र मिस्त्री राजसिंह व श्री भीमसिंह दंडेदार	१	५०
१७.	" "	श्री सज्जनसिंह प्रधान	१	
१८.	कटवाडा "	श्री शमशेरसिंह द्वारा	२	
१९.	भासन "	श्री जयपालसिंह आर्य समा भजनोपदेशक	१	
२०.	रडकी "	श्री जोमप्रकाश प्रधान आर्यसमाज	१	
२१.	रडकी "	श्री रामचन्द्र सुपुत्र श्री रतनसिंह उपमन्थी	१	
२२.	पाकस्या "	श्री धर्मशेर शास्त्री	१	
२३.	मकडोहीकला "	श्री बलचन्द्रसिंह प्रधान	१	
२४.	कनहावड "	श्री चन्द्रसिंह महाराज चन्द्रमान रघुवीर रामकुमार मगते	१	
२५.	" "	श्री रवेराम मजीराय व श्री रामसिंह	१	

कुल जोड बोरी ३४

### नकद दान

२६.	सांघो	२५०) ६०	श्री सुरेन्द्र सुपुत्र मगिराम
२७.	वेढी आसरा	२५०) ६०	श्री सुरेन्द्रसिंह सुपुत्र श्री प्रियवत दंडेदार
२८.	कनहावड	१००) ६०	श्री ईश्वरसिंह शास्त्री
२९.	"	२५) ६०	श्री चन्द्रराम
३०.	"	११) ६०	बलवीरसिंह मन्वरदार

कुल जोड रुपये ६३६)

## वेद प्रचार मण्डल जिला-ओगद-की ब्रह्मर्षी-मठस की बैठक में लिए गए महत्त्वपूर्ण निर्णय

रविवार ७ जुलाई १९६१ को वेद प्रचार मण्डल जिला ओगद की मासिक बैठक आयसमाज मन्दिर ओगद शहर में सुबह १०-३० बजे हुई जिसकी अध्यक्षता मण्डल के सचिव श्री स्वामी रत्नदेव जी महाराज ने की। बैठक में उपस्थित काफी उपस्थितियों की, १५ सदस्य उपस्थित थे। इसमें सर्वसम्मति से निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण निर्णय लिए गए :—

१. मण्डल पिछले लगभग एक वर्ष से कार्यरत है और जब तक का कार्य सम्पन्न नकर रहा है तथा अने और भी ज्यादा उस्ताह और सग्न से कार्य करने का संकल्प बोहराया गया।

२. सुधी ने महत्त्व दिया कि प्रथम वर्ष की समाप्ति पर मण्डल का प्रथम वार्षिक सम्मेलन सितम्बर मास के तीसरे सप्ताह में उचाना मन्थी में आयोजित किया जाए जिसकी तैयारी अनी से आरम्भ करती जाए और इस सम्बन्ध में व्यापक जन-सम्पर्क किया जाए जिसके लिए श्री जयकिसन जी आर्य, श्री सुबेसिंह जी आर्य तथा श्री मा० रायसिंह जी आर्य पर विशेष दायित्व सौंपा गया। वे पूज्य स्वामी रत्नदेव जी के मार्गदर्शन में कार्य करते और आभारक जन-सम्पर्क करते तथा मण्डल के किसी भी सदस्य की सेवा एतदवय लेते रहेंगे।

३. जुलाई मास के लिए सप्तीय उप-मण्डल में १६ गांव प्रचार हेतु चुने गए। गांवों की सूच्या में यथा आवश्यकता और परिस्थिति के अनुसार संशोधन भी किया जा सकता है।

आर्यसमाज ओगद शहर के प्रधान श्री जयकिसन जी आर्य, मन्थी श्री राजवीर जी आर्य (जो मण्डल के सदस्य भी हैं) ने बैठक बारते बड़ी अच्छी व्यवस्था करवाई और पूरा सहयोग दिया। अतः उनका तथा उनके मन्थम से आर्यसमाज ओगद शहर का कृत्यवाद किया गया। अगली मासिक बैठक ४ अगस्त १९६१ को सुबह १०-३० बजे आर्यसमाज उचाना मन्थी में रखे गई है। परमात् बैठक विवक्षित है।

ओ०—जोमकुमार धार्य

सह-संयोजक वेदप्रचार मण्डल, ओगद

## हरिद्वार में वेदप्रचार की धूम

हरिद्वार १५ जुलाई। विष्वक्वेद परिवार संघ के संस्थापक तथा महामन्थी श्री पं० ब्रह्मप्रकाश जी शास्त्री तथा कार्यवाहक अध्यक्ष श्री स्वामी वेदानन्द जी वैदिक के हरिद्वार सुनामन पर आर्यसमाज हरिद्वार ने एक जनसभा का आयोजन किया। सभा को सम्मोचित करते हुए श्री शास्त्री ने कहा कि वेदों की सिता के प्रसार और प्रचार के बिना यह सारा विषय शीघ्र हो अगमिनी की ज्वाला में जलकर भस्म हो जायेगा। श्री स्वामी जी ने कहा कि यदि हिन्दू मात्र वेदों को सिता पर चलने का तत धारण करते तो भविष्य में सारी विपदायें नष्ट हो सकती हैं। गरीबदासी सम्प्रदाय के महन्त श्री स्वामी स्वाम-सुन्दरदास जी ने विष्वक्वेद परिवार संघ को अपना पूरा सहयोग देने का वचन दिया। आर्यसमाज हरिद्वार के प्राचार्य श्री वैकुण्ठभार जी शास्त्री ने हरिद्वार में शीघ्र ही संघ की शाखा खोलने का वचन दिया। अन्त में आर्यसमाज के मन्थी महीदेव ने सम्बन्ध तथा सामन्त-पाठ के पश्चात् सुभा को विवक्षित किया। संघ के सदस्य बनने का पता—महामन्थी विष्वक्वेद परिवार संघ-११/१५५ पवित्रय आजाद नगर, दिल्ली-५२

हरिद्वारसिंह आर्य

मन्थी आर्यसमाज हरिद्वार

## अथललिता मासिक वेतन नहीं लेंगी

मद्रास, २१ जुलाई (वार्ता)। तमिलनाडु की मुख्यमन्थी सुधी अथललिता अपना मासिक वेतन नहीं लेंगी। कल रात जारी की गई एक सरकारी प्रेस विगलित के अनुसार सुधी अथललिता प्रति माह प्रपने वेतन में से प्रतीक के तौर पर मात्र एक रुपया ही लेंगी। उन्हीने कहा कि मुझे वेतन लेना उचित नहीं लगता क्योंकि जनता ने मुख्यमन्थी पद के लिए मुझे इसीलिए चुना है कि मैं उनकी सेवा कर सकूँ।

(पृष्ठ १ का शेष)

न ब्राह्मणानेन सर्वो जीवति क्वचन ।  
इतरेण तु जीवन्ति यस्मिन्नेतावुपाश्रितौ ॥४॥

जीव के विषय में यह भी ध्यान रखना चाहिए कि वह अपने कर्मों के अनुसार विभिन्न योनियों में जाता है। यह कहीं कुटी में रहने वाला, मनुष्य शरीरधारी, भेड़ शरीरधारी, कहीं शकाम में रहने वाला, कहीं जब जीव कहीं पृथ्वी पर उत्पन्न होनेवाले पेड़ इत्यादि के कर्मों को धारण करता है। यह हंस है। जिस प्रकार हंस गौरशरीर विवेक के द्वारा दोनों को पृथक् कर देता है वैसे ही जीव भी प्रकृति कर्मों बल से ब्रह्मरूपी दूध को बलक रूप में लेता है तब वह हंस ही नहीं परमार्थ बन जाता है। इसके बिना शरीर और इन्द्रियां बेकार हैं। शरीर में रहनेवाले प्राण, अपान, समान, उदान, ध्यान, नाग, क्रम, कृच्छ, देववत और वनस्पत्य वह सब जीव के ही माध्यम से रहते हैं।

इस प्रकार मनुष्य को चाहिए कि वह शरीर और आत्मा के भेद को समझे और शरीर को साधन तथा इसके द्वारा परमसाध्य ब्रह्म को प्राप्त करे। हे जीव !

हे कहां भविष्य तुम्हारी ?  
पिन हवारीं होयए हुमको,  
सुनो हे हंस सुन्दर !  
पंख खोलि स्वर्ग ही को,  
ओर यों उड़ते निरन्तर ।  
किन्तु तुममें और उनमें,  
कम हुवा कुछ भी न अन्तर ।  
दूर होता ही गया वह सुम,  
बड़े कर्मों-कर्मों निकटतर ।  
हे तुम्हारी बाख ग्यारी ।  
मुक्त हो अमरत्व से भी  
मुक्त हो अजरत्व से भी  
मुक्त हो पूर्णत्व से भी  
मुक्त हो देवत्व से भी ।  
सूत्र जो सब सूत्र का है,  
मुक्त हो उस तत्व से भी ।  
ओर यह होते हुए भी,  
तुम गए मनुजत्व से भी  
क्यों तुम्हें निज सूख ग्यारी ।  
सब गुणों से मुक्त भी,  
होते हुए गुणहीन निकले ।  
इष्ट और कुबेर भी होते,  
हूए तुम हीन निकले ।  
ज्ञानमय होते हुए भी  
अज्ञान में तल्लीन निकले ।  
शक्ति सब तुमने बिचारी ।  
बुद्धि से कह दो कि अब,  
तू सबका निरुपाय हो जा ।  
शक्ति से कह दो कि तू,  
अब तू सबका असहाय हो जा ।  
ध्यान से कह दो कि,  
अन्तर्म्यान हो मूलाय हो जा ।  
ओर अपने से कहो,  
तू ब्रह्म का परमाय हो जा ।  
कर समर्पित सिद्धि धारी,  
हे यही भविष्य तुम्हारी ।  
यही जीवार्त्ता का रूप है,  
इसे ही समझना है ।

## गांव में शराब ठेकों के खिलाफ महिलाओं ने प्रदर्शन किया

पूंढरी, (पराशर)। जिला कैम्पस के गांव डेडी रोड भी दलों महिलायें ब बच्चों ने जिला कैम्पस के उपायुक्त श्री महासिंह के कार्यालय के सामने प्रदर्शन किया और मांग की कि उक्त गांव में प्रत्येक मोहल्ले में जल रहे नाबायज शराब के ठेकों को तुरन्त हटाया जाए। इस गांव के सभी नागरिकों ने हरयाणा सरकार से शिकायत की है कि गांव की महिलायें सारां के समय घर से बाहर नहीं निकल सकती क्योंकि गांव के प्रत्येक घर में शराब की बोतलें उड़ाई जाती हैं। गांव की महिलाओं का आरोप है कि इनके युवा पुत्र घर से अबरदस्ती सामान ले जाकर बेचकर शराब पीते हैं। उपायुक्त कैम्पस ने उपमण्डल अधिकारी (ना) एम.के. मिश्रा को सारे मामले की जांच के आदेश दे दिए हैं। उपमण्डल अधिकारी श्री मिश्रा ने महिलाओं के विष्ट मण्डल को आश्वासन दिया कि गांव में जल रहे अनेक शराब के ठेके को तुरन्त उठा लिया जाएगा चाहे वह कितने भी प्रभावशाली व्यक्ति का कर्मों न हो। यह विवस जिला के बजनों पार्षदों की महिलाओं ने उपायुक्त को विस्तित रूप में शिकायतों भी की हैं कि उनके शराबी पतियों को मछो-हत दी जाए क्योंकि अक्सर गांव में लोग शराब पीकर अपनी पत्नी ब बच्चों को पीटते हैं। इन महिलाओं ने चेतावनी दी है कि यदि अति-शोष शराब के ठेके न हटाए गए तो महिलायें प्रदर्शन ब भूल इकट्ठा करेंगी। (दैनिक जन-सम्पर्क से साभार)

## ऐसे आज कपूत हुए

मनुकाज अश्लील है विद्या, मेरा देश दुःखयोगी ।  
मनुष्याद पडी है नाब धाव, किस तरह किनारे जायेगी ॥  
शक्ति बोकर् भक्ति करते, नहीं समझ में आया है ।  
वीर्य रूपी हीरे को, कामी बन भयं बहाया है ।  
सेष्ट सुगन्ध लगा मानव ने, कृत्रिम सुखनू पाई है ।  
चंहेरी पीसे पडे हुए, सामी नजर न पाई है ॥  
रामायण महाभारत गीता, वेद को पढना छोड़ दिया ।  
दानवता ही दानवता, मुख मानवता से मोड़ लिया ॥  
परशुराम, हनुमान, श्रीधम भी, दयानन्द से पूत हुए ।  
लेकिन आविर्त के अन्दर ऐसे आज कपूत हुए ।

—महेश धार्य, गांव ० पो० पम्हीडा कुंभ  
बल्लभगढ, जि० फरोदाबाद (हृष्याणा)

सजिलद

₹ 00

सेकंडा

सत्य के प्रचारार्थ

अजिलद

₹ 00

सेकंडा

मृत्यार्थ प्रकाश

घर पर पहुंचाएँ

सफेद कागज़ सुन्दर छपाई

उत्कृष्ट संस्करण वितरण करने वाली के

आमर

23x36 + 16 शुब 820 की दर

लिय प्रचारार्थ

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट

435, रानी बाबली, दिल्ली-6 दूरभाष: 238360/233112

## गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के समाचार

### १. शिक्षण कार्य आरम्भ

आय प्रतिनिधि समा हरवाणा द्वारा संचालित गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में शिक्षण कार्य आरम्भ हो गया है। ब्रह्मचारी गुरुकुल के नियमानुसार प्रातः ५ बजे से रात्रि १० बजे तक सुयोग्य तथा अनुभवी अध्यापकों के निदेशन तथा निरीक्षण में दिनचर्या का पालन कर रहे हैं। दिनांक १८ जुलाई को सभी ब्रह्मचारियों का मुष्कन संस्कार तथा १९ जुलाई को यज्ञोपवीत संस्कार वैदिक रीति के अनुसार सम्पन्न हुआ। पं० ओमप्रकाश जी सिद्धान्तिरोमणि, पं० श्रीमप्रकाश यजुर्वेदी अध्यापक एवं सभा के उपदेशक पं० चन्द्रपाल जी शास्त्री, पं० अर्जुनदेव आर्य तथा पं० कुचवन्तराय आर्य ने इस कार्यक्रम को सफल करने में योगदान दिया। ३१ जुलाई तक गुरुकुल में प्रवेश चालू है। इच्छुक माता-पिता अपने बच्चों का प्रवेश करवाकर लाभ उठावें।

### २. मुख्याध्यापक की भावश्यकता

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के लिए आर्यसमाज के सिद्धान्तों के ज्ञाता तथा मुख्याध्यापक के कार्य के अनुभवशील एक मुख्याध्यापक की भावश्यकता है। सेवानिष्ठ महानुभाव को प्राथमिकता दी जायेगी। इच्छुक महानुभाव निम्नलिखित पते पर शीघ्र आवेदन-पत्र भेजें।

—समर्पण, मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, फोन २०४३६८

### ३. गुरुकुल के चारों ओर वेदप्रचार की धूम

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में यहाँ शिक्षण कार्य के साथ-साथ ब्रह्मचारियों को उपदेशों तथा बचनों द्वारा वैदिक धर्म से परिचित करवाया जाता है, यहाँ गुरुकुल के चारों ओर के घरों में सभा के उपदेशक पं० चन्द्रपाल जी शास्त्री, पं० हरिप्रस्थ जी शास्त्री, पं० भजनलाल आर्य एवं भजनोपदेशक पं० शेक्सपिह जी, पं० मुशारीशाल वैशेष तथा स्वामी देवानन्द जी आदि की भजनसभयियों वेदप्रचार कर रही हैं। पस दिनों धाम धनगपुर, लक्ष्मपुर, समसपुर, दयाल नगर, डेरी लक्षपुर, सेलण्ड, बरखपुर, मोलइवास, मौजापुर, ताजपुर पहाड़ी, तिलपत, पल्हा, स्वामी अदानन्द बस्ती गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, ऋषिनगर धुजाननगर, तोताराम काशीनी, ऊना काशीनी, झाड़िया मार्केट, आर्य नगर सराय ख्याबा, बदसिया, जसना, शास्त्री काशीनी फरीदाबाद, वैष्णु श्रावण फरीदाबाद, सेंक्टर ७ फरीदाबाद, सेंक्टर ११ फरीदाबाद, मेन बाजार बल्लभगढ़, बसहापुर बृजघाट, तेहतपुर, मदनपुर, भासी, तुषलकाबाग, गुदनाग, गोविन्दपुरी दिल्ली, महाशय डेरा, बसपुर आदि।

### ४. गुरुकुल को आटा तथा पंखों का दान

गत सप्ताह गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ क्षेत्र के कुमार ट्रेडिंग कम्पनी ने एक पंखा तथा एक फिचलट आटा और इसी प्रकार थी अथोक जी मालिक मनोहर स्टोन क्रैबर ने दो पंखे दान दिए हैं। —केदारसिंह धार्य

# गुरुकुल

कांगड़ी फार्मसी की

आयुर्वेदिक औषधियाँ सेवन कर स्वास्थ्य लाभ करें

**गुरुकुल**

**स्वयंपात्र**

एरे परिवार के लिए शक्तिशालक  
एक स्थूलितकरक राखन।  
शक्ति, ऊर्जा व शारीरिक एवं  
केन्द्र की सुनिश्च में  
उपयोगी आयुर्वेदिक  
औषधीय टॉनिक



**गुरुकुल**

**चौरीचौरी**

हृत्कोश के सफल उपचार  
में निरालोक शक्तिशालक  
के लिए एक शक्तिशालक  
आयुर्वेदिक औषधि



**गुरुकुल**

**शोध**

गुणवत् व इन्फ्लुएन्जा, एडस  
जैविक में अती शक्तिशालक  
से बनी प्राणकारी  
आयुर्वेदिक औषधि



**गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी हरिद्वार (ऊ प्रग)**

## गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी

हरिद्वार

की औषधियाँ सेवन करें।

शाखा कार्यालय  
६३ गली राजा केदारनाथ,  
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

स्थानीय विक्रेताओं एवं सुपर बाजार  
से खरीदें

फोन नं० ३२६१८७१

शाखा कार्यालय: ६३, गली राजा केदारनाथ  
चावड़ी बाजार, दिल्ली-११०००६

‘अमर’—११/७/६६

धर्म प्रतिनिधि समा हरवाणा के लिए गुरुकुल और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा भाषार्थ प्रिटिंग/प्रेश के लिए सर्वेहितकारी शुभमालय रोहतक से  
द्वयवाचक सर्वेहितकारी कार्यालय पं० बगवैश्वरिह सिद्धान्ती लखन, दयानन्द मठ, रोहतक से प्रकाशित।



# ओ३म् कृषिवन्त विश्वमार्यम् सर्वेहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—सूर्यसिंह सभामन्त्री

सम्पादक—वेदव्रत शार्लो

महसम्पादक—प्रकाशवीर विद्यालका एम० ए०

वर्ष १५

अंक ४२

२८ मितम्बर, १९६१

वार्षिक मूल्य ३०)

(आजीवन मूल्य ३०१)

विदेश में = दोड

प्रति ३५ पैसे

## वेदार्थ-विचार

प्र० भद्रमेन ड.क० साधु आश्रम (होशियारपुर)

**कसा के कस से—**

निकम—वन सत्ताह तो सुना था, यह वेद सत्ताह क्या है? क्यों कि पर्यावरण या प्रकृष्य आदि को दृष्टि से बन की बात तो सर्व-विहित है।

प्राध्यापक—यहाँ मूल भावना किसी के महत्त्व की ओर ध्यान आकर्षण की है। अतः वेद के प्रकृष्य की उच्चारण करने के लिए यहाँ वेद के अन्तर्गत का व्युत्पत्ति बनाया जा रहा है।

नयन—यह वेद है क्या?

प्र०—वेद एक शब्द है और इस प्रकरण में ऋग्वेद प्राणि चार पुस्तकों का आश्रय है।

प्रिगेन्द्र—यहाँ शब्द से क्या आश्रय है?

प्र०—इसकी अनेकानेक अर्थगत ध्वनियों के वेद को वाच्य कहते हैं, अर्थात् रूप अपने भाव एक दूसरे के प्रति प्रकट करने के लिये जिस माध्यम का सहारा लेते हैं, उसको वाचा कहते हैं। वाचा श्री अथर्व ईर्षाई प्र., इ., उ., क. का आदि वृत्त होते हैं। वनों के वेद से शब्द, बुद्धि वाच्य हैं, जैसे कि अन्न, दिन, वेद, यज्ञ आदि। शब्द-नाम और क्रिया के वेद से मुख्य रूप से प्रकाश के होते हैं। शब्दों के वेद से वाच्य बनते हैं। वाच्य के रूप में ही हम अपनी बात कहते हैं।

प्र०—वेदों तो हाथ आदि के संकेत से भी अपने भाव दूसरों को समझाने का साधन हैं, पूरे उद्गारात् शब्दमात्र वाच्य तब ही सीमित रहती है। दिव्य के सूक्ष्म भाव, सुनिश्चित, स्पष्ट रूप से वाचा द्वारा ही व्यक्तियन्त होते हैं। अतः मानव समाज के व्यवहार में वाचा का एक अविभाज्य अंग है।

प्रिगेन्द्र—वेद शब्द का अर्थ क्या है?

प्र०—वेद शब्द का मुख्य अर्थ है ज्ञान, वेद ज्ञान, सत्ता, वाच्य, विचार अवधारणा विषय वाच्य से वेद शब्द बनता है। अतः ये चारों प्रत्यय अर्थ व्यक्त हो सकते हैं। हाँ, इस अर्थ में वेद शब्द का तात्पर्य ऋग्वेद, यजुर्वेद, साम और अथर्व नाम चार पुस्तकों (की रचनाओं) में समाप्त आन है। कोकि भारतीयता के अनुसार ईश्वरीय ज्ञान है।

वीरेश—कभी ऊपर संकेत किया गया है, कि ऋग्वेद प्राणि सामक पुस्तकों का ज्ञान वेद है। क्या वेद पुस्तक रूप में सामने आये? और ये पुस्तक किसने, कब, कैसे बनाई है?

प्र०—जिब तरह के आश्रय पुस्तक रूप में ऋग्वेद प्राणि मिलते हैं। इस रूप में वेद सामने नहीं आये। तब तो इस प्रकार की रचना के लिए लेखक, मिलने की सामग्री आदि की अपेक्षा होगी। जोकि सारी स्थिति भौतिक रूप में हीनी चाहिए।

अजय—तो फिर क्या शब्द बोले गये? हाँ शब्द सदा मुख आदि से उच्चारण जाता है। अतः वेदविहित शब्द का उच्चारण किसने किया?

प्र०—आर्यसमाज के विचारात के अनुसार वेद का ज्ञान ईश्वर ने दिया है।

सोमेश—क्या ईश्वर के हमारे जैसे ही मुख, तानु प्राणि उच्चारण क्षम है? जिनसे बोलकर वह वेद देता है।

प्र०—ईश्वर सर्वव्यापक है, अतः हमारे जैसा उसका सीमित, आकार, शक्तिमाना शरीर नहीं है। ईश्वर के सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापमान होने से वह बिना बोले ही ज्ञान दे सकता है।

सुमेश—क्या प्राण अपनी बात को और स्पष्ट करते? क्योंकि यह तब मुख प्रवेकी लगती है?

प्र०—शब्द जैसे मुख से बोले जाते हैं। ऐसे ही मन, हृदय, प्रकृत-स्थल में भी बुझा प्रकटीकरण होता है। जैसे कि विचार के समय हृदय अपनी बात में उल्लास-बोध के रूप में प्रकट-उत्तर करते हैं। इसका एक और उदाहरण है—शरीरक, आधुनिकी इनमें भी मानसिक प्रकाश से दूसरों को ज्ञान देकर बोलते हैं।

इसका स्पष्ट प्रतिपाद यही है, कि ईश्वर सर्वव्यापक होने से सभी के हृदयों में भी रहता है। अतः ईश्वर ने सृष्टि के शुरु में अग्नि, वायु आदि के हृदयों में अत्यन्त ही ज्ञान-वेद का ज्ञान, शब्द, अक्षर विस्थाप दिया।

वज्रव—अग्नि, वायु, सूर्य आदि तो भौतिक पदार्थों के स्वरूप हैं। इनके अन्तर्गत से यह कैसे उच्चतर है?

प्र०—जैसे अग्नि आदि भौतिक पदार्थों के माध्यम हैं, ऐसे ही के ऋषियों के भी माध्यम हैं। अतः अन्न-प्रकृष्य में समस्त ऋषियों के हृदय में ईश्वर ने वेदज्ञान दिया।

सोमेश—इसी चारों को हों क्यों दिया? हृदय तो सभी मनुष्यों के पास होते हैं।

प्र०—ईश्वर कम फलदाता है अतः जिनके जैसे कम होत है, उनको जैसा ही वह फल देता है। इन चारों ऋषियों के प्रकृष्य में ऐसे शुद्ध कम तथा तत्कृत्य शुद्ध, समस्त हृदय हैं। अतः इनके हृदयों में ही वेद का प्रकाश किया। दूसरों को बनाई के लिए फिर उन्होंने दूसरों को यह ज्ञान दिया। इन्हें प्रकाश शब्द वेद का प्रकाश-प्रसन्न हुआ।

प्रकाश—यह वेदज्ञान ईश्वर ने कब दिया?

प्र०—सृष्टि के शुरू में सृष्टार के बनानेवाले ने सूर्य आदि भौतिक पदार्थों, मनुष्यों को बनाने के बाद यह वेदज्ञान दिया।

मनुष्य ही ज्ञान के प्रकृष्य और विकास में सक्षम हैं, पर मनुष्यों को तब तक ज्ञान नहीं आता, जब तक उनको कोई आरम्भ में देता नहीं। एक बार ज्ञानी होने पर ही मनुष्य नया विकास कर सकता है, जैसे नहीं। क्योंकि मनुष्यों का प्रारम्भिक ज्ञान नैमित्तिक होता है, जैसा नैमित्तिक (सिखक) जैसा ज्ञान।

(रोष पृष्ठ ७ पर)

## वेद में सर्वस्व समर्पण

(०१ वर्षमेव "मनीषी" वेदाचार्य, मुमुक्षु कालका)

मनुष्यों को अपना सर्वस्व किसके अनुष्ठान के लिए समर्पण करना चाहिए यह निम्नलिखित मन्त्र में उपदेश किया है—

आयुर्वेदान् कल्पता ऽ स्वाहा प्राणो यज्ञेन कल्पता ऽ स्वाहापानो यज्ञेन कल्पता ऽ स्वाहा ध्याना यज्ञेन कल्पता ऽ स्वाहाहोतानो यज्ञेन कल्पता ऽ स्वाहा समानो यज्ञेन कल्पता ऽ स्वाहा चक्षुर्वेदान् कल्पता ऽ स्वाहा श्रोत्रं यज्ञेन कल्पता ऽ स्वाहा वायुवेदान् कल्पता ऽ स्वाहा मनोवेदान् कल्पता ऽ स्वाहात्पा यज्ञेन कल्पता ऽ स्वासा ब्रह्मा यज्ञेन कल्पता ऽ स्वाहा ज्योतिर्वेदान् कल्पता ऽ स्वाहा स्वर्गवेदान् कल्पता ऽ स्वाहा पृथ्वे यज्ञेन कल्पता ऽ स्वाहा यज्ञो यज्ञेन कल्पता ऽ स्वाहा ॥यजुर्वेद २२।३३॥

वर्ष—हे मनुष्यो ! तुम ऐशो कामना करो कि हमारी (आयुः) आयु (स्वाहा) श्रेष्ठ क्रिया—यज्ञ एवं (यज्ञेन) परमेस्वर और विद्वानों का सत्कार, संगत कर्म शीघ्र विद्या आदि के दान के साथ (कल्पताम्) समर्पित हो, (प्राणः) जीवन का मूल प्राणवायु (स्वाहा) यज्ञ-क्रिया एवं (यज्ञेन) योग्याभ्यास आदि के साथ (कल्पताम्) समर्पित हो, (अपानः) दुःख को हटानेवाला अपान (स्वाहा) यज्ञ-क्रिया एवं (यज्ञेन) योग्याभ्यास आदि के साथ (कल्पताम्) समर्पित हो, (भ्यानः) सब सन्धियों में श्रान्त वेष्टा का निमित्त भ्यान (स्वाहा) यज्ञ-क्रिया एवं (यज्ञेन) योग्याभ्यास आदि के साथ (कल्पताम्) समर्पित हो (उत्थानः) बल देनेवाला उदान (स्वाहा) यज्ञ-क्रिया एवं (यज्ञेन) योग्याभ्यास आदि के साथ (कल्पताम्) समर्पित हो (समानः) रस को समान करने वाला समान (स्वाहा) यज्ञ-क्रिया एवं (यज्ञेन) योग्याभ्यास आदि के साथ (कल्पताम्) समर्पित हो, (चक्षुः) नेत्र (स्वाहा) यज्ञ-क्रिया एवं (यज्ञेन) योग्याभ्यास आदि के साथ (कल्पताम्) समर्पित हो, (श्रोत्रं) श्रान्त-सन्धियों का उपसंलक्षण श्रोत्र—कान (स्वाहा) यज्ञ-क्रिया एवं (यज्ञेन) योग्याभ्यास आदि के साथ (कल्पताम्) समर्पित हो, वाक् कर्म-इन्द्रियों को उपसंलक्षणवाणी (स्वाहा) यज्ञ-क्रिया एवं (यज्ञेन) योग्याभ्यास आदि के साथ (कल्पताम्) समर्पित हो, (मनः) अन्तःकरण (स्वाहा) यज्ञ-क्रिया एवं (यज्ञेन) योग्याभ्यास आदि के साथ (कल्पताम्) समर्पित हो, (पृथ्वी) प्रथम—विज्ञाता और जो शेष है वह (स्वाहा) यज्ञ-क्रिया एवं (यज्ञेन) योग्याभ्यास आदि के साथ (कल्पताम्) समर्पित हो । (यसः) श्रान्त परमेस्वर (स्वाहा) यज्ञ-क्रिया एवं (यज्ञेन) योग्याभ्यास आदि के साथ (कल्पताम्) समर्पित हो, ऐशो कामना है ।

भावार्थ—मनुष्य सारी आयु, शरीर, धान, अन्न-करण, इन्द्रियों और सर्वोत्तम सामग्री को यज्ञ के लिये समर्पित करे, जिससे पाप-रहित एवं कृत-कृत्य होकर परमात्मा को प्राप्त करके इस लोको और परलोक में सुख को प्राप्त करे ।

मनुष्य अपना सर्वस्व किसके लिए समर्पण करे—

सब मनुष्य अपनी आयु को होम, परमेस्वर और विद्वानों का सत्कार संगत कर्म शीघ्र विद्या आदि के दान में समर्पित करे । प्राण, अपान, भ्यान, उदान, समान, चक्षुः श्रोत्र, वाणी, मन, आत्मा, ब्रह्मा, ज्योतिः—ज्ञानप्रकाश, सुख, प्रथम—विज्ञाता शीघ्र अर्पित सब पदार्थों को यज्ञ शीघ्र योग्याभ्यास आदि में समर्पित करे । जिससे शायरहित होकर कृत-कृत्य होवे । परमात्मा को प्राप्त करके इह-लोक और पर-लोक में सुख को प्राप्त करे ।

महर्षि दयानन्द जी महाराज सत्याग्रहकास में यज्ञ का सलक्षण इस प्रकार करते हैं :-

"यज्ञ" उसको कहते हैं कि जिसमें विद्वानों का सत्कार यथायोग्य

विलय प्रयास रसायन शक्ति पदार्थों विद्या उद्योग उपयोग और विद्यादि पुण्यपुणों का दान अर्पितहोनादि विनये वायु, वृष्टि, वन, शीघ्रिषि आदि की परिष्कृत करने के सब शीघ्रों को युक्त पदार्थना है, उसको उत्तम समझता हूँ ।

हिंदी विचय १४ सितम्बर, १९६१

किसने क्या कहा ? और किसने क्या किया ?

—पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानो जैलसिंह

इशावाहार, १५ सितम्बर—पूर्व राष्ट्रपति जैलसिंह ने कहा है कि देश के विकास के लिए शंभूजी का मोह जोड़कर हिंदी भाषा अपनाती हो पड़ेगी ।

श्री जैलसिंह ने ये विचार हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा हिंदी विचय के अवसर पर यहाँ आयोजित कार्यक्रम के उद्घाटन के अवसर पर व्यक्त किये ।

उन्होंने कहा शंभूजी भाषा को संविधान में स्थान नहीं मिला है पर उसके बगैर हमारा काम नहीं चल रहा ।

पूर्व राष्ट्रपति ने राजनीतिज्ञों पर आश्रय व्यक्त किया कि जिस भाषा हिंदी में वे घोट मांगते हैं सोच बनने के बाद उसी भाषा को वे मूल जाते हैं ।

श्री जैलसिंह ने कहा कि भाषावी के बाद से देश को विकास के लिए दुनियावी जिन मुद्दों को भावस्यकता है उन मुद्दों को अग्रस में माना जरूरी होगा । उन्होंने कहा कि महत्त्वा शीघ्र का दर्शन सभी को अपने-अपने स्वयं रचना होगा । जिन्होंने कि स्वतन्त्रता वांछित में माग लेने की श्रव्यस्ता के वायव्य शरीरों और दलितों की सेवा के लिये समय निकाला ।

इस अवसर पर पूर्व राष्ट्रपति को अभिनन्दन ग्रंथ पेश किया गया जिसमें उनके द्वारा दिये गये पुराने भावनों और हिंदी के विद्वानों की सूक्तियों का भाषानुवाद समाविष्ट है ।

संकलनकर्ता—हरिराम भाई

पारिवारिक यज्ञ सम्पन्न

दिनांक १६-६-६१ को प्रातः कार्यसमाप्त कंधारी के मन्त्री सुवेदार रामेश्वरदास भाई की वेंडक में प्रायशं जी अरसिंह भाई क्रांतिकारी की द्वारा पत्र किया गया । यज्ञ पर भाई हलसों के शक्तिरक्त अथ नर-नारियों ने श्री भाग लिया । क्रांतिकारी जी ने यज्ञ के महत्त्व तथा शराव, वृक्षपान व चाय न पीने पर बल दिया । इस अवसर पर हिसार से आये श्री बर्षासिंह जी योगी जी ने जाहूद, ब्यबहार, ब्रह्म-पर्व तथा भ्यायान पर प्रकाश डाला । साथ में गांधी की तीन महिलाओं और ६ पुत्रों को जिनके दमा, रोंध, कमर में बंद, पैरों में बंद बाकि का निवारण कुशल किया तथा योगासनों द्वारा दूर करने वाले प्रेफिटकल करके तथा कुछ आयुर्वेदिक दवाइं देकर दूर करने का प्रयत्न किया तथा साथ-साथ स्वस्थ रहने के लिये नियमित भ्यायान एवं आसन करने पर बल दिया ।

—पहलवान बबोरसिंह भाई कंधारी (हिसार)

## आर्यों ! गुरुकुल का निषर्गिकार्य चालू है

अन्ततः धार्यसमाज ही देश, धर्म और ऋषि परम्परा को सुरक्षित रख सकता है। आज भी धार्यसमाज में कर्मठ जीवनशैली और आर्यों की कमी नहीं है। स्वामी भोमनाथ जी के सप और त्याग ने संकड़ों देशभक्त साधु ब्रह्मचारी विद्वानों को पैदा किया है।

गण ३ मार्च को रोहतास से तीन किलोमीटर दूर साडौत रोड पर गुरुकुल साडौत की आचार्यिणी आचार्य बलदेवजी गुरुकुल कासबा के निम्न कर कमलों द्वारा रखी गई थी। धापको स्मरण होगा इस गुरुकुल के लिए गुरुकुल सचर के स्वागत, सुयोग्य विद्वान्, आजीवन ब्रह्मचारी, आचार्य हरिवन्त ने पीने चार एकड़ भूमि तथा एक लाख बासीस हजार १०० नकद दिये हैं। पंतुक सम्पत्ति के प्रतिरिक्त अपना प्रमुख जीवन श्री गुरुकुल को अर्पित किया है। परिवामस्वरुप गुरुकुल का निर्माण कार्य प्रारम्भ होगया है। लेकिन जरा विचारिए आदि कठिनाई के इस समय में क्या यह सहज कार्य है ? ईंटे, कोहा, सोमेंट और लकड़ी आदि के भाव प्राप्तमान को खू रहे हैं तो क्या इस महर्षाई को देखते हुए आप देव दानान्द द्वारा प्रार्थित इस महर्षाई कार्य से विमुक्त हो जायेंगे ? क्या एक नवयुवक द्वारा तोसाह प्रारम्भ किये पठित यज्ञ को विधित होता देख सवेंगे ? तो फिर आइये आचार्य बलदेव द्वारा किये इस सुभारम्भ को पूर्ण करने में तन मन बन से जुट जाइये।

इन पंक्तिओं को पढकर आप इस देव कार्य को दूसरों पर मत छोड़िये हुपना कर्तव्य पहचानिये। विचार कर निश्चय कीधिये कि धाप किस रूप में अपनी कितनी और कौनसी आहुति इस यज्ञ में डाल सकते हैं।

मार्गिक बढा-बढ बन रहे हैं, गुरुद्वारे फटाफट बन रहे हैं, गिरजे चढाएत बन रहे हैं तो फिर अपने गुरुकुल बनाइए क्यों न बने। धपना पी३म् स्वयं गांधी-गांधी और मलोगोषी में क्यों न लहरायें। प्रत्येक सिख, प्रत्येक ईसाई और प्रत्येक मुसलमान धपनो नई बननेवाली संस्था मे अपना भाग अडापूर्वक लगाता है।

अतएव उनको संस्था गिने दिनों में संपार दीखती हैं। निःशुल्क धमदान (कारसेवा)की परम्परा उनमें अनुकरणीय है। फिर ही क्यों पीछे रहें। जब रामबन्धिर के लिए अयोध्या में सार्व्वी कार सेवक पहुंच सकते हैं तो गुरुकुल निर्माण के लिए भी अवश्य पहुंचेंगे और पहुंच रहे हैं। आपने धाने कदम बढ़ाये हैं वे मजिस पाकर ही रुक सकें। प्रतिदिन पहुंचानेवासे कारसेवकों की सूची में धाप अपना नाम अकित करा सकें। प्रयु हवें ऐसी शक्ति प्रदान करे। सर्वप में आप निम्न प्रकार से निर्माण कार्य में भागोदार बन सकते हैं —

- १०१ रु० देकर दार्धिक सदस्य बनकर
- ११०० रु० देकर आजीवन सदस्य बनकर
- ५१०० रु० सम्मानित आजीवन सदस्य बनकर
- ११००० देकर सरसक " " " "
- एक दिन या अनेक दिन धमदान (कार्यसेवा) करके या उत्तने दिन उत्तने स्थितियों की मजदूरी भेजकर।
- किसी दानी को प्रेरित करके अधिकाधिक दान दिलाकर।
- अपने या धपने पूर्वज माता-पिता आदि के नाम कमरे या मुख्य द्वार बनवाकर।
- गुरुकुल के आचार्य व सदस्यों को साय लेकर चन्दा कराकर।
- ट्रेक्टरवाले किसान यदि एक दो दिन सामर्थ्यनुसार सिट्टी यदि पहुंचा कर।
- मासिक, रासिक या साप्ताहिक पत्रिकाओं के सम्पादक इस प्रलेख को प्रकाशित कराकर।
- अपनी शक्ति कमर्सी में से प्रतिदिन एक १० गुरुकुल को देकर।
- ५, ११ या २१ रु० प्रतिमास दे सकते हैं।

विशेष—उपरोक्त को पढकर आपने धपनी प्यारी संस्था के लिए अवश्यमेव कुछ न कुछ निष्पन्न किया होगा। यदि हीं तो इस सम्बन्ध में अन्य जानकारो व पत्र-अवधार तथा बन धाप गुरुकुल के निम्न पत्र पे भेजे। स्मरण रहे गुरुकुल को सरकार ने आयकर (इकम टैक्स) से मुक्त किया है।

पता : — आचार्य हरिवन्त,  
गुरुकुल साडौत, रोहतास  
निवेदक :— प्रबन्ध समिति गुरुकुल साडौत

### अंतर्राष्ट्रीय कुस्ती प्रतियोगिता में गुरुकुल कुश्त्र का दबदबा

धानेसर २५ सितम्बर—विद्या विहार गुरुकुल के पहलवानों के जिलास्तरीय जल. अलाहा कुस्ती प्रतियोगिता में धपने प्रथम से सेव को प्राथचयचकित कर दिया तथा सभी वर्गों में सबसे अधिक इनाम और मंडल प्राप्त कर लिया। तीन दिवसीय जिला अन्तःअलाहा कुस्ती प्रतियोगिता स्थानीय श्रोताचार्य स्टेंडियम में सम्पन्न हुई, जिसमें १०५ पहलवानों ने भाग लिया। कुश्त्र के उपायुक्त रगीराम बंसवाल ने विजयी पहलवानों को तो पुरस्कार दिये मात्र ३ हजार रुपये का अनुदान जेल विभाग को कुस्ती खेल को बढ़ावा देने के लिए दिए।

सबसे कम उम्र के पहलवानों ने चौहथ वर्ष तक की अंशों २४ किलोग्राम को कुस्ती में गुरुकुल के संवीरो ने पहला, बेटी मारकडा के हरिकृष्ण ने दूसरा स्थान प्राप्त किया।

२५ किलो वजन में गुरुकुल के रामनिधास ने पहला और तरल-दीप ने दूसरा स्थान प्राप्त किया। ३० किलोग्राम वजन में गुरुकुल के संवीरो ने पहला और गीता निकेतन विद्यालय के सत्यवीर ने दूसरा स्थान प्राप्त किया। ३२ किलो वजन में गुरुकुल के ही असरेर के पहला और महेंद्र ने दूसरा स्थान प्राप्त किया मगर ३५ किलो वजन की कुस्ती में पहला के अनुज कुमार ने गुरुकुल के शपसेरसिंह को पछाडकर पहला स्थान प्राप्त किया। ४५ किलो में गुरुकुल के विलसन ने छेठो मारकडा के असरेर को हराकर पहला स्थान प्राप्त किया।

१६ वर्ष की से कम उम्र के पहलवानों में ३८ किलोग्राम में गुरुकुल के धोमप्रकाश ने प्रथम तथा एस.पी.डी.ए. के सुरेश ने दूसरा स्थान प्राप्त किया। ४० किलो में गुरुकुल के जयपाल और गुग्गल ने पहले और दूसरे स्थान प्राप्त किया। ४५ किलो में गीता निकेतन के नरेशकुमार ने दूसरा स्थान प्राप्त किया। ४५ किलो में गुरुकुल के कमबीर और सुरेश पहले और दूसरे स्थान पर रहे। ४५ किलो में एस. पी. डी. ए. के बदासिंह ने गुरुकुल के बजीरत दासबाद के अविबनी कुमार को शित्त करके पहला स्थान प्राप्त किया। १८ वर्ष से कम आयु की अंशों में धपने-अपने वजन में गुरुकुल के संवीर नैनाल, जय-नारायण, धमवीर शिवकुमार तथा धोमप्रकाश ने पहला स्थान प्राप्त किया।

सीनियर वर्ग में ५८ किलोग्राम वजन के पहलवानों की कुस्ती देखने लायक रही। बेटी मारकडा के रमेश पहलवान ने सारसा के बलराम को धारासयी किया। ४३ किलोग्राम में सारसा के बलवान के शाहबाद के राजकुमार की हराकर बाजी जीत ली। ५७ किलोग्राम की कुस्ती में शाहबाद के बलवीर ने गुरुकुल के हरामसिंह ने हराकर अपने एक बराबर किये। ६८ किलोग्राम वजन में पहला के करनलसिंह पहलवान ने गुरुकुल के मेहरसिंह पहलवान को हराया।

(दैनिक जनसत्ता)

# उपनिषद्-विद्या

—श्री स्वामी वैशम्पति परित्याजक, जयन्त—वैदिक सत्त्वान, नजीबाना (उ० प्र०)

वास्तविकता यह है कि उपनिषद् किसी पुस्तक का नहीं बरिपु एक विद्या का नाम है। अनेक पुस्तकें उपनिषद् के नाम से प्रचलित हैं उन सब पुस्तकों में उपनिषद् विद्या है और न केवल है ही अपितु उनका विशद विवेचन है। किन्तु उपनिषद्-विद्या इतनी ही है, जितनी पुस्तक रूप में उपलब्ध है—ऐसा मान बठना प्राणित होनी।

उपनिषद् वेसा कि इस शब्द से ही प्रकट है, उप—निकट, निषद्—बंठना, सम्पूरी शब्द का अर्थ हुआ निकट बंठना। किसके निकट बंठना ? जिसका वर्णन इस नाम के प्रथम में किया गया है। उपनिषद् अत्यन्त-विद्या के प्रथम है। विद्या शब्द का अर्थ है ज्ञान जबः उपनिषद् विद्या का अर्थ हुआ वह ज्ञान, जिसके द्वारा परमात्मा से निकटता स्थापित की जा सके।

उपनिषद् तथा निकटता स्थापित करना—इन शब्दों का अर्थ-तायं यह है कि जसों तक निकटता नहीं है। निकटता होती तो निकटता प्राप्त करने अवका निकटता स्थापित करने का प्रयत्न ही कुछ नहीं था।

इससे यह सम्यह कहो या प्रयत्न उपलब्धित होता है कि क्या परदे-बन्धन किसी स्थान विशेष पर रहता है ? क्या वह सम्बन्धायक नहीं है ? परदेबन्धन किसी स्थान विशेष पर नहीं है। वह तो सर्ववैधायक इस सम्बन्धानां है। यदि ऐसा है तो दूरी किस बात को ? फिर तो वह प्रत्येक समय और प्रत्येक स्थान पर साम ही नहीं है अपितु प्रत्येक समय हमारे भीतर भी है। दूरी का अर्थ पुण्य स्थान ही नहीं होता।

दूरी केवल स्थान अर्थात् देस का ही नहीं होती। देस का दूरी भी होती है और साम ही समय और ज्ञान का भी अर्थिया होती है। इस प्रकार तीन प्रकार की दूरियां हुईं। कहीं दूरी का अर्थ स्थान का दूरी होता है ? कहीं समय का दूरी और कहीं ज्ञान की दूरी ? स्थान की दूरी को दो स्थानों के मध्य की दूरी कहते हैं। फिर बाहे वह स्थान नदी की, ग्राम की, देस का या अन्य दो ग्रामों अथवा वस्तु विशेष ही। सम्बन्धायक होने के कारण यहाँकि परदेबन्धन हमारे भीतर भी है, अतः यह देस अथवा स्थान को दूरी तो हमारे और उसके मध्य में ही ही नहीं। एतदर्थमेव उसके निकटता प्राप्त करने के लिए कहीं, किसी स्थान पर जाने का तो प्रयत्न ही नहीं।

जहाँ तक प्रयत्न समय की दूरी का है, समय अर्थात् वर्ष, मास, दिन, प्रहल, पड़ो, पल, विपस आदि। ऐसी कोई बात तो है नहीं कि ईश्वर को वर्ष पहले अथवा ५ दिन पहले, मिल सकता था या दो मास अथवा १५ दिन बाद मिलेगा। वह तो प्रत्येक समय मिल सकता है और जोबनपरमेष्ण न मिले—यह भी ही सकता है। हमारे भीतर भी अर्थात् होने के कारण प्रत्येक समय विद्या हुआ है।

तीसरी दूरी है ज्ञान की। यदि कोई वस्तु हमारे पास ही रखी हो और हम उस वस्तु को न जानते हो तो उसके द्वारा होनेवाले साथ से अज्ञान ही रहने। उदाहरण के लिए कोई स्वामी अपने मूय को कोई वस्तु उठा जाने को कहे। मूय वहा जाने, जहाँ वह बस रखनी हुई अनेक वस्तुओं में से वह कौनसी है, जिसे उठा जाने को स्वामी ने कहा था ? वह वस्तु जिसे ने जाने के लिए वह धारया है, अत्यन्त निकट है, सामने रखनी है; किन्तु धाकृति का ज्ञान न होने से नहीं उठा पाता। वह निकट होत हुए भी उसके लिए तो दूर ही है उसकी दूरी केवल न ज्ञान पाया है। यदि उसे जानके, उसकी आकृति का ज्ञान हो जाये तो कोई भी लेयमात्र भी दूरी नहीं है। फिर तो वह निकट, अर्थात् निकट है। इसी का ज्ञान का दूरी कहते हैं। यहाँ ईश्वर और मानव के मध्य की दूरी है। यदि वह निकल जाय तो ईश्वर की आदित से क्या देर ? देर तो ईश्वर के स्वल्प को जान लेने की है। जो स्वल्प को जानेगा, वही तो पहचानेगा। स्वल्प को न जानकर ही तो अटक रहा है। स्वल्प का ज्ञान न होने के कारण ही तो स्वामी जोर

पूर्वजनों के द्वारा उठा जाता है। स्वल्प के ज्ञान न होने के कारण ही तो उसके विषय में अनेक अनंगन कल्पनायें कर रक्ती हैं, मानव को। उसके स्वरूप के ज्ञान के अभाव में ही तो उसकी नाया प्रकार को मूर्तिया बना रक्ती हैं।

वेद ने तो स्पष्ट घोषणा की हुई है 'न तस्य प्रतिमा अस्ति' (यजु० ३२/३) उसकी प्रतिमा नहीं है। हो सकती की नहीं—क्योंकि वह शरीरधारी नहीं है। शरीरधारी की प्रतिमा बनायी जा सकती है, शरीरधारी की, अशरीर की नहीं। जिसका कोई शरीर न हो, उसकी आकृति नहीं हो सकती। वेद ने तो इस विषय में जो अत्यन्त स्पष्ट घोषणा कर रक्ती है।

स पर्वगाच्छुक्रमकामयवमनाधिर्दुष्टपापविन्दय ।  
कविर्ननीषी परिभूः स्वयम्भूरापास्तव्यतोऽपि व्यवधाच्छा-  
स्वतोऽम्भः समाभ्यः ॥ (यजुर्वेद ५.५॥)

इस मन्त्र में कहा गया है कि परमात्मा सब ओर व्याप्त है, वस का अन्धकार, शरीर रहित, उसके छोडा-पुछी नहीं होते, पाव आदि नहीं लगते, वह नाशो-नस के अन्धन से बाहर है अर्थात् उसके नस-नाशिया नहीं है, वह शुद्ध है और उसके द्वारा पाप नहीं होते। वह प्रातर्दशा और मनवधीन, सर्वत्र स्थित है, स्वयं स्थित है और धरणी शाश्वत प्रजाओं, जीवात्माओं के लिए यथोचित अर्थों अर्थात् घोष्य पदाओं को व्यवस्था करता है।

इस मन्त्र में परमात्मा को सब ओर व्याप्त और सब और स्थित कहा है देहधारी को तो सब ओर तथा सब पदार्थों में व्याप्त ही सकता है और न सबत्र स्थित ही हो सकता है। वह तो एक सकल ही स्थान पर रूढ करता है। अतः तो स्पष्ट ही कह दिया है कि वह काय अर्थात् देहधारा ना नहीं है। कोई प्राणित ही न रहे। इसके लिए जाने कहा है कि उसके फोक, पाव आदि नहीं होते। पाव आदि को सम्भावना तो शरीर में ही होती है। शरीर नहीं है, इसलिये शरभ भी नहीं होते। नाशो-रहित का अर्थ भी देह-रहित होता ही है। वेद ही तो नाशिया धारण्य होते, वेद ही तो अशुद्ध भी हो सकती हैं। अशुद्धिां तो बगनी ही वेद में नहीं। वह शुद्ध है, इसका भी यही अर्थ है कि देह-रहित है। पाप और मक्कारियां मनुष्य दैनिक सम्बन्धों में फटा होने के कारण ही करता है। मनुष्य के द्वारा पाप इसलिये नहीं होता अर्थ कि वह देह और दैनिक सम्बन्धों से आवद्ध नहीं है। इस मन्त्र के अर्थों पर विचार करने से अत्यन्त स्पष्ट है कि अनाया शरीरधारी नहीं। अतः उसकी मूर्ति की कल्पना कचन कौरी अविद्या और अज्ञान अर्थात् उस प्रभु को न समझना ही है। स्थान विशेष पर धनस्थित अवतार आदि मानाओं धरया मूर्ति की कल्पना से मनुष्य तभी तक फसा रहता है, जब तक वह देह ठोक से न स्वल्प से कि परमात्मा क्या है ? जहाँ यह समझ जाये कि ज्ञान की दूरी समाप्त हुई और परमात्मा को प्राणित हुई, ज्ञान की दूरी के समाप्त होने का नाम ही निकटता प्राप्त करना है। यह ज्ञान जिस पुस्तक अवका विचार न प्राप्त हो—उसका नाम उपनिषद् है।

उपयुक्त विवेचन के सम्बन्ध में विचार किया जाए तो यह बात एकदम स्पष्ट हो जाती है कि उपनिषद् एक विद्या है और उस पर जितना विचार किया जाए, उतनी ही उपलब्धि अथवात्मका न में होगी। उसनी ही प्रभु से निकटता ही जायेगी। जहाँ एक हकने समझा है, वह उपनिषद् को पराकाष्ठा है। इस परकाष्ठा को वेद के निम्न मन्त्र में प्रस्तुत कर दिया है :—

यदने स्मामह त्वं वा पा त्वा बहम् ।

स्युष्टे सत्या इद्वाहित्वः ॥

श्लो० ५/५४/२३

(विष पृष्ठ ६ पर)

मार्ताक से आगे—

वेदप्रचार सप्ताह के पवित्र अवसर पर—

## वेद क्या हैं—वेद ही ईश्वरीय ज्ञान क्यों ?

लेखक—मुम्बई वेदार्थी, महापदेशक भार्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा, रोहतक

इन चारों वेदवाणियों की प्रेरणा के सम्बन्धों में सामवेद मन्त्र संख्या ६५४ में कहा गया है—मन्त्र है—

आयोविपत् वस्व क्रमिन् सित्युगिरस्तोमान् पवमानो मनोषा अलः पयव्

अर्थात्—ब्रह्मचर्य की रक्षा द्वारा अपने जीवन को पवित्र बनाने के स्वभाव वाता मनुष्य, जैसे—सित्युः उमि न—समुद्र अपने में तरंगों को प्रेरित करता है उसी प्रकार वाच—पशुओं के गुणधर्मों का स्पष्ट कथन करनेवाली ऋग्वेद अथवा विज्ञानवेद की वाणियों को—प्राची-विषय यह मनुष्य अपने अन्दर प्रकल्प प्रेरित करता है और उन वाणियों के द्वारा विज्ञान को बढ़ाकर प्रकृति के पदार्थों का ठोक उपयोग करता है। इसी प्रकार—गिर—अयुर्वेद की उपवेशात्मक निराशों-वाणियों को अपने में खूब प्रेरित करता है और अपने कृत्यों का स्मरण करता है। ऐसे ही यह श्वेत् मनुष्य, स्तोमान्—सामवेद की स्तुति—समुष्ण्य वार्ति यों को भी अपने अन्दर प्रेरित करता है और स्तोमों के द्वारा प्रभु के निकटतम सम्पर्क में आकर शक्तिशाली बनता है। इसी प्रकार, मनीषा—अथर्ववेद की बुद्धिमत्ता से परिपूर्ण नैतिक उपदेश देनेवाली वाशों को भी यह अपने में सदा प्रेरित करता है। इसी प्रकार चारों वेद-वाणियों से प्रेरणा पाकर मनुष्य अपने जीवन को पवित्र बना सकता है।

परमात्मा ही इन वेदवाणियों को प्राप्त् करता है—इसलिए वेद परमेश्वरीय कहें जाते हैं। इसमें सामवेद मन्त्र संख्या—६५४ का मन्त्र प्रमाणित करता है कि—गोविन्पवस्व-अर्थात् परमात्मा वेदवाणियों को देनेवाले हैं। सृष्टि के प्रारम्भ में जीवों के कल्याण के लिए वेदज्ञान को ऋषियों के हृदयों में प्राप्त् करते हैं क्योंकि वे प्रभु सुबनेषु अर्थात्—सब लोक-लोकान्तरों में व्यापक हैं। प्रेरणा साम्प्रतिक होती है। वह हृदय के अन्दर ही होती है। इसी बात को कहते हुए सामवेद मन्त्र संख्या ६६० में कहा गया है। मन्त्र है—

“जज्ञानो वाचमिधसि पवमान विद्यमिति ।

क्रमन् देवो न सूर्यः ।

अर्थात्—वाच-इधसि इस वेदवाणी को परमात्मा हमारे में प्रेरित करते हैं। वेदवाणी का उच्चारण करते हुए वे प्रभु हमें हमारे कर्तव्य कर्मों को प्रेरणा प्राप्त् करते हैं जिससे कि उनके द्वारा हम उचित प्रकार से अपना जीवन धारण कर सकें।

जैसे प्रातःकाल होते ही उदित सूर्य प्रकाशपूर्णता है, इसी प्रकार परमात्मा सृष्टि का आरम्भ करते ही ऋषियों के पवित्र अन्तःकरण में वेदवाणी को प्रेरित करते हैं। इस प्रेरणा के द्वारा ही ऋषि मुनि वेद का ईश्वरीय सन्देश जन-जन तक सृष्टि के आरम्भ में पहुंचाते हैं। ऋषियों से इस ईश्वरीय सन्देश को सुनकर ही शक्ति अर्थात् वेदज्ञान का अन्वय करते हैं। इन प्रमाणों से पूर्णतया सिद्ध होता है कि वेद ईश्वरोक्त हैं—ईश्वरीय ज्ञान हैं। वेद का यह ज्ञान स्वाभाविक प्रवाह बनकर नदी के जल की तरह से सारे विश्व में ऋषियों द्वारा प्रवाहित किया जाता है। इस ज्ञान के पवित्र प्रवाह में स्नान कर ही मनुष्य पवित्र बन जाता है। क्योंकि वे वेदवाणियाँ हमारी रक्षा के लिए ही परमात्मा द्वारा रची गई हैं।

इस प्रभु में द्वारा रचित वेदवाणी को सामवेद के मन्त्र संख्या ६६० में अष्टापदी वाक् का नाम दिया गया है। मन्त्र है—

वाचं अष्टापदी अहं नवम्यसि ऋताभुषम् ।

इष्टात् पत्सिन्धु ममे ।

मन्त्र का अभिप्राय यह है कि मैं इष्टात्—उस ज्ञानरूप परमेश्वर्य वाले प्रभु से, वाच—वाणी को, पत्सिन्धु—अपने अन्दर निहित करता हूँ। किस वाणी को ? अष्टापदी—आठों दिशाओं में अर्णात् सर्वत्र श्यात्। सर्वत्र लोक-लोकान्तरों में प्रभु ने इस वाणी का तो उपदेश दिया है।

अष्टापदी अथवा नाम, धातु, अव्यय, उपसर्ग, स्वर, व्यञ्जन अनुस्वार, विसर्ग रूप आठ पदों वाली। नवम्यसि-प्रभुस्त्वन का सृजन करनेवाली-सर्व वेदा यत् पद आभ्यन्तित—सारे वेद उसा प्रभु का तो स्तवन कर रहे हैं अथवा-नवम्यसि का सब शक्तियों का सृजन करनेवाली बदवाणी, ऋताभुषम्—सत्य का वर्णन करनेवाली है। तम्भ्—सूक्ष्म, अर्णात् जिसमें सब विद्याएं जीव रूप से निहित हैं। ऐसी है यह ईश्वरप्रदत्त वेदवाणी।

आदि सृष्टि में परमेश्वर गुण ने ही अपनी संशयनिवृत्तता से इन शब्दों का उच्चारण भी करना सिखाया। क्योंकि गुण-गुण ने जीवों को शब्द और भाषा का ज्ञान न होने से उन आदि ऋषियों में स्वतः-शब्दोच्चारण का सामर्थ्य न था। यह शब्दों का उच्चारण कैसे होता है इसमें महर्षि दयानन्द सरस्वती अपने वेदांगप्रकाश के प्रथम भाग में बर्णाच्चारण शिखा में शब्द को उल्थित, उसका स्वरूप, एव सहाय का वर्णन करते हुए लिखते हैं—

आकाशवायुप्रभवः शरीरात्,

समुच्चरन् बन्धमुपति नादः।

स्थानान्तरेषु प्रविभ्रम्यमानो,

वर्णात्त्वमागच्छति यः शब्दः।

अर्थात्—आकाश और वायु के संयोग से उत्पन्न होनेवाला, नाभि के नीचे से ऊपर को उठता हुआ जो मूल को प्राप्त् होता है उसको नाद (शब्दवाणी) कहते हैं। वह बहु कण्ठ आदि स्थानों में विद्यमान को प्राप्त् हुआ वर्णभाव को प्राप्त् होता है उसको शब्द कहते हैं।

आत्मा बुद्ध्या समेपाधार्त्,

मनो युद्धक्ते विवहास।

मनः कायाग्निमाहन्ति,

स प्रेरयति चरतम् ।

माहस्तूरित क्रममन्द्

जनयति स्वरम् ।

अर्थात्—जीवार्त्मा अपनी बुद्धि से प्रभुओं की सगति करके कहने की इच्छा से मन को युक्त करता है, विद्युत्कृप मन जटारगिनी को ताड़ता वह वायु को प्रेरणा करता और वायु उरःस्थल से बिचरता हुआ मन्दस्वर को उत्पन्न करता है।

यह सारी की सारी क्रिया आदि मानव अर्थात् वेदज्ञान को प्राप्त् करनेवाले पवित्रात्माचार ऋषियों के हृदय में स्वतः ही नहीं हो जाती, परन्तु ईश्वर ही अपने नामधेय से इसमें ही करता है। इसमें महर्षि दयानन्द सरायप्रकाश के सातवें समुत्पास में वेदेश्वर विषय और ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के संश्लेषित प्रकरणों में लिखते हैं कि त्रिगुण, वायु, आदित्य और मंगिरा इन चार ऋषियों को जैसे वादित्त को कोई अज्ञान या काठ की तुलनी को चेष्टा कराए इसी प्रकार ईश्वर ने भी उनको निमित्तमात्र किया था।

परमात्मा ने अपना यह ज्ञान उन ऋषियों को शब्दों, भावों तथा भाषा आदि के साथ दिया था। वेद में त्रितने शब्द अर्थ सम्बन्ध हैं वे सब ईश्वर ने अपने ही ज्ञान से उनके द्वारा प्रकट किये थे। ईश्वर (केशवः)



## हिंदी सप्ताह मनाया गया

८ सितम्बर से १४ सितम्बर तक कोसली क्षेत्र के अनेक गांवों में हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया। हिंदी सप्ताह का आरम्भ रैलवे स्टेशन कोसली पर एक सत्रोटी से किया गया। १० सितम्बर को ग्राम कोसली में हिंदी सभा का आयोजन किया गया। जिसमें धार्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अजयनोपदेशक श्री हरध्यानसिंह के मनोहर भजन हुए। सभा को सम्नोषित करते हुए श्री हरिराम धार्य प्रधान आर्यसमाज कारोली ने हिंदी के महत्त्व पर प्रकाश डाला और आग्रह किया कि लोगों को हिंदी भाषा को बढ़ाओ या किसी अण्य भाषा से अधिक मान देना चाहिए। अपने बहो भाते पत्राधि हिंदी में लिखने चाहिये और अपने पत्रों पर पते हिंदी (नागरीलिपि) में लिखने चाहिये।

१३ सितम्बर को ग्राम टूम्पा में धार्मीय सभा और बृहत्तर हवन यज्ञ का प्रायोजन किया गया। निकटस्थ क्षेत्र से सब गांवों के लगभग एक हजार लोगों ने सभा में भाग लिया। सम्पूर्ण आयोजन की अष्टम-शता पं० सुन्दर बाबायं ने की। विद्यार्थों के उपदेश हुए और पवित्र अग्नि की साक्षी में शराव छोडने तथा हिंदी अपनाते के बारे प्रवचन कराये।

राष्ट्रभाषा हिंदी के बारे में बोलते हुए श्री हरिराम धार्य ने बताया, भारत को प्रादेशिक भाषाओं तथा राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में अंग्रेजी का अचंचल बाधक है। अंग्रेजी का प्रचलन बने रहना न केवल हमारे भाषाई ज्ञान के विकास और राष्ट्रीय एकता पर कुठाराघात कर रहा है, अपितु भारत की सम्मता, संस्कृति, विज्ञान इतिहास में भी बिय बोल रहा है। भारत के २३ प्रसिद्ध लोग अंग्रेजी नहीं जानते किन्तु उन पर उपनिवेशवासियों की भाषा अंग्रेजी थोपी जा रही है। न चाहते हुए भी भारत के विद्यार्थों पेट के लिए विदेशी भाषा में मत्पा-पन्थी करते हैं। राजनीति पर सामग्री शूट का प्रभाव है जो अंग्रेजी माध्यम से सत्ता व मौकरी के अधिकारों को अपने हाथों में बनाये रखना चाहते हैं।

उन्होंने आग्रह किया कि भारत की प्रादेशिक भाषाओं या किसी भी भाषा के पढ़ने में दोष नहीं किन्तु जो भाषा अपनी मातृभाषा और राष्ट्र की अण्य प्रादेशिक भाषाओं को कुचल रही हो उसे हर मूल्य पर बहिष्कृत करना आवश्यक है।

१४ सितम्बर को हिंदी सप्ताह का समापन भी कोसली रैलवे स्टेशन पर स्वतन्त्रता सैनिकों की गोष्ठी में किया गया। कोसली रैलवे स्टेशन मात्र ऐसा बाजार है जिसमें दुकानों के नामपट्ट २६ प्रतिशत हिंदी में लिखे हैं।

१३ सितम्बर को टूम्पा सभा का आयोजन ग्रामवासियों के सहयोग में सर्वश्री लक्ष्मीनारायण शर्मा, भमनलाल प्रभाकर, पं० मूरज भान, हरिराम धार्य, सेखराय शर्मा, जगदीशप्रसाद के प्रयत्नों का फल था जिसमें सर्वश्री कुम्भदत्त शर्मा सत्यनारायण शर्मा आदि विद्वानों ने भाग लिया।

—०—

## शोक समाचार

महात्म्य अनुराम जी बूचवाल भगवाडी बुद्ध विसा अक्षरक का दिनांक ३-६-६१ को पलाघात के कारण स्वर्गवास हो गया। वे धार्य-समान के प्रमुख कार्यकर्ता थे। परमात्मा उनकी आत्मा को सद्गति दे और परिवारजनों को धैर्य प्रदान करे।

मा० जगमोहनसिंह देवदत्त  
धार्यसमाज सिलापुरी तोटादेई  
जिला महेन्द्रगढ़

## डा० देवव्रत आचार्य सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान संचालक बने

दिल्ली—सार्वदेशिक आर्यवीर दल सभिति की १४-१५ सितम्बर को बैठक हुई जिसमें पं० बाल दिवाकर हल ने स्वेच्छा से प्रधान संचालक पद से विमुक्त होने की इच्छा की और अपने स्थान पर डा० देवव्रत आचार्य को प्रधान संचालक बनाये जाने की संसुति की। सर्वसम्मति एवं करतलध्वनि के साथ डा० देवव्रत आचार्य को दल का प्रधान संचालक मनोनीत किया गया।

श्री देवव्रत जी पुरुकुल हज्वर के सुयोग्य स्नातक हैं। इन्होंने व्याकरणशास्त्र, दर्शनशास्त्र, पी० एच० डी०, वेदवागीश, व्याख्यान पारङ्गत और जी० वाई एड० (योगशास्त्र) की उपाधियां प्राप्त की हैं। प्राय पिछले २५ वर्षों से समस्त भारतवर्ष में नवयुवकों को भारतीय व्याख्यान, योग प्रशिक्षण एवं शास्त्राध्ययन कराते इत्यादि का प्रशिक्षण दे रहे हैं। उनके मार्गदर्शन में सैकड़ों व्याख्यान शिक्षक देश के विभिन्न स्थानों में प्रशिक्षण दे रहे हैं। धार्यके जाने से आर्यवीर दल में नवीन चेतना आई है। हमें यह पूरी आशा है कि आपके नेतृत्व में आर्यवीर दल प्रगतिपथ पर जागे बनेगा।

—कायलिय मन्त्री

## वार्षिक उत्सव

धार्यसमाज गन्धीर शहर का ३६वां वार्षिकोत्सव ४, ५, ६ अक्टूबर १९६१, शुक्रवार, शनिवार, रविवार को होना निश्चित हुआ जिसमें हमारे मुष्तासिधि, श्रीमती धांति राठी शिखाराम्नी हरयाणा सरकार होगी।

प्रेमनाथ आहुजा, प्रचारकम्नी,  
धार्यसमाज गन्धीर शहर  
सोनीपत, (हरयाणा)

(पृष्ठ ३ का शेष)

अर्थात् हे परमात्मा ! हे प्रकाशमय प्रभो ! मैं आपके निकट पहुंचा तो किन्तु अब मैं आपसे बिछुडना, विलय होना नहीं चाहता। मैं तो यह भी नहीं चाहता कि मैं केवल आपके पास ही रहूँ। मेरी तो अब यही एकमात्र प्रार्थनाया है कि मैं तू ही हो जाऊँ। यदि तू यह समझता है, क्यामय देव ! यदि आप यह समझते हैं कि अपने अल्प सामर्थ्य के कारण मैं आप सर्वसत्त्वितमान् के स्वरूप को धारण कर पाने में असमर्थ हूँ, प्राण जैसा प्रमित्व धारण करने के योग्य नहीं हूँ तो फिर आप ही मैं हो जाये। जो भी हो, मैं अब आप जैसे अतिस्वरूप जाणव्यमान को प्राप्त करके छोडने को तैयार नहीं हूँ।

इससे आगे उपनिषद् का कोई अर्थ नहीं हो सकता, कोई लक्ष्य भी नहीं हो सकता। उपनिषद् विद्या का अर्थ जो ब्रह्मप्रतिष्ठा की धार जीव को ले चखना ही है। उस और चलने के लिए इस विषय का विशद विज्ञान है, उस सबका विवेचन इस लेख में सम्भव नहीं।

## अन्तरंग सभा की आवश्यक बैठक

धार्यप्रतिनिधि सभा हरयाण की अन्तरंग सभा की आवश्यक बैठक दिनांक ६ अक्टूबर, २१ रविवार को दोपहर १२ बजे धार्यसमाज मन्दिर परसोदावरी जिन्ना भिमानो में होनी निश्चित हुई है।

## शोक समाचार

धार्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के कायलिय सेवक श्री सत्यवीरसिंह की माताजी का दिनांक १६-६-६१ को स्वर्गवास हो गया। वे पिछले कई दिनों से बीमार थी। परमात्मा उनकी आत्मा को सद्गति दे और परिवारजनों को धैर्य प्रदान करे।

देवसिंह  
व्यवस्थापक-बहिष्कृतकारी

### लक्ष्मण का शरबोत्सव

बंदिक साधन बाधन, तपोवन, देहरादून का शरबोत्सव विनांक २ अक्टूबर से आरम्भ होकर ६ अक्टूबर को सम्पन्न होगा जिसमें शायबेन-पारायण्य यज्ञ तथा योग-साधना विचित्र का आयोजन किया जा रहा है।

प्रमुख कोषधी विभवविद्यालय के उपकुलपति आचार्य रामप्रसाद वैशालंकार, स्वामी सत्यपति जी महाराज तथा आचार्य आर्य नरेश भी पधारे हैं।

मुख्य यजमान श्रीमती शांतिदेवी रहेंगी।

—(वेदवत वाली)  
मन्त्री

बंदिक साधन बाधन सोसाइटी,  
तपोवन

### (पृष्ठ १ का लेख)

वचन—ईश्वर ने यह वेदज्ञान क्यों दिया ?

प्रा.—जैसे ईश्वर ने सभी के लिए सूर्य, चन्द्र, जल, वायु, पृथिवी और उसके भौतिक पदार्थ दिए हैं। ऐसे ही इन पदार्थों को बतने और इनके साथ उठाने के लिए देखावाना दिया। क्योंकि बिना ज्ञान के किसी पदार्थ को बतकर ज्ञान नहीं किया जा सकता है। जैसे कि हम बतने के लिए प्राकृतिक पदार्थों, दूरबसों आदि यन्त्र और माहून चाहे हैं। तब ही उसको बतने का ज्ञान या परिचय प्राप्त होता है। और तभी उसका उपयोग कर इच्छित लाभ का प्रहण कर सकते हैं। जैसे कि :—

कोई रोगी किसी चिकित्सक के पास जब जाता है, तब वह उसको देखकर और हाल-बात पूछकर केवल जैसे दवा ही नहीं देता, अपितु उसके साथ सेवनगिति, पर्यायपथ भी बताता है। ऐसे ही ईश्वर ने प्राकृतिक पदार्थों के साथ उनको बतने का ज्ञान भी दिया।

प्रत्येक राज्यव्यवस्था का एक संविधान होता है, जिसके अनुसार वहाँ की सारी व्यवस्था तथा सामर्थ्यों के रूपों के फल का अनुमान होता है। ऐसे ही जब के व्यवस्थापक का संविधान ही वेद है। उसमें वहाँ सूर्य आदि भौतिक पदार्थों का परिचय है, वहाँ मानव-जीवन का दर्शन और व्यवस्था का भी निर्देश है।

निकष—इसका पात्र यह हुआ, कि प्राकृतिक पदार्थों और वेद-ज्ञान का सातों एक ही है ?

प्रा.—यह आर्यसमाज का पूर्ण विषय है कि, इन दोनों रचनाओं का एक ही कर्ता है। अतएव इन दोनों में एकत्पत्ता है। जैसे कि भूगोल और भूगोचर पुस्तक की एक रूपता ही सचार्थ की प्रवृत्त होती है। ऐसे ही एक कर्ता के कारण प्राकृतिक पदार्थों और ईश्वरोप्य ज्ञान में एकत्पत्ता ही इस ज्ञान के सत्य एवं ईश्वरीय होने की कसौटी है।

सुमनेक—श्वेत्वादि का वर्ण विषय और परिचय क्या है ?

प्रा.—मानव जीवन और संसार के पदार्थों का वर्णन करना ही वेद का विषय है। इन दोनों बातों का उत्तर काफी विस्तृत है, इस ('सिंह वैदोद्यान' देखिए।

निकष—इतिहास की पुस्तकों में तो पढ़ाया जाता है, कि वेदों में इति, इन्द्र, वचन आदि वेदों की स्तुति, प्रार्थना ही है ?

प्रा.—यह प्रश्न बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण है यह ठीक है, कि इति, विष्णु, सूर्य आदि पदों को ध्याकर बनाकर ही वेदों का वर्णन है। इनको वेद की भाषा में देवता कहते हैं। ये अग्नि, इन्द्र, सोम आदि देवता एवं जहाँ ईश्वर के लिये धार्य हैं, वहाँ ब्रह्मण्ड के अनुसार भौतिक पदार्थों, जीव, नेता आदि के लिए भी प्रयुक्त हुए। ये कहां, किसके साथ है ? यही सबसे मुख्य रूप से सत्यने वाली बात है। इसका उत्तर समाधान 'वेदों की कुञ्जी' में उदाहरण सहित समझाया गया है।

### हरयाणा की शिक्षामन्त्री श्रीमती शांति राठी

हिसार, १५ सितम्बर—हरयाणा 'रजत जयन्ती' समारोह की शुभका में हरयाणा साहित्य अकादमी द्वारा हिसार राजकीय कालेज में से राज्य स्तरीय हिंदी विभव एवं साहित्य पुरस्कार समारोह में उपस्थित लेखकों एवं विद्वानों को सम्मोहित करते हुए अकादमी की अम्बसा एवं हरयाणा की शिक्षामंत्री श्रीमती शांति राठी ने देवनागरी से अंबेजी की दासता से अपना नाम छुड़ाने का प्राज्ञान किया। उन्होंने कहा कि हिंदी भाषा और चिंतन से स्वदेशी भावना का प्रचार सम्भव नहीं है।

उन्होंने कहा कि स्वभाषा-स्वसंस्कृति तथा स्वदेशाभिमान तभी विकसित होते जब हम अपनी राष्ट्रभाषा हिंदी को उचित स्थान देंगे। श्रीमती शांति राठी ने हरयाणा में संस्कृति एवं साहित्य को प्रोत्साहन देने तथा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने की योजनाओं को लागू करने का आश्वासन दिया।

समारोह में वर्ष १९६०-६१ के लिए पुरस्कार दस लेखकों को प्रदान किया गया। इस अवसर पर हिंदी कहानी प्रतिभोगिता के लेखकों को भी पुरस्कृत किया गया। समारोह के दूसरे स्तर में आयोजित लेख गोष्ठी में दो शोधपत्र पढ़े गये। पहला शोधपत्र डा० जय-भगवान गोयल ने तथा दूसरा प्रो० माजदा अखत ने पढ़ा।

तीसरे स्तर में लेख गोष्ठी की अध्यक्षता डा० केदारनाथ सिंह प्रो० भारतीय भाषा केन्द्र जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय दिल्ली ने की। इस गोष्ठी में हरयाणा, वज्जोदर तथा दिल्ली के १५० लेखकों ने भाग लिया।

इस अवसर पर हरयाणा साहित्य अकादमी द्वारा लगाई प्रकाशनों को पुरस्कृत प्रवर्तनी का शिक्षा मन्त्री श्रीमती शांति राठी ने उद्घाटन भी किया।

### दानप्रस्थ आश्रम

जति हर्ष का विषय है कि आर्यसमाज माइल टाऊन पानीपत में नान प्रस्थ आश्रम बनकर तैयार हो गया है।

आर्य विचारोंवाले मानवीय रिहायश हेतु सम्पर्क करें।

प्रधान, आर्यसमाज माइल टाऊन, पानीपत (हरयाणा)  
पिनकोड-१३२१०३

वहाँ बर्नाई औपचार्य गिर्य-प्रति सत्यं, सुभा धांगन, प्रसाहन नि.मुक्त पुस्तकालय नई दिल्ली बच्चों की आर्यवीर दस की शाखा, संग्राहियों का प्राचीनवादि शांत तथा फूलों का सुगन्धम बातावरण की सुविधाएं प्राप्त है।

आर्यसमाज माइल टाऊन, पानीपत  
आर्य आर्य, मन्त्री

**₹१०० अत्ये के प्रचारार्थ**

सैंकड़

फुल कागज मिट्ट

**आर्यार्थ प्रकाश**

अजिल्द  
**₹००**  
सैंकड़

**घर घर पहुंचार**

**स्वफेद कागज सुन्दर छपाई**

**उत्तम संस्करण वितरण करने वाली के**

आंकड़ा: 23x36-16 पृष्ठ ४२० की दर

अजिल्द ६/मिटर PVC २०/पुल कागज मिट्ट ११/-

**आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट**

४५५ रोड़ी आली दिल्ली ६ दूरभाष: 238360-233112



